



# International Conference

on

## Resurgent Bharat on the Global Canvas

## वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान



25-26 February 2024

Dr. Ambedkar International Centre, 15, Janpath Road,  
Windsor Place, New Delhi-110001

Organized by :

**Shaikshik Foundation**

in Collaboration with

**NCPSSL & Shivaji College, University of Delhi**

Sponsored by



Resurgent Bharat on the Global Canvas

## विकसित गुजरात @2047 का रोडमैप तय करता ₹3,32,864 करोड़ का बजट

### समाज के चार वर्ग-ज्ञान

यानी कि गरीब, युवा, अन्नदाता और नारीशक्ति के  
उत्कर्ष पर विशेष जोर



गरवी गुजरात  
गुणवंतु गुजरात  
ग्रीन गुजरात  
ग्लोबल गुजरात  
गतिशील गुजरात



पोषण-स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समग्र दृष्टिकोण वाली तीन नई योजनाएं  
**नमो लक्ष्मी योजना, नमो सरस्वती योजना, नमो श्री योजना**

कक्षा 99 और 92 में विज्ञान वर्ग में  
पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन के  
लिए **नमो सरस्वती योजना** के  
तहत **₹400 करोड़** का प्रावधान

सरकारी-गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक  
और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने  
वाली लड़कियों के लिए **नमो लक्ष्मी योजना** के  
तहत **₹1250 करोड़** का प्रावधान

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को  
उनके पोषण को मजबूत करके सशक्त बनाने  
के लिए **नमो श्री योजना** के  
तहत **₹750 करोड़** का प्रावधान

**दुनिया का सबसे लंबा 30 किलोमीटर अविच्छिन्न**  
साबरमती रिवरफ्रंट अहमदाबाद-गांधीनगर  
मिफ्ट सिटी के ट्राइसिटी के रूप  
बनेगा अग्रणी सीमा चिह्न

सुनियोजित शहरी प्रबंधन के लिए **नवसारी,  
गांधीधाम, मोरबी, वापी, आनंद, मेहसाणा  
और सुरेन्द्रनगर/वडवान** को नगर पालिकाओं से  
परिवर्तित कर **10 महानगर पालिकाओं का दर्जा**  
दिया जाएगा

गुजरात में स्वच्छता के लिए  
जन आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए  
**निर्मल गुजरात 2.0 अभियान** के लिए  
**₹2500 करोड़** का प्रावधान

बाल्यकाल से लेकर जीवन के हर अवस्था में  
पौष्टिक भोजन उपलब्ध करने के  
उद्देश्य से पोषण योजनाओं में  
लाभार्थियों का कवरेज बढ़ाने के लिए  
**सुपोषित गुजरात मिशन** की घोषणा-  
बालकों, किशोरियों और महिलाओं का  
पोषण होगा सुनिश्चित

आदिवासी विकास के लिए  
**₹330 करोड़** का प्रावधान  
आदर्श आवासीय विद्यालय, आश्रम विद्यालय  
एवं ई.एम.आर.एस. को मिलाकर  
कुल 230 विद्यालयों के अनुमानित  
1 लाख 42 हजार विद्यार्थियों को  
आर्थिक सहायता हेतु **₹35 करोड़** का प्रावधान

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के  
तहत एम्पेनलड 2539 निजी  
और सरकारी अस्पतालों में  
₹10 लाख तक का  
कैशलेस इलाज उपलब्ध करने के  
लिए **₹3190 करोड़** का  
प्रावधान

NFSA राशन कार्ड धारकों को  
प्रोटीन युक्त पोषणसम आहार  
उपलब्ध कराने हेतु तुवर दाल  
और चना के वितरण के लिए  
**₹660 करोड़** का  
प्रावधान

किशानों को ग्रिप और  
रिप्लंकर प्रणाली स्थापित  
करने में मदद करने के लिए  
गुजरात ग्रीन रिवॉल्यूशन कंपनी के  
तहत **₹2500 करोड़** का  
प्रावधान

आत्मनिर्भर गुजरात नीति के तहत  
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को  
बढ़ावा देने के लिए  
**₹1550 करोड़** का प्रावधान

स्वर्णिम जयंती शहरी विकास  
योजना के माध्यम से शहरी क्षेत्रों में  
बुनियादी सुविधाओं के लिए  
**₹638 करोड़** का प्रावधान

सोलर रूफटॉप योजना के  
तहत उपभोक्तकों को  
सहायता प्रदान करने हेतु  
**₹993 करोड़** का प्रावधान

राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन और निराधार  
वृद्धजनों के लिए राज्य सरकार की  
वित्तीय सहायता के तहत अनुमानित  
99 लाख लाभार्थियों को मासिक पेंशन देने  
हेतु **₹1290 करोड़** का प्रावधान



हर वर्ग के सर्वांगीण और संतुलित विकास के  
साथ यह बजट बना अमृतकाल का अमृत बजट

**International Conference**  
on  
**Resurgent Bharat on the Global Canvas**

**अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन**  
**वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान**  
25-26 फरवरी, 2024, नई दिल्ली



**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**  
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः॥**

प्राचीन काल में, इस देश (भारत) में जन्में लोगों के सामीप्य द्वारा  
(साथ रहकर) पृथ्वी के सब लोगों ने अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ली।

( मनुस्मृति 2/20 )

ISBN : 978-81-953575-5-0

प्रकाशन तिथि : 25 फरवरी, 2024 फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2080, युगाब्द 5124

अक्षर संयोजन : अजीत झा, सागर कम्प्यूटर, जयपुर

मुद्रक : पिंगसिटी बुक मैनुयुफैक्चर्स, कूकस, जयपुर

प्रकाशित लेख में लेखकों के निजी विचार हैं, इससे संपादक-मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।



**परामर्श समिति**

प्रो. जे.पी. सिंघल

महेन्द्र कपूर

जी. लक्ष्मण

महेन्द्र कुमार

शिवानन्द सिंदनकेरा

डॉ. निर्मला यादव

प्रो. प्रगनेश शाह

डॉ. नारायण लाल गुप्ता

संजय कुमार राउत

डॉ. प्रदीप खेडकर

डॉ. कल्पना पांडे

**संयोजक**

प्रो. वीरेन्द्र भारद्वाज



**सह संयोजक**

प्रो. मनोज सिन्हा

प्रो. गीता भट्ट



**प्रबन्ध सम्पादक**

महेन्द्र कपूर



**सम्पादक**

प्रो. राजेश कुमार जांगिड़

JNU, New Delhi

**सम्पादन सहयोगी**

डॉ. मनीष, के. वि. हरियाणा

प्रो. नन्द किशोर, के.वि. हरियाणा

डॉ. के. किरण कुमार, के.वि. पंजाब

डॉ. अश्विनी कुमार, के.वि. पंजाब

प्रो. मनीष, के.वि. गुजरात

प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, SSVV Varanasi, UP

प्रो. राजेश जोशी रा.म., राजस्थान

डॉ. गुरुदेव वन्द, SKUAST-K, Jammu

डॉ. संगमेश, JNU New Delhi

डॉ. योगेश कुमार गुप्ता, के.वि. हि.प्र.

डॉ. जसपाल वरवाल, जम्मू वि.वि.



## International Conference

on

## Resurgent Bharat on the Global Canvas

अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

## वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान

25-26 फरवरी, 2024, नई दिल्ली

### Patrons

**Prof. J. P. Singhal**, President, ABRSM & former Vice-Chancellor, Rajasthan University

**Prof. Yogesh Singh**, Vice-Chancellor, University of Delhi

**Prof. Santishree Dhulipudi Pandit**, Vice-Chancellor, JNU

**Prof. Nageshwar Rao**, Vice-Chancellor, IGNOU

**Prof. Kuldeep Agnihotri**, Ex-Vice-Chancellor, CUHP

**Prof. R. K. Mittal**, Vice-Chancellor, CBLU

**Prof. Ashok Kumar Nagawat**, Vice-Chancellor, Delhi Skill & Entrepreneurship University

**Sh. Mahendra Kapoor**, Organisation Secretary, ABRSM

**Sh. G. Laxman**, Joint Organisation Secretary, ABRSM

### Convenor

**Prof. Virender Bhardwaj**

Principal, Shivaji College, DU 09810265936

### Co-convenor

**Prof. Manoj Sinha**

Principal, Aryabhata College, DU 09868877699

**Prof. Geeta Bhatt**

Director, Non-Collegiate Womens' Education Board, DU 09810897367

### Advisory Committee

Prof. Sushma Yadav

Prof. Balram Pani

Prof. Sriprakash Singh

Dr. Nirmla Yadav

Sh. Mahendra Kumar

Sh. Shivanand Sindhankera

Prof. Pragnesh Shah

Sh. Sanjay Kumar Raut

Prof. A. K. Bhagi

Prof. H. C Jain

Sh. Jagdish Kaushik

Prof. Rama

Prof. Praveen Garg

Prof. Narendra Singh

Prof. Poonam Kumaria

Prof. Kalpana Pande

Prof. Pradip Khedkar

Sh. P. Venkat Rao

Sh. Mohan Purohit

Sh. Bhagwati Singh

### Organising Committee

Prof. N.L. Gupta

Prof. Rakesh Pandey

Prof. Arobind Mahato

Prof. Madhav Govind

Prof. Rajesh Jangid

Prof. Manoj Khanna

Prof. Rajeev Aggarwal

Prof. T. S. Rana

Prof. Savita Mittal

Prof. V. S. Negi

Sh. Ved Prakash

Sh. Rajesh Paliwal

### Management Committee

Prof. Suneel Kashyap

Prof. Yogesh Kumar

Dr. Sanjay Kumar

Dr. Manoj Rana

Dr. Sangmesh

Dr. Naresh Kumar

Dr. Ram Singh

Dr. Pawan Saini

Dr. Meghraj Meena

Sh. Dinesh Nagar



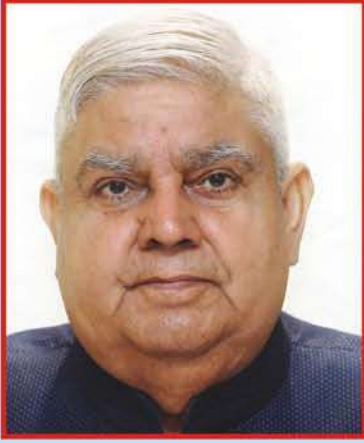
सत्यमेव जयते

उपराष्ट्रपति

भारत गणराज्य

VICE-PRESIDENT  
REPUBLIC OF INDIA

## MESSAGE



I extend my warm wishes to the Shaikshik Foundation for organising an International Conference titled 'Resurgent Bharat on the Global Canvas' (वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान) on 25th and 26th February, 2024.

Bharat is the living testament of a rich cultural and civilisational heritage that believes and practices the philosophy of 'Vasudhaiva Kutumbakum'- the entire world is one family. The 21st century is witnessing the resurgence of Bharat in multiple arenas- the scientific expeditions in space, digital public initiatives facilitating millions with the welfare schemes, transparency in governance, lending a helping hand to other countries during the pandemic with indigenously made vaccines, establishing manufacturing hubs, strengthening military and technological base. The National Education Policy 2020 has been envisioned so as to provide holistic development, knowledge and skills which will take the country forward in the 'Amrit Kaal', and enable the future generations to overcome the challenges in becoming a developed nation.

This International Conference will provide an adequate platform to discuss and deliberate over various subjects ranging from technology to tradition, soft diplomacy to sustainable development and governance to global leadership. My best wishes to the Organising Committee.

**Jagdeep Dhankhar**

New Delhi

9th February, 2024

धर्मेन्द्र प्रधान  
धर्मेश्वर प्रधान  
Dharmendra Pradhan



मंत्री  
शिक्षा; कौशल विकास  
और उद्यमशीलता  
भारत सरकार  
Minister  
Education; Skill Development  
& Entrepreneurship  
Government of India

## MESSAGE



I am happy to know that Shaikshik Foundation, Delhi is going to organise an International Conference on "**Resurgent Bharat on the Global Canvas (वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान)**" on 25-26 February, 2024.

The stature and profile of our great nation, Bharat have exponentially grown over the years, in particular, under the dynamic and visionary global leadership of our Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi Ji. Bharat's ancient philosophy of "Vasudhaiva Kutumbakam" has defined its world view, propagating the lasting values of peace and prosperity. Bharat today is 'Vishwa Mitra' and it defines its own foreign policy and conducts its global affairs on its own terms. The innate strength of India as a peace loving nation in contrast to the boisterous global politics of violence and expansionism has helped it emerge as a voice of sanity. As a credible voice of Global South, Bharat is now a new rallying point of less endowed nations.

The international Conference on "Resurgent Bharat on the Global Canvas", I am sure, will capture the new and emerging role of Bharat in the global affairs.

I wish the International Conference all success.

  
(Dharmendra Pradhan)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा



कौशल भारत, कुशल भारत

# अनुक्रमणिका/ CONTENTS

पृष्ठ संख्या

सम्पादकीय

9

## Part-1/ भाग-1

1. विकसित भारत की आधारपीठिका : भारत की महान और समृद्ध ज्ञान परम्परा 12  
□ प्रो. राजेश कुमार जोशी
2. विकास में स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरण 16  
□ डॉ. मंजु गुप्ता
3. समान नागरिक संहिता और भारतीय मीडिया: एक आलोचनात्मक अध्ययन 18  
□ अवनीश कुमार मिश्रा<sup>1</sup>, प्रो. अजय भूपेंद्र जयसवाल<sup>2</sup>
4. विकसित भारत @ 2047 25  
□ डॉ. अशोक कुमार महला<sup>1</sup> डॉ सुलोचना<sup>2</sup>
5. Digital India and Media & Information Literacy 28  
□ Dr. Tarseem Singh
6. Cultivating Sustainability: A Comprehensive Analysis of Smart Agricultural Practices for a Greener Tomorrow 30  
□ Dr. K. Bhaskar
7. Skill Development and Digital India 35  
□ Dr. K.C. Mahadesha
8. Waste-to-Wealth : Indian Innovative Methodologies in Resource Utilization 38  
□ Deepak Pathania<sup>1</sup>, Kajol Gorla<sup>2</sup>, Sunil Dhar<sup>3</sup>, Richa Kothari<sup>4</sup>
9. The Media of Present Bharat 50  
□ Prof. (Dr.) Kaushal Kishore Srivastava<sup>1</sup> Prof. (Dr.) Alok Srivastava<sup>2</sup>
10. Resurgence of Shri Anna- Minor Millets: A Comprehensive Study on Product Development and Sensory Evaluation for Unlocking their Nutritional & Health Potential 53  
□ Dhruv Swati<sup>1</sup>, Gajjar Dhvani<sup>2</sup>
11. Linkage of Sustainable Agriculture with Quality of Life: A Quantitative Assessment 60  
□ Harmanpreet Singh Kapoor<sup>1</sup>, Arvind Goswami<sup>2</sup>, Rajesh Kumar Jangir<sup>3</sup>, Vinod Kumar<sup>4</sup>
12. Women Led Development and Role of Education 63  
□ Nidhi Mishra
13. Understanding Geopolitical Situations and Its Implications on Manipur's Violence 67  
□ Tayenjam Priyokumar Singh

14. Knowledge Management in Higher Education Institutions in India :  
A Frame Work for Academic Excellence on Nation Building 72  
□ Dr. J.Vivekavardhan<sup>1</sup> Mrs. Ammaji.Rajitha<sup>2</sup>
15. Harmonizing Agricultural Policies with UN Sustainable Development Goals :  
Through Agroecosystem Approach 78  
□ Arvind Goswami<sup>1</sup>, Rajesh Kumar Jangir<sup>2</sup>, Harmanpreet Singh Kapoor<sup>3</sup>, Vinod Kumar<sup>4</sup>
16. Development Led by Women: An Accelerating Impact Unleashing the Potential for a  
More Just and Prosperous Future 82  
□ Dr Jayshri Bansal<sup>1</sup>, Prof. (Dr.) Pratosh Bansal<sup>2</sup>, Sushma Khatri<sup>3</sup>

### Part-2/ भाग-2

17. आत्मनिर्भर भारत की दिशा में गाँव के बढ़ते कदम... 86  
□ डॉ. राजेश कुमार शर्मा
18. Present Scenario of Indian Knowledge System in Higher Education Institutions 90  
□ Eluri Yadaiah<sup>1\*</sup>, Viplov Duth Shukla<sup>2</sup>, Ravi Kumar Chegoni<sup>3</sup> and Busi Anil Kumar<sup>4</sup>
19. भारतीय समाज में मीडिया की भूमिका : एक आलोचनात्मक अध्ययन 96  
□ गोपालम् गुप्ता<sup>1</sup> विशाल गुप्ता<sup>2</sup>
20. भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व : स्वाधीनता से सन् 1989 तक का सफर 101  
□ धारासिंह कुशवाहा
21. Advertising Regulation and Children's Rights : Protecting Young Audiences. 104  
□ Prabhat Singh
22. Atma Nirbhar Bharat – Striding Forward with Self Reliance 119  
□ Dr. Manas Naskar<sup>1</sup> Dr. Purnima Mallick<sup>2</sup>
23. Surrogacy Regulation Act, 2021 : Challenges and Prospects 128  
□ Dr. Alka Mudgal
24. The Media's Impact on Present-Day Bharat : Special Reference to Digital Media 135  
□ Dr. Yogesh Kumar Gupta<sup>1</sup> Sweta<sup>2</sup>
25. एकात्म मानव दर्शन : मानवाधिकार का सार 139  
□ डॉ० अजय भूपेन्द्र जायसवाल<sup>1</sup> पुलत्स्य शुक्ला<sup>2</sup>
26. जैविक कृषि: मानव का प्रकृति के साथ पारस्परिक आश्रय 142  
□ धर्मनारायण वैष्णव<sup>1</sup> दिनेश कुमार शर्मा<sup>2</sup>
27. प्राचीन भारत का ज्ञान : योग, आयुर्वेद और संस्कृति 145  
□ डॉ. ममता जोशी
28. भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में योग, आयुर्वेद, शिक्षा एवं संस्कृति 147  
□ प्रगति सचान<sup>1</sup> प्रो. नन्द किशोर<sup>2</sup>



29.	वर्तमान युग की कृत्रिमता में वास्तविक ज्ञान प्रणाली की आवश्यकता : भारतीय ज्ञान प्रणाली □ डॉ. अरूणा शर्मा	151
30.	विवाह संस्था के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ : महिला सशक्तीकरण के लिए घातक □ सुश्री कौशिकी त्रिवेदी	156
31.	विश्व में हिन्दी की दशा एवं दिशा □ कमलेश कुमार जोशी	160
32.	संस्कृत भाषा एवं साहित्य : वैश्विक नेतृत्व की अपार संभावनाएँ □ डॉ. सत्यप्रिय	163
33.	Indian Knowledge System and Exploring the Ways to Understand the Self through Patañjal's <i>Yoga Sutra</i> □ Dr. Sindhu Poudyal	169
34.	Traditional Indian Ayurvedic Medicinal Formulation as a Potential Solution for Antimicrobial-Resistant Microbes : A Comparative Study with Vancomycin □ D. Amey <sup>1</sup> , Renu Dixit <sup>2</sup> , M. Ravi Sankar <sup>3</sup>	173
35.	Unveiling the tapestry of the Indian Knowledge System : Past, Present and Future Perspectives □ Prof. Rohinikumar S. Hilli <sup>1</sup> & Dr. Pranesh Shantaram <sup>2</sup>	180
36.	The Science of Living and Hinduism □ Prof. Anil Kumar	184
37.	Swami Vivekananda and the Sociology of Vedanta □ Chandan Panda	188
38.	Sanskrit Manuscripts of Koch Kingdom in Terms of Integral Indic Culture □ Mr. Jyotiskaranjan Sarkar	194
39.	Force and Rastradharma in Shantiparva: War as a Moral Tool in Statecraft □ Papia Mitra	197
40.	Unleashing the Rich Tapestry of the Indian Knowledge System □ Jasvant Mandloi <sup>1*</sup> (Corresponding Author) Prof. (Dr.) Pratoosh Bansal <sup>2</sup> · Dr Jayshri Bansal <sup>3</sup>	202
41.	Agricultural Science in Sanskrit Literature under Indian Knowledge System □ Dr. Sankar Chatterjee	213
42.	Bathukamma : The Festival of Flowers □ Dr. G.V. Snigdha Raj	216
43.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : समग्र अवलोकन □ डॉ. दीपक कुमार अवस्थी	219
44.	उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बहुआयाम एवं नवाचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में □ प्रोफेसर अमरसिंह मूनपरिया	223

45. National Education Policy (2020) in Higher Education Level : Problems and Prospects 227  
 □ Dr. Anil Kumar Biswas
46. Fostering Reflective Minds: The Intersection of Metacognition and Holistic Education in NEP 2020 233  
 □ Dr. Amit Ahuja<sup>1</sup> Ms. Rajani Upadhyay<sup>2</sup>
47. Implementing NEP 2020 Through Governance and Technology 238  
 □ Anupam Bera<sup>1</sup>, Dr. Mallinath Mukhopadhyay<sup>2</sup>

### Part-3/ भाग-3

48. Sri Aurobindo's Integral Education : Navigating Humanity's Evolutionary Crisis Through National Education Policy 2020 243  
 □ Dr Richa Tiwari
49. उदार-सौम्य राजनय और वैश्विक नेतृत्व 249  
 □ प्रो. डॉ. मनोज कुमार बहरवाल
50. वैश्विक कल्याण का पाथेयदाता भारत 253  
 □ डॉ. ओम प्रकाश पारीक
51. मूल संविधान में प्रदर्शित भारतीय संस्कृति के तत्त्व : संवैधानिक व्याख्या में महत्त्व 256  
 □ अमृता वर्मा
52. India's Soft Power and Leader as a Global 259  
 □ Dhvani Jain
53. Resurgent Bharat as a Cultural Powerhouse on the Global Canvas 265  
 □ Dr. Smita Deshmukh
54. Bharatiya, Soft Diplomacy and Power Building : Resurgent Bharat as a Global Icon 269  
 □ Dr. Gopal Chandra Pal
55. Relevance of Kautilya's idea of diplomacy in Contemporary World Politics 272  
 □ Dr. Subhash Singh
56. Sports and Health Science: Catapulting to the Global Arena 281  
 □ Prof(Dr.) Mukesh Patel<sup>1</sup> , Dr.Kajal Trivedi<sup>2</sup>
57. Emerging Significant Dimensions of India's Soft Power Diplomacy in the Contemporary Global Politics: An Analysis 283  
 □ Dr. L. Thirupathi<sup>1</sup> , Dr.E. Yadaiah<sup>2</sup>

# Editorial

Resurgent Bharat emerges as a formidable force on the global canvas, exhibiting its prowess in various spheres. Economically, it surges with innovation and entrepreneurship, attracting investments and fostering growth. Technologically, Bharat's advancements in AI, space exploration, and renewable energy redefine global standards. Culturally, its rich heritage captivates the world, fostering understanding and appreciation. Diplomatically, Bharat plays a pivotal role in shaping international discourse, advocating for peace and cooperation.

In the last decade, the Indian economy has moved from the tenth largest economy in the world to the fifth largest economy. This is the result of continuous and sustained higher economic growth rate of the economy in comparison of the other emerging, large and developed economies of the world. Macroeconomic indicators are showing that the Indian economy continues to be in a strong position and is playing an important role in world economic growth. Increasing spending on infrastructure provides a two-way boost to the economy. It creates a higher level of aggregate demand and also increases the productive capacity of the economy. It works on demand as well on supply side of the economic activity in the economy.

India moved from 'fragile five' economies of the world in 1991 to 'top five' economy of the world in 2023, participating in the third uppermost contribution to worldwide growth every year. Today the entire world is surprised with India's economic growth rate. India's economic growth rate is a reflection of the country's enormous potential in global prosperity. This economic growth rate also reflects its commitment to inclusive growth and social progress.

In last decade, our performance in improving the life of the people especially belongs to low income was recorded a unique pattern. Schemes like electricity to every house, water to every house, toilets for all, *Pradhan Mantri Awas Yojana*, *Ayushman Bharat*, *Pradhan Mantri Food Security scheme*, *Pradhan Mantri Jan Aushadhi Kendras* and free cooking gas cylinders for the poor household etc. have played a vital role in improving the life of this low income group people. The poor sections of the society have always been making a vital contribution in the development process of the nation but there were problems in resource distribution to this section of the society. JAM Trinity (*Jan Dhan*, *Aadhaar* and *Mobile*) solved this problem and helped in reaching the benefits of every government scheme directly to marginalized section of the society. Digital India and start up India have set unmatched standards in India. India is emerging as a world leader in digital economy. The expansion of the Internet connectivity, the low cost of the Internet and the availability of mobile phones have made information and services accessible to the common people in remote rural areas of the country. Availability of broadband connectivity to remote villages, Aadhaar and biometric identification systems has played a central role in this digital ecosystem.

On January 22, 2024 people of India have witnessed the *Pran Pratishtha of Bhagwan Shri Ram Mandir* in Ayodhya after five hundred years of problematic and continuous struggle. The *Pran Pratishtha of Bhagwan Shri Ram Mandir* represents a wonderful portrait of our constitution, democracy, fulfilment of faith and promise of the citizens. Nation is now determined to eliminate the colonial remaining and to build a system based on its *Swa*. The enactment of *Bharatiya Nyaya Sanhita, 2023* by repealing and replacing Indian Penal Code of 1860, the making of a new Parliament House according the present and future requirements of the nation, *Rajpath* ceases to exist and has become *Kartavya Path*, shows that India is moving towards a *swa-aadharit* system.

India's ancient knowledge has always attracted and illuminated the rest of the world. Indian ancient knowledge tradition inspired by *Vasudhaiva Kutumbakam* (One family- One Earth – One future) and *Sarve Bhavantu Sukhinah* seems to be the only path for the welfare of the world. The ancient knowledge of India, Yoga, has given the world the way to remain healthy and happy. After adopting Yoga practice, people of the world have started believing that Yoga can make unprecedented contribution to healthy personal and social life. India's ancient rich knowledge system includes extensive knowledge in the fields of philosophy, science, Ayurveda, mathematics and spirituality etc. Which is available in *Vedas, Upanishads, Aranyakas* and in epics like *Ramayana* and *Mahabharata*. This ancient Indian knowledge has deeply contributed to the development of human civilization for centuries. India implemented the National Education Policy 2020, based on the essence of India and is student-centric, in the light of the rich ancient Indian knowledge tradition.

This volume is broadly divided into three parts. Part first, deals with Key Drivers in '*Amrit Kaal*'-Towards Developed Nation @2047. Part second, deals with Self Reliance - Ancient Knowledge System to National Education Policy. Part third incorporate '*Vasudhaiva Kutumbkam* - Inclusivity as Instrument of Global Leadership.

In the end, I want to thank the authors for their insightful and much useful contribution on the most relevant and vibrant theme of the International Conference '*Resurgent Barat on Global Canvas*'

*Sadar*

**Editor**

## Part-1/ भाग-1

Key Drivers in 'Amrit Kaal'  
To wards a Developed Nation @ 2047



'अमृतकाल' में प्रमुख क्षेत्र -  
विकसित राष्ट्र @2047 की ओर

आलेख : 1 से 16 तक

# विकसित भारत की आधारपीठिका : भारत की महान और समृद्ध ज्ञान परम्परा

□ प्रो. राजेश कुमार जोशी

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ के उद्घोष से भारतवर्ष ने सम्पूर्ण संसार को कुटुम्ब का दर्जा दिया। ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः’ के माध्यम से समस्त मानवता की सुख समृद्धि की कामना की गई। विश्व की पहली काव्य संहिता ऋग्वेद में प्रार्थना और संकल्प है कि हम बुरा कार्य न करेंगे सब ओर से हमारे कल्याणकारी कार्य ही आएँ – ‘आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।’<sup>1</sup> वेद के अतिरिक्त यह उदात्त अभिलाषा अन्यत्र नहीं मिलती कि मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ – ‘मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।’<sup>2</sup>

प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अनेक स्रोत बताते हैं कि विदेशी विद्वान ज्ञान प्राप्त करने के लिये बहुत कष्ट सहकर लम्बी और कठिन यात्राएँ करके भारत में आते थे तथा संस्कृत ग्रन्थों की अमूल्य निधि अपने देश में ले जाते थे। हजारों वर्षों से चली आ रही मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में भारत की ज्ञान परम्परा ही केन्द्र में रही है। वर्तमान समय के प्रदूषण के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक त्रिविध आयामों को प्राच्य ज्ञान साधना के माध्यम से ही संशुद्ध किया जा सकता है। धरती और पर्यावरण को भावी पीढ़ियों के लिये सुरक्षित और संरक्षित रखने तथा सतस विकास की वैश्विक प्रक्रिया को संस्कृत में वर्णित मूल्यों से बचाया जा सकता है।

**प्राच्य साहित्य में वर्णित प्रमुख शिक्षाएँ ही अन्तिम विकल्प –**

जीव सृष्टि के संरक्षण के लिए पर्यावरण के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों का संरक्षण और सम्वर्द्धन अनिवार्य है। भौतिक प्रदूषण का प्रारम्भ मानसिक विचारों से होता है। वैचारिक प्रदूषण हिंसाएँ आतंक आदि के रूप में भयानक, विषाक्त और अत्यन्त मारक हैं। कुत्सित मानसिक विचारों और भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य आज न तो स्वयं सुखी है और न ही दूसरों को शान्ति से रहने देता है। ऐसे समय में प्राच्य भारतीय साहित्य में वर्णित शिक्षाओं को पुनः वैश्विक पटल पर सम्प्रसारित करना अनिवार्य है। प्राच्य साहित्य में वर्णित शैक्षिक मूल्यों के सम्प्रसार से धारणक्षम विकास और उपभोग दोनों को संयत किया जा सकता है।<sup>3</sup> यह प्राच्य शिक्षाएँ एकात्म मानव दर्शन से ओतप्रोत हैं।

हमारे प्राच्य शास्त्रों में विविध शिक्षाओं और कर्तव्यों के रूप में वर्णित मूल्य समस्त मानव जाति की अमूल्य धरोहर हैं। विकास और

उपभोग के समुचित पल्लवन में वेदों में आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, वैश्विक और राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ी महान् शिक्षाएँ हैं।<sup>4</sup>

**भारत का महान अध्यात्म विज्ञान –** भारत अपने प्राचीन अध्यात्म के कारण ही आज विश्व में जाना जाता है। उपनिषदों में अध्यात्म विज्ञान को विद्या कहा गया है। मटेरियल साइंस के रूप में प्रेयस ज्ञान को अविद्या कहकर जीवन के भौतिक उन्नयन के लिए पहले अविद्या तदनु विद्या की आवश्यकता प्रतिपादित की गई है। मात्र भौतिक सुख साधनों के मकड़जाल में उलझे रहने वाले लोगों का कड़ा सन्देश देते हुए ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है – **अविद्याया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।**

संस्कृत भाषा नहीं अपितु जीवन पद्धति है। संस्कृत ने प्राचीन काल से ही विश्व को विविध विद्याओं का ज्ञान प्रदान किया है। संस्कृत का शाब्दिक अर्थ है – शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत और निर्दोष। संस्कृत में अक्षर के पिछे लगने वाले विसर्ग (ह) के उच्चारण से कपालभाति सहज में हो जाती है जबकि अनुस्वार (म) का उच्चारण भ्रामरी प्राणायाम कराने में समर्थ है। संस्कृत भारतवर्ष की आत्मा है। यह एक भाषा ही नहीं अपितु जीवन पद्धति है। इसमें चराचर जगत के कल्याण की बातें हैं। संस्कृत ही वह भाषा है जो उपनिषदों के माध्यम से विश्वबन्धुत्व का उद्घोष करती है जिसमें सभी प्राणी एक समान हैं क्योंकि सब में एक समान निर्विकार आत्मा का निवास है। उपनिषद् कहते हैं कि जिस ज्ञानी व्यक्ति में सब प्राणी अपना आप अर्थात् आत्मा ही हो जाते हैं, उस एकता के दर्शन वाले में कैसा मोह और कैसा शोक ? अर्थात् ऐसे ज्ञानी व्यक्ति का व्यवहार सबके प्रति पक्षपात रहित होगा। सब उसके अपने होंगे। अपने और पराये का भेद समाप्त हो जायेगा –

**यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।**

**तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।<sup>5</sup>**

वैदिक और पौराणिक साहित्य के बाद आर्षकाव्य रामायण एवं महाभारत से प्रारम्भ हुए देवभाषा के प्रवाह में हजारों काव्यों का उद्भव हुआ है। इनके साथ ही विज्ञान, गणित, रसायन शास्त्र, धातु विज्ञान, खगोल, ज्योतिष, समुद्रशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, साहित्य शास्त्र, आयुर्वेद, संगीत और दर्शनशास्त्र आदि ग्रन्थों के लिये संसार भारतवर्ष का ऋणी है। संस्कृत में गणित, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल, खगोलशास्त्र

आदि अनेक विद्याओं के बीज विद्यमान हैं। अथर्ववेद में आयुर्वेद के अनेक तत्त्वों जैसे शरीरसंरचना, रोग, रोगों के कारण और औषधि-वनस्पतियों का उल्लेख है।<sup>6</sup> राजनीति सम्बन्धी ज्ञान यथा राजा के कर्तव्य, युद्धनीति, दण्डनीति, सभा, समिति आदि के वर्णन पहली बार वैदिक साहित्य में ही प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में भूमि को माता कहे जाने का पहला वैश्विक सन्दर्भ प्राप्त होता है - 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'<sup>7</sup>

अथर्ववेद का सम्पूर्ण भूमि सूक्त वैदिक राष्ट्रवाद का अद्वितीय उदाहरण है। इसी सूक्त में मातृभूमि के लिये सब कुछ आहूत करने की भावना इन शब्दों में अभिव्यक्त हुई है - 'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।'<sup>8</sup> यहाँ एक बात अच्छी तरह से समझी और समझाई गई है कि व्यक्ति तभी सुरक्षित रह सकता है जब राष्ट्र सुरक्षित हो। इसी आशय से एक मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे धरती माता अर्थात् राष्ट्र! आप मेरी हिंसा नहीं करें, मैं आपकी हिंसा नहीं करूँ - पृथिवी मातर्मा मां हिंसीर्मा अहं त्वाम्।<sup>9</sup> इसी प्रकार एक छोटे से वाक्य में शासक के आचरण के विषय में कहा गया है कि ब्रह्मचर्य और तपस्या के द्वारा राष्ट्र की रक्षा करता है - ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।<sup>10</sup> राजा किंवा शासक के आदर्श आचरण और कर्तव्यों का यह मूल सूत्र है। इस सूत्र की विस्तृत और विशद व्याख्या की जा सकती है। स्मृतिग्रन्थों और धर्मशास्त्रों में इसी मूल सूत्र का विस्तार है। कौटिल्य अर्थशास्त्र राजनीतिक सिद्धान्तों का बहुमूल्य ग्रन्थ है।

संस्कृत ने चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय के रूप में चिकित्साशास्त्र के अनेक ग्रन्थरत्न प्रदान किये हैं। पाश्चात्य देशों में आयुर्वेद पर गम्भीर शोधकार्य किया जा रहा है। ज्योतिष और गणित के क्षेत्र में वराहमिहिर और आर्यभट्ट ने विश्व में सबसे पहले इन भारतीय विद्याओं का प्रकाश प्रसूत किया। भाषाशास्त्र और व्याकरण के क्षेत्र में यास्क और महामुनि पाणिनि का नाम अप्रतिम है। आधुनिक तुलनात्मक भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र के ये ही मूलाधार ग्रन्थ रहे हैं। वास्तुकला के क्षेत्र में शूल्वसूत्र और समरांगण-सूत्रधार जैसे ग्रन्थ अति प्राचीन काल से मार्गदर्शक रहे हैं। कृषि, पादप विज्ञान, पशुपालन क्षेत्र में भी संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ विद्यमान रहे हैं। दर्शन क्षेत्र में वेद, उपनिषद्, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, मीमांसा, वेदान्त, जैन और बौद्ध दर्शन के संस्कृत ग्रन्थों का यौगदान सर्वविदित है। भारतीय दर्शन ग्रन्थों में वर्णित विलक्षण विद्याओं का इतिहास जानने के लिये संस्कृत वाङ्मय से परिचित होना आवश्यक है। यदि सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय का परिचय सम्भव नहीं हो तो कम से कम तत्तद् विषयों के ज्ञान के लिए इन ग्रन्थों का बार-बार अनुशीलन अपरिहार्य है। भारतीय योग साधना का परचम भी भारतीय दर्शन की दिग्विजय है। महामुनि पतंजलि कृत योगसूत्र से प्रारम्भ हुआ योग दर्शन आज सम्पूर्ण विश्व को प्रद्योतित कर रहा है।

**भूगर्भशास्त्र** - भूगर्भशास्त्र में चक्रपाणि मिश्र का ग्रन्थ विश्ववल्लभ नाथद्वारा राजस्थान पुस्तकालय में सुरक्षित महत्पूर्ण सूचनाएँ

देता है। इस ग्रन्थ के अनुसार यदि अर्जुन वृक्ष के निकट बांबी और अर्जुन का वृक्ष तीन हाथ ऊँचा हो तो उसकी पश्चिम दिशा में साढ़े तीन पुरुष की गहराई में जल का मिलना निश्चित है। यदि शिलाओं के साथ-साथ पीली बजरी भी हो तो वहाँ जल मीठा होगा -

**वल्मीकोऽर्जुन सोम्यगो यदि भवेद् हस्तत्रये चार्जुनो।**

**वारुण्यां पुरुषैस्त्रिभिः परिमितं साद्द्वैर्जलं निश्चितम् ॥**

**श्वेता भार्दनरे मुधूसररुचिर्गोधा ततः शर्करा।**

**पीता चानु शिला जलस्य निकटे तत्रास्ति संस्वादु च ॥<sup>11</sup>**

**पादप और कृषि विज्ञान** - बृहत्संहिता और उपवनविनोद कृषि, वृक्ष और पादपविज्ञान के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। बृहत्संहिता में मिट्टी का गुण बताते हुए कहा गया है कि कोमल भूमि सभी प्रकार के वृक्षों के लिये हितकर है, जिसमें तिलों की बुवाई करके उनमें फूल आने पर उन्हें मसल देना चाहिये। मिट्टी तैयार करने का यह पहला कार्य है जो वर्मी कंपोस्ट से भी अधिक गुणकारी माना गया है -

**मृद्धी भूः सर्ववृक्षाणां हिता तस्यां तिलानु वपेत्।**

**पुष्पितांस्तांश्च मृदनीयात् कर्मैतत्प्रथमं भुवः ॥<sup>12</sup>**

बीज बोने से पहले यदि उसे अंकोल वृक्ष के सैकड़ों फलों की खल में अथवा उनके तेल में अथवा श्लेष्मातक फल में रखा जाए और फिर नारियल के छिलके से मिश्रित करके बोया जाए तो वह शीघ्र उगता है और शाखाएँ फल से भर जाती हैं -

**शतशोकोलसम्भूतफलकल्केन भावितम्।**

**एतत्तेलेन वा बीजं श्लेष्मातकफलेन वा ॥**

**वापितं करकोन्मिश्रमृदि तत्क्षणजन्मकम्।**

**फलभारान्विता शाखा भवतीति किमद्भुतम् ॥<sup>13</sup>**

उपवनविनोद में पौधों को सींचने की विधि में बताया है कि बिना सींचे और अधिक सींचने से फलदार पौधों की शाखाएँ सूख जाती हैं।<sup>14</sup>

कौटिल्य अर्थशास्त्र (24. 41. 33) में भी बीज बोने से पहले अलग-अलग प्रकार से उन्हें रखकर बोने के लिये तैयार करने की विधि बतलाई गई है।<sup>12</sup> इस प्रकार संस्कृत ग्रन्थों में कृषि और पादप विज्ञान सम्बन्धी सूचनाएँ भरी पड़ी हैं, जिनका सम्यक ज्ञान प्राप्त करके उनसे लाभ लिया जा सकता है।

**ऐतिहासिक अनुशीलन के लिये संस्कृत की उपादेयता -**

भारतीय इतिहास जानने के लिये संस्कृत भाषा का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। उत्खननों में प्राप्त पुरातत्त्व सम्बन्धी सामग्री, शिलालेख, सिक्कों, मुद्राओं, ताम्रपत्रों, मूर्तियों, चित्रों आदि को समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य है। राजभाषा रहने के कारण अधिकतर प्राचीन अभिलेख संस्कृत भाषा में हैं। ज्ञान-विज्ञान की भाषा के कारण संस्कृत की प्रतिष्ठा 18वीं शताब्दी तक बनी रही। विशिष्ट अवसरों पर हिन्दू राजाओं द्वारा संस्कृत के प्रयोग की परम्परा रही है। अजन्ता-एलोरा के अधिकांश भित्ती चित्रों को जानने के लिये संस्कृत सुगमता

प्रदान करती है। संस्कृत के मूल ग्रन्थों को पढ़े बिना मात्र अनुवाद से निकाले गये ऐतिहासिक निष्कर्ष सन्दिग्ध हो सकते हैं। जैसे आर्य शब्द को जातिवाचक मानना, आर्यों का भारत के बाहर से आगमन मानना, वैदिक आर्यों को गोमांसभक्षी मानना और सिन्धु सभ्यता को वैदिक सभ्यता से प्राचीन मानना ऐसे ही इतिहास सम्बन्धी निष्कर्ष हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र के बिना मौर्य राज्य व्यवस्था को समझना युक्तिसंगत नहीं होगा। भारतीय संस्कृति की वर्णाश्रम व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, स्त्री धन, दाय भाग आदि का ज्ञान स्मृति ग्रन्थों, धर्मसूत्रों, महाभारत और पुराणों के अनुशीलन से ही सम्भव है। भारतीय समाज में समय-समय पर प्रविष्ट हुई कुरीतियों और अन्धविश्वासों के निराकरण के लिये संस्कृत का ज्ञान अत्यावश्यक है।

**वनस्पति शास्त्र** – लगभग 5000 ईसा पूर्व मुनि पाराशर विरचित वृक्षायुर्वेदाः के छः काण्डों में बीजोत्पत्ति से पादप बनने, उनकी शारीरिकी कार्य की, पुष्पांग, वर्गीकरण के साथ फलों और बीजों के विविध प्रकारों की विस्तृत व्याख्या की गई है। ध्यातव्य है कि पादपवर्गीकरण के शमीगणीय विभाजन को पढ़कर सर विलियम जोन्स ने लिखा था कि आधुनिक पादप वर्गीकरण के जनक केरोलस लिनियस ने यदि संस्कृत सीख ली होती तो वे भली प्रकार से अपने वर्गीकरण को विस्तार दे पाते। मुनि पाराशर ने ग्रन्थ के बीजोत्पत्ति काण्ड में कहा है 'पत्राणि तु वात आतप रंजकानि अधिगृहति'। अर्थात् पत्तियों को वात, आतप और रंजक (पर्णहरित) की आवश्यकता रहती है। यह सिद्धान्त प्रकाश-संश्लेषण की क्रियाविधि से सम्बद्ध है, जिसे आधुनिक विज्ञान मात्र 50 वर्ष पुरानी खोज बताता है।

**खगोल विज्ञान** – आधुनिक अवधारणा प्रयोगों द्वारा सिद्ध ज्ञान को ही प्रामाणिक ठहराती है। भारत के प्राच्य विज्ञान को तार्किक और प्रायोगिक न मानकर वे इसके प्रति उपेक्षित भाव रखा गया। सैकड़ों आविष्कार ऐसे हैं, जिनका श्रेय भारतवर्ष को जाना चाहिए था किन्तु भाषाविद्वेष के कारण भारत को यह श्रेय नहीं दिया गया। इसका ज्वलन्त दृष्टान्त 1500 वर्षपूर्व आर्यभट्ट विरचित आर्यभट्टीय ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने पृथ्वी के गोलाकार होने, भिन्न-भिन्न भागों में सूर्योदय एवं सूर्यास्त होने और सूर्यग्रहण के वैज्ञानिक कारण आदि के बारे में लिखा है। पृथ्वी पर चन्द्रमा की छाया को सूर्यग्रहण का कारण बताते हुए कहा गया है – 'छादयति शशीः सूर्यं शशीनं महती च भूच्छया।' इसी प्रकार ग्रन्थ के गणितपाद खण्ड के एक श्लोक का अर्थ है कि यदि वृत्त की परिधि 62, 832 और व्यास 2000 है तो उसका मान 3.1416 होगा। यह 'पाई' के सर्वप्रथम हल मान का उदाहरण है। दुर्भाग्य से यह श्रेय भारत को न देकर आधुनिक जगत की खोज मानते हुए 1543 ई. में ग्रीक के कॉपरनिकस को दे दिया गया। इसी प्रकार 'पाइथोगोरस प्रमेय' को उनसे 300 वर्ष पूर्व ही भारत में षड्वेदांगों में कल्पवेदांग के अन्तर्गत 'शूल्व सूत्र' के ऋषि बोधायन घटित कर चुके थे।

ऋग्वेद के भाष्यकार सायणाचार्य ने सूर्य के प्रकाश की द्रुतगति

का वर्णन करते हुए कहा है कि – 2022 योजन की दूरी अर्द्ध निमेष में पूर्ण करने वाले हे प्रकाश! तुम्हे नमस्कार।

भारत की प्राच्य खगोल विद्या में संवत्सर के महिनों का नाम किसी देवता के नाम से न होकर पूर्णतः खगोलीय घटनाओं पर आधारित हैं। खगोलीय घटनाओं के भारतीय दैनिक जीवन संस्कृति और धर्म में रचे-बसे होने का एक और प्रमाण पूर्णिमा, ऋतुओं व सूर्य संक्रान्ति से जुड़े व्रत, उत्सव और त्योहार हैं। देश में सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के दिन को विशेष महत्त्व देकर एक त्योहार के रूप में मनाया जाना इस बात को पुष्ट करता है कि भारत के त्योहार खगोलीय घटना पर आधारित हैं। इसी प्रकार शरदोत्सव और वसन्तोत्सव के आयोजन भी भारतवर्ष के प्रकृतिप्रेम को अभिव्यक्त करते हैं।

**रसायन शास्त्र** – आधुनिक विज्ञान में तत्त्वान्तरण की तकनीक भी वैदिक काल की ही देन है। रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन की पारे से सोना बनाने की विधि इसका प्रामाणिक उदाहरण है। नागार्जुन विरचित 'रस रत्नाकर' सहित पाँच ग्रन्थों में सात प्रकार की रसायनशालाओं और 32 से अधिक उपकरणों का वर्णन है। रसायन शास्त्र के सभी आयामों का चिन्तन और लेखन हमारे देश में होता रहा है, जिनमें विभिन्न रसायनों के शोधन, मिश्रण, प्रयोग आदि भी समाविष्ट हैं और धातुओं का खनन, शोधन, विनिर्माण आदि भी। प्राचीनकाल में धातु विज्ञान की भी सभी शाखाओं पर कार्य हुआ था, जिनमें धात्विकी और धातुकर्म अर्थात् मेटालिक्स और मेटोलॉजी दोनों समाहित हैं। धातु विज्ञान की इन दोनों शाखाओं पर संस्कृत में लिखे गये प्राचीन ग्रन्थों की हजारों वर्षों की परम्परा हमारे यहाँ उपलब्ध होती है, जिसमें आयुर्वेद के उन रसायन ग्रन्थों का एक पूरा इतिहास विद्यमान है, जिनमें धातुओं के लक्षण, उनका शोधन, स्वर्ण, लोह, ताम्र आदि का जारण, पारद (पारे) की प्राप्ति उसका जारण, शोधन आदि क्रियाएँ और उनसे सम्बद्ध अनेक अनुप्रयोग स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। दिल्ली में मैहरोली का लोह स्तम्भ भारत की प्राचीन धातु कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुए इस लोह स्तम्भ में कोई जंग नहीं लगा है।

अम्ल, क्षार और लवणों सहित 10 प्रकार के महारस, सहरस, साधारण रसों और इनकी परस्पर क्रियाओं से विद्युत उत्पत्ति (लैक्लांशी सेल के समान) का विवरण अगस्त्य संहिता में उपलब्ध है। क्या इसे प्राथमिक विद्युत सेलों का विश्व का सर्वप्रथम प्रयोग नहीं माना जाना चाहिये?

**गणित-विज्ञान** – 1114-1185 ई. के मध्य भारतीय गणित की विजय पताका फहराने वाले भास्कराचार्य द्वितीय का अभिदान सर्वविदित है। लीलावती, बीज गणित, करण-कौतुहल और सिद्धान्त शिरोमणि – यह चार ग्रन्थ आधुनिक गणित की नींव के प्रस्तर हैं। लीलावती को दशमलव आधारित गणित का पहला ग्रन्थ माना जाता है। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों की इस परम्परा में आचार्य वराहमिहिर,



आर्यभट्ट द्वितीय, भास्कर प्रथम, कालकाचार्य, मुंजाल, ब्रह्मदेव, पृथूदक स्वामी, ब्रह्मदेव, भोजराज, शतानन्द सदृश अनेक नाम हैं, जिनकी असंख्य विज्ञानपरक रचनाएँ आधुनिक विज्ञान की जन्मदात्री कृतियाँ हैं।

**राजनीति विज्ञान** – ज्ञान और दर्शन क्षेत्र में भी भारतीय दार्शनिकों और विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आधुनिक मान्यता में राजनीति विज्ञान का जनक अरस्तू को माना जाता है, जबकि भारतीय परम्परा में राजनीतिक चिन्तक अथवा विचारक के रूप में विश्वविद्यालयों में शुक्राचार्य, बृहस्पति, मनु, विदुर, भीष्म, भर्तृहरि और चाणक्य को पढ़ाया जाता है। इन भारतीय विचारकों में कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रणेता आचार्य चाणक्य को छोड़कर सभी राजनीतिक चिन्तक अरस्तू से तो बहुत पहले अपने विचारों से विश्व को लाभान्वित कर चुके थे।

युवाओं के लिए यह परमावश्यक है कि वे हमारे समृद्ध ज्ञान-भण्डार से परिचित हों, अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धावनत होकर उनके द्वारा प्रशस्त किये गये मार्ग का अनुसरण करें। प्राचीनकाल में जो कुछ ज्ञान दिया गया था, उसे हम उसी रूप में स्वीकार करें यह आवश्यक नहीं है। हमें उसमें यथावश्यक परिवर्तन और परिवर्द्धन करना होगा। भारतीय चिन्तन तो सदैव नवनवोन्मेषपरक रहा है। भौतिक विज्ञान की वर्तमान प्रगति के साथ प्राचीन अध्यात्म का संवरण आवश्यक है। इसके बिना आज का विज्ञान वरदान की अपेक्षा अभिशाप बन जायेगा। प्रदूषण की वर्तमान भयावहता और बढ़ते भूतापीकरण के नियन्त्रण के लिये हमारा प्राच्य साहित्य चिन्तामणि औषधि की भाँति काम आ सकता है। इसके लिए प्रत्येक देशवासी को आगे आना होगा और स्वच्छ संकल्पों की शुरुआत स्वयं से करनी होगी तभी हम अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर सकेंगे।

सत्य, अहिंसा, प्रकृतिचिन्तन, सहयोग, विश्वबन्धुत्व, प्रेम, सहिष्णुता आदि मानवीय और सामाजिक मूल्यों से ही भारत पुनः विश्व को शान्ति और सभ्यता का पाठ पढ़ाने में समर्थ हो सकता है। विद्यार्थियों में विवेक बुद्धि साहित्य और शास्त्रों के पठन-पाठन से ही आयेगी, विज्ञान प्रौद्योगिकी की आज की एआई तकनीक से नहीं। गुरु-शिष्य परंपरा ही विवेकबुद्धि लाने में समर्थ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अथवा होशियारी को लेकर दुनिया आज दो पाटों में फसी हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से भावनात्मकता जगे तो सत्य, प्रेम और दया के महान् सनातन मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा हो सकती है। किन्तु ऐसा लगता नहीं क्योंकि यह केवल व्यापार को बढ़ाने के कौशल तक ही सीमित रहेगी।

भौतिक आविष्कारों का श्रेय लेते हुए पाश्चात्यों ने भारतीय वैज्ञानिक ऋषियों को भुला दिया। इतना ही नहीं, विघटनकारी शक्तियों ने संस्कृत को एक धर्मविशेष की भाषा बताकर इसके बहुल पक्ष की घोर उपेक्षा की है। सच्चाई यह है कि संस्कृत में रचा गया धार्मिक साहित्य समग्र साहित्य के एक चौथाई अंश से भी कम है।<sup>16</sup> कम्प्यूटर विशेषज्ञों ने पाणिनीय व्याकरण और संस्कृत भाषा का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि अपनी पूर्णता और सम्पन्नता लिये संस्कृत

भाषा सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है।

भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा आज सम्पूर्ण विश्व के लिये अत्यन्त प्रासंगिक और अपरिहार्य है। भोग की चरम परिणति और प्राकृतिक संसाधनों की निरन्तर क्षति से विकास और उपभोग का समीकरण गड़बड़ गया है। त्यागपूर्वक भोग करने का महान् संदेश देने वाले उपनिषद् ग्रन्थों को जर्मनविद्वानों ने माथे पर रखकर नृत्य क्यों किया था ? पाश्चात्यप्रेमी संस्कृत को मात्र अतीत का गौरवगान कहकर पल्ला झाड़ते हैं किन्तु आज के वैश्विक जलवायु परिवर्तन, बढ़ते भूतापीकरण, दरकते पहाड़ों, पिघलते हिमशैलों और घटते जीवन मूल्यों के अपसांस्कृतिक वातावरण में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प दूर-दूर तक दृष्टिगत नहीं हो रहा है। संस्कृत के कालजयी साहित्य में भावी पीढ़ियों के लिये सुनहरे भविष्य के सौम्य सूत्र भरे पड़े हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा की आधारपीठिका संस्कृत ही है क्योंकि ये सभी मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों और धर्मों को सत्य, अहिंसा, करुणा, परोपकार, सहिष्णुता, समन्वयवादिता और सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाने में समर्थ है। आइये! **“वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान”** विषय पर आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारत की महान और समृद्ध ज्ञान परम्परा का डीम-डीम नाद करें।

**जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्।**

**संदर्भ सूची**

1. ऋग्वेद, भद्रसूक्त मन्त्र 1
2. रुद्राष्टाध्यायी, शान्ति अध्याय, मन्त्र 18
3. विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान पत्रिका 03 जून, 2022 सम्पादकीय पृष्ठ पर संपादित शोधपत्र के लेखक का आलेख अंश।
4. वेदामृतम्, आचार शिक्षा, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
5. वृहदारण्यक उपनिषद्
6. आधुनिक भारत में संस्कृत की उपादेयता, पृष्ठ 10
7. पृथ्वी सूक्त, (12.1) अथर्ववेद
8. पृथ्वी सूक्त मन्त्र, अथर्ववेद
9. वही, अथर्ववेद
10. पृथ्वी सूक्त, अथर्ववेद 12
11. विश्ववल्लभ, श्लोक 20, नाथद्वारा राजस्थान पुस्तकालय
12. बृहत्संहिता, 55, 2
13. बृहत्संहिता, 55, श्लोक 27-28
14. उपवनविनोद, 190
15. कौटिल्य अर्थशास्त्र 24.41.33
16. राजस्थान पत्रिका बाँसवाड़ा 22 अगस्त, 2021

आचार्य, संस्कृत विभाग

श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय बाँसवाड़ा (राज.)

Mail. – joshirajesh277@gmail.com

# विकास में स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरण

□ डॉ. मंजु गुप्ता

आधुनिक युग में समाज और विकास के संदर्भ में स्त्री नेतृत्व का महत्त्व अत्यधिक है। समाज में स्त्रियों की भूमिका ने सिर्फ एक घरेलू प्रबंधक से बढ़कर एक सकारात्मक बदलाव का रूप लिया है। इस प्रबंध में, हम स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों को परीक्षण करने का प्रयास करेंगे, जिससे समाज को समृद्धि, सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय की दिशा में मोड़ने में मदद हो।

## 1. स्त्री नेतृत्व का सामाजिक परिवर्तन

स्त्री नेतृत्व का सामाजिक परिवर्तन समाज के रूपरेखा में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाने में सक्रिय रूप से योगदान कर रहा है। यह परिवर्तन न केवल स्त्रियों को सशक्त बना रहा है, बल्कि समाज की सोच और संरचना में भी नए दृष्टिकोण लाने में मदद कर रहा है। स्त्री नेतृत्व ने एक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समाहित किया है। स्त्री नेतृत्व के माध्यम से समाज में सामाजिक समाहिता बढ़ी है, जिससे लोगों के बीच एकजुटता और समरसता की भावना में सुधार हुआ है। स्त्रियाँ अब अपने अधिकारों की माँग करने के साथ-साथ समाज के न्यायपूर्ण और समरस संरचना में अपना योगदान दे रही हैं, जिससे समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता कम हो रही है। स्त्री नेतृत्व ने उत्कृष्ट शिक्षा के माध्यम से समाज में स्त्रियों को समाहित और सक्रिय नागरिक बनाने का साधन प्रदान किया है। शिक्षित स्त्रियाँ अधिक समझदार, सजग, और सक्रिय रूप से समाज में भाग लेती हैं, जिससे समाज को विभिन्न सोच और प्रतिबद्धता के साथ समृद्धि की दिशा में मोड़ने में मदद मिल रही है। इस प्रकार, स्त्री नेतृत्व का सामाजिक परिवर्तन करते हुए समाज नए और सुधारित दृष्टिकोण से स्त्रियों के साथ एक समृद्धि युक्त समाज की दिशा में बढ़ रहा है।

## 2. शिक्षा का महत्त्व

स्त्री नेतृत्व का महत्त्वपूर्ण पहलु है शिक्षा, जो स्त्रियों को समाज में सक्रियता और योग्यता का सकारात्मक रूप से प्रतिष्ठान देने में मदद करती है। शिक्षा के माध्यम से स्त्रियाँ नए और उच्च स्तर के ज्ञान को प्राप्त करती हैं, जिससे वे समाज में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकती हैं। उच्च शिक्षा ने स्त्रियों को न शिक्षा के क्षेत्र में ही बल्कि समाज में भी अपनी अहमियत बनाए रखने में मदद की है। शिक्षित

स्त्रियाँ समाज में आत्मनिर्भर, समझदार और सजग नागरिकों के रूप में उभरती हैं। उन्हें शिक्षा मिलने से अपने अधिकारों का सच्चा मूल्य मिलता है और वे समाज में न्यायपूर्ण स्थान प्राप्त करने में सक्षम होती हैं। इससे न केवल उनकी स्थिति मजबूत होती है, बल्कि समाज को भी उनके योगदान का सही मूल्य मिलता है। शिक्षा के माध्यम से स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में समाज में समृद्धि भी आती है। शिक्षित स्त्रियाँ समाज में अपने विचारों और क्षमताओं का सही रूप से प्रदर्शन करती हैं, जो समाज को नए और सुधारित दृष्टिकोण से देखने का अवसर देती हैं। इस प्रकार, शिक्षा ने स्त्री नेतृत्व के साथ समृद्धि और समरसता की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है, जिससे समाज में सामाजिक और आर्थिक समरसता बढ़ी है।

## 3. स्त्री नेतृत्व और आर्थिक सशक्तीकरण

स्त्री नेतृत्व का एक महत्त्वपूर्ण पहलु है समाज में समरसता की भावना को बढ़ावा देना है। समरसता वह भावना है जो समाज को एकमूर्त और सामूहिक रूप से जोड़ती है और स्त्रियों का नेतृत्व इसे मजबूती से उन्नत कर रहा है। स्त्रियाँ नए और प्रेरणादायक क्षेत्रों में अपनी साक्षरता, कला और सामाजिक परियोजनाओं के माध्यम से समाज में एकता और समरसता की भावना को बढ़ावा दे रही हैं। स्त्री नेतृत्व के द्वारा समाज में समरसता की दिशा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। इस नेतृत्व ने न केवल समाज के विभिन्न सामाजिक वर्गों को एक साथ जोड़ा है, बल्कि उसने नए और सुधारित दृष्टिकोण के साथ समरसता की भावना को मजबूत किया है। समृद्धि के साथ-साथ, स्त्रियाँ समाज में एक एकीकृत और सहभागिता से भरी भूमिका निभा रही हैं, जिससे समाज को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने का समर्थन मिलता है। स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में, समाज में एकता और समरसता की भावना में सुधार आया है। स्त्रियाँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व दिखा रही हैं और उनका योगदान समरसता और सामूहिकता की भावना को बढ़ावा दे रहा है। समाज में एकता के साथ-साथ समरसता भी बढ़ रही है जिससे समाज को सही दिशा में बढ़ावा हो रहा है। समरसता की भावना के साथ स्त्री नेतृत्व ने समाज में एक एकीकृत, सहभागिता से भरा माहौल बनाया है जो समृद्धि और समरसता की दिशा में सहायक है। इस प्रकार, स्त्री नेतृत्व के माध्यम से समाज में समरसता की भावना

को समृद्धि के साथ बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया गया है।

#### 4. स्त्री नेतृत्व और समृद्धि

स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में, स्त्रियाँ आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं। आत्मनिर्भर स्त्रियाँ समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए सक्षम होती हैं और उन्हें नए और उच्च स्तर की सामाजिक और आर्थिक स्थिति प्राप्त करने में मदद करती हैं। स्त्री नेतृत्व के माध्यम से, समाज में आत्मनिर्भर स्त्रियों की संख्या में वृद्धि हो रही है जो अपने क्षेत्र में मानव सेवाएँ, व्यवसाय, और शिक्षा के क्षेत्र में अपना नेतृत्व साबित कर रही हैं। स्त्री नेतृत्व के माध्यम से, समाज आत्मनिर्भर स्त्रियों को प्रेरित कर रहा है जो अपने उद्यमिता और सामरिक योजनाओं के माध्यम से समाज में बदलाव ला रही हैं। आत्मनिर्भर स्त्रियाँ समाज में नई दिशा की ओर बढ़ती हैं, उन्हें न केवल अपनी आत्मा की सशक्तिकरण की अनुमति देती हैं, बल्कि उनका संगठन समृद्धि और सामाजिक असमानता के खिलाफ एक मजबूत विरोध है। इस रूप में, स्त्री नेतृत्व ने समाज को आत्मनिर्भरता की महत्वपूर्णता समझाई है और आत्मनिर्भर स्त्रियों को समाज में नेतृत्व की ऊँचाइयों तक पहुँचने में मदद कर रहा है। इसका परिणामस्वरूप, समाज में एक सशक्त और स्वावलंबी स्त्री वर्ग का उत्थान हो रहा है, जो समृद्धि और समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है।

#### 5. स्त्री नेतृत्व और सामाजिक समरसता

स्त्री नेतृत्व का एक और महत्वपूर्ण पहलु है समाज में समृद्धि की दिशा में उनका योगदान। स्त्रियाँ नए और उन्नत क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं और प्रतिबद्धता के माध्यम से समाज में आर्थिक और सामाजिक समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। स्त्री नेतृत्व के माध्यम से समाज में समृद्धि का मतलब है स्त्रियों को सिर्फ आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी सकारात्मक परिवर्तन लाना है। वे समाज में एक नए और विकसित सोच के रूप में अपना योगदान दे रही हैं जो समृद्धि के माध्यम से समाज को उन्नति की ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में, समाज में आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ सामाजिक समृद्धि की दिशा में भी सुधार आया है। स्त्रियाँ नए और उच्च स्तर की शिक्षा के माध्यम से नेतृत्व की भूमिका निभाकर समाज को एक विशेषज्ञता और विविधता की दिशा में अग्रणी बना रही हैं, जिससे समृद्धि में नई ऊँचाइयों की प्राप्ति हो रही है। स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में समाज को एक सकारात्मक और समृद्धि युक्त दिशा में बढ़ोतरी हुई है। स्त्रियाँ नेतृत्व के माध्यम से समाज को आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक स्तर पर समृद्धि की दिशा में मजबूत नेतृत्व प्रदान कर रही हैं।

#### 6. स्त्री नेतृत्व का और भी अध्ययन

स्त्री नेतृत्व के माध्यम से समाज में सामूहिक सेवा की भावना को बढ़ावा मिल रहा है। स्त्रियाँ नए और उन्नत क्षेत्रों में अपने योगदान के माध्यम से समाज में सामूहिक सेवा की भावना को प्रोत्साहित कर रही हैं। वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जनहित में योगदान देने के माध्यम से सामूहिक सेवा की प्रेरणा से भरी हुई हैं। स्त्री नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण पहलु है समाज में सहानुभूति और सामूहिक सेवा की भावना को मजबूती से प्रोत्साहित करना है। वे समाज के अलग-अलग वर्गों के लोगों की मदद के लिए नेतृत्व का योगदान देने के साथ ही, उन्होंने समाज में एकजुटता का संदेश देते हुए अनेक सामूहिक सेवा परियोजनाएँ चलाई हैं। स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में, समाज में सामूहिक सेवा की भावना ने विशेष रूप से उजागर होना शुरू किया है। स्त्रियाँ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक क्षेत्रों में विभिन्न पहलुओं में अपनी अद्वितीयता और क्षमताओं के माध्यम से समाज में सामूहिक सेवा के क्षेत्र में प्रमुख रूप से योगदान किया है। सामूहिक सेवा के माध्यम से स्त्रियों ने समाज में सामूहिक उत्थान को प्रोत्साहित किया है, जिससे वे समाज में सामूहिक सेवा की महत्वपूर्णता मान्यता प्राप्त कर रही हैं। इस रूप में, स्त्री नेतृत्व ने समाज को एक समृद्ध और सामूहिक सेवा के दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान किया है, जो समृद्धि और सामूहिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है।

#### निष्कर्ष

इस लेख के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में समाज में समृद्धि, समरसता, और सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। इसने स्त्रियों को सिर्फ समृद्धि में ही नहीं, बल्कि समाज में सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के साथ एक सकारात्मक बदलाव लाने का अधिकार दिया है। स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में शिक्षा, सामाजिक समरसता, और सामूहिक सेवा के क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इस प्रेरणादायक यात्रा में, हम स्त्री नेतृत्व के क्षेत्र में कुछ उदाहरणों को समाहित करते हैं, जो अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता की ओर बढ़ रही हैं। उनमें से कुछ नाम - निर्मला सीतारमण (वित्त मंत्री और अर्थव्यवस्था), किरण मजुमदार (शिक्षा), पी.वी. सिंधु (बैडमिंटन) आदि हैं।

शिक्षा ने स्त्रियों को समाज में न्यायपूर्ण स्थान प्रदान करने में मदद की है और सामाजिक असमानता को कम करने में योगदान किया है। समृद्धि के साथ-साथ, समरसता और सामाजिक न्याय की दिशा में भी स्त्री नेतृत्व ने महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। इस प्रकार, स्त्री नेतृत्व के बढ़ते चरणों में समाज को एक सशक्त, समृद्ध और समरस समाज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाने में सहारा मिला है।

- प्रोफेसर (समाजशास्त्र), राजकीय आर्ट कॉलेज, कोटा (राज.)

# समान नागरिक संहिता और भारतीय मीडिया: एक आलोचनात्मक अध्ययन

□ अवनीश कुमार मिश्रा<sup>1</sup>, प्रो. अजय भूपेंद्र जयसवाल<sup>2</sup>

## सारांश

वर्तमान में समान नागरिक संहिता का मुद्दा व्यापक बहस का विषय बना हुआ है। इस बहस के दो पक्ष हैं। एक पक्ष इस संहिता को लागू करने तो दूसरा पक्ष लागू न करने की वकालत करता है। इसी प्रकार भारत का मीडिया भी इस विषय को लेकर एकमत नहीं है। अधिकतर हिंदी मीडिया इस संहिता के फायदे गिनवाकर इसको लागू करने के पक्ष में जनता की राय को आकार देने में भूमिका निभा रहा है। वहीं अंग्रेजी मीडिया इस संहिता को लागू करने से होने वाले नुकसानों को गिनवाकर इसको न लागू करने के पक्ष में जनता की राय को बना रहा है। हमारे देश का अंग्रेजी मीडिया देश के कुछ प्रभावशाली 'प्रबुद्ध और कुलीन' वर्ग के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय है। यह देश के सबसे प्रभावशाली और कुलीन वर्ग की राय को इस संहिता के विरोध में बना रहा है। जब देश का सबसे प्रभावशाली और कुलीन वर्ग ही इस संहिता के विरोध में उतर आया तो इसे लागू करने के पक्ष में सामान्य जनता की राय बनाना अत्यंत कठिन कार्य हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी प्रिंट मीडिया निष्पक्ष रिपोर्टिंग करने के बजाय वामपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर रिपोर्टिंग कर रहा है। अंग्रेजी मीडिया समान नागरिक संहिता को देश की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विविधता, धार्मिक निरपेक्षता, व्यक्तिगत अधिकारों और अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों के लिए खतरा बताता है। इस प्रकार की पक्षपाती रिपोर्टिंग वामपंथी विचारधारा से प्रेरित होकर की जा रही है। जिन विषयों पर अंग्रेजी मीडिया चिंता व्यक्त कर रहा है उन पर ध्यान देने का कार्य हमारी विधायिका और न्यायपालिका का है। सर्वोच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता के पक्ष में अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा है कि समान नागरिक संहिता की प्रकृति पंथनिरपेक्ष है। शिरूर मठ मामले में (1954) सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया है कि राज्य किसी भी व्यक्ति की आवश्यक धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि विधायिका ऐसा कानून नहीं बना सकती है जो किसी भी व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन करता हो। अतः यह स्थापित हो जाता है कि भारतीय अंग्रेजी मीडिया और विदेशी मीडिया, जिनमें

न्यूयॉर्क टाइम्स, अल जजीरा, इत्यादि समान नागरिक संहिता को लेकर दुष्प्रचार फैला रहे हैं। इससे भारत में समान नागरिक संहिता को लेकर एक सर्वमत नहीं बन पा रहा है। इन सब दुष्प्रचारों के बावजूद यह मत अत्यंत चर्चित और सर्वविदित है कि समान नागरिक संहिता का लागू होना देश की एकता और अखण्डता को मजबूत करेगा, साथ ही साथ महिलाओं को उनका वाजिब हक प्राप्त हो सकेगा। हमारा मत है कि एक राष्ट्र एक नागरिक कानून बहुत से संघर्षों को समाप्त कर सकता है।

**मुख्य शब्द :** समान नागरिक संहिता, अंग्रेजी मीडिया, धार्मिक स्वतंत्रता, पंथनिरपेक्षता, वामपंथी विचारधारा।

## परिचय :

भारत के संविधान के अनुसार, 'समान नागरिक संहिता' अनुच्छेद 44 के अंतर्गत एक नीति निर्देशक सिद्धांत है। इसमें उल्लेख किया गया है कि राज्य पूरे भारत में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा। समान नागरिक संहिता का उद्देश्य विभिन्न धार्मिक समाजों के रीति-रिवाजों पर आधारित व्यक्तिगत कानूनों के मध्य सामंजस्य बैठकर, लैंगिक व सामाजिक न्याय, समानता और सभी नागरिकों के लिए एक एकीकृत न्यायप्रशासन का समर्थन करना है। उल्लेखनीय है कि अनुच्छेद 44 न्यायालय द्वारा लागू नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत के अन्तर्गत आता है। समान नागरिक संहिता को लागू करने की दिशा में प्रयास करना राज्य की जिम्मेदारी है लेकिन ऐसी संहिता का वास्तविक अधिनियमन विभिन्न हितधारकों के बीच राजनीतिक दृढ़ संकल्प और सर्वसम्मति पर निर्भर करता है। वैसे तो समान नागरिक संहिता की बात करना बहुत आसान लगता है, लेकिन समान नागरिक संहिता को लागू करना बेहद कठिन काम है। चूंकि भारत एक विविधतापूर्ण देश है जिसमें कई पंथों, समुदायों, और जातियों के लोग रहते हैं। इसीलिए समान नागरिक संहिता का विषय भारत में बहस और विवाद का विषय बना रहता है। समान नागरिक संहिता के संबंध में समाज के विभिन्न वर्गों के अलग-अलग विचार हैं। समाज का एक वर्ग सोचता है कि

यह नागरिकों के बीच पंथनिरपेक्षता और एकरूपता को बढ़ावा देगा और अन्य लोगों का तर्क है कि यह उन लोगों के व्यक्तिगत कानूनों और धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन है। हालाँकि भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कई अवसरों पर विभिन्न मामलों में समान नागरिक संहिता की आवश्यकता और इसको लागू करने के बारे में कहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने हमेशा लैंगिक न्याय समानता और मूल्यों को बनाए रखने के लिए एक समान विधि की वकालत की है। भारतीय न्यायिक प्रणाली में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) से संबंधित कई मामले हैं जो बहस का विषय रहे हैं। शाह बानो बेगम बनाम भारत संघ (1985) के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को भरण-पोषण प्राप्त करने देने के पक्ष में अपना फैसला सुनाया। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट रूप से कहा कि मुस्लिम महिलाएँ आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत भरण-पोषण की हकदार हैं, भले ही व्यक्तिगत कानून उनके विवाह पर हावी हो। इस मामले के बाद समान नागरिक संहिता पर राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श की झलक दिखाई दी। इस बात को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि जहाँ अदालतों ने समान नागरिक संहिता के पक्ष में टिप्पणियाँ और प्रशंसाएँ की हैं, वहीं उन्होंने इसमें शामिल जटिलताओं और संवेदनशीलता को भी महत्व दिया है। न्यायालयों ने भारत में विभिन्न धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं को ध्यान में रखते हुए एक संयमित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया है।

### मीडिया द्वारा समान नागरिक संहिता की व्याख्या

मीडिया सरकार और लोगों के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। भारतीय मीडिया में बार-बार समान नागरिक संहिता की चर्चा होती रहती है। कई लोगों को इसकी व्यवहार्यता के बारे में संदेह है। मीडिया में सामान नागरिक संहिता को लेकर बहस राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिकता, पंथनिरपेक्षता और आधुनिकता जैसे विषयों पर होती है। व्यक्तिगत कानूनों का निर्वचन अक्सर अपनी सुविधानुसार किया जाता रहा है। कोई भी पक्ष इस मुद्दे का निष्पक्ष विश्लेषण करने को नहीं तैयार है। भारत में मीडिया की भी अपनी-अपनी विचारधाराएँ हैं। हर मीडिया समूह अपनी विचारधारा के अनुसार ही इस मुद्दे की रिपोर्टिंग करता है, जिससे एक भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। देश का अंग्रेजी मीडिया इस विभ्रम की स्थिति को पैदा करने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है। यह समान नागरिक संहिता की व्यवहार्यता एवं संभाव्यता पर ही प्रश्न चिह्न लगा देता है। कई बार मीडिया न्यायालय के फैसलों को भी सन्देहास्पद बना देता है। जैसे कि शाह बानो के मामले में मीडिया ने न्यायालय के फैसले को सन्देह की नजर से देखा और इसे अल्पसंख्यकों के धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप बताया। इसी

प्रकार तीन तलाक के मामले में भी लोगों को गुमराह करने की कोशिश की गयी। तीन तलाक का मामला जिसे कि शायरा बानो बनाम भारत संघ (2017) के नाम से जाना जाता है, में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गये दिशानिर्देशों के अनुशरण में जब भारतीय संसद द्वारा तलाक उल बिद्दत को समाप्त करने के लिए कानून बनाया गया तब भी मीडिया कुछ वर्गों ने इसे लोगों के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों में हस्तक्षेप बताया था। हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात को बार-बार दोहराया है कि समान नागरिक संहिता का धार्मिक मामलों से कोई लेना देना नहीं है क्योंकि इसकी प्रकृति पंथनिरपेक्ष है। व्यक्तिगत विधियों में असमानता होने से न्याय निर्णयन में बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए न्याय के हित में इसका होना आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण और लैंगिक न्याय को लेकर अंग्रेजी मीडिया काफी मुखर रहा है। समान नागरिक संहिता के आने से लैंगिक न्याय सुनिश्चित किया जा सकता है, फिर भी मीडिया के द्वारा इसके विरोध में रिपोर्टिंग करना दुर्भाग्यपूर्ण है।

### मीडिया द्वारा प्रस्तुत परिप्रेक्ष्य

14 जून, 2023 को भारत के विधि आयोग ने एक सार्वजनिक नोटिस जारी कर समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर राय और टिप्पणियाँ माँगी थी। यह पाँच साल के अंतराल के बाद आया है क्योंकि 21वें विधि आयोग ने अगस्त 2018 में इसी मुद्दे पर एक परामर्श पत्र जारी किया था। आयोग का नोटिस जनता के विचारों को आमंत्रित करता है और समान नागरिक संहिता के संबंध में धार्मिक संगठनों को मान्यता देता है। अब मीडिया इसी खबर को भारतीय जनता पार्टी के साथ जोड़कर इस बेहद संवेदनशील विषय को राजनीति से जोड़ देती है। द हिन्दू समूह की पत्रिका फ्रंटलाइन इसको रिपोर्ट करते हुए कहती है कि समान नागरिक संहिता के आने से देश सांस्कृतिक विविधता समाप्त हो जाएगी। लेकिन समान नागरिक संहिता का सम्बन्ध तो लोगों के व्यक्तिगत कानूनों से है इससे कैसे सांस्कृतिक विविधता समाप्त हो जाएगी इस बात को फ्रंटलाइन ने स्पष्ट नहीं किया है। इंडिया टुडे समान नागरिक संहिता को भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने से जोड़ता है। इंडिया टुडे ग्रुप नोबल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन का साक्षात्कार प्रकाशित करता है जिसमें वह समान नागरिक संहिता को बकवास बताते हैं। वह कहते हैं कि समान नागरिक संहिता का मुद्दा वर्तमान केंद्र सरकार आने वाले लोक सभा चुनावों के कारण उठा रही है। साथ ही वह समान नागरिक संहिता को देश की धार्मिक विविधता के खिलाफ भी बताते हैं। अलजजीरा जो कि कतर की सरकार द्वारा प्रायोजित एक मीडिया संस्थान है लगातार भारत के खिलाफ प्रोपेगंडा फैलता रहता है। इसे भारत में एक वर्ग के द्वारा बहुत ही प्रोत्साहित किया जाता है। यह समान नागरिक संहिता के खिलाफ लिखते हुए

कहता है कि मोदी समान नागरिक संहिता के जरिये भारत की पंथनिरपेक्षता को समाप्त करना चाहते हैं। तुर्की की सरकारी मीडिया एजेंसी अनादोलू रिपोर्ट करता है कि समान नागरिक संहिता भारत को विभाजित कर देगा। 2022 में प्रकाशित एक लेख में बीबीसी लिखता है कि समान नागरिक संहिता हिन्दुओं और मुस्लिमों दोनों के सामाजिक जीवन में बाधा उत्पन्न कर सकती है। इस प्रकार से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि समान नागरिक संहिता का सही परिपेक्ष्य लोगों तक पहुंचाने के बजाय अंग्रेजी मीडिया ने लोगों को भ्रमित करने का प्रयास किया है। हालाँकि अंग्रेजी मीडिया जिस बात को लेकर भारतीय जनता पार्टी पर आरोप लगाता रहता है वह बीजेपी के घोषणापत्र का हिस्सा है और भारत के लोग यह निर्णय लेंगे कि उन्हें समान नागरिक संहिता चाहिए या नहीं।

समान नागरिक संहिता 1998 और 2019 के चुनावों के लिए भाजपा के घोषणापत्र का हिस्सा रही है। नवंबर 2019 में, नारायण लाल पंचारिया ने इसे पेश करने के लिए संसद में एक विधेयक पेश किया, लेकिन विपक्ष के विरोध के कारण इसे वापस ले लिया गया। मार्च 2020 में किरोड़ी लाल मीणा फिर से बिल लेकर आए, लेकिन इसे संसद में पेश नहीं किया गया। विवाह, तलाक, गोद लेने और उत्तराधिकार से संबंधित कानूनों में समानता की माँग करते हुए सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी याचिकाएँ दायर की गई हैं। 2018 के परामर्श पत्र में स्वीकार किया गया कि भारत में विभिन्न पारिवारिक कानून व्यवस्थाओं के भीतर कुछ प्रथाएँ महिलाओं के खिलाफ भेदभाव करती हैं और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। 1985 में शाह बानो के मामले में एक मुस्लिम महिला के भरण पोषण अधिकारों के संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि “संसद को एक सामान्य नागरिक संहिता की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए क्योंकि यह एक ऐसा साधन है जो राष्ट्रीय सद्भाव और कानून के समक्ष समानता की सुविधा प्रदान करता है।” 2015 में एबीसी बनाम दिल्ली राज्य, के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ईसाई कानून के तहत ईसाई महिलाओं को अपने बच्चों के “प्राकृतिक अभिभावक के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है”, भले ही हिंदू अविवाहित महिलाएँ अपने बच्चे की ‘प्राकृतिक अभिभावक’ हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि समान नागरिक संहिता ‘एक अनसुनी संवैधानिक अपेक्षा बनी हुई है’। 2020 में, सुप्रीम कोर्ट ने लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम की व्याख्या भी की, जिसमें हिंदू महिलाओं को संपत्ति में विरासत का अधिकार और पैतृक संपत्ति में समान सहदायिक अधिकार प्राप्त हैं, यदि संबंधित महिला उस समय जीवित थी। 2021 में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने संसद से समान पारिवारिक कानून बनाने पर विचार करने

के लिए कहा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि देश के नागरिक विभिन्न विवाह कानूनों के कारण उत्पन्न कानूनी अस्पष्टता का सामना न करना पड़े। उच्च न्यायालय ने धर्मांतरण और अंतरधार्मिक विवाह से संबंधित एक मामले में कहा था, “एक समान नागरिक संहिता राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य में मदद करेगी।” 31 अगस्त, 2018 को जारी अपने परामर्श पत्र में, भारत के तत्कालीन 21वें विधि आयोग ने कहा था कि “यह ध्यान में रखना होगा कि सांस्कृतिक विविधता से इस हद तक समझौता नहीं किया जा सकता है कि एकरूपता के लिए हमारा आग्रह ही खतरे का कारण बन जाए।”

### जनमत को आकार देने में मीडिया की भूमिका

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, अन्य तीन हैं विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। मीडिया की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि लोग अपने आसपास हो रहे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास से अवगत हों। सूचना फैलाने में अपनी भूमिका निभाते हुए, मीडिया जनमत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोकतंत्र में इसका महत्व है क्योंकि किसी भी विषय पर सकारात्मक जनमत का मतलब जनता से वैधता और मान्यता होगी। मानव स्वभाव ऐसा है कि यह उसे अपने परिवेश के बारे में जानने के लिए उत्सुक करता है। किसी भी जानकारी को बिना प्रमाणित किये उस पर भरोसा कर लेना एक सामान्य स्वाभाव की बात है। यह देखा जा सकता है कि कभी-कभी सूचना प्रदाता न केवल अधूरी जानकारी बताते हैं बल्कि उसके साथ अपनी राय भी बता देते हैं। समाचार चैनलों, इंटरनेट (सोशल मीडिया), समाचार पत्रों, मास मीडिया इत्यादि में किसी मुद्दे पर लोगों के दृष्टिकोण को बदलने की शक्ति है। ऐसे सभी उदाहरण मिलकर जनमत के निर्माण में मदद करते हैं, जो इस बात पर निर्भर करता है कि लोग समाचार की प्रामाणिकता इसकी व्याख्या कैसे करना चाहते हैं। जनता की राय मायने रखती है क्योंकि जनता की राय की मदद से सरकार कई नीतिगत निर्णय ले सकती है। लोकतंत्र में, सरकारी नीतियाँ और कार्यक्रम जन-केंद्रित होते हैं और यह जानने के लिए कि क्या सरकार अपने कार्यों के माध्यम से वांछित प्रभाव पैदा कर सकती है, जनता की राय आवश्यक है। मास मीडिया सरकार और जनता के बीच एक माध्यम के रूप में काम करता है। इसका कार्य लोगों को जानकारी प्रदान करना है ताकि वे जानकारी के आधार पर एक राय बना सकें। अन्ना हजारे को जो मीडिया कवरेज मिला उससे भ्रष्टाचार का मुद्दा सुर्खियों में आ गया। लोकपाल विधेयक पर अन्ना का समर्थन जनता तक पहुँचा जिससे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के लिए जनमत तैयार करने में मदद मिली। इस प्रकार, जनता को किसी प्रकार की राय बनाने में सक्षम बनाने के लिए जागरूकता

पैदा करना मीडिया के हाथ में प्राथमिक कार्य है क्योंकि किसी विशेष मुद्दे पर राय बनाने के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आसपास और समाज अंदर क्या हो रहा है।

### जनमत के निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका

हमें यह समझने की जरूरत है कि जनमत तैयार करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं; कभी-कभी मीडिया द्वारा पैदा किए गए विवाद अच्छे उद्देश्य को गति देने में मदद कर सकते हैं जबकि कभी-कभी यह हानिकारक साबित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई स्थानीय सामाजिक आंदोलन राष्ट्रव्यापी स्तर पर मीडिया का ध्यान आकर्षित करता है तो यह व्यापक पैमाने पर प्रभाव पैदा कर सकता है जिसकी मूल रूप से अपेक्षा नहीं की गई थी। मीडिया का “एजेंडा सेट करने का सिद्धांत” राय को आकार देने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है। इस सिद्धांत के दो पहलू हैं यानी पहला, मीडिया वास्तविकता नहीं दिखाता है बल्कि प्रसारित होने से पहले वास्तविकता को फिल्टर और आकार दिया जाता है। दूसरा, यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वह सब कुछ दिखाए जो सत्य है, बल्कि मीडिया अपने एजेंडा को समर्थन देने वाले विषयों पर लोगों का ध्यान केन्द्रित करना चाहता है, जो जनता को सोचने पर मजबूर कर देता है कि वे ही एकमात्र महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिनसे लोगों को निपटना है। इन पहलुओं को अपने आप में अच्छे या बुरे के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। कुछ मुद्दों का दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होना या न होना लोगों की सोच पर निर्भर करता है। मीडिया को किसी भी विषय को बिना किसी लाग लपेट के जनता के सामने प्रस्तुत कर देना चाहिए सोशल नेटवर्किंग साइटों सहित जनसंचार माध्यमों की भूमिका तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है जब किसी विशेष मुद्दे पर कोई प्रत्यक्ष अनुभव न हो या कोई अन्य ज्ञान उपलब्ध न हो। ऐसी स्थिति में, दर्शकों के पास वही है जो मीडिया द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, जहाँ क्रॉस-चेक करने का कोई तरीका नहीं है, जिससे उन्हें संदेह का लाभ मिलता है। यहाँ तक कि जब सत्यापित करने के लिए अन्य स्रोतों की उपलब्धता होती है, तब भी एजेंडा-सेटिंग के अनुसार जनता की राय को आकार देना आसान हो जाता है। लोगों की हर उस चीज पर विश्वास करने की बढ़ती प्रवृत्ति है जो वे देखते हैं। जनमत तैयार करने में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका को चीन के उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है। अपनी जनता को जो दिखाया जा रहा है उस पर चीनी सरकार का पूरा नियंत्रण है। टेलीविजन से लेकर इंटरनेट तक, सरकार तय करती है कि उसके नागरिकों को क्या देखना है और क्या नहीं।

### व्यक्तिगत कानूनों के सुधार में मीडिया की गतिशील भूमिका

मीडिया समाज में एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में कार्य करता है, जनता की राय को आकार देता है, नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करता है और लोकतांत्रिक चर्चा में योगदान देता है। एक महत्वपूर्ण क्षेत्र जहाँ मीडिया का प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट है वह कानून सुधार का क्षेत्र है।

**सार्वजनिक जागरूकता और वकालत :** मीडिया कानूनी जटिलताओं और आम जनता के बीच एक सेतु का काम करता है। समाचार लेखों, और वृत्तचित्रों के माध्यम से, मीडिया आउटलेट जनता को मौजूदा कानूनी मुद्दों और सुधार की आवश्यकता के बारे में सूचित कर सकते हैं। कहानियाँ प्रस्तुत करके, मीडिया कानूनी समस्याओं का मानवीयकरण कर सकता है, सार्वजनिक सहानुभूति पैदा कर सकता है और आवश्यक परिवर्तनों के लिए समर्थन प्राप्त कर सकता है।

कानूनी व्यवस्था में अन्याय और कमियों पर प्रकाश डालना: कानून सुधार में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक अन्याय, खामियों या पुराने कानूनों को उजागर करना है। खोजी पत्रकारिता उन मामलों की ओर ध्यान आकर्षित कर सकती है जो कानूनी प्रणाली में खामियों को उजागर करते हैं, जिससे जनता में सुधार की माँग उठती है। मीडिया कवरेज उन उदाहरणों पर प्रकाश डाल सकता है जहाँ कानून न्याय देने में विफल रहता है, जिससे बदलाव की आशा पैदा होती है।

**जनता की राय को आकार देना :** कानूनी मामलों पर जनता की राय बनाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करके, मीडिया आउटलेट यह प्रभावित कर सकते हैं कि जनता विशिष्ट कानूनों या प्रस्तावित सुधारों को कैसे देखती है। राय के अंश, साक्षात्कार और पैनल चर्चाएँ सामूहिक सामाजिक रुख के निर्माण में योगदान करती हैं, जो बदले में, राजनीतिक इच्छाशक्ति और निर्णय लेने को प्रभावित कर सकती हैं।

**सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ उठाना :** सोशल मीडिया के युग में सूचना का प्रसार तेजी से और व्यापक हो गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर वकालत अभियान, याचिकाएँ और सार्वजनिक चर्चाएँ गति पकड़ सकती हैं, जिससे बड़े पैमाने पर जनता की राय प्रभावित हो सकती है। हैशटैग, ऑनलाइन याचिकाएँ और वायरल सामग्री सार्वजनिक समर्थन को प्रेरित कर सकती हैं और कानून सुधार की आवश्यकता के बारे में तात्कालिकता की भावना पैदा कर सकती हैं।

**विधायी विकास की निगरानी :** मीडिया विधायी प्रक्रियाओं पर निगरानी रखने वाले के रूप में कार्य करता है। पत्रकार और समाचार

आउटलेट प्रस्तावित विधेयकों, संशोधनों और बहसों पर अपडेट प्रदान करते हुए, संसदीय कार्यवाही का बारीकी से अनुसरण करते हैं। व्यापक रिपोर्टिंग के माध्यम से, मीडिया यह सुनिश्चित करता है कि जनता को चल रही कानूनी चर्चाओं के बारे में अच्छी तरह से जानकारी हो, जिससे कानून बनाने की प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा मिले।

**कम प्रतिनिधित्व वाली आवाजों को बढ़ाना :** मीडिया में हाशिये पर पड़े समुदायों और व्यक्तियों की आवाज को बढ़ाने की शक्ति है जो कुछ कानूनों से सीधे प्रभावित होते हैं। इन आवाजों के लिए एक मंच प्रदान करके, मीडिया मौजूदा कानूनी ढांचे के प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित कर सकता है और सुधार प्रक्रिया में विविध दृष्टिकोणों को शामिल करने की वकालत कर सकता है।

### चुनौतियाँ और अवसर

समान नागरिक संहिता (यूसीसी) की अवधारणा भारत में दशकों से बहस का विषय रही है, जिसका लक्ष्य सभी समुदायों में विवाह, तलाक और विरासत जैसे व्यक्तिगत मामलों को नियंत्रित करने वाले कानूनों को लागू करना है। जब राष्ट्र यूसीसी के कार्यान्वयन पर विचार कर रहा है, तो इस सामाजिक परिवर्तन में मीडिया का सकारात्मक योगदान आवश्यक हो जाता है।

### चुनौतियाँ

**संवेदनशीलता और विविधता :** भारत विविध संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं का मिश्रण है। यूसीसी को लागू करने में विशिष्ट धार्मिक पहचान का सम्मान करने और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने के बीच संतुलन की आवश्यकता होती है। सांप्रदायिक तनाव भड़काने या रूढ़िवादिता को कायम रखने से बचने के लिए मीडिया को इन संवेदनाओं पर सावधानी से काम करना चाहिए।

**कानूनी जटिलता :** व्यक्तिगत कानूनों से जुड़ी कानूनी पेचीदगियाँ बहुत गहरी हैं और विभिन्न धार्मिक समुदायों में भिन्न-भिन्न हैं। मीडिया पेशेवरों को कानूनी बारीकियों को अधिक सरलीकृत या गलत तरीके से प्रस्तुत किए बिना इन जटिलताओं को विविध दर्शकों तक पहुँचाना और संप्रेषित करना चुनौतीपूर्ण है।

**परंपरावादियों का विरोध :** यूसीसी के कार्यान्वयन को परंपरावादियों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है जो इसे अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक स्वायत्तता के लिए खतरे के रूप में देख सकते हैं। मीडिया आउटलेट्स को विरोधी दृष्टिकोणों को जिम्मेदारी से संभालने के लिए तैयार रहना चाहिए, एक संतुलित रिपोर्टिंग को बढ़ावा देना चाहिए जो विभाजन के बजाय बातचीत को प्रोत्साहित करती हो।

**गलत सूचना और ध्रुवीकरण :** सूचना के युग में गलत सूचना तेजी से फैल सकती है। मीडिया को झूठी कहानियों से लड़ने और यह सुनिश्चित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है कि सटीक और निष्पक्ष जानकारी जनता तक पहुँचे। ऐसा करने में विफलता ध्रुवीकरण में योगदान कर सकती है और कार्यान्वयन प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

### अवसर :

**शैक्षिक अभियान :** यूसीसी के लाभों और निहितार्थों के बारे में जनता को शिक्षित करने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सूचनात्मक अभियानों, वृत्तचित्रों और टॉक शो के माध्यम से, मीडिया आउटलेट नागरिकों को ज्ञान के साथ सशक्त बना सकते हैं।

**लैंगिक समानता को बढ़ावा देना :** यूसीसी व्यक्तिगत कानूनों में प्रचलित लैंगिक असमानताओं को दूर करने का अवसर प्रदान करता है। मीडिया लिंग-संवेदनशील सुधारों की वकालत कर सकता है, महिलाओं के अधिकारों पर यूसीसी के सकारात्मक प्रभाव को उजागर कर सकता है और अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा दे सकता है।

**संवाद को सुगम बनाना :** मीडिया यूसीसी के निहितार्थों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों, धार्मिक नेताओं और विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाकर रचनात्मक बातचीत के लिए एक मंच के रूप में काम कर सकता है। यह समझ को बढ़ावा दे सकता है, गलतफहमियों को दूर कर सकता है और अधिक सामंजस्यपूर्ण कार्यान्वयन प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

**कानूनी साक्षरता अभियान :** यूसीसी से जुड़ी कानूनी जटिलताओं को देखते हुए, मीडिया पेचीदगियों को सुलभ तरीके से समझाकर कानूनी साक्षरता में योगदान दे सकता है। यह नागरिकों को सूचित निर्णय लेने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बना सकता है।

### निष्कर्ष :

समान नागरिक संहिता का कार्यान्वयन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें मीडिया सहित विभिन्न हितधारकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। हालाँकि चुनौतियाँ बहुत अधिक हैं, मीडिया अपनी पहुँच और प्रभाव का उपयोग करके जनता की राय को जिम्मेदारी से आकार दे सकता है, संवाद को बढ़ावा दे सकता है और यूसीसी के सफल कार्यान्वयन में योगदान दे सकता है। इन अवसरों को अपनाकर, मीडिया देश को अधिक सामंजस्यपूर्ण और समावेशी भविष्य की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। तथ्यों को बताने और अपनी राय बताने के बीच एक स्पष्ट विभाजन



होना चाहिए। यदि यह विभाजन स्पष्ट नहीं है तो इससे दुष्प्रचार फैल सकता है जो स्वस्थ नहीं है। सोशल मीडिया पर उपलब्ध ऑनलाइन जानकारी के संबंध में भी नैतिक पत्रकारिता समय की मांग है। मीडिया को बहुलवाद को बढ़ावा देना चाहिए, चाहे वह समाचार चैनल हों या सोशल नेटवर्किंग साइटें, लोगों को बेहतर और समग्र राय देने में मदद करने के लिए तस्वीर के दोनों पक्षों को प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है। जनमत लोकतंत्र की पहली अनिवार्यता है, और इस जनमत को सूचित करने में मीडिया द्वारा निभाई गई भूमिका बहुत बड़ी है, इसलिए लोकतंत्र की सफलता काफी हद तक मीडिया की ऐसी स्व-नियमन प्रथाओं की प्रभावशीलता पर आधारित है। सवाल यह उठता है कि क्या मीडिया दुनिया को आकार दे रहा है? जनता के दिमाग पर मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइटों के प्रभाव को काले या सफेद रूप में प्रस्तुत करना वास्तव में कठिन होगा। समान जानकारी किसी व्यक्ति को किसी समुदाय या सरकार के खिलाफ विद्रोह करने के लिए मजबूर कर सकती है जबकि हो सकता है कि अन्य व्यक्ति को इससे कोई परेशानी भी नहीं होगी। ऐसी दुनिया में जहाँ इंटरनेट पर जानकारी तक पहुँच कई लोगों के लिए कोई बड़ी बात नहीं है, इसका एक बड़ा तरीका यह हो सकता है कि लोग वास्तविक अर्थों में एक जिम्मेदार नागरिक की तरह व्यवहार करने का निर्णय लें। यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य माना जाना चाहिए कि वह जो कुछ भी पढ़ता या सुनता है, उसकी दोबारा जाँच या सत्यापन करे। जैसा कि आपराधिक न्यायशास्त्र में एक सुस्थापित सिद्धांत है कि सुनी-सुनाई बातें कोई सबूत नहीं होतीं, उसी प्रकार किसी भी प्रकार की राय बनाने से पहले तथ्य-जाँच प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक है। मीडिया कानून सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसे पूर्वाग्रह, सनसनीखेज और जटिल कानूनी मुद्दों का अतिसरलीकृत करने से बचना चाहिए। रिपोर्टिंग की विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि जनता को कानूनी मामलों का निष्पक्ष और सटीक चित्रण प्राप्त हो।

#### निष्कर्षत :

कानून सुधार में मीडिया की भूमिका बहुआयामी और प्रभावशाली है। जनमत को सूचित करने, संगठित करने और प्रभावित करके, मीडिया परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। मीडिया और कानूनी प्रणाली के बीच एक सहजीवी संबंध अधिक पारदर्शी और न्यायपूर्ण कानूनी सुधारों को जन्म दे सकता है जो एक लोकतांत्रिक समाज के मूल्यों और आकांक्षाओं के अनुरूप हों। समान नागरिक संहिता का विषय भी मीडिया से ऐसी ही अपेक्षा रखता है।

#### सन्दर्भ सूची -

- Needham, AnuradhaDingwaney and Sunder Rajan, Rajeswari. *The Crisis of Secularism in India*, New York, USA: Duke University Press, 2007. <https://doi.org/10.1515/9780822388418>
- Herklotz, Tanja. "Dead Letters? The Uniform Civil Code through the Eyes of the Indian Women's Movement and the Indian Supreme Court." *Verfassung Und Recht in Übersee / Law and Politics in Africa, Asia and Latin America*, vol. 49, no. 2, 2016, pp. 148-74. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/26160070>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Entman, Robert M. "How the Media Affect What People Think: An Information Processing Approach." *The Journal of Politics*, vol. 51, no. 2, 1989, pp. 347-70. JSTOR, <https://doi.org/10.2307/2131346>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Singh, Lavayana. "ROLE OF MEDIA IN MAKING AND EXECUTION OF PUBLIC POLICY IN INDIA." *The Indian Journal of Political Science*, vol. 74, no. 2, 2013, pp. 309-12. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/24701115>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Ullah, Rooh& Khan, Dr. (2020). *The Role of Mass Media in Shaping Public Opinion*.
- Andrews, Kenneth T., and Neal Caren. "Making the News: Movement Organizations, Media Attention, and the Public Agenda." *American Sociological Review*, vol. 75, no. 6, 2010, pp. 841-66. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/25782169>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Anastasio, Phyllis A., et al. "Can the Media Create Public Opinion? A Social-Identity Approach." *Current Directions in Psychological Science*, vol. 8, no. 5, 1999, pp. 152-55. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/20182590>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Rai, Bina. "ROLE OF MEDIA IN INDIAN DEMOCRATIC SYSTEM." *The Indian Journal of Political Science*, vol. 76, no. 3, 2015, pp. 437-41. JSTOR, <https://www.jstor.org/stable/26534863>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Melenhorst, L. (2015). *The Media's Role in Lawmaking: A Case Study Analysis*. *The International Journal of Press/Politics*, 20(3), 297-316. <https://doi.org/10.1177/1940161215581924>
- Gaur, K. D. "CONSTITUTIONAL RIGHTS AND FREEDOM OF MEDIA IN INDIA." *Journal of the Indian Law Institute*, vol. 36, no. 4, 1994, pp. 429-54. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/43952367>. Accessed 17 Jan. 2024.

- Linos, Katerina, and Kimberly Twist. "The Supreme Court, the Media, and Public Opinion: Comparing Experimental and Observational Methods." *The Journal of Legal Studies*, vol. 45, no. 2, 2016, pp. 223–54. JSTOR, <https://www.jstor.org/stable/26458531>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Ram, N. "Sectional President's Address: THE CHANGING ROLE OF THE NEWS MEDIA IN CONTEMPORARY INDIA." *Proceedings of the Indian History Congress*, vol. 72, 2011, pp. 1289–310. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/44145741>. Accessed 17 Jan. 2024.
- DESOUZA, PETER RONALD. "Politics of the Uniform Civil Code in India." *Economic and Political Weekly*, vol. 50, no. 48, 2015, pp. 50–57. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/44002900>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Menon, Nivedita. "A Uniform Civil Code in India: The State of the Debate in 2014." *Feminist Studies*, vol. 40, no. 2, 2014, pp. 480–86. JSTOR, <http://www.jstor.org/stable/10.15767/feministstudies.40.2.480>. Accessed 17 Jan. 2024.
- Bhowmik, Subhranil & Year, Th. (2023). AN ANALYSIS OF UNIFORM CIVIL CODE. 3. 117-148.
- Uniform Civil Code: Another step towards making India a Hindu Rashtra, *Frontline*, 27 July 2023
- Will Modi's Uniform Civil Code kill Indian 'secularism', *Aljazeera*, 17 August 2023
- Uniform civil code a difficult issue, *India Today*, 6 July 2023
- Uniform Civil Code: Push for common law divides India, *Anadolu*, 25 July 2023
- UCC: The coming storm over a single common law in India, *BBC World*, 30 May 2022

<sup>1</sup> (जूनियर रिसर्च फेलो), वी. एस. एस. डी. कॉलेज कानपुर, उत्तरप्रदेश, शोध पर्यवेक्षक <sup>2</sup>(विभागाध्यक्ष : विधि विभाग), वी. एस. एस. डी. कॉलेज कानपुर, उत्तरप्रदेश

# विकसित भारत @ 2047

□ डॉ. अशोक कुमार महला<sup>1</sup> डॉ सुलोचना<sup>2</sup>

2047 का भारत कैसा हो? यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस संदर्भ में हम सबको मिलकर यह विचार करना होगा कि, 2047 में जब हम सब स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे तब भारत विकसित राष्ट्र की श्रेणी में हो, जिसने अमृतकाल के दौरान विकसित होने का लक्ष्य रखा था। दिनांक 11 दिसम्बर, 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने “विकसित भारत/2047” विषय पर भारत के राज्यपालों व शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए कहा कि “सभी का ध्येय विकसित भारत हो, भारत किस तरह विकसित बनने के मार्ग पर अग्रसर हो यह सभी को मिलकर प्रयास करना है। देश का नागरिक जिस भी भूमिका में है वह भारत को विकसित बनाने का प्रयास करे।” भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा विकसित भारत का औपचारिक शुभारंभ करना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जब हम स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे यानी वर्ष 2047 को भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने की संभावना वास्तव में बहुत ही मनोरम है। भारत की तीव्र प्रगति को देखते हुए इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को साकार कर सकना संभव नजर आता है।

हम सब के पास सोचने के लिए बहुत कुछ है। हमें देश में ऐसी अमर पीढ़ी तैयार करनी होगी, जो आने वाले सालों में देश की नेता बनेंगी, जो देश का नेतृत्व करेगी और उसे एक दिशा देगी। हमें देश के ऐसे युवा पौधे को तैयार करना है, जो राष्ट्रहित को सबसे ऊपर रखे, अपने कर्तव्यों को सबसे ऊपर रखे। हमें सिर्फ शिक्षा और कौशल तक सीमित नहीं रहना है। एक नागरिक होने के नाते, यह सुनिश्चित करने के लिए कि देश के नागरिक 24 घंटे सतर्क रहें, इस दिशा में प्रयासों को बढ़ाना जरूरी है। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब हम सब मिलकर इस अभियान में जुट जाएँ। अमृतकाल में हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि भारत को 2047 से पहले विकसित होता होगा। 2047 के विकसित भारत के लिए अमृतकाल में हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि भारत को 2047 से पहले विकसित करके रहेंगे। 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए देश के हर नागरिक की इसमें इनपुट और सक्रिय भागीदारी होनी आवश्यक है। हर किसी का प्रयास, यानी सार्वजनिक भागीदारी, एक ऐसा मंत्र है जिसके जरिए बड़े से

बड़े प्रस्तावों को भी पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए स्वच्छ भारत अभियान हो, डिजिटल इंडिया अभियान हो, कोरोना के खिलाफ लड़ाई हो या फिर वोक्ल फॉर लोकल, इन सब में सभी ने सामूहिक प्रयासों की ताकत देखी है। एक विकसित भारत का निर्माण सामूहिक प्रयासों से ही करना है।

2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए प्रधानमंत्री का जो आह्वान था उनमें उन्होंने यह कहा कि, “इतिहास हर देश को एक ऐसा दौर देता है जब वह अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ाता है। एक तरह से, यह उस देश का स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। यह भारत के लिए स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। भारत के इतिहास में यह वह दौर है जब देश एक बड़ी छलांग लगाने जा रहा है। हमारे आस-पास ऐसे कई देशों के उदाहरण हैं, जिन्होंने एक निश्चित समय में इस तरह की छलांग लगाकर खुद को विकसित किया है। इसलिए मैं कहता हूँ, यह भारत के लिए भी सही समय है। इमें इस स्वर्णिम युग के हर पल का फायदा उठाना है, हमें एक पल भी बर्बाद नहीं करना है। इस अमृतकाल में हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि अब हम एक पल गवाए बिना भारत को विकसित करने के लिए तत्पर हैं।”

विकसित भारत की औपचारिक शुभारंभ से पूर्व भी भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने कहा कि हम हमारे देश में स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण करेंगे, उनसे प्रेरणा लेंगे। उन्होंने कहा कि हम स्वाधीनता के 75 वें वर्ष में खड़े हैं और हमें आगामी 25 वर्ष के संकल्प के साथ आगे बढ़ना है, इसलिए उन्होंने कहा कि 75 वर्ष की यात्रा को पूर्ण करते हुए आज जहाँ पर भारत खड़ा है उसको हम भारत का अमृतकाल कह सकते हैं। अर्थात् भारत इस समय अमृतकाल में है और आगामी 25 वर्षों में भारत के विकास का संपूर्ण खाका तैयार करने में हम सब की एक महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी तो दूसरी ओर साथ ही साथ भारत का प्रत्येक व्यक्ति स्वराज-75 के इस संकल्प पर्व पर 2047 तक भारत को विकसित बनाने का संकल्प ले। हमें यह सोचकर दृढ़ता से आगे बढ़ना है कि शताब्दी वर्ष में भारत कहाँ खड़ा होगा। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता की जो यात्रा हमने प्रारंभ की है वह वर्ष 2047 तक पहुँचने

तक अपने लक्ष्य तक पहुँचेंगी क्या? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

1947 में हमने स्वतंत्रता की यात्रा प्रारंभ की इसका अर्थ यह हुआ कि 1947 को हमें स्वराज मिला था, हम स्वाधीन हुए थे अर्थात् स्व के अधीन हुए, पर क्या हमें स्वतंत्रता मिली? अर्थात् स्वराज मिल गया। स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर अभी हमें जाना है। स्वाधीनता समर के सूत्रधारों के मन में स्वतंत्र भारत की जो संकल्पना रही वह ऐसे भारत की थी जिसका समग्र तंत्र स्व आधारित हो अर्थात् स्व प्रेरित हो। हमारा उद्देश्य यह था कि हम समाज जीवन में एक नई दिशा देंगे पूरी दुनिया को। भारत जिस आधार पर विश्वगुरु रहा है, भारत जिस आधार पर सोने की चिड़िया रहा है, भारत ने जिस आधार पर पूरी दुनिया को दिशा दिखाई, उस स्व के आधार पर भारत के संस्थान खड़े होंगे और दुनिया को प्रेरणा देंगे। लेकिन दुर्भाग्य से औपनिवेशिक मानसिकता हम पर हावी रही और दुर्भाग्य से कुछ भ्रम कुछ दुष्चक्र स्वाधीनता के बाद ऐसे चले कि स्व का विस्मरण हो गया। अब यह 25 वर्षों का संकल्प लेना है कि स्व का पुनःस्मरण हो, उसकी पुनर्स्थापना हो। यानि भारत पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि हमें स्वतंत्रता कब मिलेगी या क्या हम 2047 तक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है वह यह है कि, “जब स्वत्व के अधीन संपूर्ण तंत्र होगा तब भारत स्वतंत्र होगा।” यानी हमें स्वत्व प्राप्त नहीं हुआ है, उस ओर अभी हमें बढ़ना है। जब हमें स्वत्व प्राप्त हो जाएगा तब सही मायने में भारत विकसित होगा। अब हमें स्वत्व प्राप्त होगा, हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को पुनः स्थापित अब हम सब मिलकर करेंगे और कर भी रहे हैं जैसे अयोध्या में राम आ चुके हैं विराजमान हो चुके हैं। इसके साथ-साथ विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए भारत को पहचानना जरूरी है और भारत की पहचान संस्कृति से है, यह संस्कृति हिंदुत्व है। इसलिए जब तक हम हिंदुत्व को नहीं पहचानेंगे तब तक विकसित भारत की बात करना अप्रासंगिक है। हिंदुत्व एक स्वभाव है। यह एक जीवन पद्धति है। यह एक जीवन दृष्टि है। विचारों की विविधता इसका आधार है। यह सनातन भारत का विचार है। यह परिवार की बात करता है तो यह पर्यावरण की बात भी करता है। माननीय सर संघचालक जी ने कहा था कि, “अपने राष्ट्र का स्वत्व हिंदुत्व है।”

इसके लिए आज का शिशु उस समय राष्ट्र निर्माण की प्रमुख भूमिका में होगा। आज का शिशु देश का भविष्य नहीं, वर्तमान है क्योंकि उसका वर्तमान जिन संकल्पों से पोषित होगा वैसा भविष्य का भारत होगा। आज का युवक उस समय प्रोढ़ मार्गदर्शक की भूमिका में होगा। इसलिए इस पीढ़ी को हमें चार प्रकार से तैयार करना है- भारत

को मानो, भारत को जानो, भारत के बनो और भारत को बनाओ। हम सबको मिलकर एक स्वाभिमानी भारत, एक संगठित भारत, एक सशक्त भारत, एक एकात्मक भारत और एक विकसित भारत का संकल्प लेना होगा। एक विकसित भारत जो केवल आँकड़ों से ही विकसित न हो बल्कि एक ऐसा विकसित भारत जिसमें परिवार की बात हो, जिसमें सनातन भारत की बात हो, जिसमें सांस्कृतिक मान्यताओं की स्थापना हो, जो पुनः विश्वगुरु हो, जो सनातन के साथ-साथ आधुनिक हो, जिसमें हम का भाव हो हम अर्थात् अभी वाले ही नहीं बल्कि आदिकाल से चले आ रहे व आने वाले सभी शामिल हैं। यहाँ हम भाव हिंदुत्व का परिचायक है। हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि हम हमारे पूर्वजों के कर्तव्यों का स्मरण करें, पूर्वजों के संकल्पों का स्मरण करें, सनातन भारत की झलक दुनिया को दिखाएँ, आधुनिक भारत की चमक भी दुनिया देखे और अपने स्व के आधार पर भविष्य के भारत का हम संकल्प लें।

विकसित भारत के लक्ष्य को 2047 तक प्राप्त करने के लिए हमें कई संकल्प लेने होंगे और हमें विचार करना होगा जैसे -

1. विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने के लिए विभिन्न पहलुओं पर विचार करना होगा और उस दिशा में काम भी करना होगा, इसके लिए कृषि जैसे क्षेत्रों को उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्र की ओर बढ़ना होगा जिससे आर्थिक विकास की वृद्धि होगी, रोजगार का सृजन होगा और गरीबी कम होगी। इसके अतिरिक्त ऊर्जा दक्षता, कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार में वृद्धि, उत्पादन व सेवाओं की गुणवत्ता, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, शासन में जवाबदेहीता, पारदर्शिता और सार्वजनिक भागीदारी को भी बढ़ना होगा।
2. विकसित भारत के लिए किये जाने वाले आर्थिक प्रयासों के साथ-साथ खुशहाल भारत की थीम को भी साथ लेकर चलना होगा। अर्थात् विकसित भारत के लिए केवल आर्थिक आँकड़ों की थीम ही नहीं आवश्यक है बल्कि उसके साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, केयरिंग सोसायटी तथा संस्कृति आदि के संदर्भ में सशक्त भारतीय की अवधारणा पर भी विचार करना होगा।
3. कृषि, उद्योग, सेवाएँ, इंफ्रास्ट्रक्चर, ऊर्जा, हरित अर्थव्यवस्था, शहर आदि के संदर्भ में फलती फूलती और सतत् अर्थव्यवस्था की दिशा में भी तेजी से काम करने की आवश्यकता है।
4. विज्ञान व प्रौद्योगिकी में नवाचार पर बल देना होगा और साथ ही साथ अनुसंधान, डिजिटल, स्टार्टअप आदि पर भी विचार करना होगा।

5. सुशासन और सुरक्षा के विषय को केंद्रीय महत्त्व का रखते हुए इस दिशा में और अधिक कार्य करने की भी आवश्यकता होगी। इन सब के साथ-साथ हमें यह भी देखना होगा कि विश्व में भारत की क्या भूमिका होगी? उस पर गहन चिंतन की आवश्यकता रहेगी।
  6. 2047 के विकसित भारत के लिए जरूरी है कि हम सब मिलकर स्वच्छता, जल संरक्षण, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य, नागरिक अनुशासन, युवा शक्ति, डिजिटल इंडिया, वोकल फॉर लोकल आदि विषयों पर विचार करें।
  7. भारत सरकार भारत के प्रत्येक युवा को विकसित भारत के संकल्प से जोड़ना चाहती है इस हेतु शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है, यद्यपि प्रधानमंत्री ने भी शिक्षकों को इस हेतु आह्वान किया था, अतः शिक्षकों को यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि 2047 में भारत को विकसित बनाकर रहेंगे। चूंकि शिक्षकों पर देश की युवा शक्ति को दिशा देने की जिम्मेदारी है। साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका व्यक्ति का विकास करना है और व्यक्ति के विकास के माध्यम से ही राष्ट्र का निर्माण होता है और आज भारत जिस दौर में है, उसमें व्यक्तित्व निर्माण का अभियान बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। आज हमारा लक्ष्य विकसित भारत व सशक्त भारत है और हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक लक्ष्य को प्राप्त न कर लें। शिक्षक वो लोग हैं जो देश के विकास के सपने को साकार करते हैं और युवा शक्ति को दिशा दिखाते हैं।
  8. हम सभी को सिर्फ शिक्षा और कौशल तक सीमित नहीं रहना है। हमें एक नागरिक होने के नाते, यह सुनिश्चित करना है कि देश का प्रत्येक नागरिक 24 घंटे सतर्क रहे और भारत को विकसित बनाने के लिए प्रयास करता रहे। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब हम सब मिलकर इस अभियान में जुट जाएं। आज हर व्यक्ति, हर संस्था, हर संगठन को इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना है कि मैं जो कुछ भी करूँ वह विकसित भारत के लिए हो। अपने लक्ष्यों और अपने संकल्पों का ध्यान केवल विकसित भारत पर होना चाहिए।
  9. हमें हमारी संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर के प्रति सम्मान की भावना रखनी होगी। खानपान हो, पहनावा हो, भाषा हो, संगीत हो, नृत्य हो, कला हो, हस्तशिल्प हो आदि के संदर्भ में हमें हमारी सनातन की परंपराओं को बनाए रखना होगा और उनके प्रति हमारे मन में गर्व का भाव आवश्यक है। भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और पर्यावरण के प्रति एक आदर का भाव रखते हुए उसके प्रयास ऐसे हो जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिले।
  10. भारत के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा और कौशल पर बल देना होगा तथा संकल्प लेना होगा कि वह सदैव कौशल के लिए शैक्षणिक नवाचारों को अपनाता रहेगा।
  11. विकसित भारत के साथ-साथ स्वस्थ भारत की थीम को भी लेकर चलना होगा इसके लिए पौष्टिक आहार, नियमित व्यायाम व योग, परंपरागत व स्थानीय खेलों में भागीदारी, तनाव मुक्त जीवन आदि की दिशा में संकल्प लेना होगा।
  12. प्रत्येक नागरिक को पर्यावरण के संवर्धन सुरक्षा के लिए वचनबद्ध होना होगा। इसके लिए नागरिकों को सार्वजनिक परिवहन, बिजली की बचत, इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का अनावश्यक उपयोग न करना जैसे लिफ्ट की बजाय सीढ़ियों का प्रयोग करना आदि, यूज एंड थ्रो के स्थान पर टिकाऊ यंत्रों का इस्तेमाल करना, प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े के बैग का उपयोग करना, अधिकतम वृक्षारोपण करना, बूँद बूँद पानी की बचत करना आदि करणीय संकल्प लेने होंगे।
  13. भारत के प्रत्येक नागरिक को सामाजिक कल्याण की दिशा में सोचना होगा। बुजुर्गों का सम्मान करना उन्हें समय देना, स्थानीय सामाजिक समितियों का निर्माण करते हुए आस-पड़ोस में संवाद स्थापित करना, दिव्यांग जनों के प्रति संवेदनशील होना, मातृशक्ति का सम्मान करना, परिवार में बालक और बालिकाओं को सनातन की शिक्षा देते हुए उनमें चारित्रिक मूल्यों की स्थापना करना आदि विषयों पर विचार करना होगा।
  14. लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व को भी समझना होगा। प्रत्येक नागरिक को संकल्प लेना होगा कि वह लोकतंत्र में अपना अधिकतम सहभाग करे।
  15. भारत का प्रत्येक व्यक्ति नागरिक मूल्यों से परिपूर्ण हो इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है। जैसे सोशल मीडिया के प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व है, ट्रैफिक के नियमों की हम पालना कर रहे हैं क्या?, क्या हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं?
- इस प्रकार हमें अगले 25 वर्षों के कालखंड में एक नई प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने का संकल्प लेना है जिससे 2047 तक भारत को विकसित बनाया जा सके।

<sup>1</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,  
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

<sup>2</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान  
एस के राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर

# Digital India and Media & Information Literacy

□ Dr. Tarseem Singh

## Introduction

India is working hard to connect people to government policies and services through digital technology. In the early days of his first term as Prime Minister, Narendra Damodardas Modi revealed his governance strategy, which is based on minimum government and maximum governance. To achieve this objective, he envisioned digital India as its prerequisite. Digital India means people having unrestricted access to information and services through the internet and digital technologies and transforming India into a digitally empowered and knowledge-based society (<https://csc.gov.in/digitalIndia>). So, to get the maximum benefits of digital products and services, one must be digitally literate to take informed decisions in finding solutions for his or her day-to-day problems and participate in democratic governance.

## Digital India

During the last decades, most of the policies and services of the government of India were and are technologically driven. The government took advantage of digital technology and social media like Facebook, WhatsApp, Instagram, etc. to spread awareness about various products and services. The creation of bank accounts for Jan Dhan Yojna and for direct transfer of benefits, the creation of the Ayushman Card for cashless medical treatment (<https://services.india.gov.in/>), and COVID vaccination management through Cowinapp are some of the classic examples of how India has developed and exploited digital technology for the benefit of common and marginalised people.

There is no doubt that technology has helped organisations and individuals connect with each other, overcoming distance and time barriers. But the general question is: Is science or technology a boon or bane? Needed analyses. And the answer to this question is: science and technology are boons for modern society if used carefully, and banes if handled without knowledge and ethics.

The digital divide and lack of awareness & knowledge of different aspects of information creation and sharing may put individuals and society in dangerous positions. In the present society driven by social media, cases of misinformation, disinformation (<https://www.dictionary.com/e/misinformation-vs-disinformation-get-informed-on-the->

difference/), and rumours spread at unprecedented speed and can engulf a country or region within no time.

## Ecology of MIL

Today, media and digital technology are two unalienable identities, and the composite term ‘Media and Information Literacy’ came into existence. To save society from the dangerous use of media, disinformation, rumours, etc., as well as get maximum benefits from digital technologies, one must be media and digitally literate (<https://www.unesco.org/en/media-information-literacy/about>). Now, some questions need analysis, like: Who is media and information literate? What are the different components of media and information literacy? How has low information literacy impacted society? And what governments and other non-profit organisations are doing to spread media and information literacy?

In the present digital era, media and information are two entities driven by technology for their content creation, storage, and dissemination in different formats. Technological advancement has transformed the media and information industry, and as a result, media and information in different formats came into existence. The invention of the printing press led to the print revolution; then came radio and television, and further computing and networking revolutionised the digital and electronic media. With the advent of new media, its associated literature also developed (<http://unesco.mil-for-teachers.unaoc.org/foreword/unifying-notions-of-media-and-information-literacy/>).

Figure 2: The Ecology of MIL: Notions of MIL



(Source: <http://unesco.mil-for-teachers.unaoc.org/foreword/unifying-notions-of-media-and-information-literacy/>)

## Media & Information literacy

The term media & information literacy (MIL) came into existence by combining two terms 'media literacy' and 'information literacy'. Since the role of media is the dissemination of information, irrespective of its different formats, the two terms are taken in tandem. Today, the general public is not only a consumer but also a creator and disseminator of information and content in different formats, especially through social media. So, it is important for all to know what to create and share. Regarding the different information one received, he must have the ability to distinguish between real and fake. And at the same time, for sharing information, one must have ability to analyse the information and critically judge-what is worth sharing and what needs to be blocked and report.

A person is said to be media literate if he has some knowledge of medias' role and its working in society. Similarly, a person is information literate if he knows: how to find, filter, analyse, and further use that information critically (<https://mila.org.uk/what-is-mil/>).

### Components of MIL

Media and information literacy is not a single trait; it involves various skills and competencies that help the person make critical and ethical use of the information available ([http://ijrar.com/upload\\_issue/ijrar\\_issue\\_326.pdf](http://ijrar.com/upload_issue/ijrar_issue_326.pdf)) from various sources like books, journals, TV, radio, cinema, and social media. The key components of MIL are:

- Accessing and retrieving information.
- Evaluating and assessing information.
- Analysing and interpreting information.
- Creating and producing media contents.
- Ethical and responsible use of information.

Thus, MIL emphasised that, in addition to the abilities of finding, evaluating, and assessing information, one must use that information ethically and responsibly. His right to freedom of expression and opinion is not absolute but requires a balanced approach so that it may not harm peace and tranquility in society.

### Why MIL?

In society, different types of people coexist. Sometime, unintentionally or intentionally, some people create and share some media content that causes law and order problems in society and disturbs the harmony in a region or country. Not only antisocial elements, but sometimes renowned media

agencies took advantage of misinformation, disinformation, malinformation, and rumours for their own interests.

Misinformation refers to incidents where one creates or distributes false or inaccurate information without any intention of deceiving or harming anyone. It may be a case of misunderstanding, ignorance, etc. On the other hand, disinformation also refers to the creation and distribution of false information, but here the intention of the individual is to deceive, manipulate, influence, or harm the individual or society at large. Another harmful impact of a lack of MIL is the inability to fight malinformation, infodemics, fake news, and other propaganda campaigns.

### Conclusion

There is no doubt that in the past and especially during the last decade, India has made tremendous developments in transforming society into a digitally empowered, knowledgeable society and economy. The government's policies and services, even for the poor and marginalised, are just a click away on his mobile. Enrollment in various government schemes and further direct benefit transfers to the bank accounts of beneficiaries like students, farmers, and labourers are some of the visible and verifiable advantages of digital technologies.

But to further exploit the advantages of digital technology, one must hone his skills and competencies to evaluate and use media and information in an ethical and responsible manner, not only in traditional media but also in social media. MIL is not limited to a particular class of society; it is a must for everyone, irrespective of his or her age, class, or category. MIL not only helps the person in optimum and ethical use of information; it also helps the person in combating fake news, misinformation, propoganda, and other disreputative companies of people with ulterior motives. MIL in a single line: think critically and click wisely.

### References:

1. <https://csc.gov.in/digitalIndia>
2. <https://services.india.gov.in/>
3. <https://www.dictionary.com/e/misinformation-vs-disinformation-get-informed-on-the-difference/>
4. <https://www.unesco.org/en/media-information-literacy/about>
5. <http://unesco.mil-for-teachers.unaoc.org/foreword/unifying-notions-of-media-and-information-literacy/>
6. <https://mila.org.uk/what-is-mil/>
7. [http://ijrar.com/upload\\_issue/ijrar\\_issue\\_326.pdf](http://ijrar.com/upload_issue/ijrar_issue_326.pdf)

# Cultivating Sustainability: A Comprehensive Analysis of Smart Agricultural Practices for a Greener Tomorrow

□ Dr. K. Bhaskar

## Abstract

*“Cultivating Sustainability: A Comprehensive Analysis of Smart Agricultural Practices for a Greener Tomorrow” addresses the critical need for sustainable agricultural practices in the face of escalating global challenges. The paper conducts an exhaustive examination of cutting-edge smart agricultural methodologies to ascertain their potential in fostering environmental stewardship and ensuring food security. The study encompasses an array of innovative technologies, ranging from precision farming and Internet of Things (IoT) applications to data analytics and artificial intelligence. By scrutinizing the impact of these techniques on resource optimization, crop yield enhancement, and environmental conservation, the research elucidates the transformative potential of smart agriculture. Beyond technological assessments, this paper considers the broader implications of smart agricultural practices, emphasizing their socio-economic dimensions. Through meticulous examination of real-world applications and case studies, the study evaluates the practicality and scalability of these methodologies across diverse agricultural landscapes. In addition to highlighting the benefits, the paper critically analyses the challenges and obstacles associated with the widespread adoption of smart agricultural practices. It proposes strategic solutions to overcome these barriers, offering a roadmap for stakeholders seeking to implement sustainable agricultural solutions. A pivotal aspect of the analysis involves the incorporation of sustainability metrics and environmental impact assessments. By comprehensively evaluating the ecological footprint of smart agricultural practices, the research provides a balanced perspective on their overall effectiveness. In conclusion, “Cultivating Sustainability” advocates for a transformative shift towards sustainable agriculture, positioning smart agricultural practices as a cornerstone for a greener future. Bridging insights from technology, economics, and environmental science, this research paper serves as an invaluable guide for*

*policymakers, farmers, and stakeholders committed to advancing sustainable agriculture and securing a more resilient and eco-friendly tomorrow.*

---

## Introduction:

In the crucible of contemporary challenges, the imperative for sustainable agricultural practices looms large, necessitating a paradigm shift towards innovative solutions. This research paper, titled “Cultivating Sustainability: A Comprehensive Analysis of Smart Agricultural Practices for a Greener Tomorrow,” embarks on an exploration of cutting-edge technologies that hold the promise of transforming agriculture into an eco-friendly and resilient enterprise. The escalating global challenges, ranging from climate change to burgeoning population demands, underscore the urgency of reevaluating and revolutionizing traditional agricultural methods.

## Contextualizing the Need for Change:

As the world contends with the compounding effects of climate change and population growth, the conventional modes of agriculture face unprecedented pressures. In this milieu, the paper seeks to investigate and comprehend the transformative potential of smart agricultural methodologies. These methodologies encompass a spectrum of innovative technologies, from precision farming and the integration of the Internet of Things (IoT) to leveraging data analytics and artificial intelligence. The research aims to navigate beyond the periphery of technology and delve into the holistic implications for sustainable development.

## Key Objectives and Transformative Potential:

The primary thrust of this paper is to evaluate the effectiveness of smart agricultural technologies in addressing the pressing issues of environmental degradation and ensuring global food security. By subjecting these technologies to a rigorous examination, the study aims to uncover their transformative potential. It extends beyond technological assessments, recognizing the broader socio-economic



dimensions of smart agricultural practices. Real-world applications and case studies become integral components of the analysis, facilitating an evaluation of practicality and scalability across diverse agricultural landscapes.

#### Navigating Challenges and Proposing Solutions:

The research is not blind to the challenges that accompany the adoption of smart agricultural practices. Through a critical lens, the paper analyzes obstacles and proposes strategic solutions, providing a roadmap for stakeholders keen on implementing sustainable agricultural solutions. This approach ensures that the transformative potential identified is not merely theoretical but can be practically harnessed.

#### **Incorporating Sustainability Metrics:**

A pivotal aspect of the research involves the incorporation of sustainability metrics and environmental impact assessments. Beyond the realm of technology, the study comprehensively evaluates the ecological footprint of smart agricultural practices. This ensures a nuanced and balanced perspective on their overall effectiveness and contribution to the broader goal of sustainability.

#### **Advocacy for Transformation:**

In conclusion, “Cultivating Sustainability” is not just a scholarly exercise but a clarion call for a transformative shift towards sustainable agriculture. It posits smart agricultural practices as a cornerstone for realizing a greener, more resilient future. Bridging insights from technology, economics, and environmental science, this research paper aspires to serve as an invaluable guide for policymakers, farmers, and stakeholders committed to advancing sustainable agriculture and securing an eco-friendly tomorrow. The holistic approach undertaken in this study seeks to integrate disparate elements into a cohesive framework, aligning technological innovation with environmental stewardship and socio-economic progress.

#### **Objectives**

1. Evaluate the Effectiveness of Smart Agricultural Technologies.
2. Examine the Socio-Economic Implications of Smart Agricultural Practices.
3. Assess the Practicality and Scalability of Smart Agricultural Methodologies.
4. Identify Challenges and Propose Strategic Solutions for Adoption.
5. Incorporate Sustainability Metrics and Environmental Impact Assessments.

#### **Research Problem:**

The agricultural sector is confronted with escalating global challenges, including climate change, population growth, and resource constraints, which threaten the sustainability of

traditional farming practices. The pressing research problem addressed in this study is: How can smart agricultural practices be effectively implemented to mitigate environmental degradation, enhance food security, and address socio-economic dimensions while navigating challenges and ensuring scalability and practicality across diverse agricultural landscapes? This research problem encapsulates the need for a comprehensive analysis of smart agricultural methodologies to address the multifaceted challenges facing the global agricultural landscape. The inquiry is not just about the technological efficacy of smart agricultural solutions but extends to their broader impact on environmental sustainability, socio-economic dimensions, and their practical implementation in varied agricultural contexts. By addressing this research problem, the study aims to contribute meaningful insights and strategic recommendations to stakeholders, policymakers, and farmers seeking sustainable solutions for the future of agriculture. The research will delve into the intricacies of smart agricultural technologies, their adaptability to different settings, and their ability to usher in a transformative shift towards a greener and more resilient agricultural future.

#### **Review of Literature**

The literature surrounding smart agricultural practices and sustainability provides a rich foundation for understanding the complexities and potential transformative impact in the agricultural sector. This review synthesizes key findings from diverse sources, offering insights into technological advancements, socio-economic implications, and environmental considerations.

#### **Technological Advancements in Agriculture:**

Numerous studies highlight the rapid evolution of precision farming techniques. The work of Smith et al. (2019) underscores the efficacy of precision agriculture in optimizing resource use, increasing crop yields, and minimizing environmental impacts.

The integration of Internet of Things (IoT) applications in agriculture is explored by Brown and Miller (2020). Their findings emphasize the role of IoT in real-time monitoring, data collection, and decision-making processes, contributing to enhanced agricultural productivity.

#### **Socio-Economic Dimensions of Smart Agricultural Practices:**

The socio-economic implications are addressed by Hernandez and Martinez (2018), who analyze case studies on the adoption of smart technologies by farmers. Their research delves into the economic benefits, changes in labor dynamics, and the empowerment of small-scale farmers through technological interventions.

A comprehensive review by Kumar and Singh (2021) considers the socio-economic challenges associated with smart agriculture, shedding light on issues of accessibility, affordability, and the potential for creating economic disparities among farming communities.

### **Practicality and Scalability Across Agricultural Landscapes:**

Assessing the practicality and scalability, Jones et al. (2022) present a meta-analysis of smart agriculture projects globally. The study identifies factors influencing successful implementation, ranging from local infrastructure to farmer education, emphasizing the need for context-specific approaches.

Smith and Johnson (2017) contribute insights into scalability challenges and propose a framework for evaluating the adaptability of smart agricultural methodologies across diverse agricultural landscapes.

### **Challenges and Strategic Solutions:**

Acknowledging challenges, Garcia et al. (2019) explore issues related to data privacy and cybersecurity in smart agriculture. Their work underscores the importance of addressing these concerns for widespread adoption and acceptance. Research by Patel and Gupta (2018) provides a strategic perspective, proposing policy interventions and incentives to overcome barriers. The study advocates for collaborative efforts involving government, industry, and local communities to ensure successful adoption.

### **Sustainability Metrics and Environmental Impact Assessments:**

Environmental sustainability is a key focus in the study by Robinson and White (2020), which introduces a framework for assessing the ecological footprint of smart agricultural practices. The research emphasizes the need for continuous monitoring and adaptation to ensure long-term environmental benefits.

Building on this, the work of Green et al. (2019) explores methodologies for integrating sustainability metrics into decision-making processes, promoting a holistic approach that aligns technological innovation with environmental conservation goals.

This review establishes a comprehensive understanding of the current state of smart agricultural practices, offering a nuanced exploration of technological, socio-economic, and environmental facets. The synthesis of these studies informs the objectives of the present research, guiding the investigation into the transformative potential of smart agricultural practices.

### **Contextualizing the Need for Change:**

In the face of escalating global challenges, traditional

agriculture finds itself caught in the confluence of two transformative forces: the relentless progression of climate change and the unprecedented growth of the global population. The compounding effects of these two factors have created a crucible of pressures that traditional farming methods are struggling to withstand. Climate change, with its erratic weather patterns, increased frequency of extreme events, and shifting ecological dynamics, has disrupted age-old agricultural practices, making them increasingly unsustainable.

Moreover, the burgeoning global population amplifies the strain on food production systems. As demographic trends point toward a world population that continues to expand, the demand for food resources has reached unparalleled levels. Traditional agriculture, which has been the backbone of food production for centuries, is now facing unprecedented challenges in meeting the nutritional needs of an ever-growing populace. In response to these challenges, there is an urgent need to explore and embrace transformative solutions. The imperative for change is underscored by the recognition that traditional agricultural methods alone may no longer suffice to secure global food supplies and mitigate the environmental impact of farming practices. This recognition forms the bedrock for investigating the transformative potential of smart agricultural methodologies. The need to investigate these innovative approaches arises from the realization that agriculture must evolve to meet contemporary demands and overcome the limitations imposed by a changing climate and an expanding population. Smart agricultural methodologies represent a paradigm shift – a departure from convention to embrace cutting-edge technologies that promise not only increased efficiency in resource utilization but also a sustainable and resilient future for global food production.

The spectrum of innovative technologies under consideration encompasses a diverse array of tools and methodologies. From precision farming, which leverages advanced sensing technologies to optimize resource use, to the integration of the Internet of Things (IoT) applications that enable real-time monitoring and data-driven decision-making, these technologies hold the potential to revolutionize the agricultural landscape. Furthermore, the incorporation of data analytics and artificial intelligence adds a layer of sophistication, offering insights that were previously unimaginable. These technologies do not exist in isolation but form a comprehensive toolkit for sustainable development. Their relevance extends beyond mere efficiency gains; they hold the key to aligning agriculture with broader sustainability goals. By harnessing the power of innovation, we can not only address the immediate challenges posed by climate change and population growth but also lay the foundation for

an agricultural future that is both environmentally responsible and socio-economically viable.

In this context, the exploration of smart agricultural methodologies becomes not just a scientific endeavor but a necessity for securing the future of global food systems and environmental stewardship. The following sections of this research paper delve into the transformative potential of these methodologies, analyzing their impact on resource optimization, crop yield enhancement, and environmental conservation. Through a meticulous examination of real-world applications and case studies, we aim to evaluate the practicality and scalability of these technologies across diverse agricultural landscapes.

### **Evaluating the Effectiveness of Smart Agricultural Technologies:**

At the core of our research lies a pivotal objective – the comprehensive evaluation of the effectiveness of smart agricultural technologies. This goes beyond a cursory examination; it involves a rigorous and in-depth analysis aimed at uncovering the true transformative potential these technologies hold for the agricultural sector. Our focus extends beyond the theoretical realm to assess how these technologies perform in real-world scenarios, providing insights into their practical impact on farming practices.

### **Rigorous Examination Process and Real-World Applications:**

To achieve this objective, our research adopts a rigorous examination process that involves scrutinizing the intricacies of smart agricultural methodologies. This goes beyond theoretical frameworks and delves into the practical applications and case studies that showcase the tangible outcomes of implementing these technologies. By grounding our analysis in real-world examples, we aim to bridge the gap between theory and practice, ensuring that our evaluation is not confined to abstract ideals but reflects the actual benefits and challenges experienced by farmers and stakeholders.

### **Recognizing Socio-Economic Dimensions:**

Smart agricultural practices don't exist in isolation; they are inherently linked to broader socio-economic contexts. Our research places a strong emphasis on recognizing and understanding these socio-economic dimensions. Beyond the technical efficacy of smart technologies, we explore how their implementation influences economic dynamics, labor structures, and social empowerment, ensuring a holistic understanding of their impact on farming communities.

### **Practicality and Scalability Across Diverse Landscapes:**

The practicality and scalability of smart agricultural methodologies are pivotal considerations in our research.

Acknowledging the diversity of agricultural landscapes worldwide, we seek to assess the adaptability of these technologies across different settings. Our analysis aims to identify not only the potential benefits but also the challenges and opportunities associated with implementing smart agricultural practices on a broader scale. By doing so, we provide valuable insights for stakeholders, policymakers, and farmers looking to navigate the complexities of integrating these technologies into diverse agricultural contexts.

### **Pivotal Role of Sustainability Metrics and Environmental Impact Assessments:**

A cornerstone of our research is the recognition of the pivotal role played by sustainability metrics and environmental impact assessments in shaping the future of agriculture. We understand that achieving sustainability goes beyond mere intentions; it requires a systematic approach backed by measurable indicators. Sustainability metrics become the lens through which we scrutinize the impact of smart agricultural practices, providing a robust framework for evaluation.

### **Comprehensive Evaluation of the Ecological Footprint:**

Our commitment to a holistic understanding of smart agricultural practices extends to a comprehensive evaluation of their ecological footprint. Beyond the immediate benefits, we delve into the environmental repercussions of these technologies. By scrutinizing their ecological footprint, we aim to uncover both positive and negative consequences, ensuring that our assessment is thorough and nuanced.

### **Balanced Perspective on Effectiveness and Contribution to Sustainability:**

At the heart of our analysis is the pursuit of a balanced perspective. We recognize that true effectiveness lies not just in technological advancements but in their alignment with overarching sustainability goals. By critically assessing the contribution of smart agricultural practices to sustainability, we provide stakeholders, policymakers, and farmers with a nuanced understanding of the broader implications. This balanced perspective is crucial for informed decision-making and ensures that the transformative potential of these technologies is harnessed responsibly.

### **Reinforcing the Transformative Shift towards Sustainable Agriculture:**

At the core of our advocacy lies a steadfast commitment to reinforcing the transformative shift towards sustainable agriculture. It's not merely a suggestion but a resounding call to action, urging stakeholders, policymakers, and farmers alike to embrace a paradigm that ensures ecological harmony and long-term agricultural viability. Our research amplifies this message, emphasizing the urgency of

departing from traditional practices to pave the way for a more sustainable and environmentally conscious future.

### **Positioning Smart Agricultural Practices as a Cornerstone:**

We don't just propose change; we position smart agricultural practices as the cornerstone of this transformative journey. By showcasing their efficacy and multifaceted benefits, we advocate for a fundamental reimagining of agricultural methodologies. Smart practices, encompassing technologies, data analytics, and precision farming, are not mere supplements but integral elements for constructing a foundation that is both greener and more resilient. Our advocacy goes beyond rhetoric; it's a strategic positioning that aligns technological innovation with environmental and economic sustainability.

### **Highlighting Interdisciplinary Insights:**

Our research is more than a singular perspective; it's a convergence of insights from diverse fields. By bridging technology, economics, and environmental science, we offer a unique interdisciplinary approach. This not only enriches the depth of our analysis but also acknowledges that sustainable agriculture is a complex tapestry requiring a multifaceted understanding. Our advocacy is rooted in this interdisciplinary collaboration, recognizing that a holistic approach is paramount for achieving the transformative goals we advocate.

In essence, our advocacy is a rallying cry for change, a strategic positioning of smart agricultural practices, and a celebration of interdisciplinary collaboration. It's not just about envisioning a greener future; it's about actively contributing to its realization through informed action and a collective commitment to sustainable agricultural practices.

### **Conclusion**

"Cultivating Sustainability: A Comprehensive Analysis of Smart Agricultural Practices for a Greener Tomorrow" underscores the imperative for a transformative shift towards sustainable agriculture. The research meticulously examines the effectiveness of smart agricultural technologies, acknowledging their broader socio-economic dimensions and evaluating their practicality and scalability across diverse landscapes. By incorporating sustainability metrics and environmental impact assessments, the study provides a balanced perspective on the ecological footprint of these practices. The identified challenges are met with strategic solutions, offering a roadmap for stakeholders. Ultimately, the paper advocates for smart agricultural practices as a cornerstone for a greener and more resilient future, bridging insights from technology, economics, and environmental science. This interdisciplinary approach serves as a guide for

policymakers, farmers, and stakeholders committed to advancing sustainable agriculture and securing an eco-friendly tomorrow. The research is not just a scholarly exercise but a clarion call for actionable steps towards a more sustainable and environmentally conscious global agricultural landscape.

### **References**

1. Brown, A., & Miller, C. (2020). Internet of Things (IoT) Applications in Agriculture: Real-time Monitoring and Decision-making. *Journal of Agricultural Technology*, 15(2), 45-62.
2. Garcia, P., Smith, J., & Johnson, R. (2019). Data Privacy and Cybersecurity in Smart Agriculture: Challenges and Solutions. *Journal of Agricultural Information Security*, 8(3), 112-128.
3. Green, M., Robinson, S., & White, L. (2019). Integrating Sustainability Metrics into Decision-making Processes for Smart Agricultural Practices. *Sustainable Agriculture Review*, 22(4), 89-107.
4. Hernandez, M., & Martinez, S. (2018). Socio-Economic Implications of Smart Agricultural Practices: Case Studies on Farmer Adoption. *Journal of Agricultural Economics*, 27(1), 78-94.
5. Jones, K., Patel, R., & Gupta, A. (2022). Meta-analysis of Smart Agriculture Projects: Factors Influencing Practicality and Scalability. *Agricultural Innovation Research*, 35(3), 211-228.
6. Kumar, S., & Singh, R. (2021). Socio-Economic Challenges in Smart Agriculture: Accessibility, Affordability, and Economic Disparities. *Sustainable Development Journal*, 18(2), 145-162.
7. Patel, A., & Gupta, M. (2018). Policy Interventions and Incentives for Overcoming Barriers to Smart Agricultural Practices. *Journal of Sustainable Agriculture Policy*, 14(4), 201-218.
8. Robinson, L., & White, H. (2020). Assessing the Ecological Footprint of Smart Agricultural Practices: A Framework for Continuous Monitoring. *Environmental Science and Technology*, 29(5), 432-449.
9. Smith, D., Johnson, P., & Miller, E. (2017). Scalability Challenges in Smart Agriculture: A Framework for Evaluation. *Agricultural Systems*, 24(6), 321-338.
10. Smith, J., Brown, A., & Robinson, M. (2019). Precision Farming Techniques: Optimizing Resource Use and Environmental Impact. *Journal of Precision Agriculture*, 12(1), 56-72.

- Asst Prof of Political Science, Government City College(A), Nayapul, Hyderabad  
Mail ID: bhaskarkunuru8@gmail.com

# Skill Development and Digital India

□ Dr. K.C. Mahadesha

## Abstract

*Skill Development and Digital India is the hall mark of national Sovereignty. India has been identified as the youngest country where young force constitutes 42% of the total population of the country. Skill development and technological innovations promotes all-round development of the nation. F.D.Roosevelt had once said “We can’t always build the future for our youth, but we can build our youth for the future. The young Bharath is the most valuable human resources, Youth have a dynamic, vibrant and tremendous role to play in strengthening the country. The youth force coupled with their Skill, energy and versatility facilitate to promote socio economic equality and ensures social justice. Technological innovation and knowledge make us to come under one roof and strengthen us to combat any situations which poses threat to national security and integrity. The close liaison of skill and Technological innovation is essential and indispensable for economic growth. To achieve the predetermined goal, the invest in human resource development aiming at enabling the youth power with scientific temper has to be given top most priority. To encourage the youth and make them self-reliant government should necessarily undertake and initiate various skill development programmes.*

*The dynamic leadership provides plot from to everyone to exhibit their skill and talent. The P.M set the ball rolling by launching many skill development programmes. He said Skilling is building a better India. If we have to move towards development then skill development should be our mission. The proposed international seminar - ‘Resurgent Barath on global canvas’ throw light on the contribution of India to the field of science and technology and skill development. The younger generation in India can identify themselves with their skill and talent. It is a matter of pride that India is the largest democratic country where its youth immensely contributing to flourish domestic and global economy through their skill, Knowledge and Talent. In another ten years the country can emerge as leading developed country, its position would be un beatable and incommensurable.*

## Introduction:

The growth and development of any country largely determined by the efficient and effective skill of every individual and optimum utilization of Human Resources. Economic development of the most of the countries witnessed that skill or capacity, creation or innovation, performance, leadership quality are the effective tools to accomplish the predetermined objectives. Since 1991 India has been initiating various skill development programmes to strengthen the economic, Social and Political base of the country. However, lack of quality education, unemployment, underemployment, high dropouts’ rates, lack of vocational training, inadequate training canter hampered the growth. Further lack of man power, unequal distribution of wealth, mismatch between demand and supply of skilled work force widened the gap between urban and Rural.

The 11<sup>th</sup> 5 year plan recognised that skill building is a dynamic process and intangible skills need to be upgraded continuously but the workforce to remind relevant and employable hey accordingly institutional structure consisting of the Prime Minister National Council for skill development park policy directions supported by the national skill development coordination board barcode reading skill efforts across central ministries and States and their National Skill Development Corporation (NSDC) for catalysing the private efforts in the skill domain was put in place during the 11th plan. However, the PM Council and Coordination Board have been subsumed in National Skill Development Agency (NSDA) which would be the single point focus for all skill development activities. The NSDA will inter alia- take all possible steps to meet skilling target as envisaged in the next 5-year plan further coordinate and harmonise the approach to skill development among various central ministries or departments, state governments the NSDC and the private sector and eventually ensure that the skilling needs of the disadvantage and the marginalised groups like SCs, STs, OBCs, Minorities and women and differently abled persons are taken care of.

In 2019 a National Policy and Skill Development was

formulated with an intention to provide skill to 600 million people by 2023. This policy re affirmed on dynamic, demand-based skill initiatives which are aligned with government policies on economy and development. Further the Government of India is implementing several schemes in skill development with the objective of increasing employability through skilling up of the skilled and reskilling of existing and new entrants to the labour force.

Further in order to enhance the skill, the Government of India with the support of the state government initiated cooperative federalism, and introduced NITI Ayog which shoulder the responsibility to strengthen and promote the youth force through digital technology. More emphasis has been given to digital India concept through which the government initiated various skill developmental activities and made sincere efforts to reach nook and corner of the country. The government believed that every individual has her/ his own skill, that need to be identified and extracted through proper measures and mechanism. In this regard digital India has gained a momentum and ensured skill development in all the field and left no stone unturned.

#### Empowerment of the society and Nation

Digital India and skill development go hand in hand, in the absence of technology and digital service there is no scope for skill. In fact, skill development always be determined the use of ICT and inclusive growth and development. Digital Technology is an indispensable phenomenon and it is the key to unlock access and potential of digital technology India's economic growth and sustainable development is based on the access and availability of digital technology. Skill development and technology are interrelated. Skilled and talented people always involve in innovation and New Innovation and always supportive and facilitate for inclusive development of the nation. Technology left no stone unturned and spread to the nook and corner of the country.

#### Objectives-

- Digital India ensures speedy service to the door step of the common people
- Explore the skill and talent
- Encourage the youth to involve in Innovative activities
- Bridge the gap between Urban and Rural, promotes RURBAN
- Promotion of Electronic manufacturing
- Access to credit, Access to market, Technological upgradation. Ease of doing business and so on.

It is believed that the growth and Development of India depends on the mindset of the people and leadership ability. The Government should not be merely the provider, instead, it should be an enabler. The wheels of transformation moving towards paradigmatic shift. The Prime Minister of India once

stated that If India is to meet the challenges of change, mere incremental progress is not enough. A metamorphosis is needed. As he stated, the transformation of India cannot happen without a transformation of governance, the transformation of governance cannot happen without a transformation of mindset, and a transformation of mindset cannot happen without transformative ideas. Various pro people programme has been launched in various sectors- banking, financial service, Smart cities, Swachh Bharat, rural electrification, education first and foremost criterion, health care, logistics among others. The country has aimed to achieve the 5 trillion-dollar economy by 2024 Dec.

India has a distinct advantage to day over its competition in terms of the age of working population. With half of its population below the age of 25 years, the country has the world's younger population. There are various process and pathways to combat the challenges on the line. That can be enumerated as follows-

- Education- Education is one of the key factors, expansion of Higher education and specific professional courses like architecture, Law, Medical Engineering and other.
- Skill Development for the entry level jobs, for those either in education or in employment.
- Add skilling that is upskilling and reskilling those who have been educated and have worked or working or those who have worked and out of job to meet the skill development of the new jobs or changed jobs.

Some of the Skill Development Programmes initiated by both Central and State governments are enlisted:

#### Central government.

1. Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana
2. Skill Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion (SANKALP)
3. UDDAN (Special Industry initiative for Jammu and Kashmir.
4. Pradhan Mantri Kaushal Kendra
5. Recognition of Prior Learning.
6. Apprentice Training.
7. National Apprentice Promotion Scheme
8. Deendayal Upadhyaya Grameen Kaushal Yojana
9. Maulana Azad National Academy for Skill
10. Nai Manzil.
11. Upgrading the Skill and Training in Traditional Artis/ Crafts for Development (USTTAD)
12. Seekho aur Kamao (Learn and Earn)
13. Skill Development for Minorities (Special Programme)
14. Scheme for Higher Education and Youth in Apprenticeship and Skill
15. Establishment of Centres for Training and Research in

## Frontier Areas of Science and Technology (FAST)

### Some of the State Specific Programmes

- Mukhay Mantri Kaushal Samvardhan Yojana- Madhya Pradesh
- Kushal Yuva Program- Bihar
- Mukhya Mantri Shram Shakti Yojana- Bihar
- Kaushalkar. Com- Karnataka

Apart from the aforesaid programmes both Union and the State governments initiated various skill development programmes to address the grievances of the people. In addition to this under New Education Policy Skills in Schools, Colleges, universities have been introduced. In this regard various skills and Digital Technology are inter related and both simultaneously facilitates to strengthen the nation's economy beside ensuring quality in education, E-Governance, E-commerce, E- Banking, E-Finance and so on.

Relating to the Promotion of Health Service, A road map is developed to redesign and revamp the Health Service to all sections of the society. Under the Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana, Health Insurance programme at Secondary and Tertiary level hospitalization. Through Urban and Rural Primary Health Centres ensure health Service to all the people.

Though Skill Development and Digital Technology ensures multidimensional development, in a developing country like India most of the people are facing so many challenges in getting the benefits or service rendering by the governments. Some of the major challenges are identified through sample survey-

- Lack of technical Knowledge among the rural masses to access the information or services.
- Lack of administrative of visions among the officials
- Bureaucracy- Neither ideal or steel frame.
- Party interest rather than Nation's interest.
- Lack of mobilization of resources.
- Pacifying a particular section of the society ignoring the majority interest.
- Gap between Urban and Rural, Migration, concentration of wealth in the hands of few Aristocrats.
- Failed to identify Or extract the Human Resources
- Lack of visions among the youths.

### Measures need to be taken or focused

1. Governance and Development should go hand in hand.
2. Equal distribution of resources on all the three sectors
3. Strengthening Education which is Key to success
4. Innovative thinking in Government.
5. Enhance the skill development activities in all sectors.
6. Service must be reached to the door steps of common people
7. Social Empowerment and Economic Empowerment.
8. Social changes. Down trodden people must be identified and uplift them and bring them to the main stream of the society.
9. Strengthen the democratic institutions
10. Revamp and Redesign Education system, economic planning, Health care according to the changing needs of the society.

### Conclusion-

It is studied that India is a land of many villages, castes and Religions. Nothing can be Changed only by law, Rules and Regulations or supreme courts decisions. Poverty is a curse, unless poverty is alleviated and their basic grievances are not properly addressed, whatever the programmes launched either by central or state government does not yield good result. People need to be educated, cultures, civilised and economically as well as social empowered. In this regard Technology facilitates to bring changes or transform the society. Skill Development and Digital India is one of the remedies to address the needs and demands of the public. So that measures initiated by the governments at all level can ensures to redesign and revamp the society and bring social changes.

### References.

1. Front line – A special Issues
2. Yojana- A development Monthly- Digital India
3. Yojana- Empowering Youth
4. India Today- The vulnerable Indian
5. Yojana- Education for all
6. Kurukshetra – Empowering Rural Women
7. Kurukshetra – Empowering Rural youth
8. Governance and Development – Y.K.Alagh
9. Yojana- Inclusive Democracy

Dept. of History, University Evening College  
Mysore University, Mysore, Karnataka State,  
Mobile- 9980659561

# Waste-to-Wealth : Indian Innovative Methodologies in Resource Utilization

□ Deepak Pathania<sup>1</sup>, Kajol Gorla<sup>2</sup>, Sunil Dhar<sup>3</sup>, Richa Kothari<sup>4</sup>

## Abstract

*Although the term sustainability may seem to be new but the idea is as old as human existence. The idea of sustainability has been practiced for aeons by numerous civilizations throughout the planet. Conventional methods include farming, aquaculture, hydroponics, crop rotation, terracing, water system designs, legume harvests to enrich the soil with nitrogen, and varying crop utilisation assortments. Wastes from humans, animals, and harvests were recycled to maintain soil fertility without producing waste or using chemicals.*

*Ancient Indian literature and holy texts like the Vedas, Upanishads, Puranic texts, and Shastras (scriptures) make it evident that the Indian way of life has been braided into many forms, incorporating nature into daily tasks. There are numerous compositions in the Vedas, indicating that in ancient India, everyone had to practise the dharma in order to protect and value nature. Nothing is worthless in our rural lives, even in the modern era.*

*In Indian philosophy, waste is viewed as valuable resource. Indian culture is well adapted to managing and completing everyday tasks with the least amount of resources possible since it is always seen as a holy duty to protect the environment.*

*The circular waste management principle (Reduce, Reuse, and Recycle) has long been ingrained in Indian society, where the general public has traditionally been frugal. This involves a high degree of product repair and reuse as well as passionate ingredient post-use through recycling. So, here in this present article, resource limitations at national and global level is focused with its utilization for 3 F's (Food, Feed and Fertilizer) via incorporating the innovative ideas in scientific and technical manner. Innovative approaches helpful to enhance the efficiency of resource allocation and administration. Therefore, fundamental changes in our resource production, consumption and management is necessary with integration of emerging technology and the*

*adoption of current trends are of paramount importance in driving the progress.*

**Keywords:** Waste, Resource, Innovative technologies.

## 1. Introduction

Industrialization plays a crucial role in the development of any nation as it may contribute to nation's economic growth along with it can also lead to environmental destruction hindering the sustainable development. Besides that, rapidly growing population is another key factor for greater expansion of industries that consequentially led increased pollution levels through fossil fuel overexploitation, depletion of natural resources, environmental degradation through global warming and climate change. In order to maintain development in longer scenario, it is crucial to balance between industrialization and environmental sustainability. This can be achieved through sustainable practices implications and environmental regulations. In Indian past scenario, it has evidently found that the ancient scriptures such as Puranas, Upanishads, Vedas and Smritis shows ecological harmony and significantly emphasizes the man and nature's close interconnectedness (Sharma and Makhijani, 2023). These scriptural texts highlight the ancient sustainable way of living by conserving the natural resources. In these texts, the planet earth is personified as mother or a divine entity which reinforce the idea that it must be respected and honoured. Several responsible resource management guidelines for the protecting ecological biodiversity are well mentioned there that reveal the early recognition of the need for harmonious coexistence with nature.

Ignoring the environmental aspect over social and economic development has increased long-term consequences threatening biodiversity so it is apparently crucial to shift our needs prioritizing environmental health and responsibility. By incorporating responsible resource management through collective conservation efforts and sustainable practices into the system can safeguard the environmental health without



compromising social and economic development. Since ancient times in India, 3R-principle (Reduce, Reuse, and Recycle) and zero-waste management have been an inseparable part of life in the culture and lifestyle (**Aggrawal, 2023**). Indian culture strongly emphasizes over minimizing consumption, reutilizing used products or recycling the waste into something useful for another purpose that can ensure effective waste management over ages. It encourages the use of resources to the greatest extent possible, ensuring no room for waste generation. Indian traditional knowledge demonstrates that environmental stewardship has firmly embedded in the way of Indian people's lifestyle (**Saidmuradova and Kumar, 2023**). Sustainable utilization of natural resources, use of sustainable building materials, rain water harvesting, organic farming and sustainable festivals celebration admire the environmental health encouraging sustainability (**Chauhan et al., 2022**). Indian tradition in order to maintain environmental responsibility has set cultural practices in such a way to inspire sustainable living harmonious with environment. Indian customs and values have passed down generation to generation since ancient times prioritizing taking care of the environment stating that along with environmental responsibility, it is also a way of life. Indian cultural practices remind interconnection between humans and nature through sustainably celebrating festivals like Navratri, Pongal, and Baisakhi. Indians not only pay homage to their deities but also acknowledge the importance of nature in their lives. These festivals involve rituals such as planting trees, offering prayers to the sun and rivers, and acknowledging the role of agriculture in sustaining communities. These practices foster a deep sense of gratitude and respect for the environment, encouraging individuals to minimize their ecological footprint and adopt sustainable practices in their day-to-day lives. India's cultural heritage is a beacon of hope and motivation for the global community to prioritize environmental conservation and forge a more sustainable future for all. By embracing sustainable practices, India sets an example for the rest of the world, proving that it is possible to live in harmony with nature without compromising on cultural richness and tradition (**Chavan and Sharma, 2024**). The celebration of festivals like Holi and Diwali, which involve the use of natural dyes and clay diyas instead of synthetic materials, further highlight India's commitment to eco-friendly practices. From using organic farming methods to harnessing renewable energy sources, India has shown a commitment to sustainable development. The country has implemented policies and initiatives that promote eco-friendly practices, such as the banning of single-use plastics. Furthermore, India is leading the way in wildlife conservation efforts, with numerous national parks and

protected areas dedicated to preserving biodiversity. Hence, India's traditional values and eco-cultural practices provide valuable lessons and serve as a symbol of hope in the fight against waste management, climate change and environmental degradation (**Mehra, 2017**). In addition, India has also made significant progress in promoting clean transportation, with the introduction of electric vehicles and the expansion of public transportation systems. The government has launched campaigns to raise awareness about the importance of environmental conservation and has encouraged citizens to actively participate in sustainable practices. These efforts demonstrate India's determination to create a greener future and inspire other nations to follow. India has implemented policies to promote the use of renewable energy sources such as solar and wind power. This has led to a significant increase in the country's renewable energy capacity and a reduction in its reliance on fossil fuels. India has also taken steps to address the issue of waste management by promoting recycling and waste segregation practices, further contributing to its commitment towards environmental sustainability.

Waste management has become a challenging concern in the current scenario at a global level. The increase in population and urbanization has led to a significant rise in waste generation, putting immense pressure on existing waste management systems. Furthermore, the improper disposal of waste has severe consequences on the environment, including land, water, and air pollutions. To tackle this issue, it is crucial for governments and communities to prioritize sustainable waste management practices, such as recycling, composting, and the implementation of advanced waste treatment technologies. Only through collective efforts and awareness can we effectively address the challenges posed by waste management and move towards a cleaner and more sustainable future. Failing to prioritize sustainable waste management practices can have long-term consequences on public health and the environment, which may ultimately result in higher costs for communities in terms of healthcare and environmental remediation. Implementing such practices can lead to job creation and economic growth through the development of recycling and waste treatment industries. Improper waste management can lead to environmental pollution, which can have detrimental effects on ecosystems and human health. Therefore, implementing effective waste management strategies, such as recycling, composting, and proper disposal methods, is crucial (**Saidmuradova and Kumar, 2023**). Additionally, investing in advanced waste treatment technologies can not only reduce pollution but also contribute to the creation of a sustainable and circular economy. Government of India has launched efficient waste management initiatives like Swachh Bharat

Mission that aims to achieve a clean and open defecation-free India by improving waste management practices. This mission recognizes the importance of waste management in improving public health and ensuring a sustainable future for the country. By promoting awareness and providing infrastructure for waste segregation, recycling, and proper disposal, the mission is making significant progress in addressing the issue of improper waste management in India. It serves as a model for other nations to prioritize waste management as a crucial aspect of national development.

Generally, the waste can be categorized into biodegradable and non-biodegradable. Biodegradable waste materials refer to organic substances that can be broken down naturally by microorganisms, such as bacteria and fungi. These materials include agricultural waste, waste from plants, humans and animals, food waste, paper waste, bioplastics, etc (George et al., 2021). The decomposition process of biodegradable waste helps to reduce the amount of waste sent to landfills and contributes to the production of nutrient-rich compost that can be used for soil enrichment in agriculture and gardening. Non-Biodegradable waste, on the other hand, consists of materials that cannot be broken down naturally by microorganisms. These materials include electronic or e-waste, plastics, metals, glass, synthetic fibers, ceramics, healthcare wastes, etc (Nooret al., 2020). Since a non-biodegradable waste does not decompose easily, they can accumulate in landfills and cause environmental pollution. The improper disposal of non-biodegradable waste can also lead to the contamination of land, water, air and harm the entire life inhabiting the planet. Therefore, it is important to properly manage and reduce the amount of non-biodegradable waste generated through recycling and responsible waste disposal methods.

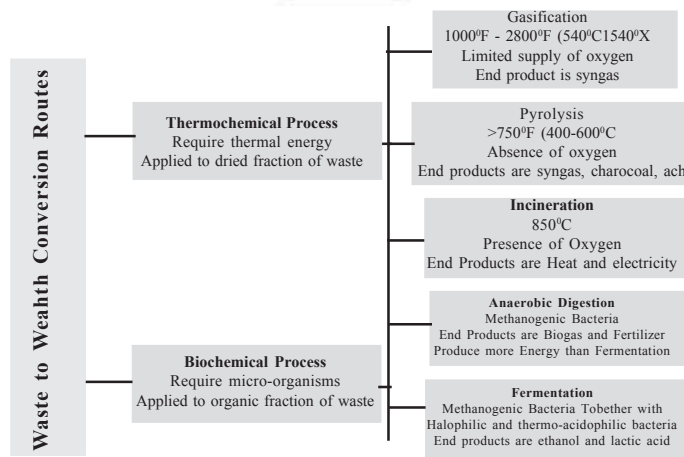
In any waste management system, production, collection, storage, treatment, transfer and utilization are the key characteristics. These characteristics are essential for ensuring the efficient and sustainable management of waste (Khan et al., 2022). Production refers to the generation of waste from various sources such as households, industries, and commercial establishments. Collection involves the systematic collection of waste from different areas and its transportation to designated sites for further processing. Storage is crucial to prevent any environmental or health hazards, and treatment aims to minimize the impact of waste on the environment through methods like recycling or incineration. Transfer refers to the movement of waste from one location to another, while utilization focuses on finding ways to repurpose waste for energy generation or creating

new products.

The present article deals with the Indian perspective of realizing the phrase “waste-to-wealth” through indigenously developed inventions considering ‘waste’ as a potential resource for valuable products like as biofuels, compost, and recycled materials. Practically feasible and efficient innovative technologies and processes that aim to maximize the potential of waste are incorporated in this study. A waste-to-wealth approach for waste management involves transforming waste materials into valuable resources or products. By implementing innovative technologies and processes, such as recycling, composting, and energy recovery, this approach not only helps to mitigate environmental pollution but also creates economic opportunities by generating revenue from the recovered resources and promotes sustainability. It also encourages a circular economy where waste is seen as a valuable asset rather than a burden and used efficiently and continually cycled back into the production process.

## **2. Indian innovative technologies for achieving waste-to-wealth**

The global menace of waste management has resulted due to traditionally followed unidirectional approach of collecting, manufacturing, disposing off or throwing away. The unidirectional strategy has led to unprecedented rates of waste generation, environmental degradation, and resources scarcity. It not just threatens the earth’s long-term viability but also the wealth and welfare of current and future generations. However, within this specific challenge lies an incredible opportunity through a shifting perspective of seeing waste as resource. The phrase ‘waste-to-wealth’ signifies a paradigm shift away from the traditional unidirectional or progressive model of resource allocation and waste disposal and promote circular model of product creation, consumption and disposal through circular economy paradigm (Reddy et al., 2023). This paradigm can potentially resolve the waste management issue by visualizing waste as a valuable resource that can be recovered, renovated, and revitalised or transformed into something high value product rather than as a burden that needs to be put off. Transforming waste into wealth is not a new concept but traced back a long ago since ancient times. To achieve waste-to-wealth in India, it is crucial to adopt innovative technologies and strategies for waste management. Currently, waste-to-energy technologies have been identified as a means to produce energy, recover materials, and free up land that would otherwise be used for dumping can be utilized to safeguard environmental health and offer simple solutions to turn waste into wealth (Kothari et al., 2021). There are thermochemical and biochemical routes



turning waste-to-wealth represented in **fig. 1**.

Figure 1: a) Framework for converting waste into wealth, b) Waste-to-wealth conversion routes available in India

India also requires comprehensive monitoring and implementation systems for biomedical waste management to achieve sustainable development goals related to environmental health. Sustainable municipal solid waste management is crucial, and it requires a policy agenda to address the challenges and opportunities linked to waste management, and technological potential, emphasizing the need for a sustainable business model and business strategy for promoting solid waste recycling technologies in India. The valorization of tropical biomass waste through supercritical fluid extraction technology has the potential to convert biomass waste into value-added products for diversified applications, contributing to the waste-to-wealth initiative.

Additionally, the selection of landfill sites for solid waste management is a prevalent technique in India, highlighting the need for efficient handling and economic circularity for construction and demolition waste. Moreover, the role of non-governmental organizations in improving waste management services and the use of different knowledge transfer and technology commercialization channels can contribute to the overflow of knowledge and innovation with wealth creation.

## 2.1 5Rs Principle

The 5Rs Principle encourages environmentally friendly waste management techniques. It stands for Refuse, Reduce, Reuse, Recycle, and Recover and is often referred to as the waste management hierarchy shown in **fig. 2**. Reduction in waste generation, reusing resources, at individual and organization levels lower their influence on the environment, and help to create a more sustainable future by following these principles. This 5Rs Principle promotes the transition to a circular economy, in which resources are recovered and products are redesigned in order to maximise their potential by adopting waste hierarchy system of priorities for the economical use of resources supporting waste management and wealth generation (Sharma et al., 2020). The first R is Refuse that promotes people and companies to bring down unwanted products and materials. It may lower the overall consumption and get rid of useless trash. Saying no to single-use plastics, choosing reusable items, and actively looking for eco-friendly substitutes are ways to do this. Refuse principle helps to conserve environment for future generations by encouraging shift towards a more sustainable and mindful way of living (Arora et al., 2021). Implementing this idea encourages a more deliberate and conscientious attitude to consumerism, helps save money, and is good for the environment. The second R is Reduce, that aims to use less resources and use more sustainable substitutes in order to reduce the quantity of waste produced. By implementing the Reduce principle, individuals can make a significant impact on reducing their carbon footprint and waste production. This can be achieved by buying products with minimal packaging, using energy-efficient appliances, and opting for reusable items instead of disposable ones. The Reduce principle encourages a more minimalist and intentional lifestyle, where individuals prioritize quality over quantity and make conscious choices to minimize waste in their daily lives (Balwan et al., 2022). Implementing this principle not only benefits the environment but also promotes a more sustainable and fulfilling way of living. By adopting the Reduce principle, individuals can become more mindful of their consumption habits and strive to only buy what they truly need. This mindset shift not only reduces their carbon footprint but also saves them money in the long run. Additionally, embracing

the Reduce principle encourages individuals to explore alternative modes of transportation, such as biking or carpooling, which further contribute to reducing emissions and traffic congestion. Ultimately, the Reduce principle empowers individuals to take control of their environmental impact and play an active role in creating a more sustainable future for generations to come.

The third R is Reuse which promotes the practice of reusing items for other purposes. By reusing items, individuals can significantly reduce waste and the need for new production, which in turn conserves resources and reduces pollution associated with manufacturing. Embracing the reuse principle also fosters creativity and innovation as people find new ways to transform old items, leading to a more sustainable and circular economy (Ghosh et al., 2021). Moreover, reusing items can also save individuals money by eliminating the need to constantly buy new products. Thus, the reuse principle plays a crucial role in minimizing waste and promoting a more sustainable lifestyle. The fourth R is Recycle which emphasizes the importance of recycling materials to conserve resources and reduce landfill waste. Recycling is a key component of sustainable waste management and resource conservation involving the collection and processing of materials such as paper, glass, plastic, and metal, so that they can be used as raw materials in the production of new products. By recycling, the need for material raw materials can be reduced, which often requires significant amounts of energy and has negative environmental impacts (Sharma et al., 2020). Recycling also helps to decrease the amount of waste that is sent to landfills, which can release harmful greenhouse gases into the atmosphere and contaminate nearby soil and water sources. Recycling conserves natural resources by decreasing the demand for raw materials, such as trees for paper production or oil for plastic manufacturing. It also saves energy, as it takes less energy to process recycled materials compared to extracting and refining new resources. Recycling helps to reduce pollution and greenhouse gas emissions,



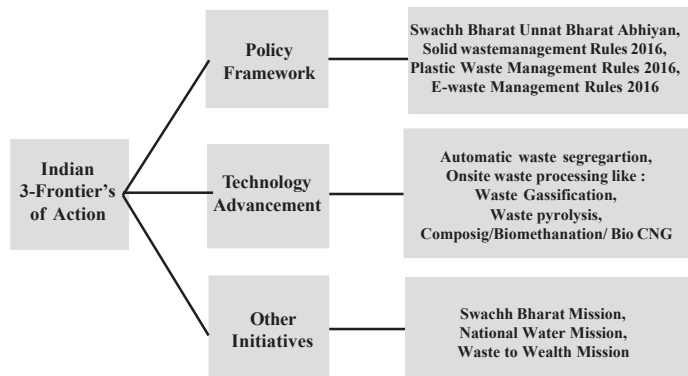
Figure 2: Waste Management Hierarchy following 3Rs Principle

The fifth R is 'Recover' involving the transformation of waste into useful resource. By incorporating various waste treatment options such as incineration or anaerobic digestion, organic waste or non-recyclable plastics can be transformed into electricity, heat, or fuel. This not only reduces the volume of waste but also provides an alternative energy source helping to diminish reliance on fossil fuels. Recovering organic waste through composting helps in closing the loop in the waste management system by returning valuable nutrients back to the environment or soil and promoting sustainable agricultural practices. Through this approach, the benefits of recycling can be maximized by reducing waste generation, promoting resource efficiency and creating a more circular economy (Kabir and Kabir, 2021). Finally, the disposal of waste through landfill is a necessary part of waste management as it allows for the containment and proper treatment of hazardous and non-recyclable materials, safeguarding human and environmental health. While closing the loop in the waste management system, it is essential to ensure sustainable landfill disposal necessary for assuring the safe confinement and treatment of hazardous waste that cannot be recycled or reutilized.

### 3. Role of Organizations

In the view of achieving the objectives of the government of India's (GOI's) Swachh Bharat Unnat Bharat Abhiyan, certain regulatory provisions or guidelines have been framed and notified as obligatory rules as frontiers of action (Fig. 3). These include the Solid Waste Management (SWM) Rules 2016, Plastic Waste Management (PWM) Rules, 2016 and PWM Rules 2022 and the E-waste (Management) Rules, 2016 (Dhodapkar et al., 2023). Technology development is a key component that may support efficient waste management in India in addition to offering a supportive legislative environment and encouraging ethical behaviour. The strategic, sustainable and innovative approach to effectively manage and turn waste in India is demonstrated by the utilisation of developing techniques like pyrolysis, gasification, onsite waste processing like composting, bio-methanation, bio-CNG, automated waste segregators, etc (Mehta et al., 2023). It is imperative that the waste management industry adopt strategies that lead to a circular economy. It is imperative that the waste management sector implement strategies that lead to a circular economy. As a component of their commitment to efficient waste and pollution management in India, Indian government has launched numerous significant national projects, including the waste-to-wealth mission, the national water mission, and the

Swachh Bharat mission (Tiwari, 2023). Deployments for environmental remediation and restoration, e-waste management, waste from agriculture, healthcare facilities, and other relevant fields are also being examined under the waste-to-wealth Initiative.



**Figure 3: 3-Frontiers of action by GOI to achieve effective waste management.**

As per the information available on national portal of Invest India, national investment promotion and facilitation agency under waste-to-wealth mission initiated by Office of Principal Scientific Advisor to GOI, there are some areas where exists severe water scarcity, poor sanitation, unhygienic lifestyle that affects approximately half of India's population leading deaths of around four lakh people annually. Unhygienic practices may responsible for water pollution at serious level that claims approximately two lakh people lost their lives per year. It has been found that nearly 70% water in India is considered as polluted affecting approximately three in four people raising water borne diseases share in India up to 20%. Children are the prime targets of diseases attributable to an unhygienic and unhealthy environment resulting approximately one death out of 4 deaths of children under five-year age. Employment of highly advanced and innovative technologies targeting waste-to-wealth may prove highly advantageous. Several initiatives are been taken by various government and private organizations. For instance, utilization of waste plastic material in construction of roads. Approximately, one tonne of plastic can contribute towards construction of one kilometre of road in India. By incorporating discarded plastic waste for construction of roads, around one lakh kilometres of roads have been built as of now in in at least 11 states of India [www.investindia.gov.in/waste-to-wealth](http://www.investindia.gov.in/waste-to-wealth). This huge invention may inspire other nations to follow India's perspective and make effective use of non-degradable and unmanageable plastic waste into something innovative and useful inventions

such as constructing roads from plastic waste. Similarly recycling of paper may also contribute conservation of trees. It has been observed that approximately one tonne of recycled paper may save approximately 17 trees.

### 3.1. Role of GOI

Under the Waste to Wealth Mission, Office of Principal Scientific Adviser (PSA) to the Government of India, endorsed or recommended numerous innovative technologies in its technology repository. These technologies have been identified by bodies like Central Pollution Control Board, Tamil Nadu Urban Sanitation Support Programme etc. and scientifically evaluated by Expert Committees comprising of renowned subject experts from academia and industry. These recommendations by Office of PSA are based on scientific merits and are only suggestive in nature for deployment. There could be many other similar technologies and users are advised to select appropriate technologies as per their local needs and procure them according to their procurement policies after carrying out necessary due diligence. Mobile Shredder Recycling on Wheels-Eco Recycling Limited technology designed specifically for safe and secured destruction of e-waste at site. The shredder is configured with an electronically interlocked safety enclosure housing preferred collection receptacle for shredded electronic devices ensuring trouble free handling of product for further recycling. Similarly, dry toilet is another invention for water less solution for toilets. It has two floors ground floor and first floor. First floor has a hole. A person needs to squat around a hole. An excreta falls down in ground floor and urine collects in a container placed on ground floor. First floor is a store for dry soil, dung of cow and goat. Once a shovel full of dry soil. Bacteria convert excreta in to high quality fertilizer. Ground floor is provided with proper ventilation and a removable opening. After six months mixture of soil and excreta is kept undisturbed for six months to get a high-quality fertilizer. In these six months hole is closed and another hole is used to relieve. Same procedure is followed for next six months. Removable opening is used to remove fertilizer from ground floor. This is very safe and hygienic way to convert human waste in to a high-quality fertilizer. In this way we can save millions of liters of water every year. Stored urine will be used directly or with mixing with water. Human waste is a great source of fiber, prosperous, nitrogen and ammonia. All these are essential soil nutrients. Some of the technological advancements regarding waste management are listed in **Table 1** (<https://nwm.gov.in>, <https://www.myscheme.gov.in/schemes/gobardhan>, [www.investindia.gov.in/waste-to-wealth](http://www.investindia.gov.in/waste-to-wealth), <https://mnre.gov.in/waste-to-energy>).

**Table 1: Technological advancements shortlisted by government of India for waste management  
([www.investindia.gov.in/waste-to-wealth](http://www.investindia.gov.in/waste-to-wealth))**

Technology	Purpose	Technology Thematic area	Company /organization / institution	Technology Readiness Level
Absolute Vermi-Filter	Vermi-Filtration or Bio-Filtration Technology for Sewage Treatment	Wastewater and Water Bodies	Grace Green Infra Private Limited	Product Deployed
Dry Toilet	Human faecal waste disposal	Faecal Sludge	SRG Sanitations	Prototype In Progress
Mobile Shredder	Recycling on Wheels-Eco Recycling Ltd	Electronic Waste	Ecoreco	Product Deployed
Artificial Intelligence Enhanced Biological and Mechanical Processing of Mixed Solid Waste	Management of municipal solid waste	Municipal Solid Waste	Geetanjali Envirotech Pvt. Ltd.	Product Deployed
Artificial Intelligence powered automated sorting solutions	Management of	Municipal Solid Waste	Ishitva Robotics Systems	Product Deployed
Automatic Smart Waste segregation and processing (Smart Optical Segregator Line)	Municipal Solid Waste	Municipal Solid Waste	AlfaTherm Limited	Product Deployed
High Temperature Gasification	Management of Municipal Solid Waste	Municipal Solid Waste	BGS Enterprises/ Kankyo Enertek Green Fuels Pvt	Product Deployed
Bio Digester System	Management of Municipal Solid Waste	Faecal Sludge	Defence Research and Development Organisation (DRDO)	Product Deployed
Bio Toilets	Human faecal waste disposal	Faecal Sludge	RK Technologies	Product Deployed
Bioclean BD anaerobic facultative microbial cultures	Human faecal waste disposal	Faecal Sludge	Organica Biotech Private Limited	Product Deployed
Biofabrik WasteX– “Next Generation Plastic Chemical Recycling Plant”	Management of plastic waste and conversion into a re-usable fuel in the form of diesel, naphtha and heavy fuel oil (HFO)	Plastic Waste	BPO Engineering	Product Deployed
Biogas Technology (KVIC & Deenbandhu Model)	Municipal Solid Waste management	Municipal Solid Waste	Crest Enviro Transformations (I) Private Limited	Product Deployed
BioSAFE EngineeringTechnology and Alkaline hydrolysis	Biomedical Waste management	Biomedical Waste	BioSAFE Engineering, LLC	Product Deployed

### 3.1. Role of mobile applications and Websites

There are number of mobile softwares and websites dealing with information regarding waste collection, disposal, recycling, and developing value-added products. These are built indigenously under waste-to-wealth projects and serve as valuable resources for individuals and organizations looking for guidance on how to reduce waste and maximize its potential. They provide information on efficient waste management practices, innovative recycling techniques, and even offer ideas for reutilizing waste into new and useful products. By promoting a circular economy and encouraging sustainable practices, these applications and websites play a crucial role in transforming waste into wealth and creating a more environmentally conscious society. For instance, one waste-to-wealth project could involve converting food waste from restaurants into biogas, which can be used as a renewable energy source. The website would provide step-by-step instructions on how to set up a biogas plant and effectively manage the process. Also, it could offer case studies of successful projects and highlight the financial benefits of implementing such initiatives, further motivating individuals and organizations to adopt sustainable waste management practices. These could provide a platform where individuals and organizations can

share their experiences and exchange ideas on waste-to-wealth projects, fostering a collaborative community dedicated to sustainability. Users could also access resources such as funding opportunities, government incentives, and partnerships with local recycling facilities, streamlining the process of implementing waste-to-wealth initiatives and encouraging widespread adoption. The concerned websites could highlight the case studies of villages or cities that successfully implemented a waste-to-wealth project by converting organic waste into compost and selling it to local farmers. The engaged people could share their step-by-step process, challenges faced, and the economic and environmental benefits they achieved. Such type of real-life examples would inspire others to replicate the project in their own communities and demonstrate the potential for waste-to-wealth initiatives to create a circular economy and reduce landfill waste. These platforms also provide resources such as waste-to-wealth guidelines and information regarding funding options and thus making it easier for other communities to follow in their footsteps and implement similar projects. Some of the mobile applications developed and schemes and programmes launched by government or private organizations are listed in **Table 2**.

**Table 2: Mobile applications or softwares developed by government or private organizations(<https://swachhbharatmission.gov.in/sbmcms/index.htm>, [www.investindia.gov.in/waste-to-wealth](http://www.investindia.gov.in/waste-to-wealth),<https://mnre.gov.in/waste-to-energy>, <https://nwm.gov.in>, <https://www.myscheme.gov.in/schemes/gobardhan>)**

Mobile application/software	Developer or founder (Government organization/Private organization/Person)	Role of application/software
BookMyJunk	Eco Recycling Ltd	Doorstep collection of e-waste for waste recycling
Pom Pom (Trash to Cash)	Deepak Sethi and Kishore Thakur (Delhi-based)	Sell anything that is recyclable
Ecolekt (give n take)	JoGiv (short for Joy of Giving)(Bengaluru-based)	Sustainably managing the rising e-waste problem
Sellixo Ecowrap	Five 14-year-old girls (Anupama N, Sanjana Vasanth, Mahima Mehendale, Navyasree B and Swasthi P Rao) from Bengaluru	Sell dry waste (such as paper, metal or plastic) and get paid

Aakri-Waste Management	Ecowrap-Waste Management Company (Rajasthan-based)	Waste segregation and providing a solid solution for waste tracking, collection, storage, recycling, up-cycling, etc.
Trash To Cash (Raddi se Chutkara)	A4Mercantiles Private Limited Trash To Cash Innovations India Private Limited	Pick up the scrap/trash and biomedical waste and segregate into recyclable and non-recyclable for futhur management Work as a recyclable waste collector by catering as a free doorstep collection service for individual houses, societies, organizations and industriesand recycle them into a raw material and sell to different industries to make new products out of it
Recycle.green Pay by Waste	InnovateGreen Tech Pvt Ltd	Provide an option to pay by your waste. This means that the item you have ordered online, while paying you can do full payment by waste OR even part payment by waste and part by other modes of payment.
Scrapp - Recycling made simple (Reduce waste. Recycle right)	Scrapp LLC	Guides how to recycle any household product correctly simply by scanning the barcode to sort packaging into the right bin as per local recycling rules.
WasteBazaar	WasteBazaar Ltd	Using Geo-location, collects waste directly from source and offer greencredits (\$GC) as incentives in exchange for plastics, carton boxes, metal and electronic waste recycled by users. These greencredits (\$GC) are convertible for use in shopping for Groceries, paying bills and even at Point-of-Sale Terminals
Why Waste - YEWS	Why Waste	Calculate water footprint and help conserve water
Program/Scheme/Mission	Launched by (Govt/Pvt.)	Role of Program/Scheme
Swachh Bharat Mission (Clean India Mission)	Government of India (GOI)	To achieve an Open Defecation Free (ODF) India, biodegradable waste management through composting and setting up of Biogas plants; collection, segregation, and storage facilities for plastic waste management; construction of soak pits, waste stabilization ponds,



Galvanizing Organic Bio-Agro Resources Dhan (GOBARdhan) Scheme	Ministry of Jal Shakti, Government of India (GOI)	DEWATS, etc. for Greywater Management; and Faecal Sludge Management through co-treatment in existing Sewage Treatment Plants/Faecal Sludge Treatment Plants (STPs/ FSTPs) in peri-urban areas and setting up of FSTPs, minimal litter, minimal stagnant wastewater, no plastic waste dump in public places; and displays ODF Plus Information, Education and Communication (IEC) messages
Waste to Energy Scheme	Ministry of New and Renewable Energy, GOI	Convert organic waste such as cattle and agricultural waste into wealth by building a robust ecosystem for setting up Biogas/Compressed Biogas (CBG)/ Bio-Compressed Natural Gas (CNG) plants to drive sustainable economic growth and promote a circular economy
Sustainable Alternative Towards Affordable Transportation (SATAT) scheme	Ministry of Petroleum and Natural Gas, GOI	Promotes renewable energy generation from waste and biomass
Waste to Wealth mission: Swachh Bharat Unnat Bharat	Prime Minister's Science Technology and Innovation Advisory Council (PM-STIAC), GOI	To reduce reliance on fossil resources for fuel requirements
Su-Dhara	Principal Scientific Adviser (PSA) to the Government of India's	Identify, test and validate technologies towards conservation, sustainable use and restoration of land, air and water resources. The goal of the mission is to move India towards a zero-waste nation. Urban waste management

#### 4. Success stories

##### a) A hamlet with no trash on India's coast

Vengurla, a small municipality in the state Goa, India, recycles 7 tonnes of daily waste, transforming waste into wealth. The municipality, led by Ramdas Kokare, uses biogas to produce electricity while segregating waste into various categories. Light plastic is recycled using a plastic shredding machine driven by biogas and utilised to construct stronger roadways (<https://citizenmatters.in/vengurla-municipality-plastic-recycling-and-waste-management-4388>). For 1Kg of plastic sold to contractors for road construction, the municipality earns Rs. 15. Furthermore, dry waste is converted by a briquette machine into briquettes that are sold to industries as alternative fuels.

##### b) Bio-Methanation facility at Chennai Market Complex

Bio-Methanation facility as an innovative pilot project has been opened on September 4, 2005, at the Koyambedu Wholesale Market Complex in Chennai, Tamil Nadu with the ultimate objective of generating energy from organic waste of products acquired from the market. The Ministry of Nonconventional Energy Sources (MNES) of the Government of India and the Chennai Metropolitan Development Authority are stakeholders in this project. With the aid of biogas induced mixing arrangement digester (BIMA), the Bio-Methanation facility can process roughly 30 metric tonnes of perishable waste per day and create 2375 m<sup>3</sup> of gas on average, which can be used to generate 5000

units of energy daily (<https://niua.in/innovation/home/project/44>).

### **c) Polyloom from recycled plastic by CEE**

Reusing plastic is an alternate strategy to keep plastic away from the environment and lessen the threat. The "Polyloom," a handloom for weaving plastic that recycles and repurposes used plastic bags (polybags), has been invented by the Centre for Environment Education (CEE), India. Using a polyloom, one may weave plastic fabric in a variety of designs for use in creating items such as bottle holders, bags, and pouches (<https://www.plastemart.com/plastic-technical-articles/indias-polyolefin-consumption-in-2007-was-over-60-of-total-polymer-consumption-exceeding-65-mln-tons/715>).

### **d) Synthesis of fuel from plastic**

Nagpur based couple Prof. Alka Zadgaonkar and Dr. Umesh Zadgaonkar invented the technique to obtain fuel from plastic waste and established The Unique Waste Plastic Management and Research Company Pvt Ltd that went into commercial production in March 2005. The plant produces 5000 litres fuel per 5MT of waste per day from waste like carry bags, broken buckets and chairs, PVC pipes, CDS, computer keyboards and other e-waste daily. The generated from plastic waste has better combustibility than petrol and can also run vehicles after more refining. The process of conversion of plastic into fuel involves random depolymerisation and thermal selective splitting of large polymeric carbon chains into small molecular weight molecules under an oxygen free environment. Both plastics and petroleum derived fuels are hydrocarbons (<https://www.dnaindia.com/mumbai/report-now-in-nagpur-fuel-from-plastic-waste-6967>).

### **e) Woman-led waste management model in north Goa**

Turning trash to treasure, the integrated solid waste management facility treats municipal solid garbage using a cutting-edge method in Saligao, north Goa. Under the leadership of Gargi Raote, a waste management plant manager, Goa has successfully converted a towering landfill into an integrated solid waste management facility in an impressive effort to address waste management challenges and preserve its unspoiled beaches. Covering an area of about 12 hectares, this facility handles waste from rural Panchayats as well as tourist beaches including Bagha, Salim, and Anjuna. The facility, run by Hindustan garbage Treatment Private Limited and the Goa Waste Management Corporation (GWMC) on a public-private partnership model, has revolutionised sustainable waste management ([https://www.downtoearth.org.in/blog/energy/turning-trash-to-treasure-this-woman-led-waste-management-model-in-go-is-](https://www.downtoearth.org.in/blog/energy/turning-trash-to-treasure-this-woman-led-waste-management-model-in-go-is)

[a-success-story-91003](#)).

## **5. Conclusion**

In conclusion, the adoption of innovative waste management technologies and the implementation of sustainable waste management practices are essential for achieving waste-to-wealth in India. These strategies encompass various aspects such as waste-to-energy technologies, circular economy approaches, valorization of biomass waste, and efficient handling of construction and demolition waste, all of which are crucial for addressing the waste management challenges in India and creating wealth from waste. Resource efficiency entails using fewer less waste generation and reutilization of the same resources for another service or purpose after improving their efficiency and management across the entire manufacturing and consuming process. In this way, numerous environmentally toxic and hazardous components can be prevented from entering into the natural ecosystem by recycling and reutilization. This kind of perspective for waste transformation into useful resource or energy can be found crucial in shifting a nation like India from straight linear economy based on produce-use-dispose generating huge waste to a closed loop or circular economy based on produce-use-repair-recondition-refurbish-recycle-reuse and finally dispose. Thus, shifting from linear to circular economy approach can ultimately contribute very little waste generation, improved resource efficiency, efficient resource recovery reduced consumption, reusing and recycling byproducts resulting effective and sustainable waste management.

## **References**

1. Aggrawal, N. (2023). The HEC Model and Policy Framework to develop community practices of circular economy. *Integrated Waste Management: The Circular Economy*, 37.
2. Arora, S., Sethi, J., Rajvanshi, J., Sutaria, D., & Saxena, S. (2021). Developing "zero waste model" for solid waste management to shift the paradigm toward sustainability. In *Handbook of Solid Waste Management: Sustainability through Circular Economy* (pp. 1-20). Singapore: Springer Singapore.
3. Balwan, W. K., Singh, A., & Kour, S. (2022). 5R's of zero waste management to save our green planet: A narrative review. *European Journal of Biotechnology and Bioscience*, 10(1), 7-11.
4. Chauhan, R., Kaul, V., & Maheshwari, N. (2022). Indian indigenous knowledge system: Sustainable approach toward waste management. In *Emerging Trends to Approaching Zero Waste* (pp. 37-57). Elsevier.

5. Chavan, P., & Sharma, A. (2024). Religiosity, Spirituality or Environmental Consciousness? Analysing Determinants of Pro-environmental Religious Practices. *Journal of Human Values*, 09716858231220689.
6. Dhodapkar, R., Bhattacharjya, S., Niazi, Z., Porter, N. B., Retamal, M., Sahajwalla, V., & Schandl, H. (2023). National Circular Economy Roadmap for Reducing Plastic Waste in India.
7. George, N., Debroy, A., Bhat, S., Bindal, S., & Singh, S. (2021). Biowaste to bioplastics: An ecofriendly approach for a sustainable future. *Journal of Applied Biotechnology Reports*, 8(3), 221-233.
8. Ghosh, S. K., Ghosh, S. K., & Baidya, R. (2021). Circular economy in India: Reduce, reuse, and recycle through policy framework. In *Circular Economy: Recent Trends in Global Perspective* (pp. 183-217). Singapore: Springer Nature Singapore.
9. <https://citizenmatters.in/vengurla-municipality-plastic-recycling-and-waste-management-4388>
10. <https://mnre.gov.in/waste-to-energy>
11. <https://niua.in/innovation/home/project/44>
12. <https://nwm.gov.in>
13. <https://swachhbharatmission.gov.in/sbmcms/index.htm>
14. <https://www.dnaindia.com/mumbai/report-now-in-nagpur-fuel-from-plastic-waste-6967>
15. <https://www.downtoearth.org.in/blog/energy/turning-trash-to-treasure-this-woman-led-waste-management-model-in-go-is-a-success-story-91003>
16. <https://www.myscheme.gov.in/schemes/gobardhan>
17. <https://www.plastemart.com/plastic-technical-articles/indias-polyolefin-consumption-in-2007-was-over-60-of-total-polymer-consumption-exceeding-65-mln-tons/715>
18. Kabir, Z., & Kabir, M. (2021). Solid Waste Management in Developing Countries: Towards a Circular Economy. In *Handbook of Solid Waste Management: Sustainability through Circular Economy* (pp. 1-34). Singapore: Springer Singapore.
19. Khan, S., Anjum, R., Raza, S. T., Bazai, N. A., & Ihtisham, M. (2022). Technologies for municipal solid waste management: Current status, challenges, and future perspectives. *Chemosphere*, 288, 132403.
20. Kothari, R., Sahab, S., Singh, H. M., Singh, R. P., Singh, B., Pathania, D., ... & Tyagi, V. V. (2021). COVID-19 and waste management in Indian scenario: challenges and possible solutions. *Environmental Science and Pollution Research*, 28(38), 52702-52723.
21. Mehra, S. P. (2017). Eco-cultural solution to the challenge of waste generation at individual level: Case study from India. *Int. J Waste Resource*, 7, 288.
22. Mehta, C. R., Badegaonkar, U. R., Singh, P. L., & Singh, K. K. (2023). Integrated straw management in India.
23. Noor, T., Javid, A., Hussain, A., Bukhari, S. M., Ali, W., Akmal, M., & Hussain, S. M. (2020). Types, sources and management of urban wastes. In *Urban ecology* (pp. 239-263). Elsevier.
24. Reddy, V. V., Kumar, P., Rao, A. L. N., Kumar, R., Singh, S., Asha, V., & Kareem, S. H. (2023). Waste to Wealth Generation: Innovative Methodologies in Resource Utilization and Minimization in Circular Economy. In *E3S Web of Conferences* (Vol. 453, p. 01035). EDP Sciences.
25. Saidmuradova, N., & Kumar, A. (2023). Indian Festivals and Nature Conservation: Connecting People for Sustainability.
26. Sharma, S. K., & Makhijani, K. (2023). Indian Knowledge System: The Roots of Environmental Sustainability, Civilization, and Green Chemistry. In *Green Chemistry, its Role in Achieving Sustainable Development Goals, Volume 1* (pp. 219-230). CRC Press.
27. Sharma, S., Basu, S., Shetti, N. P., Kamali, M., Walvekar, P., & Aminabhavi, T. M. (2020). Waste-to-energy nexus: a sustainable development. *Environmental Pollution*, 267, 115501.
28. Tiwari, R. K. (2023). Union Budget-2023: A Forwarding Step towards Sustainable Future of India. *International journal of economic perspectives*, 17(3), 139-149. [www.investindia.gov.in/waste-to-wealth](http://www.investindia.gov.in/waste-to-wealth)

- <sup>1</sup>Department of Environmental Sciences,  
Central University of Jammu, Rahya-Suchani,  
Bagla, Samba, J&K-18143, India

**2 Corresponding authors:**

Email: [dpathania74@gmail.com](mailto:dpathania74@gmail.com),

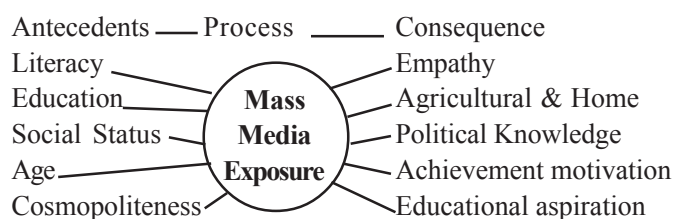
[richa.evs@cuammu.ac.in](mailto:richa.evs@cuammu.ac.in)

# The Media of Present Bharat

□ Prof. (Dr.) Kaushal Kishore Srivastava<sup>1</sup> Prof. (Dr.) Alok Srivastava<sup>2</sup>

Exposure of different mass media like newspaper, magazine, television, film, telephone (Mobile), Radio and Internet, Modernization of present Bharat, Attributes of modernity – Education, marriage family & kinship, pattern of attitudes, affection, political participation, awareness of national issues, empathy and mobility, achievement orientation and level of aspiration, fatalism and other indices of modernity. The testing variables – Education, caste, income, age group and religion.

Paradigm of the role of mass media exposure in modernization of Bharat



The study of tradition and modernity with special reference to different mass media has loomed large in the conceptual baggage of contemporary social scientists of Bharat. For the last few decades the Bharat has been trying to modernize the society socially, economically and politically. However, the traditional elements have often proved as great impediments to the process of change through conscious and planned efforts. These cultural various not with standing the traditional societies are low searching for new identify in their attempts for discovering the new horizons they are fast modernizing themselves.

Social scientists have used the term modernization according to their own convenience. Economics see modernization primarily in terms of man's application of technologies to the control of natural resources in order to bring about a marked increase in the growth of per capita output. Sociologists and social anthropologists have primarily been concerned with the process of differentiation that characterizes modern societies. Political scientists use the term in relation to the problem of nation and formation of

government. They see the capacity of the government to innovative, charge respond to the social demands for change and cope with the conflict process. Psychologists study the impulse to modernization as an elements of personal virtue or motivated interest in the welfare of others.

Broadly speaking modernization through media in new Bharat has an important characteristics as a temper of science reason and rationalism, secularism, high aspirations and achievement orientation, overall transformation of attitude, norms and values, creation of new functional institutions, investment in human resources, a growth oriented economy a nation interest rather than kin caste and religion, region or language oriented interests, an open society, a mobile personality.

At present Bharat media has discussed various attributes of modernizing like empathy, mobility, high participation, interest articulation, interest aggregation, institutional political competition, achievement orientation, rational ends and means calculation, new attributes to wealth, work, saving and risks taking. Faith in the desirability and possibility of change, social, economic and political discipline, capacity to put off immediate and short run satisfactions for higher satisfactions in the longer run. In Bharat, along with moderanisation of industries and promotion of technology, efforts have also been made to preserve the basic values of the Bhartiya way of life. Bharat was rather different from some Asian countries where outward manifestation of the western way of life was largely synonymous with moderanisation.

In Bharat, process of modernization passes through three phases urbanization, literacy and media participation. The media of mass communication helps a lot to make people modern. Literacy becomes the instrument of media production like Newspaper, Magazine, Television, Radios, Films, Telephone (Mobile), and Internet etc. These media in turn create an atmosphere for the production of more & more literates. Bharat is in the process modernization its urban population constitutes the 45% of the total population. The percentage of literacy is 70%. Indian scholars S.C. Dube, Y.

Singh have emphasized on the traditional values in modernization. Media of communication have accelerated the rate of growth and cultural diffusion of modernization that was introduced in India through the western contact. Media have changed deeply and broadly in traditional attitudes through print media and electronic media (Audio & Video).

Media have created a revolution in social mobility the forms new social relations and structures. Indeed, media of communication have been made a circulatory system of modernization that makes good psycho mobility a plot of modernity in modern complex society.

#### DATA ANALYSIS OF BHARAT THROUGH MASS MEDIA RESEARCH:

**Table-1 possession of different mass media by education**

Education	Newspaper	T.V.	Telephone	Film	Magazine	Radio	Internet
IlliterateN=25	4(16.00)	3(12.00)	2(8.00)	10(40.00)	—	18(72.00)	—
LowN=36	30(83.33)	28(77.77)	26(72.72)	21(58.33)	24(66.66)	27(75.00)	02(5.55)
Middle N=20	19(95.00)	18(90.00)	17(85.00)	14(70.00)	18(90.00)	8(40.00)	10(50.00)
HighN=19	19(100.00)	19(100.00)	19(100.00)	16(84.21)	18(94.73)	4(21.05)	15(78.94)
Total N=100	72(72.00)	68(68.00)	64(64.00)	61(61.00)	60(60.00)	57(57.00)	27(27.00)

**Table – 2 : Possession of Different Mass Media by Caste**

Caste	Newspaper	T.V.	Telephone	Film	Magazine	Radio	Internet
General N=28	27(96.42)	26(92.85)	25(89.28)	21(75.00)	24(85.71)	06(21.42)	15(53.57)
OBCN=40	29(72.5)	28(70.00)	31(77.5)	25(62.5)	32(80.00)	30(75.00)	10(25.00)
SC/ST N=32	16(50.00)	14(43.75)	08(25.00)	15(46.87)	04(12.5)	21(65.62)	02(6.25)
Total N=100	72(72.00)	68(68.00)	64(64.00)	61(61.00)	60(60.00)	57(57.00)	27(27.00)

**Table-3 : Possession of Different Mass Media by Age Group**

Age group	Newspaper	T.V.	Telephone	Film	Magazine	Radio	Internet
18-28N=34	12(35.29)	22(64.70)	20(58.82)	25(73.52)	15(44.11)	23(67.64)	05(14.70)
28-38N=30	28(93.33)	23(76.66)	22(73.33)	18(60.00)	19(63.33)	22(73.33)	07(23.33)
38-48N=18	17(94.44)	16(88.88)	14(77.77)	12(66.66)	15(83.33)	08(44.44)	08(44.44)
48-58N=12	12(100.00)	04(33.33)	06(50.00)	05(41.66)	10(83.33)	03(25.00)	06(50.00)
58 to above N=06	03(50.00)	03(50.00)	02(33.33)	01(16.66)	01(16.66)	01(16.66)	01(16.66)
Total N=100	72(72.00)	68(68.00)	64(64.00)	61(61.00)	60(60.00)	57(57.00)	27(27.00)

### The Findings

Tables above reveal that out of 100 respondents only 72 respondents read newspaper. I noticed very wonderful result that 04 illiterate, respondents were very interested to know about their leaders in daily newspapers. The respondents of OBC, SC/ST, Higher age group have low possession in comparison to general, low age group categories. Respondents belonging to the category of low, middle & high education felt that newspapers had very good effect.

As regards television sets that show vital role of television in everyday life at level of society. This means that 17 persons have no television but they seen to the programmes in the nearby betel shop or in the neighbour house. Respondents were interested in different type of social and familiar serial as well as national & international news that indicates consciousness of everyday life and develops

common sense about marriage, family and kinship relationships. I noticed a very wonderful result that 12 illiterate respondents like to see news bulletin seriously about their leaders. I also noticed that almost respondents gave respondents positively and accepted that telephone (mobile) motivated for better modern living.

As regards films the respondents liked to see stunt, social, religious musical and romantic films rather the national, an adult and documentary. Preference of familiar and social serial by large number of respondents indicate consciousness everyday life and develop common sense as well as decision making approach about marriage family and kinship relationships. 45% respondents that supported that films motivate people for better and modern living.

As regards magazines high education and income group, general, caste, lower are group category respondents 100% read a magazine that shows awareness of the

respondents. As regards radio large number of lower people use radio set continuously. Some respondents have no radio but they listen to the programme in the nearby betel shop or in the neighbour house.

As regards internet services it is observed that out of respondents 27 possess broad band internet connection but through mobile it is 100%. It is observed that internet services used maximum by more educated respondents and it area is spreading very fastly among people of Bharat.

Higher education and income, caste status and lower is group greater the trend towards modernity in modern of decision making regarding children education. High, middle & general categories are more favourable towards the question of giving equal rights to women.

It is also observed that that 56% of the respondents preferred arrange marriage highly more than love marriage (44%) and they praise in high inter caste marriage but every category of respondents opposed in low inter caste marriage frequently.

As regards kinship, it is observed that the respondents preferred blood kinship slightly more than marriage kinship. Almost 37% respondents preferred to friends to be social tensionless. The respondents opinioned that more frequency of meeting to friends than kins. No doubt the different mass media have emerged new trends.

Some respondents did not favour higher education for girls because higher dowry may have to be paid. High groups accepted professional education to women and better performance in domestic affairs. Regarding co-education they have good modern outlook. With respect to political participation and awareness of national issues, it is observed that 95% of respondents are aware of important leaders and political parties. A large number of the respondents vote on caste basis and past results also prove this thing. More than 70% of respondents are conscious of current national problems. As regard empathy it is observed that more than 54% respondents wanted to become leader. Some are prepared to live anywhere and in favour of giving vote to an outsider and an individual may become good empathical

rational through different mass media. As regards mobility it is observed that respondents had a change occupational situation where as 56% respondents were still engaged in traditional occupation. People in modern societies are mobile socially & occupationally. In case of educated respondents geographical mobility has very frequency been followed by vertical social mobility mostly ascending in nature.

Ten sets of question were asked to respondents to know their need for achievement, need for affiliation and need for power. It is observed that respondents have more need for affiliation than need for achievement or need for power. The level of aspiration of 41% respondents is very low. Majority of the respondents have been adversely affected by the soaring prices. They can hardly aspire for more. As regards fatalism, almost 50% of respondents are fatalists and so traditional in outlook. In regard to risk taking, it is observed that people are on the thresholds of modernity. With respect to rational attitude the people are becoming more rational in their outlook in matters of evaluating their own actions as well as that of others. As regards secular attitude they can be termed as tradition ridden. With respect to consumer behaviour respondents liked to purchase durable and expansive goods that indicate traditional approach.

Studies by Singh (1973), Dube (1967), Sachchidananda (1973) Prasad (1969) suggests that no society is completely traditional or completely modern. Tradition is not for removed from oneself. It is created, shaped to present needs, aspiration, problem in a given historical situation. At times aspects are legitimized then it becomes ideologies. Not only in society tradition and modernity goes side by side but on the level of the individual also it goes together. Studies have shown that in Bharat even the most modernized persons believe in some traditions. Recent studies have shown that all the tradition are not obstacles to modernity. Moreover there are certain traditional elements in India culture which can be of helps in achieving modernity. Sachchidananda has rightly pointed out that "In modern Bharat two processes are working for mobility" through positive impact of different mass media.

# Resurgence of Shri Anna- Minor Millets: A Comprehensive Study on Product Development and Sensory Evaluation for Unlocking their Nutritional & Health Potential

□ Dhruv Swati<sup>1</sup>, Gajjar Dhvani<sup>2</sup>

## Abstract

Food insecurity and the dual burden of malnutrition pose significant challenges for India at present. This necessitates the urgent implementation of efficient strategies to address these concerns. Additionally, there is a pressing need to cultivate crops that are resistant to drought to mitigate the climatic challenges faced by the agricultural system and sustain the ever-growing global population. In this context, millets, which are a powerhouse of nutrients and have gained a lot of prominence in the current year due to the declaration by the UN as the international year of millets have a promising role to play in filling this gap. Despite their considerable health benefits and nutritional potential, these traditional and forgotten millets especially the Minor millets remain underutilized due to factors such as lack of awareness, limited supply, low demand, and less consumption. Hence, this necessitates the resurgence of minor millets on both national and international platforms. This paper consolidates comprehensive studies conducted on minor millets, namely Kodo millet, Proso millet, Little millet, Foxtail millet, Brown top millet. For each of these millets, 10-15 standardized recipes were developed substituting them for rice and or wheat. The recipes were subsequently subjected to sensory evaluation by 35 semi-trained panellists using standardized rating scales such as Hedonic and Composite rating scales. This approach aimed to gain a nuanced understanding of minor millet-based products. The results indicated that the recipes were well-accepted, and minor millets can effectively substitute rice and wheat in traditional recipes consumed in day-to-day life. The recipes developed can be used for the prevention or management of various non communicable diseases like diabetes hypertension etc and be used for combatting undernutrition amongst the population. The conclusions drawn from these studies can guide a comprehensive approach towards elevating millets to their deserved status, not only as a solution to nutritional deficiencies but also as a fundamental element of sustainable agriculture and overall well-being.

**Keywords:** Minor millets, Product Development, Sensory Evaluation, Non-communicable diseases

## Introduction

Agriculture, a cornerstone of the Indian economy, sustains nearly 80% of the population, ensuring food, nutrition, and livelihood security (Cummings, 2019). Despite past achievements in food grain production, challenges such as soil fertility depletion, waterlogging, and pollution persist and are compounded by the threat of climate change (IFPRI, 2022). Climate modelling suggests that rising temperatures will adversely affect agricultural yields, exacerbating hunger and food insecurity (IFPRI, 2022). Recent studies highlight the potential deterioration in nutrition and health outcomes due to climate change (Springmann et al., 2016a; Whitmee et al., 2015; FAO, 2016a). The scale of the nutritional crisis is noticeable, with approximately 189 million undernourished individuals in India and alarming rates of malnutrition among children and adults (FAO, 2020; NFHS-5, 2021). Despite government efforts, the nation remains ill-prepared to address the extensive consequences of food insecurity and malnutrition (Padmanabhan et al., 2023). Given these challenges, adopting a comprehensive approach to nutritional inequality is imperative. Millets offer a promising solution, given their diverse nutritional, health, and agricultural benefits.

Millet, a collective term for different types of small-seeded annual grasses, is grown as grain crops in arid regions, including temperate, subtropical, and tropical areas (FAO). Millets are grown in regions with limited rainfall, making them rain-fed crops that play a significant role in sustainable agriculture and food security. They are categorized into major millets and minor millets based on their grain size and the geographical area where they are cultivated. The major millets include sorghum, pearl millet, and finger millet, while the minor millets consist of foxtail millet, little millet, kodo millet, barnyard millet, proso millet, and brown top millet. Additionally, certain African countries also cultivate other millets such as fonio and tef. These millets have a shorter

growth cycle, completing their life cycle within 2-4 months. They are adaptable to various agricultural systems and can withstand changing environmental conditions, particularly during the unpredictable monsoon season (Karnataka State Department of Agriculture [KSDA] & ICAR-Indian Institute of Millets Research [IIMR], 2018). Millets have the remarkable ability to flourish in dry lands with limited resources and show resilience to changes in climate, thus aiding in the self-reliance of nations. Moreover, they are less vulnerable to pests and necessitate fewer chemical fertilizers and pesticides (Nesari, 2023). Millets play a pivotal role in climate-smart agriculture (CSA), which aims to increase sustainable agricultural productivity, enhance resilience to climate change, and minimize greenhouse gas emissions (Hussain et al., 2022).

Millets stand out for their exceptional nutritional profile, boasting high levels of protein, dietary fiber, vitamins, minerals, and antioxidants (Table 1). Finger millet, foxtail millet, and proso millet, in particular, excel in protein content, ranging from 7.7% to 15%, making them crucial sources of plant-based protein across various diets. Additionally, millets

contribute significantly to dietary fiber intake, supporting digestive health and blood sugar regulation. They are rich in B-complex vitamins, notably niacin, thiamine, riboflavin, pyridoxine, and folate, with finger millet and pearl millet standing out as excellent sources. Moreover, millets are abundant in essential minerals like calcium, iron, zinc, magnesium, phosphorus, and manganese, with finger millet and pearl millet leading the pack. Their dietary starch serves as a primary energy source, and they possess potent antioxidant properties, thanks to phenolic compounds and flavonoids. Millets also offer essential amino acids and a higher fat composition compared to other cereals. In essence, millets emerge as nutritional powerhouses, playing a vital role in promoting overall health and preventing chronic diseases (Suresh Kumar & Surendran, 18). Millets are highly nutritious and offer several health benefits due to their rich fiber content, low glycemic index, and essential minerals. They aid in digestion, promote weight management, regulate blood sugar levels, lower cholesterol, and enhance bone health. Millets are gluten-free, rich in antioxidants, and can serve as a preventive measure against diabetes and cardiovascular

Table 1: Nutritional Profile of Millets

MILLET	ENERGY (kcal)	CHO (g)	PROTEIN (g)	FAT (g)	TOTAL FIBER (g)	INSOLUBLE FIBER (g)	SOLUBLE FIBER (g)
Pearl Millet	361	67.5	11.6	5.4	11.5	9.1	2.3
Sorghum	349	72.6	10.4	1.7	10.2	8.5	1.6
Finger Millet	336	72	7.2	1.9	11.2	9.5	2.7
Proso Millet	364	70.4	12.5	1.1	7.7	5.4	1.9
Foxtail Millet	331	60.9	12.3	4.3	8.0	4.3	3.3
Little Millet	341	67	7.7	4.7	7.7	5.5	1.3
Kodo Millet	309	66	8.9	2.5	6.3	4.2	1.7
Barnyard Millet	397	65.5	6.2	2.2	9.8	-	4.4
Quinoa	330	53.6	13.1	5.5	14.6	-	3.8
Amaranth	355	61.5	13.3	5.6	7.5	5.8	1.5
<b>Buckwheat</b>	<b>323</b>	<b>65.1</b>	<b>10.3</b>	<b>2.4</b>	<b>8.6</b>	-	-

Source: MDRF & IFCT, NIN, ICMR 2017, Sharma 2017, Indian Food Composition Tables, NIN-2017 and Nutritive value of Indian Foods, NIN-2007

Millets have lost their popularity as a food source due to the increasing use of refined cereals like rice and wheat, which are more popular due to higher income levels and their widespread availability through PDS. Additionally, value-added products made from these cereals, along with their convenience and shorter cooking time, have contributed to the decrease in millet consumption. Longer cooking times, complex preparation, and the absence of value-added products have also played a role in the decline of millet consumption (Govt. of India, 2014). There is an urgent need for a comprehensive approach to address food insecurity and malnutrition. This requires acknowledging the potential of the forgotten traditional minor millets to combat nutritional deficiencies, not only by encouraging their cultivation and

consumption, but also by developing diverse food products, raising awareness among the general public, overcoming supply chain obstacles, and influencing policy-making.

Therefore, the objective of the current study is to contribute to this attempt through the development and standardization of recipes incorporating various minor millets, including foxtail millet, little millet, kodo millet, proso millet, and brown top millet. Subsequently, sensory evaluation by 30-35 semi-trained panelists using standardized rating scales such as Hedonic and Composite rating scales were also conducted. This comprehensive evaluation aims to gain a nuanced understanding of minor millet-based products and



their potential integration into day-to-day life, thus bridging the gap between nutritional needs and accessibility.

## Methods and Materials

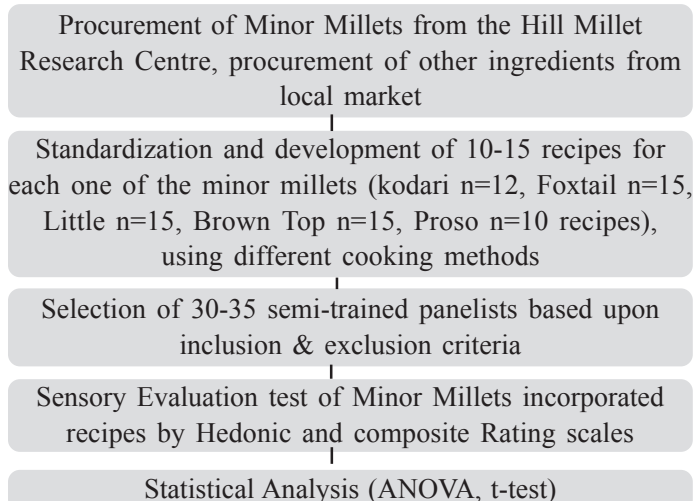
Fig:1 describes the methodology of the study. The samples of different minor millets were first procured from the Hill Millet Research Station, Waghai (Navsari, Gujarat). The cereal grains such as wheat, pulses, and other necessary ingredients for the production of food items were sourced from the local market. The millets were cleaned before use, and 10-15 recipes such as Dhokla, Idada, Uttapam, Dosa, Idli, Handvo, Masala Bhakhri, Missi Roti, Veg Khichdi, Muthiya, Curd Millet, Methi thepla etc (Table 2). were developed for each type of minor millet using different cooking methods, steaming, baking, shallow frying, etc. The prepared products were then subjected to sensory evaluation using 9 point Hedonic and Composite rating scales with a panel of 30-35 semi-trained panelists from the Department of Foods and Nutrition consented to participate in the study to determine

### INCLUSION CRITERIA:

- Availability & Willingness to participate in the sensory evaluation
- Normal health conditions
- Interest in quality evaluation work
- Freedom from prejudices in respect to a particular food product

the acceptability of millet-incorporated recipes as a partial or full substitute for rice or wheat in traditional Indian recipes. The data collected through the sensory evaluation was subsequently subjected to statistical analysis. A recipe book was created for these recipes as well.

### Fig. 1: Experimental Plan of the Study



### EXCLUSION CRITERIA:

- Having any infections like cough, cold having impact on sensory attributes
- Taking medicines that may impact sensory attributes
- Prior technical knowledge of product
- Undergone any recent surgeries

Table 2: List of Standardized Recipes Developed from Minor Millets

Name of the Minor Millet:	Kodo Millet	Foxtail Millet	Little Millet	Brown Top Millet	Proso Millet
Recipes Developed:	Veg Upma, Kadhi-Khichdi, Plain Kodari-Dal, Veg Pulao, Dhokla, Handvo. Dudhi Muthiya, Methi muthiya, Dosa-Chutney, Roti-Potato Sabji, Thepla-Curd, Khakhra	Veg Khichdi, Masala Bhakhri, Muthiya, Idada, Idli, Curd Rice, Methi Thepla, Handvo, Uttapam, Dosa, Haribhari tikki, Thalipeeth, Dhokla, Sev, Chakli	Jeera Biscuits, Curd rice, Uttapam, Bisi Bele Bhaat, Appe, Vegetable Upma, Dosa, Idli, Mint rice, Savoury Raab, Kadhi, Masala baati, Muthiya, Dhokla, Handvo, Methi Thepla	Cookies, Dosa, Idada, Masala Bhakhri, Idli, Missi Roti, Handvo, Curd Rice, Uttapam. Bisi Bele Bhaat, Veg Khichdi, Masala Baati, Thalipeeth, Methi Thepla, Muthiya	Uttapam, Mathri, Plain Proso-Dal, Dhebra, Dhokla, Idli, Dosa, Khichdi, Handvo, Muthiya,

## Results and Discussion

The standardised recipes were developed from the minor millets i.e. Kodo millet, Foxtail Millet, Little Millet, Brown Top Millet, and Proso Millet. The developed recipes were then subjected to sensory evaluation using composite rating and hedonic scale. The attributes studied for the composite rating scale were color and appearance, aroma, texture, taste, aftertaste, mouthfeel, and overall acceptability,

which were scored on a 10-point scale. Whereas, for the Hedonic rating scale, the overall liking of the product was assessed on a 7-point rating scale ranging from Dislike Very Much to Like Very Much with Neither Like nor Dislike as the mid-score. The results of this analysis are presented in Tables 3 to 7. According to the results, all the recipes that were developed were well received by the panelists. The scores for all these attributes were above 8 except for Kodo

Millet which indicated that the recipes developed by incorporating Minor Millets were highly acceptable to the subjects. It was found that Pulao-raita made from Kodo millet was highly acceptable. Similarly, Chakli, Bisi Bele Bhaat,

Khichdi, and Uttapam were the most popular dishes made from foxtail millet, little millet, brown top millet, and proso millet respectively. (Refer Table 8) Overall, these dishes were found to be highly acceptable by the panelists.

Table:3: Sensory Attributes of the Composite Rating score for Kodo millet-based recipes (Mean  $\pm$  SD)

Recipe	Color	Appearance	Taste	Texture	Mouthfeel	Size and shape	Aftertaste
Handvo	6.4 $\pm$ 0.6	6.4 $\pm$ 0.7	6.0 $\pm$ 1.0	6.1 $\pm$ 0.8	6.2 $\pm$ 0.8	6.2 $\pm$ 0.9	6.2 $\pm$ 0.9
Dhokla	6.5 $\pm$ 0.6	6.3 $\pm$ 0.8	5.9 $\pm$ 1.2	6.2 $\pm$ 1.1	5.5 $\pm$ 1.3	6.3 $\pm$ 1.0	5.6 $\pm$ 1.4
Methi Muthiya	6.2 $\pm$ 1.0	6.1 $\pm$ 1.1	5.9 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 1.0	6.3 $\pm$ 0.8	6.0 $\pm$ 1.0	5.9 $\pm$ 1.0
Upma	6.0 $\pm$ 1.2	6.0 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 0.8	6.0 $\pm$ 1.1	6.2 $\pm$ 0.9	N.A	5.7 $\pm$ 1.0
Pulao-Raita	6.2 $\pm$ 0.7	6.1 $\pm$ 0.8	6.3 $\pm$ 0.9	6.0 $\pm$ 0.9	6.4 $\pm$ 0.8	N.A	6.4 $\pm$ 0.7
Dudhi Muthiya	5.8 $\pm$ 1.1	5.9 $\pm$ 0.8	5.7 $\pm$ 1.2	6.0 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 1.1	6.2 $\pm$ 0.9	5.4 $\pm$ 1.5
Kodari-dal	5.8 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 0.8	5.8 $\pm$ 1.1	5.2 $\pm$ 1.3	5.4 $\pm$ 1.4	N.A	5.7 $\pm$ 1.2
Khichdi-Kadhi	5.9 $\pm$ 0.9	5.9 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 0.9	6.0 $\pm$ 1.0	5.8 $\pm$ 1.1	N.A	5.7 $\pm$ 1.1
Thepla-curd	6.28 $\pm$ 0.93	6.24 $\pm$ 0.92	6.08 $\pm$ 0.95	5.6 $\pm$ 1.22	5.76 $\pm$ 1.12	6.44 $\pm$ 0.65	5.92 $\pm$ 1.15
Dosa-Chutney	6.76 $\pm$ 0.43	6.68 $\pm$ 0.55	6.6 $\pm$ 0.70	6.56 $\pm$ 1.08	6.44 $\pm$ 0.96	6.72 $\pm$ 0.45	6.4 $\pm$ 1.15
Roti-Potato sabzi	6.48 $\pm$ 0.77	6.56 $\pm$ 0.58	6.08 $\pm$ 0.75	5.68 $\pm$ 0.14	5.4 $\pm$ 1.4	6.5 $\pm$ 0.7	5.8 $\pm$ 1.0
Khakhra	5.72 $\pm$ 1.02	5.52 $\pm$ 1.08	5.24 $\pm$ 1.26	5.32 $\pm$ 1.34	4.88 $\pm$ 1.73	6.12 $\pm$ 0.83	5.00 $\pm$ 1.38

Table:4: Sensory Attributes of the Composite Rating score for Foxtail millet-based recipes (Mean  $\pm$  SD)

Recipe	Color & Appearance	Aroma	Texture	Taste	After Taste	Mouth feel	Overall Acceptability
<b>Chakli</b>	9.6 + 0.72	9.5 + 0.77	9.4 + 0.82	9.4 + 0.81	9.3 + 0.78	9.5 + 0.77	9.5 + 0.63
<b>Curd Rice</b>	8.6 + 1.03	8.9 + 0.96	8.6 + 1.21	8.9 + 1.22	8.6 + 1.24	8.9 + 1.17	9.0 + 1.13
<b>Dhokla</b>	8.9 + 1.38	8.6 + 1.35	8.3 + 1.82	8.3 + 1.80	8.0 + 1.81	8.4 + 1.75	8.5 + 1.83
<b>Dosa</b>	9.4 + 0.62	9.2 + 0.72	8.9 + 1.14	9.1 + 0.89	8.9 + 0.95	9.1 + 0.86	9.1 + 0.73
<b>HariBhari Tikki</b>	9.2 + 0.77	8.9 + 0.96	8.8 + 1.14	8.8 + 1.06	8.8 + 1.04	8.8 + 1.06	9.1 + 0.94
<b>Handvo</b>	9.1 + 1.04	9.1 + 0.96	8.7 + 1.20	8.9 + 1.05	8.7 + 1.26	8.7 + 1.23	8.8 + 1.03
<b>Idada</b>	9.5 + 0.67	9.4 + 0.80	9.3 + 1.04	9.5 + 0.76	9.2 + 0.91	9.3 + 0.82	9.4 + 0.99
<b>Idli</b>	9.5 + 0.67	9.5 + 0.67	9.3 + 0.69	9.4 + 0.67	9.3 + 0.73	9.4 + 0.71	9.5 + 0.57
<b>Masala Bhakri</b>	8.8 + 1.04	8.6 + 1.35	7.9 + 1.44	8.4 + 1.38	8.1 + 1.48	8.1 + 1.47	8.3 + 1.39
<b>Methi Thepla</b>	9.3 + 0.92	9.0 + 1.06	9.1 + 0.95	8.9 + 0.98	8.9 + 0.89	8.9 + 1.17	9.0 + 0.95
<b>Muthia</b>	9.2 + 0.98	9.0 + 1	8.9 + 1.09	8.8 + 1.03	8.5 + 1.45	8.5 + 1.26	8.9 + 1.10
<b>Sev</b>	9.4 + 0.77	9.3 + 0.71	9.4 + 0.85	9.3 + 0.87	9.3 + 0.84	9.5 + 0.73	9.5 + 0.68
<b>Thalipith</b>	9.3 + 0.89	9.2 + 0.87	9.3 + 0.92	9.2 + 0.97	8.9 + 1.15	8.8 + 1.19	9.1 + 0.9
<b>Uttapam</b>	9.3 + 0.55	9.4 + 0.67	9.3 + 0.65	9.3 + 0.74	9.1 + 0.76	9.3 + 0.59	9.3 + 0.54
<b>Veg Khichdi</b>	9.2 + 0.86	8.9 + 0.95	8.9 + 1.19	9.2 + 0.97	9.1 + 1.23	9.0 + 1.11	9.2 + 1.02
<b>p Value</b>	0.00004***	0.0002***	0.0000003***	0.0001***	0.00001***	0.0000004***	0.00001***
<b>F Value</b>	3.33	2.97	4.33	3.24	3.53	4.24	3.68

\*\*\* Significantly different at  $p < 0.001$

Table:5: Sensory Attributes of the Composite Rating score for Little millet-based recipes (Mean  $\pm$  SD)

Recipe	Color and appearance	Aroma	Texture	Taste	After Taste	Mouthfeel	Overall acceptability
<b>Mint Rice</b>	8.56 $\pm$ 0.968	8.28 $\pm$ 1.146	8.49 $\pm$ 0.885	8.08 $\pm$ 0.984	8.00 $\pm$ 1.000	8.18 $\pm$ 1.048	8.13 $\pm$ 0.923
<b>Savoury Raab</b>	8.26 $\pm$ 1.208	8.05 $\pm$ 1.276	8.08 $\pm$ 1.326	8.31 $\pm$ 1.127	8.26 $\pm$ 1.251	8.23 $\pm$ 1.307	8.33 $\pm$ 1.155
<b>Bisi Bele Bhaat</b>	8.97 $\pm$ 1.158	9.15 $\pm$ 1.040	8.97 $\pm$ 1.181	9.15 $\pm$ 1.159	9.08 $\pm$ 1.156	9.00 $\pm$ 1.257	9.13 $\pm$ 1.128
<b>Methi Dhebra</b>	8.83 $\pm$ 0.971	8.50 $\pm$ 1.056	8.03 $\pm$ 1.253	8.22 $\pm$ 1.098	8.08 $\pm$ 1.296	8.17 $\pm$ 1.231	8.17 $\pm$ 1.108
<b>Curd Rice</b>	8.86 $\pm$ 0.899	8.78 $\pm$ 0.929	8.75 $\pm$ 0.967	8.67 $\pm$ 0.956	8.75 $\pm$ 0.906	8.72 $\pm$ 1.031	8.69 $\pm$ 0.889
<b>Kadhi</b>	8.72 $\pm$ 1.003	8.53 $\pm$ 1.028	8.67 $\pm$ 0.926	8.44 $\pm$ 1.182	8.44 $\pm$ 1.081	8.58 $\pm$ 1.052	8.56 $\pm$ 1.054
<b>Vegetable Upma</b>	9.03 $\pm$ 0.941	8.89 $\pm$ 0.950	8.75 $\pm$ 0.906	8.67 $\pm$ 0.986	8.69 $\pm$ 1.117	8.61 $\pm$ 1.076	8.69 $\pm$ 0.951

Dhokla	8.84 ± 1.068	8.76±0.955	8.62±1.037	8.38±1.255	8.24±1.442	8.41±1.142	8.41±1.322
Handvo	8.95 ± 0.911	8.95±0.815	8.95±0.815	8.68±0.973	8.46±1.145	8.76±0.895	8.59±1.066
Muthiya	8.73 ± 0.871	8.38±1.139	8.35±0.949	8.24±1.164	8.11±1.286	8.19±0.967	8.19±1.050
Uttapam	9.08 ± 0.924	8.76±0.955	8.81±0.908	8.51±1.121	8.30±1.351	8.76±0.955	8.70±1.024
Appe	8.86 ± 0.976	8.92±0.983	8.81±0.967	8.65±1.160	8.35±1.296	8.54±1.095	8.57±1.094
Idli	8.40 ± 1.321	8.27±1.405	8.33±1.314	7.93±1.698	7.80±1.727	8.22±1.412	8.29±1.424
Dosa	8.58 ± 1.288	8.36±1.368	8.49±1.392	8.36±1.583	8.00±1.719	8.31±1.276	8.36±1.300
Masala Bati	8.95 ± 0.780	8.92±0.924	8.81±0.938	8.59±1.235	8.46±1.282	8.59±1.235	8.70±1.199
p Value	0.045*	< .001***	0.002**	0.003**	< .001***	0.014*	0.004**
F Value	1.77	3.06	2.52	2.49	2.96	2.07	2.41

\*Significantly different at p< 0.05

\*\* Significantly different at p< 0.01

\*\*\* Significantly different at p< 0.001

Table:6: Sensory Attributes of the Composite Rating score for Brown Top millet-based recipes (Mean ± SD)

Recipe	Color and appearance	Aroma	Texture	Taste	After Taste	Mouthfeel	Overall acceptability
Khichdi	9.16±0.88	9.06±0.91	9.19±0.86	9.19±0.89	9.25±0.84	9.06±0.94	9.16±0.76
Muthiya	8.72±1.20	8.63±1.18	8.44±1.34	8.53±1.10	8.44±1.10	8.41±1.21	8.53±1.10
Dhokla	8.22±1.26	8.50±1.01	7.97±1.30	8.19±1.44	8.25±1.41	8.19±1.37	8.28±1.27
Handvo	8.94±0.91	8.69±0.96	8.59±1.07	8.78±1.00	8.72±1.02	8.75±1.07	8.81±0.99
Thalipith	8.64±1.18	8.26±1.25	8.23±1.24	8.13±1.28	8.05±1.53	8.00±1.41	8.08±1.30
Masala Bhakhri	8.51±1.25	8.23±1.30	7.49±1.58	7.82±1.53	7.44±1.87	7.54±1.73	7.49±1.73
Missi Roti	8.85±1.18	8.49±1.45	8.28±1.46	8.74±1.27	8.56±1.18	8.28±1.27	8.62±1.16
Methi Thepla	9.00±1.02	8.74±1.11	8.54±1.29	8.62±1.29	8.46±1.21	8.28±1.45	8.67±1.15
Dosa	8.47±1.16	8.50±1.05	8.03±1.29	8.00±1.23	8.26±1.13	8.03±1.29	8.18±1.19
Idli	8.53±0.92	8.62±1.01	8.85±0.98	8.71±0.87	8.44±0.99	8.56±0.96	8.59±0.98
Uttapam	8.56±1.13	8.88±0.91	8.62±1.10	8.59±1.01	8.50±1.05	8.53±1.16	8.65±1.09
Idada	8.94±1.04	8.85±1.07	9.00±1.10	9.06±1.07	8.91±1.11	8.88±1.17	9.00±1.07
Bisi bele bhat	8.95±1.20	8.86±1.20	8.57±1.30	8.62±1.38	8.65±1.25	8.51±1.32	8.65±1.33
Curd rice	8.49±1.21	8.43±1.14	8.35±1.31	8.24±1.25	8.49±1.14	8.19±1.28	8.32±1.18
Masala Bati	8.76±1.06	8.54±1.01	8.03±1.42	8.05±1.33	7.97±1.34	7.84±1.44	8.08±1.32
p Value	0.036*	0.090	<0.001***	<0.001***	<0.001***	<0.001***	<0.001***
F Value	1.83	1.57	4.48	3.89	3.84	3.40	4.08

\*Significantly different at p< 0.05

\*\* Significantly different at p< 0.01

\*\*\* Significantly different at p< 0.001

Table7: Sensory Attributes of the Composite Rating score for Proso millet-based recipes (Mean ± SD)

Recipe	Colour and Appearance	Aroma	Texture	Taste	After taste	Mouthfeel	Overall Acceptability
Dhokla	8.8±1.30	8.7±1.32	8.5±1.56	8.6±1.31	8.8±1.35	8.6±1.36	8.7±1.26
Muthiya	8.7±1.17	8.3±1.20	8.4± 1.51	8.4±1.63	8.3±1.57	8.3±1.53	8.5±1.13
Handvo	8.9±1.25	8.7±1.30	8.6±1.45	8.6±1.41	8.6±1.45	8.7±1.29	8.8±1.18
Veg Khichdi	8.7±1.32	8.4 ±1.40	8.4 ±1.79	8.6±1.45	8.4 ±1.79	8.3 ±1.84	8.5±1.58
Debhra	8.2±1.20	7.9±1.46	8± 1.45	8.1±1.57	8±1.24	7.9±1.47	8.2±1.28
Mathri	8.2 ±1.23	7.9 ±1.52	7.9±1.72	8.1±1.72	7.5±1.82	7.7±1.65	8.0±1.47
Proso and Dal	7.9±1.78	7.7±2.36	8.1±2.1	8.3±1.73	8.3±2	8.1±2.27	8.1±1.89
Idli	9±1.44	8.6±1.38	8.7±1.45	8.6±1.42	8.2±1.74	8.7±1.59	8.5±1.65
Dosa	8.8±1.31	8.4±1.41	8.5±1.17	8.3±1.25	8.1±1.58	8.5±1.26	8.6±1.14
Uttapam	9±1.15	9±1.32	9.1±1.1	9±1.09	8.7±1.37	9±1.09	9.0±1.06
P-value	0.013**	0.025*	0.037*	0.181	0.050*	0.013**	0.091
F-Value	2.47	2.22	2.07	1.43	1.96	2.46	1.72

\*Significantly different at p< 0.05

\*\* Significantly different at p< 0.01

Table 8: Millet-wise Ranking of the Most Acceptable Recipes Based on the Mean Scores of the Hedonic Rating Scale

Millet	Most Acceptable Product
Kodo Millet	Pulao-Raita (6.5)
Foxtail Millet	Chakli, Idada, Sev (6.8)
Little Millet	Bisi Bele Bhaat(6.6)
Brown Top Millet	Khichdi (6.5)
Proso Millet	Handvo (8.1)

It can be seen from the results that the Minor Millets can be effectively substituted with traditional cereals like wheat and rice. The results suggest that substituting high glycemic index rice with Kodo millet in traditional recipes, without affecting the taste, can help manage diabetes as the utility of Kodo Millet as a functional food in the management of Type 2 Diabetes Mellitus has emerged over a long period. Kodo millet has been found to have beneficial effects on inflammation, general debility, skin wounds, and joint health and complexion (Bhatia et al. 2010, Hegde et al 2002). It has also been reported to have antioxidative, hypocholesterolemic, and hypoglycemic properties. (Hegde and Chandra 2004, Jain et al 2010). Similarly, Foxtail millet has a lower glycemic index than wheat and rice, making it a good option to substitute in traditional recipes for diabetic people. It is also effective against gastric problems, GI dysfunction, and esophageal cancer, and improves bowel movement. The nutrient-rich little millet can also be used in a variety of regional recipes, and its addition to one's regular diet can help prevent and manage a variety of non-communicable diseases, gastrointestinal disorders, and certain types of cancers. Brown Top millet is rich in protein, fiber, magnesium, iron, and calcium and is also effective against gastric problems, GI dysfunction, and certain types of cancer, and improves bowel movement. Proso millet contains high lecithin which supports the neural health system. It also helps to reduce blood cholesterol levels and control healthy insulin levels. The fiber in Proso millet aids digestion, gives satiety, and prevents constipation.

### Conclusion and Recommendation

The results indicate that the recipes developed from various Minor Millets were found to be acceptable. Through the development and sensory evaluation of various minor millet-based recipes, the research aims to bridge the gap between nutritional needs and accessibility, thereby promoting the integration of these nutritious grains into daily diets. The products formulated from these millets can help in the prevention and management of non-communicable diseases such as diabetes and obesity, as they contain high amounts of fiber, and resistant starch, and have a lower glycemic index. Millets being a rich source of micronutrients could help

in overcoming the challenges of micronutrient deficiencies. The study underscores the need for greater awareness, promotion, and policy support to encourage the cultivation, consumption, and utilization of minor millets as part of sustainable food systems and efforts to combat malnutrition and promote public health. In this context, the government can play a crucial role. Table 9 shows some of the key government policy actions and interventions to catalyze the promotion of Minor Millets and unlock their full potential in contributing to a healthier and more resilient food systems.

Table 9: Recommendations for the Government for Promoting Millet Consumption

#### Strategies Action

**Public Distribution Systems** Incorporation of millets in the PDS system to improve the accessibility and affordability for the general population.

#### Integrated Child Development Scheme

Incorporation of millets by distributing THR, Premixes, etc made up of millets to improve the dietary diversity and combat malnutrition of the targeted population.

**Mid-Day Meal Scheme** Incorporation of millet-based hot-cooked meals in schools to improve the nutritional intake of children.

**Research Grants** Provide tax incentives and grants for companies and research institutions conducting research and development on millet-based products, processing technologies, and value-added innovations.

**Farmer training programs** Facilitate the formation of farmer cooperatives to strengthen collective bargaining power, share resources, and access markets more efficiently, thus enhancing the competitiveness of millet farmers.

**Market subsidies** Offer subsidies to farmers and retailers to reduce the cost of millet production and make millet-based products more affordable for consumers, thus stimulating demand.

#### References

- Cummings Jr, R. W. (2019). RS Paroda: Reorienting Indian agriculture: challenges and opportunities: CABI, Oxfordshire, UK, 2018, 314 pp, ISBN 978-1-78639-517-7.
- International Food Policy Research Institute. (2023). 2022 annual report. Washington, DC: International Food Policy Research Institute. <https://doi.org/10.2499/9780896294530>
- Springmann, M., Mason-D'Croz, D., Robinson, S., Garnett, T., Godfray, H. C. J., Gollin, D., ... & Scarborough, P. (2016). Global and regional health effects of future food production under climate change: a modelling study. *The Lancet*, 387(10031), 1937-1946.

4. Whitmee, W., Haines, S., Beyrer, C., Boltz, F., Capon, A.G., de Souza Dias, B.F., Ezech, A., Frumkin, H., Gong, P., Head, P., Horton, R., Mace, G.M., Marten, R., Myers, S.S., Nishtar, S., Osofsky, S.A., Pattanayak, S.K., Pongsiri, M.J., Romanelli, C., Soucat, A., Vega, J., & Yach, D. (2015). Safeguarding human health in the Anthropocene epoch: Report of The Rockefeller Foundation–Lancet Commission on Planetary Health. *The Lancet*, 386, 1973–2028. [http://dx.doi.org/10.1016/S0140-6736\(15\)60901-1](http://dx.doi.org/10.1016/S0140-6736(15)60901-1)
5. FAO, F. (2016). The state of food and agriculture: Climate change, agriculture and food security. *Rome, Italy*.
6. OECD/FAO. (2020). OECD-FAO agricultural outlook 2020–2029. *Oecd*.
7. Ministry of Health and Family Welfare. (Year). National Family Health Survey (NFHS-5) Phase II [PDF file]. Retrieved from [https://main.mohfw.gov.in/sites/default/files/NFHS-5\\_Phase-II\\_0.pdf](https://main.mohfw.gov.in/sites/default/files/NFHS-5_Phase-II_0.pdf)
8. Padmanabhan, J., Kumar, S., Das, A., Paithankar, P., Kumar, A., Jain, A., & Avinandan, V. (2023). Climate change impacts on food security and nutrition of India: Foresight analysis.
9. FAO. (n.d.). *Title of the webpage*. Retrieved from <https://www.fao.org/3/w1808e/w1808e0c.htm>
10. *The Story of Millets.pdf*, Karnataka State Department of Agriculture (KSDA), Bengaluru, India with ICAR-Indian Institute of Millets Research (IIMR), Hyderabad, India (2018)
11. Nesari, T. M. (2023). Celebrating International Year of millets: Way towards holistic well-being. *Journal of Ayurveda Case Reports*, 6(1), 1-4.
12. Hussain, S., Amin, A., Mubeen, M., Khaliq, T., Shahid, M., Hammad, H. M., ... & Nasim, W. (2022). Climate smart agriculture (CSA) technologies. *Building Climate Resilience in Agriculture: Theory, Practice and Future Perspective*, 319-338.
13. Suresh Kumar, D., & Surendran, A. 18. TREND IN PRODUCTION AND CONSUMPTION OF MILLETS IN INDIA. *SENSITIZING THE MILLET FARMING, CONSUMPTION AND NUTRITIONAL SECURITY*, 122.
14. Tripathi, G., Jitendrakumar, P. H., Borah, A., Nath, D., Das, H., Bansal, S., ... & Singh, B. V. (2023). A review on nutritional and health benefits of millets. *International Journal of Plant & Soil Science*, 35(19), 1736-1743.
15. Government of India. (2014). *Status paper on coarse cereals (Sorghum, Pearl Millet, Finger Millet, Small Millets, Maize, and Barley)*. Directorate of Millets Development, Department of Agriculture and Cooperation, Ministry of Agriculture. Retrieved from <https://www.nfsm.gov.in/StatusPaper/StatusMillets2016.pdf>
16. Bhatia G , Joshi S , Barve A , Nema R , Joshi A , Gehlot S. ( 2010 ) Phytochemical Studies of the Grains of Paspalum scrobiculatum *International Journal of Pharmaceutical and Clinical Research* ; 2 ( 2 ) : 66-67 .
17. Hegde P. Chandrakasan G , Chandra T. ( 2002 ) Inhibition of collagen glycation and crosslinking in vitro by methanolic extracts of J Nutr Biochem , 13 ( 9 ) : 517 Finger millet ( Eleusine coracana ) and Kodo millet ( Paspalum scrobiculatum )
18. Hegde PS , Anitha B , Chandra TS . ( 2005 ) In vivo effect of whole grain flour of finger millet ( Eleusine coracana ) and kodo millet ( Paspalum scrobiculatum ) on rat dermal wound healing *Indian J Exp Biol* ; 43 ( 3 ) : 254-8 .
19. Jain S , Bhatia G , Barik R , Kumar P , Jain A , Dixit VK . ( 2010 ) Antidiabetic activity of Paspalum scrobiculatum Linn . in alloxan induced diabetic rats *Journal of Ethnopharmacology*, 127 ( 2 ) : 5-8.
20. Iyer U. & Patel K. (2012) . Studies on Product development and Sensory evaluation of Kodari (Paspalum Scrobiculatum Linn) incorporated recipes : Impact of Kodari Supplementation on the Lipid status in Type 2 Diabetic Subjects .
21. Iyer U., Dhruv S. & Jayswal D. (2012) . Studies on Product development and Sensory evaluation of Kodari (Paspalum Scrobiculatum Linn) incorporated recipes: Impact of Subjects . Kodari Supplementation in the management of Hyperglycemia in Type 2 Diabetic
22. Dhruv S., and Thite N. (2021). Product development and sensory evaluation of Foxtail millet incorporated recipes.
23. Dhruv S., and Sharma S. (2022). Product development and sensory evaluation of Brown Top millet incorporated recipes.

- <sup>1</sup>. Department of Foods & Nutrition, Faculty of Family and Community Sciences, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara, Gujarat, India.

<sup>2</sup>. Corresponding Author

Email id: [swati.dhruv-fn@msubaroda.ac.in](mailto:swati.dhruv-fn@msubaroda.ac.in)

# Linkage of Sustainable Agriculture with Quality of Life: A Quantitative Assessment

□ Harmanpreet Singh Kapoor<sup>1</sup>, Arvind Goswami<sup>2</sup>, Rajesh Kumar Jangir<sup>3</sup>, Vinod Kumar<sup>4</sup>

## Abstract

*Agriculture often places a significant strain on the environment and natural resources. Sustainable agriculture aims to maintain and improve soil fertility, protect the environment, and expand the Earth's natural resource base, improving life quality. The principal aim of this research project is to determine a relationship between the advancement of sustainable agriculture and the standard of living, which includes all aspects of an individual's life circumstances, such as natural, social, and economic. Because sustainable agriculture is complex, it must be thoroughly examined. This calls for a rigorous process for a thorough investigation. This required methodically classifying 24 indicators into a subset, which defined specific elements within the environmental (10 indicators), economic (13 indicators), and social (1 indicator) domain dimensions. To check the relationship of all the indicators, trend of all the indicators has been shown after normalization. The results show that there is a harmful impact of degradation in environment's quality on people's health. The government should organize awareness camps to aware people about use of fertilizers and pesticides.*

**Keywords:** Sustainable agriculture, quality of life, standard of living, environment.

## Introduction

The unique characteristics of agriculture are important in assessing whether the primary goal of any nation's socioeconomic structure, national security, of which food security is an essential component, can be achieved. Among the many modern theories of socioeconomic growth, creating a sustainable agricultural sector must be prioritized. Sustainable development's objective is improving life; Quality of Life (QoL) is frequently characterized as the overall well-being of individuals and society. QoL is a multifaceted concept that individuals may evaluate and interpret differently, influenced by age, gender, health status, and cultural considerations. Sustainable agriculture embodies a comprehensive, enduring system intertwined with diverse elements impacting the quality of life.

Moreover, it promotes enhancing environmental quality and efficiently utilizing both renewable and non-renewable energy sources. The term 'sustainably' underscores the pivotal role of the agricultural sector in augmenting food availability and ensuring food security. This is in accordance with the more general worldwide goals delineated in the Sustainable Development Goals (SDGs) of the United Nations. In particular, Goal 2 aims to end hunger, achieve food security, enhance nutrition, and promote sustainable agriculture.

SDG 2 acknowledges the connection between access to enough nourishing food and quality of life (QoL). SDG 2 aims to improve the lives and well-being of people and communities by eradicating hunger and securing food supplies. Sufficient nutrition maintains physical health and fosters cognitive growth, educational attainment, and general societal prosperity. SDG 2's focus on sustainable agriculture emphasizes the need to use resources responsibly, protect the environment, and use energy efficiently. These actions support the long-term well-being of current and future generations and are consistent with the multifaceted definition of quality of life. In context to address this, this study aims to analyze the impact of sustainable agriculture on quality of life in the context of SDGs.

## 1. Literature Review

The connection between sustainable agriculture and quality of life has been explored by various researchers in terms of rural livelihood (Acharya, 2006), food security (ESCAP, 2009), social capital (Prayitno et al., 2022) and many more (Purvis & Smith, 2013; Shobri et al., 2016; Feher & Beke, 2013). In a study, it has been found that there is a significant correlation between sustainable agriculture and quality of life and between GDP and sustainable agriculture also (Polcyn et al., 2023). In another study, results show that in case of farmers' living standards are influenced by social capital (Prayitno et al., 2022).

## 2. Data and methodology

Sustainable agriculture addresses three key dimensions: environmental, social, and economic. A total of 24 indicators

have been employed to gauge these aspects, with 10 focusing on the environment, 13 on the economic front, and 1 on the social dimension. Data from 2000 to 2020 from world development indicators have been gathered to assess the performance across these indicators. In this study, all indicator values have been normalized to make a comprehensive comparison on a standard scale. Based on computed normalized values of each indicator, line graphs have been generated to show trends over the period.

Normalized value

Here, CV: Current value of the indicator,

Min: Minimum value of indicator and

Max: Maximum value of indicator.

### 3. Results and Policy Suggestions

In this section, the trends of all the indicators are shown in Figure-1-4 Figure I, which depicts the environmental indicators, shows that the methane emission level is almost the same over the period, whereas the emissions level of NO<sub>2</sub> has increased. Similarly, the use of fertilizers, freshwater withdrawal, water productivity, irrigated land, and forest area have also increased. In contrast, during this period, total agricultural land and arable land decreased, which shows that agricultural land is decreasing because of industrialization and urbanization. From Figures 2-3, it can be seen that over the period, employment in the agriculture sector has decreased, whereas production has increased due to the high use of fertilizers and pesticides. At the same time, irrigation facilities have also improved, which also helped in high production. Lastly, Figure 4 shows that health expenditures have increased. There can be multiple reasons behind that, such as increased levels of NO<sub>2</sub>, which causes air pollution, and increased use of fertilizers and pesticides, which harm people's health, ultimately leading to high expenditures on health. To control the use of high fertilizers and pesticides, the government should take initiatives to make people aware of their harmful effects. Besides these, the government should encourage people to move from high-water-consuming crops

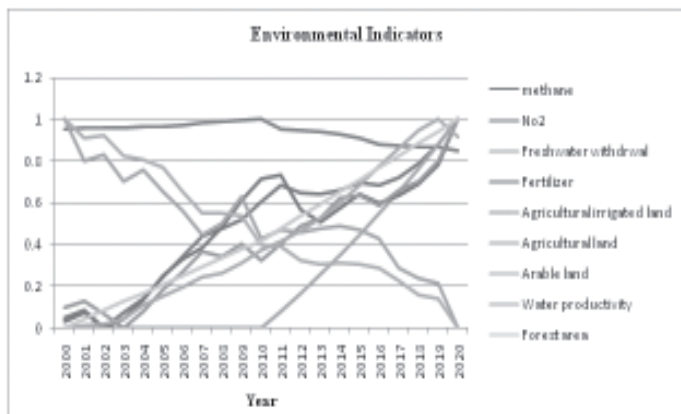


Figure 1: Trend of Environmental Indicators

to low-water-consuming crops, which will also help conserve groundwater. This will also help to reduce the level of methane emissions from agriculture since it is released from paddy fields, which is a highly water-consuming crop.

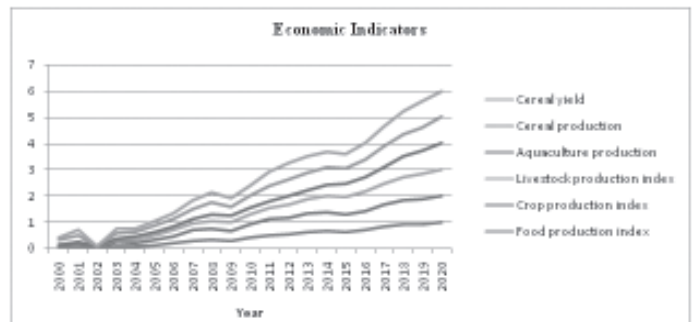


Figure 2: Trend of Economic Indicators

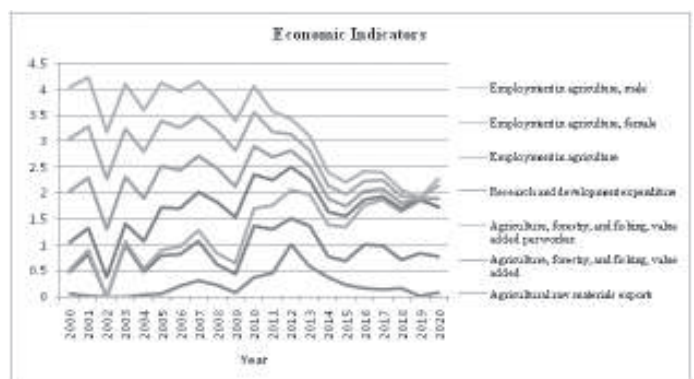


Figure 3: Trend of Economic Indicators

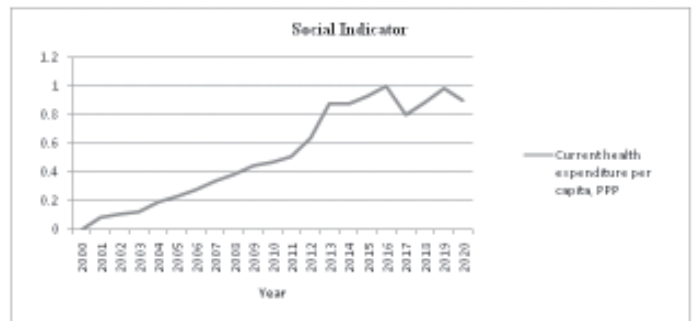


Figure 4: Trend of Social Indicator

### 4. Conclusions

This study has compared the various indicators which show the link between quality of life and agriculture. Comparing environmental and economic indicators with social indicators presents a picture of the overall impact of agriculture and the economy on people's health. Results have shown that high emissions levels and increased use of fertilizers harm people's health, ultimately forcing them to spend more on health. Spending more on health because of harmful environmental conditions shows that people's quality of life is not so good. The government should organize awareness camps to make people aware of using fertilizers

and pesticides and the optimum use of water resources.

### References:

1. Prayitno, G., Hayat, A., Efendi, A., Tarno, H., Fikriyah, & Fauziah, S. H. (2022). Structural Model of Social Capital and Quality of Life of Farmers in Supporting Sustainable Agriculture (Evidence: Sedayulawas Village, Lamongan Regency-Indonesia). *Sustainability*, 14(19), 12487.
2. Acharya, S. S. (2006). Sustainable agriculture and rural livelihoods. *Agricultural Economics Research Review*, 19(347-2016-16775), 205-218.
3. ESCAP, U. (2009). Sustainable agriculture and food security in Asia and the Pacific.
4. Purvis, M., & Smith, R. (2013). Sustainable agriculture for the 21st century. In *Exploring Sustainable Development* (pp. 179-206). Routledge.
5. Shobri, N. I. B. M., Sakip, S. R. M., & Omar, S. S. (2016). Malaysian standards crop commodities in agricultural for sustainable living. *Procedia-Social and Behavioral Sciences*, 222, 485-492.
6. Feher, I., & Beke, J. (2013). The rationale of sustainable agriculture. *Iustum Aequum Salutare*, 9, 73.
7. Polcyn, J., Stratan, A., & Lopotenco, V. (2023). Sustainable Agriculture's Contribution to Quality of Life. *Sustainability*, 15(23), 16415.

1. Department of Mathematics and Statistics,  
Central University of Punjab, Ghudda (Bathinda),  
151401 India; harmanpreet.singh@cup.edu.in

2. Department of Economic Studies, Central  
University of Punjab, Ghudda (Bathinda), 151401 India;  
arvindgoswamisdpl@gmail.com

3. Center for Economic Studies and Planning,  
School of Social Science, Jawaharlal Nehru  
University, New Delhi, India;  
rkjangir@mail.jnu.ac.in

4. Department of Commerce, Sri Venkateswara  
college, University of Delhi, drvinod@svc.ac.in



# Women Led Development and Role of Education

□ Nidhi Mishra

## Abstract

*Women are integral for the development and advancement of any society. It is rightly said that the development of any society is measured through the development of its women. Boys and girls are brought up to believe that the main responsibility of women lies in household chores and bringing up children. This is understood as sexual division of labour. This understanding has led to the restricted role of women in public life.*

*There is not a single woman around who is not found to be working. Doing household work, taking care of family members is a full time job, though it is still not recognised in the domain of paid work. There are woman who work at home and outside as well which has given rise to the concept of 'double burden'. Women are drivers of economic development of any country and Bharat concretise this understanding. The economic, social and political development of our country has much transgressed from Women development to Women led development. Women of Bharat are recognised as 'Nari Shakti' and Government of India is committed towards the empowerment of each woman of our country and to remove any bottlenecks which comes in the path of their development.*

*The honourable Prime Minister of our nation as understood the immense potential of Nari Shakti and rightly observed that one cannot achieve success where 50 per cent of our population being women locked at home.*

*This paper looks at the concept of women-led development and its manifold effect on various aspects of societal progress and well-being. It looks at the various advancements made by women and the role of NEP 2020 for the empowerment of women in the field of Education. The paper also tries to gauze the understanding of the 'women-led development' from the school teachers of Delhi.*

**Key words :** gender, women development, women-led development, NEP 2020

'Gender' refers to the socially constructed roles, behaviours, activities, and attributes that a given society considers appropriate for men and women. Gender

emphasizes that masculinity and femininity are products of social, cultural and psychological factors and are acquired by an individual in the process of becoming a man or woman.

What is the significance of the concept 'gender'? Why are we talking about it? In talking about the social and cultural construction of masculinity and femininity, gender allows us to see these dimensions of human roles and personalities as based not on nature but on social factors. It then allows us to address issues like subordination and discrimination as issues where change is possible.

## Gender as a social construct

Gender roles are inculcated during the process of interaction with people and norms in the society. But children learn it not only as external influence, but also as internal relation since their infancy. Children observe and gradually internalize the gendered behaviour around them through different medium and sources. Gender-differentiated children's activities gradually cement the gender difference in behaviour that later reflect in the nature of adult male and female behaviour. Gender refers to culturally constructed roles that are played by women and men in society. Further, gender is used as a concept to analyse the shaping of women's and men's behaviour according to the normative order of a society. Gender as a conceptual tool is used to analyse the structural relationships of inequality existing between women and men, as reflected in various aspects of life such as the household, the labour market, education and political institutions. Gender relations are the ways in which a culture or society defines rights, responsibilities, and the identities of men and women in relation to one another (Bravo - Baumann, 2000). The socio-cultural norms of a society are instrumental in demarcating the gender relations. They indicate the way men and women relate to each other in a socio-cultural setting and subsequently lead to the display of gender-based power. This develops from the expected and gendered roles assumed by men and women and the impact of their interactions.

## Patriarchy

Patriarchy literally means the 'rule of the father'. In gender studies, the term refers to a social system wherein

men dominate over women. Male dominance can be expressed in various ways - for example, within the institution of the family, in the greater rights given to men, through the ownership and control by men of resources like land and other assets. Patriarchy dominates almost all the social structures of society. Men acquire a dominant status not in terms of numbers or in strength, but by means of having a more prominent and powerful social position and having almost absolute access to decision-making power. In a patriarchal societal setup a woman is seen more in a supplementing role and supporting a man (behind every successful man is a woman), bearing children and taking care of household chores. This is how it is and has been for ages in many cultures. Walby's reconstruction of patriarchy defines it as a system of social structure and practices, in which men dominate, oppress and exploit women. India has a rich and diverse knowledge system that has evolved over thousands of years. The role and place of women in the Indian knowledge system have evolved over time and vary across different periods and regions. Historically, women in ancient India played significant roles in various aspects of life, including education, philosophy, and governance. Ancient Indian texts, such as the Vedas, Upanishads, and Puranas, acknowledge the importance of education for both men and women.

While there are instances of women's active participation in various fields, it's essential to acknowledge that social norms and practices have not always been uniform across different regions and time periods in India. Over centuries, societal changes, invasions, and colonial influences have shaped gender roles and perceptions. In contemporary times, efforts are being made to ensure gender equality in education and various sectors. Women in India are increasingly participating in fields such as science, technology, business, politics, and arts.

Gender justice is an important commitment enshrined in the Constitution of India. In order to promote gender just society several steps have been taken by the government over the years. In past few years, India is witnessing a rapid transition from women's development to women led development with vision of a new India. A multi-pronged approach has been adopted by the government of India to address issues of women inequality. The approach encompasses educational, social, economic, and political empowerment, so that women become equal partners in fast paced and sustainable national development and are not just the beneficiaries. When we say women led development it means women are the stakeholders in the process of social, economic and political advancement of any country.

"Women-led development" typically refers to a

development approach or process where women play a central and leading role in decision-making, planning, and implementation of various development initiatives. This concept emphasizes the importance of recognizing and empowering women as key agents of change in societal progress and development. Women-led development recognizes the unique perspectives, needs, and contributions of women in shaping the development agenda. It aims to break down traditional gender roles and empower women to actively participate in and contribute to the social and economic progress of their communities and societies.

Women of Bharat is referred as 'nari shakti' who are now the leading force of developmental trajectory. The government of India led by PM Narendra Modi is determined in focusing on comprehensive empowerment of women. He acknowledges that women make up nearly half of India's population and over the years women participation has increased in various fields, be it medicine, space science, bureaucracy or politics. The women of today's Bharat are no more confined to the four walls of their houses. In Gujarat, 36 lakh women are associated with the dairy sector. In particular, as far as women-led unicorns in India are concerned, the combined value of such unicorns is more than \$40 billion. About 43 per cent of STEM (Science, Technology, engineering, and Mathematics) graduates in India are women. About one-fourth of the space scientists in India are women. The talent and hard work of women scientists are behind the success of flagship programmes like Chandrayaan, Gaganyaan, and Mission Mangal.

The understanding of women led development is gauged through the school teachers of elementary level. The school teachers have understood the concept of women led development as a multifaceted approach that addresses to the various aspects of women lives. They identified the various domains ranging from education, economic empowerment, and financial inclusion, political and social inclusion.

### **Women and Education**

The concept of women-led development and education is integral to fostering gender equality and empowering women in various aspects of societal progress. Education is a key driver in this process, as it equips women with knowledge, skills, and opportunities, enabling them to actively participate in and contribute to the development of their communities and societies. There are several ways in which women-led development intersects with education.

The very first being the access to education. Women-led development starts with ensuring equal access to education for girls and women. Efforts should be made to eliminate barriers such as cultural norms, economic constraints, and gender-based discrimination that may hinder

girls' enrolment and attendance in schools.

Second is providing quality education. Women-led development recognizes the importance of providing quality education to girls and women. This involves not only ensuring access to schools but also guaranteeing that the education provided is relevant, inclusive, and empowers women with the skills necessary for personal and professional growth.

Education is a powerful tool for empowerment. Women who are educated tend to have better decision-making abilities, increased self-confidence, and improved awareness of their rights. This empowerment extends to various aspects of life, from family planning to economic participation.

Women led development recognises leadership development among women. Education plays a crucial role in developing leadership skills among women. By providing educational opportunities, women can gain the knowledge and confidence needed to take on leadership roles in various sectors, including politics, business, and community organizations.

Entrepreneurship and Economic Development is yet another important parameter of women led development. Education equips women with the skills necessary for entrepreneurship and economic participation. Women-led development often involves initiatives that support women entrepreneurs, provide business education, and facilitate access to financial resources for women-led businesses. Women have many skills that need financial capital that can help convert these skills into successful entrepreneurship opportunities.

To be specific, MUDRA Yojana was launched by PM Narendra Modi's government to provide collateral-free loans to entrepreneurs and help them achieve their dreams. Another programme, Stand Up India, also provides entrepreneurship loans of up to Rs 1 crore to women or SC/ST entrepreneurs. Women have been at the forefront of making these programmes immensely successful. Over 10 crore women have availed entrepreneurship loans jointly from MUDRA and Stand Up India. Women constitute over 70% of MUDRA's beneficiaries.

Education can challenge and break down traditional gender stereotypes. By promoting education that is free from gender bias, women can explore a wide range of academic and career paths traditionally dominated by men, contributing to a more diverse and inclusive society.

Education plays a vital role in promoting health and well-being. Educated women are more likely to make informed decisions about their health and the health of their families, contributing to overall community development.

Advocacy and Social Change are real constant of educational advancement of women. Educated women are

often at the forefront of advocating for social change and challenging gender norms. Through education, women can become agents of change, working towards a more equitable and just society.

To promote women-led development through education, it is essential to address issues such as gender-based violence, ensure the safety of girls in schools, provide mentorship opportunities, and foster an environment that encourages girls and women to pursue education and leadership roles. Governments, NGOs, educational institutions, and communities all play crucial roles in shaping an educational landscape that supports women-led development.

The National Education Policy (NEP) 2020 in India is unique in itself. It places a strong emphasis on gender equity and inclusivity across all levels of education. The policy recognizes the importance of addressing historical and social disparities and strives to create an educational environment that is more equitable and gender-sensitive. Some key aspects of gender equity in the NEP 2020 include:

**Access to Education:** NEP 2020 emphasizes providing equitable access to quality education for all, regardless of gender. The policy aims to ensure that girls have equal opportunities to enrol in and complete school education.

**Early Childhood Care and Education (ECCE):** The policy recognizes the importance of early childhood care and education, promoting inclusive and gender-sensitive practices right from the foundational to preparatory years. This includes ensuring access to quality pre-school education for all children.

NEP 2020 emphasizes creating a gender-sensitive and inclusive curriculum. It aims to eliminate gender-based discrimination in textbooks and educational materials, promoting a more balanced and unbiased representation of genders.

**Girl-friendly Infrastructure:** The policy advocates for the creation of girl-friendly infrastructure in schools, including separate and well-maintained toilets for girls, to address hygiene and privacy concerns and encourage their continued attendance.

NEP 2020 recognizes the need to address factors leading to higher dropout rates among girls, such as socio-economic factors and cultural norms. The policy encourages interventions to keep girls in school, including scholarships, transportation facilities, and awareness programs.

**Promoting Vocational Education:** The policy emphasizes the integration of vocational education from the secondary level onward, aiming to provide diverse opportunities for both boys and girls. This inclusion of vocational education is seen as a means to reduce gender-based occupational stereotypes.

In the field of skill development, the participation of women has been phenomenal. Under the Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY) 2.0, almost half of the beneficiaries enrolled are women. The scheme provides a boost to women's competencies and skills, increasing their employability and enabling them to become self-employed. Skilling women labour force is also critical to the agenda of women empowerment, since, a strong workforce of skilled female workers would enhance women's bargaining power at the workplace.

**Higher Education:** NEP 2020 acknowledges the need for promoting gender equity in higher education. It encourages the creation of a supportive and inclusive environment for female students and faculty, addressing issues such as harassment and discrimination.

**Gender Sensitization:** The policy calls for gender sensitization programs for teachers, administrators, and students. This is aimed at fostering an understanding of gender issues, promoting respectful behaviour, and creating a more inclusive educational culture.

**Inclusive Education for Transgender Students:** NEP 2020 recognizes the need for inclusive education for transgender students. It emphasizes the creation of a supportive and non-discriminatory environment for transgender individuals in educational institutions.

**Higher Education and Research:** The policy aims to promote gender equity in research and higher education, encouraging the recruitment and retention of women faculty. It also emphasizes the need for a gender-inclusive perspective in academic research.

## Way forward

Women led development is a gender transformative approach with a wider goal where women are at forefront on the path of progress and development of Bharat. The rapidly increasing population of India is empowered by youths and is going to be the leader in the working age population in the world. The roadmap of progress will not be decided by the government alone but by the nation. The Vision 2047 by the present government under the leadership of honourable PM Shri Narendra Modi, that is 'Viksit Bharat @2047' envisages India's development with the philosophy of "sabkasaath, sabkavikas, sabkaprayas" which includes the massive participation of women force to transform India into a developed nation by 2047, which is the 100<sup>th</sup> year of India's Independence.

## Bibliography

- Bhasin, K. (2000), Understanding Gender, New Delhi. Kali for Women.
- Bhasin, K. (2003), What is Patriarchy, New Delhi. Kali for Women.
- 'Nari Shakti: From Women Development to Women-led Development' Ministry of Information & Broadcasting; 2023.
- (<https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2023/mar/doc202337167601.pdf>)
- National Education Policy 2020, Ministry of Human Resource Development, Government of India. ([https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf))
- Walby, S. (1989), Theorising Patriarchy, Sage Publication Ltd.

*Department of Education, University of Delhi, India  
mishranidhi84@gmail.com*

# Understanding Geopolitical Situations and Its Implications on Manipur's Violence

□ Tayenjam Priyokumar Singh

## Abstract

*The northeastern region of India is one of the most geo-strategically important regions in South and Southeast Asia. The region has the highest number of international borders, and its implications are challenging and complex in nature. The region has always encountered socio-political turmoils in some way or other ways. It is geographically proximity to the deadly infamous Golden Triangle. However, in the last few years, the state of Manipur has been relatively peaceful and moving towards a developmental trajectory. Unfortunately, it has been severely affected by Myanmar's political unrest and exponentially growing illicit drug trafficking. As a result, many illegal Kuki-Chin migrated to Manipur and sometimes via Mizoram. Along with this, there has also been a possibility of a crime-terror nexus between poppy cultivation and insurgent/militant outfits in Manipur and neighbouring regions. The money from these drug mafias who grow opium and process heroin for export to other parts of India and other countries might be funded anti-national and unlawful activities. Even scholars alleged that foreign hands might be involved in the violent situation of Manipur. In this context, this research paper is a modest attempt to critically analyse the changing geopolitical situations and their implications in the ongoing violence in the state of Manipur.*

**Keywords :** *Kuki-Chin, Militant/insurgent Outfits, Narco-Terrorism, Illicit Drugs, Arms*

## Introduction

Drug trafficking is one of the most profitable items for organised criminal networks worldwide. It causes violence, instability, insecurity, and corruption in countries around the globe where drugs are grown, produced, manufactured, distributed, transported, and consumed. Organised crime syndicates are involved in human trafficking, money laundering, arms trafficking, and corruption, all of which are accompanied by high levels of violence (Ivy, 2019). Meanwhile, the quick process of globalisation has

encouraged greater capital mobility, financial innovations, and new technologies such as digital currencies and mobile payments, all of which have increased the threat posed by illegal financial flows and transnational organised crime. As a result, these organizations constitute a severe danger to the national security and prosperity of the nation's population.

Since the 1990s, drug trafficking has been increased in Manipur. The geographical closeness of Manipur to the notoriously infamous 'Golden Triangle' is a significant advantage for drug trafficking. It generates a substantial amount of revenue. Drugs are often trafficked and supplied to North American and European markets via border nations, generating black money. An unholy alliance of drug cartels/lords, militant groups, and businesses fuels the black economy in this region. This illicit drug money might be used to fund terrorist activities, for personal gain by traffickers, or to buy political influence (Soni and Singh, 2021).

Keeping such state activities in mind, it can be stated that one of the key reasons for the simmering animosity against the Manipur Government might be the eradication of poppy cultivation, which is otherwise a source of cash flood for a large portion of this criminal nexus. According to the estimations of the state administration, one acre of land may yield poppy worth Rs 10-12 lakhs. Such big margins will make the risk worthwhile for poppy cultivators. Many of these areas are also controlled by armed rebel groups, who supposedly guard the harvests and even offer protection for their safe movement in and out of the border (Matharu, 2022). This criminal nexus is also aware of the fact that the population living in border areas has terrible socio-economic life situations (Harrison & Kennedy, 1996). Thus, they influence and manipulate the minds of these common people to engage in such unlawful acts to get quick money. Cultivating opium poppy plants, an easy way to make a lot of money, becomes the lifeline of these people and their sole means of existence (Miltenburg, 2018). Insurgent organizations may also protect these folks from any dangers. They would take advantage of the opportunity offered by

porous borders to carry out these illegal and illicit actions to fund and purchase weaponry and ammunition to sustain their terrorist activities. In this sense, the entire North Eastern Region would become a hub for narcotics and other criminal activities, posing a severe danger to the national security of the country (Oinam, 2021).

In the last few decades, we have seen a new dimension to the drug problems emerge in Manipur: the expansion of poppy farms in Manipur, especially in hill districts bordering Myanmar. Poppy growing is not something the people of the state have done for centuries. Manipur, one of the most significant states in Northeast India, is virtually under the influence of illicit drug merchants, who plays a crucial role in the spread of the substance throughout South Asia. Otherwise, why would the Government of Manipur, led by Chief Minister N. Biren Singh, declare a 'war on drugs' on 3<sup>rd</sup> November 2018?

In addition, given the ongoing armed conflict and China's involvement in Myanmar, New Delhi may confront security and geo-political concerns along this long mountainous porous Indo-Myanmar border. The ongoing conflict in Manipur, which has been unfolding since 3<sup>rd</sup> May 2023, may involve an interplay of internal and external non-state actors. The permeability of the state to both ideas and peoples connected with the neighbouring country, Myanmar, is undeniably felt by observers of contemporary situations in Manipur. In this context, this research paper is a modest attempt to critically analyse the changing geopolitical conditions and their implications in the ongoing violence in the multi-ethnic state of Manipur.

### **Narco-terrorism in Manipur**

The concept of 'narco-terrorism' was first used by then Peruvian President Belaunde Terry to describe terrorist-style attacks against his country's drug enforcement forces (Aasen, 2019). According to the Merriam-Webster dictionary, narco-terrorism is 'terrorism financed by profits from illegal drug trafficking.' Drug traffickers have used tactics similar to political assailants to influence the country's politics by instilling fear and delaying justice. In due course of time, ideology-driven terrorist organizations worldwide turned to the illegal drug trade as a primary source of financing. Another stage of narco-terrorism in the post-Cold War era is represented by 'narco-states.' A narco-state is described as a state (or territory) in which drug traffickers use their economic, political, and paramilitary power to influence the national government's exercise of authority (Hartelius, 2008; Björnehed, 2004).

In the context of Manipur, if we do not address this illicit poppy cultivation promptly, our state will be submerged sooner or later. That is why the government of Manipur has

implemented many policies and programmes like War on Drugs, protection of forests. According to the Narcotics and Border Affairs Department of the Manipur Government, from 2017 to 2023, the state government demolished more than 18,664 acres of poppy farms, which happened predominantly in hill areas (Achom, 2023; Narcotics and Affairs of Border (NAB) Government of Manipur website). When we look at this number from the ratio angle of Manipur's total geographical area (22 327 sq. km), it is beyond imagination.

Though the following numbers are government-estimated destroyed areas, satellite images of several locations in some hill districts clearly demonstrate the rising trend of poppy production in the state. Some regions of Churachandpur, Kangpokpi, Ukhrul, Kamjong, and Chandel districts have been discovered farming poppy in cluster style on thousands of acres in the periphery/far away from the regular working/motorable areas. Surprisingly, whether we like it or not, the Kuki-Chin populated regions of Manipur have the highest number of damaged poppy-growing lands (Biswas, 2023).

The drug mafia may be taking advantage of the shifting drug activities (poppy plantation and drug manufacturing) from the Golden Triangle, particularly the Shan and Chin states of Myanmar, to the Indo-Myanmar border areas. The Kuki militants have been controlling these border areas, as well as adjacent regions of Manipur and Mizoram, might have found the opportunity to raise money from narco-related activities such as poppy cultivation, opium production, and drug trafficking (The Sangai Express, 2023). Moreover, most ethnic-based insurgents/separatists in the region may be actively involved in drug smuggling, small distribution, or exacting 'taxation' from drug convoys and smugglers at a rate of 10 to 20 percent (Singh and Nunes, 2013). Kipgen, a senior IPS officer, wrote that 'certain hill-based non-SoO armed groups namely Kuki Independent Army (KIA)/Kuki Independent Organisation (KIO) and United Kuki National Army (UKNA) came out with press statements expressing not only their open support for poppy cultivation but also threatening to confront anybody or groups that tries to obstruct poppy cultivation' (Kipgen, 2019). 'There are a credible input that some armed groups irrespective of SoO (Suspension of Operation) and non-SoO groups sponsoring poppy plantations to fund their organisational requirements. This way a crude form of narco-terror funding system seems to have crept into the land' he added (Kipgen, 2019).

Many academics, civil society organizations, and state officials believe that the violence in Manipur might be the culmination of a long-drawn conspiracy by primarily non-Indian Kuki peoples and groups, both overground and underground, to thwart the 'War on Drugs' campaign, which

is one of the most widely publicised crackdowns by the Government of Manipur on narcotics and illicit drugs, as well as poppy cultivation in the state. Various Manipur-based civil society organizations have also alleged that arrests for drug trafficking and destruction of poppy cultivation during the 'War on Drugs' campaign significantly blowing the drug lords and peddlers. It might also have a significant detrimental impact on the financing of Kuki militant organisations who rely on 'narco-money' for their anti-national activities. In this context, the Meitei Resurgence Forum (MReF), a civil society group located in Manipur, said that it directly implicated armed Kuki terrorists' funded by drug-money and illegal migrants from Myanmar, Mizoram and Bangladesh (Sadokpam, 2023).

### **Orchestrated through External Factors**

Manipur is geographically adjacent to the infamous Golden Triangle, the tri-junction areas of Myanmar, Laos, and Thailand, which is the second-largest supplier of illegal heroin and opium in the globe. Now Myanmar is the largest opium producer in the world, according to the UN Office on Drugs and Crime (UNODC) (Yong, 2023). Chin and Sagaing states of Myanmar are rapidly increasing poppy cultivation like wildfire. Unfortunately, these areas are dominated by Kuki-Chin people and share a border with Manipur's Kuki-Chin heavily dominated districts (Bhattacharya, 2023).

Due to ethnic links, several of Myanmar's armed organizations have tight contacts with militant groups from over the border in India. It is also common knowledge that numerous ethnic rebels, including many Kuki insurgents, maintain bases in neighbouring Myanmar and operate from there. According to Homen Thangjam, a political scientist, 'from the 1990s, the Junta (Myanmarese Army) changed its policy regarding the ethnic insurgencies in their country, in the process becoming more flexible about narcotics' (Saikia, 2023). He adds, 'since the 2010s, they started allowing it even more emphatically. This had a spillover effect in the hill of Manipur' (Saikia, 2023).

Weaponry intended to incite unrest and violence in Manipur smuggles through Myanmar. Active insurgency organizations in Manipur are also alleged to have obtained a significant cache of weaponry in three cars. These firearms were allegedly received from a criminal market along the Myanmar-China border and carried to Manipur (Bahadur Singh, 2023). On 11 July 2023, Assam Rifles and Mizoram Police also recovered War Like Store Ammonium two boxes (12 pieces each), Gelatin four boxes (200 pieces each), Detonator-636 (Nos), Safety Fuze six bundles, 12 Bore Cartridge-28 rounds in a joint operation in the Champhai district of Mizoram. According to the report, such a massive stockpile of weaponry was on its way to the Zomi Revolutionary Army (ZRA) and then to Manipur (**Bawitlung,**

2023).

Amid the violence in the state of Manipur, on 30 May 2023, Lieutenant General of Indian Army (R) L Nishikant Singh tweeted that '300 terrorists' from Myanmar, including 'lungi-clad ones,' had infiltrated Manipur amid ethnic unrest between Meiteis and Chin-Kuki people. His 'lungi-clad' remark was interpreted as implying the involvement of Myanmar border-based terrorists, who, like civilians, wear the 'lungi' as it is generally called in Myanmar, a country ruled by a military junta (Achom and Choudhury, 2023). These revelations further may corroborate public concern about the entry of both illegal weapons and illegal migrants from Myanmar in Manipur.

In this crucial juncture, a research report titled 'The Chinese Connection: Cross-border Drug Trafficking between Myanmar and China' (2007) by Ko-lin Chin and Sheldon X. Zhang offered extremely critical remarks in Southeast Asia where observations were conducted both within the 'Golden Triangle' and in the surrounding areas. What concerns us is the reference to the 'surrounding regions,' which possibly covers Manipur and the whole of India's north eastern region (Laang, 2022). The report further said, 'since 2000, the US ceased to provide any financial support to Myanmar government or any international organisations working in the country in reducing opium poppy cultivation and heroin production' (Laang, 2022; Chin and Zhang, 2007). China fills the void left by the US withdrawal. China will enjoy the benefits of the current situation and enhance its increasing influence in the Southeast Asian region (Laang, 2022). Numerous armed ethnic groups inhabit primarily the opium and heroin production areas in Myanmar, and China could easily impose influence in these areas. The above research has 'first hand data depicting how Chinese drug traffickers operate in the Golden Triangle and surrounding countries.' It also claimed that 'Law enforcement sources in the region seemed to agree that one can find Chinese nationals in almost all major drug raids. Our contacts in Myanmar claimed that almost all major traffickers and distributors of illicit drugs are Chinese' (Laang, 2022; Chin and Zhang, 2007). Even if one accepts the report with a grain of salt or from a US viewpoint, there is no disputing that the 'Golden Triangle' area now started calling the 'Golden Pentagon' with the induction of Vietnam-Cambodia and Mizoram-Nagaland-Manipur (Sharma, 2023).

### **Illegal Immigrants from Myanmar**

India and Myanmar have a 1,643 kilometres-long land border and sea boundary. Fortunately, or unfortunately, almost all the land boundary regions lie in dense forest areas and remain porous borders. There has been a free regime movement for the population residing in the border areas

within 16 km without visas on both sides (Ray Chaudhury and Gosh, 2021). However, this open regime movement over international boundaries might be increases the migrant insurgency, drug smuggling, refugees, and so on. In this context, the unexplained illegal infiltration of Kuki-Chin peoples from Myanmar into Manipur is a serious national security and diplomatic concern.

Considering the state's serious security and demographic threats in the state, the Governor of Manipur set up a cabinet sub-committee headed by Cabinet Minister Letpao Haokip (a Kuki MLA) in February 2023 to detect unlawful immigrants or refugees in the state. According to a report presented to the Home Commission on 6 June 2023 by IGP Kabib K (Intelligence, Narcotics, and Border Affairs), the verification campaign was conducted in Tengnoupal, Chandel, Churachandpur, Pherzawl, and Kamjong districts in the initial first phase. It finds 2,480 illegal Myanmar immigrants, 1,147 of them in Tengnoupal, where they have created 13 communities. In Chandel, 1175 people were living in ten newly built villages. Six villages in Churachandpur were discovered, with 154 people found. In Kamjong, four people were apprehended in 24 villages, but they are all in jail. One was caught smuggling contraband, and others were arrested under the Foreigners Act. None was reported in Pherzawl (Bhakat, 2023). This official data reveals the ground truth, implying that the surge of illegal immigrants may be one of the causes of conflict in the state.

The same report also said, 'During the identification drive, it was observed that the illegal Myanmar immigrants have established their own villages. It was during this identification exercise that the establishment of such villages was objected to, and they were advised that shelter homes would be built by the government for them. The illegal immigrants have raised strong objections to the proposal, and it is one of the reasons for the violence that broke out recently' (Bhakat, 2023). It also added that 'it may also be noted that the Manipur Government's War on Drugs campaign has badly affected poppy cultivation and narcotics business run by Myanmar in Manipur. Due to this reason, the recent violence in Manipur was fuelled by influential poppy cultivators and drug lords from Myanmar settling in Manipur' (Bhakat, 2023).

Moreover, the ethnic constituencies of several South and Southeast Asian nations have crossed national boundaries. This is especially true for the Kuki-Chin-Mizo ethnic groups that live along India's, Myanmar's, and Bangladesh's borders. Here, illegal immigrants are more difficult to identify since they may easily blend in with their ethnic compatriots on the opposite side of the border. Furthermore, the porous and less border fencing allows them to cross into Indian territory

easily. Although there has been an uptick after Myanmar's military coup in 2021, unlawful migration has occurred before then. The unaccounted migrants will have a detrimental impact on ethnic dynamics in the state of Manipur.

## Conclusion

The inclusion of Manipur on the global illicit drug map has been a serious concern for the nation. The state has evolved from a simple consumer to an opium producer, which has alarmed the state's various ethnic communities. Well-organized criminal groups may constitute a substantial security and political danger to the state's political authority, threatening its monopoly on violence and jeopardizing public safety.

On the contrary, the Government's good faith policies, such as the War on Drugs efforts to eradicate illicit poppy cultivation, detection of illegal migrants, and stopping encroachers on reserved forests, frequently have the unintended consequence of strengthening the belligerents politically by undermining the willingness of the state's population to provide intelligence on the belligerents to the Government of Manipur (Felbab-Brown, 2009).

Illicit drug trafficking represents a severe danger to regional security, contributing to HIV/AIDS, political instability, and the stifling of democratic progress. It is no longer a state concern but rather a transnational one because it extends beyond the state's borders and involves adjacent countries. Such a problem in India's north eastern states, particularly Manipur, cannot be addressed solely through traditional state-centric security approaches because the nature of the conflict is based on non-traditional security threats such as drug trafficking and illegal immigration (Singh and Nunes, 2013). A conflict-free society or state is an ideal utopic concept; however, if illicit poppy farming or unlawful mass immigration are not occurring in the state of Manipur, a society or state with minimal problems might be imagined and aimed for.

## Reference

- Aasen, D. (2019). Constructing Narcoterrorism as Danger: Afghanistan and the Politics of Security and Representation. PhD thesis University of Westminster Social Sciences <https://doi.org/10.34737/qyqvq>
- Achom, D. (2023). The Role of a Plant in Manipur ethnic violence. *India News*. <https://www.ndtv.com/india-news/kuki-chin-poppy-cultivation-the-role-of-a-plant-in-manipur-ethnic-violence-4085961>
- Achom, D. and Choudhury, R. (2023). "Extraordinary Sad Call": Ex Army Chief on Retired Officer's Manipur Tweet. *NDTV*. <https://www.ndtv.com/india-news/extraordinary-sad-call-ex-army-chief-general-vp-malik-on-retired-officer-l-nishikanta-singh-tweet-on-manipur-4127966>



- Bahadur Singh, J. (2023). Arms used for violence in Manipur smuggled via Myanmar, procured by insurgent groups: Sources. *India Today*.<https://www.indiatoday.in/india/story/weapons-used-in-manipur-violence-supplied-via-myanmar-route-intelligence-sources-2398477-2023-06-27>
- Bawitlung, M. (2023). Mizoram: Assam Rifles recovers huge cache of arms allegedly heading to Zomi Revolutionary Army in Manipur. *India TodayNE*.<https://www.indiatodayne.in/mizoram/story/mizoram-assam-rifles-recovers-huge-cache-of-arms-allegedly-heading-to-zomi-revolutionary-army-in-manipur-613574-2023-07-12>
- Bhakat, A. (2023). Over 2,000 Myanmar Refugees found in Manipur in the first phase of detection. Republic World.<https://www.republicworld.com/india-news/law-and-order/over-2000-myanmar-refugees-found-in-manipur-in-the-first-phase-of-detection-articleshow.html>
- Bhattacharya, S. (2023). How the Myanmar crisis threatens to destabilize India's Manipur. *The Diplomat*.<https://thediplomat.com/2023/06/how-the-myanmar-crisis-threatens-to-destabilize-indias-manipur-state/>
- Biswas, S. (2023). Manipur: Fears grow over Indian state on brink of civil war. *BBC News*. <https://www.bbc.com/news/world-asia-india-65679616>
- Björnehed, E. (2004). Narco-Terrorism: The Merger of the War on Drugs and the War on Terror. *Global Crime*, Vol. 6, pp. 305-324. <https://doi.org/10.1080/17440570500273440>
- Chin, K and Zhang, Sh. X. (2007). The Chinese Connection: Cross-border Drug Trafficking between Myanmar and China.
- Felbab-Brown, V. (2009). The political economy of illegal domains in India and China. *The International Lawyer*, Vol. 43, No. 4, pp. 1411-1428.
- Harrison, L. D. and Kennedy, N. (1996). Drug use in the high intensity drug trafficking area of the US Southwest border. *Addiction*, 91(1), pp. 47-61. <https://doi.org/10.1046/j.1360-0443.1996.911478.x>
- Hartelius, J. (2008). Narcoterrorism. *East West Institute and the Swedish Carnegie Institute*.
- Ivy, C. X. (2019). Poach, chuck, freeze and launder: South Africa's criminal justice response to environmental transnational abalone poaching syndicates. <https://core.ac.uk/download/479422298.pdf>
- Laang, Kh. (2022). China, India and Manipur: Emerging illegal drugs economy and national security question. *The Frontier Manipur*. <https://thefrontiermanipur.com/china-india-and-manipur-emerging-illegal-drugs-economy-and-national-security-question/>
- Lunsieh Kipgen, L. (2019). The poppy charms in Manipur hills: Livelihood o narco-terror funding. *The Sangai Express*.<https://www.thesangaiexpress.com/Encyc/2019/10/5/The-poppy-charms-in-Manipur-hills-Livelihood-to-narco-terror-funding.html>
- Matharu, S. (2022). Manipur has a 'hill of poppies' problem. But CM's war on drugs must tackle land issues first. *The Print*.<https://theprint.in/feature/manipur-has-a-hill-of-poppies-problem-but-cms-war-on-drugs-must-tackle-land-issues-first/997500/>
- Miltenburg, J. (2018). Supply chains for illicit products: Case study of the global opiate production networks. *Cogent Business & Management*, Vol. 5. <https://doi.org/10.1080/23311975.2018.1423871>
- Oinam, A. (2021). India must regulate its North East Porous Border to Check Potential Golden Triangle Formation. *Centre for Land Warfare Studies (CLAWS) Focus*.
- Ray Chaudhury, A.B. and Gosh A.K. (2021). Trans-Border Migration: Bridging the Gap between State and Human Security. *ORF Occasional Paper*, No. 311.
- Sadokpam, D.A. (2023). What has Manipur's ethnic violence got to do with Illegal Drugs Economy, India's National Security and Defence Strategy. *The Frontier Manipur*. <https://thefrontiermanipur.com/what-has-manipurs-ethnic-violence-got-to-do-with-illegal-drugs-economy-indias-national-security-and-defence-strategy/>
- Saikia, A. (2023). Why Manipur's civil war is being linked to the narcotic trade. *Scroll.in*.<https://scroll.in/article/1050773/poppy-in-the-hills-why-manipurs-civil-war-is-being-linked-to-narcotics-trade>
- Sharma, V. B. (2023). In Combating Drug Trafficking, Knowing the Enemy is the First Step. *The Wire*. <https://thewire.in/security/in-combating-drug-trafficking-knowing-the-enemy-is-the-first-step>
- Singh, N.K. and Nunes, W. (2013). Drug Trafficking and Narco-terrorism as Security threats: A Study of India's North-east. *India Quarterly*, 69(1), pp. 65-82.
- Soni, M. and Singh, A. (2021). Drug Trafficking: A Major Source Of Money Laundering In India. *Elementary Education Online*, Vol 20 (Issue 4), pp. 2869-2876.
- The Sangai Express. (2023). PAPPAM files petition at SC, details threats of narco-terrorism. <https://www.thesangaiexpress.com/Encyc/2023/5/31/By-Our-Staff-ReporterIMPHAL-May-30-Highlighting-the-grave-issue-of-narco-terrorism-growing-thre.html>
- Yong, N. 2023. Myanmar overtakes Afghanistan as top opium producer. *BBC News*.<https://www.bbc.com/news/world-asia-67688413>

Assistant Professor, Department of Political Science  
Shivaji College, University of Delhi  
E-mail: priyokumartayenjam@gmail.com

# Knowledge Management in Higher Education Institutions in India : A Frame Work for Academic Excellence on Nation Building

□ Dr. J.Vivekavardhan<sup>1</sup> Mrs. Ammaji.Rajitha<sup>2</sup>

## Abstract :

*This paper explores the phenomenon of knowledge management in nation building from the view point of academic excellence in higher education. Knowledge Management helps in nations Economic Growth, Innovation, Entrepreneurship, Research and Development, software and product development, social wellbeing, faster decision making, Good Governance, reforms in education like National Educational Policy (NEP) 2020 presents a road map from primary education to Higher Education etc. NEP 2020 is a game- changer in the nation's education system by reorienting, redesigning, and realigning its processes; it also promotes multidisciplinary approach, experimental learning, creativity and critical thinking, interdisciplinary research, innovation, more outcome relevant and industry centric in higher education. This leads to the transforming India into a knowledge power house.*

*Knowledge management (KM) plays a pivotal role in the success of higher education institutions, particularly in the context of India's aspirations for academic excellence and nation-building. The paper proposes a comprehensive framework for effective KM in Indian higher education institutions, focusing on the creation, sharing, and application of knowledge to foster innovation and contribute to the national development. This article to present a framework that increases knowledge sharing and collaboration in Higher Education Institutions.*

**Key Words:** Higher Education, Academic Excellence, Nation Building, Knowledge Management, Knowledge Management Tools.

## Introduction:

Higher education institutions (HEIs) in India are pivotal in shaping the nation's future through the development of skilled professionals, cutting-edge research, and contributions to societal progress. Effective knowledge management (KM) practices are crucial for these institutions to excel academically and contribute significantly to the nation's development efforts. This article aims to explore the concept

of knowledge management in the context of Indian higher education institutions and proposes a framework for leveraging KM to enhance academic excellence and contribute to nation-building.

HEIs play a critical role in the knowledge-based economy, where knowledge management has emerged as a vital factor driving the collection, analysis, transformation, and application of information and knowledge. Knowledge has become a key driver of national development, making efficient knowledge management essential for organizations. It encompasses a multidisciplinary approach to achieving organizational objectives by optimizing the use of knowledge resources. The primary goal of a Knowledge Management System (KMS) is to facilitate the growth, transfer, and sharing of knowledge within an organization. This process involves creating, storing, disseminating, applying, and reusing organizational knowledge to enable the achievement of its goals and objectives. Effective knowledge management is crucial for fostering innovation and driving progress in a knowledge-driven economy.

In the context of higher education, knowledge management assumes a prominent role in creating a knowledge innovation system. HEIs are the backbone of the nation, and achieving academic excellence in higher education requires a focus on the quality of teaching and learning processes. Enlightened and empowered educators play a pivotal role in leading communities and nations toward academic excellence and a better quality of life. They not only disseminate knowledge but also create and generate new knowledge, contributing to the overall growth and development of society. The quality and academic excellence have become paramount in the global higher education landscape, and the emerging role of knowledge management presents a significant challenge and opportunity for achieving these standards. Effective knowledge management practices can drive quality and excellence in the higher education sector, contributing to the overall academic advancement of the nation.

## Review of Literature:

Alavi and Leidner (2001) provide a comprehensive

review of the conceptual foundations and research issues in knowledge management (KM) and knowledge management systems (KMS). They explore the theoretical underpinnings of KM, including its definitions, components, and organizational implications. The article also discusses various research directions and challenges in the field of KM and KMS, offering valuable insights for understanding the complex nature of knowledge management in organizations. **Bock et al. (2005)** focuses on the behavioral aspects of knowledge sharing in organizations. The authors examine the factors influencing the formation of behavioral intentions related to knowledge sharing, including extrinsic motivators, social-psychological forces, and organizational climate. The study provides insights into the complex interplay of individual, social, and organizational factors that influence knowledge sharing behavior, contributing to a deeper understanding of how organizations can foster a culture of knowledge sharing. **Gupta (2007)** referred that the Knowledge Management in Higher Education: Planning and Management” explores the implications of globalization for knowledge management in higher education. The authors discuss how globalization has influenced the dynamics of knowledge creation, dissemination, and utilization in the context of higher education institutions. The chapter provides insights into the challenges and opportunities posed by globalization for knowledge management in higher education, offering valuable perspectives for institutions seeking to adapt to a globalized knowledge landscape. **Dalkir (2013)** book provides a comprehensive overview of knowledge management theory and practice. The book covers a wide range of topics, including knowledge creation, capture, sharing, and application, as well as the role of technology in knowledge management. It also discusses the challenges and opportunities associated with implementing knowledge management initiatives in organizations, making it a valuable resource for understanding the foundational concepts and principles of knowledge management.

### Objectives of the study:

1. To assess the existing knowledge management practices in Indian higher education institutions.
2. To explore the impact of knowledge management on Academic Excellence.
3. To examine the role of technology in knowledge management processes.
4. To propose a framework for knowledge management in higher educational institutions
5. To assess the contribution of knowledge management to nation building.

### Significance of the study

Knowledge Management has become an indispensable

tool in our everyday life. The emerging role of knowledge management has quality and excellence in the higher education sector is one of the major challenges to achieve academic excellence in higher education and transform India into a knowledge powerhouse.

### Methodology:

The study is based on extensive review of literature available in the print journals, online journals on internet about Knowledge Management and its applications in Higher Education innovation building.

### Limitations of the Study

- Knowledge Management is a driving force for today's global world. But the present paper is confined to the Knowledge Management Tools, Knowledge Management cycle, Academic
- Excellence and its applications in Higher Education in nation building transforming India into a knowledge power house.

### Analysis

Knowledge management in higher education involves the systematic management of knowledge resources, including information, expertise, and experiences, to support teaching, learning, research, and administrative activities. It encompasses various processes such as knowledge creation, acquisition, storage, dissemination, and application within the institution. Effective KM practices enable higher education institutions to harness their intellectual capital and create a conducive environment for innovation and growth. Despite the importance of knowledge management, higher education institutions in India face several challenges in implementing effective KM practices:

**Information Overload:** The proliferation of information sources and data volumes can lead to information overload, making it challenging for institutions to identify and access relevant knowledge.

**Technological Integration:** Many institutions struggle to integrate various technological platforms and tools for seamless knowledge sharing and collaboration.

**Change Management:** Implementing KM initiatives requires a cultural shift towards knowledge sharing and collaboration, which may face resistance from traditional academic practices.

To address these challenges and enhance academic excellence and nation-building efforts, higher education institutions in India can adopt the following framework for knowledge management:

### 1. Knowledge infrastructure

It refers to the underlying framework of systems, processes, and tools that enable an organization to manage

its knowledge effectively. In the context of higher education institutions in India, a robust knowledge infrastructure is essential for supporting teaching, learning, research, and administrative activities. Here's a detailed explanation of knowledge infrastructure:

**Digital repositories:** These are centralized digital storage systems where various types of knowledge assets, such as research papers, academic journals, educational resources, and institutional documents, are stored in a structured and accessible manner. Digital repositories facilitate easy access to information and enable efficient knowledge sharing among faculty, students, and researchers.

**Knowledge databases:** Knowledge databases are structured collections of information that are organized and indexed for easy retrieval. These databases can include academic databases, institutional repositories, and specialized knowledge repositories relevant to specific fields of study. They serve as valuable resources for conducting research, accessing scholarly literature, and staying updated with the latest developments in various disciplines.

**Collaborative platforms:** Collaborative platforms are online environments that enable real-time communication, collaboration, and knowledge sharing among members of the academic community. These platforms can include learning management systems (LMS), virtual classrooms, discussion forums, and social networking platforms tailored to the needs of higher education institutions. Collaborative platforms facilitate collaborative learning, group projects, and academic discussions, fostering a sense of community among students and faculty.

**Data management systems:** Data management systems are designed to handle large volumes of data generated by academic research, administrative processes, and institutional operations. These systems include databases, data warehouses, and data analytics tools that enable the storage, retrieval, analysis, and visualization of data to derive meaningful insights. Data management systems are crucial for supporting evidence-based decision-making and research activities in higher education institutions.

**Information architecture:** Information architecture refers to the organization and structuring of information within the knowledge infrastructure to ensure that it is easily navigable and accessible. This includes designing intuitive interfaces, implementing effective search functionalities, and establishing clear taxonomies and metadata standards for organizing and categorizing information. A well-designed information architecture enhances the usability of knowledge resources and promotes efficient knowledge discovery and retrieval.

**Knowledge Management Policies and Governance:** Establishing clear policies and governance frameworks for knowledge management is essential for ensuring the effective implementation and maintenance of the knowledge infrastructure. This includes defining roles and responsibilities, establishing data governance policies, ensuring compliance with data privacy and security regulations, and promoting a culture of knowledge sharing and collaboration within the institution.

knowledge infrastructure encompasses the technological, organizational, and procedural components that support the effective management and utilization of knowledge assets within higher education institutions. A well-developed knowledge infrastructure enables these institutions to leverage their intellectual capital, promote innovation and research excellence, and contribute to the academic and societal advancement.

## 2. Knowledge creation

This process involves the generation of new knowledge or the transformation of existing knowledge into new forms that are useful for the organization. In the context of higher education institutions, knowledge creation often occurs through research, innovation, and academic endeavours. Here are some key aspects of knowledge creation:

- **Research Innovation:** Faculty members and researchers engage in research activities to discover new knowledge, develop innovative solutions to problems, and contribute to the advancement of their fields. This can include conducting experiments, analyzing data, and publishing research findings in academic journals.
- **Teaching and learning:** Knowledge creation also occurs through the teaching and learning process. As faculty members impart knowledge to students, they may also develop new insights, perspectives, and ideas that contribute to the creation of knowledge.
- **Collaboration and Interdisciplinary work:** Collaborative efforts among faculty members, researchers, and students from different disciplines can lead to the creation of new knowledge that bridges multiple fields and disciplines.
- **Innovation ecosystem:** Creating an environment that fosters creativity, critical thinking, and exploration is essential for promoting knowledge creation. This includes providing resources for research, encouraging intellectual curiosity, and recognizing and rewarding innovative ideas and contributions.
- **knowledge capture:** Once new knowledge is created, it needs to be captured and recorded in a way that makes it accessible and usable for the organization. Here are some key aspects of knowledge capture:
- **Documentation and Codification:** Knowledge is

captured through various means such as research papers, reports, patents, best practices documentation, and institutional knowledge repositories. This documentation helps in preserving knowledge for future reference and use.

- **Knowledge Transfer:** Captured knowledge needs to be transferred from individuals or teams who created it to others who can benefit from it. This can be achieved through training programs, mentorship, knowledge sharing sessions, and the use of knowledge management systems.
- **Knowledge Retention:** Institutions need to ensure that valuable knowledge is retained even when individuals leave the organization. This can be achieved through succession planning, creating institutional memory through documentation, and encouraging a culture of knowledge sharing and collaboration.
- **Continues Improvement:** Knowledge capture should be an ongoing process that evolves with the organization's needs and changes in the external environment. This requires regular review and updating of knowledge repositories, as well as feedback mechanisms to improve the capture process.

knowledge creation and capture are integral parts of knowledge management in higher education institutions. By fostering an environment that promotes creativity, collaboration, and learning, these institutions can effectively create and capture knowledge to drive academic excellence and contribute to nation-building efforts.

### 3. Knowledge sharing and collaboration

Knowledge sharing and collaboration are vital components of effective knowledge management in higher education institutions. These processes facilitate the exchange of valuable information, expertise, and experiences among faculty, students, researchers, and other stakeholders. By fostering a culture of knowledge sharing and collaboration, institutions can leverage their collective knowledge to create new insights, innovate teaching methods, and advance research efforts. This article aims to explore the concepts of knowledge sharing and collaboration in the context of higher education, highlighting their significance and impact on academic development.

#### Knowledge Sharing:

Knowledge sharing is a voluntary process that involves the exchange of knowledge, ideas, and experiences among individuals or groups within an organization. In the context of higher education, knowledge sharing encompasses various activities, including the dissemination of research findings, sharing of best practices in teaching, and the exchange of insights gained from academic experiences. This process is essential for fostering a dynamic learning environment where knowledge flows freely, enriching the intellectual capital of

the institution.

**Collaboration:** Collaboration involves working together towards a common goal or objective. In the context of higher education, collaboration can occur between faculty members conducting research, students working on group projects, or academic departments collaborating on interdisciplinary initiatives. Collaboration can take various forms, including research collaborations where scholars from different disciplines work together on a research project, student collaborations on group assignments or research projects, and institutional collaborations with external partners such as industry or other academic institutions. Collaboration can lead to the pooling of diverse expertise, resources, and perspectives, resulting in innovative solutions to complex problems. It can also enhance the reputation of the institution and contribute to its academic excellence.

#### Enables of Knowledge Sharing and Collaboration:

**Culture:** Building a culture that values and promotes knowledge sharing and collaboration is paramount. This can be achieved through strong leadership support, recognition of collaborative efforts, and the implementation of incentives that encourage the sharing of knowledge and expertise among faculty, students, and staff.

**Technology:** Information and communication technologies (ICT) are instrumental in facilitating knowledge sharing and collaboration. Online collaboration platforms, video conferencing tools, and document sharing systems enable seamless communication and collaboration regardless of geographical boundaries. Embracing these technologies can enhance the efficiency and effectiveness of collaborative efforts within higher education institutions.

**Process:** Establishing formal processes for knowledge sharing and collaboration is essential for institutionalizing these practices. This includes developing clear guidelines for research collaborations, defining protocols for sharing institutional knowledge, and implementing mechanisms for capturing and disseminating best practices. By formalizing these processes, institutions can ensure that knowledge sharing and collaboration become ingrained in their operations and culture.

#### Top of Form

The knowledge sharing and collaboration are integral to the success of higher education institutions. By promoting a culture of openness, leveraging technology effectively, and establishing supportive processes, institutions can harness the collective knowledge and expertise of their academic community to achieve academic excellence and contribute to societal development.

### 4. Technology integration

Technology integration in higher education refers to the strategic use of technology tools, systems, and strategies to enhance various aspects of academic and administrative

processes. In the context of knowledge management, technology plays a crucial role in facilitating the capture, storage, retrieval, and dissemination of knowledge resources. This article provides a detailed overview of technology integration in higher education, focusing on its impact on knowledge management.

### Learning Management Systems (LMS):

One of the key components of technology integration in higher education is the use of Learning Management Systems (LMS). LMS platforms are software applications designed to manage and deliver educational content, track student progress, and facilitate communication between students and instructors. These systems provide a centralized platform for storing and organizing course materials, lecture notes, assignments, and other educational resources. LMS platforms also support collaborative learning environments where students can engage in discussions, group activities, and knowledge sharing.

### Digital Libraries and Repositories:

Another important aspect of technology integration in higher education is the development and utilization of digital libraries and repositories. These digital platforms serve as centralized repositories for storing and accessing a wide range of digital resources, including research papers, journals, e-books, multimedia content, and institutional documents. Digital libraries and repositories provide convenient access to knowledge resources, allowing faculty, students, and researchers to search, retrieve, and share information efficiently.

**Data analytics and visualization tools:** Data analytics and visualization tools are software applications that enable users to analyse and visualize large volumes of data to derive insights and make informed decisions. These tools can be used to analyse research data, student performance metrics, and other institutional data to identify patterns, trends, and correlations. By leveraging data analytics, institutions can gain valuable insights that inform strategic decisions and enhance academic and administrative processes.

**Collaboration platforms and communication tools:** Collaboration platforms and communication tools facilitate real-time communication, collaboration, and knowledge sharing among faculty, students, and researchers. These platforms enable virtual collaboration, allowing geographically dispersed teams to work together on research projects, share ideas, and exchange knowledge. They also support synchronous and asynchronous communication, fostering a culture of collaboration and innovation.

**Information security and data privacy tools:** Information security and data privacy tools are designed to protect sensitive information and ensure compliance with

data protection regulations. These tools are essential for safeguarding intellectual property, research data, and confidential information. By implementing robust security measures, institutions can protect their knowledge assets and ensure the integrity and confidentiality of sensitive information.

The technology integration in higher education institutions is essential for effective knowledge management. By leveraging technology tools and systems, institutions can create a digital ecosystem that supports the creation, storage, sharing, and application of knowledge, ultimately enhancing their academic excellence and contributing to their mission of knowledge dissemination and societal impact.

**5. Capacity Building:** Provide training and development programs to build the capacity of faculty and staff in knowledge management principles and practices.

**6. Performance Measurement:** Establish metrics and key performance indicators (KPIs) to monitor and evaluate the effectiveness of KM initiatives in enhancing academic excellence and contributing to nation-building goals.

Knowledge Management Framework for Academic Excellence:

Knowledge Management Framework for Academic Excellence depends on the Higher Educational Institutions Vision and Mission. Academic Excellence must be interpreted and developed within the context of institutions mission and how the institution prepares students for success within their chosen field. Every Institution has its own vision and mission accordingly they need to work. There is need to attract academically talented and exemplary faculty members. Research is an essential component of the institution to commitment to service, there is a great demand and need of research in higher education institutions to create new knowledge and it is a critical component of academic excellence in the higher education institutions particularly in the universities. Appropriate Operational and regulatory frameworks, strong and inspiring leadership and adequate management capacity significantly influences the ability to prosper Universities. There is a need for continuous training to the faculty members for which Higher Educational Institutions need to establish Learning Resource Centres.



**Fig: Knowledge Management Framework for Academic Excellence** (Source: www.google.com)

## Conclusion

Knowledge management in higher education institutions in India is essential for fostering academic excellence and contributing to a nation-building efforts. By implementing effective knowledge management practices, institutions can create an environment that nurtures innovation, collaboration, and continuous improvement. By adopting this framework, higher education institutions in India can leverage their knowledge assets to drive academic excellence, foster innovation, and contribute meaningfully to the nation's development goals in the 21st century. Through a combination of technological advancements, collaborative initiatives, and a strong commitment to knowledge sharing, these institutions can position themselves as leaders in education, research, and knowledge creation, making a significant impact on the country's future. Transforming India leads to the knowledge power house in the world.

## References:

1. Alavi, M., & Leidner, D. E. (2001). Review: Knowledge management and knowledge management systems: Conceptual foundations and research issues. *MIS Quarterly*, 25(1), 107–136. DOI: 10.2307/3250961]
2. Alvesson, M., & Kärreman, D. (2007). Constructing mystery: Empirical matters in theory development. *Academy of Management Review*, 32(4), 1265–1281. DOI: 10.5465/amr.2007.26586096]
3. Bates, A. W., & Sangrà, A. (2011). *Managing technology in higher education: Strategies for transforming teaching and learning*. John Wiley & Sons. ISBN: 978-0470578409]
4. Bock, G. W., Zmud, R. W., Kim, Y. G., & Lee, J. N. (2005). Behavioral intention formation in knowledge sharing: Examining the roles of extrinsic motivators, social-psychological forces, and organizational climate. *MIS Quarterly*, 29(1), 87–111. DOI: 10.2307/25148660].
5. Choo, C. W. (2006). *The knowing organization: How organizations use information to construct meaning, create knowledge, and make decisions*. Oxford University Press. ISBN: 978-0195176780]
6. Dalkir, K. (2013). *Knowledge management in theory and practice* (3rd ed.). MIT Press. ISBN: 978-0262525381]
7. Duderstadt, J. J., Atkins, D. E., & Van Houweling, D. (2002). *Higher education in the digital age: Technology issues and strategies for American colleges and universities*. Praeger. ISBN: 978-1567506363]
8. Gupta, J. N. D., Sharma, S. K., & McCusker, R. (2007). Globalization and its implications for knowledge management in higher education. In J. N. D. Gupta & S. K. Sharma (Eds.), *Knowledge management in higher education: Planning and management* (pp. 1–16). Concept Publishing Company. ISBN: 978-8180694112]
9. Gupta, S. K. (2018). *Knowledge Management in Higher Education: A Global Perspective*. *International Journal of Educational Management*, 32(6), 1097-1109.
10. Hsu, M. H., Ju, T. L., Yen, C. H., & Chang, C. M. (2007). Knowledge sharing behavior in virtual communities: The relationship between trust, self-efficacy, and outcome expectations. *International Journal of Human-Computer Studies*, 65(2), 153–169. DOI: 10.1016/j.ijhcs.2006.09.003]
11. Karami, M., & Karami, M. (2017). The Role of Knowledge Management in Higher Education Institutions. *International Journal of Information Technology and Electrical Engineering*, 6(3), 41-47
12. Nonaka, I., & Takeuchi, H. (1995). *The knowledge-creating company: How Japanese companies create the dynamics of innovation*. Oxford University Press. ISBN: 978-0195092691]
13. Oblinger, D. G. (Ed.). (2006). *Learning spaces*. Educause. ISBN: 978-1933046003]
14. Siemens, G., & Tittenberger, P. (2009). *Handbook of emerging technologies for learning*. University of Manitoba. DOI: 10.13140/2.1.2964.7360]
15. Obeidat, B. Y., Al-Suradi, M. M., & Tarhini, A. (2016). The Impact of Knowledge Management on Innovation: An Empirical Study on Jordanian Consultancy Firms. *Management Research Review*, 39(10), 1214-1238.
16. Riege, A. (2005). Three-dozen Knowledge-sharing Barriers Managers Must Consider. *Journal of Knowledge Management*, 9(3), 18-35.
17. Spender, J. C. (1996). Making knowledge the basis of a dynamic theory of the firm. *Strategic Management Journal*, 17(S2), 45–62. DOI: 10.1002/smj.4250171106]
18. Wiig, K. M. (1993). *Knowledge Management Foundations: Thinking about Thinking - How People and Organizations Represent, Create, and Use Knowledge*. Schema Press.
19. Wiley, D. A., & Hilton III, J. L. (2018). Defining OER-enabled pedagogy. *The International Review of Research in Open and Distributed Learning*, 19(4), 133–147. DOI: 10.19173/irrodl.v19i4.3601]
20. Yigit, I. H. (2016). The Impact of Knowledge Management Practices on Performance: A Turkish Public Sector Perspective. *International Journal of Information Management*, 36(6), 826-837.
21. Zack, M. H. (1999). *Developing a Knowledge Strategy*. *California Management Review*, 41(3), 125-145.

\* *University Librarian, Central University of Kerala, Kerala, Former HoD, Chairman BoS, Department of Library and Information Science, Osmania University, Hyderabad e-mail: vivekavardhan123@gmail.com*

\*\* *Assistant Librarian, Central Library, Central University of Kerala, Kerala, e-mail: ammaji.rajitha@cutn.ac.in*

# Harmonizing Agricultural Policies with UN Sustainable Development Goals: Through Agroecosystem Approach

□ Arvind Goswami<sup>1</sup>, Rajesh Kumar Jangir<sup>2</sup>, Harmanpreet Singh Kapoor<sup>3</sup>, Vinod Kumar<sup>4</sup>

## Abstract

*The UN Sustainable Development Goals (SDGs) must be included in current agricultural policy to support the transition to more ecologically friendly and cleaner food production. The cost of producing food could go up due to the predicted increase in the frequency and severity of extreme weather events, as well as the loss of biodiversity and deteriorating soil quality. Various of the seventeen SDGs are either directly or indirectly related to food production and security. The agriculture industry must take the lead in reversing the many unfavorable environmental trends pervasive in today's agricultural landscapes if these SDGs are to be achieved. This is crucial in order to maintain resilience and flexibility to climate change in 2030 and beyond. From an environmental standpoint, achieving this aim requires a significant shift in agricultural techniques. This study is based on an agroecosystem approach and current status index. The agroecosystem approach is defined as supporting regenerative agriculture, an integrative approach that counteracts biodiversity loss, strengthens soil health and increases resilience to a changing climate. The results of the current status index show that progress toward the attainment of SDGs is slow. On the basis of the results, A few policies have been put forth to improve the current agricultural system, such as creating an all-encompassing policy that would include every aspect of agriculture.*

**Keywords :** Sustainable agriculture, Sustainable Development Goals, Agroecosystem, Sustainable Food system

## 1. Introduction

The critical juncture faced by the domains of food and agriculture, as outlined in the preceding text, underscores the imperative need for a paradigm shift towards sustainable practices. Noteworthy advancements in agricultural productivity have indeed met the surging demands of a growing global population, but concurrent societal and environmental challenges have marred these achievements (Calicioglu et al., 2019). Challenges such as water scarcity, soil degradation, stress on ecosystems, loss of biodiversity,

dwindling fish stocks and forest cover, and heightened levels of greenhouse gas emissions have become intrinsic to modern agricultural practices, threatening the future fertility of the planet (IPCC). In response to these challenges, sustainable agriculture emerges as a transformative solution, intricately linked with multiple United Nations Sustainable Development Goals (SDGs) (Pawlak & KoBodziejczak, 2020). The concept of sustainable agriculture was formally integrated into sustainable development at the World Food Summit in the framework of the adoption of the Rome Declaration on World Food Security in 1996 (FAO, 1996). It is pivotal in tackling global challenges encompassing food security, poverty, environmental conservation, and economic development.

Later on, with the introduction of SDGs, the interconnectedness becomes evident as key SDGs linked to sustainable agriculture have been explored. Beginning with SDG 1, which addresses poverty, sustainable agriculture emerges as a solution by providing livelihoods to small-scale farmers and fostering inclusive economic growth (UN; Gamage et al., 2023). Transitioning to SDG 2, the goal of zero hunger is closely aligned with sustainable agriculture's focus on ensuring food security through efficient and resilient farming practices, waste reduction, and improved access to nutritious food (UN; Mollier et al., 2017). Moving on to SDG 3, promoting sustainable farming practices not only addresses environmental concerns but also contributes to better health outcomes for both consumers and farmers (UN; Howden-Chapman et al., 2017). SDG 6 emphasizes clean water and sanitation, where sustainable agriculture shines by emphasizing water conservation, efficient use, and responsible water management to reduce pollution from agricultural runoff (UN; Ahmed & Byker, 2016).

Regarding SDG 8, sustainable agriculture significantly impacts decent work and economic growth by being a significant source of employment, particularly in rural areas (UN; Kreinin & Aigner, 2022). SDG 12, which emphasizes responsible consumption and production, aligns with sustainable agriculture's goals of reducing environmental



impact, minimizing waste, and promoting sustainable resource use (UN, Chan et al., 2018). Addressing climate change, SDG 13 highlights sustainable agriculture's role in mitigating climate impacts through practices that sequester carbon and reduce greenhouse gas emissions (UN, McElwee et al., 2020). Additionally, SDG 15 underscores the importance of life on land, and sustainable agriculture contributes by aiming to protect ecosystems, reduce deforestation, and promote biodiversity conservation on agricultural lands (UN). Finally, SDG 17 underscores the collaborative nature of achieving sustainable agriculture, emphasizing the need for partnerships between governments, businesses, NGOs, and communities to address the diverse challenges associated with this vital endeavor effectively (UN). In essence, sustainable agriculture serves as a linchpin, weaving together various SDGs in a concerted effort to create a resilient, inclusive, and environmentally friendly global food system.

The main aim of this study is to critically analyze the SDGs for agriculture with a focus on sustainable practices. It aims to present a comprehensive overview of the significance of sustainable agriculture. The provisions aimed at achieving sustainable development in the agricultural sector were defined as ensuring food security, fostering the sustainable enhancement of both the quantity and quality of food production, harnessing new technologies to ensure food availability, curbing unemployment rates, alleviating poverty through increasing the income levels of the population and promoting the rational use of natural resources and environmental protection (Pawlak & KoBodziejczak, 2020). Sustainable agriculture considers social and economic justice, environmental health, and economic viability. It is sometimes referred to as the “three legs” of the sustainability stool.

## 2. Literature Review

Over the period, various theoretical and empirical studies

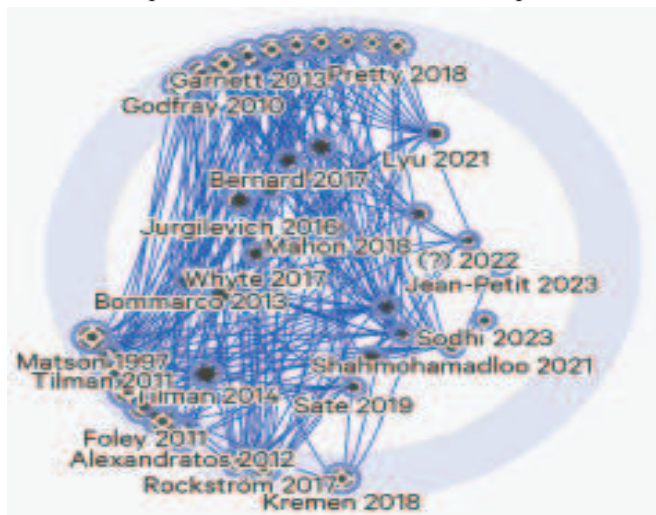


Figure 1: Cloud map of various studies related to sustainable agriculture

have been conducted related to agriculture and sustainable development goals (Cao & Solangi, 2023; Kumar & Pant, 2023; Pandey & Pandey, 2023). In order to achieve the Sustainable Development Goals of the United Nations, which include diminishing biodiversity, ecosystem stability, soil health, and reducing reliance on synthetic inputs, it is imperative to use an agrosystem approach and promote regenerative agriculture (Peterson et al., 1993; Kropff et al., 2001; Moonen & Barberi, 2008; Lescourret et al., 2015; Zabala et al., 2021; Kozar et al., 2023). Other studies are also there, which are shown below in Figure 1.

## 3. Data and methodology

This study has tried to analyze the connection between sustainable agriculture and various SDGs. An agroecosystem approach has been used to analyze this connection. The agroecosystem approach is thought to be able to address some of the problems with traditional farming, like degraded soil, biodiversity loss, and reliance on chemical inputs. This method aims to develop farming systems that are not only productive but also socially and environmentally responsible by placing a strong emphasis on ecological principles. It supports the creation of resilient and adaptable food systems and is consistent with the overarching objectives of sustainable agriculture. This study has also tried to quantify the success in achieving the SDGs with the help of the UN's suggested method. For this, data has been collected from the UN statistics division. A current status index has been constructed to measure the progress.

### Current Status Index

Here, 100 and Icv: indicator values for the year 2000 and the present year, TV: the target value for 2030, with normalized values for the indicator set at 0 and 10 for 2000 and 2030, respectively. When the preferred direction is evident, the normalized value for the current year on a scale of 0 to 10 can be determined.

## 4. Results and Policy Suggestions

The results of the current status index are given below in Tables 1 to 4. Here, the target value for the year 2030 is calculated based on 2015, in which SDGs were introduced. The target for agriculture production and farmers' income was to double from the year of introduction by 2030.

Table 1: Farmers' Income Current Status Index

Year	Value (in \$)	Index
2000 (100)	2698477287000.00	
2015 (Introduction Year) (IY)	3903762872000.00	
2021 (Icv)	4201747674000.00	
2030 (TV) = IY*2	7807525744000.00	== 2.94

Table 2: Rice Production Current Status Index

Year	Value (in tones)	Index
2000 (I00)	598668160	<b>Pcs</b> = 2.18
2015 (IY)	732898370	
2021 (Icv)	787293900	
2030 (TV) = IY*2	1465796740	

Table 3: Wheat Production Current Status Index

Year	Value (in Million metric tons)	Index
2000 (I00)	582	<b>Pcs</b> = 2.24
2015 (IY)	735.9	
2021 (Icv)	781.31	
2030 (TV) = IY*2	1471.8	

Table 4: Cereal production Current Status Index

Year	Value (in tons)	Index
2000 (I00)	2059462900	<b>Pcs</b> = 2.80
2015 (IY)	2836669400	
2021 (Icv)	3070645500	
2030 (TV) = IY*2	5673338800	

The index ranges from 0 to 10, with 0 indicating no progress and 10 signifying the achievement of the SDG. As per Tables 1-4, farmers' income current status index, rice production current status index, wheat production index, and cereal production current status index are 2.94, 2.18, 2.24, and 2.80, respectively. These results show that some progress has been made since 2015, but more is needed. Attaining these SDGs at the current working speed or the efforts seems complicated. Governments worldwide must build partnerships with people, institutions, and farmers to attain these targets. To attain these targets, governments can use the agroecosystem approach, which combines all three aspects such as social and economic justice, environmental health, and economic viability. This approach has been depicted as follows.

### Figure 2: Agroecosystem approach

The agroecosystem concept emphasizes how ecological and economic factors should be combined to achieve sustainable agriculture. Encouraging social justice and inclusivity in farming communities aligns with the agroecosystem idea of facilitating access to productive resources, financing, and services. The agroecological focus on preserving and enhancing soil fertility, biodiversity, and overall ecosystem health to support sustainable agriculture aligns with concurrent initiatives to improve soil health and restore land. Reducing losses, encouraging reuse and recycling, and promoting sustainable consumption align with the agroecosystem approach's focus on limiting resource use and environmental effects.

Similarly, the agroecosystem perspective—which

acknowledges the interdependence between agriculture and natural ecosystems—supports mainstreaming biodiversity protection and safeguarding ecosystem functioning. In order to maintain the longevity of agricultural systems, conserving water resources and controlling shortages are in line with the sustainable water management techniques supported by the agroecosystem approach. Finally, the agroecosystem approach's promotion of adaptive management and the fusion of ancient and contemporary knowledge for sustainable agricultural methods is consistent with the emphasis on bolstering innovative systems. When considered collectively from the perspective of the agroecosystem approach, these programs create a complete plan for building robust and sustainable agricultural systems.

### 5. Conclusion

This study investigates the interrelationship between sustainable agriculture and various SDGs and the progress of various indicators declared under SDGs. To check the progress of various indicators, the current status index has been used. As per the results, little progress has been made, but we still need to work hard to achieve the targets set under SDGs by 2030. The agroecosystem approach has also been used to show the interdependence of various aspects to attain sustainable agriculture. To achieve these targets, all countries' governments, people, and institutions need to come together and work hard. By looking at the results, it can be said that it is already late, but the damage can still be controlled by putting in much more effort.

### References:

1. Ahmed, S., & Byker Shanks, C. (2020). Supporting sustainable development goals through sustainable diets. *Good health and well-being*, 688-699.
2. Calicioglu, O., Flammini, A., Bracco, S., Bellù, L., & Sims, R. (2019). The future challenges of food and agriculture: An integrated analysis of trends and solutions. *Sustainability*, 11(1), 222.
3. Cao, J., & Solangi, Y. A. (2023). Analyzing and Prioritizing the Barriers and Solutions of Sustainable Agriculture for Promoting Sustainable Development Goals in China. *Sustainability*, 15(10), 8317.
4. Chan, S., Weitz, N., Persson, Å., & Trimmer, C. (2018). SDG 12: responsible consumption and production. *A Review of Research Needs. Technical annex to the Formas report Forskning för Agenda, 2030*.
5. FAO. 1996. World Food Summit. <https://www.fao.org/3/w3548e/w3548e00.htm>
6. Gamage, A., Gangahagedara, R., Gamage, J., Jayasinghe, N., Kodikara, N., Suraweera, P., & Merah,

- O. (2023). Role of organic farming for achieving sustainability in agriculture. *Farming System*, 1(1), 100005.
7. Howden-Chapman, P., Siri, J., Chisholm, E., Chapman, R., Doll, C. N., & Capon, A. (2017). SDG 3: Ensure healthy lives and promote wellbeing for all at all ages. *A guide to SDG interactions: from science to implementation*. Paris, France: International Council for Science, 81-126.
  8. IPCC. Chapter 4/ : Land Degradation — Special report on climate change and land. (n.d.). Special Report on Climate Change and Land. <https://www.ipcc.ch/srccl/chapter/chapter-4/>
  9. Kozar, R., Djalante, R., Leimona, B., Subramanian, S. M., & Saito, O. (2023). The politics of adaptiveness in agroecosystems and its role in transformations to sustainable food systems. *Earth System Governance*, 15, 100164.
  10. Kreinin, H., & Aigner, E. (2022). From “Decent work and economic growth” to “Sustainable work and economic degrowth”: a new framework for SDG 8. *Empirica*, 49(2), 281-311.
  11. Kropff, M. J., Bouma, J., & Jones, J. W. (2001). Systems approaches for the design of sustainable agroecosystems. *Agricultural systems*, 70(2-3), 369-393.
  12. Kumar, A., & Pant, S. (2023). Analytical hierarchy process for sustainable agriculture: An overview. *MethodsX*, 10, 101954.
  13. Lescourret, F., Magda, D., Richard, G., Adam-Blondon, A. F., Bardy, M., Baudry, J., ... & Soussana, J. F. (2015). A social–ecological approach to managing multiple agroecosystem services. *Current Opinion in Environmental Sustainability*, 14, 68-75.
  14. McElwee, P., Calvin, K., Campbell, D., Cherubini, F., Grassi, G., Korotkov, V., & Smith, P. (2020). The impact of interventions in the global land and agri food sectors on Nature’s Contributions to People and the UN Sustainable Development Goals. *Global Change Biology*, 26(9), 4691-4721.
  15. Mollier, L., Seyler, F., Chotte, J. L., & Ringler, C. (2017). End hunger, achieve food security and improved nutrition and promote sustainable agriculture: SDG 2. *A Guide to SDG Interactions: From Science to Implementation*; ICSU: Paris, France.
  16. Moonen, A. C., & Bàrberi, P. (2008). Functional biodiversity: An agroecosystem approach. *Agriculture, ecosystems & environment*, 127(1-2), 7-21.
  17. Pandey, P. C., & Pandey, M. (2023). Highlighting the role of agriculture and geospatial technology in food security and sustainable development goals. *Sustainable Development*, 31(5), 3175-3195.
  18. Pawlak, K., & KoBodziejczak, M. (2020). The role of agriculture in ensuring food security in developing countries: Considerations in the context of the problem of sustainable food production. *Sustainability*, 12(13), 5488.
  19. Peterson, G. A., Westfall, D. G., & Cole, C. V. (1993). Agroecosystem approach to soil and crop management research. *Soil Science Society of America Journal*, 57(5), 1354-1360.
  20. UN. Department of Economic and Social affairs. <https://sdgs.un.org/goals>
  21. United Nations Statistics Division. SDG Indicators. <https://unstats.un.org/sdgs/>
  22. Zabala, J. A., Martínez-Paz, J. M., & Alcon, F. (2021). A comprehensive approach for agroecosystem services and disservices valuation. *Science of the Total Environment*, 768, 144859.

1. Department of Economic Studies, Central University of Punjab, Ghudda (Bathinda), 151401 India; [arvindgoswamisdlp@gmail.com](mailto:arvindgoswamisdlp@gmail.com)
2. Center for Economic Studies and Planning, School of Social Science, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India; [rkjangir@mail.jnu.ac.in](mailto:rkjangir@mail.jnu.ac.in) (R.K.J.)
3. Department of Mathematics and Statistics, Central University of Punjab, Ghudda (Bathinda), 151401 India; [harmanpreet.singh@cup.edu.in](mailto:harmanpreet.singh@cup.edu.in)
4. Department of Commerce, Sri Venkateswara college, University of Delhi, [drvinod@svc.ac.in](mailto:drvinod@svc.ac.in)

# Development Led by Women: An Accelerating Impact

## Unleashing the Potential for a More Just and Prosperous Future

□ Dr Jayshri Bansal<sup>1</sup>, Prof. (Dr.) Pratosh Bansal<sup>2</sup>, Sushma Khatri<sup>3</sup>

### Abstract:

*Women are essential to society; without their advancement, society as a whole would not advance. It has been shown that societies where women see steady advancement also tend to succeed. Societies are able to guarantee their own growth by empowering women. Actions and efforts that are developed and spearheaded by women are more likely to address challenges of gender equity. The G20 is an endeavor that both developed and developing countries have taken on to alter the globe overall, and this year's president has placed a strong emphasis on women's empowerment. By putting women-led development on the agenda, India has advanced women's empowerment. Our aim is to investigate the means by which women-led development might be realized, with a particular focus on the obstacles that women encounter, the government's initiatives, and the G20's participation.*

**Keywords:** *women-led development, G20, government policy, financial inclusion, initiatives, challenges.*

### 1. Introduction

“From financial inclusion to social security, quality healthcare to housing, education to entrepreneurship, many efforts have been made to put our Nari Shakti at the forefront of India's development journey. These efforts will continue with even greater vigour in the coming times.” [1]

- Prime Minister Narendra Modi

Women-led development is not just about empowering women; it's about recognizing and capitalizing on the immense potential that women hold for driving positive change across communities and economies. The advantages of allowing women to take on leadership roles and actively engage in decision-making processes include manifold, improving the lives of those in their immediate vicinity as well as the individual. The multiplier effect in women-led development will be discussed in this essay, along with the different ways that investing in women may have a major positive impact on society as a whole.

### 2. Investing in the Future

Focusing on future investment is one of the most potent features of women-led development. Women are inclined to make more investments in their families and communities when they have access to economic opportunities, healthcare, and education.[2, 3] This means in translation:

**Healthy kids:** Better nutrition, immunizations, and higher educational attainment are all associated with children raised by educated women, according to studies.

**Better education:** Better education: Women who value education for the sake of their kids are more likely to give preference to it for themselves, which begins an ongoing process of lifelong learning.

**Higher economic output:** Enhanced economic productivity: Women who possess education and empowerment are inclined to engage in the formal sector, so augmenting the pace of economic expansion and advancement.

### 3. Breaking the Cycle of Poverty

Women are frequently the backbone of informal economies and subsistence farming, but women also frequently experience prejudice, lack access to resources, and lack decision-making authority. There are various ways in which breaking the cycle of poverty can be facilitated by providing women with resources, skills, and a role in decision-making[4 5 6]:

**A rise in the household income:** Women may contribute to their families' financial well-being, lowering poverty and raising standards of life, when they have access to opportunities that generate revenue.

**Enhanced food security:** The production of food and household food security are greatly influenced by women farmers. Giving them the tools and training they need can boost agricultural output and improve the nourishment that their families and communities receive.

**Increased shock resilience:** Because women are typically more resourceful and adaptive than men, women-led households are frequently better suited to handle natural

disasters and economic shocks.

#### 4. Fostering Innovation and Entrepreneurship

Women are inherently creative and entrepreneurial because they provide distinctive viewpoints and methods to problem-solving. Economic development and growth can be significantly impacted by supporting women-owned enterprises [7, 8, 9]:

**New goods and services:** Women entrepreneurs are frequently motivated to find solutions to issues that they encounter personally or in their communities, which results in the creation of creative goods and services that fill gaps in the market.

**Employment creation:** Women-owned companies are a significant employer, especially in emerging nations. By helping these companies, you can lower unemployment and generate new job possibilities.

**Enhanced economic diversity:** The economy can be made more resilient to shocks and more diversified by cultivating a robust network of women-led companies.

#### 5. Building Peace and Resilience

In efforts to resolve conflicts and promote peace, women are frequently at the forefront [6]. Their involvement in the process of making decisions can help with:

**Decreased conflict :** Research indicates that communities with higher levels of gender parity are less prone to encounter disputes. Women's participation in peace talks and decision-making can contribute to the prevention of violence and the development of more peaceful society.

**Greater social cohesiveness :** Greater social cohesiveness can be achieved through giving women a voice and involving them in decision-making, since this can foster mutual respect and understanding between various social groupings.

**Increased resilience of communities :** Following a conflict or natural disaster, women are essential to the reconstruction of communities. Rebuilding communities in a sustainable and inclusive manner can be ensured by involving them in the process.

#### 6. Protecting the Environment

Women are generally at the forefront of environmental conservation efforts because of their profound connection to the natural world. It is imperative that we support their leadership in this regard in order to preserve our world for future generations:

**Sustainable resource management:** Women farmers are frequently more likely to use environmentally friendly, sustainable farming methods. By aiding them, you can lessen the effects of climate change and save natural resources [10–11].

**Conservation of biodiversity:** Women are essential to the cause, especially in indigenous cultures. Ecosystems and the animals that depend on them can be preserved by promoting their traditional knowledge and ways of doing things.

**Climate change adaptation:** Women are often at the forefront of adapting to the impacts of climate change. Supporting their efforts can help to build communities that are more resilient to extreme weather events and other climate-related challenges [12].

#### 7. Conclusion

The multiplier effect of women-led development is not just a theory; it is a reality that is being witnessed in communities around the world. Although women-led growth is a lengthy process, this does not mean that the work or the outcome is not worthwhile. Since an educated and powerful woman will guarantee education, empowerment, and equitable opportunity for future generations, the benefits of women-led development are indisputable. As a result, it is crucial to make sure that the government's funding for women's education is put to good use for the good of the nation. Finding means for educated and talented women who are not in the workforce to contribute their skills to the GDP of the nation is also crucial. Some suggestions that we can make in this regard are listed below:

- As the President of the G20, India ought to concentrate on promoting female entrepreneurship, as it is crucial to enable women to generate employment prospects rather than only pursue them. India's economy and society might be completely transformed by women entrepreneurs through increased investment in health and education, job creation, and innovation.
- The G20 ought to prioritize promoting women's digital tool literacy. The largest obstacle to their independence is their incapacity to conduct trades simply. The state of digital literacy can be improved by initiatives on skilling and digital literacy, including training seminars and self-help groups.
- Gathering more data that is more gender-specific than overall population data. Better policy measures that are solely focused on closing the gender gap in a variety of industries will be made possible by this.
- Subdued gender participation is often a result of socio-economic issues, which can be addressed by promoting behavioural change. Encouraging more women to take up leadership positions can bring about positive change. It's vital to ensure equal representation in almost all fields, from company boards to parliament and higher education to public institutions, through special measures and quotas.

## References -

- [1]. Prime Minister Narendra Modi writes: India's agenda during its G20 Presidency will be inclusive, ambitious, action-oriented, and decisive, <https://indianexpress.com/> (Accessed June 2023)
- [2]. Shift From Women's Development To Women-Led Development In India, <https://www.smsfoundation.org/> . (Accessed June 2023)
- [3]. W20 (Women 20) for India's G20 Presidency, Aurangabad to host W20 Inception Meeting on February 27th -28th, 2023, <https://pib.gov.in/> (Accessed, June 2023).
- [4]. <https://www.hindustantimes.com/opinion/g20-will-push-for-women-led-growth>
- [5]. W20 (Women 20) for India's G20 Presidency, Aurangabad to host W20 Inception Meeting on February 27th -28th, 2023, <https://pib.gov.in/> (Accessed, June 2023).
- [6]. Issues related to, women workforce challenge, faced by women labour in India. <https://www.insightsonindia.com> (accessed June 2023)
- [7]. Decoding Government Support to Women Entrepreneurs in India The Anatomy of Entrepreneurship Support Schemes, 2022. (Accessed June 2023.)
- [8]. EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH EDUCATION, SKILLING & MICRO-FINANCING, [www.niti.gov.in/](http://www.niti.gov.in/)(Accessed June 2023)
- [9]. EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH EDUCATION, SKILLING & MICRO-FINANCING, [www.niti.gov.in/](http://www.niti.gov.in/), (Accessed June 2023)
- [10]. The Design of Digital Financial Infrastructure: Lessons from India," Bank for International Settlements, December 2019.
- [11]. "The Power of Jan Dhan: Making Finance Work for Women in India," Women's World Banking, August 2021.
- [12]. EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH EDUCATION, SKILLING & MICRO-FINANCING, [www.niti.gov.in/](http://www.niti.gov.in/), (Accessed June 2023)
- [13]. Financial Inclusion of Women: Current Evidence from India, <https://www.orfonline.org/>, Accessed June 2023)
- [14]. MSME Annual Report 2011-12, [www.msme.gov.in](http://www.msme.gov.in) (Accessed June 2023)
- <sup>1</sup>Associate Professor, Malaviya Mission Teacher Training Center, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, Khandwa Road, Indore, MP, INDIA 452017  
[dr.jayshribansal@gmail.com](mailto:dr.jayshribansal@gmail.com)
- <sup>2</sup>Professor, IT, Institute of Engineering & Technology, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Khandwa Road, Indore, MP, INDIA 452017  
[pratosh@hotmail.com](mailto:pratosh@hotmail.com)
- <sup>3</sup> Research scholar, Institute of Engineering & Technology, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Khandwa Road, Indore, MP, INDIA 452017
- <sup>3</sup>Senior Assistant Professor, CSE, Acropolis Institute of Technology & Research, Bypass Rd, Behind Malwa County, Manglaya Sadak, Indore, MP, INDIA 453771  
[skhatri10@gmail.com](mailto:skhatri10@gmail.com)

## Part-2/ भाग-2

Self Reliance - 'Ancient Knowledge  
System to National Education Policy'



आत्मनिर्भरता -  
'प्राचीन ज्ञान पद्धति से राष्ट्रीय शिक्षा नीति'

आलेख : 17 से 48 तक

## आत्मनिर्भर भारत की दिशा में गाँव के बढ़ते कदम...

□ डॉ. राजेश कुमार शर्मा

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 में हमारी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक अमृतकाल के दौरान भारत को एक 'विकसित राष्ट्र' बनाने का आह्वान किया है। विकसित भारत बनाने का यह महान लक्ष्य गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने की अपेक्षा करता है। 'आत्मनिर्भर' भारत के निर्माण में ग्राम पंचायतों के माध्यम से आत्मनिर्भर गाँवों की महती भूमिका हो सकती है। अतः आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में ग्राम पंचायतों की भूमिका को पुनर्खाँकित किये जाने की आवश्यकता है। गाँवों में बिजली, पानी और कनेक्टिविटी जैसे बुनियादी ढाँचे तक पहुँच संबंधी हाल की प्रगति से 'आत्मनिर्भर गाँव' की परिकल्पना के भी साकार रूप लेने की आशा बलवती होने लगी है। दूरसंचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति ने ग्रामीण समुदायों को दूरस्थ कार्य के लिए कम लागत पर जोड़ा है। आज इंटरनेट और एआई के इस युग में रोजगार के अवसरों के लिए प्रवास जरूरी नहीं रह गया। इन सभी प्रयासों के बीच आत्मनिर्भर भारत के लिए सम्पूर्ण भारत की समृद्धि तभी संभव है जब गाँव स्वयं इस आत्मनिर्भरता के आंदोलन का नेतृत्व करें। आत्मनिर्भर गाँव के निर्माण से आत्मनिर्भर राष्ट्र की स्थापना का मार्ग सुगम एवं प्रशस्त बनाया जा सकता है। गाँवों का सशक्तीकरण ही वस्तुतः राष्ट्र का सशक्तीकरण है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मंत्र 'सबका साथ सबका विकास' को आत्मसात करते हुए वर्ष 2030 तक भारत 17 सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पहले से ही प्रतिबद्ध है। हम इस दिशा में सामूहिक प्रयत्नों के साथ भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से अग्रसर करने में गाँव की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।<sup>1</sup>

डिजिटलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी ने 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा को नया स्वरूप दिया है और अब पंचायतें स्वयं को मुख्यधारा के निर्णय लेने वाले चैनलों के साथ एकीकृत करने में भी पीछे नहीं हैं। गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने का एक बड़ा लक्ष्य किसानों और गाँवों को तकनीकी रूप से सम्पन्न बनाने में भी निहित है। देश की प्रयोगशालाओं में किए जा रहे अनुसंधानों को गाँवों और खेतों तक पहुँचाया जा रहा है। भारत में 'लैब टू लैंड' के प्रयासों से किसानों

को तकनीकी रूप से समृद्ध बनाने के साथ-साथ प्रयोगशालाओं में किए जा रहे अनुसंधानों और संसाधनों को सीधे गाँवों तक उनकी आत्मनिर्भरता के उद्देश्य से पहुँचाया जा रहा है।<sup>2</sup>

प्रौद्योगिकी उन्नयन और समावेशी विकास गाँवों की आत्मनिर्भरता के केंद्र बिंदु बनते जा रहे हैं। देश की प्रयोगशालाओं में विकसित प्रौद्योगिकियाँ आत्मनिर्भर गाँवों के लिए तकनीकी सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज प्रौद्योगिकी को समाज और गाँव केंद्रित बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी के सामंजस्य और खेतों तक पहुँच से बेहतर कृषि उत्पादकता, सामाजिक-आर्थिक समानता और सतत विकास को सुनिश्चित किया जा रहा है। ग्रामीण आत्मनिर्भरता, तकनीकी समझ और कृषि प्रौद्योगिकी से लेकर कौशल विकास की परिभाषा वैज्ञानिक के साथ देश के गाँवों की आत्मनिर्भरता की दिशा में सृजित हो रही है। आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 के अनुसार भारत की 65 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और 47 प्रतिशत आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। भारत में करीब साठे छह लाख गाँव हैं, छह हजार से अधिक ब्लॉक हैं, और पंचायती राज प्रणाली द्वारा शासित है। इसीलिए ग्राम पंचायतों का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, कहा भी जाता है कि 'भारत की आत्मा' या 'भारत के अन्नदाता' गाँवों में बसते हैं। गाँधीजी के शब्दों में 'भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है।' गांधीजी स्वतंत्र भारत के विकास में गाँव के महत्त्व पर जोर देते थे और गाँवों के लिए पूरक उद्योग अथवा कुटीर उद्योग के विचार का समर्थन करते थे। गाँधीवादी दृष्टिकोण भी आत्मनिर्भर समुदायों और मनुष्य तथा प्रकृति के बीच संतुलन पर केंद्रित है। 'आत्मनिर्भर गाँव की अवधारणा' एक आर्थिक इकाई के रूप में समकालीन पर्यावरणीय संकट का भी निर्विवाद समाधान है।<sup>3</sup>

प्रधानमंत्री द्वारा 12 मई 2020 को आत्मनिर्भर अभियान की शुरुआत की गई। सात क्षेत्रों के विकास को इसमें प्रमुखता प्रदान की गई जिसमें कृषि क्षेत्र के लिए आपूर्ति शृंखला सुधार को गाँवों की आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया। इसके अतिरिक्त आत्मनिर्भर भारत योजना



के अन्तर्गत अभियान को चालाने में भारत सरकार का मुख्य बल सामाजिक एवं आर्थिक बहुआयामी क्षेत्रों से संबंधित है। जिसमें गली नुक्कड़ के दुकानदार, रेहड़ी, पटरी लगाने वाले स्थानीय व्यापारी या मझले और छोटे दुकानदार जो करोड़ों भारतीयों की आजीविका का प्रमुख साधन है। भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर केंद्रित आत्मनिर्भर भारत का यह पैकेज एमएसएमई उद्योगों, मजदूरों, मध्य वर्ग सहित विभिन्न वर्गों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। भारत गाँवों का देश जहाँ मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आपसी सामंजस्य अधिक प्रभावी रूप से लागू है। बात बस इतनी सी है कि इस प्रक्रिया में और अधिक सक्रियता तभी संभव है जब गाँव से तहसील, तहसील से जिला और फिर राज्य एवं देश को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।<sup>4</sup>

पं. दीनदयाल उपाध्याय भारत की अर्थनीति में आत्मनिर्भरता का जिक्र करते हुए और कहते हैं कि “हमारा आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है यदि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति विदेशी सहायता पर निर्भर रही, तो वह अवश्य ही हमारे ऊपर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बंधनकारक होगी।” भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावी एवं सक्रिय बनाये रखने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा ‘वोकल फोर लोकल’ का नारा दिया गया जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को देशवासियों के हितों की पूर्ति के साथ-साथ वैश्विक बाजार की आपूर्ति प्रतिस्पर्द्धा के साथ जोड़ना है। यह बात गौरतलब है कि जब तक स्थानीय व्यवस्था को सुदृढ़ नहीं किया जा सकेगा तब तक देश के विकास को सही अर्थों में प्राप्त करना संभव नहीं हो सकेगा।<sup>5</sup>

आत्मनिर्भरता अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के संबंध को दर्शाती है। पूरी दुनिया में निर्यात के बजाय आयात को प्रधानता दी जाती है और जो देश दूसरों को वस्तु और संसाधनों का निर्यात करते हैं सही मायने में वे अपनी शर्तों पर आत्मनिर्भर हैं। आत्मनिर्भरता की अवधारणा प्राचीन भारतीय सभ्यता संस्कृति का अंग रही है। प्राचीनकाल से लेकर राष्ट्रीय आंदोलन तक और आजादी से वर्तमान तक जिस क्षेत्र में भारत द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त की गई उन क्षेत्रों में हमने अधिक विकास किया। देश में अधिक जनशक्ति होने के उपरांत भी हमें दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है। इसलिए स्वदेशी इनोवेशन, उत्पादों और स्थानीय विनिर्माण पर अधिक मजबूती से निर्भर रहने का समय तथा इनके विकास का समय आत्मनिर्भरता से पूरा किया जा सकता है। देश की माँगों को पूरा करने के लिए वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ावा देना आवश्यक हो गया है और इस संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत अभियान शुरू किया गया।<sup>6</sup>

आत्मनिर्भर भारत की शुरूआत आत्मनिर्भर गाँव से ही सम्भव

है। इस सन्दर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों में लघु और कुटीर उद्योग धन्धों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर प्रतिभा और कौशल में वृद्धि करनी होगी तथा प्रगति के मार्ग का अनुसरण करना होगा। यदि एक स्तर पर गाँव की उन्नति और आत्मनिर्भरता को प्राप्त करना है तो गाँव के अन्तर्गत सुविधाओं का विस्तार आवश्यक रूप से करना होगा। आम बोल चाल की भाषा में कहे तो स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं का स्थानीय स्तर पर ही प्रयोग करना होगा। प्रधानमंत्री द्वारा आत्मनिर्भरता के लिए जो मंत्र दिया गया है लोकल फॉर वोकल से ग्लोबल तक को हमें आत्मसात करते हुए व्यवहार में लागू करना होगा। आत्मनिर्भरता की श्रेणी में खेती, मत्स्य पालन, आँगनवाड़ी में निर्मित स्थानीय सामग्री इत्यादि अनेक प्रकार के कार्य हैं जो कि हमें आत्मनिर्भरता प्रदान करने में सहायक होते हैं। इस प्रकार से हम अपने परिवार से जोड़कर देखें तो इस प्रकार सम्पूर्ण राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में हम अपना योगदान दे सकते हैं। स्थानीय वस्तुओं का निर्माण करने में हम सुगमता से प्राप्त हो जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे मालों का प्रयोग करके अपने निकटवर्ती हाटों, बाजारों व मेलों में इसे बेच सकते हैं। इस प्रकार हम स्वयं के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत की राह में अपना योगदान दे सकते हैं और हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण के सपने को साकार कर देश को मजबूत एवं समृद्ध बनाने में सहयोग कर सकते हैं।<sup>7</sup>

आज 21वीं सदी के युग में भारी मशीनीकरण, औद्योगिक प्रगति, सूचना एवं तकनीकी की अभूतपूर्व उपलब्धियों ने विकास के पैमानों को बदल दिया है, अब जो तीव्र एवं शुद्ध निष्पादन करेगा वहीं इस दौड़ में अपने स्थान को बनाए रख पाएगा, विकास के इस नवीन प्रतिमान में हमारे गाँव कहीं पीछे न छूट जाए यह विचार उठना लाजिमी है, क्योंकि गाँव एवं गाँव वालों को अपनी ही दुनिया में मस्त रहने वाला समझा जाता है।

विकास मॉडल में एक चर्चा गाँव बनाम शहरों की भी चला करती है। दूसरे शब्दों में अगर मैं अपनी बात कहूँ तो शहर वास्तव में प्रकृति से परजीवी होते हैं जिनके लिए गाँव कच्चे माल के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। इतिहास साक्षी रहा है कभी भी गाँव का पूर्ण विनाश नहीं हुआ है जबकि शहरों में यह प्रक्रिया प्रायः होती रही है। गाँव की आत्मनिर्भरता के संबंध में गांधीजी के कुछ विचार आज के समय में भी अनुकरणीय हैं। ग्राम गणराज्य की कल्पना संसाधनों के संदर्भ में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत, ग्राम न्यायालय, कृषि पर आधारित लघु उद्योग का विचार, मानवीय जीवन के विविध नैतिकता संबंधी जटिल मुद्दा पर उनके विचार, जो आज के उपभोक्तावादी समाज के गाँव के लिए बेहद प्रासंगिक हैं, इसका अंदाजा हम इसी बात से लगा

सकते हैं कि बापू कितने दूरदर्शी थे वह हमेशा कहा करते थे कि भारत को यदि विकसित बनाना है तो गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। गणराज्य की संकल्पना प्रस्तुत की। गाँव के लोगों के लिए गाँव के लोगों द्वारा शासन की परिकल्पना हेतु 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय शासन की संस्थाओं को मजबूती प्रदान की गई है।<sup>8</sup> लेकिन हमें यह समझना होगा कि गाँधी जिस विकास की बात करते थे, वह विकास वास्तव में व्यक्ति केंद्रित न होकर समाज पर आधारित था जिसमें कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, छोटी प्रसंस्करण इकाईयों, की उन्नति पर बल दिया गया। भारत में कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ है इसलिए अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए कृषि को वैज्ञानिक सोच के साथ विकसित करने पर बल दिया जाना चाहिए तभी हम सच्चे अर्थों में गाँवों को आत्मनिर्भर बना पायेंगे।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भरता की परिभाषा में बदलाव आया है। आत्मनिर्भरता, आत्मकेंद्रिता से अलग है। भारत 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना में विश्वास करता है क्योंकि भारत दुनिया का एक ही हिस्सा है। अतः भारत प्रगति करता है तो ऐसा करके वह दुनिया की प्रगति में भी योगदान देता है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार या संरक्षणवाद को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जाएगी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमें उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का अधिक मात्रा में उत्पादन करना होगा ताकि हम देश की आवश्यकता को पूर्ण कर सकें। साथ ही साथ, वैश्विक बाजार में भी उत्पादों का गुणवत्ता स्तर बनाये रखते हुए हमारी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकें।

तिलहन के उत्पादन से तेल के रिकवरी अनुपात को बढ़ाने के मामले में और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ लेने की है। सरसों, सूरजमुखी, मूंगफली आदि में तेल उत्पादन को कुछ हद तक बढ़ाने की क्षमता है, जबकि पाम तेल में संभावनाएँ अधिक है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के पाँच प्रमुख स्तंभ हैं अर्थव्यवस्था में वृद्धि, अवसरचर्चात्मक पहचान, प्रौद्योगिकी, गतिशील जनसंख्या एवं माँग एवं आपूर्ति शृंखला आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कृषि उत्पादों को ब्रांड बनाकर स्थानीय स्तर से अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक प्रभावी बनाना होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि आत्मनिर्भरता के लिए स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना अति-अवश्यक है। इस संबंध में सरकार के द्वारा क्लस्टर योजना को असंगठित खाद्य प्रसंस्करण इकाई में भी लागू किया जा रहा है। बजट 2023-24 के अन्तर्गत सरकार ने इसके लिए 10 हजार करोड़ का प्रवधान किया है जिससे 2 लाख प्रसंस्करण इकाईयों को फायदा पहुँचाया गया है। देश में अलग-अलग राज्यों में

अलग-अलग कृषि उत्पाद लोकप्रिय है। उत्तर प्रदेश में आम, जम्मू कश्मीर की केसर, आन्ध्रप्रदेश की मिर्च, तमिलनाडु की हल्दी को क्लस्टर योजना के तहत प्रभावी बनाया जा रहा है। भारत में कृषि अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत 2019-20 में कृषि निर्यात को 36 बिलियन डॉलर तक पहुँचाया गया है। प्रधानमंत्री का विजन है कि किसानों की आय में दुगुनी से अधिक वृद्धि यथाशीघ्र की जाये तथा निर्यात क्षमता को बढ़ाने के लिए कृषि निर्यात नीति को अधिक गतिशील बनया जा रहा है।

आत्मनिर्भर अभियान के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों के सही क्रियान्वयन से भारत स्वावलंबी होकर सदियों पुरानी अपनी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को साकार करेगा जो इस अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि और बेहतर भविष्य की संभावनाएँ हैं। इसके अनेक फायदे होंगे -<sup>10</sup>

1. देश में औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।
2. आवश्यकतानुकूल आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो पायेगी।
3. आत्मनिर्भर भारत एक भारत श्रेष्ठ भारत की अवधारणा है।
4. आत्मनिर्भरता परम्परागत अवधारणाओं पर नवीन अवधारणाओं का विकास है।
5. औद्योगिक प्रक्रिया में रोजगार सम्बर्द्धन को बढ़ावा।
6. गरीबी बेरोजगारी, भुखमरी, पर्यावरण, स्वास्थ्य सेवाओं तथा औद्योगिक भण्डारण की समस्या को दूर किया जा सकेगा।
7. भारत वैश्विक खाद्य आपूर्ति शृंखला में अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन कर सकेगा।
8. भारत को निर्यात का हब बनाया जा सकेगा।
9. रोजगार प्रदाता समूहों में वृद्धि की जा सकेगी।
10. देश की आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय व्यवस्था से संभव वोकल फॉर लोकल की अवधारणा।
11. स्वदेशी तथा भारतीयता के अनुकूल सिस्टम को पुनः केन्द्रित करना।<sup>11</sup>

**निष्कर्ष** - 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' अपने आप में विविधताओं में गतिशीलता तथा विकास कार्यक्रमों को बल देने वाला है। आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना विकसित भारत की अवधारणा पर बल देती है। वर्तमान वैश्विक संदर्भ के अंतर्गत किसी भी देश की सफलता उसके स्वावलंबन पर निर्भर करती है कि वह अपनी नागरिकों की आवश्यकताओं की कितनी पूर्ति कर पाता है। 2047 के विकसित भारत की कल्पना ग्राम स्वराज पर ही आधारित है। हमें ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को भारतीय पुरातन अध्यात्मिक संस्कृति की जड़ों से पुनः जोड़ते हुए विकास का एक वैकल्पिक मॉडल तैयार करना होगा। 24

अप्रैल पंचायती राज दिवस को प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार मेक इन इण्डिया के साथ-साथ मेक इन रूरल इंडिया को बनाये जान की अपील की है। गाँवों को आत्मनिर्भर बनाकर ही भारत को आत्मनिर्भर बनाने की शुरुआत हो सकती है। संतुलित एवं सतत् विकास, उत्पादन की प्रभाविकता और संयमित उपभोग ही भविष्य का रास्ता है। भारत में ग्राम आधारित कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करके और छोटे एवं मझोले उद्योग-धन्धों को मजबूती प्रदान करके ही भुखमरी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को समाधान किया जा सकता है। स्थानीय उद्योग खुशहाली और मजबूती का प्रवेश द्वार है। हाशिये पर खड़े अंतिम जन की चिंता अंत्योदय की सार्थकता को सिद्ध करती है। आत्मनिर्भर भारत अभियान में आत्मकेन्द्रिता के साथ-साथ वैश्विक गतिशीलता को समन्वित किया गया है। भारत अपनी विश्वशांति एवं सर्वोदय की भावना जिसे वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श कहा जाता है। आत्मनिर्भर स्वावलंबन के साथ-साथ आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है। भारत अपनी विश्व गुरु की पूर्व पहचान को प्राप्त करने में सफल हो सकेगा। आत्मनिर्भर भारत अभियान वर्तमान सदी की वैश्विक स्तर पर चुनौतियों के समाधान में सहायक है। इसका सफल क्रियान्वयन देश को विकसित भारत की ओर अग्रसर करेगा।

### सन्दर्भ सूची

1. आत्मनिर्भर भारत संख्या 1/आरएन/रेफ/जनवरी/2021, नई दिल्ली : लोकसभा सचिवालय सदस्य संदर्भ सेवा, लार्डिस।
2. आत्मनिर्भर भारत संख्या 1/आरएन/रेफ/जनवरी/2021, नई दिल्ली : लोकसभा सचिवालय सदस्य संदर्भ सेवा, लार्डिस।

3. कुरुक्षेत्र मंथली जिस्ट पत्रिका, (2022-23) केन्द्रीय बजट, मार्च 2022, नई दिल्ली : ध्येय आईएस. 9.
4. वही, 18
5. मंथली इकनॉमिक रिव्यू, दिसंबर 2020, नई दिल्ली : वित्त मंत्रालय.  
[https://dea.gov.in/sites/default/files/December%202020\\_v.pdf](https://dea.gov.in/sites/default/files/December%202020_v.pdf)
6. वही
7. लोक सभा अतारंकित प्रश्न संख्या 1260, दिनांक 19 सितम्बर 2020.  
<http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/174/A1260.pdf>
8. गांधीजी राय राजनीतिक सिद्धान्त (पटना, भारतीय भवन, 2012)
9. प्रेस सूचना कार्यालय विज्ञप्ति, दिनांक 13 दिसंबर 2020.  
<https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1680343>
10. आत्मनिर्भर भारत 3.0, वित्त मंत्रालय, 12 नवंबर 2020.  
<https://static.pib.gov.in/WriteReadData/userfiles/MOF.pdf>
11. Sarkar, Shankhyaneel, laik- द19 February 2021½- "New education policy will pave path for Atmanirbhar Bharat: PM Modi". Hindustan Times.

\*निदेशक, गांधी अध्ययन केन्द्र, राजनीति विज्ञान विभाग,

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Emai- rksharma038@gmail.com Mob.9414310889

# Present Scenario of Indian Knowledge System in Higher Education Institutions

□ Eluri Yadaiah<sup>1\*</sup>, Viplav Duth Shukla<sup>2</sup>, Ravi Kumar Chegoni<sup>3</sup> and Busi Anil Kumar<sup>4</sup>

## Abstract

*This research paper “PRESENT SCENARIO OF INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM IN HIGHER EDUCATION INSTITUTIONS” deals with basic historical background of Bhrat+ya Jīna Parampar Vibhga (IKS) in present Higher Education system, where various governments bodies like AICTE, NPTEL, IIT Gandhi Nagar are producing IKS Courses in the intermediate, graduation and Post Graduation level. Some of the universities are producing PhDs in the area of IKS and facilitating IKS Internships. It is observed that, IKS has impact on higher education system with contains ethics, morality and culture, knowledge is the supreme value. Present study also focusses on future perspective of IKS on Higher Education System. It is concluded that IKS results from critical thinking, logical reasoning, and reflective inquiry. Researchers emphasised that, students studying IKS can develop analytical skills and learn to approach problems from diverse perspectives, fostering creativity and scholarly agility leading to interdisciplinary research resulting in a harmonious blend of various knowledge systems.*

**Key words:** Higher Education, Indian Knowledge system, Research and development, Curriculum

**“We owe a lot to the ancient Indians, teaching us how to count. Without which most modern scientific discoveries would have been impossible”**

**- Albert Einstein**

## Introduction :

It's evident from your statement that Indian civilization has a rich and diverse heritage of intellectual and spiritual knowledge that spans millennia. The emphasis on knowledge is deeply embedded in the cultural, philosophical, and spiritual fabric of India. The Bhagavad Gita, with Lord Krishna's guidance to Arjuna, underscores the significance of knowledge as a means of self-purification and liberation.

The continuity of this knowledge tradition is compared to the unbroken flow of the Ganges River, highlighting its enduring nature. From the Vedas and Upanishads to the teachings of philosophers like Sri Aurobindo, the pursuit of knowledge

has been a constant theme in India's intellectual history.

The statement also emphasizes the holistic nature of the Indian Knowledge System, encompassing a wide range of disciplines such as Ayurveda, Yoga, Vedanta, and Vedic sciences. These systems, deeply rooted in Indian culture and spirituality, have not only survived the test of time but continue to be relevant in the modern world.

Furthermore, the inclusive nature of the Indian knowledge system is highlighted by its derivation from various philosophical traditions, including Hinduism, Buddhism, Jainism, Sikhism, Islam, Christianity, Judaism, and Zoroastrianism. This diversity contributes to a rich repository of knowledge that has played a crucial role in the advancement of fields like mathematics, science, astronomy, medicine, philosophy, education, cosmology, architecture, metallurgy, visual and performing arts, and agriculture.

The acknowledgment of the Indian knowledge system on a global scale reflects the immense contribution of this ancient civilization to the world's intellectual heritage. As the world recognizes and appreciates the depth and breadth of Indian knowledge, it reinforces the importance of preserving and understanding these traditions for future generations.”<sup>1</sup>.

Indeed, the ancient Indian education system was characterized by the presence of renowned centres of learning such as Nalanda and Takshashila, where the Eighteen Vidya Sthanas, or schools of learning, were taught. These institutions were hubs for the dissemination of knowledge in various domains, including art and architecture, science and technology, craft and engineering, philosophy, and practical applications.

The diverse range of subjects taught in these centres contributed to India's reputation as a hub of intellectual and cultural exchange. The knowledge emanating from these institutions not only attracted learners from different parts of the world but also unfortunately drew the attention of invaders who sought to exploit India's wealth and knowledge.

The statement rightly points out that knowledge was considered the power and wealth of the country. India's ancient expertise in fields like science, philosophy, and arts

was not only a source of pride for the civilization but also a magnet for those seeking to acquire or exploit this wealth.

In today's context, with the rise of knowledge diplomacy and the increasing importance of intellectual capital in international relations, the ancient Indian knowledge base becomes a valuable asset. As countries engage in knowledge diplomacy to enhance their global influence, India's rich heritage of knowledge can play a crucial role in shaping international discourse.

Preserving, promoting, and leveraging this treasure trove of knowledge can be a strategic advantage for India in the global arena. By emphasizing the importance of its historical contributions to various fields, India can strengthen its soft power and foster international collaborations based on shared intellectual legacies. This recognition and utilization of India's ancient knowledge can indeed contribute to the country's influence and standing in the future world.

### **Overview of IKS**

The Bharatiya Jnana Parampara Vibhaga or Indian Knowledge Systems (IKS), Division of Ministry of Education (MoE) located in the AICTE Headquarters was established in Oct. 2020. The team initially consisted of Shri A.B. Shukla (Chief Coordinator), and three research fellows (Dr. Sanjeev Panchal, Shri. Anurag Deshpande, and Shri. Shreyas Kuhrekar). The team was further strengthened in Oct., 2021 with the appointment of Prof. Ganti Murthy (IIT Indore) as National Coordinator and Dr. Anuradha Choudry (IIT Kharagpur) as Coordinator, followed by the addition of Dr. Madhukeshwar Bhat and Shri, Somnath Danayak.

The genesis of a dedicated IKS Division of MoE is in the one-day workshop conducted on the topic "Research in Indian Traditional Knowledge Systems (Bhrat+ya Jñna Parampar)" on 18th March, 2020. The workshop was chaired by Hon'ble Minister for Human Resource Development (now MoE), Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' and attended by over 100 scholars from various academic and scientific institutions, and other organizations. The first and important action points was to setup a dedicated IKS Division that shall work in mission mode. The IKS Division of MoE was setup in a mission mode and located in AICTE headquarters with the team reporting to the Prof. Anil Sahasrabudhe, Chairman, AICTE. The administrative support for the Division is provided by the AICTE Headquarters.

"The heritage of ancient and eternal IKS and thought has been a guiding light for this Policy. The pursuit of Knowledge (Jñna), wisdom (Prajñ), and truth (Satya) was always considered in Indian thought and philosophy as the highest human goal. The Indian education system produced great scholars such as Charaka, Susruta, Aryabhata, Varahamihira, Bhaskaracharya, Brahmagupta, Chanakya,

Chakrapani Datta, Madhava, Panini, Patanjali, Nagarjuna, Gautama, Pingala, Sankardev, Maitreyi, Gargi and Thiruvalluvar, among numerous others, who made seminal contributions to world knowledge in diverse fields such as mathematics, astronomy, metallurgy, medical science and surgery, civil engineering, architecture, shipbuilding and navigation, yoga, fine arts, chess, and more. Indian culture and philosophy have had a strong influence on the world. These rich legacies to world heritage must be nurtured and preserved for posterity and researched, enhanced, and put to new uses through our education system." (NEP 2020, p.4)

**AICTE:** "The IKS Division of Ministry of Education at AICTE has been established with a vision to promote interdisciplinary and transdisciplinary research on all aspects of IKS update and disseminate IKS knowledge for further innovations and societal applications. Focus Areas are Science, Engineering, Technology, Health, wellness, Psychology, Cognition Linguistics, Phonetics, Epistemology, Language technology, Management, Administration, Law, Governance, Arts, Literature, Culture, Aesthetics folklore, Education, Indian Classical Music, Drama, Ayurveda, Yoga and Naturopathy, Indian Traditional Knowledge Base" <sup>2</sup>

### **UGC:**

The University Grants Commission (UGC) has introduced draft guidelines aimed at incorporating Indian knowledge systems (IKS) into higher education, spanning undergraduate (UG) and postgraduate (PG) courses. In adherence to the National Education Policy 2020, UGC-recognized universities and institutions are directed to integrate subjects related to the Indian knowledge system into their curricula.

The UGC asserts that the integration of IKS into the existing educational framework is essential for preserving and disseminating this wealth of knowledge. The emphasis is on fostering research and practical application of Indian knowledge systems within society.

The UGC recommends encouraging all UG and PG students to enrol in credit courses that delve into Indian knowledge systems. Specific guidelines have been outlined for various disciplines:

In UG medicine programs, students are mandated to study the Indian system of medicine, encompassing Ayurveda, Yoga, Unani, Homeopathy, and Siddha, during their first year.

In other courses, the incorporation of itihās and purānas is suggested to enhance the understanding of the Vedas in UG and PG programs.

The six vedāngas - Sikha, Chhanda, Vyākṛana, Nirukta, Jyotiṣha, and Kalpa - will be integrated into the course structures.

Mathematics found in Vedas and Sulba Sutras is

highlighted for inclusion in the courses. Additionally, students will delve into Indian astronomy, expanding their knowledge beyond Dharmasastra and Arthasastra.

These directives represent a significant step toward a more comprehensive and inclusive education system that acknowledges and incorporates the rich heritage of Indian knowledge systems across various disciplines.

### **Present Status of IKS in Higher Education :**

#### **i) Intermediate Level**

Intermediate Level of Spoken Sanskrit by NTPEL This course intends to introduce the human brain and its processes especially with regards to electrochemical activity, the issues of mind and consciousness. It also indicates towards further possibilities of research by ANURADHA CHOUDRY from DEPARTMENT OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES, IIT Kharagpur, Introduction to the devangari

#### **ii) UG Level -**

Encouraging a holistic approach to education, it is recommended that students enrolled in four-year undergraduate programs dedicate a substantial portion of their curriculum to Indian Knowledge Systems (IKS). A minimum of five percent of the total mandated credits should be allocated to IKS courses. Ideally, these courses should be taken in the initial four semesters of the undergraduate program, with at least half of the credits specifically related to the major field of specialization.

To ensure a comprehensive introduction to IKS, all students are required to take a Foundational Course in Indian Knowledge System. This course should cover introductory material across various streams of IKS relevant to the undergraduate program, allowing students to delve into the fundamental ideas shaping Indian Knowledge Traditions over centuries. Model curricula for the Foundational Courses are outlined in the provided appendix.

In addition to the foundational course, undergraduate institutions should offer a diverse array of Elective Courses in IKS. Students can choose from these electives to fulfil the requisite number of courses and credits in IKS, which may be distributed across core disciplinary and multidisciplinary courses. Furthermore, students should have the option to undertake internships or apprenticeships related to disciplines within IKS.

For those enrolled in medical programs, a specific credit course on Indian Systems of Medicine is recommended in the first year. This course provides a foundational understanding of Ayurveda, Yoga, Naturopathy, Unani, Siddha, and Homeopathy. In the second year, students may engage in a two-semester credit course focusing on the Theory and Practice of one of the Indian Systems of Medicine.

Additionally, students are encouraged to choose topics related to IKS for their project work in the 7th or 8th semesters. These provisions should be seamlessly incorporated into the curricular framework of respective programs with approval from the competent authority or body of the higher educational institutions or the relevant professional councils where applicable.

As an example, the 5-year integrated B.Sc.-M.Sc. program in Ayurveda-Biology at the School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, introduced in 2020 serves as a model for successfully integrating IKS into contemporary education without resorting to plagiarism.

#### **Swayam**

In the realm of scientific inquiry, where an insatiable curiosity propels the pursuit of knowledge, the enduring wisdom of India resounds like a cosmic symphony. The historical contributions of ancient scholars such as Aryabhata and Brahmagupta in mathematics and astronomy, coupled with the holistic insights into the universe found in the Upanishads, form the intricate tapestry of the Indian knowledge system. This system seamlessly intertwines threads of ancient wisdom with the relentless quest for scientific understanding.

While contemporary recognition of India often centres around achievements in Yoga and spiritual studies, it's essential to acknowledge the substantial strides made in material advancements. Embark on a captivating journey as we unravel the mysteries of the cosmos, kindle the flame of innovation, and explore new frontiers in scientific discovery through the rich fabric of Indian knowledge. Let the wisdom of ages be your guide, leading you on an aware inspiring expedition through the treasures of the Indian knowledge system, where the convergence of science and spirituality illuminates the path to enlightenment.

The course encompasses various facets of the Indian Knowledge System, providing an introduction to its foundations, delving into the wisdom encapsulated in the Vedic Corpus through the ages. It explores topics such as Number Systems and Units of Measurement, Mathematics, Astronomy, Knowledge Frameworks, and classifications, as well as delving into Linguistics, Health Wellness and Psychology, and Town Planning and Architecture.

#### **iii) PG Level**

The Indian Knowledge System comprehensively encompasses a spectrum of systematically organized disciplines of knowledge, developed to a remarkable degree of sophistication in India since ancient times. It incorporates the diverse traditions and practices cultivated by various communities across the country, including tribal communities. This collective wealth of knowledge has been refined,

evolved, and meticulously preserved over generations.

To further emphasize the importance of this rich heritage, students are encouraged to dedicate a significant portion of their academic journey to IKS. Specifically, the aim is for the total credits earned through IKS courses to constitute at least five percent of the overall mandated credits for each student.

In order to foster a more nuanced understanding and specialization within the Indian Knowledge System, students are afforded the flexibility to opt for additional courses in disciplines or topics integral to IKS. This option is subject to availability and alignment with the requirements of the respective postgraduate program. This approach allows students to tailor their educational experience, contributing to a more profound exploration of the diverse facets of the Indian Knowledge System.

Faculty Development Programme: Indian Knowledge System perspective, Cultural, context imperative

#### iv. IIT Gandhinagar

1. Tracing the history of Vaastu Shastra, the lecture covers the cave temple, the village settlement, city culture and the design of houses and temples. It also explains the relationship between Shilpa or sculpture and Vaastu or architecture, and the concept of sacred geometry.
2. Hardly anyone in India has not visited some pilgrimage site at least once in his/her life. Pilgrimage traditions are so interwoven into Indian cultural practices that they have become an integral part of every Indic faith. This lecture will focus on the meaning and function of these traditions and their sociocultural impact. It will also explore a few popular pilgrim networks of India and how they contributed to the construction of a certain “idea of India”.
3. A widespread scholarly and popular notion is that India has no sense of history. After examining India’s concept of itihasa as reflected in texts of historical tradition (such as the two Epics and the Puranas), this lecture will dwell on epigraphic sources, ballads as representative of folk history, and a few known and lesser-known chronicles of historical value, such as the vamshavali tradition. It will also offer a glimpse of communities involved in keeping family records, sometimes over centuries. The overall picture will be that of a different

concept of history, oralized, regionalized, often hero-centred and semi-mythologized, but still very much alive in the collective consciousness

4. Ancient Indian technologies can be documented through archaeological investigations, texts, inscriptions or direct testimonies. This first lecture starts with Mesopotamian evidence on Harappan technologies, then moves on to a selection of Greek, Roman, Chinese and Arab sources, which often concur on those technologies such as metallurgy, crafts, textile, etc. that greatly enriched India through her exports to many regions of the world.

To encourage students to research IKS, UGC has introduced IKS as a subject in the UGC-National Eligibility Test (UGC-NET), a prestigious examination conducted by the National Testing Agency (NTA) on behalf of the UGC. Those who clear the UGC-NET in IKS will become eligible for a Junior Research Fellowship (JRF) award in Indian universities for Ph.D. research in IKS.

#### IKS Internships

The IKS Internship program is designed to encourage and enthuse youth to take up deeper study of various topics related to IKS preferably in Bhartiya Bhashas. IKS wiki must be an important tool for it. Therefore, the focus of this internship program is to create opportunities for students to contribute and be involved in development of IKS wiki during the summer breaks or anytime during the year. This internship program is to host the mentors for IKS projects with clear deliverables in terms of number of articles along with proposed titles. The mentors are expected to submit proposals to the IKS division describing the area(s) where interns will contribute and proposed number of articles along with proposed titles that those interns will contribute. The selection process of the interns along with the requirements for the minimum and preferable qualifications will be completely managed by the awardee mentor as per the



requirements. The term Mentor and PI has been used interchangeably.

Source: Figure - available from: Environmental Management

### Mainstream Education

The Indian Knowledge System (IKS), an extensive and integral wellspring of knowledge that has long been overlooked, has unfortunately become detached from societal memories over the decades. While certain aspects of IKS persisted in Sanskrit and other traditions, this isolation rendered it largely inaccessible. The mere revival of IKS in education poses the risk of creating a separate compartment of learning, potentially more perilous than its neglect. Thus, there is a pressing need to not only revive but also seamlessly integrate IKS content into contemporary knowledge, fostering a harmonious coexistence.

This integration process is not without its challenges, demanding considerable effort and clarity. Kautilya's classification of schools of learning sheds light on the interconnectedness between every contemporary knowledge stream and the ancient Indian knowledge tradition.

**Trayii:** Encompassing fundamental sciences, both hard and soft, this constitutes the school of science learning, known as Vijnana-vidya.

**Vaarta:** Defined as commerce, it includes the study of production and wealth distribution through various economic activities.

**Danda Neeti:** Encompassing studies in polity, society, and state security, this forms a part of the school of human or social sciences.

**Anveekshiki:** The science of all branches of learning, covering mathematics, logic, language, and art, is universal and foundational to all fields of knowledge. Exposure to these foundational programs is crucial for learners across various branches of study.

In this model, the envisioned new education system should establish a robust connection with various branches of IKS, ensuring a seamless incorporation of its wisdom into the contemporary knowledge landscape. This approach seeks not just preservation, but a dynamic and integrated resurgence of IKS within the educational framework.

### Future and effective implementation

The National Education Policy 2020 (NEP 2020) underscores the significance of the Indian Knowledge System (IKS) for the holistic development of students, emphasizing traditional knowledge in medicine, mindfulness practices (such as Vipassana), and heritage. This AI intervention-based study is designed to fulfill the key expectation outlined in NEP 2020.

Universities are encouraged to actively promote and cultivate undergraduate and postgraduate courses across all disciplines that form part of the Indian Knowledge System.

All students should gain exposure to the common underlying philosophical foundations that unite the various disciplines within IKS.



Faculty members should partake in at least one to two lectures focused on the fundamental vocabulary of IKS to familiarize them with the common terms used in these disciplines.

A strong emphasis should be placed on providing students with exposure to the primary texts of IKS, essential for fostering a deeper understanding.

To facilitate teacher understanding, ready access to a comprehensive range of primary and secondary resources should be ensured. These materials, developed by subject experts, must be authentic and scholarly, serving as valuable content for orientation, induction, and refresher courses.

Compiling and making available a list of IKS content in regional languages would be beneficial for teachers, promoting wider accessibility.

Motivating teachers to explore various dimensions of IKS can be achieved by sharing the life and work of contemporary scholars and innovators who have made significant contributions in their respective fields using IKS.

To connect with the oral tradition of IKS, practical sessions on the ancient technique of memorization, along with examples from primary texts, can provide valuable insights.



Arranging immersive sessions on Yoga, Meditation, Ayurveda, Classical Music, and Indian Craft traditions can offer students a grounded experience of the experiential aspects of IKS.

Close integration between course curriculum development and teacher training in IKS is crucial for ensuring a cohesive and effective educational approach.

### **Conclusion :**

Engaging with the Indian Knowledge System (IKS) involves critical thinking, logical reasoning, and reflective inquiry. Students immersed in the study of IKS can cultivate analytical skills and develop the ability to approach problems from diverse perspectives. This approach not only fosters creativity but also nurtures scholarly agility. Integrating IKS into modern education serves as a catalyst for interdisciplinary research. The inherent nature of IKS, drawing from various streams of knowledge, contributes to a harmonious blend of diverse knowledge systems. This harmonization creates an enriching environment where students can explore intersections between different disciplines, leading to a more comprehensive and interconnected understanding of the world.

### **References:**

1. <https://www.education.gov.in/nep/indian-knowledge-systems>
2. [https://fdp-si.aicteindia.org/Teaching%20Material%20M8/IKS\\_Lecture2\\_Introduction\\_to\\_IKS.pdf](https://fdp-si.aicteindia.org/Teaching%20Material%20M8/IKS_Lecture2_Introduction_to_IKS.pdf)
3. "Communicating Ancient Indian Knowledge System for the Holistic development of the school students for the Physical, Mental and Spiritual wellbeing", Conference Report NIAS/NSE/SCO/U/CR/11/2020, National Institute of Advanced Studies, Bengaluru, India and Chinmaya Viswavidyapeeth Veliyanad, Ernakulam, Held 7- 8 May 2019, PP 21-32.
4. [https://www.ugc.gov.in/pdfnews/3746302\\_Guidelines-for-TrainingOrientation-of-Faculty-on-Indian-Knowledge-System-\(IKS\).pdf](https://www.ugc.gov.in/pdfnews/3746302_Guidelines-for-TrainingOrientation-of-Faculty-on-Indian-Knowledge-System-(IKS).pdf)
5. "Guidelines for Training of Faculty on Indian Knowledge Systems", University Grants Commission, November 2022, pp 2-20.
6. "Guidelines For Incorporating Indian Knowledge In Higher Education Curricula", University Grants Commission, March, 2023, pp10-12.
7. "Akhil Bhartiya Shiksha Samagam -2023", Ministry of Education and Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, 29th-30th July 2023
8. Indian Knowledge System (IKS), Dr. Pavan Mandavkar, Principal, Indira Mahavidyalaya, Kalamb, Dist. Yavatmal , Maharashtra, India, <https://ssrn.com/abstract=4589986>

9. "Indian Knowledge Systems: The Central Plank of the New Education Policy", Soumitro Banerjee, The University Grants Commission (UGC) has introduced draft guidelines aimed at incorporating Indian knowledge systems (IKS) into higher education, spanning undergraduate (UG) and postgraduate (PG) courses. In adherence to the National Education Policy 2020, UGC-recognized universities and institutions are directed to integrate subjects related to the Indian knowledge system into their curricula.
10. The UGC asserts that the integration of IKS into the existing educational framework is essential for preserving and disseminating this wealth of knowledge. The emphasis is on fostering research and practical application of Indian knowledge systems within society.
11. The UGC recommends encouraging all UG and PG students to enrol in credit courses that delve into Indian knowledge systems. Specific guidelines have been outlined for various disciplines:
12. In UG medicine programs, students are mandated to study the Indian system of medicine, encompassing Ayurveda, Yoga, Unani, Homeopathy, and Siddha, during their first year.
13. In other courses, the incorporation of itihās and purānas is suggested to enhance the understanding of the Vedas in UG and PG programs.
14. The six vedāngas - Sikha, Chhanda, Vyākṛana, Nirukta, Jyotisha, and Kalpa - will be integrated into the course structures.
15. Mathematics found in Vedas and Sulba Sutras is highlighted for inclusion in the courses. Additionally, students will delve into Indian astronomy, expanding their knowledge beyond Dharmasastra and Arthasastra.
16. These directives represent a significant step toward a more comprehensive and inclusive education system that acknowledges and incorporates the rich heritage of Indian knowledge systems across various disciplines. Breakthrough, Vol.22, No. 3, February 2022, pp 4-13

1 Associate Professor of Chemistry<sup>1</sup>,  
Government City College, Hyderabad, Telangana.

2 Associate Professor of Chemistry<sup>2</sup>,  
Government City College, Hyderabad, Telangana.

3 Assistant Professor of Library Science<sup>3</sup>,  
Government City College, Hyderabad, Telangana.

4 Assistant Professor of Chemistry<sup>4</sup>,  
Government City College, Hyderabad, Telangana.

# भारतीय समाज में मीडिया की भूमिका : एक आलोचनात्मक अध्ययन

□ गोपालम् गुप्ता<sup>1</sup> विशाल गुप्ता<sup>2</sup>

## प्रस्तावना

भारत का मीडिया परिदृश्य कहानियों को साझा करने के पुराने तरीकों, उपनिवेशवाद की गूंज और डिजिटल युग का एक रंगीन टेपेस्ट्री है। यह दर्शाता है कि कैसे एक देश की आत्मा हमेशा बदल रही है, वर्तमान को आकार दे रही है और भविष्य के लिए उम्मीद जगा रही है। 'बंगाल गजट' और 'बॉम्बे समाचार' के पत्रकारों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जबकि 'द हिंदू' और 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के पत्रकारों ने स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। 20वीं शताब्दी में रेडियो के आने से देश के प्रसारण में वृद्धि हुई, जबकि टीवी ने लोगों के जानकारी प्राप्त करने के तरीके को बदल दिया।

21वीं सदी की डिजिटल क्रांति ने मीडिया परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। केबल टीवी, सैटेलाइट, समाचार चैनल और सोशल मीडिया साइटें जीवंत शहरी चैराहों में बदल गई हैं, जहाँ विभिन्न राय और दृष्टिकोण वाले लोग इकट्ठा हो सकते थे। हालाँकि, इस शोर-शराबे वाली भूलभुलैया से निकलने के लिए एक तेज नजर की जरूरत होती है, क्योंकि शक्तिशाली मीडिया आउटलेट जो अक्सर कॉर्पोरेट हितों से बंधे होते हैं, जनता की राय और सरकारी एजेंडे को बदल सकते हैं। सनसनीखेज रिपोर्टिंग सूक्ष्म रिपोर्टिंग की जगह ले सकती है और एक क्लिक की चाहत पत्रकारों की नैतिकता को नुकसान पहुँचा सकती है। "फर्जी समाचार" और "इको चैंबर्स" का उदय एक नई समस्या है, जो सार्वजनिक बातचीत को तोड़ देती है और लोगों को स्थापित कहानियों पर विश्वास करने की संभावना कम कर देती है।

इन समस्याओं के साथ भी, यह स्पष्ट है कि भारतीय मीडिया बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खोजी समाचार, भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों के उल्लंघन को प्रकाश में लाते हैं। यह उन लोगों को आवाज देता है जिनके पास कोई नहीं है और सत्ता में बैठे लोगों को जिम्मेदार ठहराता है। वृत्तचित्र गुप्त सच्चाइयों को उजागर करते हैं, जिससे सहानुभूति और सामाजिक परिवर्तन हो सकता है। जलवायु परिवर्तन और आपदा सहायता जैसी समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक करने के अभियान, संसाधन प्राप्त करने और समाज को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। भारतीय मीडिया समाज में जो भूमिका निभाता है उसका आलोचनात्मक विश्लेषण प्रदान करने के लिए, यह लेख इसकी शक्ति, प्रभाव और इसके संभावित प्रभावों की जाँच करेगा।

## भारतीय मीडिया की शक्ति और प्रभाव

भारत का मीडिया परिदृश्य भाषाओं, प्लेटफार्मों और दृष्टिकोणों का एक जटिल मिश्रण है जो सार्वजनिक बहस को आकार देता है, सत्ता को जिम्मेदार ठहराता है और सामाजिक परिवर्तन लाता है। यह धोखाधड़ी, पर्यावरण को नुकसान और मानवाधिकारों के उल्लंघन जैसी चीजों पर नजर रखता है और सत्ता में बैठे लोगों को जिम्मेदार ठहराता है। एक और काम जो यह करता है वह कहानियाँ सुनाना है, जो यह तय करती है कि लोग खुद को और अपने परिवेश को कैसे समझते हैं। ये कहानियाँ सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती दे सकती हैं, सहिष्णुता को प्रोत्साहित कर सकती हैं और महत्वपूर्ण समस्याओं को लोगों के ध्यान में ला सकती हैं।

हालाँकि, मीडिया की यह शक्ति कुछ समस्याओं के साथ आती है। क्योंकि समाचार एजेंडा व्यावसायिक हितों या राजनीतिक संबद्धताओं से प्रभावित हो सकते हैं, पूर्वाग्रह और सनसनीखेजता के बारे में चिंताएँ पत्रकारों की अखंडता के लिए खतरा पैदा करती हैं। सोशल मीडिया के विकास ने मीडिया में चीजों को और अधिक जटिल बना दिया है, जिससे झूठी सूचना और "फर्जी समाचार" के बारे में चिंताएँ बढ़ गई हैं। इको चैंबर और फिल्टर बॉक्स, ध्रुवीकरण को बदतर बना सकते हैं और लोगों के लिए जानकारीपूर्ण बातचीत करना कठिन बना सकते हैं।

इन समस्याओं के बावजूद भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय मीडिया में अच्छा बदलाव लाने की ताकत है। यह जलवायु परिवर्तन, गरीबी और स्वास्थ्य देखभाल जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं पर ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी शक्ति और दायरे का उपयोग कर सकता है, और फिर इन समस्याओं का उपयोग उन्हें हल करने के लिए और संसाधन प्राप्त करने के लिए कर सकता है। वृत्तचित्र और जन जागरूकता प्रयास लोगों के दूसरों को समझने और उनकी देखभाल करने में मदद कर सकते हैं, जो सामाजिक घावों को भरने और सहिष्णुता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

पत्रकारों की अखंडता की रक्षा करने, लोगों को मीडिया का उपयोग करने के तरीके सिखाने और विभिन्न और समावेशी कहानियों का समर्थन करने के लिए अधिक जिम्मेदार और नैतिक मीडिया वातावरण को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। मीडिया भारत को अधिक निष्पक्ष, जानकारीपूर्ण और आवाजों की संतुलित सहानुभूति के लिए

काम करके, महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## जनमत को आकार देने में भारतीय मीडिया की भूमिका

भारतीय मीडिया परिदृश्य, जिसमें विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, स्थान और आवाजें शामिल हैं, लोकप्रिय भावनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अपने सार में, इसमें आख्यानों का निर्माण करने, एजेंडा को आकार देने और प्राथमिकताएँ स्थापित करने की क्षमता है। समाचार सुर्खियों, ग्राफिक्स और भाषा के संयोजन की जनता के सूचना को समझने के तरीके को ढालने, सार्वजनिक भावनाओं को प्रभावित करने और संभावित रूप से राय को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

डिजिटल मीडिया के आगमन ने जनता की राय को प्रभावित करने में मीडिया के कार्य को जटिल रूप से बदल दिया है, क्योंकि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने सूचनाओं को साझा करने और कथाओं के निर्माण में लोगों की सक्रिय भागीदारी के लिए एक पारस्परिक मार्ग स्थापित किया है। फिर भी, ज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाने की प्रक्रिया में कठिनाइयाँ हैं, जिनमें झूठी या भ्रामक जानकारी का प्रसार और अलग-अलग समुदायों का निर्माण शामिल है जो अपनी मान्यताओं को मजबूत करते हैं।

भारतीय मीडिया अपनी रिपोर्टिंग में वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण नैतिक दायित्व रखता है, इसलिए एक प्रबुद्ध जनमत सुनिश्चित करता है। सनसनीखेज, पक्षपातपूर्ण भाषा और व्यक्तिगत एजेंडे को बढ़ावा देने से परहेज करके विश्वास और भरोसेमंदता को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। व्यक्तियों के बीच मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है ताकि उन्हें जानकारी का आकलन करने और स्वायत्त दृष्टिकोण विकसित करने के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक क्षमताएँ प्रदान की जा सकें।

इन कठिनाइयों के बावजूद, लाभकारी परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने की मीडिया की क्षमता निर्विवाद है। खोजी पत्रकारिता में अन्याय को उजागर करने और यह सुनिश्चित करने की क्षमता है कि सत्ता के पदों पर बैठे लोगों को जिम्मेदार ठहराया जाए, विधायी संशोधनों को प्रेरित किया जाए और सामाजिक उन्नति में योगदान दिया जाए। वृत्तचित्रों और जागरूकता अभियानों में जलवायु परिवर्तन और लैंगिक असमानता जैसे महत्वपूर्ण मामलों को उजागर करने, सार्वजनिक चर्चा को प्रोत्साहित करने और सामाजिक जुड़ाव को प्रेरित करने की क्षमता है। इसके अलावा, मीडिया विभिन्न दृष्टिकोणों और कहानियों को बढ़ाकर सामाजिक अंतरालों को जोड़ने और स्वीकार्यता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

## भारतीय मीडिया में पूर्वाग्रह और गलत सूचना का प्रभाव

भारतीय मीडिया के माध्यम से प्रसारित पूर्वाग्रह और गलत सूचना का प्रभाव केवल नीति निर्माण और जनमत निर्माण से परे है। ये ताकतें

अक्सर मीडिया ट्रायल के निर्माण में योगदान देती हैं, जिसमें पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग और असत्यापित जानकारी के प्रसार के आधार पर व्यक्तियों और सार्वजनिक हस्तियों की निंदा की जाती है और उनका मूल्यांकन किया जाता है। “द परफेक्ट स्टॉर्म” के रूप में जाना जाने वाला एक परिदृश्य तब घटित होता है जब समाचार संगठन सनसनीखेजता को निष्पक्षता से ऊपर रखते हैं, चुनिंदा तथ्यों और आख्यानों को प्रस्तुत करते हैं जो एक विलक्षण परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। जब इसे राजनीतिक या कॉरपोरेट पूर्वाग्रहों के साथ जोड़ा जाता है, तो यह औपचारिक जाँच या कानूनी कार्यवाही शुरू होने से पहले ही उन लोगों के लिए एक विरोधी माहौल पैदा कर सकता है जिनकी जाँच की जा रही है।

गलत जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म प्रतिध्वनि कक्षों को जन्म देते हैं, जिसमें आरोपों को बढ़ाया जाता है और साझा पूर्वाग्रहों और एल्गोरिदम द्वारा सार्वजनिक आक्रोश को बढ़ावा दिया जाता है, अक्सर असत्यापित दावों और अफवाहों के आधार पर। इसके परिणामस्वरूप एक आभासी जूरी का गठन होता है जो बचाव पक्ष पेश करने के अवसर से पहले प्रतिवादियों को दोषी ठहराने में सक्षम होती है। पापराजी और टैब्लॉइड पत्रकारिता, सेलिब्रिटी संस्कृति और गपशप से प्रेरित होकर रिपोर्टिंग और अफवाहों के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है, जो निजी जीवन और व्यक्तिगत विवादों को सार्वजनिक तमाशा में बदल देती है। लगातार जाँच से मीडिया ट्रायल तेजी से बढ़ने की संभावना है, जिसका प्रतिष्ठा पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है और व्यक्तिगत अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है।

मीडिया ट्रायल के गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जैसे किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान, विश्वास का क्षरण, ध्रुवीकरण और यहाँ तक कि हिंसा भी। भारत में मीडिया आउटलेट्स के पास मीडिया ट्रायल आयोजित करने का एक दस्तावेजी रिकॉर्ड है, जिसमें उचित प्रक्रिया पूरी होने से पहले व्यक्तियों का सार्वजनिक रूप से न्याय किया जाता है और उनकी निंदा की जाती है। इस संबंध में प्रमुख उदाहरणों में आरुषि तलवार (2008), जेसिका लाल (1999), प्रिया रमानी बनाम एमजे अकबर (2018), भीमा कोरेगांव (2018), और सुशांत सिंह राजपूत की मौत (2020) की हत्या के मामले शामिल हैं।

आरुषि तलवार मर्डर केस (2008) में सनसनीखेज रिपोर्टिंग, अनुमान और लीक के परिणामस्वरूप माता-पिता को गलत सजा और कारावास हुआ, जिसने राष्ट्रीय प्रमुखता प्राप्त की। जेसिका लाल मर्डर केस (1999) ने दिल्ली की नाइटलाइफ के अशुभ पहलुओं को प्रकाश में लाया और मीडिया ने इस मामले को लगातार आगे बढ़ाया।

प्रिया रमानी बनाम एमजे अकबर यौन उत्पीड़न मामले (2018) की व्यापक मीडिया कवरेज ने रुडमज्जव आंदोलन के संबंध में एक राष्ट्रव्यापी चर्चा को जन्म दिया। भीमा कोरेगांव मामले (2018) में माओवाद से कथित संबंध और हिंसा में भागीदारी के संदेह में एक

अकादमिक और कार्यकर्ता को गिरफ्तार किया गया था।

सुशांत सिंह राजपूत (2020) के निधन ने दुख और अटकलें लगाईं, क्योंकि मीडिया ने लगातार कई पहलुओं की जाँच की, जिसमें बॉलीवुड में पक्षपात के आरोप और उनके साथी रिया चक्रवर्ती की संभावित भागीदारी शामिल थी। मामला अंततः सीबीआई द्वारा सुलझाया गया हालाँकि, चक्रवर्ती की प्रतिष्ठा और मानसिक स्थिति मीडिया जाँच से गहराई से प्रभावित हुई थी।

### भारतीय मीडिया के द्वारा भारतीय सिद्धांतों का दुरुपयोग

भारतीय मीडिया परिदृश्य जनमत बनाने में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, फिर भी कई बार इसकी कवरेज मौलिक भारतीय सिद्धान्तों से विचलित हो सकती है। इस तरह के व्यवहार के उदाहरणों में सांप्रदायिक तनाव और स्टीरियोटाइप को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करना, व्यक्तिगत अधिकारों की उपेक्षा करना, पारंपरिक प्रथाओं का उपहास करना और भारतीय मूल्यों की कीमत पर पश्चिमीकरण की वकालत शामिल हैं। सनसनीखेज रिपोर्टिंग के कार्य में सांप्रदायिक तनाव को तेज करने और सामाजिक एकजुटता को बाधित करने की क्षमता है, जबकि बायस्ड रिपोर्टिंग समुदायों की प्रतिकूल पूर्वधारणा को बनाए रख सकती है और मजबूत कर सकती है।

मीडिया परीक्षणों की घटना में मासूमियत के अनुमान को खत्म करने और व्यक्तियों के रिस्पूशन को नुकसान पहुंचाने की क्षमता है। गोपनीयता उल्लंघन को भी नजरअंदाज किया जा सकता है, विशेष रूप से हस्तियों या प्रमुख व्यक्तियों से जुड़े मामलों में। मीडिया कवरेज, शहरी पूर्वाग्रह जैसे जमीनी वास्तविकताओं की भी अवहेलना कर सकता है, जिससे शहरी और ग्रामीण भारत के बीच संबंध टूट सकते हैं।

इसके अलावा, मीडिया कवरेज समृद्ध और वंचित लोगों के दृष्टिकोण को प्राथमिकता दे सकता है, बहुमत की कठिनाइयों और आवश्यकताओं की उपेक्षा कर सकता है, इसलिए सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को तेज कर सकता है। ये उदाहरण भारत में मीडिया प्रतिनिधित्व के प्रति अधिक न्यायसंगत और निष्पक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। चलिए अब इनमें से कुछ चीजों के बारे में और गहराई से देखते हैं।

### भारतीय मीडिया का भारतीय परंपराओं और मूल्यों के प्रति अनादर

भारतीय मीडिया का जनभावनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, फिर भी कई बार इसका कवरेज कुछ भारतीय रीति-रिवाजों और सिद्धांतों के प्रति उपेक्षा प्रदर्शित कर सकता है। इन उदाहरणों में धार्मिक समारोहों का सम्बेदन, रीति-रिवाजों का अपमान, पश्चिमी मूल्यों को श्रेष्ठ मानने का प्रोत्साहन, पश्चिमी प्रवृत्तियों का अंधापन और पारंपरिक प्रथाओं की उपेक्षा या विकृति शामिल हैं।

सम्बेदनवाद में धार्मिक उत्सवों के गहन महत्व और प्रासंगिकता

को कम करने की क्षमता है, जबकि अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों का उपहास करने का कार्य चिकित्सकों के लिए अपमानजनक हो सकता है और उनके द्वारा धारित सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को कम किया जा सकता है। मीडिया पश्चिमी प्रवृत्तियों का भी समर्थन कर सकता है और उन्हें भारतीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की विविधता और गहराई की उपेक्षा करते हुए वांछनीय के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों को विकृत करने से सामाजिक गलतफहमी पैदा हो सकती है और इन लोगों के लिए सम्मान कम हो सकता है। मीडिया की कवरेज अस्पष्ट या विवादास्पद सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रदर्शित करने के प्रति पूर्वाग्रह प्रदर्शित कर सकती है, जिससे उन्हें सनसनीखेज बनाया जा सकता है और भारत के समृद्ध और विविध सांस्कृतिक परिवेश की धारणा को विकृत किया जा सकता है। इससे पूरे समुदाय या रीति-रिवाजों के बारे में पूर्वधारणा और गलतफहमी पैदा हो सकती है।

### सांस्कृतिक क्षरण और भारतीय मीडिया का प्रभाव

हालाँकि भारतीय मीडिया का माहौल बहुत विविध है, लेकिन यह कई मायनों में सामाजिक विभाजन को जीवित रख सकता है। सांप्रदायिक और जातिगत पूर्वाग्रह अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को नजरअंदाज करके समुदायों या जातियों के बीच समस्याओं को बदतर बना सकते हैं। वंचित समूहों के बारे में नकारात्मक स्टीरियोटाइप फैला सकते हैं, जो दुरुपयोग को और बढ़ा सकते हैं। द्विस्तरीय समाचार कवरेज जो कुछ राजनीतिक विचारों का समर्थन करता है और सोशल मीडिया साइटों पर एल्गोरिथ्म, राजनीतिक धुवीकरण और गूँज कक्षों को बदतर बना सकता है।

विशिष्ट या विवादास्पद सांस्कृतिक प्रथाओं को बहुत अधिक सनसनीखेज बनाकर और अल्पसंख्यक समूहों को पर्याप्त श्रेय नहीं देकर सांस्कृतिक संवेदनशीलता और विविधता को तुच्छ करना संभव है। यह एक अनुचित कहानी बनाने के लिए शहरी पूर्वाग्रह के लिए संभव है, और कुलीन कथाएँ अमीर और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के विचारों और लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को बदतर बना सकते हैं और आगे लोगों को विभाजित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, इन मुद्दों को भारतीय मीडिया में सामाजिक सद्भाव और अधिक खुले समाज का समर्थन करने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है।

### भारतीय मीडिया में राजनीतिक छेड़छाड़ और सेंसरशिप

भारत में मीडिया कई विभिन्न विषयों को कवर करता है और सेंसरशिप तथा सरकारी हस्तक्षेप के बारे में चिंता करता है। एक बायस्ड न्यूज स्टोरी लोगों को बदल सकती है कि वे राजनीति के बारे में कैसे सोचते हैं और लोगों के लिए एक सूचित राजनीतिक बातचीत करना

मुश्किल बना देती है। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि फर्जी खबरें बनाना, तथ्यों को बदलना या झूठ फैलाना जो राजनीतिक लक्ष्यों का समर्थन करते हैं। बहुत अधिक शक्ति वाले राजनेता और कंपनियाँ अपने मीडिया आउटलेट के मालिक हो सकते हैं और अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए संपादकीय निर्णयों और समाचार कवरेज पर अपने नियंत्रण का उपयोग कर सकते हैं।

सरकार के दबाव, धमकियों और गैर-राज्यीय खिलाड़ियों से अनधिकृत सीमाएँ सभी सेंसरशिप के लिए नेतृत्व कर सकते हैं। सरकारों ऑनलाइन सेंसरशिप का भी उपयोग कर सकती हैं और सूचना के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए इंटरनेट बंद कर सकती हैं और लोगों को सरकार के खिलाफ बोलने से रोक सकती हैं।

राजनीतिक हस्तक्षेप और सेंसरशिप के परिणामस्वरूप, लोकतंत्र और सार्वजनिक विश्वास खो जाते हैं, सामाजिक विभाजन बदतर हो जाते हैं, और मानवाधिकार तथा सामाजिक न्याय का उल्लंघन किया जाता है। बायस्ड रिपोर्टिंग लोगों को सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर अधिक विभाजित कर सकती है, मौजूदा मतभेदों को बदतर बना सकती है और एक निष्पक्ष समाज की दिशा में प्रगति को धीमा कर सकती है। संक्षेप में, भारतीय मीडिया नियंत्रण और हेरफेर का एक जटिल जाल है जो सार्वजनिक विश्वास को आहत कर सकता है, लोगों को साथ आने से रोक सकता है और एक अधिक निष्पक्ष समाज की दिशा में प्रगति रोक सकता है।

### मीडिया की सनसनीखेजता और उसके परिणाम

मीडिया में सनसनीखेज का अर्थ है अधिक दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कहानियाँ बनाना या तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना। इससे लोगों का मीडिया पर से विश्वास उठ सकता है, जिससे उन्हें खबरों की सच्चाई और निष्पक्षता पर संदेह हो सकता है। जब लोग सरकारों, कानून प्रवर्तन, या वैज्ञानिक समूहों जैसे संगठनों के बारे में बुरी बातें सुनते हैं तो वे उन पर अधिक भरोसा नहीं करते हैं। सनसनीखेज खबरें प्रतिध्वनि कक्षों का भी कारण बन सकती हैं, जो ऐसी जगहें हैं जहाँ लोग अन्य दृष्टिकोणों को नहीं सुनते हैं। यह लोगों को अधिक विभाजित कर सकता है और उन्हें उत्पादक बातचीत करने से रोक सकता है। झूठी जानकारी फैलाना सनसनीखेज कहानियों का एक और प्रभाव है, जो सच्चाई पर पर्दा डालती है, जिससे वास्तविकता और हानिकारक रूढ़िवादिता का तिरछा दृष्टिकोण हो सकता है।

चिंता और भय, सामाजिक अशांति और भेदभाव, घबराहट में खरीदारी, बाजार में गिरावट, और नागरिक अधिकारों की हानि, ये सभी सनसनीखेज समाचारों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव हैं। ऐसी रिपोर्टिंग जो चीजों को वास्तव में जितनी बदतर लगती है, उससे घबराहट में खरीदारी और बाजार में गिरावट भी हो सकती है, जो वित्तीय समस्याओं को बदतर बना देती है। सबसे खराब स्थितियों

में, सनसनीखेज खबरें लोगों के दिमाग को बदल सकती हैं और लोगों को उनके नागरिक अधिकारों को खोने का कारण दे सकती हैं, जैसे बोलने की स्वतंत्रता को सीमित करना या निगरानी बढ़ाना।

मीडिया में सनसनी फैलाने का मतलब है कहानी बनाना या अधिक दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए तथ्यों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करना। इससे लोगों का मीडिया पर विश्वास खो सकता है, जिससे उन्हें समाचार की सच्चाई और निष्पक्षता पर संदेह हो सकता है। लोग सरकारों, कानून प्रवर्तन, या वैज्ञानिक समूहों जैसे संगठनों पर अधिक भरोसा नहीं कर सकते जब वे उनके बारे में बुरी बातें सुनते हैं। सनसनीखेज समाचारों के कारण इको चैम्बर्स भी हो सकते हैं, जो ऐसे स्थान हैं जहाँ लोग अन्य बातों को नहीं सुनते। यह लोगों को अधिक विभाजित कर सकता है और उन्हें उत्पादक बातचीत करने से रोक सकता है। झूठी जानकारी फैलाना सनसनीखेज कहानियों का एक और प्रभाव है, जो नाटक को सत्य पर थोपती हैं, जो वास्तविकता और हानिकारक रूढ़िवादिता के बारे में एक विकृत दृष्टिकोण पैदा कर सकती हैं।

### मीडिया साक्षरता और महत्वपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता

महत्वपूर्ण सोच और मीडिया साक्षरता आज की दुनिया में महत्वपूर्ण कौशल हैं क्योंकि वे हमें बड़ी मात्रा में जानकारी से निपटने, छेड़छाड़ से बचने, अच्छी तरह से जागरूक नागरिक बनने, जिम्मेदार मीडिया उपयोग को प्रोत्साहित करने और नए विचार प्राप्त करने में मदद करते हैं। जो लोग मीडिया साक्षरता का उपयोग करना जानते हैं, वे सूचना स्रोतों, पूर्वाग्रह की समीक्षा कर सकते हैं और तथ्यों की जांच कर सकते हैं, जो उन्हें सही और गलत जानकारी के बीच अंतर बताने में मदद करता है। यह लोगों को प्रचार और हेरफेर करने, स्मार्ट विकल्प बनाने और मजबूत लोगों को जिम्मेदार ठहराने में भी मदद करता है।

आलोचनात्मक विश्लेषण लोगों को चीजों को अधिक गहराई से देखने, छिपे संदेश और अर्थ खोजने, विभिन्न दृष्टिकोण से चीजों को देखने, अपने लिए सोचने और सार्वजनिक बातचीत में भाग लेने में मदद करता है। एक जिम्मेदार मीडिया उपभोक्ता के रूप में, आप विभिन्न विचारों और स्रोतों की तलाश करके, हर चीज पर सवाल उठाते हुए और साझा करने से पहले सोच कर समाज को अधिक जानकारी और निष्पक्ष बनाने में मदद कर सकते हैं।

जो लोग मीडिया का उपयोग करना और विश्लेषण करना सीखना चाहते हैं, उन्हें विभिन्न विचारों और स्रोतों की तलाश करनी चाहिए, हर चीज पर सवाल उठाना चाहिए, साझा करने से पहले दो बार सोचना चाहिए और नैतिक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के प्रयासों का समर्थन करना चाहिए। ऐसा करके, वे सक्रिय और अच्छी तरह से जागरूक नागरिक बन सकते हैं जो खुद को धोखाधड़ी से बचा सकते

हैं, महत्वपूर्ण बातचीत कर सकते हैं, और समाज को अधिक निष्पक्ष और अच्छी तरह से जागरूक बनाने में मदद कर सकते हैं। ज्ञान से भरी दुनिया में, हम मीडिया का उपयोग करने और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के तरीके सीखने के द्वारा सक्रिय और अच्छी तरह से जागरूक नागरिक बन सकते हैं।

### निष्कर्ष

भारतीय मीडिया जीवित है और हर समय बदलता रहता है, जैसे वह देश का प्रतिनिधित्व करता है। यह सपनों और आलोचना के लिए एक जगह है और यह समाज के अच्छे और बुरे पक्षों को दिखाता है। जैसे-जैसे भारत भविष्य में आगे बढ़ता है, उसके मीडिया में शिक्षित करने, मनोरंजन करने, लोगों को शक्ति देने, विभाजनों को ठीक करने और एक ऐसा समाज बनाने की शक्ति होती है जो अधिक निष्पक्ष हो और जिसमें सभी शामिल हों।

इस शोध पत्र में सामाजिक वास्तविकता को आकार देने में भारतीय मीडिया की भूमिका और भारतीय समाज पर इसके संभावित प्रभाव को देखा गया। मीडिया के संभावित लाभों को अक्सर पूर्वाग्रह, सनसनीखेजवाद, गूँज कक्षों, अनैतिक गतिविधियों और पश्चिमी विचारों के वर्चस्व जैसे मुद्दों से नकार दिया जाता है। इन मुद्दों से निपटने और संभावनाओं को भुनाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसमें लोगों के बीच मीडिया साक्षरता और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देना, नैतिक पत्रकारिता तरीकों को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक विविधता और पहचान की रक्षा करना और खुलेपन और जवाबदेही सुनिश्चित करना शामिल है।

इन कठिनाइयों का जोरदार ढंग से सामना करके और संभावनाओं को हासिल करके हम एक ऐसे भविष्य की दिशा में प्रयास कर सकते हैं, जिसमें भारतीय मीडिया अधिक जानकारी, समावेशी और समान समाज के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाता है। भारतीय मीडिया के भविष्य को निर्धारित करने की क्षमता भारत के सक्रिय और सूचित नागरिकों के साथ है, जिन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए काम करना चाहिए कि मीडिया परिदृश्य देश के उज्वल भविष्य में योगदान देने के लिए एक ताकत के रूप में काम करे।

### संदर्भ सूची

1. संजीव शर्मा, “क्या सोशल मीडिया से नष्ट हो रही भारतीय संस्कृति?”, <https://hindi.newswyonline.com/opinion/indian-culture-being-destroyed-by-social-media-sanjeev-sharma-opinion/316845/>

2. प्रेरणा लिथू, “आरुषि तलवार टू रिया चक्रवर्ती अ टेल ऑफ टू मीडिया ट्रायल्स एंड जीरो लैसन्स लर्नट”, <https://thewire.in/media/rhea-chakraborty-sushant-singh-rajput-aarushi-talwar-media-trial>
3. डॉ शिवांतिका शरद, “मनोविज्ञान और मीडिया का परिचय”, <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/79325/3/Unit-v.pdf>
4. दृष्टि आई ए एस, “समाज में मीडिया की भूमिका”, <https://www.drishtias.com/hindi/model-essays/role-of-media-in-society>
5. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स, “लोकतंत्र में निष्पक्ष मीडिया का महत्व”, [https://adrindia.org/sites/default/files/The%20Media%20round%20background%20note\\_Hindi.pdf](https://adrindia.org/sites/default/files/The%20Media%20round%20background%20note_Hindi.pdf)
6. महेंद्र सिंह बिलोनिया, “जनमत निर्माण में मीडिया की भूमिका”, <https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in>
7. डॉ. शिवानी, “जनमत निर्माण मीडिया की भूमिका”, RJPP, Vol. XXI, p. 102-110, [https://anubooks.com/uploads/session\\_pdf/16835458471.pdf](https://anubooks.com/uploads/session_pdf/16835458471.pdf)
8. एन राम, “अ न्यू फेज ऑफ सेंसरशिप क्रीप इन इंडिया”, <https://frontline.thehindu.com/columns/guest-column-media-n-ram-a-new-phase-of-censorship-creep-in-india-it-rules-2021-ban-bbc-documentary/article66463846.ece>
9. रूबल कनोजिया, “भारत में फेक न्यूज विषय वस्तु, प्रस्तुति तत्त्व, जाँच के उपकरण और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक अध्ययन”, <https://www.ajpor.org/article/21236-a-study-on-fake-news-subject-matter-presentation-elements-tools-of-detection-and-social-media-platforms-in-india>
10. मीडिया साक्षरता और महत्वपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता, <https://www.futurelearn.com/info/blog/what-is-media-literacy>
11. डॉ वनिता सोधी, “मीडिया में रूढ़िवादिता: जेंडर, राजनीति और नृजातीयता”, <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/79356/3/Block-y.pdf>
12. बिनय कुमार सिंह, “रक्तरंजित भारत: चार आक्रांता हजार घाव”, (2021), गरुड़ा प्रकाशन

– असिस्टेंट प्रोफेसर, विधि विभाग,  
वी.एस.एस.डी. महाविद्यालय, कानपुर

# भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व : स्वाधीनता से सन् 1989 तक का सफर

□ धारासिंह कुशवाहा

**सारसंक्षेप :** भारतीय लोकतंत्र की सात दशकों की यात्रा में, प्रत्येक पड़ाव पर हमारे तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने बहुआयामी एवं उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। भारत में विभिन्न सरकारों के गठन तथा बदलती सरकारों के अगणित नीति-निर्णयों के राजनीतिक तथा आर्थिक प्रभावों एवं परिणामों की बेहतर समझ की दृष्टि से, हमारे नेतृत्वकर्ताओं की राजनीतिक गतिविधियों का अध्ययन अद्वितीय महत्त्व रखता है। भारत में लोकतांत्रिक राजनीति एवं शासन के अध्ययनकर्ताओं के लिए 'राजनीतिक नेतृत्व' हमेशा से एक ध्यानाकर्षण का भी विषय रहा है। हालांकि इस दिशा में प्रयास सीमित ही रहे वो भी एक सत्य है। इस लेख को इसी दिशा में एक प्रयास माना जा सकता है। यह लेख भारतीय लोकतंत्र के उदय से लेकर गठबंधन की सरकारों का दौर शुरू होने तक, करीब चार दशकों के दौरान भारत में उपस्थित रहे राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका, उनके प्रभाव, उनकी राजनीति की शैलियों एवं बदलते राजनीतिक-सामाजिक परिवेश के साथ उनके संवाद का अध्ययन करने का प्रयास करता है।

भारतीय लोकतंत्र में सन् 1947 से 1989 तक के काल में, भारतीय राजनीति ने कई महत्त्वपूर्ण बदलावों को देखा जिनका राष्ट्रीय राजनीति और नेतृत्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। यह लेख इस अवधि के दौरान भारत के राजनीतिक नेतृत्व में बदलाव और विकास की समीक्षा भी करेगा। इस दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण सवालों पर विचार किया जाना प्रासंगिक रहेगा जैसे कि स्वतंत्र भारत में राजनीतिक नेतृत्व की विभिन्न परिपाटियाँ कौन-सी रही हैं? अलग-अलग राजनीतिक परिवेश में शासन करने वाले नेतृत्वकर्ताओं की शैलियों में क्या समानताएँ तथा भिन्नताएँ रही हैं? विभिन्न राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संकटों अथवा समस्याओं के दौर में राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने क्या भूमिका निभाई? विभिन्न नेतृत्वकर्ताओं की उपस्थिति के परिणामस्वरूप भारत की सामाजिक, राजनीतिक तथा लोकतांत्रिक शासन की संरचनाओं पर कौन से दीर्घकालिक प्रभाव देखे गए?

**मुख्य शब्द :** भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक नेतृत्व, परिवर्तनशील परिवेश, राजनीतिक चुनौतियाँ, नेतृत्व शैली, तथा नीतिनिर्माण।

## भूमिका

स्वाधीनता संग्राम की गौरवपूर्ण विरासत के परिणामस्वरूप बीसवीं सदी के मध्यकाल में, भारत वैश्विक पटल पर एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में फिर से उठ खड़ा हुआ। भारतीय लोकतंत्र की नींव रखते हुए संविधान निर्माताओं ने राष्ट्र के समक्ष उपस्थित, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक-आर्थिक क्रांति तथा मजबूत लोकतंत्र की स्थापना के तीन महान उद्देश्यों को प्रकट किया।<sup>1</sup>

भारत जैसे वैविध्यतापूर्ण एवं विशालकाय देश में, जहाँ नागरिक जनसंख्या का एक बड़ा भाग राजव्यवस्था की जटिल संरचना के प्रति चेतना का अभाव रखता हो, एक लोकतांत्रिक संविधान का निर्माण कर लेना और चुनावों में भाग लेने तथा सरकारों का निर्माण कर लेने के उद्देश्य से कुछ राजनीतिक दलों को संगठित कर लेना ही पर्याप्त नहीं माना जा सकता। लोकतंत्र का तात्पर्य शासन की एक प्रणाली मात्र से नहीं हो सकता। वास्तव में, लोकतंत्र एक आत्मनिर्भर एवं समतापूर्ण समाज के लक्ष्य की प्राप्ति का उद्देश्य रखता है जिसकी पूर्ति के लिए एक सबल, सुदृढ़ एवं जिम्मेदार 'नेतृत्व' की उपस्थिति विशेष रूप से अपरिहार्य हो जाती है।<sup>2</sup>

किसी भी देश का राजनीतिक नेतृत्व वहाँ उपस्थित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों तथा प्रतिद्वन्द्वी विचारधाराओं के पारस्परिक संवाद का परिणाम होता है।<sup>3</sup> अपने वृहद आकार के चलते भारत ने अन्य देशों की तुलना में काफी अधिक राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं को उभरने का अवसर प्रदान किया है। भारतीय राजनीतिक नेतृत्व की एक प्रमुख विशेषता यहाँ उभरने वाले राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की पृष्ठभूमियों की विविधता भरी प्रकृति रही है। भारत के सामाजिक स्वरूप के परिणामस्वरूप, यहाँ राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं द्वारा अनेक प्रकार के सामाजिक तथा आर्थिक विषयों संबंधी मुद्दों के प्रकटीकरण, प्रतिनिधित्व एवं समाधान के सन्दर्भ में प्रगाढ़ प्रवीणता का प्रदर्शन किया जाता रहा है।<sup>4</sup>

हमारी राजव्यवस्था के संचालन में संसद तथा राज्य विधानसभाओं एवं विधान परिषदों में नागरिक हितों एवं इच्छाओं का प्रतिनिधित्व

करने वाले राजनीतिक दलों का विशेष महत्त्व रहा है। नागरिक समुदाय, निर्वाचन व्यवस्था के माध्यम से इन राजनीतिक दलों एवं इनकी गतिविधियों के निरीक्षण एवं नियंत्रण का कार्य भी निरंतर करता रहता है। इस प्रकार राजनीतिक दलों की सफलता एवं विफलता की दृष्टि से नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका मूलभूत एवं निर्णायक प्रकृति की हो जाती है।<sup>5</sup> भारत में केंद्र एवं राज्य दोनों ही स्तर पर राजनीतिक नेतृत्व गतिशील, बहुमुखी एवं दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का धनी रहा है। बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुसार, भारत की जनता ने 'नवीन' राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं को उभार आने के लिए 'पर्याप्त समर्थन एवं समुचित अवसर' भी प्रदान किए हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भारत में राजनीतिक नेतृत्व का निरंतर बदलता स्वरूप एवं इसका विस्तृत होता 'प्रभाव क्षेत्र', भारतीय लोकतंत्र की जीवंत प्रकृति का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।<sup>6</sup>

किसी नेतृत्वकर्ता की राजनीतिक सक्रियता अथवा शासनतंत्र में दीर्घकाल तक उपस्थिति, उसे राजनीतिक प्रक्रियाओं तथा परिणामों को आकार देने में विशेष रूप से सक्षम बना देती है। अतः इस विषय में अध्ययन किया जाना महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि गुजरते समय के साथ विभिन्न नेतृत्वकर्ताओं की 'राजनीति की शैली' किस प्रकार निरंतर परिवर्तित एवं विकसित होती रही है; बदलती राजनीतिक एवं आर्थिक वास्तविकताओं के मध्य प्रासंगिक बने रहने तथा अपने पुराने एवं नए अनुयायियों का समर्थन बनाए रखने हेतु उनके द्वारा क्या कदम उठाए जाते रहे हैं।<sup>7</sup>

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व पर संभवतः सबसे पहला अध्ययन करने वाले रिचर्ड एल. पार्क तथा इरेने टिंकर ने माना कि "भारत के वर्तमान नेतृत्व के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ स्वरूप में विशालकाय हैं; न केवल आज की समस्याओं के सन्दर्भ में, बल्कि कल और उससे आगे की नींव रखने के संबंध में भी"।<sup>8</sup> भारतीय लोकतंत्र के अध्ययनकर्ताओं के लिए 'राजनीतिक नेतृत्व' हमेशा से एक ध्यानाकर्षण का विषय रहा है। हालांकि इस दिशा में प्रयास सीमित ही रहे वो भी एक सत्य है। वर्तमान अध्ययन कार्य को इसी दिशा में एक छोटा सा प्रयास माना जा सकता है। इस लेख के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र के उदय से लेकर गठबंधन की सरकारों का दौर शुरू होने तक, करीब चार दशकों के दौरान यहाँ उपस्थित रहे राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका, उनके प्रभाव, उनकी राजनीति की शैलियों एवं बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिवेश के साथ उनके संवाद का उल्लेख करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय लोकतंत्र के 'राजनीतिक संदर्भ' से संक्षिप्त परिचय के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, सन् 1950 के दशक के बाद से निरंतर

परिवर्तनशील रहे राजनीतिक परिवेश की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रारंभ में प्रस्तुत की गई है। इसके साथ ही, भारतीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के 'राजनीति में प्रवेश' तथा उनकी राजनीति की विभिन्न 'परिपाटियों' के वर्गीकरण संबंधी कुछ अवधारणाओं के उल्लेख को भी महत्त्व दिया गया है। तत्पश्चात्, भारतीय लोकतंत्र के शुरुआती दशक के दौरान उपस्थित रही 'नेतृत्व परंपराओं' एवं उस समय के राजनीतिक नेतृत्व की राष्ट्रनिर्माण संबंधी भूमिकाओं के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है।

भारतीय लोकतंत्र के समक्ष समय-समय पर अनेक राष्ट्रीय चुनौतियाँ उभरती रही हैं और उनका सामना करने में राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के कंधों पर विशेष उत्तरदायित्व भी रहा है। इस लेख के भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ एवं राजनीतिक नेतृत्व भाग में विभिन्न राष्ट्रीय संकटों के समय में राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की नीतियों, गतिविधियों एवं विकल्प चयन अथवा विकल्प निर्माण संबंधी भूमिकाओं के अध्ययन का प्रयास किया गया है। साथ ही, भारतीय लोकतंत्र एवं राजनीति के सन्दर्भ में 'नेतृत्वकर्ताओं की कार्यशैली' के प्रभाव एवं परिणामों के विश्लेषण का प्रयास भी किया गया है।

### **भारत में राजनीतिक नेतृत्व: परिवर्तनशील परिवेश एवं विविध परिपाटियाँ**

भारतीय समाज में विद्यमान विशेष परिस्थितियों एवं परंपराओं के दृष्टिकोण से, एक सच्चे नेतृत्वकर्ता में क्या गुण होने चाहिए? भारतीय लोकतंत्र के विशेष सन्दर्भ में एक सुप्रासंगिक 'राजनीतिक नेतृत्व' किसे माना जा सकता है? इस सवाल का सामान्य सा प्रतीत होता जवाब भी हमें भारतीय राजनीतिक नेतृत्व के अध्ययन हेतु महत्त्वपूर्ण आधारभूमि उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है। हालांकि यह एक विचारणीय विषय है कि किसी नेतृत्वकर्ता की 'नेतृत्व शैली' किस हद तक तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक वातावरण अथवा 'संचार के साधनों' की मौजूदा अवस्थिति से स्वतंत्र विकसित हो सकती है।<sup>9</sup> फिर भी "भारत के सन्दर्भ में एक प्रभावी एवं रचनात्मक नेतृत्व प्रदान करने के लिए, यह मूलभूत रूप से आवश्यक है कि नेतृत्वकर्ता को भारत के पारंपरिक अतीत तथा लोकतांत्रिक भविष्य दोनों की गहन समझ हो"।<sup>10</sup> किसी भी राजनीतिक नेतृत्वकर्ता में, भारतीय लोकतंत्र के पटल पर सफलतापूर्वक स्थापित होने के लिए मानवीय मूल्यों की सराहना, विविधताओं के प्रति सम्मान और आम लोगों के मध्य अपनी नेतृत्व क्षमता के प्रति विश्वास उत्पन्न करने संबंधी क्षमता अवश्य होनी चाहिए।

स्वाधीनता पश्चात काल में, भारतीय लोकतंत्र के शासन की बागडोर संभालने वाले राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की राजनीतिक शैलियों



की प्रासंगिकता का निर्धारण करने में 'बदलते परिवेश की आवश्यकताओं' का विशेष महत्त्व रहा है। अतः भारत में राजनीतिक नेतृत्व के बदलते हुए परिवेश के प्रवाह एवं राजनीतिक नेतृत्व की विविध परिपाटियों की रूपरेखाओं से संक्षिप्त परिचय आवश्यक हो जाता है।

**( 1 ) परिवर्तनशील परिवेश एवं राजनीतिक नेतृत्व** – पॉल आर. ब्रास मानते हैं कि "स्वतंत्रता-पूर्व काल में अधिकतर भारतीय नेतृत्वकर्ताओं की प्राधिकार शक्ति की वैधता का आधार दो स्तंभों पर टिका हुआ था: पहला, वे मूल्य एवं सिद्धांत जिनके लिए वे संघर्षशील थे तथा दूसरा, उनके व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता"।<sup>11</sup> उनके अनुसार, वैचारिक विभेदों एवं मतभेदों की उपस्थिति के पश्चात भी इन सभी नेतृत्वकर्ताओं को व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हितों के प्रति सत्यनिष्ठा एवं समर्पण भाव के लिए जाना जाता था। यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता एवं स्वाधीनता की प्रेरणा तथा औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष के उदात्तीकरणवादी प्रभावों ने, व्यक्तिगत अथवा क्षेत्रीय दृष्टिकोण में रूचिहीन, एक "राष्ट्रीय" प्रकृति के नेतृत्व की उत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त किया।<sup>12</sup> इस 'त्याग अथवा बलिदान' पर आधारित नेतृत्व की परंपरा में, जीवन मूल्यों तथा राजनीतिक आदर्शों का केन्द्रीय महत्त्व रहा।

'भारत की स्वाधीनता' के लक्ष्य की प्राप्ति के साथ ही राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं में मनोवैज्ञानिक स्तर पर आकस्मिक परिवर्तन देखे गए, लेकिन आम लोगों की मनोस्थिति पर स्वतंत्रतापूर्व की राजनीतिक परंपराओं का प्रभाव दीर्घकाल तक बना रहा; यह तथ्य, राजनीति से जनता की 'अपेक्षाओं' तथा राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं द्वारा उनकी 'पूर्ति' के मध्य विद्यमान व्यापक अंतर की व्याख्या करता है।<sup>13</sup> भारत में जनता द्वारा यह आशा की जाती है कि राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के लिए राजनीति 'व्यक्तिगत संवृद्धि हेतु सत्ता प्राप्ति का मार्ग' मात्र नहीं है। बल्कि राष्ट्रीय उन्नति एवं जनकल्याण सुनिश्चित करने का एक महत्त्वपूर्ण जरिया है। किन्तु सन् 1960 के दशक के अंतिम कुछ वर्षों के दौरान भारत में राजनीतिक आदर्शों एवं मानव मूल्यों का उतरोत्तर हास देखा गया।<sup>14</sup>

भारत में राजनीतिक नेतृत्व संबंधी परिस्थितियों पर एक निर्णायक प्रभाव का विषय 'राज्यों का भाषायी आधार पर पुनर्गठन' भी रहा है। इस अहम बदलाव के परिणामस्वरूप, न केवल क्षेत्रवादिता प्रबल होती गई बल्कि भाषायी एवं क्षेत्रीय एकरूपता पर आधारित 'स्थानीय राजनीतिक नेतृत्व' को भी प्रोत्साहन मिला। राष्ट्रीय नेतृत्वकर्ताओं की लोकप्रियता में गिरावट तथा विसंस्थाकरण ("डीइंस्टीट्यूशनलाइजेशन"<sup>15</sup>) के साथ ही इन प्रवृत्तियों की प्रभाव क्षमता भी बढ़ती गई। इस प्रक्रिया

में, राजनीतिक सत्ता का संतुलन 'केंद्र से राज्यों की ओर' खिसकने लगा।

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व की 'समर्पण एवं बलिदान' पर आधारित परंपरा को, समय के साथ, 'राजनीतिक विशेषज्ञता' पर आधारित परंपरा द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया।<sup>16</sup> राजनीतिक उद्यमिता अथवा राजनीति की कला में प्रवीणता पर आधारित, एक पूर्णतः नवीन प्रकार की नेतृत्व शैली वाले राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं का उदय हुआ।<sup>17</sup> भारत में केन्द्रीय सरकारों के गठन में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की असमर्थता के चलते, सन् 1990 के दशक में 'गठबंधन की सरकारों का दौर' चला। ऐसे समय में भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति को स्थिरता प्रदान करने के सन्दर्भ में, पहले 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' एवं तत्पश्चात अस्तित्व में आए 'संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन' जैसे 'राजनीतिक नवाचारों' की भूमिका का अद्वितीय महत्त्व रहा है।

भारतीय राजनीति के बदलते परिवेश में भी अनेक राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक शैली की विशिष्टताओं के माध्यम से 'परिस्थितियों के प्रभाव एवं दबाव के विरुद्ध', राजनीति में नेतृत्वकर्ता के 'व्यक्तित्व के प्रभाव' के महत्त्व को प्रकाश में लाने का कार्य किया। इस दिशा में डॉ. अम्बेडकर, सी. राजगोपालाचारी, जयप्रकाश नारायण एवं राम मनोहर लोहिया जैसे अनेकानेक नेतृत्वकर्ताओं को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। इसी श्रेणी के एक विशिष्ट नेतृत्वकर्ता के रूप में, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने स्वाधीनतापूर्व काल से ही भारतीय राजनीति के प्रत्येक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने भ्रष्टाचार की समस्या से ग्रसित राजनीतिक परिवेश में भी 'निष्कलंकता' पर आधारित प्रभावपूर्ण राजनीतिक नेतृत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।<sup>18</sup>

**( 2 ) राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश के मार्ग एवं नेतृत्व की विविध परिपाटियाँ** – भारत जैसे बहुलतावादी, सांस्कृतिक रूप से जटिल तथा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक समाज-व्यवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की 'राजनीति की शैलियों' का परस्पर सह-अस्तित्व देखा जा सकता है।<sup>19</sup> तात्पर्य यह है कि तत्कालीन परिवेश के प्रभावस्वरूप कुछ मूलभूत समरूपताओं के पश्चात भी, भारतीय राजनीति के इतिहास में विविध प्रकृति की 'नेतृत्व शैली' की परस्पर समकालिक उपस्थितियों को रेखांकित करना असंभव नहीं है।

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व विषय के बहुआयामी परिप्रेक्ष्य के अध्ययन की दिशा में, नेतृत्व शैली की विविधताओं को प्रकाश में लाने से पहले, राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश हेतु उपलब्ध 'विभिन्न मार्गों' से संक्षिप्त परिचय किया जाना बेहद महत्त्वपूर्ण है। इस विषय में, हेनरी सी. हार्ट ने भारतीय लोकतंत्र में शीर्ष नेतृत्व

की भूमिका तक पहुँचने के लिए तीन अलग-अलग मार्गों अथवा 'पाथवेज टु पॉवर' का उल्लेख किया है- संस्थागत सोपान, सांस्कृतिक नायक का राजनीति में प्रवेश तथा वंशानुगत उत्तराधिकार।<sup>20</sup>

हार्ट द्वारा निर्दिष्ट 'संस्थागत मार्ग' के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश, नेतृत्वकर्ता द्वारा अपने राजनीतिक दल के संगठनात्मक कार्यों तथा शासनकाल के दौरान व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों के निर्वहन की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। हालांकि यह मार्ग नेतृत्वकर्ताओं के राजनीतिक उन्नयन की किसी सुगठित चरणबद्ध प्रक्रिया पर आधारित नहीं है। किन्तु इस मार्ग में पदाभिलाषी लोगों के द्वारा, अधिक महत्वपूर्ण पदों एवं वृहद जिम्मेदाराना भूमिकाओं की प्राप्ति के लिए अपनी योग्यताओं का प्रदर्शन विशेष महत्व रखता है।

इस प्रथम मार्ग का एक महत्वपूर्ण सकारात्मक पक्ष भी है। चूँकि 'राजनीतिक वरिष्ठता' का प्रत्येक चरण प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति रखता है एवं कुछ सीमा तक शीर्ष पद की अर्हताओं से भी संबंधित होता है, "भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व: स्वाधीनता से सन् 1989 तक का सफर शीर्ष पद के अन्य दावेदारों द्वारा नेतृत्वकर्ता के प्राधिकार की वैधता को स्वीकृत कर लेने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं"।<sup>21</sup> इस मार्ग के अनुसरणकर्ताओं में, हेनरी सी. हार्ट ने लाल बहादुर शास्त्री को एक महत्वपूर्ण उदाहरण माना। लाल बहादुर शास्त्री ने स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात, उत्तरप्रदेश में संगठनात्मक एवं शासन कार्यों के अलावा 1952 के प्रथम आम चुनावों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1956 के दौरान रेल दुर्घटनाओं के विषय में मंत्री पद से इस्तीफा देकर, उन्होंने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा सार्वजनिक जवाबदेहिता के विषयों के प्रति अपनी संवेदनशीलता का परिचय दिया। 'कामराज योजना' के परिणामस्वरूप गृहमंत्री पद त्याग देने के पश्चात, नेहरू मंत्रिमंडल में 'बिना पोर्टफोलियो के मंत्री' पद के उत्तरदायित्व का निर्वहन भी 'शीर्ष पद' पर पहुँचने से पहले 'संस्थागत मार्ग' का ही एक चरण माना जा सकता है।<sup>22</sup>

'सांस्कृतिक नायक के राजनीति में प्रवेश' संबंधित द्वितीय मार्ग के उल्लेख के माध्यम से, हेनरी सी. हार्ट ने फिल्म अभिनेताओं द्वारा जनता में अपनी प्रचलित छवि एवं लोकप्रसिद्धि को राजनीतिक जनसमर्थन में बदलने के प्रयासों को प्रकाश में लाया है। "जनवरी 1983 में आंध्र प्रदेश में 'एन. टी. रामाराव' की चुनावी जीत ने यह संकेत किया कि फिल्म सुपरस्टार के रूप में एक करियर, राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश का एक महत्वपूर्ण मार्ग प्रदान कर सकता है; तमिलनाडु में सामने आया 'एम. जी. रामचंद्रन मॉडल' अब एक संयोग मात्र नहीं माना जा सकता"।<sup>23</sup> एन. टी. रामाराव ने स्थानीय जनता के 'सांस्कृतिक आत्म' के साथ अपनी प्रसिद्ध छवि का तादात्म्य

स्थापित करने में सफलता पाई। करीब "3,000 वर्ष प्राचीन तेलुगु संस्कृति", केन्द्र सरकारों के हस्तक्षेप के विरुद्ध 'राजनीतिक प्रतिष्ठा' तथा लोकलुभावनवादी वादों ने एन. टी. रामाराव के फिल्मी 'करिश्मा' को चुनाव अभियान में सफलतापूर्वक स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।<sup>24</sup> राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश के इस मार्ग में 'सफलता प्राप्ति की शर्तों एवं संभावनाओं' पर गहन विचार करके, इस मार्ग की उपलब्धता संबंधी सीमाओं का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस मार्ग की उपयोगिता 'भाषायी राज्यों' के रूप में पहचान रखने वाले राज्यों में विशेष महत्व की प्रतीत होती है। हालांकि "हिंदी फिल्म अभिनेताओं ने भी चुनाव जीते हैं, लेकिन उन्होंने जो जनसमर्थन प्राप्त किया है वो सत्तारूढ़ सरकारों के विरुद्ध जाकर उनका अनुसरण करने को तैयार नहीं होता"।<sup>25</sup>

हेनरी सी. हार्ट द्वारा चिन्हित, राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश का तृतीय मार्ग 'वंशानुगत उत्तराधिकार' से संबंध रखता है। मात्र विरासत के माध्यम से शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व की प्राप्ति की प्रक्रिया में नेतृत्वकर्ता के समक्ष व्यक्तिगत योग्यताओं, नेतृत्व संबंधी क्षमताओं अथवा चारित्रिक विशेषताओं के प्रदर्शन अथवा यथासंभव प्रयोग की बाधाएँ नहीं होती। इस मार्ग में, पूर्व राजनीतिक भूमिकाओं में प्रदर्शन अथवा अनुभव के परिप्रेक्ष्य को भी कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता। यहाँ एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन का विषय तब उभरकर आता है जब उत्तराधिकारी के चयन में 'प्रतिस्पर्धात्मकता' का आयाम उपस्थित हो, जैसा कि सन् 1966 से सन् 1971 तक की अवधि के दौरान इंदिरा गांधी के सन्दर्भ में था।<sup>26</sup> इंदिरा गांधी ने अपनी असाधारण इच्छाशक्ति, रणनीतिक कुशलता तथा लोकप्रिय अपील के माध्यम से एक 'औपचारिक एवं अस्थायी' प्रतीत होते कार्यकाल में से 'वास्तविक राजनीतिक नियंत्रण' हासिल किया। इस प्रक्रिया में, उन्होंने सन् 1971 के आम चुनावों के माध्यम से अपने नेतृत्व के प्राधिकार हेतु जनसमर्थन रूपी वैधता प्राप्त की। किन्तु 'वंशानुगत उत्तराधिकार' पर आधारित राजनीतिक नेतृत्व के समक्ष भारतीय समाज, संविधान अथवा लोकतंत्र के लिए 'प्रतिबद्धता के परीक्षण' के अभाव को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। "एक लोकतंत्र के लिए यह एक जोखिम भरा रास्ता है"।<sup>27</sup>

भारत में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में प्रवेश संबंधी मार्गों से परिचय के पश्चात, राजनीति की विविध परिपाटियों के संबंध में उल्लेख किया जा सकता है। इस विषय में, डब्ल्यू. एच. मॉरिस-जोन्स के द्वारा भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति की प्रकृति के मूल में विद्यमान तीन "राजनीतिक भाषाओं (पॉलिटिकल इडियम्स)" का उल्लेख किया गया है - 'आधुनिक', 'पारंपरिक' तथा 'पुण्यशील'।<sup>28</sup> राजनीति की

‘भाषाओं (इंडियम्स)’ शब्द से उनका तात्पर्य काफी विस्तृत है; यह शब्द राजनीतिक व्यवहारों, परिपाटियों एवं शैलियों जैसे महत्त्वपूर्ण संकेत शब्दों को आत्मसात करता है।

‘राजनीति की ‘आधुनिक भाषा’ भारतीय संविधान तथा न्यायालयों की भाषा है; संसदीय बहस तथा उच्चतर प्रशासन में प्रयोग की यह भाषा सार्वजनिक नीतियों, कार्यक्रमों एवं योजनाओं की भाषा है। वहीं राजनीति की ‘पारंपरिक भाषा’ का विशुद्ध रूप ‘ग्रामीण भारत’ (जिसमें शहरों में उपस्थित ग्रामीण परिवेश भी शामिल है) में देखा जाता है। राजनीति की इस शैली का स्वरूप स्थानीय एवं समुदाय आधारित है; जाति, उपजाति, समुदाय अथवा संप्रदाय आदि पारंपरिक राजनीतिक व्यवहार के मूलभूत तत्व हैं। अंत में, ‘पुण्यवादी’ अथवा संत प्रकृति की राजनीतिक शैली बहुत कम उपयोग किए जाने के कारण ‘भारतीय राजनीति के हाशिये’ पर उपस्थित है। तत्कालीन संदर्भों में आचार्य विनोबा भावे एवं जयप्रकाश नारायण द्वारा राजनीतिक शक्ति से दूर रहते हुए स्वार्थत्याग, भ्रातृत्व एवं समरसता के प्रचार-प्रसार संबंधी भूमिकाओं के निर्वहन को इसके उदाहरणों के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में राजनीतिक शैलियों अथवा राजनीतिक व्यवहार का यह वर्गीकरण, हमारी ‘राजनीतिक व्यवस्था’ एवं ‘सामाजिक संरचना’ के पारस्परिक अंतर्संबंधों के मूल्यांकन पर आधारित है। स्वतंत्रता पूर्व काल में ‘औपनिवेशिक शासन’ एवं ‘सीमित मताधिकार’ ने इन्हें पृथक बनाए रखा किन्तु स्वाधीनता एवं सार्वभौमिक मताधिकार के आगमन के साथ ही भारत में ‘राजनीति तथा समाज’ का प्रत्यक्ष संवाद स्थापित हुआ। राजनीति की आधुनिक भाषा से शासन संस्थाओं, प्रशासनिक गतिविधियों एवं राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की संबंधता के कारण भारतीय लोकतंत्र में इसका विशेष महत्त्व है। “यह भारतीय राजनीति की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है, जिसमें ‘राजनीतिक’ के रूप में प्रत्याशित का अधिकांशतम भाग सम्मिलित है”<sup>29</sup> राजनीतिक परिवेश में आधुनिक शैली के प्रभुत्व के पश्चात भी, स्वाधीन भारत में राजनीति की पारंपरिक भाषा की उपयोगिता समय के साथ बढ़ी है। भारत में स्थानीय क्षेत्रों, ग्रामीण समुदायों एवं पारंपरिक संस्थाओं के नेतृत्व तंत्र के ‘दलगत राजनीति एवं चुनाव व्यवस्था’ से परिचय के साथ ही, पारंपरिक परिवेश की जनता से ‘आधुनिक भाषा’ के माध्यम से संपर्क साध पाने संबंधी सीमाएँ दृष्टिगोचर हुई हैं। वास्तव में, पारंपरिक राजनीति की शैली को ‘भाषायी’ आयाम से अधिक एक विशेष प्रकार के ‘व्यवहार’ के रूप में बेहतर समझा जा सकता है; इसका प्रयोग वक्तृत्व की अपेक्षा कृतत्व में अधिक देखा जाता है। इसके विपरीत, पुण्यशील राजनीतिक शैली का उपयोग भाषायी परिप्रेक्ष्य में अधिक और व्यवहार में कम प्रदर्शित

होता है। “इस भाषा की अपील भारत में सभी वर्गों के लोगों तक व्यापक पहुँच रखती है, अधिकतर लोगों के द्वारा इसे महात्मा गांधी की राजनीतिक शैली के रूप में जाना जाता है”<sup>30</sup>

रणजीत गुहा ने माना कि मॉरिस-जोन्स द्वारा प्रस्तुत रूपरेखा का यथोचित संशोधित एवं विस्तृत रूप, स्वाधीन भारत के पटल पर विद्यमान रही राजनीतिक नेतृत्व की विविध शैलियों के अध्ययन के सन्दर्भ में विशेष उपयोगिता रखता है।<sup>31</sup> गुहा ने भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति की इन तीन भाषाओं को ‘वाक्पटुता अथवा वाग्मिता’ की शैलियों के सन्दर्भ में वर्णित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, राजनीति की आधुनिक भाषा की अभिव्यक्ति अक्सर ‘आशावादी’ वक्तृत्व के माध्यम से की जाती है – एक समृद्ध एवं बेहतर जीवन (भौतिकता के सन्दर्भ में अथवा अन्यथा) की पेशकश। दूसरी ओर, पारंपरिक भाषा के मूल में ‘असुरक्षा अथवा चेतावनी’ संबंधी वक्तृत्व होता है – किसी सामाजिक समुदाय अथवा क्षेत्र विशेष के लोगों की उन्नति अथवा सुरक्षा हेतु उनके संगठित रहने संबंधी सुझाव। अंततः पुण्यवादी अथवा संत प्रकृति की भाषा में ‘त्याग एवं बलिदान’ के वक्तृत्व का प्रयोग होता है – किसी अनैतिक व्यवस्था में सुधारात्मक बदलाव लाने के लिए, लोगों से सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को छोड़ने की अपील।

इस प्रकार भारतीय राजनीतिक नेतृत्व की बहुआयामी प्रकृति को समझने के लिए, हेनरी सी. हार्ट एवं मॉरिस-जोन्स के द्वारा प्रस्तुत विचार एक सुप्रासंगिक प्रस्थान बिन्दु उपलब्ध कराते हैं। भारतीय राजनीतिक नेतृत्व के अध्ययन में, राजनीति में प्रवेश एवं राजनीतिक भाषा शैली के अलावा, राजनीतिक संगठन, चुनावी मुद्दे, शासनकाल की सफलता-विफलता तथा राष्ट्र की तत्कालीन आवश्यकताओं जैसे अनेकों नेक परिस्थितियों संबंधी आयामों को शामिल किया जाना महत्त्वपूर्ण है और आवश्यक भी।

### भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ एवं राजनीतिक नेतृत्व

रॉबर्ट सी. टकर के अनुसार, एक राजनीतिक नेतृत्वकर्ता किसी उत्पन्न ‘समस्या परिस्थिति’ का मूल्यांकन करता है और पूरे राजनीतिक समुदाय के लिए आगे की कार्रवाई हेतु मार्ग निर्धारित करता है।<sup>32</sup> भारतीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के अध्ययन में भी इस विषय के प्रमुख सवाल विशेष महत्ता रखते हैं। देश के समक्ष उभरी चुनौतियों के प्रत्युत्तर में, विभिन्न संकट के अवसरों पर नेतृत्वकर्ताओं ने अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन किस प्रकार किया? किन मायनों में उन्हें सफलता मिली, किन अवसरों पर उनसे त्रुटियाँ हुईं? राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था के अनुरक्षण की दिशा में उन्होंने क्या कदम उठाए? एक राजनीतिक समुदाय के रूप में संपूर्ण राष्ट्र की एकता बनाए रखने में, राजनीतिक नेतृत्व ने क्या भूमिका निभाई? इन सभी सवालों के

स्पष्ट जवाब पाने के लिए, बदलते परिवेश में भारत के समक्ष उभरी विभिन्न समस्याओं तथा उनके समाधान की दिशा में तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व की नीतिगत प्राथमिकताओं के मूल्यांकन के प्रयास की आवश्यकता है।

सन् 1960 के दशक की शुरुआत में चीन के साथ युद्ध में, स्वतंत्र भारत ने अपना सबसे बड़ा अपमान झेला। इसके परिणामस्वरूप भारतीय लोकतंत्र के आंतरिक राजनीतिक परिवेश में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। इस घटना के बाद, पंडित नेहरू के वर्चस्ववादी नेतृत्व को कांग्रेस के भीतर एवं बाहर स्पष्ट विरोध का सामना करना पड़ा। दो आकस्मिक परिणाम थे : तत्कालीन रक्षा मंत्री कृष्णा मेनन का इस्तीफा (पंडित नेहरू की इच्छा के विरुद्ध) तथा भारतीय विदेश नीति में मूलभूत परिवर्तन।<sup>33</sup> हेनरी सी. हार्ट ने इस विषय का गहन अध्ययन किया और माना कि “यदि शीर्ष नेतृत्वकर्ताओं को स्वावलंबी मानस रखने वाले सह-नेतृत्वकर्ताओं से लगातार ‘मजबूत एवं सकारात्मक’ आपत्तियों का सामना करना पड़ता हो तो नीतिगत निर्णयों के गैर-यथार्थवादी तत्त्वों को समय रहते संशोधित किया जा सकता है। जब वल्लभभाई पटेल जीवित थे, नेहरू के लिए वे इसी तरह के आलोचक थे”<sup>34</sup> पंडित नेहरू के नेतृत्व के करिश्मा के क्षीण होने के साथ ही ‘नेहरू युग’ के समापन के संकेत मिलने लगे। भारतीय राजनीतिक परिवेश में ‘सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण’ को लेकर व्याकुलता के चलते, नेहरू के बाद कौन? बहस ने जोर पकड़ा।

हालांकि ‘नेतृत्व’ एक ऐसी घटना है जो मानव जीवन की प्रत्येक गतिविधि में व्याप्त रहती है लेकिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का दावा करने वाले तथा अल्प समय में आधुनिकीकरण की इच्छा रखने वाले, एक उभरते लोकतंत्र में इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय राजव्यवस्था के “इस विशाल प्रयोग का भविष्य उन नेतृत्वकर्ताओं के निरंतर एवं स्थिर प्रवाह पर निर्भर करता है, जिन पर ‘सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति’ के लिए निर्भर रहा जा सके”<sup>35</sup> इस सन्दर्भ में भारतीय लोकतंत्र भाग्यशाली रहा है।

सिंडिकेट से प्राप्त समर्थन के कारण, लाल बहादुर शास्त्री को कांग्रेस पार्टी के सदस्यों के बीच स्पष्ट बहुमत प्राप्त था।<sup>36</sup> किन्तु चुनौतियाँ और भी थी। “जब शास्त्री जी ने प्रधानमंत्री का पद संभाला, उस समय तक तीसरी पंचवर्षीय योजना की विफलता के स्पष्ट संकेत मिल चुके थे”<sup>37</sup> राष्ट्रीय आय की वृद्धि का जनसंख्या वृद्धि के साथ तालमेल नकारात्मक था, कीमतों में भारी इजाफा हो रहा था और खाद्यान्न की दुर्लभता बढ़ती जा रही थी। चौथी पंचवर्षीय योजना के निर्माण में, राजनीतिक नेतृत्व की ‘प्राथमिकताओं में बदलाव’ की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है। पिछली सरकारों की भारी उद्योगों के

विकास पर केन्द्रित नीतियों के विपरीत, प्रधानमंत्री शास्त्री कृषि विकास को बढ़ावा देना चाहते थे। सन् 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद, तत्कालीन कृषि मंत्री सी. सुब्रमण्यम ने कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए त्रि-आयामी योजना का निर्माण किया। इस योजना में किसानों के लिए मूल्य प्रोत्साहन, बीजों की अधिक उपज वाली किस्मों के उपयोग तथा सिंचित क्षेत्रों में उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग की वकालत की गई।<sup>38</sup>

लाल बहादुर शास्त्री के करीब उन्नीस महीनों के कार्यकाल में, राष्ट्र को एक के बाद एक अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उनके नेतृत्व में भारत ने सभी संकटों का धैर्यपूर्वक एवं बहादुरी से सामना किया। प्रधानमंत्री के रूप में, उनके नेतृत्व को खाद्य आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करके समय रहते देश को खाद्य संकट से बचाने तथा ‘हरित क्रांति’ का मार्ग प्रशस्त करने के लिए जाना जाता है। सन् 2010-2011 तक भारत दूध के वैश्विक उत्पादन में 17 प्रतिशत का भागीदार था; भारत में ‘श्वेत क्रांति’ की आधारशिला रखने का श्रेय भी तत्कालीन सरकार की नीतिगत दूरदर्शिता को ही दिया जाता है।<sup>39</sup> सन् 1965 में जम्मू एवं कश्मीर में पाकिस्तानी सेना के दुस्साहस का जवाब देना, तत्कालीन प्रधानमंत्री शास्त्री के नेतृत्व की सबसे बड़ी परीक्षा थी। भारत के विरुद्ध पाकिस्तानी सेना की युद्ध क्षमता को बेअसर करने के लिए भारतीय सेना को पाकिस्तानी सीमा में प्रवेश करने की अनुमति देने के कारण, उन्हें पहली ‘सर्जिकल स्ट्राइक’ का श्रेय भी दिया जाता है।<sup>40</sup>

उनका प्रसिद्ध नारा “जय जवान, जय किसान”, भारत में ‘कृषि एवं राष्ट्रीय सुरक्षा’ दोनों ही क्षेत्रों को उनकी प्राथमिकता का प्रतीक है। व्यक्ति केन्द्रित शासन से संस्थागत सरकार की ओर, औद्योगिक क्षेत्र से कृषि की ओर तथा कमान अथवा नियोजन से अर्थव्यवस्था की ओर परिवर्तन, लाल बहादुर शास्त्री के राजनीतिक नेतृत्व की विरासत के प्रमुख तत्व रहे।<sup>41</sup> राजनीति की उनकी शैली सहयोग, सहमति एवं परामर्श पर आधारित थी। “तत्कालीन पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल अयूब खान का शास्त्री जी के पार्थिव शरीर को कंधा देने वाले पदाधिकारियों में शामिल होना, उनके प्रति उस देश के शीर्ष नेतृत्वकर्ता द्वारा दिखाये गए आदर एवं सम्मान को प्रदर्शित करता है जो कुछ महीनों पहले भारत के साथ युद्ध में था”<sup>42</sup>

लाल बहादुर शास्त्री की अकाल मृत्यु के साथ ही, भारतीय राजनीतिक नेतृत्व में ‘त्याग एवं बलिदान की परंपरा’<sup>43</sup> राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की संतानों की राजनीतिक परिपाटी का सूर्य भी अस्त हो गया। सन् 1960 के दशक के अंत में, भारतीय लोकतंत्र का संपूर्ण राजनीतिक परिदृश्य रूपांतरण की प्रक्रिया से गुजर रहा था। इसी परिवेश में भारत

के शीर्ष नेतृत्वकर्ता की भूमिका में इंदिरा नेहरू गांधी का आगमन हुआ।

किसी भी राजनीतिक नेतृत्वकर्ता का व्यक्तित्व उसकी राजनीति की शैली के मूल में विद्यमान विभिन्न प्रेरणाओं का मौलिक स्रोत होता है। बचपन से ही एकाकीपन, कमजोर स्वास्थ्य, स्वयं के प्रति हीनता की भावना, परिवार में आंतरिक टकराव, हमउम्र साथियों में अस्वीकृति आदि का अनुभव करते हुए, इंदिरा गांधी भावनात्मक रूप से तनाव के माहौल में पली बढ़ी।<sup>44</sup> इन सबके कारण 'असुरक्षा' का भाव उनके व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका था। इस सन्दर्भ में हेनरी सी. हार्ट का अध्ययन एक बेहद महत्वपूर्ण कार्य है।<sup>45</sup> उनके अनुसार, इंदिरा गांधी ने विपरीत परिस्थितियों में डटे रहने तथा दूसरों से कभी आहत न होने के लिए, एक दृढ़ आंतरिक संकल्प शक्ति को विकसित कर लिया था। इंदिरा गांधी के राजनीतिक व्यक्तित्व को सुदृढ़ रूप लेने का अवसर प्रधानमंत्री के रूप में मिला। अपने आसपास उपस्थित किसी भी व्यक्ति पर विश्वास न करते हुए, इंदिरा गांधी भारतीय राजनीतिक जीवन पर प्रभुत्व स्थापित करने तथा अपनी नेतृत्व की भूमिका में 'सत्ता प्राप्ति के लिए एक अथक अभियान' हेतु दृढ़ संकल्पित हो गईं।<sup>46</sup>

किसी देश की राजनीतिक संस्कृति तथा नेतृत्वकर्ताओं के राजनीतिक व्यक्तित्व के मध्य परस्पर 'कारण एवं प्रभाव संबंध' लगातार बना रहता है। वास्तव में, राजनीतिक नेतृत्वकर्ता सामाजिक शून्यता में कार्य नहीं करते। यदि वे परिवेश को प्रभावित करते हैं तो परिवेश भी उनकी गतिविधियों पर गहरा असर डालता है। इंदिरा गांधी के व्यक्तित्व, सत्ता के लिए उनके अभियान तथा प्रचलित सामाजिक परिवेश के बीच एक जटिल संबंध था। बदलते राजनीतिक परिवेश में, नई सामाजिक ताकतों के उदय एवं 'आत्म-उन्मुख राजनीति' की नई शैली के आगमन का उनको एहसास था। योगेंद्र के. मालिक के अनुसार मूलभूत निष्कर्ष यह है कि "व्यक्तिगत रूप से किसी वैचारिक प्रतिबद्धता या उच्च नैतिक उद्देश्य की अनुपस्थिति के कारण, इंदिरा गांधी ने साठ के दशक के उत्तरार्ध की नैतिकता-निरपेक्ष राजनीतिक संस्कृति का अपने राजनीतिक अपकर्ष के लिए प्रयोग किया"।<sup>47</sup>

चुनावों में अपनी राजनीतिक जीत तथा पाकिस्तान से युद्ध में भारत की ऐतिहासिक विजय सुनिश्चित हो जाने के पश्चात, श्रीमती गांधी ने 'गरीबी' के मुद्दे को संबोधित करने का प्रयास किया। इस सन्दर्भ में उन्होंने दो मार्ग अपनाए। पहला, सार्वजनिक क्षेत्र की योजनाओं द्वारा, लेकिन इस विकल्प पर 'सरकार की वितरण' करने की क्षमता ने सीमाएँ लगा दी; दूसरा, भूमि सुधार के माध्यम से, यह कांग्रेस पार्टी के द्वारा अपनाई गई एक ऐसी नीति थी जिसकी सफलता में उसके

क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं की कोई दिलचस्पी नहीं थी तथा न्यायपालिका की निचली अदालतों ने भी बाधाओं को बढ़ाने का ही कार्य किया।<sup>48</sup> भारत में 'निर्धनता उन्मूलन' के उनके प्रयास, तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक संरचनाओं की बाधाओं के अपर्याप्त एवं दुर्बल मूल्यांकन से ग्रसित थे। किन्तु, अपनी संपूर्ण राजनीतिक ऊर्जा से एक विशालकाय राष्ट्रीय समस्या की ओर संकेत करने का श्रेय उन्हें दिया जाना चाहिए।

सन् 1970 के दशक का पूर्वार्द्ध, भारतीय लोकतांत्रिक राजव्यवस्था में अस्थिरता का साक्षी रहा है। विभिन्न राजनीतिक कारकों की जटिल भूमिका के कारण, इस विषय में 'तटस्थ एवं स्पष्ट' मूल्यांकन का प्रयास विशेष चुनौतियाँ पेश करता है।<sup>49</sup> किन्तु यह सत्य है कि तत्कालीन राजनीतिक परिवेश में, कीमतों में वृद्धि तथा खाद्यान्न की आपूर्ति में कमी के कारण अर्थव्यवस्था पर भारी संकट मंडरा रहा था। शिक्षित बेरोजगारों की बढ़ती जनसंख्या के चलते, जनअसंतोष ने राजनीतिक आंदोलनों का रूप धारण कर लिया। सन् 1974-1975 में बिहार तथा गुजरात में छात्रों एवं बेरोजगार युवाओं के आंदोलन, शासनतंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार तथा आजीविका की चुनौतियों संबंधी मुद्दों पर आधारित थे। इसके अतिरिक्त, 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मार्च 1971 के चुनावों में रायबरेली से इंदिरा गांधी के चुनाव को अमान्य घोषित कर दिया। निष्कर्ष यह है कि तत्कालीन भारतीय नेतृत्व के सम्मुख 'राजनीतिक वैधता का संकट' आ गया था।

इसके प्रतिक्रियास्वरूप, इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा से यह विश्लेषण प्राप्त किया जा सकता है कि नेतृत्वकर्ता अपने पद की प्रकृति स्वयं निर्धारित करता है; वह अपनी संवैधानिक एवं राजनीतिक शक्तियों के प्रयोग के माध्यम से अपने पद की भूमिका का रूपांतरण कर सकता है।<sup>50</sup> साथ ही, आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी के फैसलों पर संजय गांधी की उपस्थिति के प्रभाव से, राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की कार्यशैली पर उनके 'करीबी घेरे' के होने वाले प्रभाव को भी पुष्टि मिलती है।<sup>51</sup> वास्तव में, 'आपातकाल' को भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था का सबसे चुनौतीपूर्ण दौर माना जाता है। तत्कालीन समय में यह भी दुर्भाग्यपूर्ण ही रहा कि संजय गांधी के द्वारा भारत की शासन संस्थाओं के मनमाने प्रयोग के कारण, 'गरीबी हटाओ' का शासन सन् 1977 के आम चुनावों तक 'गरीब हटाओ' के लिए जाना जाने लगा।

भारतीय लोकतंत्र के 'आपातकाल' के दौर में 'गैर-संस्थापित' ('नॉन-कॉन्स्टिट्यूटेड'<sup>52</sup>) नेतृत्व, विशेषकर जयप्रकाश नारायण के प्रभावपूर्ण महत्त्व को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। इस सन्दर्भ में सत्तारूढ़ दल से बाहर मौजूद, तत्कालीन नेतृत्वकर्ताओं एवं विपक्षी दलों की भूमिका की भी सराहना की जानी चाहिए जिन्होंने भारतीय

लोकतंत्र के संकटकाल में जनता की आवाज को एकजुट नेतृत्व प्रदान किया और भारत के संविधान की सर्वोच्चता को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रिशवंथ रेड्डी लिखते हैं कि “आपातकाल के दौरान गिरफ्तार किए गए अधिकांश नेतृत्वकर्ता लंबे समय तक भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर हावी रहे और उन्होंने भारतीय राजनीति में अपनी उपस्थिति के माध्यम से विशेष योगदान भी दिए – जैसे कि अटल बिहारी वाजपेयी, एल.के. आडवाणी, जॉर्ज फर्नांडिस, अरुण जेटली, बीजू पटनायक, मुलायम सिंह यादव, रामविलास पासवान, लालू प्रसाद यादव, बी.एस. येदियुरप्पा तथा एम.के. स्टालिन”<sup>53</sup> वास्तव में भारतीय राजनीति में आपातकाल के परिणामस्वरूप, न केवल आमजन का कांग्रेस से मोहभंग हुआ बल्कि विपक्षी राजनीतिक दलों तथा नवीन राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं को उभरने एवं राजनीतिक पोषण पाने का अवसर भी मिला। भारतीय राजनीतिक इतिहास में यह देखना दिलचस्प है कि किस प्रकार “लोकतंत्र को नष्ट करने के लिए उठाये गए एक कदम के रूप में देखी जाने वाली घटना ने, राजनीतिक विपक्ष को विस्तार पाने का अवसर देकर लोकतंत्र को और भी अधिक मजबूत किया”<sup>54</sup>

हेनरी सी. हार्ट ने भारतीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका के अध्ययन में ‘चुनावों में विजय प्राप्त करने’ को एक महत्वपूर्ण आयाम माना है<sup>55</sup> उनके अनुसार चुनाव प्रक्रिया की निरंतरता, ‘नेतृत्वकर्ताओं की नियुक्ति’ तथा ‘नीतियों के लिए जनसमर्थन को लामबंद’ करने के सन्दर्भ में मूलभूत महत्व रखती है। राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के लिए “चुनावों के उपयोग तथा उनकी सीमाएँ कभी भी इतनी स्पष्ट नहीं रही, जितनी की सन् 1977 के आम चुनाव में”<sup>56</sup> तात्पर्य यह है कि आपातकाल के बाद के इस चुनाव की मौलिक उपयोगिता – ‘इंदिरा गांधी के शासन के प्राधिकार की वैधता पर जनता की राय जानना’ – कांग्रेस एवं विपक्षी दलों के नेतृत्वकर्ताओं के लिए पूर्व-निर्धारित थी। साथ ही, जनता सरकार का अधूरा कार्यकाल राजनीतिक नेतृत्व के सन्दर्भ में चुनावों की सीमाओं को भी स्पष्ट करता है। चुनाव शासन के प्राधिकार की वैधता प्रदान कर सकते हैं, शासन करने और नीतियों को लागू करने की क्षमता नहीं।

भारतीय लोकतंत्र की प्रथम गैर-कांग्रेसी सरकार का निर्माण करने वाली, सन् 1977 के आम चुनावों की विजेता ‘जनता पार्टी’ मोरारजी देसाई की कांग्रेस (ओ), चरण सिंह के भारतीय लोक दल, भारतीय जनसंघ और सोशलिस्ट पार्टी जैसे अनेक दलों के विलय के पश्चात अस्तित्व में आई थी। अक्सर ‘जनता पार्टी के निर्माण’ की जटिल प्रक्रिया को, ‘आपातकाल’ के एक पूर्व निर्धारित परिणाम मात्र के रूप में अनदेखा कर दिया जाता है। किन्तु राकेश अंकित के अनुसार,

इस प्रक्रिया में राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका का गहन अध्ययन यह दर्शाता है कि जनता पार्टी का निर्माण न तो पूर्व निर्धारित निष्कर्ष था और न ही कोई साधारण सी प्रक्रिया<sup>57</sup> जनता पार्टी के शासनकाल में राजनीतिक नेतृत्व की विशेष प्रकृति का उल्लेख करते हुए, ज्योतिरिन्द्र दास गुप्ता ने माना कि “उदाहरणस्वरूप, जनसंघ की विरासत से विदेश मंत्री, समाजवादी पृष्ठभूमि के उद्योग मंत्री और अकाली संबंधता वाले कृषि मंत्री – सभी ने अपने विभागीय उत्तरदायित्वों के निर्वहन से अपने आलोचकों को आश्चर्यचकित कर दिया, जो उनके राजनीतिक अतीत और प्रशासनिक अनुभवहीनता के कारण काफी आशंकित थे”<sup>58</sup>

आपातकालीन शासन व्यवस्था का तेजी से परिवर्तन, ‘कानून के शासन’ की बहाली और कांग्रेस पार्टी के द्वारा स्थापित सत्तावादी नियंत्रण की संरचनाओं का तेजी से विघटन, जनता पार्टी एवं उसके राजनीतिक सहयोगियों की सबसे प्रभावशाली उपलब्धियाँ रही। जनता पार्टी के द्वारा वैचारिक रूप से बहुलता वाले राजनीतिक नेतृत्व को एकीकृत रखने के लिए, पारस्परिक रूप से समान चिंता के मुद्दों पर विभिन्न नेतृत्वकर्ताओं के मध्य नियमित संवाद को प्रोत्साहित करके अपनी विशेष ‘सामंजस्य प्रणाली’ का उपयोग किया गया।

राजनीतिक अस्थिरता की आशंकाओं की चुनौतियों के मध्य भी, अपने अल्पावधि कार्यकाल में जनता पार्टी की सरकार ने सार्वजनिक नीतियों के पक्ष पर अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। ‘वास्तविक गुटनिरपेक्षता’ के वादे के सन्दर्भ में भारत-सोवियत संबंधों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किए बिना, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत के रणनीतिक संबंध बेहतर हुए<sup>59</sup> जनता कार्यकाल में, पड़ोसी राष्ट्रों के साथ विदेश संबंधों को भी विशेष ध्यानकर्षण मिला। तत्कालीन परिवेश में भारत के लिए ‘परमाणु नीति’ एक बेहद संवेदनशील विषय थी। ए. जी. नूरानी लिखते हैं कि उस समय तक के इतिहास में “कोई भी भारतीय प्रधानमंत्री परमाणु मुद्दे पर इतना अधिक स्पष्ट नहीं रहा था, जितना कि मोरारजी देसाई”<sup>60</sup> राष्ट्र के आंतरिक विषयों पर, जनता सरकार के नियोजकों ने कृषि एवं सिंचाई सहित, ग्रामीण विकास के लिए अधिक संसाधनों का आवंटन किया। उन्होंने ‘विकेन्द्रीकरण’ को सुदृढ़ करने के लिए राज्यों को वास्तविक आर्थिक शक्तियों का हस्तांतरण भी किया। पूर्ववर्ती सरकारों की तुलना में, जनता काल में ‘विकास की रूपरेखा’ ग्रामीण भारत की आबादी के लिए अपेक्षाकृत रूप में अधिक उत्तरदायीपूर्ण रही; तत्कालीन वित्त मंत्री चरण सिंह द्वारा प्रस्तुत सन् 1979-1980 के बजट में, इस ‘ग्रामीण खिसकाव’ का प्रतिबिंब प्रत्यक्षतः देखने को मिला।<sup>61</sup>

आम चुनावों में जीत के बाद, सन् 1984-1985 के दौरान राजीव गांधी राजनीतिक वर्चस्व की स्थिति में थे। राजीव-लौंगोवाल समझौते

में पंजाब राज्य को चंडीगढ़ हस्तांतरित करने, नदियों से सिंचाई के पानी का कुछ भाग पंजाब को देने और नई दिल्ली में सिख समुदाय की हत्याओं में जाँच के दायरे को व्यापक करने पर सहमति हुई। इतने जटिल मुद्दों पर सहमति बनना, बदलते राजनीतिक परिवेश का ही परिणाम था। किन्तु अतुल कोहली के अनुसार, कार्यकाल के शुरुआत में राजीव गांधी की सुरक्षित राजनीतिक स्थिति ने उन्हें वृहद राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने हेतु सक्षम बनाया; जैसे-जैसे सुरक्षा की यह भावना कम होती गई उनके राजनीतिक हित उन पर हावी होते चले गए।<sup>62</sup> प्राथमिकताओं के इसी बदलाव को राजीव-लौंगोवाल समझौते की असफलता का प्रमुख कारण माना जा सकता है। पंजाब की समस्या के प्रति अधिक स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाने के मार्ग की प्रमुख बाधाएँ, कांग्रेस पार्टी के अल्पकालिक चुनावी हित एवं राजीव गांधी की व्यक्तिगत सत्ता संबंधी वैचारिकताएँ रही।<sup>63</sup>

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में राजनीतिक नेतृत्व के समक्ष राष्ट्रीय एकता पर संकट के रूप में, सन् 1960 के दशक में 'तमिल लोगों का भाषा आंदोलन' तथा सन् 1980 के दशक का 'सिख आंदोलन', दो महत्वपूर्ण समस्याओं के रूप में उभरे हैं। दोनों घटनाओं के पारस्परिक मूल्यांकन से, भारत में राष्ट्रीय एकता के मुद्दों के सन्दर्भ में राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं हेतु निम्नलिखित सुझाव मिलते हैं-<sup>64</sup>

नागरिक क्षेत्र में शांति अथवा 'सिविल पीस' सुनिश्चित किया जाना चाहिए; राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं में उभरती समस्याओं को हल करने की दृढ़ इच्छाशक्ति होनी चाहिए; एक संघीय प्रणाली में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से उपलब्ध सत्ता, अगणित अवसरों एवं विशेष आकर्षण का स्रोत होती है। अतः सभी पक्षों के नेतृत्वकर्ताओं को अपने समर्थकों एवं संपूर्ण राष्ट्रीय समुदाय के वृहद हितों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने चाहिए।

सत्ता में आने के बाद कांग्रेस पार्टी का पुनर्निर्माण, पंजाब जैसे क्षेत्रीय विवादों का निपटारा और भारत की अर्थव्यवस्था का उदारीकरण जैसे मुद्दे राजीव गांधी की प्राथमिकताओं में थे। चुनावों के बाद उनके नेतृत्व की लोकप्रियता के सन्दर्भ में, यदि उनकी विभिन्न योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन हो पाता तो इसे "व्यक्तिगत शक्ति का संस्थागत शक्ति में रूपांतरण"<sup>65</sup> कहा जा सकता था। वास्तव में, भारत को राजनीतिक रूप से सामर्थ्यवान नेतृत्व उपलब्ध कराने की क्षमता कुछ विशेष प्रकार की संस्थागत संरचनाओं पर निर्भर करती है। जो न केवल 'समस्याओं को वास्तविक रूप में' नेतृत्वकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकें बल्कि फैसलों को आम जनजीवन में लागू भी कर सकें। इन संरचनाओं के चयन अथवा निर्माण का कार्य नेतृत्वकर्ता को जाने-अनजाने स्वयं ही करना होता है।

हमने सरदार पटेल की उपस्थिति के पंडित नेहरू की नीतियों पर सकारात्मक प्रभाव की संभावनाओं पर विचार किया था। भारतीय लोकतंत्र की समस्याओं के निराकरण के सन्दर्भ में, एक 'एकाकी नेतृत्वकर्ता' की प्रभावशीलता की सीमाओं को समझा जाना बेहद आवश्यक है। भारत के सैकड़ों निर्वाचन क्षेत्रों में नीतिगत निर्णयों के परिणामों का अनुमान लगाने के लिए, 'संसद सूचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत है'। किसी मुद्दे अथवा विषय की वैकल्पिक छवियों को नेतृत्वकर्ता के साथ साझा करने में 'मंत्रिमंडल की भूमिका' अद्वितीय होती है। भारत के राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के संजाल अथवा नेटवर्क में विभिन्न राजनीतिक दलों, राज्यों के नेतृत्वकर्ताओं तथा नागरिक समाज की रचनात्मक भूमिका सुनिश्चित किया जाना भी विशेष रूप से आवश्यक प्रतीत होता है।<sup>66</sup>

### उपसंहार :

गठबंधन की राजनीति और उसके बाद भारतीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के विशाल संस्थागत स्वरूप के संचालन और अगणित नीति निर्णयों के माध्यम से, आम जनता की आकांक्षाओं को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक काल में, अक्सर विभिन्न राष्ट्र-राज्यों में 'नेतृत्वकर्ताओं के अभाव' संबंधी असंतोष को देखा जाता रहा है। किन्तु भारतीय समाज ने राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की निरंतर एवं पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की है। वैकल्पिक उपस्थिति के आयाम के इतर भी यदि भारत में राष्ट्रीय राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका के महत्व को समझना हो, तो विभिन्न संकटों के दौरान राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं द्वारा स्थिति को सामान्य करने की दिशा में किए गए प्रयासों का अध्ययन किया जा सकता है। चाहे युद्ध की चुनौतियाँ रही हो या आपातकाल का समय, चाहे खाद्यान्न आपूर्ति का सवाल रहा हो या आर्थिक संकट का मुद्दा, भारतीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने हमेशा ही 'राष्ट्र के नाम पर' एक होकर संकटों का सामना किया है। कम शब्दों में कहा जाए तो राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करने की दिशा में हमारे राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका सराहनीय रही है।

स्वाधीन भारत का लोकतंत्र, विविध हितों को समायोजित करने और विभिन्न संघर्ष के विषयों पर सामंजस्य की स्थापना करने की उल्लेखनीय क्षमता का धनी रहा है। लेकिन, इस अद्वितीय समायोजन क्षमता का दूसरा पहलू यह भी है कि "कठोर विकासात्मक निर्णय लेने में कठिनाइयाँ हुई हैं"<sup>67</sup> अतः भारत के राजनीतिक परिवेश की आंतरिक खामियों का मूल्यांकन और उनके निराकरण की दिशा में मजबूत प्रयास किया जाना बेहद आवश्यक होता जा रहा है। सन् 1950 एवं 1960 के दशकों के दौर की भारतीय 'राजनीतिक संस्कृति' में समय के साथ

आए बदलावों ने, राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं की कार्यशैली को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। नेतृत्वकर्ताओं की सत्ता की प्राप्ति संबंधी राजनीतिक बाध्यताओं के परिणामस्वरूप, उनकी नीतिगत प्राथमिकताओं की गुणवत्ता तथा दृष्टिकोण की दूरदर्शिता पर गहरे असर हुए हैं। सन् 1970 और 1980 के दशक में दीर्घावधि के नीतिगत मुद्दों की उपेक्षा और सार्वजनिक योजनाओं की नियोजन प्रक्रियाओं का पटरी से उतरने का प्रमुख कारण, भारत की 'राजनीतिक ऊर्जा' के व्यवहार में प्रयोग की तितर-बितर स्थिति को माना जाना चाहिए।<sup>68</sup>

भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में "राष्ट्रीय राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं का प्रशिक्षण क्षेत्र" के रूप में राज्य स्तरीय राजनीति का विशेष महत्त्व रहा है।<sup>69</sup> लोकसभा चुनाव और राज्य विधानसभाओं के चुनावों के अलग होने के साथ ही, राजनीतिक सहभागिता की दृष्टि से सकारात्मक परिवर्तन देखे गए। किन्तु राजनीतिक सत्ता की लोलुपता से प्रभावित स्थानीय नेतृत्वकर्ताओं ने क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय, दोनों ही स्तर की राजनीति को खंडित करने का कार्य किया। और इसी कारण, सन् 1990 के दशक में भारत में 'राजनीतिक अस्थिरता' एक विशेष चिंता का विषय रही।

### Bibliography

- Ahmad, S. Waseem, and Nilofer. "Coalition Government in India." *Indian Journal of Political Science* (2009): 751-759. <http://www.jstor.org/stable/42742757>.
- Ananth, V. Krishna. *India since Independence: Making sense of Indian Politics*. New Delhi, India: Pearson, 2010.
- Ankit, Rakesh. "Janata Party (1974-77): Creation of an All-India Opposition." *History and Sociology of South Asia* vv, no. v (January 2017): 39-54. <https://doi.org/10.1177/2230807516652987>.
- Ankit, Rakesh. "Lal Bahadur Shastri, 1964-1966: Leader at a Glance." *Studies in Indian Politics* }, no. v (2020): 39-57. DOI: 10.1177/2321023020918062.
- Austin, Granville. *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. New Delhi: Oxford University Press, 2020.
- Barthwal, C. P. "Coalition Governments in India." *Indian Journal of Political Science* [x, no. v (2012): 9-20. <http://www.jstor.org/stable/41856556>.
- Bhambhri, C. P. "Nehru and Indian Political System." *Indian Journal of Political Science* x}, no. 2 (1977): 152-165. <https://www.jstor.org/stable/pdf/41854787.pdf>.
- Blondel, Jean. *Political Leadership: Towards a General Analysis*. London: SAGE, 1987. <http://library.lol/main/D74E91F269597A9ECFB30E8710F8818D>.
- Brass, Paul R. "Chaudhuri Charan Singh: An Indian Political Life." *Economic and Political Weekly* 28, no. 39 (September 25, 1993): 2087-2090. <https://www.jstor.org/stable/4400204>.
- Brass, Paul R. "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System." In *Power and Influence in India: Bosses, Lords and Captains*, edited by Pamela Price and Arild Engelsen Ruud, 169-192. New Delhi: Routledge, 2010. <http://opac.lib.idu.ac.id/unhandbook/assets/uploads/files/77690-098.power-and-influence-in-india.pdf#page=200>.
- Brecher, Michael. "Transition in India." *International Journal* 20, no. 1 (1964): 85-89. DOI:10.2307/40199386.
- Chhibber, Pradeep, and Rahul Verma. "The Rise of the Second Dominant Party System in India: BJP's New Social Coalition in 2019." *Studies in Indian Politics* 7, no. 2 (December 2019): 131-48. <https://doi.org/10.1177/2321023019874628>.
- Das, Suranjan. "The Nehru Years in Indian politics." *Edinburgh Papers in South Asian Studies* 16 (2001): 1-35. [http://www.pol.ed.ac.uk/\\_data/assets/pdf\\_file/0005/38480/WP16\\_Suranjan\\_Das.pdf](http://www.pol.ed.ac.uk/_data/assets/pdf_file/0005/38480/WP16_Suranjan_Das.pdf).
- Forrester, Duncan B. "Changing patterns of Political Leadership in India." *Review of Politics* 28, no. 3 (1966): 308-318. <https://www.jstor.org/stable/1405589>.
- Guha, Ramachandra. "Political Leadership." In *The Oxford Companion to Politics in India*, edited by Niraja Gopal Jayal and Pratap Bhanu Mehta, 288-98. New Delhi: Oxford University Press, 2010.
- Gupta, Jyotirindra Das. "The Janata Phase: Reorganization and Redirection in Indian Politics." *Asian Survey* 19, no. 4 (1979): 390-403. <https://www.jstor.org/stable/2386142>.



- www.jstor.org/stable/2643859.
- Gupta, R. C. "Leadership in Indian Democracy." *Indian Journal of Political Science* 22, no. 3 (1961): 252-259. <https://www.jstor.org/stable/41853887>.
  - Hart, Henry C. "Indira Gandhi: Determined Not to Be Hurt." In *Indira Gandhi's India: A Political System Reappraised*, edited by Henry C. Hart, 241-273. Colorado, USA: Westview Press, 1976.
  - Hart, Henry C. "Political Leadership in India: Dimensions and Limits." In *India's Democracy: An Analysis of Changing State-Society Relations*, edited by Atul Kohli, 18-61. New Jersey: Princeton University Press, 1988. <http://libgen.gs/ads.php?md5=6ddbe1af8e1deb86c733f3ff922f1d7c>.
  - Kashyap, Sanjeet. "The Unfinished Liberalisation: Political Economy of Shastri Years." *Spontaneous Order*. October 3, 2019. <https://spontaneousorder.in/lal-bahadur-shastri/>.
  - Kochanek, Stanley A. "Post Nehru India: The Emergence of the New Leadership." *Asian Survey* 6, no. 5 (1966): 288-299. <https://www.jstor.org/stable/2642538>.
  - Kohli, Atul. "India's Democracy under Rajiv Gandhi (1985-1989)." In *India's Democracy: An Analysis of Changing State-Society Relations*, edited by Atul Kohli, 319-334. New Jersey: Princeton University Press, 1988. <http://libgen.gs/ads.php?md5=6ddbe1af8e1deb86c733f3ff922f1d7c>.
  - Kothari, Rajni. "The Congress' System in India." *Asian survey* 4, no. 12 (1964): 1161-1173. <https://www.jstor.org/stable/2642550>.
  - Kumar, Ashutosh. "Political Leadership at State level in India: Continuity and change." *India Review* 18, no. 3 (2019): 264-287. <https://doi.org/10.1080/14736489.2019.1616260>.
  - Malik, Yogendra K. "Indira Gandhi: Personality, Political Power and Party Politics." *Journal of Asian and African Studies* 22, no. 3-4 (1987): 141-155. <https://doi.org/10.1163/156852187X00340>.
  - Morris-Jones, W. H. "India's Political Idioms." In *Politics and Society in India*, edited by C. H. Philips, 133-154. London: George Allen & Unwin, 1963.
  - Noorani, A. G. "Foreign Policy of the Janata Party Government." *Asian Affairs: An American Review* 5, no. 4 (1978): 216-228. <https://www.jstor.org/stable/30171643>.
  - Park, Richard L., and Irene Tinker, eds. *Leadership and Political Institutions in India*. Madras, India: Oxford University Press, 1960.
  - Rahil. "List of biggest achievements of Lal Bahadur Shastri as India's Prime Minister." *Indian Wire*. August 16, 2018. <https://www.theindianwire.com/politics/achievements-lal-bahadur-shastri-india-pm-69931/>.
  - Reddy, Rishvanth. "A Note on Political Leadership in India." *Indian Folk*. August 14, 2020. <http://www.indianfolk.com/note-political-leadership-india/>.
  - Rhodes, R. A. W., and Paul 't Hart, eds. *The Oxford handbook of political leadership*. Oxford: Oxford University Press, 2014. <http://library.lol/main/3A6B2E1C1A7BECE8B24D3CCEAD460FBE>.
  - Shastri, Sandeep. "Remembering the legacy of Lal Bahadur Shastri." *Oneindia*. October 2, 2020. <https://www.oneindia.com/india/remembering-the-legacy-of-lal-bahadur-shastri-3157844.html>.
  - Simivasrao, Mouneshwara. "Parliamentary Democracy and Coalition Governments in India." *Indian Journal of Political Science* (2011): 961-970. <http://www.jstor.org/stable/41856532>.
  - Sirsikar, V. M. "Political Leadership in India." *Economic & Political Weekly* 17, no. 12 (1965): 517-522. [https://www.epw.in/system/files/pdf/1965\\_17/12/political\\_leadership\\_in\\_india.pdf](https://www.epw.in/system/files/pdf/1965_17/12/political_leadership_in_india.pdf).
  - Sridharan, E. "Leadership Time Horizons in India: The Impact on Economic Restructuring." *Asian Survey* 31, no. 12 (1991): 1200-1213. <https://www.jstor.org/stable/2645399>.
  - Tiwana, S. S. "Coalition Politics in India: Problems and Prospects." *Research*, 1, no. 2 (2007): 6-18. <http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.465.8791&rep=rep1&type=pdf#page=11>.
  - Tucker, Robert C. *Politics as Leadership*. Columbia: University of Missouri Press, 1981. <http://library.lol/main/F8084B7B89F1C964CD7D017272E8AD2B>.

## संदर्भ सूची

1. Granville Austin, *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation* (New Delhi: Oxford University Press, 2020), xi-xv.
2. R. C. Gupta, "Leadership in Indian Democracy," *Indian Journal of Political Science* 22, no. 3 (1961): 254, <https://www.jstor.org/stable/41853887>.
3. V. M. Sirsikar, "Political Leadership in India," *Economic & Political Weekly* 17, no. 12 (1965): 517, [https://www.epw.in/system/files/pdf/1965\\_17/12/political\\_leadership\\_in\\_india.pdf](https://www.epw.in/system/files/pdf/1965_17/12/political_leadership_in_india.pdf).
4. Ramachandra Guha, "Political Leadership," in *The Oxford Companion to Politics in India*, ed. Niraja Gopal Jayal and Pratap Bhanu Mehta (New Delhi: Oxford University Press, 2010), 288.
5. Gupta, "Leadership in Indian Democracy," 252.
6. Rishvanth Reddy, "A Note on Political Leadership in India," *Indian Folk*, August 14, 2020, <http://www.indianfolk.com/note-political-leadership-india/>.
7. Ashutosh Kumar, "Political Leadership at State level in India: Continuity and Change," *India Review* 18, no. 3 (2019): 266, <https://doi.org/10.1080/14736489.2019.1616260>.
8. Richard L. Park, and Irene Tinker, eds., *Leadership and Political Institutions in India* (Madras, India: Oxford University Press, 1960), v.
9. Paul R. Brass, "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System," in *Power and Influence in India: Bosses, Lords and Captains*, ed. Pamela Price and Arild Engelsen Ruud (New Delhi: Routledge, 2010), 169, <http://opac.lib.idu.ac.id/unhan-ebook/assets/uploads/files/77690-098.power-and-influence-in-india.pdf#page=200>.
10. Gupta, "Leadership in Indian Democracy," 255.
11. Brass, "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System," 170.
12. Sirsikar, "Political Leadership in India," 517.
13. Sirsikar, 519.
14. Yogendra K. Malik, "Indira Gandhi: Personality, Political Power and Party Politics," *Journal of Asian and African Studies* 22, no. 3-4 (1987): 145-146, <https://doi.org/10.1163/156852187X00340>.
15. Atul Kohli, "India's Democracy under Rajiv Gandhi (1985-1989)," in *India's Democracy: An Analysis of Changing State-Society Relations*, ed. Atul Kohli (New Jersey: Princeton University Press, 1988), 319-334, <http://libgen.gs/ads.php?md5=6ddbe1af8e1deb86c733f3ff922f1d7c>.
16. Sirsikar, "Political Leadership in India," 522.
17. Brass, "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System," 170-171.
18. Paul R. Brass, "Chaudhuri Charan Singh: An Indian Political Life," *Economic and Political Weekly* 28, no. 39 (September 25, 1993): 2087-2090, <https://www.jstor.org/stable/4400204>; Brass, "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System," 172.
19. Brass, "Leadership and the Power of Honour in a Corrupt System," 169.
20. Henry C. Hart, "Political Leadership in India: Dimensions and Limits," in *India's Democracy: An Analysis of Changing State-Society Relations*, ed. Atul Kohli (New Jersey: Princeton University Press, 1988), 50-56. <http://libgen.gs/ads.php?md5=6ddbe1af8e1deb86c733f3ff922f1d7c>.
21. Hart, 52.
22. V. Krishna Ananth, *India since Independence: Making sense of Indian Politics* (New Delhi: Pearson, 2010), 59-60.
23. Hart, "Political Leadership in India," 53.
24. Hart, 53-55.
25. Hart, 55.
26. Ananth, *India since Independence*. Chapter VII.
27. Hart, "Political Leadership in India," 55.
28. W. H. Morris-Jones, "India's Political Idioms," in *Politics and Society in India*, ed. C. H. Philips (London: George Allen & Unwin, 1963), 133-154.
29. Morris-Jones, 137.
30. Morris-Jones, 140.
31. Guha, "Political Leadership," 290.
32. Robert C. Tucker, *Politics as Leadership* (Columbia: University of Missouri Press, 1981), 47-59, <http://library.lol/main/F8084B7B89F1C964CD7D017272E8AD2B>.
33. Hart, "Political Leadership in India," 28; Sirsikar, "Political Leadership in India," 521.

34. Hart, "Political Leadership in India," 31.
35. Sirsikar, "Political leadership in India," 517.
36. Stanley A. Kochanek, "Post Nehru India: The Emergence of the New Leadership," *Asian Survey* 6, no. 5 (1966): 295, <https://www.jstor.org/stable/2642538>.
37. Sanjeet Kashyap, "The Unfinished Liberalisation: Political Economy of Shastri Years," *Spontaneous Order*, October 3, 2019. <https://spontaneousorder.in/lal-bahadur-shastri/>.
38. Kashyap, "Unfinished Liberalisation: Political Economy of Shastri Years."
39. Rahil, "List of biggest achievements of Lal Bahadur Shastri as India's Prime Minister," *Indian Wire*, August 16, 2018, <https://www.theindianwire.com/politics/achievements-lal-bahadur-shastri-india-pm-69931/>.
40. Sandeep Shastri, "Remembering the legacy of Lal Bahadur Shastri," *Oneindia*, October 2, 2020, <https://www.oneindia.com/india/remembering-the-legacy-of-lal-bahadur-shastri-3157844.html>.
41. Michael Brecher, "Transition in India," *International Journal* 20, no. 1 (1964): 85-89, DOI:10.2307/40199386.
42. Sandeep Shastri, "Remembering the legacy of Lal Bahadur Shastri."
43. Sirsikar, "Political Leadership in India."
44. Malik, "Indira Gandhi," 142.
45. Henry C. Hart, "Indira Gandhi: Determined Not to Be Hurt," in *Indira Gandhi's India: A Political System Reappraised*, ed. Henry C. Hart (Colorado, USA: Westview Press, 1976), 241-273.
46. Hart, "Indira Gandhi"; Malik, "Indira Gandhi."
47. Malik, "Indira Gandhi," 147.
48. Hart, 33-34.
49. Ananth, *India since Independence*, 107.
50. Jean Blondel, *Political Leadership: Towards a General Analysis* (London: SAGE, 1987), <http://library.lol/main/D74E91F269597A9ECFB30E8710F8818D>.
51. R. A. W. Rhodes and Paul 't Hart, eds., *The Oxford Handbook of Political Leadership* (Oxford: Oxford University Press, 2014), 95, <http://library.lol/main/3A6B2E1C1A7BECE8B24D3CCEAD460FBE>.
52. Tucker, *Politics as Leadership*, 7.
53. Reddy, "Note on Political Leadership in India."
54. Reddy, "Note on Political Leadership in India."
55. Hart, "Political Leadership in India."
56. Hart, 49.
57. Rakesh Ankit, "Janata Party (1974-77): Creation of an All-India Opposition," *History and Sociology of South Asia* 11, no. 1 (January 2017): 39, <https://doi.org/10.1177/2230807516652987>.
58. Jyotirindra Das Gupta, "The Janata Phase: Reorganization and Redirection in Indian Politics," *Asian Survey* 19, no. 4 (1979): 393, <https://www.jstor.org/stable/2643859>.
59. A. G. Noorani, "Foreign Policy of the Janata Party Government," *Asian Affairs: An American Review* 5, no.4 (1978): 216-228, <https://www.jstor.org/stable/30171643>.
60. Noorani, "Foreign Policy of the Janata Party Government," 221.
61. Jyotirindra Das Gupta, "The Janata Phase," 401.
62. Kohli, "India's Democracy under Rajiv Gandhi (1985-1989)."
63. Kohli, 326.
64. Hart, "Political Leadership in India," 43-44.
65. Kohli, "India's Democracy under Rajiv Gandhi (1985-1989)," 322.
66. Hart, "Political Leadership in India," 59.
67. Kohli, 15.
68. Sridharan, "Leadership Time Horizons in India," 1207.
69. Kumar, "Political Leadership at State level in India," 272.

– सहायक प्राध्यापक, शिवाजी महाविद्यालय, एवं शोधार्थी,  
राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,  
ई-मेल : dharasingh.du@gmail.com

# Advertising Regulation and Children's Rights : Protecting Young Audiences.

□ Prabhat Singh

## Abstract

*Annually, substantial financial investments are dedicated to engaging this demographic of children and adolescents, given their propensity to make independent purchasing decisions worth billions of dollars, exert influence over family purchasing choices, and potentially foster lifelong brand allegiance. The proliferation of youth-targeting channels has led to an increased utilization of them by marketers, frequently causing a convergence of entertainment and advertising. Due to the pervasive nature of advertising directed at children and adolescents, scholars investigating its impact express substantial apprehensions regarding the practice, particularly in regards to its impact on dietary patterns, familial discord, marketing strategies, and the potential susceptibility of children as an audience.*

*A staggering \$4.2 billion U.S. dollars were spent by advertisers worldwide on advertising targeted at youngsters in 2018. By 2021, it was anticipated that these expenditures would increase to \$4.6 billion, of which approximately \$1.7 billion would come from digital advertising formats. Advertisers deliberately focus on children as they represent the most susceptible demographic to influence, rendering them an ideal target audience with the capacity to shape a child's behavioral trajectory. Worrisome in nature, excessive media exposure in the absence of proper oversight emphasizes the necessity for the Guidelines.*

*Children are vulnerable to a variety of damages that advertising may induce. Consider health as an example. In 2009, Yale University researchers discovered that children who were subjected to junk food advertising during a trial consumed 45 percent more junk food than those who were not exposed to the advertisements.*

*The World Health Organization concluded in 2006, based on an exhaustive review of the literature, that "food promotion influences children's food preferences and encourages them to request that their parents purchase foods they have seen advertised." These concerns played a role in Ofcom's decision in 2006 to prohibit the promotion of foods that are high in sodium and sugar during programming for*

*children's television.*

*Until recently, the Advertising Standards Code of India (ASCI) was the sole advertising regulation in India. ASCI3 have issued Section 8 of the CCPA Guidelines, which pertains specifically to advertisements targeted towards children, in 2022. This paper focus on how the advertisement affecting the children rights in India and making them more materialistic and unhealthier.*

**Keywords-** *Digital Advertisements, Child Rights, Marketing Strategies, Advertisement Regulation*

## Introduction

The term "marketing" describes the actions a business takes to encourage the purchase or sale of a product or service. Selling, distributing, and promoting goods to customers or other companies are all included in marketing. Affiliates promote a corporation on its behalf in certain situations.

Through advertising, professionals in a company's marketing and promotion departments aim to capture the interest of important target audiences. Promotions might include noteworthy packaging or graphic designs, celebrity endorsements, catchy phrases or slogans, and general media exposure. They are aimed toward specific populations.

Children are playing, interacting, and searching for information in digital settings all across the globe. Youngsters are among the first to use information and communications technology, which are vital in empowering them by facilitating education and communication. They use their own gadgets to access the internet, or they beg their parents to let them use theirs. Marketing and advertising are two significant areas where children's rights are altered by internet usage. Children are a desirable target demographic for advertisers because they encompass not only the primary market, which is represented by their ability to buy goods and services with their weekly allowance, but also the secondary market, which is represented by their ability to influence their parents' purchasing decisions, and even the so-called future market, which is represented by the children themselves as adults

capable of making full commercial decisions. They exhibit a certain amount of brand awareness from an early age, even beginning as two years old. In light of this, marketers and advertisers start focusing on kids early in life, turning them into mini-consumers.

### **Present Pervasive Marketing Strategies**

The advertising business continually refines its persuasive strategies, making it difficult for youngsters to distinguish between commercial messaging and journalistic information on the internet. Moreover, as a result of technical progress and the growing capabilities of computers, children are being monitored on the internet and their personal information is used to tailor commercial messages specifically to them. The commercialization of children's digital surroundings has an influence on both the exercise of children's rights and the ways in which these rights might be safeguarded, promoted, or ignored. To tackle this reconfiguration of children's rights and adjust to the changing circumstances, it is necessary to consider the fact that children are becoming early adopters of new technologies and accessing commercialized digital environments for play, communication, and knowledge from a very young age.

The primary distinction between conventional and digital advertising is in the use of distinct persuasive strategies. Conventional mediums such as TV advertising mostly disseminate factual or propositional information, often by emphasizing the quality and attributes of the product.<sup>1</sup> Furthermore, certain persuasive strategies are used, such as repetition and associating them with favorable stimuli like humor. In contrast, emerging forms such as advergames and sponsored content on social media use more nuanced strategies. These strategies operate at the preconscious level, meaning they are not suppressed and can be quickly remembered. Instead of trying to provide information to customers about goods and services, their goal is to enhance brand memory and attitude.<sup>2</sup> This is accomplished by consistently exposing individuals to brands or goods, as well as subtly persuading them via a process called 'positive affect transfer.' This involves associating entertaining and fascinating media material with the brand or product it is integrated with. The distinct strategies used by emerging digital advertising methods, characterized by their immersive, interactive, personalized nature, and emotional appeal, have a strong allure for youngsters.<sup>3</sup>

They enhance the efficacy of persuasive commercials by exerting a favorable influence on children's views towards items or brands, so significantly affecting their purchase choices. Given this, it is essential for youngsters to possess the ability to identify and comprehend the persuasive strategies used in these emerging kinds of digital advertising.<sup>4</sup>

One prevalent and effective strategy in this field is seamlessly incorporating promotional messaging into non-promotional material, such as a television show or editorial piece. While the process of convergence began in the past, it has already reached unprecedented levels in the digital realm. The concept behind integration is that commercial communication achieves maximum effectiveness when the customer remains unaware of its nature.

An influential and efficient approach in this domain is skillfully integrating promotional message into non-promotional content, such as a television program or editorial article. Although convergence originated in the past, it has already to unparalleled levels in the digital domain. The underlying principle of integration is that commercial communication is most successful when the client is ignorant of its true purpose.<sup>5</sup>

Extended exposure of children to branded environments blurs the distinction between advertising and program content. This is achieved by smoothly incorporating the commercial message into the storyline and media images, which helps to bypass any potential irritation or resistance from the child. Integrated advertising techniques take advantage of the fact that consumers cannot completely ignore the commercial message, as it is inherently connected to the informational aspect.<sup>6</sup>

As per the Organisation for Economic Cooperation and Development (OECD), children lack adequate comprehension of the production and financing of Internet material, which hinders their ability to critically evaluate advertising messages (OECD, 2012). The rise in popularity of this digital advertising trend might be attributed to consumer tiredness and resistance towards conventional digital advertising methods, such as display adverts, as well as the growing prevalence of ad blocking software.<sup>7</sup>

Furthermore, advertising formats that include a high level of interactivity, such as advergames or branded mobile apps, have shown significant effectiveness as a valuable tool for marketers, especially when aimed at youngsters. These strategies enable the creation of a favorable product or brand connection by providing enjoyable interactive material. Consequently, youngsters are no longer just passive recipients of advertising messaging. Instead, they actively engage in the advertising process, such as by generating or distributing information themselves or by connecting with peers.<sup>8</sup> Advertisers actively encourage young consumers to generate and distribute material in order to endorse their own brands, goods, and services within children's personal networks (for example, children are incentivized to produce and share TikTok videos including brand tunes with their peers).<sup>9</sup>

Additionally, the personal information of young clients

is becoming more and more relevant to marketers, and digital advertising has gotten more personalized. Marketers use customized ads to target youngsters and adjust their campaigns according to the way kids behave online. Because marketers may directly address the developmental stage and knowledge base of a particular user, the commercial message can be conveyed more successfully. When it comes to creating a solid and enduring personal connection and engagement with the young customer, this is a clear benefit. Furthermore, children are targeted depending on their location since they are now followed and monitored in their everyday life (also known as real-world behavioral targeting).<sup>10</sup>

The high degree of complexity and efficacy of these emerging digital advertising trends targeted at children, along with children's limited advertising literacy, has substantial consequences from the standpoint of children's rights. Advertising literacy refers to the competence, understanding, and capabilities of children to navigate advertisements. This includes their comprehension of the persuasive purpose of advertising as a whole, their emotional response towards advertising (whether positive or negative), and their capacity to form judgments about the suitability of specific advertising formats.<sup>11</sup>

### **Advertisements Regulation with regards to minor in India**

In India there are mainly two bodies which regulate advertisements. 1. Advertising Standard Council of India (ASCI) 2. Central Consumer Protection Authority. Some sector specific regulation are exercised by some authorities like- FSSAI, RBI etc.

The Advertising Standards Council of India (ASCI), founded in 1985, is dedicated to the practice of self-regulation in advertising, guaranteeing the safeguarding of consumer interests. ASCI aims to guarantee that advertising adhere to its Code for Self-Regulation, which mandates that advertisements must be lawful, morally acceptable, sincere, and accurate, and must not pose any risks or damage, while also maintaining fairness in competition.<sup>12</sup> ASCI is a self-regulation body that operates on a voluntary basis. It is officially registered as a not-for-profit business under Section 25 of the Indian Companies Act. The sponsors of ASCI, who are its primary members, are highly respected corporations in the Indian industry. They include advertisers, media organizations, advertising agencies, and other professional or supplementary services associated with advertising practices. ASCI is not a governmental entity and does not create regulations for the general public or related sectors.<sup>13</sup>

As to the Advertising Standard Council of India (ASCI) Code, ads targeted at kids must not include any content,

whether in visual form or otherwise, that might potentially cause them bodily, mental, or moral damage, or take advantage of their susceptibility. Advertisements must not depict minors endorsing tobacco or alcohol-based products, engaging in activities involving matches or flammable/explosive substances, or handling sharp knives or guns. Such depictions could potentially result in injuries such as cuts, burns, shocks, or other harm.<sup>14</sup>

The establishment of the CCPA is mandated by Section 10 of the Consumer Protection Act, 2019.<sup>15</sup> The primary functions of the CCPA are as follows: (a) Regulating issues pertaining to the infringement of consumer rights, unfair trade practices, and deceptive or misleading advertisements that harm consumer interests; (b) Advocating for, safeguarding, and ensuring the enforcement of consumer rights as a collective.

The regulations pertaining to ads were officially announced in 2022, in accordance with the authority granted by Section 18 of the Consumer Protection Act, 2019, to the CCPA. The guidelines are universally applicable to advertising published across all channels, including print, television, and internet.

The definition of misleading advertising is already provided under Section 2(28) of the Consumer Protection Act, 2019.<sup>16</sup> It encompasses any advertising that contains: (a) Inaccurate portrayal of a product or service; (b) Deceptive assurances that mislead customers; (c) Explicit statements that constitute unfair trade practices; (d) Intentionally withholding crucial facts about the product.<sup>17</sup>

The guidelines prohibit ads from using hyperbole to such an extent that it creates false expectations in youngsters about the attributes of a product or service. Furthermore, it prohibits the inclusion of any health or nutritional assertions or advantages unless they are sufficiently and scientifically supported by a recognized authority.<sup>18</sup>

In addition, commercials aimed at children must not include any individuals from the sports, music, or film industries for items that need a health warning in their advertisements or are not suitable for purchase by children. The standards also stipulate that commercials including 'chips, fizzy beverages, and similar food and drinks' must not be shown on channels that are specifically intended for children.<sup>19</sup>

Ads for unhealthy food are unequivocally prohibited from airing during programs designed exclusively for children or on channels dedicated to children. The guidelines do not specify, however, what constitutes "junk food." The Food Safety and Standard Authority of India (FSSAI) has implemented the Food Safety and Standards (Safe Food and

Balanced Diets for Children in School) Regulations, 2020, with the objective of encouraging children to adopt nutritious eating practices. In addition to failing to specify “junk food,” these regulations prohibited the sale of “food products that are high in saturated fat, trans fat, added sugar, or sodium” on school property.<sup>20</sup> The guidelines ought to have explicitly addressed the matter of fast cuisine.

### **Challenges and concerns**

Celebrity endorsements are a lucrative global industry as celebrities have a strong influence on the general public. Superstars enjoy significant reputation and extensive product recall, establishing both representational and aspirational associations with a company. The use of celebrities to communicate with the target audience is a common practice employed by prominent marketers to enhance the brand or product’s image. Companies invest significant financial resources in comparing brands and organizations to the characteristics of celebrities, such as charisma, likability, and honesty.

Due to the growing prevalence of digital devices, marketers are increasingly using social media, influencer marketing, and gaming devices as effective means to reach youngsters and promote promoted companies. Social media influencers are those who possess significant influence and wield considerable authority over their following. The influencers depend on social media platforms to interact with their intended audience and reach a large, unidentified group of people. For instance, kid influencers like Evan, Kiara, and Ranvijay have millions of dedicated followers. While the connection between influencers and brands is important, modern marketers are also using integrated advertising.<sup>21</sup> The user base of the online gaming sector in India is seeing a growth rate of 28-30%. In 2022, the market was valued at \$2.8 billion and is projected to reach \$8.7 billion by 2027, with a compound annual growth rate (CAGR).<sup>22</sup>

Adolescent advertising has faced allegations of being inherently discriminatory due to the fact that younger children lack the cognitive capacity to grasp the persuasive strategies employed by advertisers. In order to determine whether or not all advertising directed at children is unjust, terms such as exclusive or inclusive were defined. In an exclusive context, any advertisement that targets children is deemed “unfair,” irrespective of the outcome, on the grounds that children are too immature to discern the marketing purpose and are susceptible to persuasion. Inclusive child advertisements must include the potential for negative repercussions in order to be considered “unfair.” Researchers disapproved of exclusive accounts because they provoke criticism of social advertisements and non-commercial influence that are entirely acceptable. The comprehensive

account highlights the adverse consequences of child advertising, including the promotion of excessive consumption that instills materialism in children and generates conflict between parents and children. Additionally, it influences them to purchase hazardous products, and indirect advertising campaigns, such as cigarette-shaped chocolates, result in indirect damage.<sup>23</sup>

An assertion that all children’s advertising is ‘unfair’ must be reevaluated, despite the fact that regulation is required to prevent the exposure of children’s vulnerabilities due to the asymmetry of communication in such content.

Concerning the unique protection and care that children necessitate due to their susceptibility, significant case merits mention. In *KA Abbas v. Union of India*<sup>24</sup>, a challenge to movie censorship and the issuance of a certificate under the Cinematograph Act was presented. The petitioner contested previous restrictions on cinema in contrast to the freedom of the press. The supreme court determined that motion pictures merit a distinct treatment in comparison to other modes of expression. The appeal generated by the audio-visual representation surpasses that of alternative modes of artistic expression. In this age of advanced technology—trick photography, 3D effects, and general adaptability—movies are capable of producing more authentic scenes than ever before. Its appeal for attention and retention is heightened, and its impact on children and adolescents is particularly significant. On numerous occasions, youngsters have attempted to imitate what they have observed.

### **Conclusion**

A healthy ecosystem that is free from misinformation in the interest of children due to their delicate age is the goal of the standards that the Children’s Communications and Privacy Act (CCPA) has established for children-targeted advertisements. For the purpose of addressing exaggerations and claims that have not been confirmed, the Guidelines that have been established by the CCPA promise to provide greater clarity and to ensure openness. Some of the terminology that are used in the recommendations, on the other hand, have not been defined, and their meanings may be interpreted in a variety of ways. Additionally, there is the possibility that many complaints would be lodged concurrently, coming from the Consumer Protection Act of 2019, the Advertising Standards Council of India, and other sector-specific legislations, which could potentially result in a multitude of cases. Despite the fact that there are several laws in place to protect children, businesses continue to develop their marketing methods in an unfair manner, which leads to the misdirection of young children. Inadequate enforcement of the laws that are already in place is the primary factor that is responsible for the situations. It is now time that we learn

from our past experiences and make certain that independent industry regulators conduct self-regulation and appropriate enforcement in accordance with the word and spirit of the law.

## References

1. Rozendaal, Esther & Oprea, Suzanna & Buijzen, Moniek. (2014). Development and Validation of a Survey Instrument to Measure Children's Advertising Literacy. *Media Psychology*. 19. 1-29. 10.1080/15213269.2014.885843.
2. Robby De Pauw et al., Associations between Brain Morphology and Motor Performance in Chronic Neck Pain: A Whole brain Surface based Morphometry Approach, 40 *Human Brain Mapping* 4266 (2019).
3. Nairn, A., & Fine, C. (2008). Who's messing with my mind? The implications of dual-process models for the ethics of advertising to children. *International Journal of Advertising*, 27 (3), 447-470.
4. Id.
5. The Handbook of Children, Media, and Development, (Sandra L. Calvert & Barbara J. Wilson eds., 1 ed. 2008), <https://onlinelibrary.wiley.com/doi/book/10.1002/9781444302752> (last visited Jan 18, 2024).
6. Valerie Verdoodt, The Role of Children's Rights in Regulating Digital Advertising, 27 *INT'L J. CHILD. RTS.* 455 (2019).
7. Valerie Verdoodt, Damian Clifford & Eva Lievens, Toying with Children's Emotions, the New Game in Town? The Legality of Advergaming in the EU, 32 *Computer Law & Security Review* 599 (2016).
8. Valerie Verdoodt, supra note 6.
9. Daems, K., De Pelsmacker, P., & Moons, I. (2019). The effect of ad integration and interactivity on young teenagers' memory, brand attitude and personal data sharing. *Computers in Human Behavior*, 99, 245–259.
10. auberghe, V., Vanwesenbeeck, I., De Jans, S., Hudders, L., & Ponnet, K. (2021). How adolescents use social media to cope with feelings of loneliness and anxiety during COVID-19 lockdown. *CYBERPSYCHOLOGY BEHAVIOR AND SOCIAL NETWORKING*, 24 (4), 250–257.
11. Marijke De Veirman, Veroline Cauberghe & Liselot Hudders, Marketing through Instagram Influencers: The Impact of Number of Followers and Product Divergence on Brand Attitude, 36 *International Journal of Advertising* 798 (2017).
12. The ASCI Code - Advertising Standards Council Of India, ASCI, <https://www.ascionline.in/the-asci-code/> (last visited Jan 20, 2024).
13. Id.
14. Kunal Khureja, Regulation of Advertisements in India - Explained, Pointwise - ForumIAS Blog, (Jul., 2022), <https://forumias.com/blog/regulation-of-advertisements-in-india/> (last visited Jan 20, 2024).
15. §10, Consumer Protection act, 2019, 35, acts of Parliament(India).
16. Consumer protection act 2019, 35, act of parliament(India).
17. Id.
18. Bhumika Indulia, Changing How India Advertises: Government Introduces New Guidelines, SCC Blog (Jul. 7, 2022), <https://www.sconline.com/blog/post/2022/07/07/changing-how-india-advertises-government-introduces-new-guidelines/> (last visited Jan 20, 2024).
19. Id.
20. Nishith Desai Associates Guidelines on Misleading Advertisements and Endorsements notified under the Consumer Protection Act, 2019, <https://www.nishithdesai.com/NewsDetails/6172> (last visited Jan 20, 2024).
21. Breves, Priska Linda, Liebers Nicole, Marina Abt, Annika Kunze, 'The Perceived Fit between Instagram Influencers and the Endorsed Brand' (2019) *Journal of Advertising Research* 59 (4) 440-454.
22. Business Standard, Indian Gaming Worth \$2.6 Bn in FY22, Will Grow Four-Fold by 2027: Report, (2022), [https://www.business-standard.com/article/companies/indian-gaming-worth-2-6-bn-in-fy22-will-grow-four-fold-by-2027-report-122110301132\\_1.html](https://www.business-standard.com/article/companies/indian-gaming-worth-2-6-bn-in-fy22-will-grow-four-fold-by-2027-report-122110301132_1.html) (last visited Jan 20, 2024).
23. James W. Cagley, Children's Preferences of Selected Print Appeals, 3 *Journal of Advertising* 34 (1974).
24. K.A. Abbas v. The Union of India & Anr, 1971 AIR 481, 1971 SCR (2) 446

- Assistant Professor of Law at VSSD College.



# Atma Nirbhar Bharat – Striding Forward with Self Reliance

□ Dr. Manas Naskar<sup>1</sup> Dr. Purnima Mallick<sup>2</sup>

## Abstract

*A number of Initiatives have been taken by the Government of India (GoI) within the frame of ‘Atma Nirbhar Bharat’ that signifies a key strategy aimed at fostering self-reliance in India’s economic agenda. On of the inventiveness stresses the integral role played by Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) in achieving self-sufficiency. The government of India recognizes the potential of MSMEs as key contributors to employment generation, industrial growth, and overall economic development. By implementing dedicated policies and support measures, the government seeks to empower MSMEs, addressing challenges and facilitating its growth. By aligning the Atma Nirbhar Bharat initiative with the vibrancy and resilience of the MSME sector, India aims to build self-sustaining economy that has potential to navigate global challenges with strength. The present paper aims to focus on the initiative of the Government of India known as “Atma Nirbhar Bharat” and its emphasis on the role of building Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) sector. The paper explores the concept of self-reliance promoted by the government and delves into the specific measures and policies designed to empower and strengthen the MSME sector. In addition, the paper highlights the significance of MSMEs in transforming the economic landscape of the country. It further provides insights into the challenges faced by MSMEs and the supportive measures in terms of investment in MSME sector implemented by the government. The research relies on both primary and secondary data collected from a variety of sources, including published articles, government websites, and other online platforms, as well as news sources. The data are culled and analyzed using various statistical tools and techniques. Findings suggests that there exists a very strong relationship between Atma Nirbhar Bharat and the role played by MSMEs in realizing this vision. MSME is playing a key role in building new India.*

**Key words:** Atma Nirbhar Bharat, Economic development, GoI, MSME, Policy, Self Sufficiency

## Introduction

The Prime Minister of India Narendra Modi has envisioned “Atma Nirbhar Bharat,” or ‘independent India.’ To achieve this vision, he stressed on the role of the Micro, Small, and Medium Enterprise (MSME) sector in India. In response to the evolving economic landscape, the MSME sector, is now poised to become the backbone of the nation and is aligning with the Prime Minister’s call for ‘vocal for local.’ This shift shows the need to strengthen various industry sectors under MSMEs. The MSME play a pivotal role in supporting all five pillars of the “ MSME sector stands as second largest sector India with regard to (Example : in employment generation or in contribution GDP etc)? give the space between second largest. By embracing the ‘vocal for local’ concept, the MSME sector is positioned to ensure self-sufficiency by producing essential goods and services, making it a key player in achieving the vision of a confident and independent India (Parsuram and Gupta, 2022). It is important to note that, after agriculture, the MSME sector stands as the second largest sector in India. Against this backdrop it is important to explore the role of MSME in achieving the vision of “Atma Nirbhar Bharat”. The paper explores the concept of self-reliance promoted by the government and delves into the specific measures and policies designed to empower and strengthen the MSME sector. In addition, the paper highlights the significance of MSMEs in transforming the economic landscape of the country. It further provides insights into the challenges faced by MSMEs and the supportive measures in terms of investment in MSME sector implemented by the government.

## Research Methodology

The research is carried out using secondary data and information collected from a variety of sources, including published articles, scholarly works, government websites, and other online platforms, as well as news sources.

## Research Objectives

- I. To examine the vision of ‘Atma Nirbhar Bharat’ and policies adopted to empower and strengthen MSME.

- II. To identify the challenges faced by the Indian MSME sector.
- III. To show the present position of MSME considering Darjeeling and Howrah districts.
- IV. To give some suggestive measure to advance and improve the Indian MSME sector.

Atma Nirbhar Bharat: A vision to make India self-sufficient

The vision of “Atma Nirbhar Bharat,” meaning ‘independent India,’ is coined by Prime Minister Narendra Modi, aiming to position India as a more significant player in the global economy. This goal involves pursuing efficient, competitive, and resilient economy, fostering self-reliance and self-sufficiency. The “Atma Nirbhar Bharat Abhiyan” has been instrumental in supporting the Indian economy during the challenges posed by Covid-19. The Prime Minister mentioned in his speech that the present tough time on account of Covid-19 is as an opportunity to build self-confidence. The call of Prime Minister has received widespread acceptance by the Indian industries. The ‘Atma Nirbhar Bharat’ is built on five pillars: Economy, Infrastructure, System, Vibrant Demography, and Demand. Among these, the Micro, Small, and Medium Enterprise (MSME) sector in India plays a crucial role, contributing to all five aspects and thereby realizing the vision of a self-reliant India (Kumar, 2022). Strengthening the MSMEs is identified as the key factor in achieving the objectives of the ‘Atma Nirbhar Bharat Abhiyan’ (Banerjee & Gupta, 2019).

#### Present Scenario of MSME

The overall registered MSME units from West Bengal and some of its districts is shown in table 1.1.

Table 1.1: Overall registered Micro and Small-Scale Industries in West Bengal

	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22
<b>West Bengal</b>	14326	12508	17984	29383	56922
<b>Darjeeling</b>	495	2636	1161	1836	6235
<b>Howrah</b>	2258	2637	3787	5779	11556

Source: UAM and UDYAM Data West Bengal\* (Howrah, Darjeeling, Kalimpong, Kolkata, South 24 Parganas)

It is observed from the table that the number of units registered from the year 2017-2022 is increasing every year from West Bengal, considering 5 districts namely Howrah, Darjeeling, Kalimpong, Kolkata and South 24 Parganas. Here it can be write, as compared to the Darjeeling district rate of registration of MSMEs are high in the Howrah district. It is remarkable to observe that during the pandemic, the number of registered units increased.

#### Significance of MSME

It is imperative to recognize the dynamic evolution of the Micro, Small, and Medium Enterprise (MSME) sector in

India over the years (Mukherjee, 2022). Initially, its primary role was to provide essential support to the national economy (Srivastava, 2019). However, with its rapid growth and in alignment with the prevailing “Atma Nirbhar” mindset, the MSME sector is now positioned as a key leader in developing the economy, a sentiment accentuated by the esteemed Prime Minister (Modi, 2020). This assertionsupports the promotion of the ‘vocal for local’ concept (Government of India, 2020). As previously mentioned, the ‘vocal for local’ initiative emphasize on fortifying diverse industry sectors, with particular focus on the MSME domain (Basu, 2022). This strategic approach is geared towards ensuring the domestic production of vital goods and services, thereby cultivating self-sufficiency (Sharma and Ozli, 2022). It is important to note that the MSME sector stands as the secondlargest sector in the GDP contribution of Indian economy (Khan and Gupta, 2022).

#### Measures and Policies to develop the MSME sector

The Micro, Small, and Medium Enterprise (MSME) sector in India plays a pivotal role in fostering economic growth, generating employment, and promoting entrepreneurship. This literature review aims to provide an insightful overview of the steps taken by the Indian government and other stakeholders to develop and support the MSME sector. Drawing from a diverse range of scholarly works and research studies, this review offers a comprehensive understanding of the initiatives and policies that have been implemented to promote MSME growth.

#### 1. Policy Reforms and Initiatives:

Governmentled policy reforms and initiatives have been instrumental in shaping the MSME sector. Researchers have highlighted the significance of policies such as the Micro, Small, and Medium Enterprises Development (MSMED) Act, which formalized the definition of MSMEs and introduced measures for their development (Pande, 2017).

#### 2. Financial Inclusion and Access to Credit:

Scholarly works shows the importance of initiatives like the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY), aimingto provide affordable credit to MSMEs, thus addressing their financial needs and promoting entrepreneurship (Mehrotra, 2020).

#### 3. Technology Adoption and Skill Development:

The adoption of technology is crucial for development of MSMEs. Studies have explored governmentbacked schemes such as Technology Upgradation Fund Scheme (TUFS) and Skill Development Initiatives (SDI) to equip MSMEs with modern technologies and skilled manpower (Singh & Pandey, 2018).

#### 4. Cluster Development Programs:

Clusterbased development has gained prominence in promoting synergy among MSMEs. Research has pointed out the effectiveness of cluster development programs, such as the Micro and Small Enterprises Cluster Development Programme (MSECDP), helps in enhancing competitiveness, growth and collaboration among MSMEs (Das & Paul, 2019).

#### 5. Export Promotion and Market Linkages:

Government seeks to integrate MSMEs into global markets. Initiatives like the National Manufacturing Competitiveness Program (NMCP) have been acknowledged for promoting export orientation and establishing market linkages for MSMEs (Aggarwal & Aggarwal, 2019).

#### 6. Digital Transformation and E-Governance:

The digital transformation is key factor in MSME development. Research shows that governmentled initiatives like the Digital MSME Scheme and the implementation of e-governance measures to streamline processes and enhance the digital presence of MSMEs (Chandra, 2019).

#### 7. Credit Guarantee and Financial Support:

The role of credit guarantee schemes in mitigating financial risks for MSMEs has been highly praised by the Indian MSME sector. The Credit Guarantee Fund Trust for Micro and Small Enterprises (CGTMSE) has been acknowledged for providing collateralfree credit and fostering financial stability for MSMEs (Bhatia & Jain, 2018).

#### 8. Institutional Support and Capacity Building:

Institutional support and linkages have been crucial for the sustained growth of MSMEs. Studies have explored the role of institutions like the National Small Industries Corporation (NSIC) and the Small Industries Development Bank of India (SIDBI) in providing financial and nonfinancial support to MSMEs (Kumar & Rani, 2021).

Hence, the literature review shows the multifaceted efforts undertaken by the Indian government to foster the development of the MSME sector.

Financial Support to Promote MSME

**Table 1.2: Investment in MSME**

(Figures in Cr Rs.)

#### Small Medium Enterprise Division

	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
BE	170.29	213.99	223.72	221.1	228.05
RE	143.03	174.93	171.54	208.65	154.88
RE (%)	22.30%	-1.94%	21.63%	-25.77%	
Expenditure	135.61	136.08	169.68	177.88	114
Expenditure (%)	34.66%	24.69%	4.83%	-35.91%	

#### Agro and Rural Industry Division

BE	3308.24	3641.75	4066.94	2927.54	3698.44
RE	3488.4	3714.43	2570.98	4202.73	3321.46
RE (%)	6.48%	-30.78%	63.47%	-20.97%	
Expenditure	3577.98	3692.21	2872.76	4094.1	2549.29
Expenditure (%)	3.19%	-22.19%	42.51%	-37.73%	

#### Development Commissioner (MSME)

BE	3074.08	3155.55	3281.54	12551.01	16772.51
RE	2921.18	3121.93	2921.7	11288.27	16197.36
RE (%)	6.87%	-6.41%	286.36%	43.49%	
Expenditure	2799.54	2889.35	2605.07	10888.48	8173.21
	3.21%	-9.84%	317.97%	-24.94%	

#### Administration and Financial Institution Division

BE				723	
RE				455.01	
Expenditure				125	
Total BE	6552.61	7011.29	7572.2	15699.65	21422
Total RE	6552.61	7011.29	5664.22	15699.65	20128.71
Total Expenditure	6513.13	6717.64	5647.51	15160.46	10961.5
Total Expenditure (%)	(%)	3.14%	-15.93%	168.45%	-27.70%

Source: MSME Annual Report 2022-23

Table 1.2 provides a detailed financial overview of budget estimates (BE), revised estimates (RE), and actual expenditures for various divisions over the fiscal years 2018-2019 to 2022-2023.

#### Small Medium Enterprise Division

The BE for the Small Medium Enterprise (SME) Division shows a consistent increase over the years, reaching its peak at 228.05 in 2022-2023. The RE figures fluctuate, with the most significant reduction of 25.77% in 2022-2023 compared to the BE. Actual expenditures show variations, with a notable reduction of 35.91% in 2022-2023 compared to the BE.

#### Agro and Rural Industry Division

The BE for the Agro and Rural Industry Division increases annually, peaking at 3698.44 in 2022-2023. The RE figures fluctuate, with the most significant increase of 63.47% in 2021-2022 compared to the BE. Actual expenditures show variations, with the highest reduction of 37.73% in 2022-2023 compared to the BE.

#### Development Commissioner (MSME)

The BE for the Development Commissioner (MSME) Division exhibits a substantial increase, reaching 16772.51 in 2022-2023. The RE figures vary, with the highest increase of 286.36% in 2020-2021 compared to the BE. Actual expenditures fluctuate, with the most significant reduction of 24.94% in 2022-2023 compared to the BE.

#### Administration and Financial Institution Division

For the Administration and Financial Institution Division, BE, RE, and actual expenditure values for the fiscal year 2021-2022 are 21422, 20128.71 and 10961.5 respectively.

## Overall Summary

The total BE for all divisions increased from 6552.61 in 2018-2019 to 21422 in 2022-2023. Total RE figures varied, with the highest at 20128.71 in 2022-2023. Total actual expenditures fluctuated, reaching their lowest at 10961.5 in 2022-2023.

The data highlights the financial dynamics and priorities of the respective divisions over the specified fiscal years, indicating changes in budgetary allocations and expenditures. The variations in RE and actual expenditures compared to the BE provide insights into the financial management and execution of budget plans across different divisions.

## Challenges of MSME

Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) are acknowledged as the backbone of the Indian economy, contributing significantly to employment generation, industrial output, and overall economic development. However, the sector is facing numerous challenges that impeding its growth and sustainability. This literature review aims to provide a comprehensive understanding of the challenges faced by Indian MSMEs, drawing insights from various scholarly works and research studies.

### 1. Access to Finance

Access to adequate and timely finance remains a critical challenge for Indian MSMEs. Limited collateral, high interest rates, and stringent lending norms often hinder MSMEs' ability to secure funding for expansion and operational needs (Ayyagari et al., 2014).

### 2. Technology Adoption and Innovation

The adoption of modern technology is a major barrier for the advancement of MSMEs. However, many Indian MSMEs face challenges in embracing new technologies due to limited availability of financial resources, lack of awareness, and skilled workforce (Mishra et al., 2018).

### 3. Infrastructural Bottlenecks

Inadequate infrastructure, including transportation, logistics, and power supply, poses significant challenges for MSMEs. Poor connectivity and unreliable infrastructure contribute to increased operational costs and inefficiencies (Gupta & Jain, 2016).

### 4. Regulatory Compliance Burden

The complex regulatory environment in India become one of the barriers of MSME growth. Navigating through various regulations, obtaining licenses, and adhering to tax norms often divert resources away from core business activities (Vijayakumar, 2019).

### 5. Market Access and Globalization

MSMEs struggle to access broader markets, both domestically and globally. This happens because of poor market connectivity, improper marketing strategies, and insufficient exposure to international markets hinder their growth potential (Sengupta, 2017).

## 6. Skill Shortages and Labor Productivity:

A shortage of skilled labor and continuous up-skilling present challenges for MSMEs to survive in the competitive market. This is further accentuated by the inadequate availability of vocational training facilities (Kathuria et al., 2015).

## 7. Risk Management:

MSMEs often face challenges in managing risks associated with market fluctuations, currency exchange rates, and economic uncertainties. Limited awareness and access to risk management tools contribute to their vulnerability (Verma & Barua, 2018).

## 8. Social and Environmental Sustainability

Increasing awareness of social and environmental sustainability poses challenges for MSMEs. Balancing economic growth with environmental and social considerations is a growing concern (Sodhi & Tang, 2019).

### Analysis of Major Challenges faced by the MSE sectors

Several factors have been identified that are strongly related to MSES units. It was found that immediately following the closure of the maximum number of MSES units due to the pandemic. The most important problem is the financial reason. Due to a lack of funds and an unstable commercialization process, many rural and urban units were destroyed. All factors were categorically grouped into four main categories. These are

#### 1 Financial Problems



Financial problems are the most important and effective problem for MSEs. The financial institution is the key platform to provide funding to the company to manage a business. MSEs (micro, small and medium-sized enterprises) are often confronted with a variety of financial challenges due to their size, limited resources and vulnerability to market fluctuations. In fig no. 1.1 the maximum financial issue has been identified. It is important to note that the financial difficulties experienced by MSEs may vary depending on

factors such as industry, location and individual circumstances. Seeking personalized guidance from financial professionals or business support organizations can offer customized solutions to meet the specific financial needs of each MSES. MSES often find it difficult to secure adequate financing or credit from financial institutions.

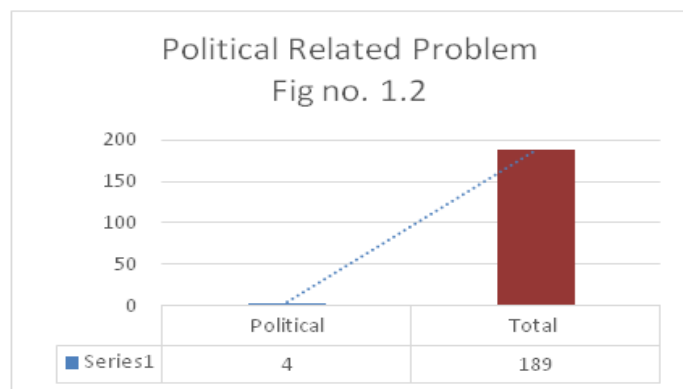
Due to factors such as lack of guarantee, limited credit history and perceived higher risk associated with small businesses. This may be detrimental to their growth and expansion plans. They may experience delays in receiving payments from customers, which can lead to challenges in covering operating expenses, paying vendors, or investing in growth initiatives. Some of the reasons are discussed below.

Table no: 1.3: Financial Problem

**Table no: 1.3: Financial Problem**

Causes	Effects
Difficulties for bank loan	Growth stifled, investment restrained and financial instability for companies.
Failed to pay interest part of the loan for MSES	Increased debt burden, potential delinquency, credit rating degradation and limited access to future financing.
Failed to pay both principal and interest amount of loan	Risk of default, potential lawsuits, damaged credit and financial impact to MSES.
Too much debt to pay	Financial constraints, limited cashflow, reduced investment capacity and potential insolvency for companies.
Lack of subsidies from Govt	Reduced financial support, limited growth possibilities, increased costs and reduced competitiveness for businesses.

## 2 Political Related Problem



Political issues may have major implications for MSES. Frequent changes to government policies, regulations and tax systems have the potential to disrupt MSES activities and planning. Policy uncertainty presents challenges for long-term decision-making, investment planning and resource allocation. Endemic corruption and bureaucratic obstacles can stand in the way of MSES growth. Excessive red tape, solicitations for bribes, and inefficient administrative processes increase costs, delay operations, and create barriers to market entry and expansion. MSES often have difficulty accessing government contracts because of limited information, complex procurement processes and corporate favouritism. Inadequate government support, including a lack of grants, subsidies and financial assistance programs specifically designed for MSES, can be detrimental to their growth and competitiveness relative to large corporations. Political instability, civil strife and conflict in a region or country can have serious implications for MSES. They are facing disruptions to supply chains, reduced consumer demand, damage to infrastructure, and risks to employee safety. MSES often face difficulties competing with large companies because of unequal power dynamics and limited resources. MSES may not be adequately represented and influenced in political decision-making processes. Therefore, their concerns and needs may not be adequately addressed, resulting in policies that do not adequately address their particular challenges. Solving the political problems of MSES requires a concerted effort from government and the business community. A few political causes and effects are given below in Table 1.4.

**Table no: 1.4: Political Related Problem**

Causes	Effects
Political pressure	Too much political pressure on MSES can lead to heavy regulation, slow growth, limit innovation and increase operational challenges.
Constant political pressure in daily business	Declining investment, impeding competitiveness, weakening business climate and limited sustainability.
Prejudice prevailed in the region	Widespread biases in the region hinder MSES growth, access to resources, market opportunities, and fair competition and inclusiveness.
Political authorities' direct intervention	Direct political intervention in MSES can result in market distortions, inefficiencies, corruption, reduced autonomy and a lack of entrepreneurship.



### 3 Marketing Related Problem

Marketing issues are a significant challenge for MSEs. Financial limitations often limit their ability to invest in large marketing campaigns or hire marketers. This can lead to reduced brand visibility, limited scope of the market and difficulty in attracting new customers. In the fig no. 1.3, it is shown that out of 189 respondents, only 39 units were closed because of marketing issues. Furthermore, MSEs often experience difficulties in conducting in-depth market studies due to budgetary constraints. Without a clear understanding of their target audience, competitors and market trends, they may have difficulty positioning their products or services in an effective manner. Another common problem is the absence of a coherent and effective branding strategy. Inconsistent branding, weak brand messages, and secondary visual identity can make it difficult for MSEs to stand out from their competitors and build a strong brand presence. Lack of technological expertise, limited online presence and under-utilization of digital marketing. The market-related causes and effects are listed below in Table 1.5.

Table no: 1.5: Marketing-Related Problem

Causes	Effects
Wrong marketing of the product	Ineffective product marketing can result in poor sales, limited market penetration, reduced customer interest, and slower growth of MSEs.
Erroneous marketing system	Mismarketing systems in MSEs can lead to wasted resources, missed opportunities, reduced competitiveness and reduced profitability.

Poor marketing techniques	A poor MSEs marketing system can result in limited customer awareness, low sales, reduced market share and stagnant business growth.
High cost of marketing	High marketing costs for MSEs can lead to budget constraints, limited promotional activities, reduced brand visibility and limited growth opportunities.

### 4 Sales Related Problem

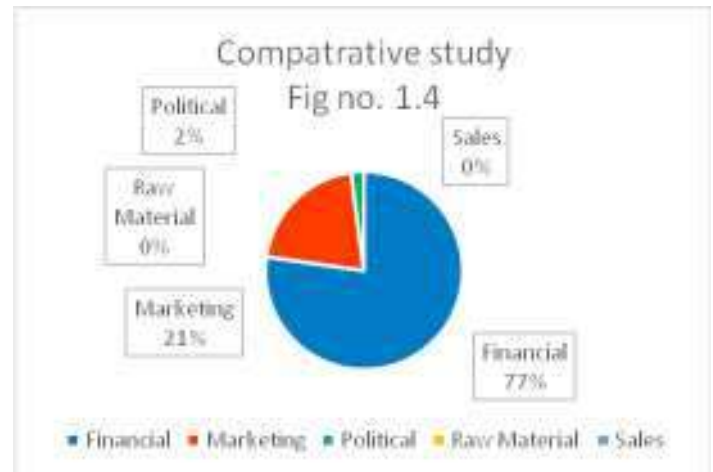
Sales issues may present significant challenges for MSEs (micro, small and medium-sized enterprises). These challenges can impede their ability to generate revenue, expand their clientele and achieve sustainable growth. A common problem is the difficulty to generate coherent sales prospects. MSEs often face limited resources to implement strong lead generation strategies, resulting in a narrower pool of potential clients. This can lead to inconsistent sales performance and fluctuating earnings. Another challenge is the absence of an organized sales process. MSEs may not have clear sales targets, standard sales techniques and effective sales training. It can lead to ineffective sales efforts, missed opportunities and reduced conversion rates. To resolve these sales issues, MSEs can focus on improving lead generation through targeted marketing strategies, relationship building with leads and leveraging digital platforms. In addition, conducting market research, improving positioning strategies, and exploring partnerships with distributors can help broaden their market reach and increase sales opportunities.

Table no: 1.6: Sales Related Problem

Causes	Effects
Theft affected the sales	Negative effect on overall company performance.
Unexpected expenses	Unforeseen expenditures have caused financial hardship for MSEs, affecting their profitability and the growth of their business.
Low profit margin	Financial volatility, limited reinvestments, reduced business growth and potential long-term

	sustainability issues.
Minimum sales volume	Minimum sales volume negatively impacts MSEs, making it difficult to recover costs and achieve sustainable profitability.

### Comparative Study on the Various Challenges faced by the MSME



### 5 Raw Material Related Problem

Raw material issues present significant challenges to MSEs. Difficulty in finding the right number of raw materials, resulting in production delays and inability to meet customer demands. Rapidly changing raw material prices make it difficult to plan and manage production costs efficiently. Unequal quality of raw materials received from suppliers, resulting in variations in the quality of the final product. To address these challenges, MSEs must explore alternative procurement options, establish relationships with multiple suppliers, negotiate favourable contracts, and implement effective inventory management practices.

**Table no. 1.7: Raw Material Related Problem**

Causes	Effects
High price of Raw material	High raw material prices reduce the profitability of MSEs, which hampers its ability to maintain competitive prices and achieve sustainable growth.
Labour problem	Labour problems hinder MSEs operations, causing disruption, reduced productivity, and challenges in achieving production objectives and customer demands.
Defected raw material	Defective raw materials are harmful to MSEs, resulting in production delays, releases, increased costs and potential damage to client relationships.
Unavailable raw materials	Unavailable raw materials disturb MSEs operations resulting in production delays, inability to process orders, potential revenue losses and customer dissatisfaction.

Financial problems, like insufficient capital or growing debts, can hinder their operations. Marketing issues, such as ineffective advocacy or reaching a target audience, influence their competitiveness. Political instability and policy changes can wreak havoc on the business community and affect MSEs. Issues related to raw materials, such as shortages and price fluctuations, pose barriers. In addition, challenges in generating sales, such as low demand or intense competition, contribute more to closures. Responding to these multiple challenges requires focused interventions. Including access to financing, marketing support, a stable policy environment, reliable supply chains and support for sales network expansion to protect the survival and growth of MSEs. In the figure number 1.4 it has been determined that the MSEs unit has been closed over the past five years due to financial issues. Some other issues are there such as marketing (21%), Political (2%). But the raw material issue and the sales issue have not been identified to close the MSEs. To meet these challenges, it is essential that MSEs have access to financing. By addressing these challenges, it can be encouraging the sustainability and growth of MSEs, fostering a dynamic and resilient business ecosystem.

The provision of support and resources to MSEs is critical to addressing these challenges. This includes making available affordable financing, providing business development assistance and training programs, and creating a supportive environment through stable and consistent policies. In addition, fostering collaboration between MSEs and industry associations can strengthen their collective voice and representation by promoting policies that advance their interests and respond to their specific needs.

## Conclusion

The narrative on the MSME sector in India unfolds against a backdrop of persistent challenges and government interventions. The literature review highlights the intricate hurdles faced by Indian MSMEs, encompassing financial constraints, technological impediments, and regulatory issues. Though the Indian government has proactively implemented a comprehensive suite of policies and financial initiatives aimed at fortifying the sector's foundations and achieve the vision of 'Atma Nirbhar Bharat, still more required to be done to make the Indian MSME at par with International standard'. Key initiatives such as the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY), Technology Upgradation Fund Scheme (TUFS), and Credit Guarantee Fund Trust for Micro and Small Enterprises (CGTMSE) exemplify a commitment to addressing core issues of financial access, technological adoption, and risk mitigation. The financial data interpretation adds a quantitative layer to the narrative, revealing the evolving dynamics of resource allocations and expenditures across different divisions related to MSME development. This sheds light on changing priorities and strategic shifts in the arena of MSME investment. As India positions itself as a global economic player, the MSME sector's role becomes increasingly pivotal and significant. More resources required to be allocated for bolstering its growth. Moving forward, a holistic strategy is imperative, emphasizing the continual evaluation and refinement of existing policies. Strengthening the MSME sector's resilience requires sustained efforts in financial literacy, streamlining regulatory processes, and an unwavering commitment to sustainable practices. The international market indicates that the Indian MSME sector must be equipped to navigate global competitive markets. Collaborations with international partners, incentives for innovation, and persistent investment in skill development are key facets of a forward-looking approach that will amplify the sector's contribution to India's economic growth and enhance its global competitiveness. In essence, the collaborative efforts of policymakers, financial institutions, and MSMEs could build a robust and adaptive MSME sector. Through this in-depth discourse, the paper aims to demonstrate that, given appropriate policy interventions, Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) have the potential to emerge as the foundation of the economy. With effective support from the government, MSMEs can attain the competitiveness necessary to manufacture essential goods domestically, contributing significantly to the 'Atma Nirbhar Bharat' initiative. The key lies in providing them with robust support, enabling them to play a more substantial role in the self-reliance vision of the nation.

## Recommendations

While the steps taken so far for achieving the vision of 'Atma Nirbhar Bharat' and promotion of MSME are commendable, however, there is always room for improvement. The following policy recommendations can further strengthen the support ecosystem for Indian MSMEs:

### 1. Enhanced Financial Literacy Programs:

Invest in comprehensive financial literacy programs targeted at MSME entrepreneurs to empower them with the knowledge and skills necessary to navigate complex financial landscapes, make informed decisions, and access a diverse range of financial services effectively.

### 2. Streamlined Regulatory Processes:

Continue efforts to simplify and streamline regulatory processes for MSMEs, reducing bureaucratic hurdles and administrative burdens. This would facilitate a more conducive business environment, allowing MSMEs to operate with greater ease and agility.

### 3. Incentivize Sustainable Practices

Introduce incentives and support mechanisms to encourage MSMEs to adopt environmentally and socially sustainable business practices. Aligning with global sustainability standards will not only enhance the sector's image but also contribute to long-term resilience and market competitiveness.

### 4. International Collaboration and Market Access:

Facilitate and encourage international collaborations, partnerships, and market access for MSMEs. Creating platforms for cross-border collaborations and trade will open new avenues for growth. This will make Indian MSMEs to tap into global markets and diversify their customer base.

### 5. Continuous Innovation Support

Establish and strengthen initiatives that foster innovation within the MSME sector. Provide support for research and development, technological adoption, and innovation-driven entrepreneurship to enhance the sector's ability to adapt to changing market demands and remain competitive. More investment is required for the growth and development of MSME.

### 6. Investment in Skill Development

Sustain and expand initiatives for skill development within the MSME workforce. Up-skilling and reskilling programs can address the issue. Further, by up-skilling workforce will be capable of leveraging emerging technologies and industry trends.

### 7. Regular Policy Evaluation and Refinement

Institute a framework for the regular evaluation and refinement of existing policies and financial interventions. The



adaptive and responsive policies can address emerging challenges and capitalize on new opportunities effectively.

## References

1. Aggarwal, S., & Aggarwal, A. (2019). Role of cluster development in promoting micro and small enterprises. *International Journal of Development Research*, 9(6), 2865028655.
2. Ayyagari, M., Beck, T., & DemirgüçKunt, A. (2014). Small and medium enterprises across the globe. *Small Business Economics*, 42(1), 99131.
3. Bannerjee P and Gupta K (2019). Shifting paradigms: MSMEs in the era of 'Atma Nirbhar Bharat.' *Small Business Trends*, 28(5), 311327.
4. Basu, N. (2022). Prime Minister's emphasis on 'vocal for local': A catalyst for change. *Policy and Governance Review*, 40(2), 189204.
5. Bhatia, M., & Jain, S. (2018). Credit guarantee schemes and financial inclusion for MSMEs: An analysis. *International Journal of Management, IT and Engineering*, 8(6), 219230.
6. Chandra, P. (2019). Digital transformation and e-governance for MSMEs in India. *International Journal of Scientific & Engineering Research*, 10(2), 10031007.
7. Das, S., & Paul, J. (2019). Cluster based development for enhancing MSME competitiveness. *Journal of Innovation and Entrepreneurship*, 8(1), 119.
8. Government of India. (2020). Promoting 'vocal for local': A national initiative. *Economic Policy Briefs*, 18(1), 4558.
9. Government of India. (2020). Strategic approach to 'vocal for local': Strengthening MSMEs. *National Economic Policies*, 25(3), 321336.
10. Gupta, N., & Jain, P. (2016). Micro, small and medium enterprises in India: A study of industry trends, challenges and opportunities. *Journal of Global Entrepreneurship Research*, 6(1), 114.
11. Kathuria, R., Bhardwaj, A., & Das, A. (2015). Skill development in India: The vocational education and training system. The World Bank.
12. Khan A & Gupta M. (2022). Domestic production and self-sufficiency: The MSME perspective. *Journal of Economic Independence*, 48(4), 567580.
13. Kumar (2022). MSMEs in the Indian economy: A comprehensive analysis. *Small Business Economics*, 38(9), 11011118.
14. Kumar, A., & Rani, P. (2021). Role of NSIC in the development of MSMEs in India. *International Journal of Social Sciences & Humanities*, 5(1), 156164.
15. Mehrotra, A. (2020). Financial inclusion and MSME growth: Evidence from India. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, 7(8), 190195.
16. Mishra, P., Akella, D., & Pillai, A. S. (2018). Challenges in technology adoption by MSMEs: An empirical analysis. *Journal of Manufacturing Technology Management*, 29(3), 415437.
17. Modi, N. (2020). Atma Nirbhar mindset and the role of MSMEs. *Leadership Perspectives*, 12(3), 201215.
18. Mukherjee, A. (2022). Supporting the national economy: The early role of MSMEs. *Economic Review*, 75(4), 567589.
19. Pande, P. (2017). Policy initiatives for MSME development in India. *Management Dynamics*, 17(1), 2034.
20. Parsuram and Gupta K. (2022). Fortifying industry sectors: The MSME imperative. *Economic Development Strategies*, 55(6), 789802.
21. Sengupta, R. (2017). Micro, small, and medium enterprises (MSMEs) in India: Opportunities, challenges, and the way forward. *Journal of Entrepreneurship and Innovation in Emerging Economies*, 3(2), 147158.
22. Sharma & Ozli. (2022). The emerging role of MSMEs as the backbone of the economy. *Journal of Business Dynamics*, 32(7), 901918.
23. Singh, R., & Pandey, R. (2018). Impact of technology adoption on MSMEs: A case study of Indian firms. *International Journal of Scientific Research*, 7(1), 1417.
24. Sodhi, M. S., & Tang, C. S. (2019). Socially responsible supplier selection and order allocation: A new model. *European Journal of Operational Research*, 272(3), 10621075.
25. Srivastava, R. (2019). Evolution of the MSME sector: A historical perspective. *Journal of Economic Development*, 45(2), 123145.
26. Verma, S., & Barua, M. K. (2018). Risk management in Indian micro, small, and medium enterprises: A study of selected clusters. *International Journal of Management Studies*, 25(1), 1941.
27. Vijayakumar, N. (2019). Challenges faced by MSMEs in India. *International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS)*, 4(1), 2132.

- I Associate Professor, Department of Commerce,  
Raiganj University, WB  
2 Assistant Professor, Dept. of Geography,  
Deshbandhu College for Girls, WB

# Surrogacy Regulation Act, 2021 : Challenges and Prospects

□ Dr. Alka Mudgal

## Introduction

Surrogacy is a method of assisted reproduction whereby a woman agrees to deliver a child for another couple or a person due to the latter's infertility or inability to bear a child. Sometimes women reluctant to carry pregnancy also opt for surrogacy. Surrogacy can be traditional and gestational both. Traditional surrogacy is also known as partial, genetic, straight or natural surrogacy. In traditional surrogacy, surrogate is impregnated either naturally or artificially and the child born is genetically related to the surrogate mother. In gestational surrogacy, also known as IVF or host or full surrogacy, embryo is transferred into the uterus of surrogate through IVF technology and surrogate is not a genetic/biological mother of the child.

The purpose of surrogacy can be commercial or altruistic. In altruistic surrogacy surrogate is not compensated monetarily except reimbursement for the medical and other necessary expenses during pregnancy but in commercial surrogacy, commissioning parents offer financial incentives or fees to the willing surrogate.

## Commercialisation of Surrogacy and Commodification of Surrogates and the Children Born

In recent years, surrogacy has emerged as a viable option to become parents for the people of all gender. Several agencies and medical clinics are raking profit out of it by facilitating or making surrogacy arrangements. Commercial surrogacy is booming due to the factors like advancement of technology in the medical sphere, growing infertility, difficulty in getting child for adoption, social acceptance of the different reproductive methods of making family, growing number of singles and the same sex couples wishing to have children. Commercial surrogacy industry's estimated value, which was of \$ 14 billion in 2022, is expected to reach \$ 129 billion by 2032. Depending on the place of surrogacy, the cost of surrogacy service vary such as, according to the New York Department of Health, it can cost between \$ 60,000 and 150,000 in USA, besides legal fees, medical expenses,

surrogate's compensation and other such expenditures and between \$ 60,000 and 70,000 in Mexico and Latin America (Roeloffs, 2023). The cost is much lower in several less developed nations. *Houg and Roux* (2015) write that the cost of a child differs from less than \$ 15,000 to more than \$ 100,000 but surrogate mother obtains less than a quarter of this amount and the rest of the amount goes to the clinics, advocates and the brokers.

This global market of surrogacy has become a subject of criticism as it is causing economic and racial exploitation of mainly the poor women of the global south for the benefit of particularly white and wealthy people. Several incidents took place in the past when women, under threat or under the pretext of giving a source of livelihood, were trafficked and compelled to become surrogates. Intending parent/s are well off, educated whereas surrogates are often poor, illiterate or under-educated due to which surrogates' face difficulty in understanding the terms and conditions of the surrogacy contract which leads to their exploitation. In developing regions, poor women are compelled to be surrogates by their close relatives like spouses or middlemen. In commercial surrogacy, surrogate is like an instrument to be used to produce a child for the intending couple/person and is bound to follow the medical advice and other contractual obligations which restrict her liberty. Thus surrogacy has its medical, psychological and social effects on surrogate mother. There are several other concerns not only for surrogates but also for intending parent/s, like fear of failure of IVF treatment or miscarriage which may cause replacement of surrogate by another, commissioning parents' concern about the cost involved and fear of social stigma.

**Violation of Children's Rights in Commercial Surrogacy:** The child born out of surrogacy may have up to six adults claiming parental right over him/her; the genetic mother (the egg donor), the gestational mother (surrogate) and her husband (presumption of paternity), the commissioning mother and the genetic father (sperm donor). The gestational mother may also be the genetic mother when she is inseminated by artificial means. It infringes the child's

rights to know his/her origin/identity as guaranteed in Article 7 of the UN Convention on the Rights of the Child. Such claims cause litigation (ECLJ, 2012). Several other instances like refusal by the surrogate to hand over the child to the commissioning parents and relinquishment of the child either by the surrogate or the intending couple show that the child is treated as an object in surrogacy which poses a threat to the interests of the child.

### **International Laws and surrogacy**

Laws related to surrogacy differ from one state to another. Nations like France, Italy, Germany, Spain have prohibited all types of surrogacy whereas Britain, Canada, Australia, New Zealand and Denmark have prohibited commercial surrogacy and allow altruistic surrogacy only (Cheung, 2014; reuters.com, 2023). Surrogacy is legitimate in several developing nations. Thus lack of common laws to regulate surrogacy creates complex situation and often leads to litigation and causes suffering for intending parents, surrogates and the resulting children. However there are some international treaties which can prove to be useful. Article 4 of *Convention on Protection of Children and Cooperation in respect of Inter-country Adoption (1993)* states that an adoption is valid only when the consent of the parents is given freely, without any payment, and mother's consent for adoption has been given only after child's birth. According to *Article 2a of Optional protocol to the Convention on the Rights of a Child on the sale of children, child prostitution and child pornography* "Sale of children means any act or transaction whereby a child is transferred by any person or group of persons to another for remuneration or any other consideration" (*Optional Protocol to C.R.C., 2000*). Article 35 of the Convention on the Rights of the Child also states "State parties shall take all appropriate national, bilateral and multilateral measures to prevent the abduction of, the sale of or traffic in children for any purpose or in any form" (CRC, 1989). Commercial surrogacy is equivalent to the sale of a child as all these provisions are violated in commercial surrogacy.

International treaties like International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights, International Covenant on Civil and Political Rights which promotes basic human rights and the Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination against Women (CEDAW) which was adopted in 1979 by UNO to protect women's rights such as right to health, right to safety in working conditions and protection of women against discrimination, can pave the way in safeguarding human rights of surrogates.

### **Commercialisation of Surrogacy in India**

The world witnessed the first successful birth through surrogacy in the mid 1980s. After ten years, it happened for

the first time in India (Chennai). In 1997, to get medical treatment for her paralysed husband, an Indian became gestational surrogate and was compensated for that (CSR report, 2012). In India, commercial surrogacy or 'womb for rent' business has reached \$445 million a year. English speaking environment and the cheap medical services attract clients in India (Anu, 2013). The cost of surrogacy service in India is about 1/3 of that in UK and USA (Saxena, 2012). Generally surrogates are selected from the small towns. Anand, Surat, Jamnagar of Gujarat and Indore are places where large number of couples visit to have a baby through surrogacy. Rajinder Kaur, in her thesis submitted in 2014, wrote, "last year, approximately 400 surrogate babies were delivered in Gujarat and handed over to couple mostly from US, Britain, France and Israel" (Kaur, 2014, p. 153)

In India, surrogacy is viewed as unethical and is often equated with the prostitution. Amrita Pande, while conducting fieldwork (for her research) in Anand (district of Gujarat), found that this stigma forced surrogates to keep away from homes and hid themselves in the clinics or in the surrogacy hostels during pregnancy where they are monitored round the clock. Surrogates are made to believe that they are like vessels and the child they are going to bear will be taken away from them immediately after their delivery. Amrita views commercial surrogacy as a new type of labour in India which is gendered, exploitative and stigmatized (Pande, *Signs*, Summer 2010).

Protagonists of surrogacy emphasize the aspect of choice in surrogacy on the ground that woman has the right to choose what she wants to do with her body but most of the surrogates downplay the aspect of 'choice'. In the words of one surrogate mother Salma (as quoted by Pande), "Who would choose to do this? I have had a lifetime worth of injections pumped into me... In the beginning I had about twenty to twenty five pills almost every day. I feel bloated all the time. But I know I have to do it for my children's future. This is not a choice. This is 'majboori' (necessity). When we heard of surrogacy we did not have clothes to wear after the rains - just one pair that used to get wet and our roof had fallen down what were we to do? If your family is starving what will you do with respect? Prestige won't fill an empty stomach" (Pande, *Feminist Studies*, 2010, pp.301-02). Thus, in India, opting to be a surrogate has not been a matter of choice but a means of survival for poor women. It has drawn attention of civil society and government in India.

### **Arrangements to Regulate Surrogacy:**

Indian Council of Medical Research (ICMR), in its attempts to regulate Assisted Reproductive Technology (ART) clinics, issued guidelines time and again but they were simply

guidelines. Lack of laws to regulate surrogacy not only resulted in mushrooming of surrogacy clinics but also drew criticism of surrogacy practices. The incident which triggered a debate over surrogacy in India occurred in 2008 when a Japanese doctor couple Dr. Yamada and his wife commissioned a baby in Anand (Gujarat). A surrogate gave birth to a baby girl in 2008 but by that time, the couple had separated (Kaur, 2014; Swaminathan, The Hindu, 2016). After divorce, wife of Dr. Yamada refused to accept the child. On the other hand, surrogate was also not ready to keep the child with her. Dr. Yamada was denied custody of a child as the Adoption and Maintenance Act 1956 prohibited single father from adopting a girl child. He sent his mother and petition was filed in the Supreme Court which directed the National Commission for Protection of Child Rights to deal with the issue but Government of India was also helpless due to lack of any clear law on surrogacy. Ultimately Court granted custody of surrogate baby Manji to her grandmother in view of father's genetic relation with the child. The Supreme Court held that surrogacy accord was valid in India. In this case, the Court's stance was pro surrogacy and pro contract. Legitimization of surrogacy by the Supreme Court sparked controversy about commercialization of surrogacy in India (Kaur, 2014).

Another such incident which revived the debate on surrogacy occurred in 2012 when Australian couple who had biological twins from surrogate in India, deserted one and took home another child. Such contempt for the rights of surrogate and the child born resulted in a number of Public Interest Litigation before the Supreme Court to ban commercial surrogacy (Swaminathan, The Hindu, 2016). To deal with such problems, Law Commission of India in 2009 issued its 228<sup>th</sup> report to regulate Assisted Reproductive Technology clinics and to elucidate the rights and obligations of parties to surrogacy including rights of the surrogate child. Report made several recommendations like- surrogacy accord should provide for financial support for a child born through surrogacy in case of death of intending couple/ individual before child's delivery or divorce between commissioning couple and their subsequent refusal to get child's custody; one of the commissioning parents should be a donor as bond of love with a child emanates from biological ties; birth certificate of a surrogate child should carry name of commissioning parent/s only; surrogacy contract must ensure life insurance for surrogate and should prohibit sex selective surrogacy. Commission also suggested to prohibit commercial surrogacy and allow altruistic surrogacy only (Law Commission of India, 2009). Meanwhile, demand to frame a law to ban commercial surrogacy gained momentum.

## **Surrogacy (Regulation) Act, 2021**

Gestational surrogacy is complex, expensive and harmful to the health of surrogates. However, clinics are opting for gestational surrogacy over the traditional. It is assumed that because of not being genetically connected to the child, gestational surrogates may be less attached to their children and can easily surrender them to their genetic parents. But it has not been without troubles as Public Interest Litigation were filed in the Supreme Court of India to ban commercialisation of surrogacy. In 2015, the government issued a notification to ban transnational surrogacy instructing all clinics in India not to support foreigners in having a child through an Indian surrogate. (Dev at legalserviceindia)

On the recommendations of the Law Commission of India, the Union Cabinet approved the Surrogacy (Regulation) Bill in 2016 (Ghosh and Khaitan, 2017). The Bill was passed by the Lok Sabha in December 2018 as the Surrogacy (Regulation) Bill, 2018 (Bill no. 257-c of 2016) but 'the Bill lapsed after the dissolution of the House' (Sharma, July 3, 2019, *livemint.com*). In August 5, 2019 the bill was passed by the Lok Sabha as the *Surrogacy (Regulation) Bill, 2019* (Bill no. 156-C of 2019).

### **Salient features of Surrogacy (Regulation) Act, 2021**

There were several points of objections in the Bill which were later redressed and after being passed by the parliament and approval of the President Kovind in December 2021, it became the Surrogacy (Regulation) Act 2021. Assisted Reproductive Technology (Regulation) Act 2021 was also passed in India to regulate functioning of ART clinics and ART Banks however for the purpose of study main focus shall be on the Act to regulate surrogacy. This *Surrogacy (Regulation) Act, 2021* has following features -

The Act prohibits surrogacy for commercial purposes including the sale and purchase of human embryo and gametes. It allows only altruistic surrogacy. Now the surrogacy procedures shall not be conducted unless an intending couple has a medical indication necessitating gestational surrogacy provided that a couple of Indian origin or an intending women shall obtain a certificate of recommendation from the Board. The Act also prohibits use of surrogacy procedures for producing children for sale, prostitution or any other form of exploitation.

No surrogacy procedures shall be conducted unless a certificate of medical indication is issued in favour of either or both members of the intending couple or intending woman necessitating gestational surrogacy from a District Medical Board. Eligibility certificate will be issued only to those intending couples who are married and are between 23 to 50 years and 26 to 55 years of age in case of female and

male respectively and only if the intending couple have not had any surviving child biologically /through adoption /through surrogacy earlier. However the above conditions will not be applicable to the intending couple having a child who is mentally/physically challenged/suffers from life threatening illness with no permanent cure. As per the Act, the intending couple or woman shall not disown the child born out of surrogacy whether in India or outside and such child shall be considered to be a biological/natural child of the couple or the intending women and will enjoy all the rights and privileges of a natural child. Besides, a person shall not seek/ conduct surrogacy procedures unless he has explained all side effects and after effects of such procedures to the intending surrogate mother and has received the surrogate's written consent, in the prescribed form, for such procedure in the language she understands.

Surrogate shall be issued eligibility certificate by the appropriate authority only if she is a married woman between the age of 25 to 35 years and also has a child of her own. A woman can be a surrogate only once in her life time. There is also a provision for insurance coverage for surrogate mother for a period of 36 months covering postpartum delivery complications. The intending surrogate must get a certificate of medical and psychological fitness for surrogacy by a registered medical practitioner.

The Central and State Government shall constitute National Assisted Reproductive Technology and Surrogacy Board and State Assisted Reproductive Technology and Surrogacy Board respectively.

The surrogacy clinic shall have to keep the records for 25 years or such period as may be prescribed by an appropriate authority. Violation of an Act shall be punishable. A commercial surrogacy, abandonment of a child, exploitation of a child or surrogate mother, sex selection for surrogacy by any person, organisation, clinic or lab shall be punishable with an imprisonment of upto 10 years and fine which may extend to 10 lakh rupees.

### **Controversial clauses and redressal by the government**

The clause in the Surrogacy Bill that the surrogate must be a close relative of the intending parents evoked reactions on the ground that it might cause victimisation of women at homes to bear a child for their relatives. It might raise some ethical questions also. Another point of objection was how would privacy of surrogate be protected if the deal occurs within the family? Contracting couple might also face difficulty in finding a close relative for surrogacy. There might be fear in the intending parents that the child after coming to know about her/his surrogate mother, might become close to the latter. Government redressed this problem by sending the bill

to the Rajya Sabha Select Committee for recommendations which were accepted by the Union Cabinet in February 2020 and finally Cabinet approved the Surrogacy (Regulation) Bill, 2020. In December 2021, after approval of the bill by the President, it has become Surrogacy (Regulation) Act 2021. Now as per the Act any intending woman, not just a close relative, can become a surrogate and besides infertile couple, any intending women (only widow or divorcee) between the age of 35 to 45 years and persons of Indian origin, can avail the surrogacy service. The proposed insurance cover has also been increased from 16 months to 36 months (Times of India, Feb. 27, 2020).

### **Challenges and Prospects**

The decision to keep foreigners, single men, single women (except widows and divorcees), homosexual/transgenders and live-in couples out of the benefits of surrogacy services in Surrogacy (Regulation) Act, 2021 is being challenged on the ground that it is infringing their fundamental rights viz. 'Right to Equality' and 'Right to life and Personal Liberty'. The constitution of India does not entitle right to privacy as a fundamental right but Supreme Court, in its several judgments, interpreted the term 'personal liberty' broadly to include 'right to privacy'. Recently in *Justice Puttaswamy (Retd.) v. Union of India Case, (2017)* Supreme Court protected right to privacy as a part of right to life and personal liberty under Article 21 of the Constitution of India. Critics argue that by restricting some from using surrogacy services, state is interfering in their private life and violating their fundamental rights.

Prohibition on using surrogacy services by homosexual couples was justified by the then Minister for External Affairs Sushma Swaraj on the basis that "each country has to make laws that are aligned with its values, as per a legal framework. Homosexual couples are not recognized by law in India" (The Hindu, August 24, 2016). Further, the government's decision to keep foreigners outside the realm of surrogacy will help in avoiding legal complexities related to nationality and citizenship of a child.

Autonomy and freedom of choice are the liberal arguments given in support of surrogacy. Protagonists of the argument believe that every person has a right to choose his/her livelihood. But this view is also countered on the basis that there is a difference between surrogacy and other forms of work as surrogacy not only limits surrogate mother's autonomy to move freely during pregnancy but may also risk her life and health. Issue of choice is also questioned as in India often impoverished and uneducated women who lack other options for their survival, opt for surrogacy.

Recent amendments in the surrogacy laws and the court's stand:

In March 2023, government issued notification to amend the surrogacy laws and ban the use of donor gametes. It said the intending couple must use their own gametes for surrogacy. A petition was filed in the Supreme Court to challenge the amendment as a violation of women's right to parenthood in which the Court held, "The amendment...preventing intending couple from achieving parenthood through surrogacy... is, prima facie contrary to what is intended under the main provisions of Surrogacy Regulation Act.." It was argued by the the petitioner's advocate that the 2023 amendment contradicted the provisions of Sections 2 (r) and 4 of the Surrogacy Regulation Act, 2021 which recognised the situation when a medical condition would require a couple to opt for gestational surrogacy in order to become parents. Petitioner's advocate referred to Rule 14 (a) of the Surrogacy Rules which listed the medical or congenital conditions in which a woman could choose to become mother through gestational surrogacy. The court, agreed with the argument of advocate that the law allowing gestational surrogacy was "women-centric" and the decision to have a surrogate child was totally based on the woman's inability to become a mother due to her medical or congenital condition. Addressing the government's contention that the surrogate child should be "genetically related" to the couple, the court pointed out that the child would be related to the husband (Rajagopal, 2023).

Justice BV Nagarathna, during the hearing of a plea regarding single unmarried woman's right to have a child through surrogacy which came before the Supreme Court in December 2023, observed that a single unmarried woman bearing a child is an exception and not the accepted norm in Indian society. The petitioner's advocate argued that restricting the right to become mother based on her marital status was discriminatory and violative of her Right to Equality and Life guaranteed Article 14 and 21 of the Constitution of India. The Justice, however, observed that the law was based on classification and not discrimination (Deshpande, 2023).

The Delhi High Court, in December 2023, said that the law to regulate surrogacy aims at curbing the exploitation of surrogates and no one wants India to become an "industry of renting a womb". The court made an observation while hearing a plea by an Indian origin couple living in Canada who had challenged the March 14 notification of the Centre amending the Surrogacy (Regulation) Act to ban donor surrogacy by altering Form 2 under Rule 7 of the Surrogacy Rules, 2022 (Economic Times, 2023). Court stated that the restrictions introduced via the notification in March had some rationale. "...a large number of studies show that India had become the capital of surrogacy..." It added that India was

not a developed country and so "...because of economic reasons, many people may be swayed". The court stated that this reproductive outsourcing was supposed to be restrained by the legislature on the direction of Supreme Court. Justice Mini Pushkarna cited the number of children available for adoption "If there are medical problems, there are other options too if the legislature and executive have restricted it ... there has to be some reasons" and further stated that "mindset that adoption should not take place is wrong. Adoption needs to be encouraged in a country like India. According to the Confederation of Indian industries ... this {surrogacy industry} was a \$ 2.3 billion industry at some time. We can not go beyond what the state is thinking ... the state is thinking because the Supreme Court prompted it to think. We have to see society's rights ... society can not be abused ... society's rights come at a higher pedestal than individuals" (Kakkar, 2023). The court, thus, asked people to take a broader view of the surrogacy law in the larger interest of society.

### **Adoption as an alternative**

Adoption is viewed as an alternative to surrogacy and the Court has also felt the need to promote it. In India, Central Adoption Resource Authority (CARA) is the nodal body for adoption which monitors and regulates in-country and inter-country adoption. It is a statutory body of Ministry of Women and Child Development, Government of India to deal with adoption of orphan, abandoned and surrendered children through its associated /recognised adoption agencies. CARA regulates inter-country adoptions as per provisions of Hague Convention on Protection of Children and Cooperation of 1993 which was ratified by India in 2003 (<https://cara.wcd.gov.in>). The Ministry of Women and Child Development introduced the Adoption Regulations-2022 to streamline the adoption process and enable the prospective parents to adopt a child irrespective of their marital status (The Gazette of India, 23rd September, 2022). Supreme Court, in October 2023, expressed dissatisfaction over the complexities of the adoption process under CARA causing only 3,500-4,000 adoptions annually as against the availability of 1.3 crore orphaned children (Mahapatra, 2023).

Supreme Court, while hearing petitions in November 2023, directed the Union Territories and states governments to improve and expedite adoption processes under the Juvenile Justice Act, 2015 and CARA Guidelines of 2022 for adoption of children belonging to Orphaned, Abandoned or Surrendered (OAS) category. As per CARA's portal, there are 33,967 Prospective Adoptive Parents (PAPs) as against only 2,118 children "legally free for adoption" in the OAS category. According to CARA, due to this mismatch between the number of adoptive parents and the children available, parents

have to wait for 3 to 4 years to adopt a child (Vora, 2023).

### Concluding Observations

Recently in November 2023, Karnataka High Court allowed 13 couples to undergo surrogacy procedure by using donor gametes owing to their medical conditions (The Indian Express, 2023). The government may have to face more problems before the final verdict of the Supreme Court.

Surrogacy contract is based on inequality in which biological parent/s set all the terms of the contract and legally control the conduct of the surrogate women. Prohibition of commercial surrogacy by the Surrogacy (Regulation) Act, 2021 will lead to the end of such contracts and ensure security of surrogates and the children born. This Act is also compatible with the international treaties like CRC, International Covenant on Civil and Political Rights as these treaties aim at protecting rights of women and children. India is a signatory of these treaties and by banning commercial surrogacy, it tries to curb the abuse of surrogate women and the resulting children which is widespread in commercial surrogacy. Efforts of the present government and Court's directions to ease and expedite the adoption process can motivate more and more prospective parents to adopt children. However, factors like lack of parents' genetic ties with the child and social stigma surrounding adoption affect the rate of adoption and cause people to choose surrogacy. Intending parent/s' aspirations to have their own child and the desire of clinics and agencies to make huge profit through the commercialisation of surrogacy has increased litigation challenging Surrogacy Regulation Act, 2021 and recent amendments in it. Despite this, there is no denial that by banning commercial surrogacy through surrogacy laws, government wants to prevent commodification of, and protect the rights of, the most vulnerable - the surrogate and the resulting child. Striking a balance between the individual's right to parentage and the socio-cultural norms of a country would be a major challenge for the state and judiciary both.

### REFERENCES

1. Anu, Kumar, Pawan, Inder Deep and Sharma, Nandini, "Surrogacy and Women's Rights to Health in India: Issues and Perspectives", *Indian Journal of Public Health*, vol. 57(2): April-June (2013), pp.65-70.
2. *Centre for Social Research*, "Surrogate motherhood: ethical or commercial", 2012, pp.1-90. Report submitted to National Commission for Women (New Delhi).
3. Cheung, Helier, "Surrogate babies: Where can you have them and is it legal?", 6 August 2014 in <https://www.bbc.com/news/world-28679020>
4. *Convention on Protection of Children and Cooperation in respect of Inter-country Adoption, Hague Conference on Private International Law, concluded on May 29, 1993.*
5. *Convention on the Rights of the Child*. Adopted and opened for signature, ratification and accession by General Assembly resolution 44/25 of 20 November 1989. Available at <https://www.ohchr.org/en/instruments-mechanisms/instruments/convention-rights-child>
6. Deshpande, Haima, "SC Hearings on Surrogacy Row Bring the Focus Back on Rights of Single, Unmarried Women" updated on 20 December 2023. Available at <https://www.outlookindia.com/national/sc/-hearings-on-surrogacy-row-bring-the-focus-back-on-rights-of-single-unmarried-women-news-337398>
7. Dev, "Surrogacy in India", <https://www.legalserviceindia.com/legal/article-782-surrogacy-in-india.html#>
8. *European Centre for Law and Justice*, "Surrogate motherhood: a violation of human rights", *Report presented at the Council of Europe (Strasbourg)*, 26 April, 2012, pp.1-25.
9. Ghosh, A. & Khaitan, N., "A womb of one's own: privacy and reproductive rights", *Economic and Political Weekly*, vol. 52 (42-43): 28 October 2017.
10. *Government of India. Report by Law Commission of India*, "Need for Legislation to Regulate Assisted Reproductive Technology Clinics as well as Rights and Obligations of Parties to Surrogacy", pp. 1-27. *Report No. 228, submitted to the Ministry of Law and Justice, Govt. of India by chairman Law Commission of India on 5<sup>th</sup> August 2009.*
11. [https://cara.wcd.gov.in/about/about\\_cara.html#](https://cara.wcd.gov.in/about/about_cara.html#) <https://www.reuters.com/world/which-countries-allow-commercial-surrogacy-2023-04-05/#>
12. Justice K. S. Puttaswamy (Retd.) and Anr. vs. Union of India and Ors., August 24, 2017.
13. Kaur, Rajinder, "Chapter 4 - Legal issues" pp. 98-174. In her thesis titled *Surrogate Motherhood- Social and Legal Aspects*, Department of Law, Punjabi University, Patiala. Thesis submitted on 4/6/2014 at <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/54478>
14. Kakkar, Shruti, "Surrogacy law made to prevent India from becoming country of renting wombs: HC", *Hindustan Times*, December 15, 2023 at <https://www.hindustantimes.com/india-news/surrogacy-law-made-to-prevent-india-from-becoming-country-of-renting-wombs-hc-101702639234989.html>
15. "Karnataka HC allows thirteen couples to opt for surrogacy via donor gametes", *The Indian Express*(Bengaluru), November 23, 2023.

16. Mahapatra, Dhananjay, "Sit with CARA, ease adoption process, Supreme Court advises ASG", *Times of India*, October 14, 2023.
17. "Nobody wants India to become a womb renting industry: Delhi HC on surrogacy" Economic Times, updated on December 15, 2023. <https://economictimes.indiatimes.com/news/india/nobody-wants-india-to-become-a-womb-renting-industry-delhi-hc-on-surrogacy/articleshow/106030400.cms>
18. Rajagopal, Krishnadas, "Supreme Court allows surrogacy, strikes down rule banning use of donor gametes", *The Hindu*, October 26, 2023.
19. Report by Houge, Claire de La & Roux, Caroline, "Surrogate Motherhood and Human Rights: Analysis of Human, Legal and Ethical Issues" (September 2015). Available at <https://www.nomaternitytraffic.eu/wp-content/uploads/2015/09/2015-Contribution-HCCH-No-Maternity-Traffic-EN.pdf>
20. Roeloffs, Mary Whitfill, "It's not just celebrities—commercial surrogacy industry expected to grow tenfold by 2032", *Forbes*, 14 July 2023.
21. Optional Protocol to the Convention on the Rights of the Child on the sale of children, child prostitution and child pornography. (2000) adopted and opened for signature, ratification and accession by General assembly resolution A/RES/54/263, 25 May 2000.
22. Pande, Amrita, "At least I am not sleeping with anyone: resisting the stigma of commercial surrogacy in India", *Feminist Studies*, vol. 36 (2): Summer 2010, pp.292-312.
23. Pande, Amrita, "Commercial Surrogacy in India: Manufacturing a Perfect Mother-Worker" *Signs: Journal of Women in Culture and Society* (the University of Chicago Press), vol. 35 (No. 4): Summer 2010, pp.969-992.
24. Saxena, P., Mishra, A. & Malik, S. "Surrogacy: Ethical and Legal Issues", *Indian Journal of Community Medicine*, vol. 37 (4): Oct.-December 2012, pp. 211-213
25. Sharma, Neetu Chandra, "Cabinet approves introduction of surrogacy regulation bill", 3 July 2019. Available at <https://www.livemint.com/politics/policy/cabinet-approves-introduction-of-surrogacy-regulation-bill-1562165538533.html>
26. "Surrogacy bill gets the Cabinet nod", *The Hindu*, (New Delhi), August 24, 2016.
27. "Surrogacy bill to benefit widows & divorcees too", *The Times of India*, February 27, 2020.
28. Swaminathan, Soumya, "Why the surrogacy bill is necessary", *The Hindu*, 28 August, 2016
29. *The Surrogacy (Regulation) Bill, 2016*. Bill no. 257, chapter I to chapter VII. As introduced in Lok Sabha by Jagat Prakash Nadda, Minister of Health and Family Welfare on 28<sup>th</sup> October 2016.
30. *The Surrogacy (Regulation) Bill, 2019*. Bill number 156-C of 2019. As passed by Lok Sabha on 5.8.2019
31. *The Gazette of India: Extraordinary. The Surrogacy (Regulation) Act, 2021 (No. 47 of 2021), Chapter I to VIII, PART II- Section 1*, New Delhi, Ministry of Law and Justice (Legislative Department), 25 December 2021.
32. *The Gazette of India: Extraordinary, Ministry of Women and Child Development Notification, New Delhi, the 23rd September, 2022* PART II- section 3 (i) at [https://cara.wcd.gov.in/PDF/adoption%20regulations%202022%20english\\_27.pdf](https://cara.wcd.gov.in/PDF/adoption%20regulations%202022%20english_27.pdf)
33. Vora, Advay, "Supreme Court directs states and union territories to improve infrastructural defaults in the state adoption agency", a Supreme Court observer: a living archive of Supreme court of India, 20 November 2023 in <https://www.scoobserver.in/journal/supreme-court-directs-states-and-union-territories-to-improve-infrastructural-defaults-in-state-adoption-agencies/>

- Assistant Professor, Department of Political Science,  
Shivaji College (University of Delhi), Delhi (India)  
e-mail: mudgalalka@yahoo.com



# The Media's Impact on Present-Day Bharat : Special Reference to Digital Media

□ Dr. Yogesh Kumar Gupta<sup>1</sup> Sweta<sup>2</sup>

## Abstract

*Indian media plays a pivotal role in shaping the country in various aspects, influencing public opinion, policy discourse, and societal trends.*

*This research article conducts a focused exploration of the constructive changes occurring in India's media landscape due to the proliferation of digital media, drawing insights solely from secondary data. Through a systematic review of existing studies and reports, the article emphasizes the democratization of information, increased civic engagement, and cultural revitalization as key outcomes of the digital renaissance.*

*The paper highlights how digital media platforms have democratized access to information, enabling a more diverse range of voices to be heard. Citizen journalism and grassroots reporting have flourished, fostering a participatory culture where individuals actively contribute to public discourse. This newfound inclusivity has the potential to bridge societal gaps and address previously marginalized perspectives.*

*Drawing upon existing studies, reports, and scholarly analyses, the article delineates how digital media has democratically widened the scope of information dissemination. Citizen journalism, amplified by social media, has facilitated diverse voices to participate in shaping public narratives, thereby fostering a more inclusive and representative media environment. Through an exploration of secondary data, the study provides insights into the transformative impact of these shifts on civic discourse and societal cohesion.*

*In conclusion, the research article offers a holistic overview of the positive transformations in India's media landscape through a rigorous examination of secondary data. By amalgamating diverse sources and perspectives, it contributes to the scholarly discourse on the evolving role of digital media in shaping a more inclusive, engaged, and culturally vibrant media ecosystem in contemporary India.*

## Introduction

The media landscape in present-day Bharat is vibrant, diverse, and ever-evolving.

The term "Resurgent Bharat" likely refers to the resurgence or revival of India on the global stage. "Bharat" is a Sanskrit name for India, and "resurgent" implies a renewed or revitalized presence. In the context of global affairs, this could indicate India's increasing influence, economic strength, technological advancements, and overall prominence on the international scene.

Such a concept may be associated with India's efforts to play a more significant role in various global forums, enhance economic growth, strengthen diplomatic ties, and contribute to international developments. It suggests a vision of India as an emerging powerhouse that actively participates in shaping global policies and addressing global challenges.

In the vibrant tapestry of present-day Bharat, the role of media is pivotal in shaping the nation's narrative across political, economic, cultural, and social spheres. This research article undertakes a comprehensive exploration of the multifaceted impact of Indian media, navigating through the historical evolution from traditional to digital forms. As we delve into the intricate web of media's influence, our journey encompasses political discourse, economic development, cultural representation, social change, and the challenges that underlie this influential role.

The main motive of media's existence is to serve as a conduit for information dissemination, communication, and the exchange of ideas within society. Media, in its various forms such as print, broadcast, and digital platforms, plays a fundamental role in keeping the public informed about current events, issues, and diverse perspectives. By serving as a watchdog, the media holds institutions and individuals accountable, contributing to the transparency and functioning of democratic societies. Additionally, the media has the power to shape public opinion, influence societal norms, and provide a platform for diverse voices. Its role in educating,

entertaining, and connecting communities underscores its significance as a cornerstone of modern societies, fostering an informed and engaged citizenry. While the specific mediums and technologies may evolve, the core motive of media remains rooted in facilitating communication and contributing to the well-informed functioning of societies.

Political leaders in India employ media as a powerful instrument to shape public perception, disseminate messages, and advance their political agendas. Through carefully orchestrated communication strategies, including press conferences, interviews, and public speeches, leaders directly connect with the public, while social media platforms become vital for real-time updates and engagement. Image building is a key focus, with leaders investing in public relations and media management to project favorable personas. During elections, political advertising is widespread across television, radio, newspapers, and digital platforms, utilizing paid advertisements and sponsored content for campaign messages. Media interviews and debates provide platforms for leaders to articulate positions, engage with the public, and respond to criticisms, especially during election seasons. The rise of social media has transformed political communication, with leaders maintaining active profiles for direct engagement and information dissemination. Press releases, conferences, and selective access to media outlets are traditional yet effective tools, enabling leaders to communicate directly with the public while managing their interactions strategically. Media management, including the use of advisors and spokespersons, ensures control over the narrative, and the strategic framing of information, known as spin, helps leaders present events or policies favorably. Overall, the dynamic relationship between political leaders and the media continues to evolve, shaping the narrative of political discourse in India.

### **The Influence of Social Media Platforms**

In recent years, social media platforms have played a significant role in shaping public opinion and influencing political discourse in Bharat. With the widespread use of platforms such as Facebook, Twitter, and Instagram, the dissemination of news and information has become more accessible than ever before. This has led to a shift in the way people consume news, with a growing reliance on social media as a primary source of information.

Furthermore, the media in Bharat has been instrumental in shaping cultural narratives and societal norms. Television, film, and music have all played a pivotal role in not only reflecting the diversity of Bharat but also in influencing and shaping popular culture. The impact of Bollywood, for example, on fashion, language, and social trends cannot be understated.

As the influence of media continues to grow, there is a pressing need for media literacy and critical thinking among the citizens of Bharat. With the rapid spread of information through social media and other platforms, individuals must have the skills to discern credible sources from misinformation. Media literacy can empower the public to engage critically with news and information, thereby reducing the potential impact of sensationalism and biased reporting. In addition to the influence of social media, the evolution of digital media has also played a significant role in shaping the media landscape of present-day Bharat. The rise of streaming platforms, online news portals, and digital content creators has transformed the way people consume media. The accessibility and ease of sharing digital content have further expanded the reach and impact of media in the country.

Beyond shaping public opinion, the media has also impacted political participation in Bharat. The coverage of political events, debates, and election campaigns has influenced voter awareness and engagement. However, the role of the media in ensuring fair and unbiased political coverage remains a subject of scrutiny and debate.

While the media has made strides in shaping cultural narratives, there is an ongoing need to address media pluralism and representation. Ensuring that diverse voices and perspectives are given space in the media landscape is crucial for fostering inclusivity and accurate representation of Bharat's rich and varied society.

As part of promoting media literacy and critical thinking, encouraging constructive dialogue between the public, media professionals, and regulatory bodies is essential. Open discussions on ethical reporting, media accountability, and the impact of media on society can pave the way for a more transparent and responsible media environment.

### **Regulation and Accountability**

To uphold the integrity and ethical standards in media practices, regulatory bodies, and accountability measures are essential. The government and media organizations must work together to establish and enforce ethical guidelines, ensuring that the public receives accurate and impartial information. Striking a balance between freedom of expression and responsible journalism is crucial for the continued positive influence of media in present-day Bharat.

### **The Future of Media in Bharat**

The future of media in Bharat holds a dynamic landscape shaped by ongoing technological advancements, changing consumer preferences, and the evolving socio-political milieu. As digital platforms continue to gain prominence, the media is likely to witness a further shift towards online spaces, with increased emphasis on interactive and personalized content. The rise of Artificial

Intelligence (AI) and data analytics may play a pivotal role in tailoring content to individual preferences, while virtual and augmented reality technologies could redefine immersive storytelling. Media's role in fostering inclusivity, diverse narratives, and addressing social issues is expected to grow, driven by increased awareness and societal demands for more representative content. However, challenges such as misinformation, ethical considerations in emerging technologies, and the need for media literacy will require concerted efforts. The convergence of traditional and digital media is likely to create a hybrid landscape, offering a blend of authenticity and innovation, ultimately influencing how Bharat perceives and engages with information in the years to come.

Looking ahead, the future of media in Bharat holds the potential for further innovation and expansion. Embracing technological advancements, promoting media literacy, and nurturing a culture of responsible journalism can contribute to a vibrant and informed society. By addressing the challenges and harnessing the opportunities, the media in present-day Bharat can continue to play a pivotal role in shaping the nation's discourse and progress.

### **Digital Media Revolution**

The advent of the internet and the subsequent digital revolution have transformed the media landscape in Bharat. The country has witnessed a surge in online news portals, blogs, and digital streaming platforms.

Social media platforms, including Facebook, Twitter, and Instagram, have become integral to the media ecosystem. They serve as spaces for citizen journalism, political activism, and cultural expression. Influencers and content creators use platforms like YouTube to reach a global audience, contributing to the diversification of narratives and perspectives.

### **Role in Shaping Public Discourse**

The media in Bharat plays a pivotal role in shaping public discourse and influencing opinions. News outlets serve as watchdogs, holding the government and other institutions accountable. Debates on television and discussions on social media contribute to the democratic process by fostering a multiplicity of viewpoints. The media serves as a bridge between citizens and policymakers, providing a platform for dialogue and informed decision-making.

Political reporting and analysis are significant components of the media landscape in Bharat. Elections, in particular, witness extensive coverage, with news channels conducting debates, interviews, and opinion polls. The media's role in disseminating information about political parties, candidates, and electoral issues is instrumental in promoting transparency and voter awareness.

Cultural representation in the media is also a crucial aspect. Films, television shows, and digital content contribute to the portrayal of diverse cultures within Bharat. The media's influence on cultural narratives is evident in the way it reflects societal values, challenges stereotypes, and contributes to the evolving cultural ethos.

### **Evolving Dynamics**

The media landscape in Bharat is continually evolving, adapting to technological advancements and societal changes. Podcasts, for instance, have gained popularity as an alternative medium for storytelling and discussions. Platforms like Spotify and JioSaavn host a variety of podcasts covering genres from news analysis to storytelling, contributing to the diversification of content consumption.

Streaming services, including Netflix, Amazon Prime Video, and Disney+ Hotstar, have transformed the entertainment landscape. Original content produced by these platforms has garnered international acclaim, showcasing Bharat's storytelling prowess on a global stage. This shift towards digital platforms has disrupted traditional models of content consumption, offering viewers greater flexibility and choice.

### **Conclusion**

The media in Bharat is a dynamic and influential force, reflecting the country's myriad complexities. From traditional outlets that have withstood the test of time to the rapid expansion of digital platforms, the media landscape continues to evolve. While facing challenges such as misinformation, concentration of ownership, and threats to press freedom, the media remains an essential pillar of democracy, facilitating informed discourse and contributing to the rich tapestry of Bharat's cultural and social narratives. As the nation progresses, the media will undoubtedly play a crucial role in shaping the narrative of Bharat's future. In the vibrant landscape of present-day Bharat, the role of media serves as a powerful catalyst in shaping the nation's narrative across political, economic, cultural, and social dimensions. The intricate dance between media and political discourse unfolds as a dynamic force, where media platforms, evolving from traditional forms to the present digital age, act as crucial conduits between the government and citizens, influencing public opinion, electoral processes, and policy dynamics. The symbiotic relationship between media and economic development takes center stage, with media acting as a disseminator of economic information, influencing investment decisions, and contributing to the nation's overall economic narrative. Cultural representation within media becomes a lens through which the diverse fabric of Bharat is showcased and interpreted, contributing to the formation of a collective cultural identity. In the realm of social change and activism,

media emerges as a transformative force, amplifying marginalized voices, addressing social issues, and fostering societal progress. However, this influential position is not without its challenges, as the media grapples with issues of bias, sensationalism, and misinformation, necessitating a critical examination of ethical considerations and responsibilities. The advent of digital media reshapes the landscape, influencing information dissemination, public engagement, and the global perceptions of Bharat. In this narrative, media emerges as a dynamic force, influencing and being influenced by the evolving dynamics of present-day Bharat, prompting ongoing scrutiny and exploration into its multifaceted impact on the nation's identity.

## Reference

- Singh, Gaurav & , Nity. (2017). role and impact of media on society: a sociological approach with respect to demonetisation. 10.13140/RG.2.2.36312.39685.
- Daramola, I. (2003). *Introduction to mass communication* (2nd ed.). Rothan Press Ltd.
- McLuhan, M. (1964). *Understanding media: The extensions of man*. Mentor.
- <https://www.businessworld.in/article/The-Future-Of-India-s-Media-Is-All-Digital/21-01-2021-367995/>
- Khalid Mehraj, Hakim, Akhtar Neyaz Bhat and Hakeem Rameez Mehraj. "Impacts OF Media on Society: A Sociological Perspective." *International Journal of Humanities and Social Science Invention* (2014): 56-64
- Jesper Strömbäck, Yariv Tsfati, Hajo Boomgaarden, Alyt Dams tra, Elina Lindgren, Rens Vliegthart & Torun Lindholm (2020) News
- media trust and its impact on media use: toward a framework for future research, *Annals of the International Communication Association*, 44:2, 139-156, DOI: 10.1080/23808985.2020.1755338
- Grewal, D., Herhausen, D., Ludwig, S., & Villarroel Ordenes, F. (2022). The Future of Digital Communication Research: Considering Dynamics and Multimodality. *Journal of Retailing*, 98(2), 224–240. <https://doi.org/10.1016/J.JRETAI.2021.01.007>
- <https://www.sociologygroup.com/media-and-its-effects-on-society/>
- [https://oms.bdu.ac.in/ec/admin/contents/316\\_16SACVC4\\_2020052111144359.pdf](https://oms.bdu.ac.in/ec/admin/contents/316_16SACVC4_2020052111144359.pdf)
- Potter, W. James. (1998). *Media Literacy*. Thousand Oaks, CA: Sage Publications
- [https://www.coursera.org/lecture/communication/the-role-of-media-in-society-gZYEH?utm\\_source=bg&utm\\_medium=sem &utm\\_campaign=B2C\\_INDIA\\_\\_FTCOF\\_\\_arte\\_bing\\_brand ed&utm\\_content =B2C \\_INDIA\\_\\_FTCOF\\_\\_arte\\_bing\\_brand ed&campaignid=415374026&adgroupid=1221557894734029&device=cxkeyword=https%3A%2F%2Fwww.coursera.org%2F&matchtype=b&network=o &deviceid=&adposition=& creativeid=&hide \\_mobile\\_ pro mo&msclkid=f842bb8375da17625913de395267df9f& utm\\_term=https%3A%2F%2Fwww.coursera.org%2F](https://www.coursera.org/lecture/communication/the-role-of-media-in-society-gZYEH?utm_source=bg&utm_medium=sem &utm_campaign=B2C_INDIA__FTCOF__arte_bing_brand ed&utm_content =B2C _INDIA__FTCOF__arte_bing_brand ed&campaignid=415374026&adgroupid=1221557894734029&device=cxkeyword=https%3A%2F%2Fwww.coursera.org%2F&matchtype=b&network=o &deviceid=&adposition=& creativeid=&hide _mobile_ pro mo&msclkid=f842bb8375da17625913de395267df9f& utm_term=https%3A%2F%2Fwww.coursera.org%2F)
- <https://startuptalky.com/indian-media-case-study/>

1 Assistant Professor,  
Central University of Himachal Pradesh  
2 Research Scholar,  
Central University of Himachal Pradesh

# एकात्म मानव दर्शन: मानवाधिकार का सार

□ डॉ० अजय भूपेन्द्र जायसवाल<sup>1</sup> पुलत्स्य शुक्ला<sup>2</sup>

मानव अधिकार मानव की स्वतंत्रता के पुनीत अधिकार हैं। इनको विधि की अनुमति के बिना प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। आज के दर्शन में उपयोगी, सफल, गरिमायुक्त, सम्मानजनक, स्वास्थ्यपूर्ण और कल्याणकारी जीवन आवश्यक है। इस प्रकार के जीवन की संरक्षा मानव अधिकारों से ही संभव है। ये अधिकार मानव के जीवन, स्वतंत्रता, समता, गरिमा, सौहार्द और न्यायिक अभिधारणाओं को उजागर करने के साधन हैं। मानव अधिकारों से सामाजिक वातावरण में सौहार्द, बंधुता और समरसता की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। सौहार्द के वातावरण में एक व्यक्ति का मानवीय अधिकार दूसरे व्यक्ति पर कर्तव्य आरोपित करता है। कर्तव्य के अनुपालन को विधि द्वारा सुनिश्चित कराया जाता है। इस प्रकार के अनुपालन से सामाजिक सौहार्द के सिद्धान्तों को प्रबलता मिलती है। इस तरह मानव अधिकार प्राकृतिक अथवा सार्वभौम अधिकारों के रूप में संरक्षित हित हैं। इनसे नैतिकता के सिद्धान्तों में सुदृढ़ता आती है।

आज से 5000 वर्ष पूर्व भारतीय दार्शनिकों ने अधिरचित विधि में सर्वोच्च नैतिक विधि के ऐसे सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया था जो शाश्वत रूप से वैध थे। ये सिद्धान्त धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सिद्धान्त थे। इनके द्वारा व्यक्ति आन्तरिक और बाह्य आध्यात्म और तात्विक जीवन के संतुलन के साथ ही सामाजिक व्यवस्था में सुसंगतता स्थापित कर सकता था। 'धर्म' के द्वारा सभी व्यक्तियों (राजा अथवा आम व्यक्ति) को समान रूप से शासित किया जाता था। 'धर्म' की धारणा वर्तमान समय के मानवाधिकार के 'विधि के समक्ष समता और विधि का समान संरक्षण' की धारणा को परिलक्षित करती है। उस समय 'धारणात् धर्मार्थं त्याह धर्मो धारति प्रजा' की उक्ति से राज धर्म के आधार पर नैतिकता के सिद्धान्तों को आधार बनाकर जनता में शासन चलाया जाता था। धर्म के आधार पर उचित और अनुचित का निर्णय किया जाता था। प्राकृतिक विधि के सिद्धान्त वेद पुराण, महाभारत और भगवद्गीता में विद्यमान थे। प्राचीन भारत के दार्शनिक मानवाधिकार विधि के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ नहीं थे। वास्तव में 'धर्म' विधि के सिद्धान्त विधि व्यवस्था के लिए शाश्वत रूप से आदर्शात्मक सिद्धान्त थे। वैदिक काल में मानवाधिकारों की नींव को धर्म, मानवीय परिपाटी और स्वतंत्रता और समता के संघर्ष में अवलोकन किया जा सकता है।

वेदान्त के दर्शन में मताधिकार को राज्य से उच्च बताते हुए उच्चता का स्रोत बताया है। देवी स्रोत से प्रस्फुटित होने वाले अधिकार नैतिक प्राधिकार के कारण असंक्रमणीय हैं।

वैदिक युग के दार्शनिकों ने मानवाधिकारों को परिभाषित करते हुए कहा है कि मानवाधिकार स्वभावतः अन्तर्निहित अधिकार हैं, इनके बिना हम मानव प्राणी के रूप में जीवित नहीं रह सकते हैं। उन्होंने इस बात का पुरजोर समर्थन किया कि मानवाधिकार और मानव स्वतंत्रताएँ हमारे संपूर्ण विकास, मानव गुणों के प्रयोग, बुद्धि, योग्यता, अन्तःकरण तथा आध्यात्मिक और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। उन्होंने कहा कि मानवाधिकार मानव पर आधारित होते हैं और इनमें यह अपेक्षित होता है कि इन अधिकारों के द्वारा व्यक्ति की अन्तर्निहित गरिमा, सम्मान और संरक्षा की जा सके। वेदों में 'तन' की स्वतंत्रता, निवास तथा जीवन के अधिकार का उल्लेख है। 1367 ई. पूर्व बहमनी और विजयनगर राजाओं ने युद्ध के बन्धियों के साथ मानवीय व्यवहार करने तथा शस्त्र-विहीनों पर युद्ध नहीं करने का करार किया था।

भारतीय प्राचीन दर्शन में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः' की उक्ति मानवीय दृष्टिकोण से राजा पर प्रजा को सुखी रखने का दायित्व आरोपित करती है। राजा के द्वारा सर्व हिताय से किए जाने वाले कार्यों के मापदंड को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में नियत किया गया था। पाणिनी ने (5वीं शताब्दी ई. पूर्व) 'धर्म' का निर्वचन करते हुए कहा था कि धर्म, गुणवत्ता रूढ़ि और प्रथाओं का स्वरूप अथवा कार्य है। महाभारत में 'धर्म' का वर्णन करते हुए उल्लेख किया गया है कि धर्म एक दूसरे के विरुद्ध आक्रमण को प्रतिषिद्ध करता है तथा सबको समानता का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार प्राचीन भारत में 'धर्म' के द्वारा मानव के अधिकारों की संरक्षा की जाती थी। कौटिल्य ने मनु के द्वारा बताए गए अधिकारों के साथ ही साथ कई आर्थिक अधिकारों का भी उल्लेख किया है। अशोक ने युद्ध बन्धियों के साथ अमानवीय व्यवहार को प्रतिबंधित किया था। हर्षवर्द्धन, जो अंतिम हिन्दू राजा था, का यह मत था कि जनता के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए आबद्ध होता है। प्राचीन भारत के समृद्धशाली इतिहास को मध्यकाल में क्षत-विक्षत किया गया। इसीलिए आज मानवाधिकारों के लिए लोग भारतीय सभ्यता की अपेक्षा पाश्चात्य सभ्यता को महत्त्व दे रहे हैं।

जबकि मानवाधिकार की धारणा भारतीय समाज के मूल चिन्तन में है।

पं. दीन दयाल उपाध्याय ने प्राचीन भारतीय एवं पाश्चात्य मानवाधिकार परम्परा के अध्ययन तथा स्वयं के मौलिक चिंतन द्वारा राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के भावी युगानुकूल स्वरूप हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये। अपने इस मौलिक चिन्तन जिसमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजकीय सिद्धान्तों का संकलन था, राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसे 'एकात्म मानव दर्शन' कहा गया जो सारे मानवाधिकार चिन्तन का सार है। एकात्म मानववाद के मूल में व्यक्ति है। इस दर्शन में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र एवं इसके पश्चात मानवता एवं चराचर सृष्टि का विचार किया गया। है। एकात्म मानववाद दर्शन इन सभी इकाइयों में अंतर्निहित परस्पर पूरक सम्बंधों को देखता है। जिस प्रकार भारतीय चिन्तन में सृष्टि एवं समष्टि को एक समग्र के रूप देखा गया है, उसी प्रकार उपाध्याय जी ने मानव, समाज और प्रकृति व उसके सम्बंध को समग्र रूप में देखा। उन्होंने एकात्म मानववाद दर्शन में मनुष्य को तन-मन-बुद्धि एवं आत्मा का सम्मिलित रूप माना। मनुष्य की यही समग्रता उसे समाज के लिए उपयुक्त एवं उपादेय बनाती है। भारतीय चिन्तन द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का विचार एक पूर्ण मनुष्य को निर्मित करने वाले इन चार तत्त्वों में एकात्म मानववाद में समाविष्ट है। एकात्मकता आवश्यक है क्योंकि यही एकात्मकता मनुष्य को कर्मठता की ओर प्रेरित कर उद्यमी बनाती है और इसी से समाज का विकास एवं हित संवर्धन सम्भव है।

एकात्म मानववाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मार्गदर्शक दर्शन है। यह दर्शन पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 22 से 25 अप्रैल, 1965 में मुम्बई में दिये चार व्याख्यानों के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

एकात्म मानववाद दर्शन एक ऐसी अवधारणा है जिसको सर्पिल आकार की मण्डलाकृतियों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है जिसके केन्द्र में व्यक्ति है, व्यक्ति से जुड़ा हुआ अगला घेरा परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ अगला घेरा समाज जाति, उसके बाद राष्ट्र फिर विश्व और फिर अनंत ब्रह्माण्ड को अपने में समाहित किये हुए है। यह विकास का क्रमिक आधार ही एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे का विकास होता है। सभी एक दूसरे से जुड़कर क्रमिक रूप से विकसित होते हैं और अपने अस्तित्व को साधते हुए एक दूसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी के रूप में स्थापित होते हैं। इनमें परस्पर कोई संघर्ष नहीं है। इस एकात्म मानव दर्शन में व्यष्टि से समष्टि तक सब एक ही सूत्र में गुंथित है। व्यक्ति का विकास होगा तो समाज विकसित होगा, समाज विकसित होगा तो राष्ट्र की उन्नति होगी, राष्ट्र की उन्नति से विश्व का कल्याण होगा। इस सूत्र को पं. दीन दयाल जी ने

श्रीमद्भागवत से ग्रहण किया था जिसकी मूल धारणा 'स्ट्रगल फार एक्जिस्टेंस' नहीं बल्कि अस्तित्व के लिए सहयोग है।

पंडित जी का मानना है कि मानव समाज का अस्तित्व प्रकृति के सहयोग से ही सुरक्षित है। 'सर्वाइवल ऑफ द फिटिस्ट' जीवन का मंत्र नहीं हो सकता अपितु सबका सहयोग, सबका विकास एवं सबका अस्तित्व जीवन दृष्टि है। हम अपना अस्तित्व प्रकृति के सहयोग से ही सुरक्षित रख सकते हैं। एकात्म मानववाद दर्शन की जड़ें प्राचीन भारतीय दर्शन में ही निहित हैं। सही मायने में एकात्म मानव दर्शन का प्रतिपादन कर दीनदयाल जी ने भारत से भारत का परिचय कराने की कोशिश की।

एकात्म मानववाद के केन्द्र में मानव है। मनुष्य मन, बुद्धि, आत्मा तथा शरीर इन चारों का समुच्चय है। हम उसको टुकड़ों में बाँटकर विचार नहीं करते। व्यक्ति न्यूनतम इकाई है। व्यक्ति से जुड़कर परिवार, परिवार से समाज से राष्ट्र। इसी क्रम में विकास होता है। स्पष्ट है कि राष्ट्र एवं विश्व के विकास व कल्याण हेतु समाज के प्रत्येक मनुष्य का विकास हो। जब तक समाज के प्रत्येक व्यक्ति का विकास नहीं होगा एक सुखी एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। यही अन्त्योदय की परिकल्पना है, अन्त्योदय का अभिप्राय है। अन्त्योदय का अर्थ है समाज राष्ट्र के सबसे निचले पायदान पर स्थित व्यक्ति का विकास। निचले पायदान पर स्थित सभी व्यक्तियों को संतुलित रूप से विकास जिससे राष्ट्रीय कल्याण में उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो सके, अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने में सक्षम बन सके।

भारत गाँवों का देश है जिसकी 70 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या ग्रामीण है। देश की इस ग्रामीण जनता के समग्र उत्थान के बिना एक उन्नत राष्ट्र के रूप में भारत कभी स्थापित नहीं हो सकता। लेकिन देश में जो सरकारें सत्ता में रहीं उन्होंने ग्राम विकास की उपेक्षा नगरीय जीवन को विकास की कसौटी माना। पंडित जी के अनन्य सहयोगी नाना जी देशमुख के शब्दों में स्वतंत्र भारत की सरकारों के काम का कोई मुकाबला नहीं। वे कलश से प्रारम्भ कर अपने देश का मंदिर बनाने में लगी है। दुनिया में एक अद्भुत अविष्कार वे कर रही हैं। शहरवासियों को जीवित एवं तंदरूस्त रखने के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों का उत्पादन केवल ग्रामीण अंचलों में ही होता है। मानव मात्र के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादक ग्रामवासी झोपड़ियों में मुखमरी से कराह रहे हैं। इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद गाँव देश के प्रगति पथ पर बढ़ने के बावजूद पिछड़ते जा रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र के संसाधन जुटाने वाले गाँव एवं ग्रामीण आज स्वयं अपने लिए असहाय स्थिति में हैं। पं० दीन दयाल उपाध्याय ने राष्ट्र के संतुलित एवं स्वस्थ

विकास के लिए समय-समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने ग्राम विकास को राष्ट्र विकास की कुंजी माना। सर्वोदयीय समाज की रचना का आधार ही उन्होंने ग्राम विकास को माना। सर्वोदयी समाज के लिए आवश्यक है कि सभी को शिक्षा, रोजगार के साधन एवं स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध हों। पंडित जी के अनुसार, 'बेकारी की समस्या' यद्यपि आज अपनी भीषणता के कारण अभिशाप बनकर हमारे सम्मुख खड़ी है किन्तु उसका मूल हमारे आज के समाज, अर्थ और नीति व्यवस्था में छिपा हुआ है। जब तक सभी को रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं होंगे तब तक सर्वोदयी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। मानवाधिकार धारण व्यक्ति से प्रकृति तक चार चरण की यात्रा में पहुँचा है जबकि एकात्म मानववाद शुरू से व्यक्ति के कल्याण के लिए प्रकृति के साथ व्यक्ति के अनुकूलन पर आधारित है जो मानवाधिकार से ज्यादा सम्पूर्ण और लोक कल्याणकारी है।

### संदर्भ सूची

1. डॉ० परमजीत सिंह जसवाल, ह्यूमन राइट्स एंड दि ला (1995), पृष्ठ 3-4, सी.जी. वीरामंत्री, एन इनविटेसन टु दि ला (1982), पृष्ठ 196

2. प्रो. एस.एन. ध्यानी, फन्डामेंटल्स आफ ज्युरिसप्रूडेंस - दि इंडियन एप्रोच (1992), पृष्ठ 2
3. डॉ. परमजीत सिंह जसवाल, ह्यूमन राइट्स एंड दि ला (1995), पृष्ठ 5
4. देशमुख, नाना जी, नाना जी की पाती युवाओं के नाम।
5. <http://www-praphatkhavar-com> & Anupam Trivedi
6. <http://hi-wikipedia-org/wiki>
7. Malviya Dr-Saurabh एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता दीन दयाल उपाध्याय <http://hindimedia-in>
8. <http://hindimedia-in> दीन दयाल होने का मतलब।
9. <http://vskbharat-com> एकात्म मानव दर्शन पंडित दीन दयाल उपाध्याय।
10. ग्रामोदय स्मारिका में लिखा नाना जी देशमुख का लेख पत्र।
11. दीनदयाल उपाध्याय, सबको काम ही भारतीय अर्थनीति का एकमेव मूलाधार- पांचजन्य, 31 अगस्त, 1953

1 प्रोफेसर-विधि विभाग,  
वी.एस.एस.डी. कालेज, कानपुर  
2 असि. प्रोफेसर-विधि विभाग,  
वी.एस.एस.डी. कालेज, कानपुर



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

( भगवद्गीता - 2/47 )

अर्थात् तुम्हें अपने कर्म करने का अधिकार है, किन्तु कर्म के फल के तुम अधिकारी नहीं हो। तुम न तो कभी अपने आपको अपने कर्मों के फलों का कारण मानो, न ही कर्म न करने में कभी असक्त हो।



# जैविक कृषि: मानव का प्रकृति के साथ पारस्परिक आश्रय

□ धर्मनारायण वैष्णव<sup>1</sup> दिनेश कुमार शर्मा<sup>2</sup>

मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलु, जैविक कृषि, विभिन्न पहलुओं को समाहित करती है जो स्वस्थ जीवन और पृष्ठभूमि की सुरक्षा के साथ जुड़े हैं। इस आलेख में, हम जैविक कृषि की महत्वपूर्णता, उसके लाभ और इसके विकास की दिशा में चर्चा करेंगे।

## जैविक कृषि का अर्थ

जैविक कृषि उन विधियों को कहा जाता है जो सृष्टि को हानिकारक रसायनों के बिना पैदा करने का प्रयास करती है। यह खेती में जैव उपयोग, जैविक खाद्य उत्पादन और पृष्ठभूमि संरक्षण पर केंद्रित है।

## जैविक कृषि का विकास

**तकनीकी इनोवेशन :** जैविक कृषि में नई तकनीकों का उपयोग, जैसे कि जैविक खाद्य उत्पादन के लिए सुरक्षित और प्रभावी उपायों की खोज महत्वपूर्ण है।

**शिक्षा और प्रोत्साहन :** किसानों को जैविक खेती के लाभों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें नए तकनीकी ज्ञान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। समाप्त में, जैविक कृषि न केवल स्वस्थ आहार प्रदान करती है बल्कि पूरे परिवारों और पृष्ठभूमि की सुरक्षा में भी सहायक है। इसे बढ़ावा देना और उसे बढ़ावा देने के लिए कार्य करना हम सभी की जिम्मेदारी है, ताकि हम एक सस्ते, स्वस्थ, और सुरक्षित भविष्य की दिशा में बढ़ सकें।

## जैविक कृषि का महत्व

मानव समाज ने अपने आसपास के पर्यावरण का सही ढंग से संचालन करने की दिशा में कई उत्कृष्ट पथ प्रशस्त किए हैं और जैविक कृषि इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

## जैविक कृषि क्या है?

जैविक कृषि वह प्रक्रिया है जिसमें खेती किए जाने वाले फसलों और पशुओं के उत्पादन में केवल प्राकृतिक तत्वों का ही उपयोग होता है। यह उर्वरकों और कीटनाशकों के बिना होती है, जिससे उत्पादों में अधिक प्राकृतिक स्वाद और पोषण बना रहता है।

## जैविक कृषि के लाभ

**स्वस्थ खाद्य उत्पादन :** जैविक कृषि से पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ अधिक पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए

फायदेमंद हैं।

**पृष्ठभूमि संरक्षण :** जैविक खेती नकरात्मक प्रभावों को कम करके, मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखती है और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करती है।

**बायो-विविधता का समर्थन :** जैविक कृषि वन्यजीव संग्रहण, जलवायु संरक्षण और स्थानीय प्रजातियों की संरक्षण में सहायक है।

**स्वास्थ्य का समर्थन :** जैविक खेती से उत्पन्न फल और सब्जियाँ पर्यावरण के हित में बनी होती हैं और इनमें अधिक पोषण होता है, जिससे मानव स्वास्थ्य का समर्थन होता है।

**प्रदूषण की कमी :** जैविक कृषि में उर्वरकों और कीटनाशकों का कम इस्तेमाल होता है, जिससे प्रदूषण कम होता है और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मदद होती है।

**जल संरक्षण :** जैविक कृषि में सिंचाई के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है, जो जल संरक्षण को बढ़ावा देता है।

**बायो-विविधता का संरक्षण :** जैविक कृषि बायो-विविधता की सुरक्षा करने में मदद करती है, क्योंकि इसमें कीटनाशकों का कम इस्तेमाल होता है और प्राकृतिक प्रणालियों को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है।

## मानव जीवन में जैविक कृषि का महत्व

मानव जीवन का अभूतपूर्व साथी है जैविक कृषि, जो हमें आहार, वस्त्र और निवास के लिए अद्भुत संसाधन प्रदान करती है। इसका अर्थ केवल खेती नहीं होता है, बल्कि यह एक पूरी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो स्वास्थ्य, आत्मनिर्भरता, और पर्यावरण संरक्षण के साथ जुड़ा होता है। जैविक कृषि ने नए तकनीकी उत्पादों और विचारों के साथ मानव जीवन को सुधारने का माध्यम बनाया है। उच्च उत्पादकता, कम खपत और सुस्त उत्पादों की उपलब्धता के साथ जैविक कृषि ने खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा दिया है। समुद्री क्षेत्र में जैविक कृषि, जल उपयोग और सांविदानिक खेती के साथ हम अपनी प्राकृतिक संसाधनों का सही ढंग से उपयोग कर रहे हैं। इससे न केवल हम अधिक उत्पाद बना रहे हैं, बल्कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा भी कर रहे हैं जो हमारे भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जैविक कृषि ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी बदलाव का मार्ग दिखाया है। अनुष्ठानिक खेती और



जैविक खेती के उपयोग से हम नकारात्मक प्रभावों को कम कर रहे हैं और स्वस्थ आहार की प्राप्ति को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा, जैविक कृषि ने सांविदानिक तरीके से उत्पादन करने का एक नया परिदिग्म स्थापित किया है जो पर्यावरण को अधिक सहमत बनाता है। निष्पक्ष और संतुलित उत्पादन प्रक्रिया से हम अपने आस-पास के प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में सफल हो रहे हैं। इस प्रकार जैविक कृषि नहीं केवल खेती का एक रूप है, बल्कि यह मानव समृद्धि, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक समृद्धिपूर्ण भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा रहा है।

### मानव जैविक कृषि: प्राकृतिक संबंध और समृद्धि

मानव जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलु जैविक कृषि ने हमारे समाज को प्राकृतिक सम्बंधों की ओर मोड़ने में मदद की है। यह उद्यम न केवल अच्छे खाद्य उत्पन्न करने में सहारा प्रदान करता है, बल्कि इससे पूरे वातावरण को भी सुरक्षित रखने में सहायक है।

### परंपरागत खेती से नवाचारी जैविक कृषि की ओर

जैविक कृषि मानवता के साथी के रूप में सिद्ध हो रही है, जिसमें परंपरागत खेती की अद्भुत विधियों को नवाचारी तकनीकों के साथ मिलाकर बेहतर उत्पादन हो रहा है। सावधानीपूर्वक चयनित बीज, स्वदेशी पौध पोषण और प्राकृतिक उर्वरकों का उपयोग करने से न केवल उत्पादन में वृद्धि हो रही है, बल्कि यह स्थानीय जलवायु और मिट्टी को भी सुरक्षित रखने में मदद कर रहा है।

### जैव संरक्षण: एक सांविदानिक दृष्टिकोण

मानव जैविक कृषि ने सांविदानिकता के साथ अपना एक महत्वपूर्ण क्षेत्र साबित किया है, जिसमें हम स्वयं को प्राकृतिक संसाधनों के सही तरीके से उपयोग करने का अभ्यास कर रहे हैं। जैव संरक्षण के माध्यम से हम जल, ऊर्जा और बायोडाइवर्सिटी की सुरक्षा में सहायता कर रहे हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों को भी स्वस्थ और समृद्धि में रहने का अवसर मिलेगा।

### समर्पण और शिक्षा: जैविक कृषि के लाभ

समुदायों को जैविक कृषि की समर्थन और शिक्षा प्रदान करने से हम एक समृद्धि भरा भविष्य बना रह सकते हैं। स्थानीय उत्पादों का समर्थन करने, बाजारों को प्राकृतिक उत्पादों के साथ जोड़ने और किसानों को नए तकनीकी उत्पादों के साथ अवगत कराने से, हम एक संतुलित और सांविदानिक उत्पादन तंत्र का निर्माण कर सकते हैं। मानव जैविक कृषि ने हमें प्राकृतिक संसाधनों के साथ एक साथी के रूप में जोड़ने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिससे हम समृद्धि, पर्यावरण संरक्षण और समाज की समृद्धि की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। इस योजना में हमारा लक्ष्य सिर्फ खाद्य उत्पादन नहीं है,

बल्कि सुस्त और सही तरीके से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके हमें अपने आसपास के संपूर्ण वातावरण को बनाए रखना भी है।

### जैविक कृषि: स्वास्थ्य और पर्यावरण का संतुलन

मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलु जैविक कृषि हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के संतुलन को समझने में मदद कर रहा है। यह कृषि विधाओं को प्राकृतिक और स्थायी तरीके से समझने और अपनाने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

### पर्यावरण संरक्षण

जैविक कृषि विधाएँ उर्वरकों और कीटनाशकों के अपर्याप्त उपयोग को कम करके प्राकृतिक संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करती हैं। यह हमें स्वस्थ और स्थिर मृदा स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में मदद करती है, जिससे पृथ्वी का संतुलन बना रहता है।

### आर्गेनिक खेती

जैविक कृषि में आर्गेनिक खेती का प्रमुख हिस्सा है, जिसमें कोई भी कीटनाशक या उर्वरक का अनुप्रयोग नहीं होता है। यह हमें स्वस्थ और प्राकृतिक खाद्य प्रदान करने में मदद करता है।

### बायो-डायनामिक खेती

बायो-डायनामिक खेती में प्राकृतिक प्रणाली को सहारा लेकर उत्पादन किया जाता है, जिससे भूमि का स्वास्थ्य बना रहता है और बनाए रखने में मदद मिलती है।

### स्वास्थ्य के लाभ

जैविक कृषि से आने वाले खाद्य में अधिक पोषण होता है, क्योंकि यह विभिन्न पोषण तत्वों को समृद्धि से प्रदान करता है। इससे लोगों को स्वस्थ रहने में मदद होती है और रोगों का समाधान हो सकता है।

### जैविक कृषि: आधुनिक खेती की दिशा

जैविक कृषि है जिसमें प्राकृतिक तत्वों का सही उपयोग करके खेती की जाती है। जैविक कृषि का सिद्धांत प्राकृतिक उर्वरकों, कीटनाशकों और सारे रसायनों के बजाय उपजाऊ जीवों और जैव उर्वरकों का उपयोग करता है। जैविक कृषि का प्रमुख लक्ष्य मिट्टी की स्वस्थता को बनाए रखना है ताकि उससे पौधों को सही पोषण मिल सके। इसमें खाद्यानुकूलन को सुधारने के लिए विभिन्न जैव तत्वों का संयोजन किया जाता है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। जैविक कृषि में बुनियादी रूप से दो तत्व होते हैं - जैविक बीज और जैविक खाद्य। जैविक बीज से उत्पन्न होने वाले पौधे सुस्त और तंदुरुस्त होते हैं, जो प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं। जैविक खाद्य से पौधों को प्राकृतिक पोषण मिलता है जो उच्च गुणवत्ता वाले और स्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों का उत्पादन करता

है। इससे किसानों की आर्थिक वृद्धि होती है और साथ ही जल, हवा, और मिट्टी के संरक्षण में भी सहायता मिलती है। समस्याएँ भी हैं, जैसे कि जैविक खेती का समय-सीमित उत्पादन और बाजार में महँगाई, लेकिन इसके लाभ दृष्टिकोण से जैविक कृषि मानव और पर्यावरण के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में है।

### जैविक कृषि: स्वास्थ्य और पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में

जैविक कृषि एक प्रौद्योगिकी है जो परंपरागत कृषि पद्धतियों को सुधारकर और स्थायिता को बनाए रखकर उत्पन्न अन्न की विशेषता को बढ़ाती है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य और पर्यावरण को सुरक्षित रखकर समृद्धि को सुनिश्चित करना है।

1. **स्वास्थ्य के पक्ष** : जैविक कृषि उत्पादों में अधिक पोषण मूल्य होता है, जिससे लोगों को अधिक विटामिन, मिनरल्स, और एंटीऑक्सीडेंट्स मिलते हैं। यह सामाजिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है और अस्पतालों में जनसंख्या को कम करने में मदद करता है।
2. **पर्यावरण के पक्ष** : जैविक कृषि उत्पादों की खेती में निर्मूल पेशेवर तथा साइक्लिक प्रणालियों का उपयोग होता है, जिससे जल, भूमि और ऊर्जा को सही तरह से बरता जा सकता है। यह अनुकूलन से सुस्तीपूर्ण उत्पादों की उत्पत्ति को प्रोत्साहित करता है।
3. **जैव उपप्रजनन** : मानव का जैविक कृषि में जैव उपप्रजनन का महत्वपूर्ण स्थान है, जिससे जैविक सामग्री, जैविक उर्वरक, और बीजों की सही तरह से व्यवस्थित प्रबंधन हो सकता है।
4. **समृद्धि और आत्मनिर्भरता** : जैविक कृषि आर्थिक समृद्धि और किसानों की आत्मनिर्भरता में मदद करती है, क्योंकि इससे उचित मूल्य प्राप्त होता है और अनेकता के माध्यम से विभिन्न फसलों की विकसित खेती हो सकती है।

### निष्कर्ष

जैविक कृषि न केवल हमारे खाद्य सिस्टम को सुधारने में मदद करती है, बल्कि यह पर्यावरण को भी संरक्षित रखती है और मानव स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे हम स्वस्थ और सुस्त जीवनशैली की दिशा में कदम से कदम मिलाकर चल सकते हैं। जैविक कृषि से संबंधित समस्याओं का सामाजिक और वातावरणिक संदर्भ में समाधान करना महत्वपूर्ण है, ताकि हम स्वस्थ आहार उपलब्ध करा सकें और पृथ्वी को सही तरह से रख सकें। जैविक कृषि हमारे समृद्धि और संतुलित पर्यावरण की कुंजी हो सकती है। जैविक कृषि एक सुस्त, सतत और पर्यावरण के साथी

मानव जीवन के लिए है। इससे हम स्वस्थ आहार प्राप्त करते हैं, पर्यावरण को बचाए रखते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण छोड़ते हैं। इसलिए हमें जैविक कृषि को प्रोत्साहित करना और उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखना चाहिए।

### संदर्भ सूची

1. तिवारी, आर. सी., एवं सिंह, बी. एन., (2000) : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
2. दत्त, रूद्र एवं सुन्दरम, के. पी. एम (2010) : भारतीय अर्थव्यवस्था, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि. नई दिल्ली ।
3. नागर, कैलाश नाथ (2002) : सांख्यिकी के मूल तत्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ ।
4. नाथूरामका, लक्ष्मीनारायण (2015) : राजस्थान की अर्थव्यवस्था, आर. बी. डी. पब्लिशिंग आऊस. जयपुर
5. मोघे बसंत, जैन (1985) : “राजस्थान में कृषि उत्पादन” राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. शर्मा, बी. एल. (1987) : कृषि भूगोल, साहित्य भवन, आगरा।
7. शर्मा, लक्ष्मीनारायण (1990) : ‘शुष्क सम्भाग की कृषि पारिस्थितिकी पर सिंचाई का प्रभाव’ अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय।
8. दैनिक समाचार पत्र-राजस्थान पत्रिका दैनिक भास्कर, सीमा सन्देश।
9. योजना (मासिक पत्रिका), मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
10. राजस्थानी खेती (मासिक पत्रिका), श्रीगंगानगर
11. आर्थिक समीक्षा, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर । (वर्ष 2015-16)
12. वार्षिक प्रतिवेदन, जिला सांख्यिकी विभाग, श्रीगंगानगर। (वर्ष 2007 एवं 2016) वार्षिक प्रतिवेदन, कार्यालय उप निदेशक कृषि विस्तार, श्रीगंगानगर (2015 - 16)
13. हरिनारायण विश्वकर्मा, “किसानों को ऋण प्राप्ति के संस्थागत स्रोत” कुरुक्षेत्र, नवम्बर, 2014,
14. वार्षिक प्रतिवेदन, जिला सांख्यिकी विभाग, श्रीगंगानगर, वर्ष 2016।

1 सहायक आचार्य प्राणिशास्त्र

श्री प्र.सिं.बा.राजकीय महाविद्यालय शाहपुरा (राज.)

2 सहायक आचार्य भूगोल, राजकीय महाविद्यालय बुन्दी (राज.)

ई-मेल : dharmnarayanvaishnav@gmail.com

# प्राचीन भारत का ज्ञान : योग, आयुर्वेद और संस्कृति

□ डॉ. ममता जोशी

भारतीय संस्कृति और सभ्यता अत्यंत प्राचीन है। यहाँ ऋषि महर्षियों ने अपने ज्ञान, योग, आयुर्वेद से इस पुण्य भूमि को अलंकृत किया है। उन्होंने अपने दिव्य चक्षुओं से शाश्वत सत्य का अन्वेषण किया और जीवन दर्शन की अमूल्य धरोहर संपूर्ण विश्व को प्रदान की। गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का विलक्षण समन्वय हुआ है। ध्यानमार्ग साधना का मार्ग है जो ज्ञान, कर्म, भक्ति तीनों में उपाधि है। ध्यान मानसिक क्रिया होने से कर्म से सम्बद्ध है, उपासना भगवान का ध्यान या स्मृति होने से भक्ति से सम्बद्ध है और चित्त की एकाग्रता द्वारा वृत्तियों के समाधि में विलीन होने से भक्ति से सम्बद्ध है और चित्त की एकाग्रता द्वारा वृत्तियों के समाधि में विलीन होने पर निर्विकल्प ज्ञान का प्रकाशित होना ध्यान का लक्ष्य है। गीता में योग शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और योग में ध्यान ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय है। योग का शाब्दिक अर्थ है मिलन अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा से मिलन। योग धारणा ध्यान समाधि है, योग स्थितप्रज्ञ की द्वन्द्वातीत बाह्य स्थिति है, योग निष्काम कर्म है, कर्म कौशल अर्थात् कामना रहित कर्म है। योग वह है जिसमें स्थित योगी तत्त्वज्ञान से विचलित नहीं होता एवं अतीन्द्रिय तथा ज्ञानगम्य अखंड आनंद का अनुभव करता है। योगी का लक्ष्य अपरोक्षानुभूति द्वारा आत्मसाक्षात्कार है, जो ज्ञान बिना संभव नहीं। भगवान अपने भक्तों को कृपा करके ज्ञान योग प्रदान करते हैं, जिससे वे उन्हें पा सके, बिना ज्ञान के योग शारीरिक और मानसिक व्यायाम मात्र है। संसार सागर को ज्ञान-यान से ही पार किया जा सकता है। ज्ञान से ही परम शांति या आनंद मिलता है।

“योगेन चित्तस्य पदेन वाचालं शरीरस्य च वैद्यकेन।”

मन की चित्त वृत्तियों को योग से, वाणी को व्याकरण से और शरीर की अशुद्धियों को आयुर्वेद द्वारा शुद्ध करने का कार्य प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। योग परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह संपूर्ण सृष्टि प्रकृति तथा पुरुष के सहयोग की अभिव्यक्ति है।

“योगानुशासनम्”

योग अत्यंत प्राचीन है। यह शास्त्र एक अनुशासन है जिससे चित्त की वृत्तियों का निरोध होता है एवं मनुष्य अपने आत्म स्वरूप में स्थित हो जाता है। इस आत्म स्वरूप की उपलब्धि के लिए वह शरीर, इंद्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार आदि का पूर्ण परिशोधन कर उन्हें इस योग्य बना देता है कि वह वास्तविक स्वरूप आत्मा को पहचान सके।

भारतीय मूल की पारंपरिक अपनी एक चिकित्सा पद्धति है “आयुर्वेद”। आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणालियों में से एक है, इसे देवताओं की चिकित्सा पद्धति भी कहा जाता है। चिकित्सा के क्षेत्र में प्राचीन विश्व में भारत सब का गुरु था। आत्रेय, सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट, तथा भावमिश्र ने शरीर विज्ञान और औषधि विज्ञान के क्षेत्र में देश की बहुत उन्नति की, जब भी कोई नयी बीमारी उत्पन्न हुई, आचार्यों ने उसकी चिकित्सा का उपाय जरूर सोचा। उपदंश नामक रोग जिसे आजकल सिफलिस कहा जाता है का उल्लेख भावमिश्र की पुस्तक में मिलता है। यह रोग यूरोप और पुर्तगाल के रास्ते भारत में आया और भारतीय चिकित्सकों ने यानी वैदों ने इसके उपचार की दिशा में कार्य किया। इस भूमि के प्राचीन आयुर्वेद ज्ञान ने दुनिया भर के विद्वानों को संजीवनी प्रदान की। भारत ने कोविड संकट में भी मानवीय पहल के रूप में पूरी दुनियाँ का नेतृत्व किया। इस संकट काल में प्रधानमंत्री मोदी जी ने योग के साथ आयुर्वेद को भी विश्व में स्थापित करने और आयुर्वेद की दीक्षाओं और औषधियों को अपनाने के लिए आग्रह किया जिसके परिणाम भी पूरे विश्व में देखें। आयुर्वेद आयु को बढ़ाने वाला एवं ‘सर्वे सन्तु निरामया’ अर्थात् सभी निरोगी हो का विचार करने वाला चिकित्साशास्त्र है जिसका उपचार नकारात्मक प्रभाव नहीं देता। इस समय अनेक विशेषज्ञ कहने लगे हैं कि अब हमारी व्यवस्था का आधार स्वदेशी होना चाहिए। आयुर्वेद, वन, औषधी, योग, व्यायाम के माध्यम से इम्यूनटी को बनाए रखा जा सकता है। वनौषधियों में गिलोय, अश्वगंधा, कालमेघ, तुलसी, पुदीना, आंवला, एलोवेरा इत्यादि के सेवन से इम्यूनटी मजबूत होती है। इम्यूनटी को रोग प्रतिरोधक क्षमता अथवा प्रतिरक्षक कहा जाता है। यह भी भारतीय वाङ्मय एवं भारतीय ज्ञान परंपरा की देन है विश्व को। आयुर्वेद में इम्यूनटी को व्याधिक्रमत्व कहा गया है।

“निरुक्ति व्याधिक्रमत्वम् व्याधिबल विरोधित्तम्  
व्याधुयत्याद प्रतिबंधकत्वमिति यायत।” चक्रपाणि

अर्थात् शरीर की क्षमता जो व्याधि के बल को विरोध करती है एवं व्याधि उत्पत्ति को रोकते हैं वह व्याधि क्षमता कहलाती है। अतः व्याधिक्रमत्व का पर्याय बल है। सुश्रुत आचार्य ने चिकित्सा में कहा है – ‘स्वस्थ व्यक्ति को हमेशा बल (शरीर एवं मानसिक) का रक्षण करने का प्रयास करना चाहिए।’ भारतीय मनीषियों, ऋषि-मुनियों ने विश्व के कल्याण के लिए स्वस्थ जीवन के लिए कठोर साधना परिश्रम से आयुर्वेद के रूप में जिस ज्ञान को प्रदान किया है, आज वह संजीवनी

के रूप में न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए उपहार सिद्ध हो रहा है। औषध निर्माण के क्षेत्र में भारत एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' मंत्र से प्रेरित प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों में हमारी आस्था के कारण भारत आज फिर विश्वगुरु बनता दिखाई दे रहा है।

भारत भूमि संतों की भूमि है राम, कृष्ण आदिशंकराचार्य, महावीर, बुद्ध, सूर, तुलसी, मीरा इस भूमि पर जन्मे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति व परंपराएँ अद्वितीय थी। प्राचीन ज्ञान, योग, आयुर्वेद, हमारी प्राचीन संस्कृति की आत्मा है। इसके बिना सब निष्पादन है -

### “सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा”

यजुर्वेद ने जिस हिंदू संस्कृति के प्रथम अविष्कृत होने व विश्वव्यापी बनने की बात स्वीकार है। आज भी विश्व पटल पर उसकी अमित छाप संसार के कोने-कोने में अंकित है। विपरीत समय के कारण हमारी संस्कृति धूमिल हुई है मगर धूल हटते ही हमारे पद चिह्न फिर विश्व को दिशा प्रदान करेंगे। विश्व की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति भारतीय संस्कृति है। भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति भी कहा गया है।

### “एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्व-स्वं चरित्रं शिक्षरेण पृथिव्यां सर्वमानवाः॥”

भारत में जहाँ-जहाँ सभ्यता का विकास हुआ, उसके मूल में हमारी भारतीय संस्कृति सनातनीय संस्कृति का आधार था। लंका, नेपाल, बर्मा, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, इन दिनों भारत से अलग कट गये हैं किंतु यह भारत देश के अविच्छिन्न अंग रहे हैं। भारत का विस्तार पूरे एशिया महाद्वीप में था, पूर्व एशिया में इंडोनेशिया, कंबोडिया, मलेशिया, थाईलैंड समस्त देश और द्वीप भारतवर्ष के ही अंग है। पुराणों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि विश्वामित्र की श्रापित संततियों को देश निकाला मिला तो वे ऑस्ट्रेलिया गये व उसे नए सिरे से बसाया। ऋषि पुलस्त्य के द्वारा भी भारतीय ज्ञान विज्ञान के विस्तार हेतु उसे देश में जाने का विवरण मिलता है। बुमेरंग अस्त्र (शब्द बेधी बाण) से लेकर बोलचाल तथा उसके रीति-रिवाज से ऑस्ट्रेलियाई अबरिजिन, कोल, भील, संधाल से बहुत मेल खाते हैं। अमेरिका पुराणों का पाताल लोक या नागलोक है। वहाँ अवशेषों में नाग देवताओं की आकृतियाँ मिलती हैं। भारत के पूर्व और पूर्वोत्तर में बसने वाले नाग जाति ही वहाँ जाकर बसी थी। रावण का भाई अहिरावण का भी पाताल लोक ही निवास था व तत्कालीन सभ्यता बड़ी विकसित स्तर की थी। प्राचीन मिश्र में भारतीय ऋषियों के बारे में वर्णन मिलता है। मिश्र के पिरामिडों के भीतर सूर्य की प्रतिमाएँ और ताम्र या स्वर्ण पत्रों पर गाय के चिह्न ये बताते हैं कि ये गौ पूजक भी थे जो मूलतः भारतीय संस्कृति के हस्ताक्षर हैं। सुमात्रा जिसका प्राचीन नाम श्री विजय द्वीप था वहाँ प्राप्त अनेक शिलालेखों से यह स्पष्ट है कि सातवीं शताब्दी में नागवंश का शासक था। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उसकी आत्मा होती है, भूखंड राष्ट्र का देह है, भाषा उसकी वाणी है, सभ्यता उसका शृंगार है, कला

उसका सौंदर्य है। साहित्य उसकी दृष्टि है, विज्ञान उसका वैश्विक शोध है। अर्थ उसका भंडार है। प्राचीन भारतीय संस्कृति उसकी आत्मा है। संस्कृति के बिना सब निष्पादन है। प्रत्येक देश का एक मूल स्वर, एक मूल चेतना, एक विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति होती है...और इसी दृष्टि से भारत में उपलब्ध अखंड साधु संतों की परंपरा की सार्थकता है जो कि हमें नर से नारायण तक गति करा सके। स्पष्ट है प्रभु ने हमें विकास के सब साधन, मानव योनि, भारत देश में जन्म, संतों के अखंड परंपरा और वैदिक सनातन में जन्म दिया है। क्योंकि मनुष्य अनंत पथ का यात्री है, अनंत योनियों को पार करता हुआ उसके शुभ अशुभ संस्कारों के साथ वह संसार में आता है और मनुष्य जब संसार में आता है तब अनेक पशु प्रवृत्तियों से बंधा रहता है। यथा आहार, निद्रा, भय, मैथुन, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं जो मनुष्य और पशु में समान हैं। अतः संस्कार, तप, सत्संग साधना के द्वारा मनुष्य को मानव मन का परिष्कार करके, शोधन करके पूर्णता प्रदान करने वाले जितने भाव एवं कार्य हैं, उनको करना चाहिए। इन्हीं संस्कारों की दिव्य परंपरा को संस्कृति कहते हैं। ऋषि मुनियों द्वारा प्रदत्त गूढ़ ज्ञान के कारण ही सहस्रों शताब्दियों तक न केवल विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व किया है अपितु प्राचीन ज्ञान, योग आयुर्वेद का ज्ञान देकर दुनिया भर के विद्वानों को विभिन्न विषयों को सीखने के लिए आकर्षित किया तथा विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ी। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसने संपूर्ण धरा को एक कुटुंब के रूप में मानकर सांस्कृतिक मूल्यों को धारण कर, संपूर्ण विश्व का प्रतिनिधित्व किया व “वसुधैव कुटुंबकम्” की बात की।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री कवि अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपनी कविता में कहा है - “भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।”

### संदर्भ सूची -

1. थॉम्पसन रिचर्ड एल. 2004 वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान और खगोल विज्ञान पेज 240
2. आयंगर पतंजलियोग सूत्र
3. ऋग्वेद का नासदीय सूक्त
4. भविष्य का धर्म वैज्ञानिक धर्म : श्रीराम शर्मा आचार्य
5. रामायण
6. याज्ञवल्क्य संहिता
7. मनु संहिता
8. अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता देख कविता कोश में
9. सुदूर पूर्व में भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास: डॉ. बैजनाथ पुरी

- सहआचार्य हिंदी विभाग  
अपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर (राजस्थान)  
मेल: dr.mamtajoshiw@gmail.com  
मो: 9460 34 1336

# भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में योग, आयुर्वेद, शिक्षा एवं संस्कृति

□ प्रगति सचान<sup>1</sup> प्रो. नन्द किशोर<sup>2</sup>

**शोध सारांश** - प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों में आस्था को पुनः जागृत करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय ज्ञान की एक सामूहिक शृंखला है जो जानने के व्यवस्थित तरीकों से प्रदर्शित होती है। भारत एक देश नहीं बल्कि ज्ञान, संस्कार, आदर्श की कर्मभूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहु आयात्मक और विविध ज्ञान की परंपरा है। यहाँ कई ऋषि मुनि हुए हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान कौशल से वेद, उपनिषद, पुराण आदि अनेक विधाओं का परंपरागत से अब तक जीवित रखा है। जिसमें चिरकाल से वेद, वेदांग, षट् दर्शन-पूर्व मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय तथा वैशेषिक, तर्कशास्त्र, काव्यशास्त्र, साहित्य, वास्तुशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, विज्ञान, गणित, धर्म, योग, ध्यान, औषधि, ग्रंथ और कला आदि विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन होता है। इस ज्ञान परंपरा ने लम्बे समय तक भारतीय सभ्यता को सँजोये रखने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और तकनीकी हर प्रकार के ज्ञान को बढ़ावा दिया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में मनुष्य की मूल्य परक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए तथा शाश्वत मूल्यों से भी संबंध होना चाहिये। भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से पुनः विद्यार्थियों तथा समाज के लोगों में प्रेम, दया, सहानुभूति, सम्मान, करुणा, मूल्यों तथा संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है।

**शब्दकुंजी** - भारतीय ज्ञान परंपरा, आयुर्वेद शिक्षा, योग शिक्षा, संस्कृति।

**प्रस्तावना**-भारत में शिक्षा का महत्त्व अत्यधिक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का मतलब सिर्फ पुस्तकों और शिक्षकों के साथ पढ़ाई करने का नहीं होता, बल्कि यह जीवन कौशलों, सामाजिक योग्यता और सामाजिक सद्गुणों को विकसित करने का एक आदर्श माध्यम है (शर्मा, 2015)। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और तकनीकी हर प्रकार के ज्ञान को बढ़ावा दिया है। आध्यात्मिक शिक्षा भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा रही है और इसमें योग और समाधि जैसे ध्यान के तरीकों को बढ़ावा दिया गया है। भारतीय संस्कृति में आयुर्वेद को चरक द्वारा लिखित चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता तथा वाग्भट्ट द्वारा लिखित अष्टांग हृदय को आयुर्वेद त्रयी ग्रंथ कहा जाता है। पिछले

कुछ समय से लोगों ने आयुर्वेद का महत्त्व पुनः स्वीकार किया है तथा आश्चर्यजनक रूप से आयुर्वेद द्वारा कई उन रोगों की सफलतापूर्वक चिकित्सा की गयी, जिसे अत्याधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा भी ठीक न कर सकी। आयुर्वेद की परिभाषा देते हुए कहा गया है “हिताहितं सुखदुःखमायुस्तस्य हिताहितं मानं च तच्च यदोक्तमायुर्वेद स उच्यते। अर्थात् आयु के हित तथा अहित के लिए, उसके सुख-दुःख का वर्णन मान (उचित मात्रा) सहित जहाँ हो उसे आयुर्वेद कहते हैं। भारतीय शिक्षा कालांतर में भारतीयता से दूर हो गई थी। अब पुनः उसे भारतीयता से परिपूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है (भट, 2023)। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहुप्रतिक्रियात्मक और विविध ज्ञान की परंपरा है जिसमें चिरकाल से विज्ञान, गणित, धर्म, योग, ध्यान, औषधि, ग्रंथ और कला आदि विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन होता है। इस ज्ञान परंपरा ने लम्बे समय तक भारतीय सभ्यता को सँजोये रखने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। (माधवन,1994) भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान अपरिहार्य है। संस्कृति से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है (आर. एन. (2023)।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में मनुष्य की मूल्य परक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए तथा शाश्वत मूल्यों से भी संबंध होना चाहिए। एक ऐसा समाज जो आदर्शों से परिपूर्ण ही वह सत्य, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द, दया, सहानुभूति, सम्मान, ईमानदारी तथा वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से ओत प्रोत होता है (सिन्हा 2021)। महोपनिषद् में कहा गया है कि

**अयं निजः परोवेती गणना लघुचेतसाम् ।**

**उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥** (महोपनिषद्)

अर्थात् यह मेरा बन्धु है, और वह पराया है, ऐसा विचार संकीर्ण मानसिकता का होता है, जो श्रेष्ठजन है, उनके लिए सारा संसार एक कुटुम्ब की ही भांति है। भारतीय ज्ञान परंपरा सहस्राब्दियों से विकसित हुई है। इसमें कई समुद्र तटों की एक विस्तृत शृंखला है जैसे कि खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और योग (स्वास्थ्य और कल्याण), गणित और कंप्यूटिंग, भाषाएँ और भाषा विज्ञान, विज्ञान, प्रबंधन, विज्ञान और कई अन्य विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में योग और आयुर्वेद का महत्वपूर्ण स्थान है। योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन है जबकि आयुर्वेद औषधियों और प्राकृतिक उपचारों के क्षेत्र में ज्ञान प्रदान करता है।

## शोध प्रश्न -

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में योग शिक्षा की क्या उपयोगिता है?
2. भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद शिक्षा का क्या महत्त्व है?
3. भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से भारत की संस्कृति कैसी है?

## शोध उद्देश्य -

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में योग शिक्षा की उपयोगिता का अध्ययन करना।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद शिक्षा के महत्त्व का अध्ययन करना।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से भारत की संस्कृति का अध्ययन करना।

## परिणाम -

### 1. भारतीय ज्ञान परंपरा में योग शिक्षा की उपयोगिता -

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। योग के प्रामाणिक साक्ष्य भारतीय संदर्भ में हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त हुए हैं। वेद, वेदांग, पुराण, महाभारत, रामायण, पतंजलि के योगसूत्र में योग की साहित्यिक जानकारी के महत्त्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं। भारत में योग के विभिन्न पक्षों पर विभिन्न विद्वानों, योगियों, महर्षियों, ने अपने अपने अनुभव को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। आज वर्तमान समय में योग का महत्त्व प्रत्येक व्यक्ति ने समझा है। योग को एक विज्ञान के रूप में विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है (chadhar, shrivastav 2018)। भारतीय योग परम्परा में योग के विभिन्न आयाम हैं जिसमें से कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग प्रमुख हैं। वास्तव में योग एक अध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें शरीर, मन एवं आत्मा को एक साथ लाने का प्रयास किया जाता है। योग शब्द की निष्पत्ति 'युज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है युक्त होना, जोड़ना अथवा मिलाना। अर्थात् संयम पूर्वक साधना करते हुए आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़कर समाधि अवस्था में पहुँचना ही योग है (guptaxtripathi, 2023)। महर्षि पतंजलि ने योग को अष्टांग रूप में वर्णन किया है।

### यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार

### धारणाध्यानसमाधयोह्यष्टावङ्गानि ॥

(पतंजलि योग सूत्र 2.29)

ये आठ अंग हैं -1) यम, 2) नियम, 3) आसन, 4) प्राणायाम, 5) प्रत्याहार, 6) धारणा, 7) ध्यान व 8) समाधि। ये आठ अंग जीवनचर्या का भाग बनने चाहिए तभी योग जीवन का भाग बनेगा। अथवा यह कहें कि भारतीय जीवन शैली के अनुसार जीना है तो योग आधारित जीवन शैली को अपनाना होगा।

योग करने के कई फायदे हैं। जहाँ सिर्फ जिम करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं योग हमारे शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी स्वस्थ बनाता है। योग के कुछ लाभ:

1. **मन की शांति** - योग न केवल हमारे शरीर की मांसपेशियों

को अच्छा व्यायाम देता है, बल्कि यह हमारे दिमाग को शांत रखने में भी मदद करता है। चिकित्सा अनुसंधान से पता चला है कि योग शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है।

2. **तनाव मुक्त जीवन** - यदि व्यक्ति योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करते हैं तो वह तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि आज हर दूसरा व्यक्ति तनाव में है। योग तनाव से राहत देता है और बेहतर नींद लाता है, भूख और पाचन को बढ़ाता है। यह दिमाग को हमेशा शांत रखता है।
3. **शरीर की थकान** - जब व्यक्ति योग करता है तो मांसपेशियों में खिंचाव, मरोड़ और खिंचाव जैसी कई क्रियाएँ होती हैं। इससे शरीर की थकान दूर होती है और व्यक्ति हमेशा तरोताजा महसूस करता है। यदि व्यक्ति नियमित रूप से योग करता है तो उसके शरीर में ऊर्जा का संचार होता है।
4. **रोग मुक्त शरीर** - योगाभ्यास शरीर को स्वस्थ बनाता है, क्योंकि यह रोगों से लड़ने की शक्ति देता है। हृदय रोग, मधुमेह और अस्थमा जैसी कई अन्य बीमारियों के लिए योग की सलाह दी जाती है।
5. **मानसिक विकास** - योग करने से व्यक्ति के सोचने और विचार करने की शक्ति बढ़ती है तथा दिमाग सक्रिय रहता है। जिससे व्यक्ति सही निर्णय लेने में समर्थ होता है।
6. **मैत्रीपूर्ण स्वभाव** - योग करने से व्यक्ति का स्वभाव सरल हो जाता है। सरल स्वभाव/ मैत्रीपूर्ण स्वभाव के कारण व्यक्ति अपने आप को समाज में सभी से साथ समायोजित कर लेता है।

### 2. भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद शिक्षा के महत्त्व-

भारत अपनी भोजन, चिकित्सा और स्वास्थ्य परंपराओं में विविध और बहुलवादी है। सभी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के बीच, आयुर्वेद का विज्ञान दीर्घायु और स्वस्थ जीवन के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। आयुर्वेद शब्द दो शब्दों आयु (जीवन) और वेद (ज्ञान) से मिलकर बना है, जो स्वास्थ्य और खुशहाली से संबंधित है।

### आयुर्वेद का अवतरण

1. **चरक मतानुसार (आत्रेय सम्प्रदाय)** - चरकसंहिता आत्रेय सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है। चरक मत के अनुसार, आयुर्वेद का ज्ञान सर्वप्रथम ब्रह्मा से भारद्वाज तक ने आयुर्वेद का अध्ययन किया। इसमें कायचिकित्सा का मुख्य रूप से उल्लेख किया गया है। आयुर्वेद की बृहत्त्रयी में चरकसंहिता का प्रथम स्थान है। वाग्भट ने भी चरकसंहिता को प्रथम स्थान दिया है। इसकी प्रमुख विशेषताओं पर हम इस प्रकार दृष्टिपात कर सकते हैं-

- चिकित्सा कर्म के लिए कहा है - "वैद्यसमूहो निःसंशयकराणाम्" अर्थात् चिकित्सक भी गंभीर रोगों में परस्पर विचार विमर्श कर निर्णय लेते थे।

- आयुर्वेद का मूलभूत सिद्धान्त त्रिदोष के अतिरिक्त पञ्चमहाभूत, रसगुणवीर्यविपाक आदि मौलिक सिद्धान्तों का निरूपण वैज्ञानिक रीति से किया गया है। इन सिद्धान्तों को विकसित करने के लिए वस्तुओं के स्वभाव की तह तक पहुँचना चाहिए।
- आयुर्वेद का प्रारम्भ में संक्षिप्त रूप 'त्रिसूत्र' या त्रिस्कन्ध था। आयुर्वेद के तीन स्कन्ध थे-हेतु, लिंग और औषध। इन्हीं का ज्ञान करना होता था। द्रव्यों का साम्य-वैषम्य ही स्वास्थ्य एवं रोग का कारण है।
- चरक की चिकित्सा प्राकृतिक चिकित्सा है। चरक का कहना है कि औषध रोग को दबाने के लिए नहीं अपितु प्रकृति को सहायता देने के लिए प्रयुक्त होती है। चरक द्वारा उद्धृत 'स्वभावोपरमवाद' प्राकृतिक चिकित्सा का मूल है।
- रोगों की रोकथाम और इलाज के लिए रसायन का उपयोग चरक का मौलिक देन है।

आयुर्वेदीय द्रव्यगुण को वैज्ञानिक आधार शिला पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय चरक को प्राप्त है। षट्पदार्थों, रसगुण वीर्यविपाक आदि, द्रव्यों का रचनानुसार तथा कर्मानुसार वर्गीकरण सर्वप्रथम चरकसंहिता में प्राप्त होता है। औषधों के नामरूपज्ञान के साथ प्रयोगज्ञान पर भी जोर दिया गया है। औषधियों का ज्ञाता नामरूप को जानने के साथ-साथ योगविद् वैद्य को माना गया है।

**2. सुश्रुत मतानुसार ( धन्वन्तरि सम्प्रदाय )** - धन्वन्तरि ने भी आयुर्वेद का प्रकाशन ब्रह्मदेव द्वारा ही प्रतिपादित किया हुआ माना है। उस समय भगवान धन्वन्तरि ने उन लोगों को उपदेश करते हुए कहा कि सर्वप्रथम स्वयं ब्रह्मा ने सृष्टि उत्पादन के पूर्व ही अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद को एक हजार अध्यायों तथा एक लाख श्लोकों में प्रकाशित किया और पुनः मनुष्य को अल्पमेधावी समझकर इसे आठ अंगों में विभक्त कर दिया। पुनः भगवान धन्वन्तरि ने कहा कि ब्रह्मा से दक्ष प्रजापति, उनसे दोनों अश्विनीकुमारों ने, तथा उनसे इन्द्र ने आयुर्वेद का अध्ययन किया।

आयुर्वेद में एक सूत्र है - 'आहार ही औषध' अर्थात् आहार औषधि है। आहार औषधि तब बनता है जब उसे नियमानुसार, संतुलित रूप से, ऋतुचर्या का पालन करते हुए एवं विरुद्ध आहार का ध्यान करते हुए लिया जाता है। उपरोक्त दोनों प्रसंगों में पूर्ण स्वास्थ्य का बड़ा कारण संतुलित आहार ही है। कोई भी रोग जब उत्पन्न होता है तो एकदम नहीं होता है। उस रोग से पूर्व उसकी प्रारंभिक अवस्था भी रहती है। उस रोग का जो मूल कारण है, उस मूल कारण के लक्षण भी उत्पन्न होते हैं। ऐसे लक्षणों को समझ कर प्रारम्भ में ही आहार के विभिन्न रूपों से मूल कारण को समाप्त किया जा सकता है।

### आयुर्वेद का महत्त्व

- आयुर्वेदीय चिकित्सा विधि सर्वांगीण है। आयुर्वेदिक चिकित्सा के उपरान्त व्यक्ति की शारीरिक तथा मानसिक दोनों दशाओं में सुधार होता है।

- आयुर्वेदिक औषधियों के अधिकांश घटक जड़ी-बूटियों, पौधों, फूलों एवं फलों आदि से प्राप्त की जाती हैं। अतः यह चिकित्सा प्रकृति के निकट है।
- व्यावहारिक रूप से आयुर्वेदिक औषधियों के कोई दुष्प्रभाव (साइड-इफेक्ट) देखने को नहीं मिलते।
- अनेकों जीर्ण रोगों के लिए आयुर्वेद विशेष रूप से प्रभावी है।
- आयुर्वेद न केवल रोगों की चिकित्सा करता है बल्कि रोगों को रोकता भी है।
- आयुर्वेद भोजन तथा जीवनशैली में सरल परिवर्तनों के द्वारा रोगों को दूर रखने के उपाय सुझाता है।
- आयुर्वेदिक औषधियाँ स्वस्थ लोगों के लिए भी उपयोगी हैं।
- आयुर्वेदिक चिकित्सा अपेक्षाकृत सस्ती है क्योंकि आयुर्वेद चिकित्सा में सरलता से उपलब्ध जड़ी-बूटियाँ एवं मसाले काम में लाये जाते हैं।

### 3. भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से भारत की संस्कृति -

भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है, यहाँ के लोगों, संस्कृति और मौसम में इसकी संस्कृति की प्रमुखता दिखाई देती है। हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सूखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठार की ठंडक तक, भारतीय जीवन शैलियाँ इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। एक भारतीय के परिधान, योजना और आदतें इसके उद्भव के स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं। भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग-अलग है। यहाँ के लोगों की भाषाएँ, पहनावा, धर्म तथा भोजन भिन्न-भिन्न हैं किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता है। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या एक आयोजन किसी घर या परिवार के लिए सीमित नहीं है। भारतीय संस्कृति के बारे में पं. मदनमोहन मालवीय का कहना है कि " भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में निहित है"।

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ है- संस्कार, सुधार, परिवार, शुद्धि, सजावट आदि।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के अनुसार ढालती भी आई है।

“यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां, सब मिट गए जहाँ से, अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहाँ हमारा।”

भारतीय संस्कृति के समन्वित रूप पर विचार करें तो इसमें विभिन्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में ‘अध्यात्म एवं भौतिकता’ में समन्वय नजर आता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल में मनुष्य के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं चार आश्रमों- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का उल्लेख है, जो आध्यात्मिकता एवं भौतिक पक्ष में समन्वय लाने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति ने अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचारों को अपने में समेट लिया है। भारत की विभिन्न कलाओं, जैसे- मूर्तिकला, नृत्यकला, चित्रकला, लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप को देखा जा सकता है। संस्कृति का स्वरूप ‘साहित्य’ में सबसे अधिक सामर्थ्यपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य का प्राण है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। यहाँ की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करुणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृति भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है।

तुलसीदास मध्यकाल में भारतीय संस्कृति के समन्वय के सबसे बड़े कवि के रूप में नजर आते हैं।

**“स्वपच सबर खस जमन जड़, पाँवर कोल किरात**

**रामु कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात।।”**

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रामाणिक व आधारभूत खोज की। शून्य का आविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल पर सटीक विवरण आदि का आधार भारत में ही तैयार हुआ। तात्कालिक कुछ नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी सांस्कृतिक जीवन-शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानी पूर्वक हटाना होगा। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारों तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें।

**निष्कर्ष** - भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय ज्ञान की एक सामूहिक श्रृंखला है जो जानने के व्यवस्थित तरीकों से प्रदर्शित होती है। भारत एक देश नहीं बल्कि ज्ञान, संस्कार, आदर्श की कर्मभूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहु आयात्मक और विविध ज्ञान की परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में योग शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारतीय ज्ञान परंपरा में योग और आयुर्वेद शिक्षा एवं संस्कृति ने समृद्धि और समान्तर सुरक्षा का समर्थन किया है। योग, मन, शरीर और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने के लिए एक प्रमुख उपाय है जो विश्वभर में

आगे बढ़ रहा है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आत्मा को समझता है और सांत्वना एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करता है। आयुर्वेद, भारतीय चिकित्सा प्रणाली, जीवन का एक अभूतपूर्व सिद्धांत है, जो प्राकृतिक उपचारों, आहार, और ध्यान को समाहित करता है। यह दीर्घकालिक अनुभव और शोध पर आधारित है और व्यक्ति को स्वस्थ जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन करता है। भारतीय संस्कृति में योग और आयुर्वेद को सद्गुण से जोड़कर मानव जीवन को समृद्धि, संतुलन और स्वास्थ्य में समर्थन करने का सिद्धांत आता है। इन विद्याओं के माध्यम से भारतीय समृद्धि का अद्वितीय सिद्धांत उजागर होता है, जो समृद्धि और सामरिक समृद्धि की प्राप्ति के लिए एक पूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

**संदर्भ-सूची** -

- तिवारी र. (2021), भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
- शुक्ला आर.(2019). आयुर्वेद प्राचीन भारतीय प्राकृतिक और समग्र चिकित्सा पद्धति।
- प्रो. गिरी (2019). योग एवं आयुर्वेद द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य संभव।
- काटदरे इ., फडके व. और करंजगावकर एस. (2017) भारतीय शिक्षा : संकल्पना एवं स्वरूप, पुनरुत्थान प्रकाशन सेवा ट्रस्ट।
- Agrawala V. S. (2014). PaninikalinaBharatvarsa. ChaukhambaVidyabhawan, Varanasi. Pp.271.
- तोमर (2013), प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, सुरुचि प्रकाशन केशव कुंज, झंडेवाला, नई दिल्ली-110055
- Bharat, P., & Singh, R. (n.d.). Chapter .... The Impact of Technology on Indian Knowledge System.
- चरक संहिता, सूत्र 3/41.
- सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान 7.4, अष्टांगहृदय पृ. 304।
- महोपनिषद् 4.7.
- PadhanH.(2023). भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध, The e-journal of Indic studies. 2(1) pp. 47-53.
- पाठक एम. वैदिक ज्ञानविज्ञान कोश आधुनिकपरिप्रेक्ष्य में, पृ. सं.- 489-553।
- पतंजलि योगसूत्र 1.2
- जैन एम. भारतीय ज्ञान परंपरा व शोध।

1 शोधार्थी हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,  
महेंद्रगढ़, शिक्षक शिक्षा विभाग

Email : Pragati.sachan98@gmail.com

2 शोधनिर्देशक हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,  
महेंद्रगढ़, शिक्षक शिक्षा विभाग

Email : nandkishor@cuh.ac.in



# वर्तमान युग की कृत्रिमता में वास्तविक ज्ञान प्रणाली की आवश्यकता : भारतीय ज्ञान प्रणाली

□ डॉ. अरूणा शर्मा

## सारसंक्षेप

ज्ञान प्रणाली किसी भी विषय के प्रारम्भ से सम्पूर्ण ज्ञान तक निरन्तर गतिमान प्रक्रिया है इस हेतु इसका सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी, सार्वभौमिक, उन्नत एवं सर्वश्रेष्ठ होना आवश्यक है। भारतीय वाङ्मय में प्रचलित ज्ञानकोष, पांडुलिपियों के विशाल संग्रह और भारतीय जीवन दर्शन से ज्ञात होता है कि मानवता के उद्गम से ही ज्ञान का लक्ष्य 'समग्र विकास' रहा है किन्तु आज संख्यात्मक विकास की दौड़ में समग्र विकास की अवधारणा (वैश्विक पटल पर) विलुप्त होकर ज्ञान के एक ही आयाम पर केन्द्रित होने से शेष आयाम उपेक्षित हो गए हैं।

मानव विकास की प्रथम सीढ़ी 'स्व' की पहचान है विवेकानन्द ने कहा है कि *So Long as we have no knowledge of our own nature we all are Beggers* अर्थात् जब तक हमें स्व की प्रकृति का ज्ञान नहीं होगा हम सब भिखारी हैं। वर्तमान युग में 'स्व' के साथ ही पर्यावरण संरक्षण, भाषा, सम्मान, नागरिकता, लैंगिकता, कला व संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के प्रति समझ विकसित करने के लिए वास्तविक ज्ञान की आवश्यकता है। यह शोध पत्र वर्तमान युग की कृत्रिमता में वास्तविक ज्ञान प्रणाली की आवश्यकता पर चर्चा करेगा।

उपलब्ध साहित्य में समग्र विकास की अनेक परिभाषाएँ उल्लेखित हैं किन्तु शोध कारणों से इस शोध पत्र में समग्र विकास को दो रूपों में निम्नानुसार विभाजित कर परिभाषित किया गया है।

1. मानव का विकास - मानव का शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं अध्यात्मिक विकास।
2. समाज का विकास - समाज की नैतिक, सामाजिक एवं भौतिक समृद्धि।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान कोष के अथाह भण्डार में कौटिल्य का अर्थशास्त्र चरक व सुश्रुत संहिता, योग, पुरुषार्थ चतुष्टय, वात्सायन का कामसूत्र, गीता, चाणक्य नीति, मनुस्मृति, पंचतन्त्र, हितोपदेश, पाणिनी की अष्टाध्यायी, ज्योतिष, वास्तु, शिल्प कला, शास्त्रीय संगीत, भरत नाट्यम परम्परा तथा संस्कृत भाषा की वर्तमान युग में उपादेयता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली कला, संस्कृति, जीवन दर्शन, योग, चिकित्सा भाषा एवं अध्यात्म के साथ आधुनिक विज्ञान की आधार शिला है।

यह शोधपत्र इन सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय

ज्ञान प्रणाली का वर्णनात्मक विश्लेषण कर वर्तमान युग में इसकी प्रासंगिकता को प्रभावी दिशा देगा। विलुप्त होती कला, संस्कृति, सभ्यता की पुनर्स्थापना के साथ व्यक्ति के समग्र विकास में भारतीय ज्ञान प्रणाली सहायक सिद्ध हो सकती है।

**मुख्य शब्द** - वास्तविक, जीवनशैली, कृत्रिमता, ज्ञानप्रणाली, मानव, स्व, विकास।

## प्रस्तावना

सोशल मीडिया, ओटीटी, और सिनेमा जैसे मनोरंजन के कृत्रिम उपक्रमों ने मानव मन को एक काल्पनिक एवं आभासी जगत में उलझा दिया है जिससे निकलने का वास्तविकता की और जाता मार्ग इस रूपांतरण में लुप्त हो गया है।

वर्तमान समाज अव्यवस्था, अस्थिरता, उद्विग्नता से पीड़ित है और मानव जीवन की बढ़ती विषम परिस्थितियाँ इसका प्रमाण है। समाज में विद्यमान इन विकृतियों का मुख्य कारण आधुनिक समाज का वास्तविकता से परे एक दिखावटी व आडम्बरयुक्त जीवनशैली को अपनाना है। समाज में बदलती शिक्षा और उसी से प्रभावित विकास की भाषा एक मार्गीय प्रतिस्पर्धात्मक विकास को जन्म दे चुकी है। इसी प्रतिस्पर्धात्मक विकास को गति देते पाश्चात्य जीवन शैली के अंधानुकरण ने समाज में कृत्रिमता का वातावरण निर्मित कर दिया है। अपनी वास्तविक स्थिति से अधिक स्वयं को समाज में श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में शामिल अधिकांश मनुष्य भौतिकवाद की चकाचौंध, फैशन, सजावट व झूठी प्रतिष्ठा के चलते आज का मानव अपनी अन्न वस्त्र व आवास की तीन मूलभूत आवश्यकताओं को दरकिनार कर बाह्य आडम्बरों पर व्यय और अहंकारवश आवश्यकता से अधिक संसाधनों का अपव्यय कर रहा है। इस बाह्य भौतिकता से आंतरिक खोखलापन बढ़ रहा है। अपनी आय को तीन गुना व व्यय को आधा बताकर प्रसन्न होना मानवीय स्वभाव बन गया है। नैतिक मूल्य, संस्कार, अध्यात्म, संवेदना एवं ज्ञान पुस्तकों तक सिमट कर रह गए हैं।

'शिक्षा के आदर्श' 'स्व' का स्थान आज 'अर्थ' ने ले लिया है। मानव का एक ही ध्येय, 'येन केन प्रकारेण', अधिक से अधिक अर्थोपार्जन है। अर्थ केंद्रित समाज की यह व्यवस्था मानव जीवन में

विघ्न पैदा करती है। मानव का खोखला 'स्व' 'अर्थ' की खोज में 'स्वार्थ' की ओर अग्रसर है। संवेदनहीनता और आत्मिक स्तर में गिरावट के साथ स्नेह, आत्मीयता, दया, करुणा, त्याग, समर्पण, सहनशीलता, उदारता जैसे गुणों के परस्पर आदान प्रदान का स्थान कृत्रिम संवेदनाओं एवं क्षणिक सुखों ने ले लिया है। भ्रष्टाचार, अनास्था, मादक पदार्थों का सेवन, एकल परिवार, विवाह विच्छेद, सहनशीलता का अभाव, गरीबी, अवसाद व तनाव जैसी आसुरी प्रवृत्तियाँ इस कृत्रिमता से पनपी समस्याओं के कुछ उदाहरण हैं।

ज्ञान को समझना और परिभाषित करना एक दुरूह कार्य है और इस शोध सीमा से परे है। इसी प्रकार इस ज्ञान के विशाल कोष को मापने वाली ज्ञान प्रणाली को एक संकुचित परिभाषा में बांधना संभव नहीं है। किंतु इस शोध के प्रयोजन हेतु यह परिभाषा समीचीन है। मानव जीवन का अर्थ और उद्देश्य, सत्य का स्वरूप, समाज की संरचना एवं संचालन को समझने में सहायक ऐसे संसाधनों का एक समूह ज्ञान प्रणाली कहा जा सकता है। व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक उचित ज्ञान प्रणाली का होना आवश्यक है।

स्व-आधारित समग्र विकास की संकल्पना को पुष्ट करने वाली भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित कर मानव के शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करती है। भारतीय ज्ञान का आधार दर्शन है और भारतीय जीवन दर्शन में योग, आयुर्वेद, उपनिषद, ज्योतिष, पंचतंत्र, हितोपदेश व गीता जैसे बौद्धिक शास्त्रों को आत्मसात कर व्यक्ति व समाज के समग्र विकास की अवधारणा को चरितार्थ किया जा सकता है। आधुनिक कृत्रिमता से उत्पन्न समाज की समस्याओं यथा युद्ध व संघर्षों, आतंकवाद, खाद्य व आर्थिक संकट, गरीबी, बेरोजगारी, संसाधनों के असमान वितरण, स्वास्थ्य व शिक्षा, अवसाद व नैराश्रयता का समाधान भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित है। संस्कृत भाषा में सृजित यह अथाह ज्ञान का भंडार समाज के प्रत्येक वर्ग और क्षेत्र के लिए प्रासंगिक है, भारतीय ज्ञान प्रणाली को सार्वभौमिक बनाता है।

वर्तमान समाज की कृत्रिमता तथा उससे उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिक उपादेयता को सिद्ध करना इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं।

यह शोध पत्र वर्णनात्मक प्रविधि एवं गुणनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। तथ्य संकलन द्वितीयक स्रोतों से किया गया है।

वर्तमान मानव समाज एवं समय में विद्यमान कृत्रिमता एवं उससे जन्में संघर्षों का आंकलन चिर शांति को छोड़ क्षणिक सुखों के पीछे भागता, स्वयं की प्रकृति की समझ से विमुख, पर्यावरण हरण करता मानव कृत्रिम वातावरण की उत्पत्ति के एक चक्रव्यूह में फंस चुका है। मानव कृत्रिम भाव, विचारों, संसाधनों, उपकरणों से घिर गया है और आधुनिक युग की इस जीवनशैली के कारण भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के समक्ष कुछ संकट आ खड़े हुए हैं। यह सभी संघर्ष

अंतर्संबंधित हैं तथा मानव जीवन और समाज, दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इन सभी समस्याओं का उल्लेख निम्न बिंदुओं में है -

1. **पर्यावरण संकट** : पर्यावरण प्रदूषण निश्चित व सीमित संसाधनों का अंधाधुंध प्रयोग सकल विश्व को चुनौती दे रहा है। "फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी तंत्र के पतन, जैव विविधता को नुकसान, जल प्रदूषण, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, हीट वेव, जंगलों की आग, ऊर्जा संकट और फसलों की विफलता" जैसी समस्याएँ विश्व के सभी देशों को प्रभावित कर रही हैं।
2. **आर्थिक संकट** : भोग और ऐश्वर्य की चाह में अविवेकी जन एक दूसरे से श्रेष्ठ दिखने की चाह में स्वयं से ज्यादा समाज और उसकी व्यवस्था का नुकसान कर रहे हैं। "आर्थिक मंदी के कारण बढ़ती बेरोजगारी, बड़े पैमाने पर सार्वजनिक व निजी ऋण अनियंत्रित तकनीकी प्रगति, आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास की कमी जैसी नवीन समस्याएँ समाज की ओर मुँह बाएँ खड़ी हैं। संसाधनों के असमान वितरण के कारण एक बड़ा हिस्सा मूलभूत बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्षरत है तो वहीं एक दूसरा उपेक्षणीय वर्ग इन्हीं संसाधनों का अपने शौक पूरे करने के लिये दुरुपयोग कर रहा है।
3. **स्वास्थ्य पर संकट** : प्रत्येक व्यक्ति का स्वस्थ अस्तित्व शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक समरसता पर निर्भर करता है। विगत वर्षों में नित नए रोग व महामारियों जैसे प्लेग, हैजा, चिकन पॉक्स, स्वाइन फ्लू व कोविड ने समस्त मानव प्रजाति को अचंभित व प्रताड़ित किया है। असंतुलित आहार, भोजन में मिलावट, व्यायाम और परिश्रम की कमी, बढ़ते 'स्क्रीन टाइम' और इसी प्रमादी जीवनचर्या से मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता घट गई है। इसी कारण वह इन व्याधियों, महामारियों से लड़ने और इनके स्थाई उपचार ढूँढ़ने में स्वयं को अक्षम महसूस कर रहा है।
4. **अशांत समाज** : मानव पर आ रही उपरोक्त विपदाएँ, द्वंद्व व अंतर्द्वंद्व एक अशांत समाज की जनक हैं। जीवन निर्वहन के इस आर्थिक संकट से जूझता युवा तनाव व अवसादग्रस्त होकर या तो मादक पदार्थों पर आश्रित हो गया है, या अपने निरर्थक विचारों के कट्टरपन से प्रभावित आतंकवाद की ओर गतिमान हो चला है। प्रभुत्व व वर्चस्व बनाए रखने हेतु आज वैश्विक पटल पर युद्ध की घटनाएँ बहुतायत में हैं। पिछली सदी में हो चुके दो विश्व युद्ध, हाल ही में "यूक्रेन पर छिड़ी जंग एवं इजरायल व हमास का संघर्ष इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।" इन युद्धों के दुष्परिणामस्वरूप सामाजिक एकता नष्ट होने से लेकर नागरिक शांति, इच्छा से प्रवासन, भू-आर्थिक टकराव, और शारिरिक व

मानसिक विमंदता जैसी कई समस्याओं का सामना करता है जिन्हें सरलता से टाला जा सकता था।

5. **शिक्षा** : साक्षरता को लक्ष्य बना पाश्चात्य दार्शनिक मैकाले की शिक्षा प्रणाली से प्रभावित वर्तमान ज्ञान प्रणालियाँ रोजगार उन्मुखी शिक्षा के मार्ग से विमुख हो गई है “केवल अंग्रेजी का ज्ञान ही व्यक्ति को समृद्ध जीवनशैली व श्रेष्ठजीवन स्तर प्रदान कर सकता है”, इस सोच के आधार पर तैयार हो रही भावी पीढ़ी भ्रमित होकर आगे बढ़ने के असफल प्रयास कर रही है जिससे सामाजिक व्यवस्था में क्षरण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता हुआ दिख रहा है। विद्यार्थी रटन्त प्रणाली द्वारा एक पायदान से दूसरे पर जाना तथा अन्ततः एक सरकारी नौकरी प्राप्त करना ही शिक्षा और जीवन का उद्देश्य मानता है। इसी के साथ-साथ विद्यालय सूचना केंद्र एवं शिक्षक सूचना प्रेषक की भूमिका निभा रहे हैं। शिक्षा विभागीय समय सारणी, दी गयी सूचनाओं का अद्यतनीकरण व निर्धारित मापदण्डों तक परिणाम को पहुँचने की दौड़ धूप में लगा रहता है जो उसे शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य से दूर कर देती है। यह शिक्षा पद्धति एकपक्षीय विकास का समर्थन करती है। बालक की रुचि व क्षमता को दरकिनार कर सबको एक ही विषयवस्तु रवाना व उस पर अभिभावकों द्वारा अपनी महत्वाकांक्षा थोपना बालक को मानसिक तनाव एवं अवसादग्रसित बनाता है जिसकी परिणति आत्महत्या तक पहुँचती हैं। “2019 से 2021 के मध्य केवल भारत में ही 35000 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या की है।” विश्व के आँकड़ों की तो चर्चा भी रोंगटे खड़े कर देता है।

“नेल्सन मंडेला ने शिक्षा को बदलाव का सबसे बड़ा शस्त्र कहा है। शिक्षा ही है जो मानव व्यवहार को निश्चित कर समाज की दिशा निर्धारित करती है। आर्थिक विकास और साक्षरता के आयामों के अथवा शेष विकास के आयामों की पुनर्स्थापना हेतु एक वास्तविक ज्ञान प्रणाली के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली एक कारगर उपाय है।” **भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं उसकी प्रासंगिकता/आवश्यकता का विस्तृत विश्लेषण**

**द्वौ भूतसर्गौ लोकेस्मिन् दैव आसुर एव च।**

**दैवो विस्तरशः प्रोक्तः आसुरं पार्थ मे शृणु।।**

इस संसार में दो तरह के, दैव व आसुरी वृत्ति के व्यक्ति हैं। मन की शुद्धता, तप, यज्ञ, स्वाध्याय, त्याग, अनासक्ति, आत्मवत, सर्वभूतेषु की भावना दैव वृत्ति मानव में पाए जाते हैं। दूसरी ओर पाखंड, घमंड, क्रोध, कटुवचन, परनिंदा, अज्ञानता, झूठ, करणीय या अकरणीय का भान न होना, नास्तिकता, स्वयं को श्रेष्ठ मानना, विषयों में रत भौतिक सुख को ही सर्वोपरि रखना, धन प्राप्ति को ही जीवन का सार मानकर किसी भी कार्य को करने में संकोच नहीं करना जैसे अवगुण आसुरी

व्यक्ति में पाए जाते हैं। मानव जन्म इस संसार में दुर्लभ संपत्ति है जिसका प्रमुख उद्देश्य आत्मिक व आध्यात्मिक आदर्शों की प्राप्ति कर मानव कल्याण है।

इसी विचार पर आधारित एक वास्तविक ज्ञानप्रणाली के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती है। प्राचीन काल की शांत और प्राकृतिक जीवनशैली के सिद्धांतों को अभिभूत करती भारतीय ज्ञान प्रणाली कुछ ऐसे अनोखे मगर बहुत ही साधारण समाधान प्रदान करती है जो इस कृत्रिम सदी के प्रकोप से मानव को बचा सकती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को गठित करने वाला हर एक ग्रंथ अलग और अनूठी सीख एवं विचार से बना है, जो समाज की नवीनतम समस्याओं के लिए प्रासंगिक उपाय प्रस्तुत करता है। इस शोध का यह भाग ऐसे ही ग्रंथों और उनके महत्वपूर्ण विचारों की समीक्षा करेगा -

1. **“पंचतंत्र व हितोपदेश** : पंचतंत्र संस्कृत भाषा की सरल, सुबोध, सुग्राह्य मुहावरों से युक्त, विषयानुकूल शब्दावली से निर्मित गद्यात्मक रचना हैं जिसमें नैतिक व उपदेशात्मक शिक्षा का वर्णन पद्यों में किया गया है। इसमें पशु-पक्षियों को माध्यम बनाकर कर्तव्य पालन, उचित अनुचित कार्यों के उपदेश, मित्र रक्षा, वचन पालन जैसे गुणों व छल-कपट, अहंकार, चरित्र हीनता, आदि दोषों का भी वर्णन है। पंचतंत्र की ही तरह हितोपदेश नीतियुक्त कथाओं का चार प्रकरणों में संग्रहित नीति की शिक्षा देने वाला ग्रन्थ हैं। हितकारी उपदेश देने वाला यह ग्रन्थ रोचक कथाओं के माध्यम से लोक व्यवहार, नीति, रीति व राजनीति आदि जैसे कठिन विषयों को तोड़ कर सरलता से प्रस्तुत करता है।”

व्यक्ति के विकास की दिशा उसके बाल वर्ष निर्धारित करते हैं। बचपन से ही पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियों को पढ़ कर वह रुचि के साथ कौशल विकास व नैतिक मूल्यों का ज्ञान सरलता से पा सकते हैं। रोचक व सुंदर कथाओं से बालमन जल्दी सीखता है एवं यह उपदेश उसके मन व मस्तिष्क में स्थायी रूप से अंकित हो जाते हैं।

2. **“योग”** : ‘योगश्चित्त वृत्ति निरोधः’ योग का कार्य की वृत्तियों को नियंत्रित करना है।” भौतिकवाद के कारण आरामदायक जीवनशैली में बढ़ते आलस एवं घटते व्यायाम के कारण मनुष्य पूर्णतः स्वस्थ नहीं है। ऐसे में अपने मानसिक तथा शारीरिक संतुलन को बनाए रखने के लिए पूरा विश्व योग के प्राचीन ज्ञान को अंगीकार कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री के प्रयासों से आज विश्व योग दिवस मनाया जाने लगा है, योग संपूर्ण विश्व के लिए भारत की अमूल्य भेंट है। ‘योग’ संस्कृत शब्द ‘यूज’ से निकला है जिसका अर्थ एकजुट या एकीकृत करना है। योग एक व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक चेतन की एकता है।

“अष्टांग योग यम, नियम, आसन, प्रणायाम, समाधि, चित्त, निरोध, एवं ध्यान को अपनाकर स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मस्तिष्क के साथ मानव को दीर्घायु बनाता है। शुद्ध अंतःकरण व शांत चित्त से ही

वास्तविक प्राप्त सम्भव है और योग इसका श्रेष्ठ साधन हैं, मन की वृत्तियों के बन्धन से मुक्त आत्मज्ञान हेतु योग सर्वोत्तम विद्या है। मन की शुद्धि व निर्मलता हेतु योग आठ प्रकार के अंग बताता है।” पूर्व में उल्लिखित सांसारिक सुख सम्पदाओं की तड़क भड़क में पड़कर मनुष्य पथभ्रष्ट हो जाता है, योग मनुष्य को इस भ्रमजाल से मुक्त करके आत्म ज्ञान के लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करता है। समस्त विश्व इसी ज्ञान की खोज में मन व शरीर की शुद्धि हेतु योग पर आश्रित हो रहा है।

**3. आयुर्वेद या** संस्कृत के दो शब्दों ‘आयु’ तथा ‘वेद’ से बना है एवं ‘जीवन का विज्ञान’ कहा जा सकता है। यह एक परम्परागत समय परीक्षण आधारित चिकित्सा विज्ञान है। मौलिक चिकित्सा पद्धति चक्रक व शल्य चिकित्सा सुश्रुत संहिता से प्रेरित है। प्राचीन समय से चिकित्सा पद्धति रोग मुक्ति व स्वस्थ शरीर और के लिए आदर्श एवं संतुलित जीवनशैली के प्रति समर्पित है। वात, पित्त और कफ, इन तीन दोषों के शरीर में संतुलन पर केंद्रित यह चिकित्सा शास्त्र योग, आसन, प्रणायाम व ध्यान को प्रोत्साहित करता है तथा अवसाद व चिंता से मुक्ति के लिये शिरोधारा, अभ्यंगम, पद्यगम, शिरोभ्यंगम जैसे व्यायाम की सलाह देता है। पंचकर्म द्वारा शरीर शुद्धि करण, श्वास प्रश्वास द्वारा ऑक्सीजन की आपूर्ति, ध्यान द्वारा शांति प्रदान करना इसके प्रमुख उपक्रम हैं। वर्तमान चिकित्सा पद्धति में प्रयुक्त रासायनिक दवाइयों के स्थान पर प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और मौसम के अनुकूल दैनिक मसालों जैसे हल्दी, मिर्च, जीरा, पुदीना, हींग, अदरक, लहसुन, लौंग, तुलसी, काली मिर्च, आदि का उपयोग आयुर्वेद का सिद्धांत है। रामायण महाकाव्य में उल्लिखित संजीवनी बूटी द्वारा लक्ष्मण का पुनः जीवित होना इस तथ्य को परिलक्षित करता है। इसी सिद्धांत के चलते हम आज कोरोना जैसी महामारी से लड़ पाए हैं। प्रवासी भारतीयों द्वारा विदेशों में इन्हीं मसलों के प्रयोग से सर्दी-जुकाम जैसी बीमारियों का बिना किसी दवा के उपचार किया जाता है। आज विश्व के कई देशों ने इस पद्धति पर काम करना प्रारंभ कर दिया है। आयुर्वेद का गहन अध्ययन कई असाध्य रोगों के उपचार ढूँढ़ने में हमारी सहायता कर सकते हैं।

**4. वेद-उपनिषद :** वेद और उपनिषद को भारतीय ज्ञान का सबसे अग्रिम स्रोत माना गया है। स्व एवं समाज गूढ़ विचारों से भरे ये दोनों विद्या के कोष भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रमुख भाग हैं। “आध्यात्म अंग, श्रवण, मनन, निदिध्यासन हैं, जिनकी विद्या हेतु उपनिषद, वेदांत व गीता का अध्ययन आवश्यक है।”

“वेद मनुष्य के धार्मिक और दार्शनिक विचारों का मानव भाषा मे प्रथम परिचय प्रस्तुत करता है। प्राचीन इतिहास सामाजिक नियम, सदाचार, दर्शन, कला, धर्म, आदि ज्ञान का आधार वेद हैं। लौकिक-अलौकिक विषयों के ज्ञान से परिपूर्ण वेद श्रुति भी कहलाते हैं।”

“ज्ञान, कर्म, भक्ति तथा विज्ञान के समन्वित ग्रन्थ वेद यज्ञधारित

हैं। यज्ञ इस वायुमंडल को शुद्ध व परिष्कृत करने के, वर्षा द्वारा अन्न प्राप्ति तथा सृष्टि चक्र के संचालन में सहायक होते हैं। आधुनिक विज्ञान की सृष्टि चक्र में पंचभूत की संकल्पना वेदों में हजारों वर्ष पूर्व ही सन्निहित कर दी गई थी। जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि वैदिक रही है” जो आज तक प्रासंगिक हैं। ऋग्वेद की ऋचाओं में प्रकृति की स्तुति ईश्वर-रूपेण की गई है। समाज की रीति-नीति की समझ एवं आध्यात्म की और जीवन की दिशा वेदों के अध्ययन से संभव है।

“उपनिषद् अर्थात् व्यवधान रहित सर्वांग पूर्ण ज्ञान। धर्मगुरु विवेकानंद ने एक भाषण में कहा था, “मैं उपनिषदों को पढ़ता हूँ तो मेरे आँसू बहने लगते हैं यह कितना महान ज्ञान है। हमारे लिए आवश्यक है कि उपनिषदों से सन्निहित तेजस्विता को अपने जीवन में विशेष रूप से धारण करें।” उनमें ऐसी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं जो सम्पूर्ण विश्व को बल, शौर्य और नवजीवन प्रदान कर सकती हैं। शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वाधीनता ही उपनिषद् का मूल मंत्र है। ‘अहम ब्रह्मास्मि’ अर्थात् ‘मैं ही ब्रह्म हूँ’ उपनिषदों का सार है। स्वयं को समझने को उपनिषदों में बहुत उच्च स्थान पर रखा गया है। आज का युवा जो अपनी पहचान की खोज में बाह्य भौतिक मार्गों में भटक रहा है, उपनिषद् उसे स्वयं के अंदर जा कर अपनी विलुप्त होती पहचान को खोजने का मार्ग दिखा सकते हैं।

**5. गीता :** “दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुर” भगवत गीता में कहा गया है कि मानव जन्म इस संसार मे दुर्लभ संपदा है, अतः इस जीवन का उद्देश्य आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति है। लोकमान्य तिलक अनुसार गीता एक तेजस्वी व अमूल्य रत्न है जो दुखी प्राणी को शांति प्रदान करता है। यह कर्म, भक्ति तथा ज्ञान मार्गों के योग का शास्त्र है। कर्म योग की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता सर्वाधिक है, कर्तव्य पथ से विमुख समाज को इसके माध्यम से कर्म में प्रवृत्त करना सुगम होगा। यह वर्ण कठिन है किंतु मानव बिना कर्म किये नहीं रह सकता है और इसीलिए कर्म करने का उचित मार्ग जानना भी आवश्यक है।

“सुख-दुःखे समे कृत्वा लाभातभौ जयाजयौ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैव पापमवाप्स्यसि।।”

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि “सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय को समान समझ कर युद्ध करो।”

निष्काम कर्म स्वकर्म है, स्वकर्म ही स्वधर्म है, और इसी स्वकर्म या स्वधर्म में संलग्न मनुष्य ही सिद्धी प्राप्त करता है।

**6. भारतीय ज्योतिष :** “ज्योतिष के पंचस्कंधों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आज के मनोविज्ञान, जीव, रसायन, भौतिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, अंक गणित, रेखा गणित, भूगोल, आदि इसी में समाहित हैं। त्रुटि से कल्प तक की काल गणना, सौर, चन्द्र मास, ग्रहगतियों का निरूपण, मंगल कार्यों के मुहूर्त, उल्का पात, वृष्टि, ग्रहों व ग्रहण फल का विस्तृत उल्लेख मिलता है। दार्शनिक अल बरूनी ने लिखा है कि

“ज्योतिष शास्त्र में हिन्दू लोग संसार की सभी जातियों से बढ़कर हैं। मैंने अनेक भाषाओं के अंकों के नाम सीखे हैं, पर किसी जाति में भी हजार से आगे की संख्या के लिए मुझे कोई नाम नहीं मिला। हिंदुओं में अठारह अंकों तक की संख्या के लिए नाम है, जिनमें अंतिम संख्या का नाम परार्ध बताया गया है। मानव शरीर अनेक परमाणुओं से निर्मित है और आधुनिक वैज्ञानिक प्रत्येक वस्तु की आंतरिक रचना सौर मंडल से मिलती-जुलती बताते हैं, चूंकि प्रत्येक सूक्ष्म रचना का आधार परमाणु हैं तो मानव शरीर में सौरमण्डल हैं जो बाहरी सौरमण्डल के ग्रहों के प्रतीक हैं। मानव व्यवहार की समस्त क्रियाएँ जैसे दिन, सप्ताह, पखवाड़ा, महीने, अयन, वर्ष, ऋतुएँ, उत्सव, तथा तिथियों का ज्ञान ज्योतिष में ही समाहित है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी ज्योतिष मानव समाज का अभिन्न अंग है जैसे किसान भी फसल बौने के सही समय व वर्षा नक्षत्रों को भली-भांति जानता है, समुद्री जहाजों की दिशा, नवीन देशों की खोज, रेगिस्तान में रास्तों की जानकारी, अक्षांश व देशांतर के आधार पर सीमा ज्ञान, अन्वेषण, इतिहास तथा आयुर्वेद में ग्रहों के स्वभाव व तत्त्व के आधार पर औषधि निर्माण आदि जीवनोपयोगी क्रिया-प्रक्रियाओं में ज्योतिष का अभूतपूर्व योगदान रहा है जिसे नकारा नहीं जा सकता। ज्योतिष भारतीय ज्ञान प्रणाली के अमूल्य निधि में से एक रत्न है जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ बढ़ती जा रही है।

उपरोक्त सभी ग्रंथों की समीक्षा वृहद भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक बहुत छोटा भाग है। वर्तमान समाज की नवीन समस्याओं के हल हमारे प्राचीन ग्रंथों की दैनिक सीखों में छुपे हैं। सामाजिक सरंचना को विकीर्ण होने से बचाने का और कृत्रिमता के इस चक्रव्यूह से निकलने का मार्ग भारतीय ज्ञान प्रणाली के मध्य से जाता है।

### निष्कर्ष

युग की इस कृत्रिम जीवन शैली में असीमित इच्छाओं, विषयों, और ऐश्वर्य के पीछे भागते-भागते मनुष्य प्रमुख उद्देश्य भूल गया है। वर्तमान समाज के खोखलेपन में तार-तार होते मानवीय रिश्ते, मूल्यों का पतन, लुप्त होती संवेदना, भावशून्यता, विषयों के प्रति आसक्त मानव आभासी संसार में गोते लगाते हुए खुद को श्रेष्ठ साबित करने की दौड़ में लगा हुआ है। इस कृत्रिम व आभासी समाज में आज अशांति व जटिलता ने घर कर लिया है। व्यक्ति व समाज का भौतिक विकास तो चरम पर है किंतु मानसिक, शारीरिक, आधात्मिक तथा भावनात्मक विकास गौण हो गए हैं जिससे एक विकृत समाज बन रहा है। ऐसे में ज्ञान ही एक ऐसा मार्ग है जो इस अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकता है। प्रस्तुत शोध से यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली इस कृत्रिमता के जाल को काट कर एक वास्तविक जीवन उद्देश्य रूपी सतह तक पहुँचने का सबसे उत्तम साधन है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में सृजित साहित्य व ज्ञानकोष में आज की आवश्यकता अनुसार प्रत्येक विषय की जानकारी उपलब्ध है, जिनके माध्यम से बालक को

आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति, नैतिक मूल्य की शिक्षा, आधुनिक विज्ञान, गणितीय ज्ञान, योग, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति, कर्म योग, पंचभूतों की स्तुति, ज्योतिष, के साथ ‘स्व’ का बोध कराने में सक्षम है। आज के युग में जिस वास्तविक ज्ञान की आवश्यकता है वह भारतीय ज्ञान प्रणाली ही प्रदान कर सकती है।

### संदर्भ सूची

1. PAL WORLD TIMES वसुधैव कुटुम्बकम्, जय-जगत (Jul.17. 2020)
2. डेनियल फिलिपेंको (11, जनवरी 2024) DEVELOPMENT AID विश्व की 10 शीर्ष समस्याएँ एवं उनके समाधान।
3. TIME, वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2023(13 जन, 2023), नई चिन्ताओं की पृष्ठभूमि में पुराने जोखिमों की वापसी
4. THE TIMES OF INDIA, (NCRB) TIMES OF INDIA.COM (PTI, Dec. 2023) केन्द्रीय मंत्री अभय नारायण स्वामी द्वारा लोकसभा में डाटा शेयर, नई दिल्ली
5. INDIAN SYSTEM OF MEDICINE, GOVT. OF KERALA (31 मई 2023) आयुर्वेद के बारे में
6. पं. काशीनाथ शास्त्री डॉ. गोरख नाथ शास्त्रीए चरक संहिता प्रथम भाग चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी पृ.13
7. श्री गुरुप्रसाद शास्त्री एवं आचार्य सीताराम शास्त्री(2016), चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, श्री विष्णु शर्मा विरचितम पंचतंत्रम (2008) पृ. 14,15 हितोपदेश (2008) पृ. 6,7
8. सतीशचंद्र चट्टोपाध्याय एवं धीरेन्द्र मोहन दत्त, पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाउस पटना द्वारा प्रकाशित ‘भारतीयदर्शन’ (2009) के भाग
1. योग दर्शन पृ.280, 281, 283, 287
2. भारतीय दर्शन की पृ.24, 25, 26, 27, 28
3. श्रीमद्भगवद् गीता का अर्थ पृ. 35, 36, 37, 38
9. डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित भारतीय ज्योतिष (2012, 49वां संस्करण) पृ.18, 19, 20, 24, 27, 29, 31, 32
10. वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान बरेली द्वारा प्रकाशित 108 उपनिषद ज्ञानखण्ड (2017) पृ. 7, 8,9 वृहदारण्यक उपनिषद 1.4.10
11. जयदयाल गोयन्दका (सं. 2072, 96 वां संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता, तत्व विवेचनी हिन्दी टीका, गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित अध्याय 2.38.91 , अध्याय 16.6.676 , अध्याय 18.45.762

# विवाह संस्था के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ : महिला सशक्तीकरण के लिए घातक

□ सुश्री कौशिकी त्रिवेदी

## प्रस्तावना

विवाह दो लोगों के मध्य सामाजिक अथवा धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन है जो न सिर्फ उन दो लोगों के बीच बल्कि उनसे जुड़े उनके परिजनों के मध्य दायित्वों और अधिकारों को भी स्थापित करता है। हिन्दू धर्म में सम्मिलित 16 संस्कारों में से एक संस्कार विवाह का होता है। विवाह का शाब्दिक अर्थ है विशेष रूप से वहन करना। अर्थात् वधू को वर के घर ले जाना। हिन्दुओं में विवाह संस्था विश्व के अन्य समाजों में पाये जाने वाले विवाहों से अत्यधिक भिन्न है, क्योंकि हिन्दुओं में विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दुओं में चार पुरुषार्थ की व्यवस्था की गई है- धर्म, अर्थ, काम मोक्ष। जिनकी पूर्ति गृहस्थाश्रम में ही संभव है।

## परिभाषाएँ

**आर.एन. सक्सेना के अनुसार-** “हिन्दू विवाह के परिभाषा एक संस्कार के रूप में की जा सकती है। इसमें स्त्री और पुरुष भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त अर्थसंगत ढंग से संतानोत्पत्ति एवं यौन संतुष्टि के लिए स्थायी सम्बंध में बंध जाते हैं।”

**जॉनसन के अनुसार -** “विवाह के सम्बंध में अनिवार्य बात यह है कि यह एक स्थायी सम्बंध है जिसमें एक पुरुष और एक स्त्री समुदाय में अपनी प्रतिष्ठा को खोये बिना संतान उत्पन्न करने की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करते हैं।”

हिन्दुओं में विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में स्वीकार किया गया है, परन्तु आधुनिक समाज में हिन्दू विवाह के नये प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं। परिवर्तन के इस दौर में पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हमारे वर्तमान समाज की युवा पीढ़ी विवाह की अनिवार्यता के स्थान पर “लिव-इन-रिलेशनशिप” जैसे रिश्तों को महत्त्व दे रहे हैं। समकालीन समय में विवाह नामक संस्था परिवार में संतान की उत्पत्ति के साथ-साथ उसके विकास क्रम का आधार है तथा समलैंगिक विवाह व लिव-इन-रिलेशनशिप के पक्ष में मान्यताएँ व अभियान विवाह के आधार पर महिलाओं को मिलने वाले अधिकारों को प्रभावित करते हैं।

## लिव-इन रिलेशनशिप

लिव-इन रिलेशनशिप, जिसे सहवास के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी व्यवस्था को संदर्भित करता है जहाँ दो व्यक्ति जो एक-दूसरे के साथ जुड़े के, बिना शादी किए एक साथ रहते हैं और एक दूसरे को शारीरिक और भावनात्मक समर्थन देते हैं। लिव-इन रिलेशनशिप में, जोड़े को विवाह की कानूनी बाध्यताओं और औपचारिकताओं के बिना एक साथ रहने का लाभ मिलता है। इसमें एक साथ निर्णय लेना, घरेलू काम और जिम्मेदारियाँ साझा करना और दूसरों के हस्तक्षेप के बिना अपनी जीवनशैली और गतिविधियों को चुनने की स्वतंत्रता शामिल है।

किन्तु भारतीय कानून के तहत लिव-इन रिश्तों को कानूनी रूप से एक वैध संघ के रूप में मान्यता नहीं दी गई है और इसलिए ऐसे रिश्तों में जोड़ों के पास विवाहित जोड़ों के समान कानूनी अधिकार नहीं हैं। हालाँकि, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कुछ अधिकारों को मान्यता देते हुए यह बताया है कि बिना शादी किए पार्टनर के रूप में एक साथ रहना गैरकानूनी या आपराधिक नहीं है।

शहरी क्षेत्रों में बिना शादी किए रिश्ते में पति-पत्नी के रूप में एक साथ रहना तेजी से बढ़ रहा है। दोनों पार्टनर एक साथ रहना आसान मानते हैं क्योंकि वे अपने कंधों से जिम्मेदारी का बोझ उतार देते हैं। महिलाएँ अक्सर ऐसे अस्थिर रिश्ते में पीड़ित पक्ष होती हैं। इस ‘आजादी’ का उपयोग करने वालों के लिए यह आवश्यक है कि वो समझे कि इस तरह की व्यवस्था में जोड़ीदारों को एक दूसरे पर कोई अधिकार नहीं होता है जब वे ‘लिव इन रिलेशनशिप’ में हैं। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने लिव-इन संबंधों से उत्पन्न अपराधों की वृद्धि को देखते हुए कहा कि यह भारतीय समाज के लोकाचार को निगल रहा है। तीव्र कामुक व्यवहार और व्यभिचार इन संबंधों में बढ़ रहे हैं, जिससे यौन अपराधों में लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसे रिश्ते नाजुक होते हैं और किसी भी समय खत्म हो सकते हैं; इनमें कोई बाध्यता या बंधन नहीं होता, और लिव इन संबंधों की कानूनी स्थिति बहुत हद तक स्पष्ट नहीं दिखाती है।

लिव-इन-रिलेशनशिप, इस तथ्य के बावजूद कि वे भारत में अधिक प्रचलित हो रहे हैं, महिलाओं के लिए उनकी सुरक्षा के मामले में विशेष कठिनाइयाँ पैदा कर सकते हैं। कानूनी मान्यता की कमी और इन रिश्तों से जुड़ा कलंक महिलाओं को विभिन्न प्रकार के शोषण और दुर्व्यवहार के प्रति संवेदनशील बना सकता है। भारत में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाली महिलाओं को जिन सबसे महत्वपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है उनमें से कुछ की सूची निम्नलिखित है -

### आर्थिक रूप से अपने पार्टनर पर निर्भरता

कई मामलों में, जो महिलाएँ लिव-इन रिलेशनशिप में रहती हैं, वे आर्थिक रूप से अपने पार्टनर पर निर्भर हो सकती हैं। यह विशेष रूप से सच है यदि उन्होंने गृहिणी बनने के लिए अपना रोजगार छोड़ दिया है या अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है। उनकी निर्भरता के कारण, उनका आर्थिक रूप से शोषण और नियंत्रण होने की आशंका रहती है।

विवाह के विपरीत, लिव-इन रिलेशनशिप जोड़े को भारतीय कानून में वो सभी अधिकार नहीं प्राप्त है जो एक विवाहित जोड़े को मिले हुए हैं। कानूनी सुरक्षा का उस कदर अभाव एक महत्वपूर्ण नुकसान है। साझेदारी समाप्त होने की स्थिति में, यह इंगित करता है कि संपत्ति, विरासत के अधिकार, या बच्चे की हिरासत संबंधी चिंताओं के संबंध में असहमति की स्थिति में महिलाओं के पास कोई कानूनी विकल्प उपलब्ध नहीं है।

### सामाजिक कलंक

भारतीय समाज में, लिव-इन रिश्तों को अक्सर संदेह और घृणा की दृष्टि से देखा जाता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों और समुदायों में। दूसरों से अलगाव, सामाजिक बहिष्कार, और यहाँ तक कि किसी के परिवार और समुदाय के सदस्यों से मौखिक या शारीरिक दुर्व्यवहार भी इस स्थिति के संभावित परिणाम हैं।

### घरेलू दुर्व्यवहार

जो महिलाएँ लिव-इन-रिलेशनशिप में हैं, उन्हें घरेलू हिंसा का सामना करने की उतनी ही संभावना है जितनी कि वैवाहिक जीवन में रहने वाली महिलाओं को। हालाँकि, यह तथ्य कि उन्हें कानून द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है और समाज से समर्थन नहीं मिलता है, व्यक्तियों के लिए सहायता माँगना या हिंसक रिश्तों से भागना अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

### भावनात्मक हेरफेर और नियंत्रण

कुछ पार्टनर अपने पार्टनर पर भावनात्मक नियंत्रण स्थापित करने के लिए लिव-इन संबंधों में कानूनी ढाँचे की अनुपस्थिति का उपयोग कर सकते हैं। इसमें उनके पार्टनर को उनके दोस्तों और परिवार से अलग करना, साथ ही उनकी आवाजाही और संचार की स्वतंत्रता को

प्रतिबंधित करना शामिल हो सकता है।

### प्रतिबद्धता का अभाव

एक अतिरिक्त नुकसान जिसे जीवित संबंधों के संदर्भ में संबोधित किया जा सकता है वह पार्टनर के प्रति प्रतिबद्धता की कमी है। संभव है कि यह परिस्थिति कुछ जोड़ों के लिए अनुकूल हो; फिर भी, यदि पार्टनर अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा नहीं कर रहा है, तो यह रिश्ते के लिए सबसे हानिकारक परिस्थिति हो सकती है।

### परिवारों से कोई सहयोग नहीं

इस प्रकार की साझेदारियों का सबसे महत्वपूर्ण दोष यह है कि उन्हें अधिकतर अपने परिवार और दोस्तों से समर्थन नहीं मिलता है। इसके परिणामस्वरूप जोड़े को अत्यधिक भावनात्मक पीड़ा का अनुभव होता है, और कई बार यही चीज उनके रिश्ते के टूटने का कारण बनती है।

भारत में लिव-इन पार्टनरशिप में जन्म लेने वाले बच्चों को आज कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

### बच्चों की स्थिति

दूसरी ओर, लिव-इन-रिलेशनशिप के परिणामस्वरूप पैदा होने वाले बच्चों की स्थिति एक और नकारात्मक बात है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस तथ्य के बावजूद कि अदालत ऐसे रिश्तों से पैदा हुए बच्चों को वास्तविक मानती है, अध्ययनों से पता चला है कि ऐसे रिश्तों से बच्चे मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं और उन्हें उस बचपन का आनंद लेने का अवसर नहीं मिलता है जिसका हर बच्चा हकदार है।

ऐसी कई चुनौतियाँ हैं जो भारत में लिव-इन जोड़ों में पैदा होने वाले बच्चों के लिए विशिष्ट हैं, इस तथ्य के बावजूद कि देश में लिव-इन पार्टनरशिप आम होती जा रही है। यह इस तथ्य के कारण है कि कानून इन यूनियनों को मान्यता नहीं देता है। निम्नलिखित चार बुनियादी श्रेणियों की सूची है जिनका उपयोग इन चुनौतियों को वर्गीकृत करने के लिए किया जा सकता है।

### सामाजिक एवं कानूनी क्षेत्रों में अस्पष्टता की उपस्थिति

विशेष रूप से उन स्थितियों में जिनमें शामिल लोगों के बीच संबंध समाप्त हो गए हैं, पितृत्व स्थापित करने की प्रक्रिया कठिन और विवादास्पद हो सकती है। परिणामस्वरूप, बच्चे विरासत के अधिकार, सामाजिक सुरक्षा के संबंध में खुद को अनिश्चित स्थिति में पा सकते हैं।

अपने रिश्तेदारों, सहपाठियों और यहाँ तक कि स्कूलों और सरकारी संगठनों जैसी सामाजिक संस्थाओं से सामाजिक कलंक और पूर्वाग्रह का शिकार होने के अलावा, जो बच्चे लिव-इन जोड़ों में पैदा

होते हैं, उन्हें भी सामाजिक कलंक और पूर्वाग्रह का शिकार होना पड़ सकता है। संभव है कि इसके कारण व्यक्ति को अपमान, अकेलेपन और आक्रामकता की भावनाओं का अनुभव होगा।

इन सभी तथ्यों के बावजूद, भारत में युवा लोगों में लिव इन रिलेशनशिप की लोकप्रियता बढ़ रही है। शायद इसलिए भी क्योंकि यह जाति, वर्ग, धर्म और नस्ल को छोड़कर संबंधों को मान्यता देता है। हालाँकि शुरू में परस्पर आकर्षण और समझौता से शुरू होने वाले ये अंतरंग संबंध बाद में निरंतर झगड़े और यौन शोषण में बदल जाते हैं।

हाल ही में पुलिस महिला सुरक्षा शाखा द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि वर्ष 2019, 2020 व 2021 में मध्यप्रदेश में रहने वाली युवतियों ने सबसे अधिक रेप के मामले दर्ज कराए हैं। इस अवधि में 14 हजार 476 बलात्कार के मामले दर्ज हुए, इनमें से 85 प्रतिशत लिव इन रिलेशनशिप से संबंधित थे। इनमें से सभी आरोपी प्रेमी थे। केवल दो प्रतिशत मामलों में आरोपी अजनबी था।

### समलैंगिक विवाह

समलैंगिक विवाह दो समान लिंग (पुरुष-पुरुष और महिला-महिला) के बीच शादी है और यह भारत में मान्यता प्राप्त विवाह नहीं है। हालाँकि मौलिक अधिकार के रूप में इसकी मान्यता केवल भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णयों के माध्यम से विकसित हुई है। भारतीय समाज हमेशा से एक मर्यादित मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज रहा है जहाँ पर संतो नोत्पत्ति विवाह का एक प्रमुख उद्देश्य है। परन्तु समलैंगिक विवाह जैसी व्यवस्था में इस उद्देश्य की प्राकृतिक रूप से पूर्ति होना सिर्फ एक कल्पना मात्र रह जाएगा।

वहीं अगर दूसरी तरफ समलैंगिक विवाह पर विचार करें तो समलैंगिक विवाह पारंपरिक सांस्कृतिक नीतियों से भटकता है और विवाह संस्कृति को चुनौती प्रदान करता है। भारतीय समाज में, विवाह को सांस्कृतिक, धार्मिक, और पारिवारिक परंपराओं में गहराई से निहित किया गया है, जिसमें विषम लैंगिक संबंधों पर ही जोर दिया गया है। अतः कहीं ना कहीं इस समलैंगिक विवाह को स्वीकृति देना हमारे प्राचीन मूल्यों पर हमला है।

भारतीय साहित्य में विवाह को पुरुष और स्त्री के बीच एक संबंध के रूप में परिभाषित करने वाले धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं से गहरे रूप से जोड़ा गया है, और इसके अनुयायियों ने इसे एक पुराने धार्मिक बुनियाद का हिस्सा माना है तथा वे यह तर्क करते हैं कि समलैंगिक विवाह को समर्थन देना इन पवित्र सिद्धांतों के खिलाफ है, जिससे सामाजिक अवस्था को संघर्ष की अवस्था में लाया जा सकता है।

इसके अलावा, समलैंगिक विवाह के कारण परिवार की संरचना पर पड़ने वाला प्रभाव भी एक चिंता का विषय है। पारंपरिक परिवार इकाई, जो अक्सर विस्तारित और बहुपीढ़ीय होती है, भारतीय समाज का कोना है, समलैंगिक जोड़ों को विवाह करने की अनुमति देना इन स्थापित परिवार गतिविधियों को अशांति में डाल सकता है, जिससे सामाजिक अस्थिरता हो सकती है। भारतीय समाज की परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए आवश्यक है कि पारंपरिक मूल्यों, धार्मिक सिद्धांतों, और पारिवारिक संरचनाओं को महत्व को भलीभांति समझा जाए।

समलैंगिक विवाह जहाँ एक तरफ दो व्यक्ति को उनकी मर्जी से अपना हमसफर चुनने की आजादी देता है वहीं कुछ गम्भीर प्रश्नों को भी खड़ा करता है जिनमें से प्रमुख है -

### पारंपरिक मूल्य व पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाएँ

स्थिरता बनाए रखने और समाज व्यवस्था बनाए रखने के लिए, पारंपरिक पारिवारिक संरचनाएँ, जिनमें परिभाषित लिंग भूमिकाएँ शामिल हैं, हितकर हैं। एक ही लिंग के लोगों के बीच विवाह इन पारंपरिक मूल्यों के लिए खतरा पैदा करता है, जिसका स्थापित लिंग भूमिकाओं और परिवार की गतिशीलता पर प्रभाव पड़ सकता है।

### प्रजनन

कुछ लोगों का कहना है कि विवाह का मुख्य उद्देश्य प्रजनन है, क्योंकि समान-लिंग वाले जोड़े जैविक रूप से बच्चे नहीं सकते। यही कारण है कि वे समलैंगिक विवाह की अनुमति नहीं देना चाहते क्योंकि यह दुनिया की प्राकृतिक व्यवस्था के खिलाफ है।

### धार्मिक मान्यताएँ

धार्मिक शिक्षाएँ विशेष लिंग भूमिकाओं को प्रोत्साहित करती हैं, और समान लिंग के लोगों के बीच विवाह का समर्थन करना इन मूल्यों के विरुद्ध है।

### जैविक पितृत्व की अवधारणा

बच्चों को माँ और पिता दोनों होने से सर्वोत्तम लाभ मिलता है। समान-लिंग वाले जोड़े समान स्तर का सामंजस्य और दृष्टिकोण की विविधता प्रदान करने में असमर्थ हैं जो एक पारंपरिक परिवार प्रदान कर सकता है।

### सामाजिक स्थिरता स्थापित करना

विवाह की परिभाषा बदलने से समाज की सामाजिक संरचनाओं और स्थिरता पर अप्रत्याशित प्रभाव पड़ सकता है।

समलैंगिक विवाहों को कानूनी मान्यता देने से गोद लेने, तलाक, भरण-पोषण, विरासत आदि से जुड़े मुद्दों में बहुत सारी जटिलताएँ पैदा होंगी। इन मामलों में बहुत सारी जटिलताएँ उत्पन्न होंगी। इन



मामलों में लागू सभी कानूनों का आधार पुरुष और महिला का विवाह है।

#### निष्कर्ष:

समकालीन समाज में विवाह संस्था में धीरे-धीरे कई परिवर्तन हो रहे हैं। यह परिवर्तन न केवल पति-पत्नी से सम्बन्धित है बल्कि परिवार तथा समाज पर भी प्रभाव डाल रहे हैं। विवाह के प्रति आज की पीढ़ी के बदलते दृष्टिकोण में विवाह संस्था से जुड़े काफी लक्षणों को बदल दिया है जैसे- हमारे भारतीय परम्परा में उल्लिखित विवाह के उद्देश्य, विधि-विधान व सबसे महत्वपूर्ण विषम लैंगिक विवाह के स्थान पर समलैंगिक विवाह। यह परिवर्तन होना लाजमी है, क्योंकि आज की हमारी पीढ़ी की विचारधाराओं पर पश्चिमीकरण आधुनिक शिक्षा, वैश्वकरण व मीडिया का अत्यधिक प्रभाव है। विवाह संस्था धार्मिक संस्कार से एक कानूनी और सामाजिक समझौता बनता जा रहा है। इस विवाह संस्था पर किसी भी प्रकार का आघात महिलाओं की स्थिति पर विशेष कर प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित करेगा। भारतीय विवाह में बदलते वैवाहिक प्रतिमान के अध्ययन के दौरान वैवाहिक मापदण्ड व हिन्दू विवाह व्यवस्था का विघटन होता प्रतीत हो रहा है। अतः यही समय है जब हम पाश्चात्य सभ्यता व अंग्रेजी शिक्षा को महत्व न देकर भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे ले जाना चाहिए तथा विवाह की संस्था को पहले से और मजबूत व सशक्त करने में योगदान देना चाहिए।

#### सन्दर्भ सूची

1. सक्सेना, आर.एन., (1968), " भारतीय समाज एवं सामाजिक संस्थाएँ", पुस्तक महल, आगरा, पृ.स. 22-23
2. साहू किशोरी प्रसाद, (1987) "इस्लाम" उद्भव और विकास", बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना
3. कपाड़िया, के.एम., (1955) "रूरल फैमिली पर्टन्स सोशियोलॉजिकल बुलेटिन
4. कैडवेल, जे., (1992) "दक्षिण भारत में विवाह के कारण बदलते हैं", जनसंख्या अध्ययन 3 : 343-361
5. कोलेंडा, पी. (1987)। भारत में पारिवारिक संरचना में क्षेत्रीय अंतर। जयपुर, भारतरू रावत प्रकाशन।
6. मिलर, बी.डी. 1980. "महिला उपेक्षा और ग्रामीण भारत में विवाह की लागत"। आई एन समाज कल्याण 14 : 95-129
7. सेनगुप्ता, एन. (1967), हिंदू विवाह का विकास, लोकप्रिय प्रकाशन, बॉम्बे
8. सिन्हा, डी. (1984), भारतीय परिवार में कुछ हालिया बदलाव और समाजीकरण पर उनके प्रभाव। आईजेसामाजिक कार्य, 45 : 271-285
9. सोनावत आर. (2008), अंडरस्टैंडिंग फैमिलीज़ इन इंडिया: ए रिफ्लेक्शन ऑफ सोसाइटील चेंजेस, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, बॉम्बे, भारत

असि. प्रोफेसर- विधि विभाग  
वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर।

# विश्व में हिन्दी की दशा एवं दिशा

□ कमलेश कुमार जोशी

वाणी का विधान भाषा है। भाषा हमारे सवेगों का वाहक है। विधान से वाणी का वरदान मानव को ही मिला है। मनुष्य अपने जन्म के पश्चात अपने माता-पिता और परिवार से ही बोलना सीखता है। इस अर्थ में हमारी मातृभाषा ही हमारे भाव और विचारों को आत्मीयता के साथ व्यक्त करती है। हिन्दी भाषा का उद्भवकाल अत्यन्त प्राचीन है। कुछ विद्वान इस का प्रारम्भ सातवीं शताब्दी मानते हैं तो कुछ दसवीं शताब्दी। हिन्दी के प्रारम्भिक युग को आदिकाल कहा गया। इस युग में अपभ्रंश, डिंगल, पिंगल, मैथिली, खड़ी बोली आदि भाषाओं का विकास हुआ। इन सभी कालों में हिन्दी का निरन्तर विकास होता गया।

भारत की भारती, यानि हिन्दी भारत की आत्मा है। हिन्दी के माध्यम से भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, नैतिक चिन्तन, सार्वभौमिक दर्शन, ज्ञान-विज्ञान का अन्वेषी मंथन किया जाता रहा है। भाषा की इस परम्परा ने हजारों वर्षों से भारत के विभिन्न प्रान्तों, धर्मों, सम्प्रदायों एवं भाषाई प्रयोगों की बहुरूपता को एकताबद्ध किया है। भावाभिव्यंजना क्षमता, निरन्तर परिवर्तन और विकास ने भाषा की जीवन शैली को तय किया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें, तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर होती है। विदेशों में हिन्दी के लोकप्रिय होने का मुख्य कारण है, भारतीय दर्शन, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति में लोगों की रुचि। दूसरा कारण यह है कि जहाँ भी भारतीय गये हैं वहाँ हिन्दी को अपने साथ लेकर गये हैं। चीन, जापान, थाईलैण्ड आदि एशियाई देशों में बौद्ध-धर्म के प्रचार-प्रसार के कारण हिन्दी की लोकप्रियता ने विश्व में एक वृहत स्वरूप धारण किया है। अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन सतत् जारी है। हिन्दी वैश्विक स्तर पर हर क्षेत्र में आगे बढ़ आई है। हिन्दी जिस गति से आगे बढ़ रही है, उसे देख कर कहा जा सकता है कि निकट भविष्य में यह दुनिया में सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा मान ली जायेगी।

भाव विचार तथा भावों के आदान-प्रदान का सर्वश्रेष्ठ माध्यम

है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा सामाजिक सम्पत्ति है। कोई भी बालक किसी भी भाषा को सीखकर जन्म नहीं लेता है, अपितु जिस समाज में जन्म लेकर वह बड़ा होता है, उसी समाज की भाषा को सीखता है। भाषा में, सतत् विकास होता रहता है अथवा हम कह सकते हैं कि मानव समाज के विकास के साथ-साथ भाषा में भी परिवर्तन होता रहा है। आज से सौ वर्ष पूर्व हिन्दी जैसी समझी और बोली जाती थी वैसी आज नहीं बोली जाती। भाषा एक सामाजिक सम्पत्ति है। इसका उतरोत्तर विकास होता रहता है। इस पर किसी व्यक्ति, जाति और सम्प्रदाय का अधिकार नहीं होता है। इस पर सबका अधिकार होता है। भाषा मनुष्य द्वारा अर्जित और विकसित निधि है। जिस प्रकार प्राणी वायु और जल के बिना जीवित नहीं रह सकता है उसी प्रकार भाषा भी हमारी नैसर्गिक आवश्यकता बन गई है।

भावाभिव्यक्ति के सन्दर्भ में विश्व की सभी भाषाएँ सामान्यतः समान होती हैं। वस्तुतः भाषा ही सम्प्रेषण का प्रमुख माध्यम है। भाषा की गतिशीलता का सम्बन्ध हमारे सामाजिक व्यवहार से जुड़ा होता है। इसलिए एक ओर भाषा का एक रूप स्थिर है तो दूसरा रूप परिवर्तित।

यूरोप के अधिकांश समाजवादी देशों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था भारत सरकार तथा इन देशों के सरकारों के बीच विभिन्न सांस्कृतिक विनिमय समझौता के एक अंग के रूप में की जाती है। समय-समय पर भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् भारत की ओर से इन देशों में एक भारतीय हिन्दी प्रोफेसर हिन्दी अध्यापन के लिए भेजा जाता है। रोमानिया, बुल्गारिया और पूर्वी जर्मनी में इसी प्रकार की व्यवस्था है। रूस, चेकोस्लोवाकिया तथा हंगरी के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन का कार्य लगभग पूरी तरह से स्थानीय हिन्दी प्राध्यापकों द्वारा संचालित किया जाता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी भाषा के प्रति निरन्तर सहयोग एवं भारतीयता के प्रति अनुराग का परिचय दिया। महात्मा गाँधी ने अपने संघर्ष की शुरुआत प्रवासी अफ्रीकी लोगों के बीच शुरू की। हमारे देश के युवाशक्ति के प्रतीक सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्दी फौज तथा आजाद हिन्दी सरकार की स्थापना दक्षिण पूर्व एशिया में की थी। इन दोनों

महापुरुषों ने हिन्दी भाषा को बढ़ावा दिया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो जो प्रवासी भारतीय हैं, विदेशों में, अब वापस आपस में मिलते हैं तो टूटी-फूटी हिन्दी में ही बातचीत करते हैं। कनाडा, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन या अन्य स्थानों में ऐसे भारतीय जिनकी भाषा हिन्दी नहीं है वे पहले कॉमन भाषा में परिचय करके बाद में हिन्दी को ही आधार बनाकर बात करना पसन्द करते हैं।

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान सैमुअल के लोगों ने 1975 में हिन्दी का प्रथम व्याकरण लिखा था जिसका प्रकाशन 1976 में इलाहाबाद में हुआ। प्रसिद्ध विद्वान गाहम बेली ने भी इस व्याकरण का सम्पादन और संशोधन कर इसे लंदन से प्रकाशित किया। आज अमेरिका के पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय का फिलाडेल्फिया स्थित लॉडर इस्टीट्यूट और वॉर्टन स्कूल के एम.बी.ए. और एम.ए. कोर्स में हिन्दी के दो वर्षीय पाठ्यक्रम शुरू हो रहे हैं। यह ज्वाइंट डिग्री प्रोग्राम हिन्दी में ट्रेनिंग देने के अलावा भारत की सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों तथा व्यावसायिक मूल्यों के बारे में जानकारी देंगे। अमेरिका में हिन्दी के प्रति जागरूकता का पहला कारण है वहाँ पर भारतीयों का काफी संख्या में होना। संख्या अधिक होने के कारण भारतीय स्वयं अपनी संस्कृति सुरक्षित करने तथा बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। दूसरा अमेरिकी लोगों की ओर से भारत की संस्कृति के अनेक पहलुओं के प्रति उनका आकर्षण है। उनका भारतीय संगीत, भारतीय फिल्मों और आध्यात्मिकता के प्रति ज्यादा झुकाव है। भौतिक विकास तथा व्यक्तिगत सफलता के उद्देश्यों से परे हटकर वे जीवन का मूल्य जानना चाहते हैं और दार्शनिकों की तरह प्रश्न पूछना चाहते हैं। ऐसे में भारत की आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है।

भारत के बाहर हिन्दी नेपाल दक्षिण अफ्रीका, यमन, अमेरिका, इंग्लैण्ड, युगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैण्ड, कनाडा और खाड़ी के देशों में प्रयोग की जाती है। दुनिया के 12 विश्वविद्यालयों में इसके पठन-पाठन की व्यवस्था है। विश्व हिन्दी सचिवालय मौरिशस में स्थित है जो हिन्दी को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभा रहा है। हिन्दी जानने वालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। हिन्दी संयोगात्मक भाषा है तथा लोगों के बीच भावात्मक सम्बंध स्थापित करती है। सदियों से अपने अनोखेपन के कारण भारत दुनिया के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसका ऐतिहासिक महत्त्व, व्यापारिक प्रसार, भौतिक संवृद्धि दार्शनिक सम्पदा ने विश्व को आकर्षित किया है। मुगल आए और उसमें से लूट कर वापिस अपने स्थान को लौट गए, बचे हुए लोग यहाँ की भाषा संस्कृति में स्वयं बस गए। कोलम्बस असल में सोने की चिड़िया भारत को खोजते हैं, चीन में हिन्दी का शुभारंभ 1942 से हो चुका है।

पेइचिंग विश्वविद्यालय ने 17 वर्षों में लगभग 300 विद्यार्थियों को 'हिन्दी' सीखने के लिए बुलाया। अब ये लोग हिन्दी से सम्बन्धित कार्य हिन्दी में ही करते हैं। प्रेमचंद की रचनाओं में गोदान, निर्मला, राहुल सांकृत्यायन की रचना 'बोल्गा से गंगा और जैनेन्द्र कुमार की रचना "त्यागपत्र" का चीनी भाषा में अनुवाद किया गया। भक्तिकाल के कवियों - सुरदास, कबीर, तुलसी की रचनाओं के पद्यानुवाद भी तैयार किए गए। पेइचिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बिन विड हान ने तुलसी के 'रामचरितमानस' का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

मारीशस द्वीप ने हिन्दी साहित्य के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है। इस द्वीप में साहित्य की लगभग सभी विधाओं-काव्य, नाटक, उपन्यास कहानी आदि का साहित्यिक सृजन हुआ है। यहाँ के प्रमुख साहित्यकार, जिन्होंने प्रारम्भ में यहाँ पर हिन्दी साहित्य की गरिमा को स्थापित किया है। प्रो. वासुदेव विष्णु दयाल, वृजेन्द्र भगत मधुकर और जय नारायण का नाम प्रमुख है। यहाँ पर मुक्त छंद की कविता का सृजन मुनीश्वर लाला चिन्तामणि द्वारा शुरू किया गया। मारीशस में 90 प्रतिशत लोग हिन्दी जानते हैं। भारत से बाहर मारीशस ही एकमात्र देश है, जहाँ हिन्दी साहित्य ने देश के प्रतिष्ठित साहित्य के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाई है। आज मारीशस के हिन्दी साहित्य का रूसी, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषा में अनुवाद हो रहा है।

म्यांमार भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रखता है। यहाँ के प्रत्येक जिले में हिन्दी के पठन-पाठन की समूचित व्यवस्था है। यहाँ बसे प्रमुख प्रवासियों में गुजराती, सिक्ख और मारवाड़ी है। ये लोग आपसी व्यवहार में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। म्यांमार में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जिन लोगों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है वह हैं पं. हरिदत्त शर्मा, सत्यनारायण गोयनका एवं डॉ. ओमप्रकाश इत्यादि हैं। युगाण्डा, कीनिया, तंजानिया, अफगानिस्तान, कुवैत, सउदी अरब, ओमान, इण्डोनेशिया, हांगकाँग, बहरीन एवं फिजी में हिन्दी को असाधारण गौरव प्राप्त है। फिजी में 1954 से रेडियो पर हिन्दी चैनल आरम्भ किया गया। वहाँ की हिन्दी सेवा प्रतिदिन 10 से 12 घण्टे तक चलती है और यह फिजी का सबसे बड़ा संचार और शिक्षा माध्यम है। फिजी हिन्दी महापरिषद् और हिन्दी अध्यापक संघ के माध्यम से भी हिन्दी प्रचार का कार्य वहाँ हो रहा है। माध्यमिक स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम है लेकिन हिन्दी को सांस्कृतिक भाषाओं के रूप में पढ़ाने की व्यवस्था है।

इस तरह विश्व परिदृश्य में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब वह दिन दूर नहीं जब इसे सयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाया जा सके। क्योंकि हिन्दी आज साहित्य लेखन, वाचन, गायन आदि के रीति-रिवाज से हटकर अब दैनिक जीवन से लेकर

विज्ञान-प्रौद्योगिकी तथा व्यापार प्रबन्धन आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दे चुकी है। भाषा के इन नव्यतरूप का युगानुकूल परिवर्तन एवं नवसृजन अत्यन्त तीव्रगति से हो रहा है क्योंकि विश्व स्तर पर बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक अन्तः सम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है। जिससे समूचे विश्व में हिन्दी भाषा को एक नयी दृष्टि मिल रही है और अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं का परिप्रेक्ष्य वर्तमान में 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य पूर्णतः' परिलक्षित हो रहे हैं। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ने भारत के राज्यों को एकसूत्र में नहीं जोड़ा बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। हिन्दी को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की स्थापना की गयी है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन को आयोजित करने का मुख्य लक्ष्य वैश्विक धरातल पर शैक्षिकीय उन्नयन, सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा हिन्दी विकास और प्रचार-प्रसार हिन्दी परिषद् की जगह-जगह स्थापना, विदेशी विश्व विद्यालय में हिन्दी पीठ की स्थापना, हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता, विश्व हिन्दी सचिवालय की मारीशस में स्थापना म्यांमार स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में विदेशी हिन्दी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था आदि बहुत से संकल्प इन सम्मेलनों में पारित किये गये जिनका परिचालन सुचारू रूप से गतिमान है। वस्तुतः ये सम्मेलन हिन्दी की लोकप्रियता के द्योतक हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियों, सिनेमा और इन्टरनेट ने वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के युग में भारत और भारत के बाहर बहुदेशीय कम्पनियाँ हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं को जानने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी नियुक्त कर रही है।

हिन्दी में आत्मविकास, प्रेरणात्मक और अध्यात्म प्रधान विषयों पर हिन्दी में लिखी पुस्तकों की माँग बढ़ी है। लोग हिन्दी में केवल

साहित्य ही नहीं पढ़ रहे हैं, बल्कि साहित्य से इतर विषयों की पुस्तकों को पढ़ाना चाहते हैं। इसी भाँति व्यक्तित्व निर्माण, भूले बिसरे क्रान्तिकारियों की बायोग्राफी हैं। सन्त, महात्मा, विचारकों एवं आध्यात्मिक पुरुषों पर आधारित विषयों की माँग भी बढ़ी है। निश्चय ही हिन्दी के हक में ये अच्छी बात है।

हिन्दी का भविष्य उज्वल है। अशोक चक्रधर ने सबल हिन्दी की रौनक, हिन्दी की ताल, हिन्दी के तेवर हिन्दी के सौन्दर्य और हिन्दी के मुस्कान को स्वीकार कर, उनकी सराहना की है। अतएव हिन्दी का भविष्य निः सन्देह प्रशस्त है। हाँ, हिन्दी को उसका वांछित राष्ट्रभाषाई स्वरूप प्रदान करने के लिए अग्रणी हिन्दी साधकों व लेखकों को आगे आना होगा। हमारा विश्वास है कि भारत सरकार अवश्य ही हिन्दी की इस न्यायिक माँग को पूरा करेगी। हमें आशावान होकर हिन्दी के सर्वथा शुभ की बात सोचनी चाहिए।

### सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी भाषा और संवेदना: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 98
2. हिन्दी भाषा संरचना: मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी पृ. 11
3. राजभाषा भारती, अंक 120 से साभार
4. यू.एस.एम. पत्रिका - दिसम्बर 2013 पृ. 21
5. विश्व हिन्दी पत्रिका 2010 पृ. सं. 158
6. मैसूर हिन्दी पत्रिका अक्टूबर 2009 पृ.सं. 20-21
7. उपकार हिन्दी निबन्ध, जैन एवं कुलश्रेष्ठ पृ. 37,38
8. विश्वपटल पर हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.सं. 7, 11, 15
9. हिन्दी का विश्व सन्दर्भ, राधाकृष्ण प्रकाशन पृष्ठ सं. 55

- सहायक आचार्य-हिन्दी

एसबीडी राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर

# संस्कृत भाषा एवं साहित्य : वैश्विक नेतृत्व की अपार संभावनाएँ

## □ डॉ. सत्यप्रिय

भारत भूमि में समुत्पन्न अद्भुत मनीषा के धनी ऋषि मुनियों द्वारा अनन्त काल से सम्पूर्ण विश्व को नेतृत्व एवं मार्गदर्शन प्रदानकर ज्ञान विज्ञान की कीर्ति पताका विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करने से सम्बन्धित अनेक सन्दर्भ एवं प्रमाण मनुस्मृति सहित अनेक धर्मशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों में पदे पदे प्राप्त होते रहते हैं।

विश्व भर के विद्वान् एवं मनीषि विविध विचार विमर्शों के पश्चात् इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि जैसे बिना भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन के भारतीय संस्कृति का बोध एवं प्रसार संसार में नहीं हो सकता है, ठीक वैसे ही यह भी सुनिश्चित है कि बिना संस्कृत के अध्ययन अध्यापन के भारत एवं भारतीयता को भी भलीभाँति नहीं समझा जा सकता है। इस सन्दर्भ में संस्कृत के किसी कवि ने ठीक ही कहा है - भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा। विहाय संस्कृतं नास्ति संस्कृतिस्संस्कृताश्रिता ॥ इसके अतिरिक्त यजुर्वेद में कहा गया है - सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा अर्थात् वह वैदिक/भारतीय/आर्यसंस्कृति संसार की प्रथम एवं सम्पूर्ण विश्व द्वारा वरणीय संस्कृति है।

यहाँ यह विशेष रूप से ध्यातव्य है कि जब भी भारत के विश्व गुरु बनने की चर्चा होती है, वहाँ यह निश्चित रूप से समझना चाहिए कि विश्व के नेतृत्व में जितना योगदान भारत में हो रहे आधुनिक शोध, तकनीक एवं नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों का है, उससे कहीं अधिक अधिक योगदान संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा में निहित प्राचीन अद्भुत ज्ञान भण्डार, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं जीवन मूल्यों का है। इन जीवन मूल्यों एवं ज्ञान परम्पराओं के बिना विश्व नेतृत्व के क्षेत्र में अग्रसर होना नितान्त असंभव है।

किसी भी देश की वास्तविक पहचान उसकी भाषा से होती है। भाषा न केवल अपने मनोगत भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम होती है, अपितु भाषा अपने में निहित जीवन मूल्य, संस्कार, परम्परा, विचार, आचार-व्यवहार एवं सम्पूर्ण सैद्धान्तिक मान्यताओं को भी अति सहज एवं सरल भाव से संप्रेषित करती है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि भाषा जहाँ भी यात्रा करती है अपने साथ इन गुणों का संवाहन भी सहज रूप से करती रहती है।

इसमें कोई शंका नहीं है कि भारतीय संस्कृति का आधार संस्कृत साहित्य ही है। संस्कृत केवल एक भाषा ही नहीं है अपितु पूर्णतः एक संस्कारित भाषा भी है और इसी विशेषता के कारण इस गौरवयुक्त भाषा का नाम संस्कृत है। संस्कृत एक सशक्त संप्रेषण का माध्यम होने के साथ साथ भारतीय संस्कृति सभ्यता की संवाहिका भी है, संस्कृत

की रक्षा में ही संस्कृति - सभ्यता की रक्षा निहित है। ये विशेषता भारत की किसी भी अन्य भाषा में नहीं है। भारत और संस्कृत में अन्योन्य सम्बन्ध है, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, जीवन दर्शन अथवा धर्म, जिस पर हम गर्व कर सकें और जिसे गौरव का विषय बना सकें, वह सब कुछ संस्कृत में ही निहित है।

संस्कृत शब्द की उत्पत्ति सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्त करने पर होती है, जिसका भाव है परिष्कृत या परिमार्जित या शुद्ध भाषा। यह वह भाषा है जिसके माध्यम से प्राचीन काल से ही बिल्कुल परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप से भावों/विचारों का सम्प्रेषण होता रहा है। अन्य भाषाओं के समान संस्कृत केवल विचार आदान-प्रदान करने मात्र का साधन नहीं है अपितु विचारों के आदान प्रदान के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों यथा ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक ज्ञान विज्ञान, भौतिक वैज्ञानिक, संगणकीय एवं तकनीकी विद्याओं के संप्रेषण में भी पूर्णतः समर्थ एवं सक्षम भाषा है।

भारत की वैश्विक पहचान संस्कृत से है। संस्कृत भारत की आत्मा एवं अस्मिता होने के साथ साथ विश्व की समस्त भाषाओं के केन्द्र के रूप में भी मान्य है। इस उद्घोषणा का समर्थन न केवल भारतीय विद्वान् अपितु विश्व भर के शोधकर्ता, वैज्ञानिक एवं विचारक भी इस तथ्य को एक मत से स्वीकार करते हैं। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि संस्कृत कोई साधारण एवं सामान्य भाषा नहीं है अपितु संस्कृत वह भाषा है जो हमें ईश्वर द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में परस्पर व्यवहार करने के लिए प्राप्त हुई है। विश्व के सभी लोग यदि पूर्वाग्रह/दुराग्रह एवं पक्षपातरहित होकर इस तथ्य पर विचार करें तो यह सहज ही सिद्ध हो जायेगा कि संस्कृत संसार की पहली एवं सबसे प्राचीन भाषा है एवं अन्य सभी भाषायें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसी भाषा से निकली हैं।

संसार की ज्ञान विज्ञान की प्रथम पुस्तक वेद की भाषा जहाँ संस्कृत है, वहीं उसके समकालीन न किसी भाषा का और ना ही किसी अन्य साहित्य का ही उल्लेख विश्व में कहीं भी प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त वेद के बहुत समय पश्चात् तक भी ब्राह्मण, आरण्यक, उपवेद, वेदांग, उपांग, रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि ग्रन्थ भी संस्कृत में ही प्राप्त होते हैं, किसी अन्य भाषा में नहीं। केवल इतना ही नहीं भारतीय काल गणना एवं ज्योतिष शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार इस सृष्टि का काल लगभग दो अरब वर्षों का है, उस प्राचीनतम काल से महाभारत काल के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कभी एक मात्र एवं सर्वग्राह्य

भाषा संस्कृत ही रही है, इस तथ्य पर जब हम आज विचार करते हैं तो वास्तव में आश्चर्य होता है।

### संस्कृत भाषा-पाश्चात्य विद्वान् एवं साहित्य

संस्कृत भाषा का साहित्य विश्व का सबसे प्राचीन एवं सबसे समृद्ध साहित्य है, जो न केवल भारत को एक सूत्र में पिरोता है, अपितु सम्पूर्ण विश्व को मानवता, प्रेम, सौहार्द एवं परस्पर सहयोग एवं समन्वय की शिक्षा प्रदान करता है।

इस चमत्कारी भाषा संस्कृत से विश्व इतना प्रभावित हुआ कि इस विषय से सम्बन्धित विविध प्रकार के गम्भीर अध्ययन एवं शोध कार्यों की शुरुआत जोर शोर से विश्व भर में प्रारम्भ हुई। इसी क्रम में सन् 1786/1783 में विलियम जोन्स ने महाकवि कालिदास द्वारा रचित नाटक अभिज्ञानशाकुंतलम् एवं ऋतु संहार का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त कवि जयदेव रचित गीत गोविन्द एवं मनुस्मृति का भी यथा समय अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् संस्कृतज्ञ ना होने के बावजूद भी विलियम फोस्टर ने अभिज्ञानशाकुंतलम् का 1791 में जर्मन अनुवाद प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त भी अन्य अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ एवं उन्हें पढ़कर पूरा विश्व आश्चर्य चकित रह गया।

सन् 1785 में जहाँ श्रीमद्भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद सर चार्ल्स विल्किंसन ने प्रकाशित कराया तो वहीं हितोपदेश का मैक्समूलर ने जर्मन में अनुवाद किया था। इसके अतिरिक्त महाकवि कालिदास रचित मेघदूत का भी जर्मन में अनुवाद दी फेटल रिंग के नाम से कराया था।

मैक्समूलर एक बार अपने एक व्याख्यान में कहते हैं कि यदि मुझसे पूछा जाये कि आप 19वीं शताब्दी के दौरान मानव जाति के इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुसंधान किसे मानते हैं? तो मेरा उत्तर होगा संस्कृत। इसके साथ ही मैक्समूलर यह भी मानते थे कि संस्कृत में पूरे विश्व को बदलने की क्षमता है, आमूलचूल परिवर्तन करने की क्षमता है। जैसे कि इस पत्र के आरम्भ में ही चर्चा की गई थी कि भाषायें भाव/विचार संप्रेषण के साथ साथ अपने में निहित जीवन मूल्य, संस्कार, परम्परा, विचार, आचार-व्यवहार एवं सम्पूर्ण सैद्धान्तिक मान्यताओं को भी अति सहज एवं सरल भाव से निरन्तर संप्रेषित करती रहती है। इस प्रकार संस्कृत में निहित अतुलित एवं विशाल ज्ञान भण्डार का यदि अवलोकन करें तो मैक्समूलर की कही उपर्युक्त बात बिल्कुल सत्य सिद्ध प्रतीत होती है, जिसमें वे कहते हैं कि संस्कृत में न केवल संपूर्ण विश्व को नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता है अपितु विश्व की विविध संकट की स्थितियों को न केवल बदलने, अपितु उनमें आमूलचूल परिवर्तन करने की भी क्षमता संस्कृत में निहित है।

इस पत्र के माध्यम से आधुनिक समाज में वैश्विक स्तर की जो प्रमुख समस्याएँ हैं, उनके समाधान के क्षेत्र में संस्कृत एवं संस्कृत आधारित वेद आदि ग्रन्थों में निहित कतिपय समाधानों की भी चर्चा संक्षेप में

करने का प्रयास किया जायेगा।

### विश्व एवं भारत

आज विश्व भर में भारत की पहचान उसकी प्राचीन भाषा संस्कृत एवं उसके सांस्कृतिक मूल्यों के कारण ही होती है। यह पहचान विश्व के अनेक देशों के क्षेत्रीय आचार-व्यवहार एवं जीवन पद्धतियों में आज भी सहज ही परिलक्षित होता है। जैसे साइबेरिया से लेकर सिंगल या श्रीलंका तक, मेडागास्कर से लेकर ईरान एवं अफगानिस्तान तक और चीन, तिब्बत, बर्मा, इण्डोनेशिया, साइबेरिया, कम्बोडिया, मंगोलिया, ईरान, टर्की, नेपाल, पाकिस्तान, प्रशान्त महासागरीय बोर्नियो, बाली, सुमात्रा, जावा, मलेशिया, वियतनाम, फिलिपिंस, थाईलैण्ड व म्यांमार सहित सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के अतिरिक्त सम्पूर्ण यूरोप तक भी भारत, भारतीय भाषा संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप एवं प्रभाव दिखाई देता है।

परन्तु दुर्भाग्य का विषय यह यथा है कि हमारे देश के ही तथाकथित बुद्धिजीवी एवं पूर्व सरकारों ने संस्कृत भाषा एवं संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान को रिलीजियस लैंग्वेज/ रिलीजियस बुक्स कह कर अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था से बाहर कर दिया था। उन्होंने छल पूर्वक रिलीजन एवं संस्कृति को एक सिद्ध करने का भ्रामक प्रयास किया एवं भारतीय भाषा, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्राचीन साहित्य को संविधान के अनुच्छेद 28 की आड में रिलीजियस टेक्स्ट का नाम देकर इस अद्भुत ज्ञान विज्ञान के खाजाने रूपी सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को सूडो सेक्यूलरिज्म के नाम पर शिक्षा व्यवस्था से हटा दिया। आज नये भारत में इन अनुच्छेदों पर निष्पक्ष होकर पुनः विचार करने की आवश्यकता है एवं प्राचीन भारतीय भाषा एवं साहित्य को पुनः अपने अध्ययन अध्यापन के क्रम में प्रतिष्ठापित करने की महती आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से इस सन्दर्भ जरूर कुछ उम्मीद जगी है।

### संस्कृत की व्यापकता

सम्पूर्ण विश्व को भारत ने जिन अपनी अद्भुत विशेषताओं जैसे धर्म, आध्यात्म, योग, आयुर्वेद, संगीत, वास्तु शास्त्र, ज्ञान विज्ञान आदि से अत्यधिक चमत्कृत एवं प्रभावित किया है, उनमें संस्कृत भाषा एवं संस्कृत में निबद्ध ज्ञान विज्ञान के विविध ग्रन्थों एवं शास्त्रों का अत्यधिक महत्त्व है। इन दोनों विशेषताओं को हटा कर विश्व पर अपने देश के प्रभाव की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। न केवल प्रभाव अपितु सम्पूर्ण विश्व को एक सक्षम, समर्थ एवं उपयुक्त नेतृत्व एवं मार्गदर्शन प्रदान करने की क्षमता भी संस्कृत भाषा एवं संस्कृत आधारित शास्त्रों में ही है।

आज सम्पूर्ण विश्व को मानवता, आध्यात्म एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा देने वाले रामायण, महाभारत एवं भगवद्गीता आदि ग्रन्थ भी इसी भाषा में आबद्ध हैं। इन सभी ग्रन्थों के मूल भाव एवं उपदेशों को बिना संस्कृत के, मात्र अनुवाद के सहारे कदापि पूर्ण रूप से नहीं

समझा जा सकता है। केवल इतना ही नहीं बिना संस्कृत के भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के किसी भी अंग को यथोचित विधि एवं पूर्णता के साथ नहीं समझा जा सकता है।

### एकता की धुरी-संस्कृत

सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने में भी संस्कृत का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान एवं योगदान है। पूरे देश में सांस्कृतिक रीति रिवाजों व भाषाओं में भेद होते हुये भी सबमें एक अद्भुत समानता है, और वह है, स्रोत की एकता। अनेक स्पष्ट भेद दिखाई देने पर भी पूरे भारत की सांस्कृतिक गतिविधियों की एक समानता है कि उन सभी का जन्म एक ही स्रोत से हुआ है। इस बिन्दु पर सब समान ही हैं। संस्कृत साहित्य में अखण्ड भारत का स्वरूप गहरे अर्थों में विद्यमान है। उत्तर-दक्षिण, अवर्ण-सवर्ण, आर्य-द्रविड सभी के लिए संस्कृत साहित्य समान रूप से प्रेरणा प्रदान करता रहा है।

और वैसे भी भारत में दिखाई देने वाला उत्तर एवं दक्षिण भारत का जो भाषा के स्तर पर विवाद है, उसका समाधान भी संस्कृत के माध्यम से ही हो सकता है, यह एक ऐसा विकल्प है, जिससे न उत्तर को समस्या है न ही दक्षिण को। इस प्रकार संस्कृत बहुत समय से देश में एकता का भाव पैदा करने में सशक्त माध्यम बनती रही है।

### संस्कृत एवं संस्कृति

संस्कृत भाषा ने न केवल भारत को अपितु सम्पूर्ण विश्व को इतना अधिक प्रभावित किया है कि विश्व के श्रेष्ठतम आदर्शों, जीवन मूल्यों एवं उच्चतम जीवन के मानकों का नाम ही संस्कृत से संस्कृति ही पड़ गया। भारतीय जीवन एवं आदर्शों की प्रत्येक छोटी-मोटी घटना से संस्कृत का घनिष्ठतम सम्बन्ध है, इसे किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व में आज जहाँ भी भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की बात होती है वहाँ संस्कृत का उल्लेख अनायास ही होता है। इसी कारण आज केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन हो रहा है और सम्पूर्ण विश्व में यह स्पष्ट समझ विकसित हो चुकी है कि भारत की संस्कृति को बिना संस्कृत के कदापि नहीं समझा जा सकता है।

वस्तुतः संस्कृति का मुख्य भाव है परिमार्जित संस्कारों से युक्त मनुष्यों की सभ्यता। भारत वासियों की आत्मा, अस्मिता एवं भारत की भारतीयता उसकी संस्कृति में है, जिसका प्राण संस्कृत भाषा ही है। संस्कृति जहाँ व्यक्ति के विकास में सहयोगी होती है, वहीं मनुष्य के आन्तरिक विकास में भी उतनी ही उपयोगी होती है।

आज जब हम पीछे मुड़कर इतिहास को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्व भर में विद्यमान अनेक प्राचीन सभ्यताएँ काल के गाल में समा गईं, परन्तु संस्कृत भाषा ही वह एक माध्यम रही है जिसके कारण भारतीय संस्कृति आज भी न केवल इस देश को अपितु सम्पूर्ण विश्व को दिशानिर्देश प्रदान कर रही है एवं संसार भर में अपनी

ध्वजा को उत्तोलित कर रही है।

अति प्राचीन काल से ही संस्कृत ने भारतीय संस्कृति को गढ़ना एवं तराशना शुरु कर दिया था। भारतीय संस्कृति का सर्वविध उद्भव एवं विकास संस्कृत से ही हुआ है, इसमें किसी को कोई शंका नहीं है। मानवता के प्राचीनतम काल के साहित्य ऋग्वेद में कहा गया है - केवलाघो भवति केवलादी। अर्थात् अकेला खाने वाला व्यक्ति पाप का भागी होता है। उपनिषद् आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों ने सम्पूर्ण संसार के कल्याण की भावना अभिव्यक्त कि - सर्वे भवन्तु सुखिनः। अर्थात् केवल मेरा और मेरे परिवार का ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व का कल्याण हो, सभी निरोग एवं स्वस्थ हों। इतना व्यापक एवं सर्वग्राही उपदेश शायद ही किसी अन्य मत में प्राप्त हो।

सम्पूर्ण संसार को परिवार मानने का संकल्प 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव संस्कृत ग्रन्थों ने ही अभिव्यक्त किया। इसी प्रकार महाभारत का वह अमर वाक्य, जिसको बौद्ध-जैन सम्प्रदायों ने अपना अपना ध्येय वाक्य बनाया, अहिंसा परमो धर्मः, संस्कृत के गर्भ से निकला हुआ ही चमत्कारी उपदेश है। इसी वाक्य को आधार बना कर महात्मा गान्धी ने सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा एवं सत्य का सन्देश दिया एवं भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अभूतपूर्व योगदान दिया। इसी प्रकार के एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अर्थात् एक ही सत्य को विद्वान् अलग-अलग रूपों में वर्णित करते हैं। यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे अर्थात् जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है, आदि, अनेक कालजयी उपदेश ऐसे हैं, जो पूरे विश्व का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखते हैं। वाक्य तो छोटे छोटे हैं पर भाव कितने गहरे हैं।

### संस्कृत एवं उन्नत जीवन

संस्कृत अपनी अनेक विशेषताओं के साथ ही साथ मानवीय मूल्यों की धरोहर एवं नैतिकता की स्रोत भी है। आज समाज में विविध प्रकार के दुर्गुण - दुर्व्यसन जैसे स्वार्थ, घूसखोरी, चोरी, अकर्मण्यता, हिंसा, अनैतिकता आदि अनेक मानवीय दुर्गुण पनप रहे हैं। संस्कृत साहित्य की यह विशेषता है कि वह इन समस्त सामाजिक दुर्गुणों को नष्ट कर सद्गुणों का विकास भी करती है। संस्कृत में एक ओर तो उन दुर्गुणों के स्वरूप को उपस्थापित किया जाता है तो दूसरी ओर उत्तम शिक्षाओं के स्वरूप को प्रस्तुत किया जाता है। और अन्ततः उन दुर्गुणों से निवृत्ति एवं उत्तम शिक्षाओं की ओर प्रवृत्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया जाता है। इस प्रकार संस्कृत के इस अद्भुत महत्त्व को देखते हुये यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत एवं संस्कृत साहित्य में विद्यमान उन उत्तम शिक्षाओं की कभी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

### पर्यावरण-

आज पर्यावरण की चुनौतियों का भारत समेत पूरा संसार सामना कर रहा है। यह समस्या दिन प्रति बढ़ती ही जा रही है। संस्कृत साहित्य इस समस्या के प्रति प्राचीन काल से ही बहुत गम्भीर रहा है एवं समय समय पर अनेक व्यावहारिक समाधानों की और भी ध्यान आकर्षित

करता रहा है। संस्कृत साहित्यों में वृक्षारोपण की अनेक प्रेरणायें प्राप्त होती हैं। एक स्थान पर कहा गया है कि अपने द्वारा लगाया एक वृक्ष दस पुत्रों से समान होता है। इसीलिये वृक्ष जरूर लगाने चाहिए। केवल इतना ही नहीं पर्यावरण में सन्तुलन बनाये रखने के लिए इन कार्यों को धर्म के साथ जोड़ दिया गया और कहा गया कि गाय, कौवे, चींटी, मछली आदि जीवों को भोजन एवं संरक्षण देना धर्म का ही कार्य है।

### राष्ट्रीय चेतना

संस्कृत के विद्वानों, आचार्यों एवं शिक्षकों ने समय समय पर राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को सुरक्षित रखने में भी अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस सन्दर्भ में गुरुकुल तक्षशिला के शिक्षक आचार्य चाणक्य के जीवन के एक प्रसंग को बहुत ही उपयोगी माना जाता है। बौद्ध काल में भारत देश पर विदेशी आक्रान्ता सिकन्दर के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए देश भर के राजाओं एवं योद्धाओं को एकत्रित करके महासंग्राम के लिए एकजुट करने एवं राष्ट्र की रक्षा को सुनिश्चित किया। राजनैतिक क्षेत्र में दिये आचार्य चाणक्य के योगदान को इतिहास में सदा स्मरण किया जाता रहेगा एवं आने वाली पीढ़ियाँ इसका स्मरण करती रहेंगी।

### आधुनिक राष्ट्र सेवक

आधुनिक काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती, संस्कृत के अनेक विद्यालय, महाविद्यालय एवं अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में गुरुकुल कांगड़ी एवं अन्य अनेक संस्कृत जन नायकों के योगदान को चाहे वह आजादी का आन्दोलन हो, या हैदराबाद हिन्दी सत्याग्रह का आन्दोलन हो, किसी रूप में भुलाया नहीं जा सकता है। इसी प्रकार जब भारत में विभिन्न प्रकार की सामाजिक, धार्मिक कुरीतियाँ अपना प्रभाव बढ़ा रही थीं, उस समय के महापुरुषों ने भारत से तात्कालीन कुरीतियों का विनाश कर एवं भारतीयता के संरक्षण में जो अभूतपूर्व योगदान दिया, उनमें कुमारिल भट्ट, शंकराचार्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, महान् क्रान्तिकारी चन्द्र शेखर आजाद आदि अनेक महापुरुषों के नामों का उल्लेख किया जा सकता है।

### विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास-

संस्कृत विश्व भर की भाषाओं के जननी है क्योंकि यह ईश्वर द्वारा सृष्टि के आदि में प्रदत्त प्रथम भाषा है। इसी भाषा से कालान्तर में भिन्न भिन्न क्षेत्रों की भाषा का विकास हुआ। संस्कृत भाषा का पुनः प्रचार-प्रसार यदि विश्व भर में होता है तो इससे हमारे अन्दर व्याप्त संकीर्णता दूर होगी एवं आत्मीयता का भाव विकसित होगा। सभी भाषाओं का संस्कृत से उत्पत्ति विषय को जान/ समझ कर एक गौरव का भाव भी हमारे अन्दर उत्पन्न होगा। जैसे ही यह भाव हमें स्पष्ट हो जायेगा कि संस्कृत उन परिवारों की मुखिया भाषा है जिन परिवारों में लैटिन, ग्रीक, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, रूसी, अवेस्ता, फारसी आदि भाषा भी हैं, तब निश्चय ही हमारी आत्मीयता इन भाषाओं के साथ भी होगी

एवं उन भाषाओं को भी हम अपना अंग मानने लगेंगे और इस प्रकार उन भाषाओं के बोलने वालों से बन्धुत्व का विकास भी होगा।

### संस्कृत भाषा

सम्पूर्ण भारतीय परम्परा एवं विश्व भर के अनेक भाषा वैज्ञानिक एवं विद्वान् एक मत से यह स्वीकार करते हैं कि संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है एवं समस्त भारोपीय भाषाओं की मूल है। शोध कर्ताओं ने प्रत्येक भाषा के ऐसे हजारों हजार शब्दों का संग्रहकिया है, जिन्हें देखकर इस घोषणा की सजह ही पुष्टि हो जाती है। संस्कृत से अंग्रेजी में गये कुछ शब्दों की सूची इस प्रकार है -

### संस्कृत

द्वि, त्रि, चतुर, पञ्च, षड्, सप्त, अष्ट, नव  
मातृ, पितृ, भ्रातृ, स्वसृ, दुहितृ  
ज्यामिति, त्रिकोणमिति  
द्वार, नाम, पथ, अक्ष, गौ  
मध्यम, जन, काल- अन्तर

### English

Two, Three, Four, Five, Six, Seven, Eight, Nine  
Mother, Father, Brother, Sister, Daughter  
Geometry, Trigonometry  
Door, Name, Path, Axis, Cow  
Medium, Gene, Calendar

भारत दुनिया का सबसे प्राचीन राष्ट्र होने के साथ साथ ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी अग्रणी एवं आदि राष्ट्र है। आज यह विचार विश्व भर के शोधकर्ताओं के सामने स्पष्ट रूप लेता जा रहा है कि ज्ञान विज्ञान की जो चमक पूरे विश्व में दिखाई देती है, उसका केन्द्र किसी न किसी रूप में भारत ही रहा है, इसी कारण से भारत को प्राचीन काल से ही विश्व गुरु भी कहा जाता रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार समस्त प्राचीन/आधुनिक आध्यात्मिक एवं भौतिक ज्ञान विज्ञान के मूल स्रोत के रूप में वेद एवं वेदानुवर्ती ग्रन्थों को ही स्वीकार किया जाता है। इस तथ्य का न केवल भारतीय विद्वानों ने अपितु अनेक पाश्चात्य आधुनिक विद्वानों ने भी समर्थन किया है। इस विषय में अमेरिकी प्रसिद्ध इतिहासकार मार्क ट्वेन स्वीकार करते हैं कि आधुनिक ज्ञान विज्ञान के अनेक सिद्धान्त प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में सैकड़ों वर्ष पूर्व से ही विद्यमान हैं एवं आधुनिक समय में हो रहे आविष्कारों के मूल सूत्र उन प्राचीन ग्रन्थों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

### संस्कृत की सरलता-

संस्कृत भाषा कठिन है, ऐसा कई बार कहते सुना जाता है, परन्तु संसार भर की भाषाओं की विविधता पर जब हम दृष्टिपात करते हैं एवं उनके विविध पक्षों पर विचार करते हैं, तब यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत तो बहुत ही सरल है एवं संस्कृत हमारी सभी अन्य भाषाओं में भी सहज रूप में बसी हुई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के आँकड़ों के अनुसार विश्व भर की भाषाओं एवं बोलियों की संख्या 6800 से अधिक है। जिनमें 23 भाषायें ही



विश्व की लगभग आधी आबादी द्वारा प्रयोग में लायी जाती है। अमेरिका की कोई आधिकारिक भाषा नहीं है। अंग्रेजी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा नहीं है। चीन की एक मन्दारिन नाम की भाषा, विश्व की सबसे कठिन भाषा है, जिसमें वर्णों के स्थान पर लगभग 9000 प्रतीकों का प्रयोग होता है। मोटे तौर पर एक अखबार पढ़ने के लिए लगभग 3000 से 4000 प्रतीकों का ज्ञान होना जरूरी होता है। वहीं संस्कृत में बस अधिकतम कुछ सौ शब्दों का अभ्यास करके इस भाषा को समझने, बोलने एवं पढ़ने में सक्षम हुआ जा सकता है। अब आप ही बताइये संस्कृत कहाँ कठिन है?

### संस्कृत में विविध विद्याएँ

संस्कृत एक अद्भुत भाषा होने के साथ-साथ प्राचीन एवं आधुनिक अध्ययन एवं अध्यापन के प्रत्येक विषय को अपने अन्दर अत्यन्त सहज रूप से समेटे हुये है। वास्तुकला, कृषि, पशु चिकित्सा, नृत्य, गीत, संगीत आदि विभिन्न कलाओं के अनेक ग्रन्थ संस्कृत में उपलब्ध हैं। विज्ञान के क्षेत्र के भी ग्रन्थों की भरमार संस्कृत में है। यथा ध्वनि सिद्धान्त, शून्य सिद्धान्त, दशमलव प्रणाली, नक्षत्र विज्ञान, ऋतु विज्ञान, गुरुत्वाकर्षण आदि। इसी प्रकार से वैज्ञानिक ग्रन्थों की सूची में यन्त्रसर्वस्व, बृहद्विमान शास्त्र, लौहतन्त्रम्, विमान चन्द्रिका, धातुसर्वस्वम् आदि का उल्लेख भी किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त भाषा एवं साहित्य से सम्बन्धित भास, कालिदास, अश्वघोष, भारवि, भर्तृहरि, भवभूति, हर्ष, बाण, सुबन्धु, दण्डी आदि कवियों के विभिन्न ग्रन्थों का भी उल्लेख इस सन्दर्भ में किया जा सकता है।

### विज्ञान

विज्ञान के विविध क्षेत्रों/शाखाओं से सम्बन्धित अनेक शास्त्र संस्कृत में प्राप्त होते हैं। जिनमें वेद, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ परवर्ती ग्रन्थों का उल्लेख किया जा सकता है। तकनीकी विद्या से सम्बन्धित समरांगणसूत्रधार, अंशुबोधिनी एवं विमानशास्त्र आदि ग्रन्थों की एक पूरी शृंखला संस्कृत में प्राप्त होती है।

### इतिहास

भारतीय इतिहास विषय का बोध तो संस्कृत के बिना कदापि हो ही नहीं सकता। आज भी जो भी व्यक्ति भारत के इतिहास को या विश्व के प्राचीन इतिहास को समझना चाहता है उसे संस्कृत की शरण में आना ही पड़ता है।

### गणित

प्राचीन काल में भारत से ही गणित का ज्ञान अरब में पहुँचा एवं कालान्तर में अरब से योरोप के देशों में पहुँचा। शून्य भारत की ही देन है, जिसके बिना किसी प्रकार की गणितीय संरचना की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

### योग

संयुक्त राष्ट्र महासभा में 193 देशों में से 177 देशों के अपार समर्थन से 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता

मिली एवं प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन पूरे विश्व में 21 जून 2015 को किया गया। इस क्रम में प्रति वर्ष पूरी दुनिया में अलग-अलग थीम्स पर इस कार्यक्रम का आयोजन होता है।

भारतीय ऋषि मुनियों की इस अभूतपूर्ण खोज एवं प्रत्येक भारतीय के जीवन शैली में किसी न किसी रूप में शामिल, इस योग विद्या के महत्त्व को पूरी दुनिया समझ एवं मान रही है एवं न केवल शारीरिक अपितु मानसिक स्वास्थ्य के अचूक उपाय के रूप में इससे लाभान्वित भी हो रही है।

यहाँ यह स्पष्ट रहे कि योग विषय का वर्णन करने वाले समस्त ग्रन्थ चाहे पतञ्जलि मुनि का योग दर्शन हो, उपनिषद् हो, श्रीमद्भगवद्गीता हो, पुराण हो, योगवासिष्ठ हो सभी ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे गये हैं। और इस योग विषय का गहराई से ज्ञान प्राप्त करने के लिए चाहे भारत हो या विश्व, सभी को संस्कृत की शरण में आना ही पड़ेगा, दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

### चिकित्सा / आयुर्वेद

चिकित्सा भी एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें संस्कृत के आचार्यों ने अभूतपूर्व योगदान दिया है। हजारों वर्ष बीतने के बाद भी आचार्य चरक के चिकित्सा शास्त्रीय सिद्धान्त आज भी उतने ही उपयोगी, महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं। आचार्य सुश्रुत द्वारा शल्य क्रिया के कतिपय साधन एवं सिद्धान्तों का आधुनिक चिकित्सा शास्त्र आज भी उपयोग करता है।

### संगीत

संगीत का मानव जीवन के साथ जुड़ाव प्राचीनतम काल से ही रहा है। इस संगीत की विकास यात्रा पूरे विश्व भर में निरन्तर चलती रही है। इस संगीत शास्त्र की एक पूरी शृंखला भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से प्राप्त होती है। संगीत शास्त्र के सभी प्राचीन ग्रन्थ भी अन्य विषयों की तरह संस्कृत में ही प्राप्त होते हैं। संगीतदर्पण, संगीतमकरन्द, संगीतमुक्तावली, संगीतरत्नाकर, संगीतपारिजात आदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं शोध पूर्ण, संगीत शास्त्र के ग्रन्थ संस्कृत में प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार संस्कृत माता न केवल विविध विषयों के ग्रन्थ अपने गर्भ में सहेजती है, अपितु मानव जाति के सामने आने वाली दुनिया भर की प्रत्येक समस्याओं का, प्रत्येक प्रश्न का समाधान भी यथासमय सुझाती रही है। वास्तव में संस्कृत में अभिव्यक्त उपदेश न केवल एक देश के लिये अपितु सम्पूर्ण विश्व एवं समस्त कालों के लिये हैं। जैसे वेद सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हैं। इस सन्दर्भ में यह दृढ़ निश्चय से कहा जा सकता है कि इन उपदेशों के चिन्तन एवं मनन से वर्तमान की सभी समस्याओं का निदान सरलतया किया जा सकता है।

श्रेष्ठ जीवन निर्माण की इस विद्या के वेदों में प्राप्त होने का तथ्य न केवल भारतीय परम्परा एवं ज्ञान प्रणाली से ही अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वानों के वचनों से भी प्रमाणित एवं परीक्षित हो जाता है। वेद प्रामाण्य के विषय में प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् लेओं देल्बास (Mons Leon

Delbos) ने कहा है - "The Rigveda is the most sublime conception of the great high ways of humanity" अर्थात् ऋग्वेद मनुष्य मात्र की उच्च प्रगति और आदर्श की उच्चतम कल्पना है। एक अन्य स्वीडन निवासी विद्वान् मैटलिंग ने वेदों की कर्तव्य शास्त्रादि विषयक शिक्षाओं को उद्धृत करते हुए लिखा है - "Let us agree that this system of Ethics of which I have been unable to give more than the slightest survey, while the first ever knowledge to man, is also the loftiest which he has ever practiced." अर्थात् हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि यह कर्तव्य शास्त्र विषयक प्रणाली, जिसका मैंने अति संक्षिप्त विवरण दिया है, जब कि मनुष्य को ज्ञात प्रणालियों में से सर्व प्रथम है, साथ ही सबसे अधिक उत्कृष्ट है, जिसका मनुष्य ने कभी आचरण किया है।

एक अन्य थोरी नामक अमेरिकी विद्वान् ने वेद के विषय में अपने विचार कुछ यूँ प्रकट किये हैं - "What extracts from the Vedas I have read fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum, free from particulars, simple, universal. The Vedas contain a sensible account of God." अर्थात् मैंने वेदों के जो उद्धरण पढ़े हैं, वे मुझ पर एक उच्च और पवित्र ज्योतिःपुञ्ज के प्रकाश की तरह पड़ते हैं, जो एक उत्कृष्ट मार्ग का वर्णन करते हैं। वेदों के उपदेश सरल, किसी भी देश वा जाति के इतिहास से रहित एवं सार्वभौम हैं। उनमें ईश्वर विषयक युक्तियुक्त वा संगत विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

इस प्रकार प्रायशः सभी वैदिक शास्त्रों, विद्वानों एवं अनेक पाश्चात्यों ने भी उज्ज्वल चरित्र की शिक्षाओं के केन्द्र के रूप में वेदों को स्वीकार किया है।

वेद के इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर आयरलैण्ड के विद्वान् एवं कवि डॉ. जेम्स कजिन्स कहते हैं - "On the Vedic ideal alone, with its inclusiveness which absorbs and annihilates the cause of antagonisms, its sympathy which wins hatred away from itself, is it possible to rear a new earth in the image and likeness of the Eternal Heavens."

अर्थात् इस वैदिक आदर्श का अनुसरण करते हुये ही जो सार्वभौमिक होने के कारण निराशा के कारणों को विनष्ट करता है, जो सहानुभूति द्वारा घृणा को दूर करके जीत लेता है, यह सम्भव है कि पृथिवी को फिर से जीतकर स्वर्ग के समान सुखदायक बनाया जा सके।

यह भी कहा जाता है कि डॉ. कजिन्स स्वयं इन वैदिक शिक्षाओं से इतने प्रभावित हुये की अपना नाम डॉ. जयराम रख लिया था और अपने सम्पूर्ण जीवन काल में सदा ही इन वैदिक शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करते रहे और साथ ही साथ जीवन का बहुत सारा समय इन शिक्षाओं के उपदेश में लगाया।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी बिन्दुओं पर विस्तृत विचार करने पर यह सहज रूप से ही स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित उपदेशों की सीमा मात्र कर्मकाण्ड आदि की विधियों तक ही सीमित ना होकर समाज के प्रत्येक क्षेत्र या प्रत्येक विषय पर सटीक विचार विमर्श प्रस्तुत करने तक है।

वस्तुतः संस्कृत भारत एवं भारतीय संस्कृत की आत्मा है। उसे छोड़ देने पर भारतीय संस्कृत के सभी पक्ष मृतप्राय हो जाते हैं इस सन्दर्भ में डा. राजेन्द्र प्रसाद की कही यह बात अक्षरशः सत्य प्रतीत होती है, उन्होंने कहा था - हमारी समस्त संस्कृति, साहित्य तथा जीवन उस समय तक अधूरा ही रहेगा, जब तक कि हमारे विद्वान्, विचारक, नेतागण और शिक्षाशास्त्री संस्कृत से अनभिज्ञ रहेंगे। एक वाक्य में कहें तो यूँ कहा जा सकता है कि संस्कृत के बिना संस्कृति का बोध एवं रक्षण नहीं हो सकता एवं संस्कृति के बिना न भारत और न ही विश्व के अस्तित्व या नेतृत्व की कल्पना की जा सकती है। अस्तु।

1. एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ मनु.
2. प्रसिद्ध संस्कृत उक्ति
3. यजुर्वेद
4. जो ब्रिटीश सुप्रीम कोर्ट के जज के तौर पर कलकत्ता आये थे, कालान्तर में संस्कृत साहित्य का अध्ययन करके अच्छी योग्यता अर्जित की, कालान्तर में उन्होंने एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना भी की थी।
5. ऋग्. 10/117/6
6. बृहदारण्यक उपनिषद्?
7. पञ्चतन्त्र
8. महाभारत अनुशासन पर्व, अध्याय 116
9. ऋग्, 1/164/46
10. बृहदारण्यक उपनिषद्?
11. छात्र, बनारस संस्कृत कालेज, वर्तमान नाम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
12. 14/07/1884 में पेरिस में International Literary Association में पठित निबन्ध
13. The Great Secret by Materlink, P.60
14. Thorio
15. Path of Peace, Dr. James Cousins P. 60

-वरि. सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,  
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू-कश्मीर 180006  
दूरभाष-8803256469  
ईमेल- satyapriya.delhi@gmail.com

# Indian Knowledge System and Exploring the Ways to Understand the Self through Patañjal's *Yoga Sutra*

□ Dr. Sindhu Poudyal

## Abstract

*Body of knowledge is supposed to be culture (context) specific and failing of which may lead to a directionless and goalless path. Hence, the system of knowledge may not be confined to only formal education in schools and colleges. In this paper, I intend to revisit the aim of knowledge which has been the core of the Indian cultural heritage of India on which every culture culminates and which the future of humanity may like to revisit for meaning and foundation. There is (was) something unique this culture of Bharat always nourished for which a the time of crisis instead of being selfish Bharat always took care of the 'Other' not as other but as one's own self. In this paper, I shall be focusing more on Patañjali's Yoga Sutra as the capsule for self-knowledge and self-enhancement for the constitution of a better world for tomorrow. In analyzing I shall be proposing the need to understand the Yoga Sutra not merely as a text for self-understanding but as Yoga Sutra in itself is more than what we have understood it is a text with a strong ethical social message. It teaches dharma through self-discipline and living a harmonious life without hijacking other's space. The objectives of this paper are to present an analysis of why Indian philosophy has always talked about the self and the understanding of the self over and above anything. Secondly how this knowing the self in totality can promote a harmonious living on earth and eventually establish a just society. The social nature of man needs more nourishment and care, if it is given righteously, then it can lead to a healthy being in an ideal society. This paper through the analysis of the Yoga sutra tries to propose a need for self-nourishment before anything if we wish to make a healthy (physical, psychical and spiritual) society of Bharat in the future. This is unique only to India and that's why the West is fascinated by the knowledge tradition of India. Otherwise materially West is far ahead of India at present and no matter how much any country grows materially, intellectual and spiritual domains need to be taken care of if we wish to make a holistic*

*society, a welfare society that is not totalitarian but a cooperative society. The methodology of the paper is analytic and hermeneutical. At times I shall also be dealing with critical and phenomenological methods in the paper.*

**Keywords:** *Self, Discipline, Dharma, Ideal society, India's Future*

## Introduction

The foundational analogy on which this paper is based is that even if we contracted,<sup>1</sup> to be a social being, yet we all are on our individual journey (to where we may figure out later) which is inevitable and unavoidable. In this process of birth and death, it is not only important to live but live in terms of some standards that are already given to us – moral, social, religious etc. Now if I analyze the above two statements then at first glance, I may realize that these two lines are not parallel to each other or even not intertwined with each other i.e. individual meaning of existence and social meaning are isolated and unrelated categories. But in this section, I shall justify that these two lines complement each other and how this relation can be established for the development of a civil society (a moral society) that we all wish to have can be understood. In the second section how the classical Indian philosophies (even classical Greek or Chinese philosophies too) gave importance to self and the development of the self for a better society (in the present context a civil society maybe). So in the second section, I shall try to bring forth the social significance of self-discovery through Patanjali's *Yoga Sutra*.

### 1. The aim of Knowledge

In Indian philosophy and cultures of the world at large hold that knowledge aims at achieving the highest end of existence i.e. to experience the highest meaning of being in the world- which is nothing but the realization that existence is abundant and there is no difference of I and you and everything is just 'is'. So, when Indian philosophical tradition is considered to be too spiritual or mystical in its orientation

is a total misconception based on the methodologies foreign to Western philosophies and traditions. For instance, Indian philosophy brings forth the concept of liberation as the highest end of human life and what is or how liberation looks like has many theories. However, it is the liberation of the self as an individual and not the social. As the individual self i.e. *âtman* is the social self<sup>2</sup>. So when the individual soul gets liberated, that self even an embodied one becomes a relevant essence for social, moral and spiritual development which can be interpreted as an organic developmental process. Though Western philosophies did not talk about liberation in these lines of thought, they still hold the claim that, if the person knows himself that person cannot but be an ethical and socially relevant being. The reason for analyzing this point here is just to endorse the very foundation principle of being a good person, a socially relevant person and a person who can be a 'citizen of the globe' in fair terms a cosmopolitan being is necessary for the world and that person is knowledgeable. However, this knowledge is not merely education. It is the holistically developed human personality who may also be educated.<sup>3</sup> One of the reasons why in classical Indian philosophy this knowledge was given prominence and *Patanjali's Yoga Sutra* is considered the most comprehensive and practical project in understanding human physical, physical, and spiritual understanding of the self which not only considers the meaning of education but knowledge in totality.

## **2. Individual and social development are integrated – An unspoken essence of socio-ethical self**

Even though the ultimate goal of yoga philosophy is - the realization that – the nature of the mind in this physical body, its functions are fabricated by the impression of past *sanskâras* (impressions) and present given limitations and the understanding of the process of uninterrupted awareness without any emotional baggage and liberation or *moksha* aims at freedom from *p[ra]kriti* which involves a systematic process of discipline leading to the realization of the state of unity or Oneness with the absolute reality which is considered to be divine, i.e. *Brahman* or with the individual self i.e. *Âtman* – it is a process of realization that there is no difference between *âtman* and *Brahman*. Even though the goal has been defined by different classical philosophical or theological systems in different terms they all agree that life cannot be isolated and integrated knowledge needs to start from the self. The individual self is not only connected with the other self physically (both in blood relation of social) but there is a universal essence of being - for which Patanjali laid down four key principles to be a good self in its social behavior - *maitri* - i.e. being friendly and a loving self, *karuna* – being

compassionate towards others (both human and non-human), *mudita* – having a delightful nature to which people eventually get attracted to (In contemporary times it is also considered as pleasing and attractive personality), and *upeksha* – though it is taken in negative connotation it simply means having a disregard for any attachment or aversion or achieving equanimity in all situations not getting affected by pleasure or pain in favorable or unfavorable circumstances. Furthermore, Patanjali's *Yoga Sutra* also holds these four values to be inculcated by each self to be a better self in himself and any person who practices these principles in him/her eventually be considered a 'good person'.

As we are aware Patanjali's *Yoga Sutra* is divided into four *padas* consisting altogether of one hundred and ninety-six aphorisms namely, *Samâdhi Pada*, *Sadhâna Pada*, *Vibhuti Pada* and *Kaivalya Pada*. The essence of all the four *padas* is different yet integral to the whole system of existence. The *telos* of human existence in the world is to find a holistic development of human personality whereby, manifold developments in the given world can be manufactured, and modified and sustainability is achieved. Patanjali's *Yoga Sutra* offers the understanding and adjusting one's internal world first whereby the study internal and innate nature of human existence is known and through that, control in both the internal and external world can be carried out. On the one hand, the world is continually inspired to run a rat race with material advancement, on the other there is destruction of natural inhabitation and the continuous crisis of sustainable development. In such a case, when we look for consistent and sustainable mechanisms to trace the existence of a global community classical Indian philosophy is the alternative the world is looking forward to. This section also discusses the elements of Patanjali's *Yoga Sutra* as one of the alternatives for the achievement of the holistic development of personality and the social self.

As the famous classical Western philosopher, father of Western philosophy Socrates said- knowledge is virtue and being knowledgeable is being virtuous and being virtuous is the ultimate end of the human social self. However, the virtues for the self and virtues towards the other though appear different; they are nothing but the extensions of the self-disciplined self in the world. This idea was continued by Plato after Socrates and held that justice, knowledge, temperance, and courage are the four cardinal virtues that need to be inculcated in a human being. The social self in the world becomes extremely self-centered then the society becomes an unjust society and for a just society, Plato also gave reference to the inculcation of the four cardinal principles in human beings. He claims that if every citizen of the state

becomes just i.e. follows the values or virtues of right knowledge, courage, temperance and justice then only we can think of justice in the state for that every person needs to perform his or her duty in a righteous way or just way. Patanjali too outlines a practice essential for enhancing the best in every human personality. SaEkhya-Yoga philosophy (so also *Bhagavad-Gitâ*) states it is because of the nature of P[kriti that every human (as well as anything possessing matter) has *sattva*, *raja* and *tama guEas*. By very nature *sattva* is illuminating, *rajas* have activity and *tamas* are darkness. As the evolution principle aims for development towards higher progress, Patanjali holds - *sattva presupposes* clarity of thought words and deeds -the prerequisite of a stable and undisturbed mind because of the very nature of *sattva*.

He further holds that the path and the final attainment of yoga for a social self in *Yoga Sutra* is the enhancement of the *sattvic* qualities in human embodiment. Hence, it is one integral aspect of Yoga philosophy that ethics and morality are substantiated with the discipline and teaching It is one of the objectives of yoga to integrate the systematic development of body, mind and spirit. For instance, in verse I.33 of *Yoga Sutra* Patanjali states - as a result of the inculcation of compassion and kindness, friendliness and communication with those who find themselves in a happy or sad situation, as well as towards the one who is in joyous as well as towards the pious ones and inculcates the virtue of being or indifference towards the evil and war etc, one is assured that the person has disciplined himself to be a *sattvic*. As a result, the mind becomes lucid for such an individual who brings clarity of thought and vision, integrity in action and compassion and politeness in words – the very nature of *sattva*. Gradually with concentration and rigorous practice such a person can further attain salvation - which is the goal of *Ashtanga yoga*. However, it is based on choice rather than being forced to achieve. Among the eightfold categorical practices of *Ashtanga yoga* marga– the first five are essential to the embodied being if we aim to even achieve healthy, sustainable socio-ethical living. Those are - *yama* or abstinences or do' and don't's, *niyama* strict disciplines, *âsana* i.e physical exercise, pranayama understanding and controlling the breath which is the essence of living, *pratyâhâra* or withdrawal from distractions and disturbances which as not essential for the existence. And the later three *dhâra*na, i.e the concentration of the mind, *dhyâna* is the contemplation of knowledge and moving beyond physical confinement and *Samâdhi* i.e. putting together the whole system in its subtle state of being. The later three aEgas are advanced forms of practices for those who take up the understanding of the self in a holistic way and in

totality by experiencing it subjectively.

From the socio-ethical perspective, by being a compassionate being towards others both friend and foe - the negative and draining traits in living a social life too eventually get transformed in a human person. By being compassionate towards others who are poor, destitute, and orphan and even the other species, the feeling of coexistence and *Sarvodaya* can be inculcated. By being equanimous in any situation values such as tolerance and acceptance are achieved. Hence, by removing the layers of finitude and imperfection, the proposed paradigm of *Yoga Sutra* that the limited and draining traits of bitterness, obtrudes, dictatorship intolerance, war mongering, agitation etc. which are characteristics dominated by *rajas* and *tamas*, gradual *sattva* quality overpowers and manifests in the multidimensional sphere.

In the subsequent states, however, the disposition towards an unintentional attraction leads to the higher truths by controlling the *v[ttis* or propensities of body and mind. Hence, the proposed structure of knowledge of the self i.e. system of existence by the practice of *yoga*, eventually achieved gradually and prepares the self for enlightenment. Further, the *Yoga Sutra* in its second chapter offers a set of ethical practices necessary for the enhancement of the *sattva* (*sattvic*) element in the embodiment are known as the five *yamas*, - non-violence or not causing any harm to living or nonliving, truthfulness being truthful in any circumstances; restraining from stealing, practice of celibacy and renunciation of possession of any kind. It can also be claimed that the *yamas* in themselves are capable of the constitution of a complete human personality – ethical and just. Perhaps, the ideation of *Ramrajya* too is based on these principles. It is also instructed in *Yoga Sutra* that, even if a *sâdhaka* i.e. the aspirant may achieve advancement in one's *yogic* abilities, there remains a lacuna until the *yamas* are imputed by the yogi and put them into practice in the world of existence (*Yoga Sutra*, II.30). Gradually, the integration of the all the elements which are essential for the understanding are intertwined in the *Yoga Sutra* in such a way that if anyone who aspires for liberation the knowledge is absolutely practical and for the ones who simply wish to lead a good life even for them this system of knowledge integrates.

Vivekananda in *Raja Yoga* stated the prescriptions of Patanjali's sutras are - absolute knowledge in understanding and realization of the self in totality and the mechanism through the system of yoga works. By self however it is not the limited and confined understanding of embodiment, rather the self is only the representation of the axiom that works in a system of its functioning with the inclusion of will. It is not forced knowledge, nor is it the only way. But it can

be stated that it is the most comprehensive, integrated and scientific way of explaining, articulating and experiencing the holistic meaning of being in the world and further. One significant element that SaEkhya-yoga and the prasthanatrayi<sup>4</sup> in general were that together they systematized the teaching of the upanicsads in the capsule form and offered the path which has practical results. As being ethical and social self are integrated into the system of being knowledgeable, Yoga as a philosophy in theory and practice was either confined to being spiritual or being only a physical exercise. It wasn't until the past decade the tradition was limited to a few practitioners. But lately, the growing popularity of Yoga as a means to achieve good health and well-being is a good move but I propose *the Yoga Sutra* of Patanjali a lot more than what we have explored until today. Hence, in conclusion, it can be stated that if India aspires to grow materially, the advancement of science, technology and economic development may be the standard, but if India wishes to holistically, then there is no other way than to have a balanced and adjusted understanding of inner and the outer world. As, in the outer domain research is growing exponentially across the globe but a complete development is possible only when we take care of physical and spiritual all together. It will create a robust sustainable and ethically fit human society which can sustain the principle of universality by its very nature. This I believe the most practical meaning of the term, *Vasudhaiva Kutumbakam* or cosmopolitanism which our ancestors too had envisioned by contributing immensely to the body of knowledge in the Indian continent.

### References:

1. Shankar, Sri Sri Ravi. *Patanjali Yoga Sutras*. United Kingdom, Arktos Media Limited, 2014.
2. Vivekananda, Swami. *Patanjali's Yoga Sutras*. India, Prabhat Prakashan Limited, 2022.

3. Mahasaya, Lahiri. *Patanjali Yoga Sutras: In The Light Of Kriya*. Ireland, Book Baby, 2014.
4. Ranganathan, Shyam. *Patanjali's Yoga Sutra*. India, Penguin Books Limited, 2008.
5. Patanjali. *The Yoga Sutras of Patanjali*. Independently Published, 2020.
6. Vivekananda, Swami. *Raja-Yoga: Conquering the Internal Nature*. Martino Fine Books, 2012.
7. Vivekananda, Swami. *Raja Yoga: Conquering the Internal Nature*. Advaita Ashrama, 2016.
8. Shivananda, Swami. *Raja Yoga*. The Divine Life Trust Society, 2010.

<sup>1</sup>. As per the Social Contract theory of Thomas Hobbes, John Locke and J.J Rousseau which underlines the principle of sociality being rooted in an agreement that establishes moral and political rules of behavior.

<sup>2</sup>. This idea has been the cream of the upanicsads, Bhagavad Gitâ and the Vedânta philosophies.

<sup>3</sup>. As education fulfills the need of the person for the development of mind and the body and with training certain antiquates are inculcated in a learner to become fit for taking care of her/his own life and lives in cordial terms with others. However, knowledge has a much broader connotation than this.

<sup>4</sup>. Three classical and most influential texts of the philosophical and literary tradition in India, *the Brahmasutras*, the *Upaniæads*, and the *Srimad Bhagavad Gita*.

- Assistant Professor, Department of Philosophy,  
Tripura University (A Central university)

# Traditional Indian Ayurvedic Medicinal Formulation as a Potential Solution for Antimicrobial-Resistant Microbes : A Comparative Study with Vancomycin

□ D. Amey<sup>1</sup>, Renu Dixit<sup>2</sup>, M. Ravi Sankar<sup>3</sup>

## Abstract

Antimicrobial-resistant strains in hematogenous infections pose a formidable challenge to conventional antibiotic therapy, necessitating exploration of alternative solutions. This study delves into the potential of a traditional Indian Ayurvedic medicinal formulation, comprising Amalaki (*Phyllanthus emblica*), Bibhitaki (*Terminalia bellirica*), and Haritaki (*Terminalia chebula*), as an antimicrobial agent for combatting resistant strains in hematogenous infections.

Hematogenous blood infection, or bacteremia, occurs when microbes enter the bloodstream from a localized infection site. Common microbial culprits include *Staphylococcus aureus* and *Streptococcus* species. The systemic dissemination of these microorganisms leads to a potentially severe condition with widespread implications. Antibiotic treatment may fail due to various factors. Microbial resistance mechanisms, such as beta-lactamase production or efflux pumps, can render antibiotics ineffective. Additionally, the ability of certain pathogens to form biofilms on host tissues or medical devices impedes antibiotic penetration and efficacy. The heterogeneous nature of bacteremia, involving diverse microbial species with varying susceptibility profiles, poses a challenge for targeted therapy. Furthermore, host factors like immunocompromised states may compromise the effectiveness of antibiotics. Comprehensive understanding of these factors is crucial for devising strategies to address the challenges posed by hematogenous blood infections and improve therapeutic outcomes. The Ayurvedic formulation is recognized for its antimicrobial properties.

Our investigation employed the OD600 method to evaluate the antibacterial efficacy of the Ayurvedic formulation against a microbial co-culture mimicking antimicrobial-resistant hematogenous infections. Vancomycin, a standard antibiotic, served as a reference for comparison. Results revealed that the Ayurvedic formulation exhibited superior antimicrobial effectiveness compared to lower doses of Vancomycin and comparable efficacy at higher doses.

This study suggests that the traditional Indian Ayurvedic medicinal formulation holds promise as an alternative therapy for antimicrobial-resistant hematogenous infections. The findings underscore the potential of Ayurveda-based interventions in addressing challenges posed by resistant strains, offering a novel approach to managing this debilitating condition.

**Keywords :** Antimicrobial resistance; Vancomycin; Blood sepsis; Antibiotics;

## Introduction

Blood sepsis, commonly referred to as septicemia, is a severe medical condition characterized by the systemic presence of pathogenic microorganisms and their toxic byproducts in the bloodstream[1], [2]. This condition initiates a dysregulated host response, leading to widespread inflammation and organ dysfunction, thereby posing a substantial threat to the affected individual[3], [4]. In 2017, India alone witnessed 11.2 million cases with 2.9 fatalities. Blood sepsis affects numerous organs in the body. The inflammatory cascade triggered by the presence of pathogens in the bloodstream induces a systemic inflammatory response syndrome (SIRS), marked by an uncontrolled release of pro-inflammatory cytokines. This leads to vasodilation, increased capillary permeability, and disseminated intravascular coagulation (DIC)[5], [6].

Vasodilation and increased capillary permeability result in compromised tissue perfusion, leading to organ dysfunction. The activation of coagulation pathways in DIC contributes to microvascular thrombosis, and tissue ischemia. There is further damage to the respiratory and cardiovascular system eventually leading to damage to the kidneys[7]. There is significant neurological damage leading to Cognitive impairment, altered consciousness, and, in severe cases, coma may result from the complex interplay of inflammatory mediators and cerebral microcirculatory dysfunction[8].

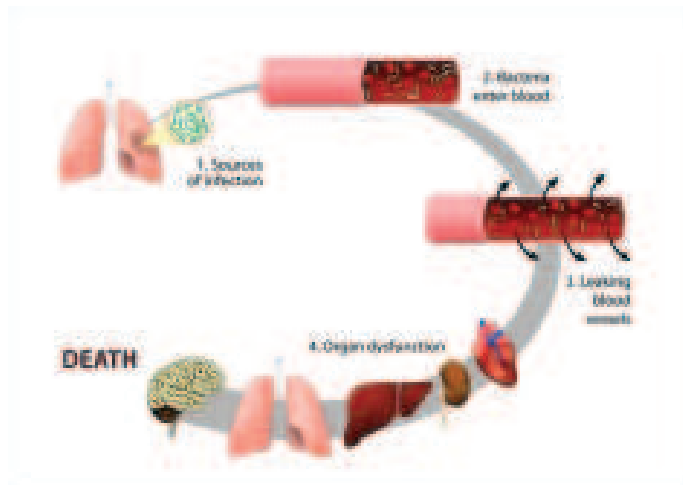


Figure 1 Schematic representation of origin, spread and organ damage caused due to sepsis.

The treatment of blood sepsis involves the administration of a heavy dosage of antibiotics. Commonly used antibiotics include broad-spectrum agents such as cephalosporins, fluoroquinolones, and carbapenems, to ensure action against a wide range of potential pathogens. However, with an increase in the incidence of antimicrobial resistant strains, various antibiotics have been found to be ineffective in infection management. Antibiotic resistance in blood sepsis causes severe consequences such as prolonging the duration of illness and increasing the risk of treatment failure[9].

Antimicrobial resistance (AMR) development occurs through multiple mechanisms leading to difficulties in determining the suitable therapeutic for treatment of these conditions. Figure 2 schematically shows the different mechanisms for development of antimicrobial resistance. Biofilm formation is a prominent strategy, wherein microorganisms aggregate on surfaces and secrete a protective extracellular matrix, shielding themselves from antimicrobial agents. This matrix hinders drug penetration and fosters a conducive environment for genetic exchange, facilitating the spread of resistance genes. Target modification, another key mechanism, involves genetic alterations that render antimicrobial targets less susceptible to drug action. In intracellular growth, microbes evade antimicrobials by residing within host cells, shielding themselves from the immune system and therapeutic agents[10]. This has led to a search for alternative therapeutics that can be highly effective against such microbes.

Ayurveda, an ancient system of traditional medicine originating from India, relies on holistic approaches, including herbal remedies, dietary modifications, and lifestyle practices. While some Ayurvedic herbs possess antimicrobial properties and anti-inflammatory effects, their specific efficacy in treating blood sepsis has not been explored by modern

researchers. Certain Ayurvedic herbs, such as neem (*Azadirachta indica*), turmeric (*Curcuma longa*), and ashwagandha (*Withaniasomnifera*), have demonstrated potential antimicrobial and immunomodulatory properties which could be highly effective in treatment of blood infections.

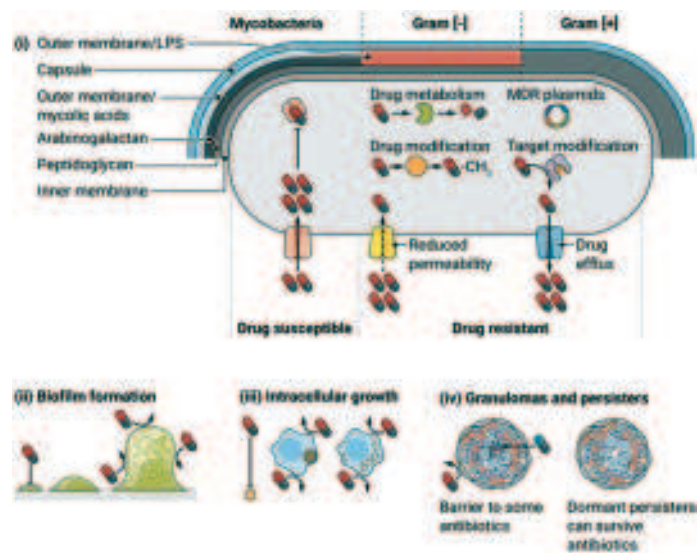


Figure 2 Mechanism for antimicrobial resistance development in bacterial pathogens.

This research evaluates the efficacy of an traditional ayurvedic formulation in the treatment of blood sepsis in a simulated microbial culture. Samples were obtained from 3 patients suffering from sepsis and then evaluated for their efficacy in a simulated culture using optical density 600 (OD600) method. To provide a benchmark, Vancomycin a widely used antibiotic is used as control. The possible mechanisms for action have also been explored in this study.

## Materials and Methods

### Materials

Muller Hinton broth (MH broth), Cetrinide agar, Mannitol Salt agar, M-Lauryl Sulphate agar, and Phosphate buffered saline (PBS) were procured from Himedia Labs, Mumbai. All the materials were used without further processing. The broth and agar were prepared using the recipe recommended by the supplier. Ayurvedic medicine was obtained from SV Ayurvedic College and Hospital, Tirupati. The formulation was prepared in accordance with standard protocols followed in accordance with ayurveda.

### Sample isolation and development of microbial culture

To closely replicate the microenvironment, we employed a microbial co-culture derived from a blood sample obtained from a patient diagnosed with blood sepsis. The blood sample was procured from a local health centre, and 0.5 mL



of this sample was subsequently diluted with 4.5 mL of phosphate-buffered saline (PBS). This diluted sample was then introduced into MH broth media. The resulting culture was incubated overnight in a shaking incubator maintained at 37°C and 300 RPM until it reached a concentration of 0.5 McFarland units. This cultured preparation was subsequently employed for assessing antimicrobial activity. Figure 3 schematically represents the process followed for sample isolation and culture.

Previous research has indicated that the most prevalent microbial species implicated in osteomyelitis is *Staphylococcus aureus*, which is followed by *Pseudomonas aeruginosa*, *Staphylococcus epidermidis*, and *Escherichia coli*. To identify the specific microbial species present in our culture sample, we plated it on Cetrimide agar, Mannitol Salt agar, and M-Lauryl Sulphate agar. These plates were subjected to an overnight incubation period and subsequently visually inspected to determine the species present.

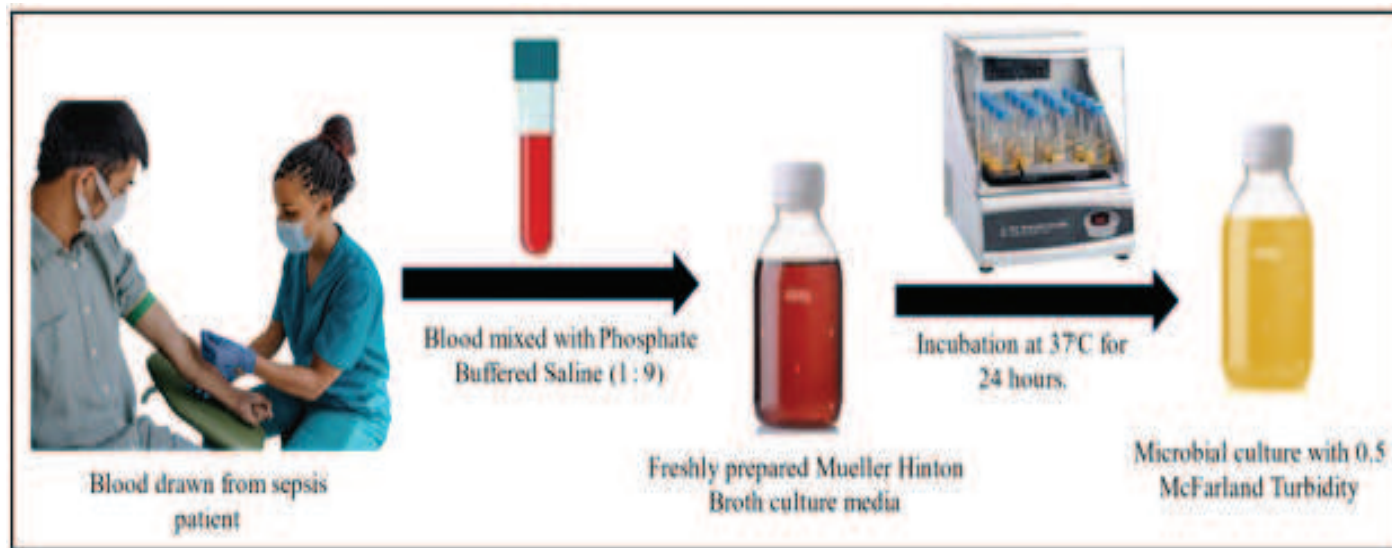


Figure 3 Schematic representation of microbial culture for microbial studies.

### Drug evaluation studies in simulated microbial culture

The assessment of the formulation's antibacterial properties against the bacterial culture was conducted utilizing the OD 600 method. Glass tubes were sterilized, and 10 ml of freshly prepared MH broth was dispensed into these tubes. Subsequently, 500  $\mu$ L of the bacterial culture solution was added to each glass tube and incubated for 3 hours. To these tubes, Ayurvedic formulation solution, diluted with deionized water at ratios ranging from 30 to 80 mg/mL was pipetted into the culture tubes.

The control samples were prepared by incorporating Vancomycin in concentrations ranging from 40 mg/mL to 80 mg/mL, mixed with 1000  $\mu$ L of deionized water, into the respective culture tubes. All the culture tubes, both those with ayurvedic formulation and those with Vancomycin controls, were then placed in an incubator set at 37°C and incubated for a duration of 3, 6, 12, and 18 hours. Following the incubation period, the solutions from each culture tube were transferred into a 96-well plate. Subsequently, the absorbance

of the solutions was measured at a wavelength of 600 nm using a spectrophotometer.

### Statistical Analysis

All the experiments were performed in triplicates and negative controls were used to check for contamination throughout the study. To assess the significance of the difference t-test was performed on the data.

### Results and Discussion

#### Analysis of ayurvedic formulation

Fourier transform Infrared Spectroscopy was used for functional group identification of the developed ayurvedic formulation. The FT-IR spectra (figure 4) of the formulation of various functional groups such as O-H alcohol (3286  $\text{cm}^{-1}$  Strong, Broad), C-H alkane (2920  $\text{cm}^{-1}$  Strong), =C-H aldehyde (2849  $\text{cm}^{-1}$  medium), Acyclic ketone (1709  $\text{cm}^{-1}$  strong), N-H amide (1608  $\text{cm}^{-1}$  bending), c=c aromatic (1450  $\text{cm}^{-1}$  multiple bands), C-N amine (1312, 1204  $\text{cm}^{-1}$ ), C-F Alkyl Halide (1025  $\text{cm}^{-1}$  strong), =C-H alkene (508,668 and 758  $\text{cm}^{-1}$  strong). Presence of multiple functional groups presents multiple sites for free radical generation which play an important role in the antibacterial activity of the material.

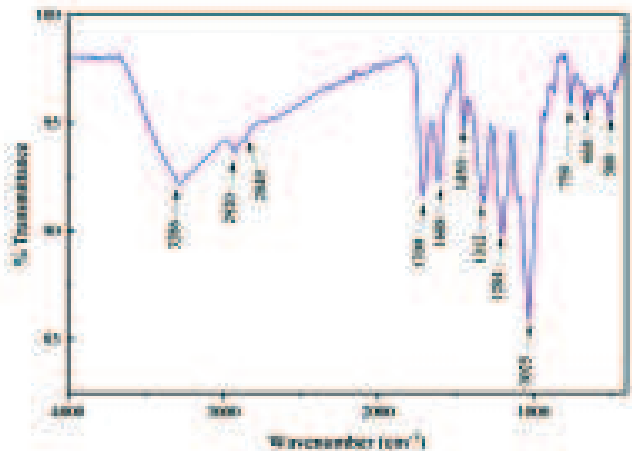


Figure 4 FT-IR spectra of ayurvedic formulation used in this study.

Table 1: Different microbes identified from the blood culture samples.

Sample Number	Staphylococcus aureus	Pseudomonas aeruginosa	Staphylococcus epidermidis	Escherichia coli
Sample 1	Positive			
Sample 2	Positive			Positive
Sample 3	Positive	Positive		

### Evaluation of antimicrobial efficacy of ayurvedic formulation

The antibacterial activity of the ayurvedic formulation was evaluated against blood culture samples over 24 hours with periodic measurement at 3, 6, 12 and 24 hours. Vancomycin a popular antibiotic was used as a positive control and deionised water was used as negative control. Figure 5 shows the bacterial concentration over various times for blood culture sample. The infecting microbe in this case was Staphylococcus aureus. Vancomycin being highly effective against Staphylococcus aureus showed significant inhibition of the bacterial growth. It was found that increasing the concentration of Vancomycin leads to higher inhibition of bacterial microbes compared to lower concentration. In case of ayurvedic formulation, the bacterial inhibition was higher compared to vancomycin leading to lower bacterial concentration compared to vancomycin containing samples.

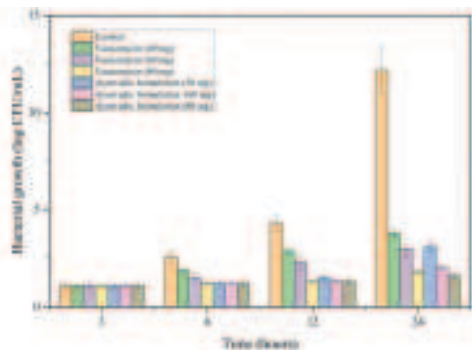


Figure 5 Bacterial growth over 3,6,12 and 24 hours for blood culture for sample 1 with Vancomycin drug and ayurvedic drug.

### Isolation and identification of infecting microbes

The microbes found in the cultured samples are presented in Table 1. All the samples tested positive for the presence of Staphylococcus aureus microbes. Sample 1 is a monoculture sample containing Staphylococcus aureus whereas sample 2 and sample 3 were co-culture of Staphylococcus aureus with Escherichia coli and Pseudomonas aeruginosa respectively. All the samples tested negative for Staphylococcus epidermidis microbes. Although the presence of other infectious microbes cannot be ruled out, the samples were tested for all the commonly infecting microbes.

In Sample 2 derived from patient 2, (figure 6) the infecting microbes are a co-culture of Staphylococcus aureus and Escherichia coli. Vancomycin and the ayurvedic formulation both inhibited bacterial growth in the microbial culture. However, in this case the bacterial load was found to be substantially higher in samples with lower dosage of vancomycin compared to higher dosage. Also the bacterial inhibition of ayurvedic formulation was higher even at lower dosage quantities compared to vancomycin.

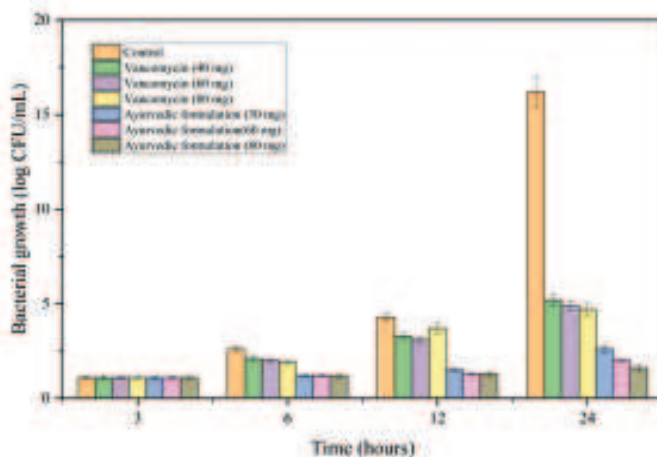


Figure 6 Bacterial growth over 3,6,12 and 24 hours for blood culture for sample 2 with Vancomycin drug and ayurvedic drug.

In case of sample 3 derived from patient 3 (figure 7), vancomycin was incapable of inhibiting the bacterial growth. The bacterial concentration in vancomycin treated cultures

was nearly equal to the negative control of deionised water. Ayurvedic formulation showed significant inhibition of bacterial growth and had lower bacterial concentration over the period. The sample is a co-culture of *Staphylococcus aureus* and *Pseudomonas aeruginosa* which are gram-negative and gram-positive bacteria respectively. Due to vancomycin being more effective against gram-negative bacteria, the gram-positive *Pseudomonas aeruginosa* was able to evade the antibiotic action and was able to proliferate in the bacterial medium. It can be observed from the results that ayurvedic formulation showed consistent antibacterial capabilities against samples with the common osteomyelitis infecting microbes.

### Comparison of antimicrobial action mechanism

Vancomycin, a glycopeptide antibiotic, and ayurvedic formulation, a class of polyphenolic compounds with demonstrated antimicrobial properties, represent distinct yet effective approaches in combating microbial infections. Vancomycin operates primarily by inhibiting bacterial cell wall synthesis. It specifically targets the D-alanyl-D-alanine portion of the bacterial cell wall precursor, preventing its incorporation into the growing peptidoglycan chain. This mechanism disrupts cell wall formation and ultimately leads to bacterial cell lysis[11], [12].

On the other hand, the antimicrobial strategy of ayurvedic formulation is characterized by a multifaceted three-pronged approach. Ayurvedic formulation possess the ability to interact with microbial surfaces, disrupting membrane integrity and permeability. This interference compromises the structural integrity of the microbial cell, leading to leakage of cellular contents and eventual cell death. Additionally, ayurvedic formulation exhibit the capacity to complex with microbial proteins, thereby inhibiting enzymatic activities vital for microbial survival. This protein-tannin interaction further disrupts essential cellular processes, contributing to the overall antimicrobial effect. Furthermore, ayurvedic formulation demonstrate affinity towards bacterial cell wall components, particularly lipopolysaccharides. By binding to these outer membrane constituents, ayurvedic formulation interfere with the stability and function of the microbial membrane, disrupting its barrier properties. This disruption not only compromises membrane integrity but also impedes vital cellular functions, contributing to the bactericidal activity of ayurvedic formulation.

While vancomycin and ayurvedic formulation differ in their specific mechanisms, both exert their antimicrobial effects by targeting essential components crucial for microbial survival. Vancomycin focuses on inhibiting cell wall synthesis in a highly specific manner, whereas ayurvedic formulation adopt a broader, three-pronged strategy involving interactions with microbial surfaces, proteins, and cell wall components. This multipronged approach leads to higher efficacy of the ayurvedic formulations compared to vancomycin. Figure 9 schematically represents the antimicrobial mechanism adopted by vancomycin and the ayurvedic formulation.

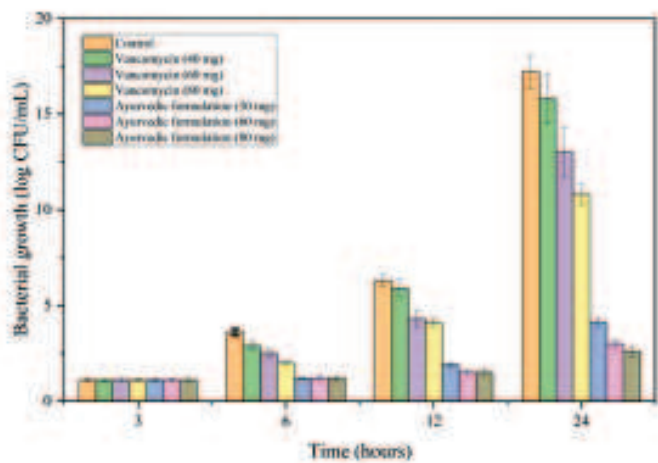


Figure 7 Bacterial growth over 3,6,12 and 24 hours for blood culture for sample 3 with Vancomycin drug and ayurvedic drug.

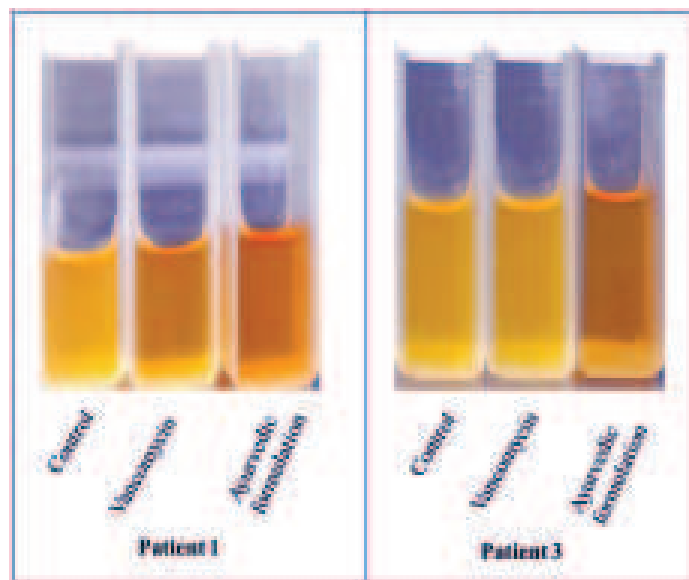


Figure 8 Optical images of Bacterial growth in samples treated with different therapeutics after 24 hours of incubation for samples obtained from patient 1 and 3.

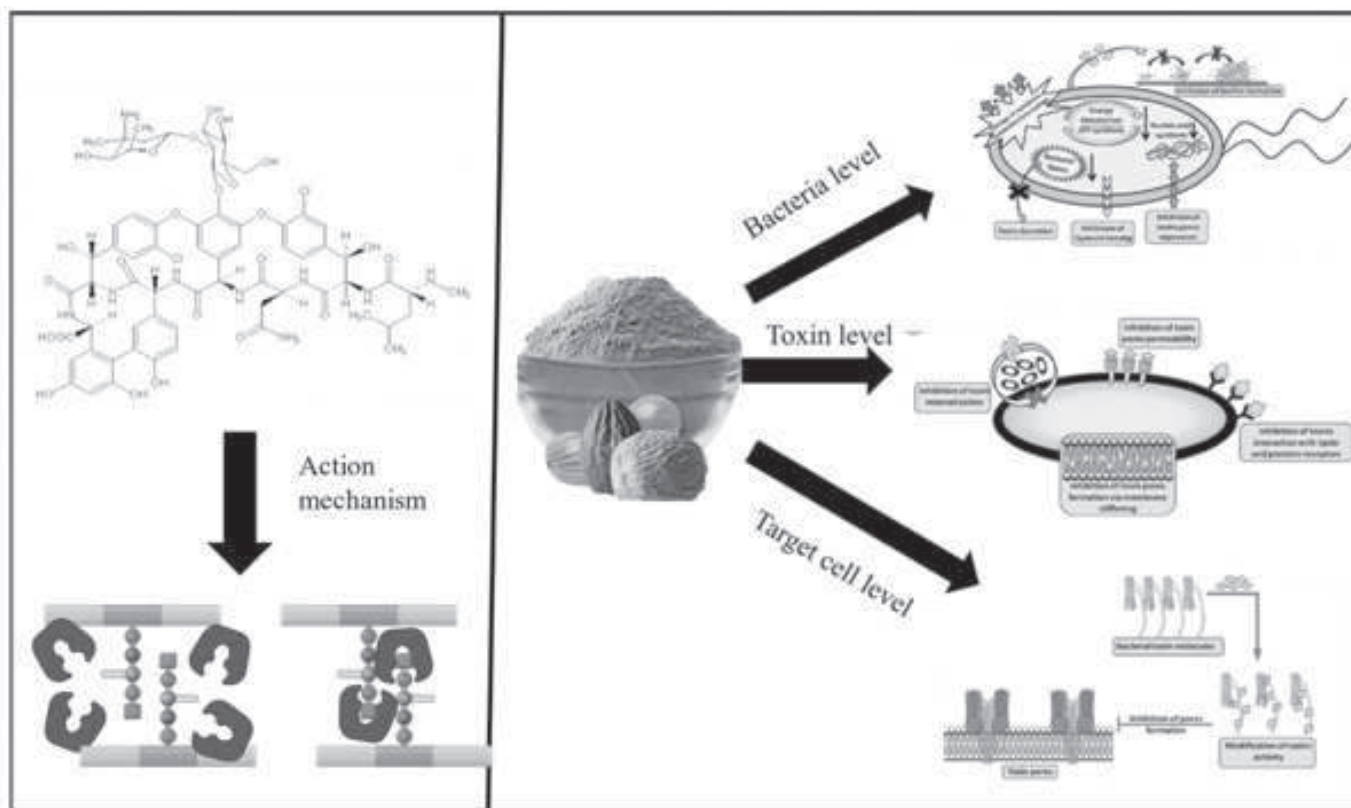


Figure 9 Schematic representation of antibacterial mechanism of vancomycin (left) and ayurvedic formulation (right).

## Conclusion

The escalating challenge of antimicrobial-resistant strains in hematogenous infections necessitates a paradigm shift in therapeutic approaches. This research has delved into the potential of a traditional Indian Ayurvedic medicinal formulation, composed of Amalaki, Bibhitaki, and Haritaki, as a viable alternative in combating resistant strains in hematogenous infections. The study highlighted the complexity of bacteraemia, emphasizing the diverse microbial species involved and the multifaceted factors contributing to antibiotic resistance. Our investigation utilizing a simulated microbial culture demonstrated the superior antibacterial efficacy of the Ayurvedic formulation compared to varying doses of the standard antibiotic, Vancomycin, against a hematogenous infection co-culture.

The observed effectiveness of the Ayurvedic formulation, coupled with its recognized antimicrobial properties, suggests a promising avenue for alternative therapy in the face of antibiotic resistance. These findings provide valuable insights into the potential of Ayurveda-based interventions, offering a novel perspective on managing the challenges posed by resistant strains in hematogenous infections. Further clinical studies and translational research are imperative to validate these findings and establish the

safety and efficacy of Ayurvedic interventions in real-world settings. In the pursuit of effective solutions against antimicrobial resistance, this research contributes to the growing body of knowledge exploring traditional medicinal formulations as potential allies in the battle against resistant hematogenous infections.

## Acknowledgements

Authors acknowledge the support from AICTE IKS division (2-23/AICTE/IKS-BGS1/ResearchProject/2022-23/22).

## References

- [1] J. Levin, T. E. Poore, N. P. Zauber, and R. S. Oser, "Detection of Endotoxin in the Blood of Patients with Sepsis Due to Gram-Negative Bacteria," *New England Journal of Medicine*, vol. 283, no. 24, pp. 1313–1316, Dec. 1970, doi: 10.1056/NEJM197012102832404.
- [2] M. Goldman and M. A. Blajchman, "Blood Product-Associated Bacterial Sepsis," *Transfus Med Rev*, vol. 5, no. 1, pp. 73–83, Jan. 1991, doi: 10.1016/S0887-7963(91)70194-6.
- [3] Y. Hattori, K. Hattori, T. Suzuki, and N. Matsuda, "Recent advances in the pathophysiology and molecular basis of sepsis-associated organ dysfunction: Novel therapeutic implications and challenges," *Pharmacol Ther*, vol. 177, pp. 56–66, Sep. 2017, doi: 10.1016/j.pharmthera.2017.02.040.

- [4] A. M. Garofalo et al., “Histopathological changes of organ dysfunction in sepsis,” *Intensive Care Med Exp*, vol. 7, no. S1, p. 45, Jul. 2019, doi: 10.1186/s40635-019-0236-3.
- [5] J. Cavaillon, M. Adib-conquy, C. Fitting, C. Adrie, and D. Payen, “Cytokine Cascade in Sepsis,” *Scand J Infect Dis*, vol. 35, no. 9, pp. 535–544, Jan. 2003, doi: 10.1080/00365540310015935.
- [6] D. De Backer, J. Creteur, J.-C. Preiser, M.-J. Dubois, and J.-L. Vincent, “Microvascular Blood Flow Is Altered in Patients with Sepsis,” *Am J Respir Crit Care Med*, vol. 166, no. 1, pp. 98–104, Jul. 2002, doi: 10.1164/rccm.200109-016OC.
- [7] M. W. Dünser et al., “Arterial blood pressure during early sepsis and outcome,” *Intensive Care Med*, vol. 35, no. 7, pp. 1225–1233, Jul. 2009, doi: 10.1007/s00134-009-1427-2.
- [8] M. Miranda, M. Balarini, D. Caixeta, and E. Bouskela, “Microcirculatory dysfunction in sepsis: pathophysiology, clinical monitoring, and potential therapies,” *American Journal of Physiology-Heart and Circulatory Physiology*, vol. 311, no. 1, pp. H24–H35, Jul. 2016, doi: 10.1152/ajpheart.00034.2016.
- [9] N. Heming, L. Lamothe, X. Ambrosi, and D. Annane, “Emerging drugs for the treatment of sepsis,” *Expert Opin Emerg Drugs*, vol. 21, no. 1, pp. 27–37, Jan. 2016, doi: 10.1517/14728214.2016.1132700.
- [10] C.-L. Moo et al., “Mechanisms of Antimicrobial Resistance (AMR) and Alternative Approaches to Overcome AMR,” *Curr Drug Discov Technol*, vol. 17, no. 4, pp. 430–447, Sep. 2020, doi: 10.2174/1570163816666190304122219.
- [11] D. Zeng et al., “Approved Glycopeptide Antibacterial Drugs: Mechanism of Action and Resistance,” *Cold Spring Harb Perspect Med*, vol. 6, no. 12, p. a026989, Dec. 2016, doi: 10.1101/cshperspect.a026989.
- [12] S. Selim, “Mechanisms of gram positive vancomycin resistance (Review),” *Biomed Rep*, vol. 16, no. 1, p. 7, Nov. 2021, doi: 10.3892/br.2021.1490.

<sup>1</sup>*Department of Mechanical Engineering, Indian Institute of Technology Tirupati, Andhra Pradesh 517619, India*

<sup>2</sup>*Department of Postgraduate Studies in Dravyaguna, S.V. Ayurvedic College, Tirupati. India*

# Unveiling the Tapestry of the Indian Knowledge System : Past, Present and Future Perspectives

□ Prof. Rohinikumar S. Hilli<sup>1</sup> & Dr. Pranesh Shantaram<sup>2</sup>

## Abstract

*The Indian knowledge system is an intricate tapestry woven over millennia, encompassing diverse fields such as philosophy, science, mathematics, medicine, and spirituality. This research paper aims to delve into the rich history, evolution, and contemporary relevance of the Indian knowledge system. By exploring the ancient scriptures, philosophical treatises, and modern advancements, we seek to understand the foundational principles that have shaped and sustained this unique system of knowledge.*

**Keywords :** Indian Knowledge System, Vedas, Upanishads, Mahabharata, Ramayana, Vedanta, Advaita, Dvaita

## Introduction

India, a land with a rich and diverse cultural tapestry, has cultivated a profound heritage of intellectual exploration that spans several millennia. Rooted in ancient texts such as the Vedas, Upanishads, and epic narratives like the Mahabharata and Ramayana, the Indian knowledge system has endured as a beacon of wisdom and enlightenment.

### 1.1 Background

The intellectual pursuits of India's past have left an indelible mark on the world's intellectual landscape. The roots of the Indian knowledge system can be traced back to the sacred Vedas, repositories of hymns and rituals that provide a glimpse into the spiritual and philosophical foundations of ancient India. The Upanishads, with their profound metaphysical discussions, and the epic narratives of the Mahabharata and Ramayana, have further enriched this legacy. These ancient texts serve as the bedrock upon which the edifice of the Indian knowledge system stands.

### 1.2 Objectives

This research paper is a journey through the annals of time, seeking to unfold the layers of the Indian knowledge system. The key objectives are:

#### a. Uncover the Historical Development of the Indian Knowledge System:

In tracing the historical trajectory, we aim to discern

the evolutionary path of India's intellectual heritage. From the Vedic period to the classical era, the paper will explore the key milestones that have shaped the knowledge system.

#### b. Analyze the Philosophical Underpinnings:

At the heart of the Indian knowledge system lies a rich tapestry of philosophical thought. By delving into Vedanta, Nyaya, Vaisheshika, and other schools of philosophy, we seek to unravel the profound insights that form the philosophical bedrock of Indian thought.

#### c. Examine the Contributions of Ancient Indian Scholars:

Throughout history, India has been home to visionary scholars who have made groundbreaking contributions to various fields. This section aims to highlight the achievements of luminaries like Aryabhata, Susruta, and others who have left an indelible mark on fields such as mathematics, medicine, and astronomy.

#### d. Explore the Adaptation and Integration:

The dynamism of the Indian knowledge system lies in its ability to adapt and integrate into changing contexts. This part of the research will explore how ancient wisdom has seamlessly merged with modern perspectives, especially in areas like yoga, spirituality, and its relevance in contemporary scientific discourse.

As we embark on this exploration, we aim to shed light on the enduring legacy of the Indian knowledge system, understanding its historical roots, philosophical depth, scholarly contributions, and its relevance in a world that is constantly evolving.

## Historical Development

### 2.1 Vedic Period

The cradle of the Indian knowledge system rests upon the ancient texts known as the Vedas. Dating back thousands of years, the Rigveda, Samaveda, Yajurveda, and Atharvaveda stand as venerable pillars, embodying the spiritual, ritualistic, and philosophical essence of ancient India. These sacred scriptures are not merely repositories of hymns and rituals;

they are profound reflections that provide invaluable insights into the worldview, cosmology, and societal fabric of the early Indian civilization. The Vedic period laid the groundwork for a holistic understanding of life, where spiritual wisdom and practical knowledge were intricately interwoven.

## 2.2 Classical Period

The classical era of Indian history witnessed a flourishing of intellectual pursuits across various disciplines, marking a golden age of scholarship and innovation. In this epoch, distinguished scholars and polymaths played pivotal roles in shaping the intellectual landscape of ancient India.

### Advancements In Mathematics:

Aryabhata, a luminary of the classical period, made groundbreaking contributions to mathematics. His treatise “Aryabhatiya” delves into arithmetic, algebra, geometry, and trigonometry, showcasing a level of mathematical sophistication that was unparalleled in its time. The legacy of Indian mathematics influenced later developments in the Islamic world and laid the foundation for Western mathematical thought.

### Advancements In Medicine:

Susruta, often regarded as the father of surgery, authored the “SusrutaSamhita,” a comprehensive text on medicine and surgery. His systematic approach to healthcare included detailed descriptions of surgical procedures, anatomy, and medicinal plants. Susruta’s contributions laid the groundwork for Ayurveda, the traditional system of medicine in India.

### Advancements In Philosophy:

The classical period also witnessed profound philosophical developments. Chanakya, also known as Kautilya or Vishnugupta, composed the “Arthashastra,” an ancient Indian treatise on statecraft, economic policy, and military strategy. His work reflects a nuanced understanding of governance and ethics, contributing significantly to the field of political philosophy.

### Advancements In Astronomy:

The classical Indian astronomers, including Brahmagupta, made significant strides in understanding celestial phenomena. Brahmagupta’s work “Brahmasphutasiddhanta” contains seminal contributions to mathematics and astronomy, including the concept of zero and advancements in trigonometry.

In essence, the classical period represents a pinnacle of intellectual achievement in ancient India, with scholars across disciplines making enduring contributions that have left an indelible mark on the intellectual heritage of the Indian subcontinent.

## Philosophical Underpinnings

### 3.1 Vedanta

Vedanta, often referred to as the “end of the Vedas,” is a philosophical system that encapsulates profound insights into the nature of reality, consciousness, and the self. Emerging from the concluding sections of the Vedas, Vedanta serves as a philosophical beacon, guiding seekers on a journey to unravel the mysteries of existence. Three major schools of thought within Vedanta—Advaita, Dvaita, and Vishishtadvaita—offer diverse perspectives on the ultimate reality.

#### Advaita Vedanta:

Propounded by Adi Shankaracharya, Advaita Vedanta asserts the non-dual nature of reality. It posits that the individual soul (Atman) is identical to the ultimate reality (Brahman). Through a process of self-realization, one transcends the illusion of duality and recognizes the underlying unity of all existence.

#### Dvaita Vedanta:

Championed by Madhvacharya, Dvaita Vedanta presents a dualistic worldview. It asserts the eternal distinction between the individual soul and the supreme reality. Madhvacharya emphasized devotion (bhakti) as the means to attain salvation, emphasizing the eternal relationship between the individual and the divine.

#### Vishishtadvaita Vedanta:

Founded by Ramanuja, Vishishtadvaita Vedanta reconciles the concepts of non-duality and duality. It posits that while the individual souls are distinct from the supreme reality, they are intricately connected to it. Ramanuja’s philosophy emphasizes the path of devotion and self-surrender (prapatti) as a means to attain spiritual liberation.

### 3.2 Nyaya and Vaisheshika

#### Nyaya:

Nyaya, one of the classical Indian philosophical systems, focuses on logic, epistemology, and metaphysics. Rooted in the Nyaya Sutras attributed to sage Gautama, this system provides a systematic and analytical framework for understanding the nature of knowledge and reality. Nyaya explores logical reasoning (tarka), inference (anumana), and verbal testimony (shabda) as valid means of acquiring knowledge.

#### Vaisheshika:

Vaisheshika, attributed to the sage Kanada, is another classical philosophical system that complements Nyaya. It delves into metaphysics and atomistic theory, postulating that the universe is composed of discrete, indivisible particles called atoms (anu). Vaisheshika categorizes everything in the universe into nine fundamental substances and explores the

principles of causation and inference.

Together, Nyaya and Vaisheshika provide a structured and comprehensive approach to understanding the nature of knowledge, reality, and existence, contributing significantly to the philosophical heritage of ancient India. These systems continue to influence philosophical discourse and contribute to the broader understanding of metaphysics and epistemology.

## **Contributions of Indian Scholars**

### **4.1 Mathematics**

Indian mathematicians, hailing from a rich tradition of intellectual exploration, have left an indelible mark on the world of mathematics. Their contributions, spanning centuries, have not only shaped the Indian mathematical landscape but have reverberated globally, influencing subsequent developments in the Islamic and Western worlds.

#### **Brahmagupta:**

Brahmagupta, an eminent mathematician and astronomer of the 7th century, made pioneering contributions to algebra and number theory. His seminal work, the “Brahmasphutasiddhanta,” explored solutions to quadratic equations, introduced the concept of zero, and provided methods for calculating square roots. Brahmagupta’s contributions laid the foundation for algebraic developments in both Eastern and Western mathematical traditions.

#### **Bhaskara II:**

Bhaskara II, a mathematician and astronomer from the 12th century, further enriched Indian mathematics. His treatise, the “Lilavati” and “Bijaganita,” delved into algebra, geometry, and number theory. Bhaskara II’s work included solutions to indeterminate equations, quadratic equations, and advancements in arithmetic and trigonometry. His influence extended beyond the Indian subcontinent, impacting the mathematical advancements of medieval Islamic scholars and later contributing to the development of Western mathematics.

The mathematical legacy of Brahmagupta and Bhaskara stands as a testament to the advanced understanding and innovative spirit that characterized Indian mathematical thought.

### **4.2 Medicine**

The Indian tradition of medicine, encapsulated in texts like the “SusrutaSamhita,” has significantly contributed to the field of healthcare, emphasizing a holistic approach to well-being. Additionally, Ayurveda, the traditional system of medicine, continues to exert a profound influence on modern wellness practices.

#### **SusrutaSamhita:**

Attributed to the ancient sage Susruta, the “SusrutaSamhita” is a comprehensive compendium of surgical

practices. Dating back to around the 6th century BCE, it details various surgical procedures, anatomy, and medical treatments. Susruta’s systematic approach to surgery and medicine laid the foundation for surgical practices in ancient India and beyond.

#### **Ayurveda:**

Ayurveda, often referred to as the “science of life,” is a holistic system of medicine that originated in ancient India. It encompasses a personalized approach to health and wellness, focusing on the balance of bodily elements (doshas), diet, and lifestyle. Ayurveda’s principles of preventive healthcare and natural healing have gained global recognition, influencing modern wellness practices and complementary medicine.

The contributions of Indian scholars in mathematics and medicine have been monumental, shaping the course of these disciplines and leaving a lasting legacy that continues to impact global knowledge systems.

## **Adaptation and Integration**

### **5.1 Yoga and Spirituality**

Yoga, an ancient practice rooted in the Indian knowledge system, has transcended cultural boundaries and garnered global acclaim for its holistic approach to physical, mental, and spiritual well-being. The integration of yoga into diverse cultures worldwide exemplifies its adaptability and universal relevance.

#### **Holistic Well-being:**

Yoga, originating from ancient texts such as the Yoga Sutras of Patanjali, encompasses a holistic system that integrates physical postures (asanas), breath control (pranayama), ethical guidelines, and meditation. Its emphasis on balance and harmony resonates with individuals seeking a comprehensive approach to well-being.

#### **Spiritual Exploration:**

Beyond physical fitness, yoga delves into the spiritual dimensions of human existence. Practices such as meditation and mindfulness, integral to yogic philosophy, offer a pathway for self-discovery, inner peace, and heightened consciousness. The integration of spirituality into yoga aligns with the broader Indian knowledge system, which recognizes the interconnectedness of the physical, mental, and spiritual realms.

#### **Global Impact:**

The widespread adoption of yoga across the globe showcases its adaptability. Yoga studios, wellness retreats, and mindfulness programs have become ubiquitous, fostering a global community of practitioners who seek to enhance their overall well-being through the wisdom of ancient Indian traditions.



## 5.2 Modern Scientific Relevance

In a fascinating convergence of traditions, contemporary scientists are increasingly turning to ancient Indian texts to explore insights into consciousness, meditation, and holistic health. This intersection of traditional wisdom and modern science exemplifies the adaptive nature of the Indian knowledge system.

### Consciousness Studies :

Ancient Indian philosophical texts, particularly those in the Vedantic tradition, provide perspectives on consciousness that resonate with contemporary studies in neuroscience and psychology. The exploration of states of consciousness, meditation, and mindfulness practices has led to a growing acknowledgment of the potential benefits for mental health and cognitive well-being.

### Holistic Health Practices:

Ayurveda, the traditional system of medicine, is gaining recognition in the modern healthcare landscape. The integration of Ayurvedic principles, including personalized diet, lifestyle modifications, and herbal remedies, aligns with the shift towards holistic and integrative medicine.

### Mind-Body Connection:

The emphasis on the mind-body connection in Indian traditions finds resonance in modern approaches to health and wellness. Practices such as meditation and yoga have been scientifically studied for their positive effects on stress reduction, mental health, and overall physiological well-being.

The bridge between traditional Indian wisdom and modern scientific inquiry reflects a dynamic interplay between ancient insights and contemporary advancements, fostering a cross-cultural dialogue that enriches both traditions. This adaptability and integration underscore the enduring relevance of the Indian knowledge system in addressing the complex challenges of the modern world.

### Conclusion

In the pursuit of unraveling the layers of the Indian knowledge system, we find ourselves immersed in a timeless legacy that defies the constraints of geography and time. From the profound hymns of the Vedas to the intricate mathematical formulations of ancient scholars, from the surgical wisdom of Susruta to the meditative depths of yoga, the Indian knowledge system stands as a testament to the intellectual richness cultivated over millennia.

The interplay of philosophy, science, and spirituality within this system has not only shaped the intellectual discourse of the Indian subcontinent but has also reverberated across Eastern and Western spheres. The philosophical underpinnings of Vedanta, Nyaya, and Vaisheshika, coupled with the contributions of Indian mathematicians and medical scholars, have created a multidimensional tapestry that addresses the intricacies of human existence.

The adaptability and integration of elements like yoga

into global wellness practices and the growing interest of contemporary scientists in ancient Indian wisdom signal a remarkable synergy between tradition and modernity. This interweaving of the ancient with the contemporary fosters a holistic understanding of the human experience, transcending cultural boundaries and contributing to a more nuanced and interconnected world.

This research paper serves as a humble endeavor to illuminate the enduring significance of the Indian knowledge system. As we navigate the intellectual landscapes shaped by the Vedas, classical scholars, and philosophical schools, we recognize that this system is not confined to the past but remains a vibrant source of inspiration for our ongoing quest for wisdom and enlightenment. The legacy of the Indian knowledge system is an ever-flowing river, continuously nourishing the minds and spirits of those who engage with its profound depths.

### References :

1. Radhakrishnan, S. (1996). The Principal Upanishads. HarperOne.
2. Bhagavad Gita.
3. The Mahabharata.
4. The Ramayana.
5. Susruta. (1916). SusrutaSamhita. (Trans. Kaviraj KunjaLal Bhishagratna)
6. Shankaracharya, A. (1969). Brahma Sutras. AdvaitaAshrama.
7. Madhvacharya. (1934). Sarva-Darshana-Sangraha. (Trans. E. B. Cowell and A. E. Gough)
8. Ramanuja. (1914). Sri-Bhasya. (Trans. George Thibaut)
9. Kanada. (2013). Vaisheshika Sutras. (Trans. NandalalSinha)
10. Aryabhata. (1998). Aryabhatiya. (Trans. K. S. Shukla)
11. Bhaskara II. (2016). Lilavati. (Trans. K. S. Shukla)
12. Patanjali. (2002). The Yoga Sutras. (Trans. Swami Satchidananda)
13. Frawley, D. (2000). Ayurveda and the Mind. Lotus Press.
14. Radhakrishnan, S. (1957). The Bhagavadgita: With an Introductory Essay, Sanskrit Text, English Translation, and Notes. HarperCollins.
15. Chopra, D., & Simon, D. (2004). The Seven Spiritual Laws of Yoga. Wiley.
16. Chopra, D. (1990). Quantum Healing: Exploring the Frontiers of Mind/Body Medicine. Bantam.
17. Shastri, J. L. (2001). Science and Philosophy in Ancient India. Sundeep Prakashan.
18. Subbarayappa, B. V. (1989). Indian Astronomy: An Historical Perspective. Hindustan Book Agency.

- HKE Society's, M.S. Irani Degree College of Arts,  
Science and Commerce, Kalaburagi – 582102 -  
Karnataka

# The Science of Living and Hinduism

□ Prof. Anil Kumar

## **Abstract :**

*The science of living is based upon the understanding of the knowledge of matter, life, health, changes and coincidences, and doing accordingly. It develops scientific approach among people to be flexible for accepting new technology and changes, because most of them are demands of time and for the betterment of human beings. In Hinduism, the natural powers are worshiped because they give energy and life to people, hence these are truly Lords. Hindu scriptures are the source of scientific knowledge. The way of life as per Hinduism is to respect nature and to live ecofriendly with nature. Hinduism philosophy is full of scientific facts and helps in enhancing the amicability and knowledge.*

**Keywords:** Changes, Coincidences, Health, Hinduism, Matter, Life, Science of Living.

## **1. Introduction**

The purpose of study of literature, science and technology has been to make human life better and useful. The science of living is proposed to develop scientific attitude among people to achieve this desired goal [1]. People are continuously exploiting natural resources in unscientific ways; this results in the form of natural disasters and pandemics. If we people will understand the science of living and act accordingly, so that these disasters and pandemics will be reduced and simultaneously, we can tackle them in a better way. Indian government is also working on constructing new hospitals and increasing health services for the people to overcome health related problems.

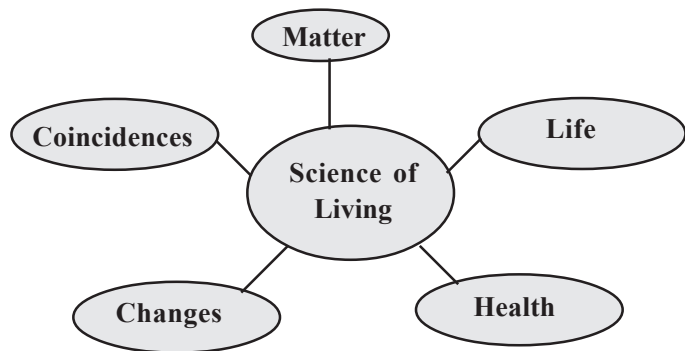
The use of electronic media is continuously increasing. That is, the People have been making e-payment, online video meet, conferences etc, so that the loss of money, time and environment is reducing. Nowadays, the people understand that diseases are not the divine curse, but these are due to anthropogenic activities. Obviously, the approach of the science of living has been developing among people. This approach to the science of living may be a useful tool for the development and welfare of the entire human community

[2]. I am not only hopeful but fully confident that if our leaders and intellectuals will also encourage the people towards this direction of understanding and following the science of living, this will be a milestone in the tour of progress of humanity. Nowadays, the unscientific approach of the Indian people is behind their many social and economic problems. In the form of pathogenic disasters and pandemics, nature provides opportunities to the people for developing the approach of the science of living. We people will understand the silence indication of nature and develop the approach of the science of living and will be benefited.

Hindu scriptures are the source of both spiritual knowledge and science and technology [3-4]. In Hinduism, the fire (Agni) is worshiped as God and several trees like Ficus Religiosa (Peepal), Banyan etc. are also worshiped. Agni is also assumed as a medium between earth and heaven (Lok and Parlok), therefore in all rituals, Agni worship plays a vital role. The sixteen rites of Hinduism are based upon scientific facts and remove darkness and unawareness of a person, so that he could interview with light and knowledge [5]. Knowledge, Restrain and Sacrifice are the keywords of Hinduism. The philosophy of Hinduism is based upon the World is One Family (VasudhaivaKutumbakam) and Arise (Sarvodaya). Flexibility is an important factor of the Hinduism by which it welcomes and adopts the changes occurring in the society by virtue of the development of science. Hinduism respects rituals and beliefs of other religions equally and gives equal opportunities for their flourishing. Satyam Shivam Sundaram is the main slogan of Hinduism which means that the Truth is Lord Shiva and that is the beautiful [6-7].

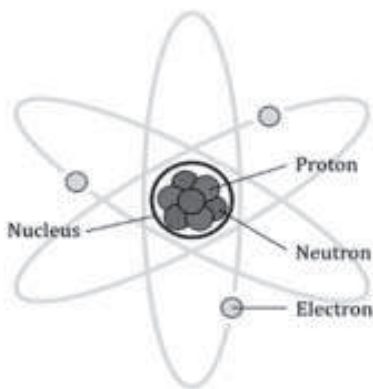
## **2. The Science of Living**

The science behind the life is called the science of living. By knowing and assimilating the basic concepts of the science of living, one can make his/her life longer, healthy and happy. The science of living is mainly based upon basic scientific knowledge of the followings five truths [8]:-



**Figure 1 : Five truth of the science of living**

**i) Matter :** The goal of nature is the welfare of all. There is a scientific reason not divine curse behind every natural phenomenon. Our lifestyle should be cooperative with nature and we should be thankful to the natural powers like Sun, Moon, Earth, Air, Water, Trees, etc. Protection and conservation of nature should be part of our life for the protection of us. Fruits of the trees, water of the rivers, smell of air, etc. are not for them, but for the others uniformly [9]. Nature teaches us to help others and that our life should be for society and nation. We are facing today the challenge of industrialization, liberalization and urbanization to make sure availability of fresh air and clean water to our people. Our approach should be of eco-friendly development. Nature is made up by matter, so that the basic knowledge of the structure of matter and the laws obeyed by this should be known.



**Figure 2: Structure of Atom**

**ii) Life :** Any individual animal, plant, bacterium, etc. maintains life and its activity, is known as an organism. It is an individual form of life that can grow, metabolizing nutrients, and usually reproducing. Organisms may be unicellular or multicellular [10]. Life is very strange and full of mystery, and the researches are continuously going on for knowing the science behind life. The living things are made-up with help of non-living things. The deoxyribonucleic acid (DNA) is the genetic material



**Figure 3: Structure of DNA**

and has the characteristics of life. The basic knowledge of the structure of DNA and other parts of organisms is also very important.

**iii) Health :** Humans should be physically and mentally healthy, because only a healthy life can be happy, longer and useful [11]. To achieve such a life, we must make our body healthy by boosting our immunity and calming our mind. For a healthy body we have to intake healthy or sattvic food. Sattvic food consists of milk, vegetables and dals with the following supporting aids: -

- **Spices :** Haldi (Turmeric), Kali Mirch (Black Pepper), Dalchini (Cinnamon), etc.
- **Medicinal Plants :** Tulsi, Neem, etc.
- **Fruits :** Amla, Citrus Fruits, Papaya, Kiwi, Jamun, etc.
- **Dry fruits :** Almond, etc.

**Regular moderate exercise may reduce inflammation and help our immune cells regenerate regularly. Jogging, biking, walking, swimming, and hiking are great options. Meditation is a process of training our mind to focus and redirect thoughts, and can improve the quality of our life.**

**iv) Changes:** Entropy is the degree of disorderness of the molecules of any system and it increases always. That is, the change in entropy of any system or universe is always positive. On the other hand, the universe is moving towards maximum disorderness (equilibrium) [12]. Based on the principle of entropy, we can say that the overall changes in the universe are beneficial to human beings. Motion is life and restness is death. Change is the law of nature. Time is always changing; therefore, we continuously face changes positively in every aspect of life. Religious, social, political, educational, etc. values also continuously change with time, so that our attitude should not be rigid for old ones but flexible for accepting these changes, because most of the changes are the demand of time and for the betterment of human beings. Therefore, we should welcome technology and development because it is for the betterment of human beings. Due to the changes, every aspect of religion and society should be sized up on the criterion of science and human betterment and thereafter it should be followed or not. This scientific approach of thinking will be helpful to reduce the religious superstitions and social evils.

**v) Coincidences :** According to modern science, there is always a probability of occurring any favourable or unfavourable event. Occurring of any event is called coincidence and this is spontaneous [13]. Therefore, we should think scientifically and positively and act accordingly over the phenomena occurring in our surroundings. We should do our best efforts for accomplishment of any work irrespective of the result.

### 3. Science of Living in Hinduism

Most Hindus believe that their faith is timeless and has always existed but many scholars argue that Hinduism started between 2300 BC to 1500 BC. Hinduism has no one founder but is a fusion of various beliefs like Shaiva, Vaishnava, Shakta, Ganesha and Surya. Hinduism believes in reincarnation, Karma, Devotion, Sacrifice, Salvation and Enlightenment [14]. The term Hindu is completely Bhartiya and is used for the people residing the region between Himalaya and Indus-Sarovar (From Brihaspati Agam), while some scholars argue that Hindu word is given by Persian for the people who reside near the Sindhu (Indus) river. Hinduism is primarily a cultural and geographic label, and later it has been applied to describe the religious practices of the Hindus. Vedas, Upanishads, Bhagavat Gita, Ramayana etc. are main scriptures of Hinduism [15]. Vedas are considered as the oldest surviving literature of mankind. They are preserving in an intact form through memorising and transmission from generation to generation over centuries, thus they are very likely to have an unaltered and authentic record. The Vedas and Upanishads are the source of spiritual and scientific knowledge. Upanishads describe Moksha for human being as freeness from all life forms move through repeated cycles of birth, death and rebirth cycle. Bhagavat Gita energises common people to do genuine efforts to build the character of good and wiseman to reach the destination spiritual life.

In Hinduism, the fire (Agni) is worshiped and several trees like Ficus Religiosa (Peepal), Banyan etc. are also worshiped. Agni is also assumed as a medium between earth and heaven (Lok and Parlok), therefore in all rituals, Agni worship plays a vital role. The sixteen rites of Hinduism are based upon scientific facts and remove darkness and unawareness of a person, so that he could interview with light and knowledge. Knowledge, Restrain and Sacrifice are the keywords of Hinduism. The philosophy of Hinduism is based upon the World is One Family (VasudhaivaKutumbakam) and Alrise (Sarvodaya) [16-17]. Flexibility is an important factor of the Hinduism by which it welcomes and adopts the changes occurring in the society by virtue of the development of science. Hinduism respects rituals and beliefs of other religions equally and gives equal opportunities for their flourishing. Satyam Shivam Sundaram is the main slogan of Hinduism which means that the Truth is Lord Shiva and that is the beautiful. In Hinduism, Tridev Brahma, Vishnu and Mahesh are the God of birth, care and death respectively [18-20]. The Hindu scriptures comprise the following scientific facts: -

#### **The Theory of the Atom was First proposed by an Indian scientist, Kanada.**

We know that universe is divided into two parts; matter and space. These two are complementary to each other. Matter is something which occupies space and has some mass. Dalton's theory says that atom is the smallest part of

the matter. But this theory namely particle (Kan) theory was first put forth by an Indian scientist Kanada before 500 BC.

#### **The Sun is Stationary.**

The fact that the Sun is stationary and the Earth revolves around it, is stated in Aitreya Brahmanas which could date to the 6th century BC. Aitreya Brahmanas states that, the Sun never really sets or rises. In that they think of him 'He is setting,' having reached the end of the day, he inverts himself; thus, he makes evening below, day above. Again, in that, they think of him 'He is rising in the morning,' having reached the end of the night he inverts himself; thus, he makes day below, night above. he never sets; indeed, he never sets.

#### **The ten incarnations of Lord Vishnu are very similar to Darwin Theory of Evolution.**

- A. Matsya - Fish
- B. Kurma - Tortoise
- C. Varaha - Boar
- D. Narasimha - Lion
- E. Vamana - Dwarf
- F. Parashuram - Man with an axe
- G. Rama - Man with bow and arrow
- H. Krishna - Clever man with Sudarshan Chakra
- I. Buddha - Man attended wisdom
- J. Kalki – Technologically and genetically advanced human beings

These ten incarnations are identical to the Darwin theory of evolution of life.

#### **The Big Bang Theory is inspired by the Hiranyagarbha mentioned in the Rig Veda.**

As per Hindu scriptures, the universe is called Brahmanand which means an egg of Brahma or expanding egg also named *Hiranyagarbha*. According to the Big Bang theory, the universe is developed from a singularity that contains all the matter, energy, and space-time into an infinitely small, dense, and ultra-hot point.

#### **The concept of the multi-universe**

According to Hindu scriptures there are many universes like the one we are living in. Every universe is covered by seven layers: earth, water, fire, air, sky, energy, and false ego; each ten times greater than the previous one. There are **many universes** besides our one, and move about like atoms in You.

#### **Intermittent Fasting**

Intermittent fasting is a trend of Hindu culture. Most of Hindus fast at least one day in a week. Recently scientists endorse the intermittent fasting for the beneficial to our health. Intermittent fasting is also helpful to reduce the starvation in the world.

#### **Hindu has a Tulsi plant in front of house**

The scientific name of the Tulsi plant is *OcimumTenuiflorum*. Hindus consider it as a sacred plant and put in front of their house. Recent studies prove that the Tulsi plant releases Ozone gas along with oxygen, which is helpful

to maintain ecological balance. Tulsi leaves have a lot of medicinal uses according to Ayurveda. Tulsi leaves strengthen our immune system and are mainly used for treating fever, common cold, cough, sore throat, and respiratory disorders.

#### 4. Conclusion

The process of technology and development is vital for the progress of any country but it should be with the coexistence of nature. It is imperative to adapt new technology and changes with the concept of the science of living. The different actions of non-living and living things can be understood by the properties of matter, because these all are made up by matter and follow the rules of matter. If we do not respect nature, we must face natural disasters and huge damage. Hinduism also talks about to be vegetarian. Health is also very important because healthy body has healthy mind. For good health we should to exercises and Yoga daily. It tells about to respect changes because this are always for the benefit of people. It talks about to do work irrespective of the results, this is also a scientific fact the probability always works.

Hinduism is basically based upon scientific facts and thinking. It tells about to worship the nature powers like Agni, Sun, Moon, Rivers, Trees etc., therefore it respects the rules of the nature and by assimilating them one remains always flexible and happy in every phase of life. By obeying the concepts of the science of living and Hinduism, we can live a healthy, happy, longer and useful life. In the modern era, the understanding of the science of living and acting accordingly become more essential and important for the betterment and welfare of the entire world which is also the philosophy of Hinduism.

#### References

1. A. Kumar (2020), The science of living for health, fitness and wellness, Proceedings of International E-conference on future roadmap for health, fitness and wellness, Journal Research Nebula, Special issue, p. 25-28.
2. A. Kumar (2023), The science of living for social upliftment of India, International Journal of Modernization in Engineering Technology and Science, Vol. 5(9), p. 530-534.
3. V. Raman, (2012), Hinduism and science: some reflections. Malden, USA: Blackwell Publishing Inc. p. 549-574.
4. R. Vijyalakshami(1993), Viewpoints: Environmental awareness: The Hindu perspective, Journal of Hindu-Christian Studies, Vol. 6, Article 12.
5. A. Widgery (1930), The principles of Hindu Ethics, International Journal of Ethics, Vol. 40(2), p. 234-237.
6. A. Parpola (2015), The Roots of Hinduism: The Early Aryans and the Indus Civilization. Oxford University Press, ISBN 978-0-19-022693-0, p. 149-156.
7. H.P. Sinha (2006), Bharatiya Darshan Ki Rooprekha, Motilal Banarsidass Publisher, ISBN 978-81-208-2144-6, p. 86-90 (Retrieved March 2015).
8. A. Kumar (2020), The science of living: A biophysical tool against coronavirus like pathogens, Proceedings of International E-conference on future roadmap for health, fitness and wellness, Vidhyabharati International Interdisciplinary Research Journal, Special issue, p. 52-55.
9. W. Demtroder (2002), Atoms, Molecules and Photons: An Introduction to Atomic- Molecular- and Quantum Physics (1st ed.), Springer, ISBN 978-3-540-20631-6, p. 39-42.
10. D.R. Brooks (2000), The nature of the organism: Life has a life of its own, Journal L Chandler; G. Van der Vijver (eds.) Closure: Emergent organizations and their dynamics. Annals of the New York Academy of Science, p. 257-265.
11. R.S. Bajpai (2002), The Splendours And Dimensions Of Yoga, Motilal Banarsidass, ISBN 978-8171569649, p. 342-345.
12. S. Prakash and J.P. Agarwal (2012), Thermodynamics and Statistical Physics, Pragati Prakashan Meerut.
13. A. Koestler (1972), The Roots of Coincidence (hardcover ed.). Random House, ISBN 978-0-394-48038-1, p. 81-86.
14. S.W. Jamison and M. Witzel (1992), Vedic Hinduism, Harvard University, p.63-73.
15. F. Staal (2008), Discovering the Vedas: Origins, Mantras, Rituals, Insights Penguin, ISBN 978-0-14-309986-4, p. 23-24, Archived from the original on 7 September 2023. (Retrieved October 2019).
16. S. Shilpa and C.G. Venkateshamurthy (2011), Understanding personality from Ayurvedic perspective for psychological assessment: A case, AYU. Vol. 32 (1), p. 12-19.
17. R.M. Gupta, K.R. Valpey (2016), The Bhagavata Purana: Sacred Text and Living Tradition. Columbia University Press, ISBN 978-0-231-54234-0, p. 60-62.
18. R.C. Mishra (2013), Moksha and the Hindu Worldview, New Delhi, India: SAGE Publications, p. 21-42.
19. M. Tiwari (1995), Ayurveda: A Life of Balance, Rochester, Healing Arts Press, 1995.
20. A. Sharma (2014), Review: Three New Books on the Bhagavad Gita, International Journal of Hindu Studies, Vol. 18(2), p. 265-272.

- Department of Physics, Hindu College, Moradabad  
Affiliated to Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand  
University, Bareilly  
Email: akumarmbd@hinducollege.edu.in

# Swami Vivekananda and the Sociology of Vedanta

□ Chandan Panda

## Abstract

The core question this paper addresses is: 'Can Vedanta be a social philosophy?'. The metaphysics of Vedanta, though a complex system with equally layered epistemology, does not apparently present definitive intellectual impressions of developing into social thought. Against this epistemological difficulty, Swami Vivekananda developed a system of neo-Vedanta that explored the pragmatic dimensions of Vedanta philosophy and made them sociologically relevant. His *Practical Vedanta* presents cogently the aspects of social philosophy deduced from Vedanta and its intellectual heritage of interwoven variants. The primary premise of Swami Vivekananda was to recognise the meaning of history which hardly received interpretative attention in Adi Shankaracharya's hermeneutics of Vedanta and his philosophical findings of the universalism of illusion (Maya) and Buddhism's doctrine of momentariness and the theory of void (Shunya). Against this philosophical legacy which did not foreground history and preferred spiritual to the political, Vivekananda developed a renewed sense of history by reinventing Vedanta. A strong sense of historical consciousness became the aetiology of the Hindu Renaissance in the 19th century against the weight of colonial historicity and the corresponding derailment of Bharat from its cultural roots. Swami Vivekananda explored the sociological relevance of Vedanta to encourage historical consciousness to wrap up the colonial rule of Bharat. Therefore, this paper explores Vivekananda's *Practical Vedanta* and its sociological logic and historical imperatives.

**Keywords:** Swami Vivekananda; Sociology of Vedanta; Colonial Historicity; Hindu Renaissance; Historical Consciousness

## Introduction

This paper presents a theoretical assumption that Swami Vivekananda developed an argument in his *Practical Vedanta*, which is a compilation of four lectures delivered in London in 1896, to historicise the metaphysical. The aetiology of this proposition is to renew our perception of history as an impediment to soteriology. To be under the limits of history

is to repeat the cycle of life and death and to experience the effects of this process adinfinitum. This conception of history develops an inattention to history. This inattention opens up the scope for contrary forces to assume significance. Against this tendency of history, Vivekananda essentialises history as a space of freedom, action and negation. Negation of history exists only in history not outside it. For Vivekananda, the weight of colonial history and the need for the Hindu Renaissance in the 19th century Bharat to alter the colonially imposed deprivation and oppression required a renewed consciousness of history. Therefore, this paper presents the outlines of different schools of Vedanta and discusses the Neo-Vedanta and the sociological dimensions of Vivekananda's *Practical Vedanta*.

## Vedanta

The compound word 'Vedanta' combines 'Veda' meaning the Four Vedas – 'Rigveda, Samaveda, Yajurveda and Atharvaveda' and 'Anta' meaning 'end' which connotes both 'culmination' and 'teleology'. The Upanishads, the *Brahma Sutra* and the *Bhagavad Gita* constitute the 'Prasthanatraya' or the triad of Vedanta. The Upanishads are called *shruti* (heard) and their teachings are found in Acharya Badarayana's *Brahma Sutra*. It is Acharya Gaudapada, who was the first to develop a systematic philosophy namely Advaita Vedanta from *Brahma Sutra* (Isayeva 1995; Comans 2000). The first treatise on Advaita Vedanta is called *Mandukya-Karika* or Gaudapada-Karika. Gaudapada presented the philosophical premise of the Doctrine of No-origination (*ajativada*). The world is an appearance and the Absolute is never created (Sharma 1962, 230). He further argues that the world does not have an independent existence outside of consciousness. Consciousness is the only Reality. This proposition takes his argument conceptually closer to *Vijnanavadins*.

For Adi Shankaracharya, the Brahman is Pure Consciousness and attributeless (*nirguna*). Maya is avidya. It is not an illusion. It is a misrecognition. It has no beginning but has an end. It is through the knowledge of the Brahman that Maya disappears. Maya is the absence of knowledge. It is both real and unreal, therefore indescribable. For Adi Shankaracharya, it is 'neither existent nor non-existent nor

both. It is not existent because only the Brahman exists. It is not non-existent for it is responsible for the appearance of the Brahman as the world. It cannot be both existent and non-existent for this conception is self-contradictory. It is called neither real nor unreal (*sadasadanirvachaniya*). It is false or *mithya*. (Sharma 1962, 241). Brahman is the substratum of the world that appears with the mediation of Maya. When the Jiva and Brahman are realised as nondual, avidya vanishes. Avidya exercises concealment (avarana) by giving rise to names and forms (viksepa). Adi Shankaracharya characterises Maya as *jada* (material), *shakti* (potency), *anadi* (beginningless), *viksepa* (projection), *anirbachaniya* (indescribable), *vivarata* (appearance), *adhyasa* (superimposition), etc.

Ramanujacharya (Chari 2004) belonged to the Vaishnava school of thought. He postulates *Vishistadvaita* (Sharma 1962, 334) meaning qualified monism or non-dualism qualified by difference. The Absolute is not without attributes. It as a whole has interrelated and interdependent qualities. It is a binding force that keeps its dependent elements in balance. Without the Absolute, the dependent parts do not constitute any meaning. Ramanuja recognises the existence of matter (achit), souls (Chit) and God (Ishvara). Three of them are real and constitute tattva-traya but the first two are dependent on God. They are substances themselves and yet in relation to God, they are attributes. They are inseparable attributes. Therefore, Matter and souls form the body of the God. He is qualified by them. They are inseparable, therefore, nondual but this non-duality is not without attributes. Their interrelation is eternal. God combines transcendence and immanence. He possesses qualities of *sat-chit-ananda*. This constitutes the complexity of Ramanuja's system of thought.

Madhvacharya (Sharma 1962, 300; Sarma 2007, 358) champions unqualified dualism (dvaita). He presents five-fold differences between soul and God, between soul and soul, between soul and matter, between God and matter, and between matter and matter. He also conceptualises ontology of degrees in the quality of differences. His system of thought essentialises difference. The world is real and its constituents are also equally real. Acharya Nimbarka developed the philosophy of Dvaitadvaita or Bheda-bheda (identity-and-difference). The relationship between substance and attribute is between qualified and qualification. It is both identity and difference. God is the material and efficient cause as He possesses matter and soul. Therefore, the relationship between the world and God is one of identity and difference. God is the material cause of the world and not its imperfections. The world is materially the same with God but by nature different.

Acharya Vallabha (Shah 1969) developed a system of Shuddhadvaita or Pure Non-dualism untouched by the Maya. The essence of Brahman is *sat-chit-ananda* and an independent reality. He combines monism and manyness. Soul and matter are his attributes. Avidya is His shakti to express Himself as different and many. This manifestation should not be misconstrued as an illusion or error. It is His will that determines His form or formlessness. The world being the real manifestation of God does not undergo the scope of *Vivarta* and *Parinama*. The world is a natural emanation from God that suffers neither change nor error. The cause and the effect and substance and attributes are identical and experience no difference. The world springs forth from Brahman. Sri Chaitanya's emotive interpretations of the Upanishads develop a school of Achintyabhedabheda (Indentity-in-difference) (Tapasyananda 2023; Kapoor 1977). Brahman is unthinkable and indescribable. This school is also called Madhva-Gaudiya School because of its association with Madhivism. The Brahman is *sat-chit-ananda*. The substance and attributes are identical but they appear different. Sri Chaitanya uses the category of unthinkability to refrain from the contradictions that emerge from the interpretations of the nature of Brahman.

### Neo-Vedanta

Neo-Vedanta as it is self-evident from the terminological configuration is a new hermeneutics of Vedanta philosophy. The newness here involves an interpretative difference and acknowledgement of the tradition of Vedanta. The novelty and difference that Swami Vivekananda makes in his modern interpretation of Vedanta is to relativise and humanise Brahma. By doing so, he explores the sociological dimensions of Brahman and finds a sociology in the metaphysics of Brahman. In a similar vein, Sri Aurobindo (2005) replaced Adi Shankaracharya's 'universal illusionism' with 'universal realism' in *The Life Divine*. For Swami Vivekananda, the ideal and real are not two separate categories. They are aspects of the same reality. This is a 19<sup>th</sup>-century cultural and philosophical reaction to colonialism. This intellectual exercise put Swami Vivekananda at its helm to inaugurate a Hindu Renaissance. The teleology of this initiative was to present a Hindu response to the colonial determinism of Bharat's history. This response as a reawakened assertion of Hindu cultural heritage and its profound continuity redefined Hinduism. Swami Vivekananda's Chicago lecture in 1893 was the turning point in the history of modern reassertion of Hinduism and its perennial philosophy and wisdom (Nikhilananda 1953). Indian Renaissance found its intellectual, cultural and civilisation althero. He became the champion of Hindu revivalism and nationalism. For the socio-cultural cause, he developed the Ramakrishna Mission to re-energise Bharat to rise and revive from the historical burdens of Islamic

imperialism and European colonialism. Socio-cultural re-engineering became its core objective. However, in defining his notions of Practical Vedanta, Swami Vivekananda (2021, 20) says, 'Vedanta can be carried into our everyday life, the city life, the country life, the national life, and the home life of every nation'.

Adi Shankaracharya and Swami Vivekananda do not differ essentially in their understanding of Vedanta and its monism or non-dualism. Given this commonality of conclusion in their philosophy of Brahman as unspeakable and unnameable, Swami Vivekananda's conceptual difference from Adi Shankaracharya is the historical imperative of relativising Vedanta by exploring possible sociological dimension in it. World renunciation cannot be a social philosophy. Humanising Brahman as a category of common conception can be a historicising process. The problem of this process for Adi Shankaracharya is conceptualising Brahman through the attributes and conceptualising it with difference. The non-dual cannot embody difference. To perceive guna (attributes) in Brahman is to use the lens of Prakriti (Nature) and its gunas—Sattva, Rajas and Tamas (roughly Purity, Passion and Indolence) and the result of this exercise characterise Brahman with difference as its essential nature. Given this conceptual understanding and the limits embedded in it, the difference Swami Vivekananda makes is the recognition of a colonially determined historical process where world renunciation cannot be a binding agent to organise people to constitute unity and reawakening for the final overthrow of British exploitative rule in India. Historical causality was a compelling force behind seeking a social philosophy from the metaphysics of Vedanta. Therefore, he was not interested in soteriology but in sociology. Salvation is not an answer to a problem in history. It is to derecognise history. When history is an epiphenomenon of ignorance or an instance of blurred perception, the question of the problem does not arise. It is an ahistorical category. Therefore, the category of history as an instrument of assessment vis-à-vis salvation does not arise. For him, extension is life and stagnation is death. Under the colonially determined weight of history, there was an urgent need for a reawakening to alter the status quo and to refashion Bharat spiritually with a strong sense of recognition of the importance of history. He bridged the conceptual gap between the historical and the spiritual. Their interdependence and interconnectedness constitute the core of Swami Vivekananda's Practical Vedanta.

For Swami Vivekananda, if Brahman is not a category of common perception, let it be perceived the way it can be, though in a limited way. The limitation of common human perception and its essential inadequacy does not need to be a category of non-perception. Every human perception

approaches Brahman in a limited way through the logic of difference. This limitation in perception is not a non-perception but an inadequately perceived cognition. Each in his or her capacity perceives Brahman. They are inadequate no doubt but perceptions nevertheless. A person with limited perception depends on mediation to approach Brahman. The cognition this mediation involves is not attributeless. Therefore, this arrives at the imagination of Brahman as saguna or Saguna Brahman (with characteristics and attributes). History is an aspect of Brahman like waves in the seawater and beams in sunlight. To differentiate aspect from essence and attributes from substance is to get trapped in a conceptual conflict involving the determination of primary from secondary and vice versa. Swami Vivekananda's neo-Vedanta which he termed as practical Vedanta is a conceptual extension of his teacher Ramakrishna Paramahansa's philosophy of conceiving God in the human which bridges the distance between the two. Samsara (the world) is not an act of separation. It is an act of permeation and immanence. Therefore, history is not to be renounced but to be acknowledged and understood. The world is as real as Brahman. Swami Vivekananda (2021) writes, 'The only God to worship is the human soul in the human body'.

### **Practical Vedanta**

In the *Practical Vedanta*, a lecture series delivered in 1896 in London, Swami Vivekananda laid out cogently and comprehensively the social philosophy of Vedanta when he (2021, 5) said, 'The Vedanta, therefore, as a religion must be intensely practical. We must be able to carry it out in every part of our lives'. He underlined the importance of the practical wisdom of Vedanta and its sociological importance. He demonstrates it as not essentially a pursuit of a sage who lives in isolation, notably in a forest. He alludes to the story of Shvetaketu, the son of sage Aruni, who visited King Pravahana Jaivali and was questioned by the king about the secrets of death and life. Shvetaketu was astonished by the sheer wisdom of Jaivali and recognised his profound ignorance. Jaivali was like King Janaka who was occupied with the responsibilities of statecraft and governance but was also equally detached and wise. This combination comes essentially from the clarity of knowledge that comes from the recognition of one's self and its infinity, 'I am the birthless, the deathless, the blissful, the omniscient, the omnipotent, the ever-glorious Soul' (Vivekananda 2021, 22). This recognition of the Self as eternal and its sameness and immanence in all created beings is well articulated in the famous expressions such as *Aham Brahamasmi* (I am Brahman) mentioned in the *Brihadaranyaka Upanishad* and *Tat tvamasi* (Thou art that) which establishes the interconnection between the individual and the Absolute discussed in the *Chhandogya Upanishad*.



This realisation helps one to overcome the burdens of history and the desire to cling to the result of one's action. Therefore, the action becomes the objective, not the result. Then the question arises, why does one need to act? To be in history is to act. Actionlessness is not a condition in history. The determinism of history demands one to act. Lord Krishna's advocacy of Karma Yoga is not to choose inaction but to act without developing any attachment to it. He asked Arjuna to act against the latter's hesitation on the battlefield. Vivekananda refers to the case of Arjuna who fought the epic war on Kurukshetra and yet never lost the 'eternal calmness'. This, Swami Vivekananda considers, the ultimate objective of Vedanta. Activity and calmness coincided in Arjuna, Jaivali and Janaka. His call was to reawaken Bharat into action.

In Swami Vivekananda's reinterpretation of Vedanta, he argues that the concept of sin is alien to the philosophy of Vedanta. Vedanta recognises the error in perception is the cause of incorrect knowledge. Sin is a category in the Abrahamic religious thought. It has no conceptual validity in the Vedantic epistemology. What was unacceptable for Swami Vivekananda was the ontology of weakness. Weakness is the cause of human degradation and surrender syndrome. What keeps one going is to recognise one's inner strength – purity and perfection of one's self. In Swami Vivekananda's social vision, the moral category of love has been foregrounded. Love binds humanity in the thread of unity and oneness. The human capacity for love is a manifestation of the mediation of the oneness of eternal love. He argues that perception as a mode of knowledge through which the cognition of the world of objects, emotions and activities takes place is impossible without the ontology of the Self. The Self is not a perceptible category and yet is the foundation of all perceptions. It is an inferential category. Through the act of perception, the being of the Self is inferred. Therefore, the individual self and the eternal Self are not two different realities. They are the same. There is no duality or correlation. It is the error in perception that develops the appearance of difference. This appearance is misconstrued as different from the Real. This misconstrual explains one's alienation from the Self. Appearance, therefore, is a misperception which arises from the lack of recognition of the eternity of the Self.

Swami Vivekananda alludes to the *Chhandogya Upanishad* and the story of Jabala and Satyakama. Satyakama's assignment to rear the cattle in the forest as advised by his teacher makes him realise the immanence of the Brahman in every created being. He sees it in the sun, moon, fire, breath, sight, mind, animals, trees, etc. This realisation alters the perception of difference. The non-dual becomes the world where perception as a category of knowledge that cognises difference and duality does not exist.

Swami Vivekananda (2021,36) refers to the story of Upakosala Kamalayana, a disciple of Satyakama to conceptualise Brahman as everything and nondual, 'This life is Brahman, Brahman is the ether, and Brahman is happiness'. This, for him, constitutes the Practical Vedanta. Everything is Brahman. It is ignorance that superimposes difference and when the real vision is restored the appearance vanishes and reality only remains. Advaita Vedanta uses the famous analogy of the misperception of rope as a snake to explain the nature of superimposition or illusion. Until clarity has arrived through correct perception, misrecognition is assumed to be a true recognition. His emphasis here is the recognition of history as Brahman. Denial of history as is done in Buddhism is also to deny the non-duality of Brahman. Therefore, renunciation is not necessarily an answer to the mind disturbed by the conflict that history is constituted of. It is Arjuna who chose action as he was destined to act for his being in history but remained unattached to the action as he understood the smoke screen of superimposition. He realised the nature of non-duality in what is called history. Salvation is, therefore, not ahistorical. It is also possible to attain salvation in history by recognising history as Brahman. This realisation of the non-duality of the Self is itself an act of *mukti* and uncoiling from the world of objects. Therefore, addressing the demands of history can also be an act of renunciation. Swami Vivekananda (2021, 37) says, 'The theme of the Vedanta is to see the Lord in everything, to see things in their real nature, not as they appear to be'.

Swami Vivekananda's sociology of Vedanta is to love history as the latter is also the Brahman. For him, existence is also equally real as *Sunya* in Buddhist metaphysics. The 'I' consciousness is central to human existence in history. The realisation of the sameness of the individual 'I' and the 'Universal Self' is the answer to the problems of history. He (2021, 49) says, 'The moment you feel 'I am', you are conscious of Existence. Where shall we go to find God if we cannot see Him in our own hearts and in every living being?'. In a social space or the domain of history, what is primary is the extension of love. He (2021,53) says, 'Love cannot come through fear, its basis is freedom'. Freedom is possible in history and so is love. The space of history makes life possible. Love and freedom as aspects of human existence are experienced in history. History, therefore, is not nothing. Fear and freedom exist in history. To realise history as no different from Brahman is to transcend the limits of history and not be disturbed by the forces of history. Swami Vivekananda reasserts that the source of delusion is the misperception of one's true nature. The hesitation, anxiety and fear are the epiphenomenon of this misperception:

Through delusion, we have been trying to forget our nature, and yet we could not; it was always calling upon us, and all our search after God or gods, or external freedom, was a search after our real nature. We mistook the voice. We thought it was from the fire, or from a god or the sun, or moon, or stars, but at last we have found that it was from within ourselves. Within ourselves is this eternal voice speaking of eternal freedom; its music is eternally going on (Vivekananda 2021, 57-58).

Swami Vivekananda recognises history. In his theorisation of Practical Vedanta, he affirms *Prana* (life principle) because ‘through it, everything lives’ (Vivekananda 2021, 61). Unlike Buddhism which denies substance and establishes the idea of substanceless qualities, Swami Vivekananda does not render the qualities or attributes meaningless. In his conception of *Prana*, qualities are equally important. The qualities may be mere appearance but the appearance is impossible to arise without the substratum of substance. The ontology of *Prana* implies the emanation of the world. To substantiate this point, he refers to the dialogues between the sage Narada and Sanatkumara in the *Chhandogya Upanishad* on the ontology and metaphysics of *Prana*. On the contrary in Buddhist metaphysics, Vivekananda says, ‘You have no ground for maintaining the existence of such a substance; the qualities are all that exists; you do not see beyond them’. Buddhists also deny the ontology of the individual soul (Vivekananda 2021, 81). He refutes this Buddhist position as close to agnosticism. Negation through philosophical argumentation is not the position that Swami Vivekananda takes. He takes an affirmative position that recognises history as consubstantial. He (2021,68) posits, ‘It is not true that there are two – something changing, and, in and through that, something which does not change; but it is the same thing which appears as changing, and which is in reality unchangeable’. The Impersonal exists in the personal. What underlines the misrecognition of the Impersonal is the superimposition of the personal. When the film of ignorance vanishes, the Impersonal only remains. He (2021, 85) reiterates, ‘But the very thing which is the substance is the quality; substance and quality are not two things. It is the unchangeable that is appearing as the changeable’. This is, for Vivekananda, the meaning of Practical Vedanta and the philosophy of Advaita.

He also discusses the ‘I’ continuum. He (2021,82) says, ‘I am I’ – that the I of yesterday is the I of today, and the I of today will be the I of tomorrow; that in spite of all the changes that are happening to the body, I yet believe that I am the same I’. The eternity of I is the only truth. The Immortal ‘I’ always and already exists in the human. What hinders the ‘I’ consciousness are the *gunas* of the

*Prakriti* which bind the self in the pursuit of the commonplace. Overcoming these limits to realise the higher becomes difficult under the grip of *Prakriti*. However, all else that undergoes the process of change, transformation and transition ought not to cause any anxiety and fear. When the truth is realised, the untrue does not exist. Therefore, Swami Vivekananda (2021, 104) postulates the essential goodness and purity of human nature along the lines of the philosophy of Vedanta, ‘... goodness is our nature, purity is our nature, and that nature can never be destroyed. Our essential nature always remains the same’. He asserts that the aetiology of weakness is ignorance. The latter chains the self to the commonplace. The Real remains unrealised. The epiphenomenon of this exercise of coiling the self around the limits of history is fear, anxiety and diffidence. To transcend them is not to be disturbed by the forces of history. Coloniality, therefore, fails to remain a historical reality in Bharat. Fear and weakness ensure subjugation. The realisation of the true nature of the self develops a sense of confidence and fearlessness which can be an effective antidote to the disease of coloniality.

## Conclusion

Historicising the Brahman by bridging the conceptual gap between the two as nondual gives credence to history. Historicising the Ultimate as indivisible renews the importance of history. The Buddhist metaphysics that negates history as momentary and unreal finds a logical antithesis in Swami Vivekananda’s Neo-Vedanta. The logic of causation or concept of succession does not arise in Vivekananda’s re-evaluation of Vedanta. For him, history and ahistory are not different and nondual. Therefore, following the humanistic philosophy of his teacher Sri Ramakrishna, he reconceptualised history as salvation. Negation of history causes the development of a contrary historical process. In connection with Bharat, it was Islamic imperialism and European colonialism combined as a contrary historicity that unsettled the civilisational journey of Bharat. Swami Vivekananda felt the imperative of redeveloping historical consciousness through revisiting Vedanta and essentialising history as an important empirical category to ensure Bharat’s civilisational continuity. The conceptual deduction that he drew on the question of history and spirituality is to recognise the embeddedness of spirituality in history. The category of difference that existed between the two was found to be a superimposition, but in reality, they constituted a sameness. The Brahman and history are not essentially different. The category of difference is an epiphenomena on misperception. History, therefore, is Brahman. Developing a strong sense of historical consciousness is an effective response to the contrary forces in history and ensures an uninterrupted continuity of Bharat’s civilisational journey. Swami Vivekananda’s reinterpretation of

history using the language and philosophy of Vedanta to redevelop a strong sense of historical consciousness constitutes the core of his Vedanta sociology.

### References

- Chari, S.M.S. (2004). *Advaita and Visistadaita*. MotilalBanarsidass.
- Comans, M. (2000). *The Method of Early AdvaitaVedânta: A Study of Gau*
- *apâda, ÚaEkara, Sureúvara, and Padmapâda*. MotilalBanarsidass.
- Isayeva, N. (1995). *From Early Vedanta to Kashmir Shaivism: Gaudapada, Bhartrhari, and Abhinavagupta*. State University of New York Press.
- Kapoor, O.B.L. (1977). *The Philosophy and Religion of Sri Caitanya*. MunshiramManoharlal Publishers.
- Nikhilananda, S. (1953). *Vivekananda: A biography*. AdvaitaAshrama (A publication branch of Ramakrishna Math, Belur Math).
- Sarma, D. (2007). Madhva Vedanta and Krishna. In Edwin F. Bryant (Ed.), *Krishna: A Sourcebook*. Oxford University Press.
- Shah, J. G. (1969). *ShriVallabhacharya: His Philosophy and Religion*. PushtimargiyaPustakalaya
- Sharma, C. (1962). *Indian Philosophy: A Critical Survey*. Barnes & Noble.
- Sri Aurobindo. (2006). *The Life Divine*. Sri Aurobindo Ashram Press.
- Tapasyananda. (2023). *Sri ChaitanyaMahaprabhu: His Life, Religion & Philosophy*. Sri Ramakrishna Math.
- Vivekananda. (2021). *Practical Vedanta*. Advaita Ashram.

- Assistant Professor in the Department of English at Rajiv Gandhi, University (A Central University), Itanagar.  
Email: chandan.panda@rgu.ac.in

# Sanskrit Manuscripts of Koch Kingdom in Terms of Integral Indic Culture

□ Mr. Jyotiskaranjan Sarkar

## **Abstract:**

*Sanskrit has been playing an important role in regaining the lost glory of Bharata as an important carrier of Bharatiya culture. It is not only a language but also a state of human cognition to carry forward the crescendo of excellence from generation to generation. Writing is an essential skill for communicating ideas even in the absence of humans and Sanskrit manuscripts are the perfect example of such continuums of thoughts. The then Koch Kingdom is now a part of West Bengal state of Bharata. This region of Northeastern Bharata has a long tradition of human habitation from time immemorial till date. So far testimonies available it was under Pragjyotishpura as mentioned in the epics. During contemporary juncture of regional autonomic movements patronized by foreign conspiracy to divide Bharata in many parts it is an important outlook to feel the integrity of wholeness. Century old Sanskrit manuscripts founded here are playing important role to establish the fact with proper testimony followed by continuing the tradition of knowledge of ancestor towards a resurgent Bharata ahead is the endeavour of this study.*

**Keywords :** Sanskrit, Manuscripts, Bharatiya Samskriti, Akhanda Bharata

It is undoubtedly a matter of great pride that we Bharatiyas are living in a sacred land which is a miniature form of the world and continuously engaged in inculcating knowledge i.e. Bha-rata. The entire nation is not only depicting a collection of mountains, river-streams followed by flora and fauna but also tied with a single thread i.e. culture. And this cultural paradigm is being contained by the container of finest form of human expression i.e. Samskrita. Hence it is said that “Bhartasyapratisthedwesamskritamsamskritistatha” means the basis of Indic culture is Sanskrit. Sanskrit is not only a language but also a state of human cognition in this planet that undoubtedly touched the crescendo of expression. There is commonness among many apparent diversified factors of livelihood and geopolitical sates of the State that tied the nation

for along period of time. It prevails right from Himalaya to Indian Ocean and present Afghanistan to Laos & Cambodia.

The present district of Cooch Behar was a princely State during colonial period and a part of epical Pragjyotishpura of integral Bharata. So certainly it is also in the purview of that cultural paradigm. From time immemorial there is a train of human habitation in this region carrying on the legacy. The ultimate dynasty of this region who ruled here during five consecutive centuries i.e. from early 16<sup>th</sup> to mid-20<sup>th</sup> centuries is Koch dynasty. Now the State is merged in Indian dominion and has become a bordering district of West Bengal namely Cooch Behar. The State right from their monarchical structure possesses the train of IKS based on Sanskrit and contains many repositories along with the cultivation of knowledge through copying and creating thereto. Hence a good number of reconstructing elements of the then study in the form of Manuscripts are now available to be explored with a serious attention and efforts. There are three major storehouses of MSS along with little private occupancy as well. These are- North Bengal State Library (erstwhile library of Rajas), Sahityasabha, Cooch Behar and the Madhupur Satra of Shankar Dev (a religious preacher of neo Vaishnavism).

N.B.S.L. is a competent tradition in the domain of academic arena of the district as well as in the state. It is an unexplored treasure-trove in terms of archival values; that can contribute more important land mark to the scholars. I came to know about the messy condition of these Sanskrit Manuscripts. Those are important as well as to some extent virgin. Taking into account the inadequacy of proper historiography of this region and keeping in the mind the necessity of reconstructing a circumspect portrait of literary and linguistic description, these manuscripts need to be studied with an incisive perspective. Since, the present Cooch Behar was a sovereign Hindu State & further signed the treaty of subsidiary alliance with the company of the British Empire; still there was a strong patronization of Sanskrit practice over the kingdom. In this context, we may refer to a rare collection of NBSL, “The Holy Bible in the Sanskrit Language;

vol-I; containing the five book of Moses and the book of Joshua; translated out of the original tongue by the Calcutta Baptist Missionaries with native assistants; published from London in 1848". Naturally, there was a high position of Sanskrit known *pandits* and scribes in the society and in the Royal court. Moreover, there was a practice of Sanskrit conversation in the Royal court as mentioned by Mr. Swapan Kumar Roy in his 'Prachin Cooch Beharer SampuroaItivtta' (pp- 74). During the Koch reign of c16<sup>th</sup> Century to 20<sup>th</sup> century the tradition was strongly maintained. Invitation of scholars and well versed *pandits* was a common phenomenon. *Pandits* of different schools ( Recensions) assembled in the Royal court and were positioned in highly honored posts. But it is very dubious that the train of Sanskrit learning and practice over this region took place after the last dynasty (i.e. Koch dynasty) took charge. The names of mythical & historical heroes of the region such as Bhagadatta, Vajradatta, Narakasura, Vaoasura, Cakradhvaja, Niladhavaja et.al surely reflects the Sanskrit flavor. Considering the presence of 'Viuvasimhacharitam' a Sanskrit composition, composed under the patronage of PraoNarayaoa (a part of this Mss had been traced by Khan Choudhury AmanatullaAhamed from Shriyukta Giriuananda Chakravarti of Khagrabari). On the question of the position of Sanskrit, here we may focus on the emergence of a rich vernacular dialect of this region where we can see the inter alia of it. Doubtlessly, it took long for the vernacular speech and expression to develop & sharpen through the region.

So, as expected we have had hard copy of evidences in the form of manuscripts. There are 102 Bengali manuscripts, catalogued with description, edited by ÚaúîBhu°an Das Gupta; published by the Cooch Behar State, in 1948 and 19 Assamese manuscripts mentioned in the appendix of the same book. There are 204 Sanskrit manuscripts of Cooch Behar 'Sahitya Sabha library', catalogued in 1978 by Dr. Dilip Kumar Kanjilal, published from *Cooch Behar Sahitya Sabha*. There are 46 MSS on Vyakarana, Tantra – 38, Smriti – 42, Shrivyakavya – 30, Drishyakavya (Drama) – 4, Satirical Compositions – 1, Ramayana & Mahabharata – 3, Gita & Purana – 14, Lexicon – 8, Vaidya (Medicine) – 5, Astrology – 5, Mimamsa – 3, Naya – 5. A Descriptive Catalogue of Bengali Manuscripts was published from the same Sabha library edited by Dr. Subodh Ranjan Roy. Apart from these there are 5 Sanskrit manuscripts in the Vivekananda library of Sri Ramkrishna (Ashram) Matha; which are collected from the local Zamindar, Bhavani Prasad Talukdar and a few Private possessions traced sporadically in different Tolas and in traditional families and a bunch of MSS in Madhupur Satra of Acharya Shankar Dev.

These are not merely calligraphic presentation on country made papers but also inevitable elements to reconstruct the historiography of this region followed by the specimen of the train of integral Indic culture. For instance lets' take an example from this collection of NBSL. Mss-7A found in the 2<sup>nd</sup> bundle – 'vajrasuci'; spelt as 'vajrauci'; a text on greater concept of Upanishad was first published from The Asiatic Society of Great Britain & Ireland in 1835. This collection differs from the printed one in terms of author and it accelerates the debate by identifying Shankaracharya as the author instead of Asvaghosa, while the date of preparation of this Mss found in the post colophon, gives the date in the form of a riddle- vana(= 5) rama (= 3) kha (= 0) pavake (=3). Here we have the numeric presentation of these words as 5,3,0,3 respectively. According to the rule "ankanamvamagati" the number reads as 3035. We have witnessed that Mss 18 and Mss 28, put the page marks of three digit numbers with an extra '0,' such as 310= 3010; 101,102 ...= 1001,1002 respectively. So, the number should be 335. Moreover, by mentioning the name of the patron king it is indicating the Rajshak. So, with an addition of 1509 with 335, we have 1844 AD that supports the Mss as well as the findings of H.N. Choudhuri (CSLRS pp.278) and others as the reign of Maharaja Shivendra Narayan [Rajshaka-330-338; 1246-1254 BE; 1839-1847 AD].

The huge collection of manuscripts gained its volume at several stages and at different times, as their importance was felt by learned ancestors. According to the great work- (The Cooch Behar State and its Land Revenue Settlement of H.N. Choudhuri published from the Cooch Behar State Press, Cooch Behar in 1903) - in the year 1900 AD, there were 107 Sanskrit books and 118 manuscripts in this library. He wrote, "The manuscripts were lately examined under order of the Dewan by Dwar pundit Mahamahadyapaka Sidhvanath Vidyavagisha." (pp- 350). The Annual Report of the Education Department for the year 1922-23 says, "Khan Choudhuri Amanatullah Ahmed very kindly re-sorted the manuscripts. The exact number cannot be ascertained till the list is fully complete and printed in the revised Catalogue. There will be an increase in number as several parts wrapped up in one board will be separately named and numbered. For the present the original number is kept intact." (pp- 19). In both cases manuscripts are talking about that they are in general, irrespective of languages. So, the idea to sort out and categorize these manuscripts was embedded in the thoughts a century back. Regarding this collection sources are not distinctively traced so far. At a glance, these manuscripts reflect a good variety of subjects (More than half of this collection is occupied by Epic and purana) and astonishingly, no manuscript on major philosophical text except 'vajrasuchi',

an exterior part of Upanishad, was found. Although, we find many of pundits name was furnished with nayaratna, nayapanchanana etc. but no mss on their philosophical studies found so far in the collection of NBSL but available in Sahityasabha. Mostly popular works namely, epic, purana, tantra, religious scriptural texts, stotras, kavya (poetry & poetics), smriti, jyotish, gnostic poetry and grammatical studies are available in this collection. Among them the study of cultural synthesis and spurious portion of popular texts, Epic, Puranas are preserved here and in Sabha library and in other places which deserve to be examined carefully along with the tantric and mythological texts. Grammatical schools of this kingdom may focus new parameter of linguistic study as we can see mugdhavodha and katantra vyakarana schools of Sanskrit grammar along with prayogaratnamala. Smriti shastras may focus light on their influences on the monarchical judiciary along with British system (i.e. dandaviveka of vardhamana). Although many copies of same text have been prepared by many scribes and under many patrons, still, few original works demand special attention such as Nityayatra, Jvarnasanamana, Durgapujapaddhati, Kumaripuja, Dinakhanda etc. Finally we have a number of 130 texts (Epic-48, Purana-30, Tantra-11, Religious scriptural texts-8, Stotras-11, Kavya-4 (poetry & poetics), Smriti-6, Gnostic poetry-1 and Grammatical-7 & Other-4) in this cache, if we consider Ms 4 to 4b i.e. Shaktistotra..... Tarastotra..... Kalikastotra as three separate texts (although these three are continuous in nature, same calligraphy and excerpts of different texts) and Mss 62 to 62e (6 texts of chapters) as one in number as these belong to the same epic (Ramayana), scribe(s) but different kandas (chapters) composed at various time i.e. from early 18<sup>th</sup> century, (1703 shak = 1781 AD) to (1741shak=1819 AD )early 19<sup>th</sup> century.

Here in this occasion I must confess that during this preparation of article I didn't have enough time on concentrate to respective texts perspicaciously. Still, from this gaze I've noticed that most of these texts are copied but in case of a few bilingual preparations dialectical and linguistic peculiarities are being observed such as kumari puja ,

jvarnasana mantra etc. In many cases names of scribes are obscured due to rubbing and erasing. In many cases we can see the scribe and authors are same in Bengali and Sanskrit manuscripts and almost contemporary compositions. Perhaps the Sahityasabha library contains most of those manuscripts collected from outside of the State than this collection of NBSL. In case of calligraphy, an affinity towards Assamese; scripts occasionally is observed in case of 'va' and 'ra' s. Separated 'ha,' more curvy 'i' indicate an influence of early 12<sup>th</sup> century scripts discovered from Sylhet and sometimes Newari influences are being observed. Numeric 5 and 3 in many cases show the influence of English and Nagari influences respectively. In case of materials only in 7 cases wooden sliced leaves are used and rests are different type of country made paper and some of these manuscripts are very old and tend to be ruined. Wooden covers of few manuscript-bundles are beautifully coloured and furnished with masterly paintings of great influence of Mughal art. They also deserve to be studied carefully. Due to shortage of time and space many facts cannot be depicted here. There is another important factor to be noticed is that irrespective of languages i.e. Asameese, Bengali & Sanskrit all these MSS are containing the same tune of continuous IKS that surely indicating towards the integral Indic culture.

After witnessing these huge collection and verities of MSS finally we can infer that despite the continuous efforts of foreign forays to divide Bharata in many parts to meet their expectations to explore the nation for their petty interests Bharata will definitely disseminate the message of integral humanism to sustain humanity in this planet. We do strongly belief that these MSS will surely play important role to rediscover important links to pave the way to resurgent Bharata in terms of IKS. And once Bharatiya conscience will be placed in her lost position as the leader the fate of humanity will obviously find its destination of peaceful coexistence with all followed by a blissful life in this planet.

- Assistant Professor, B. L. Educational Teachers' Training College

# Force and Rastradharm in Shantiparva : War as a Moral Tool in Statecraft

□ Papia Mitra

Mahabharata is not just an epic or history in the conventional sense. It is also itihasa or traditional tale based on past events with a purpose -- to offer the audience, of every social class and Jati, an endless wellspring of guidance for addressing all significant human matters. According to Adi parva, Vyasa was cognizant of the creation of the world, of the secrets of four Vedas, all shastras and shrutis, all worldly matters. Thus the text is a storehouse of advice on dharma, artha, kama, and moksha which is still relevant today. Since the narrative revolves round a clash between kindred for sovereignty, it is also a discourse of power. Throughout the text, there are discussions concerning various aspects of political conduct, differing interpretations of dharma, societal disarray and unity, the authentic definition of true Brahmanas, the involvement of marginalized individuals in civic life, the duties of a king, and the appropriate alignment of a king with scriptural codes and the accompanying moral framework. The Shantiparva, in particular, sheds light on the concerns surrounding the use of violence in governance: What actions should be taken when societal order deteriorates? How can a king legitimately establish stability in his reign? What are the boundaries of acceptable political behaviour? And how can the state's use of force be reconciled with civic moral principles that demand ahimsa or non-violence to be the highest ethical standards? Since the war is not just for territory but an interfamily conflict also it ties together two themes – external war and civil war. These are questions that haunt today's world as well. Bharat in particular is wracked by internal and external enemies who use violence against citizens ; the State's response necessarily has to use the same mode. Yet the response produces angst among many Indians and civilians in international arena because it involves killing of other human beings. Mahabharata has an answer to this existential angst as well. While Gita is the primer per excellence on morality/immorality of war, it is also a devotional text. On the other hand, Shantiparva deals with this question on a purely human level and as such is suitable to answer modern questions with ancient wisdom.

The Shantiparva begins right after the bereaved mothers and wives of slain warriors of both sides have lamented over the great war. Their mourning brings home the grim reality of the potential destroyed and anguish of civilians who are left behind. So it is not surprising that Yudhistir's heart is full of grief and doubt. Narada approaches Yudhistir congratulating him and then cautiously inquires if having fulfilled the duties of a kshatriya he feels joy and expresses the hope that grief does not afflict him. Yudhistir's answer is that he is grieved because he feels he has caused this carnage because he coveted the kingdom and he wonders what messages could be given to kinswomen waiting at Dwaraka. This victory, he confesses, appears to be a defeat for him. Here two views are clashing. Narada regards Yudhistir's conquest of the world as a righteous endeavour, ( dharmeno cha ) aligned with dharma, thereby justifying the acts leading to his kin's demise. He highlights Yudhistir's adherence to his Kshatriya/warrior responsibilities, which in turn brings him prosperity. This narrative underscores the obligatory nature of his actions as the ruler of the State since he must protect his family and subjects from Duryodhana's depredations , -- challenging the understanding that benevolence, restraint and non-injury are the foundations of dharmic life. Yudhistir, is deeply troubled by the human cost of the war and the devastation wrought by his royal commands. This is also the dilemma of democratically elected governments. Specially in India surrounded by aggressive neighbours who attack at the slightest hint of weakness, and terrorists operating within the borders of the country, citizens and leaders alike struggle with the question of how to reconcile bloodshed with traditional virtue.

Yudhistir's continued lament echoes the mindset of ordinary people. Since the Pandavas have been guilty of self-slaughter by killing their cousins then they cannot enjoy any fruits of righteousness. He rejects the concepts of valour and might and wrath since it is those qualities that had led them to war. Kauravas had desired the sweets of sovereignty and they had perished. Pandavas had desired the same and now they are deprived of friends and relatives. There is special

anguish at the thought of the young men that have died. Fathers have practised austerities for their birth, mothers have done rites anxiously praying to be delivered of a healthy child. But now these sons have perished in the flower of youth without having enjoyed the pleasures of the world, unable to pay the debts they owe to their ancestors. This again has its parallels with what many feel about home-grown terrorists when they are young people led astray by urban naxalite ideology or separatism like Kashmiri youth. Fellow villagers and family automatically desire to protect them. Many ordinary people and intellectuals think they should be treated sympathetically. When they die in encounter with security forces media denounces such action. Yudhistir (unlike many modern 'liberals') does understand that actual blame falls on Duryodhana. The latter had always been malicious and deceptive; though the Pandavas have never offended him, yet he always had behaved falsely towards them. After all, he had even rejected the offer of only giving five villages: if allowed to live out of misplaced sense of kinship he would continue inflicting farther harm. Nevertheless the anguish does not disappear, which Gangeya Mukherji compares to PTSD in modern psychological terminology. This is the reaction of anyone with moral sensibilities. So he asks Krishna to take over the kingdom where he had finally established peace because it has come with the price of his soul drowning in sin. His point is also valid "The instrument of violence does succeed in restoring normalcy of affairs of state but does not, at least statedly, lead to general welfare or an equitable polity" (Mukherjee 121). The great war had liberated the earth from chaos and created physical protection for all, yet peace has been bought with carnage. It is not for nothing that ancients declared that the ending of the great war also marked the end of a yuga and beginning of a worse one.

Yudhistir declares that from now on he would become an ascetic since only someone who lives a life of non-attachment can be free of the bondage of life and death. Both Vasya and Bhisma explain that while this mode of life is suitable for a Brahmin it is inappropriate for a Kshatriya and a king. Vasya emphasises that for a king the foremost quality is wielding danda or chastisement which necessarily involve violence. Bhisma goes further stating that a Kshatriya should slay kinsmen, sires, grandsires, preceptors who are engaged in unjust battle. If they are covetous and disregards all restraints of dharma then it is the duty of the Kshatriya, the upholder of dharma to kill them. This is especially poignant since Bhisma is undoubtedly also speaking of himself in his capacity as both elder kinsman and preceptor. Yudhistir reply reflects again the eternal question of what is proper dharma for ruler of a state. He asks that if the actions stated above can be cited as duty, then there is no act he should forbear

from. Once he accepts this advice then all ties to morality are loosened; therefore he cannot accept it. Again Yudhistir's argument is valid: from childhood people are taught that forgiveness, self-restraint, renunciation, humility, non-violence, and truthfulness are virtues one should cultivate. Nevertheless, while these are good qualities for civil life, those who rule the state cannot always adhere to them. Bhisma's explanation that follows is based on the premise that while dharmic values are fixed, how to implement them is contextual because sustaining dharma as a whole might require bending of some subset of dharmic values.

For a king, i.e., the administration of the State, danda or coercion is always necessary. We are told that Brihaspati had sung that just as a snake devours a mouse so too a mild king is devoured by the earth. In recent age one might draw upon the example of Sino-Indian war in 1962. Nehru believed in the slogan 'Hindi-Chini bhai-bhai'. The concept of 'brotherhood' in this case was akin to the relationship between Pandavas and Kauravas. The Chinese regarded such mildness as weakness of the Indian state and attacked. Since the Indian army was weak at that time India suffered territorial losses. Patriotic Indians perceive the conflict as a violation of the country's efforts to create lasting peace with China, and dashed any dream that India and China would establish a formidable Asian alliance to counter the growing dominance of the superpowers in the Cold War era. As a result India's standing in the world suffered. The epic is not saying war is desirable. It is suggesting that when peaceful solutions fail and war becomes unavoidable it may be necessary to engage in combat to the fullest extent possible. However, the aspiration to avoid conflict should always be present, accompanied by continual self-reflection on one's own role in perpetuating violence. Another modern example is India's relation with Pakistan. Several bilateral talks were held since 2014 to reach a peaceful settlement, but like the Kauravas Pakistan merely saw such attempts as weakness and was determined to wage war. The result was attacks on Uri, Pathankot, Pulwama. Ultimately India had to respond with force just as Pandavas had to go to war in spite of Yudhistir's wish to avoid it. Such violence is the moral obligation of the State if it wanted to protect citizens and territorial integrity. Nevertheless, it is only war-mongers who never feel disquieted – and making aggressive war is not what a dharmic State's guiding principle is. That is why Arjuna and Yudhistir both are filled with doubts. Moreover, Yudhistir's self-reproach in his post-war reflections provides a stark contrast to characters like Dhritarashtra and Duryodhana, who frequently assign blame to others and resist acknowledging their own responsibility. In contrast, Yudhistir feels so deep a sense of responsibility that he no longer even



desires the peace and welfare of the people he fought for. This is the state of mind that Bhisma strives to remove.

The same is true about internal affairs. The State must punish criminals which implies use of force. Bhisma points out that people who are governed by lust and wrath, do not accept restraints easily; they stop committing sinful acts only from fear of kings. Others who are more law-abiding and dharmic succeed in performing their duties because of the same influence – that is, the coercive power of the State protects them. Because a proper Kshatriya king allows righteousness to prevail, their duties are always regarded as righteous. As they protect the world and allows dharma to flourish for them this is equivalent to austerities. For a king the happiness of his subjects is his eternal duty. This is meant to emphasize that Yudhistir is wrong about thinking that only renunciation can lead to salvation: by protecting the people as the king and taking care of their material and spiritual needs he would be worthy to gain mukti. Since he is the king it is sinful for him to abandon his responsibilities which would create chaos. If the king offered no protection, then the strong would appropriate the possessions of the weak and if the latter protested their lives would be forfeit. Both property and women would be robbed. In absence of protection diverse kind of weapons would fall in the hands of unrighteous people which would spread farther devastation. ( In modern parlance, if a State does not guard its armoury well or if it like Pakistan directly sponsors terror, then terrorists would get access to sophisticated weapons including nuclear weapons). If a king does not protect righteous citizens, then he would incur the demerits of the sins the latter commit. That is why later in the epic Yudhistir sets out on the trek to heaven with his brothers only when he was too old to fulfil his duties and had passed the responsibility to the younger generation. In this context the citizens of a country are compared to children protected by their parents. This does not imply that the State is paternalistic and citizens are infantile. It implies that the State must take care of its citizens, specially those who are vulnerable – in other words, the Welfare state. The state is meant to be beneficent.

“ the idea that it was anecessary evil to be tolerated, as there was no other alternative, was not subscribed to by any ancient Indian thinkers ... The state was no doubt an unwelcome institution to evildoers, but they had no right to expect that their convenience and feelings should be respected by society, which they were out to disorganize and destroy” (Altekar 24).

The State can function harmoniously only if internal security is not compromised.

For a king no other dharma is more obligatory than protection. Therefore he cannot disregard any foes however

harmless or weak they appear. Even a spark of fire can turn into an inferno and a drop of poison can kill. This again is relevant today. If we take even one example like the numerous NGOs operating within the country without any auditing of their finances or activities. Many of them are in violation of Foreign Contribution Regulation Act and had their licenses suspended. The current government has been condemned for stopping the funds of organizations like Amnesty International, Greenpeace, Missionaries of Charity– yet the fact they were in effect conduits for black money are ignored. Moreover their focus though apparently on poverty, environment and human rights lead to stalling of needed industrial projects and presents a negative picture of India both nationally and internationally which in turn negatively impact the psychology of Indians. We also have direct protests affecting national integrity as during CAA agitations, Elgar Parishad event, University students protesting death sentences handed out to Afzal Guru and Maqbool Bhat. Again the Government has been heavily criticised for using force against them. But as Shantiparva tells us a kingdom cannot be protected by candour and simplicity. Obviously, while in personal life they are admirable qualities, peace and stability within a nation cannot be guaranteed by them alone. For that dandaniti or chastisement is required. Otherwise the State will be destroyed from within. Bhisma argues that the king makes the age and when he uses danda properly it is his highest merit and a golden age begins. A modern example would be that no major terror attacks had taken place in India the last ten years due to strict security operations. The attacks that had happened was in states where local authorities had not practiced this science well. Similarly aggressive attacks by Pakistan have been repelled and avenged successfully. This is only possible because the Central Government wielded danda efficiently.

But the State does not exist for the sake of inflicting violence only. The king is called protector of dharma. Again this dharma is the not the same as religion.

The king's duty was to protect dharma and, it empowered him to govern. However, protection involved not only physical protection but also protection of the social and moral orders. ... Transcendental dharma as an inclusive concept impinged on and influenced both

society and politics. ... But dharma was not immutable. It was context specific/sensitive. One encounters disparate dharmas, from jatidharma, through srenidharma to deshadharmas and more. The apaddharma section in the Shantiparva poignantly drives home the point. (Sahu )

The king is meant to keep stability and order in society and enforce wellbeing of his subjects.

Ancient Indian State fulfilled by enabling all classes

of people to have the minimum standards of living, without destroying the initiative or responsibility of its members. In this respect the ancient State anticipated in some measure an aspect of the modern State which acts as a great ministry of social assurance...

Protection in the ancient times as well as in our own also meant, as it does today, guarding the country both against internal troubles as well as foreign aggression. – (Saleore 85)

It is not that the State is expected to be violent at all times. We are told that if the king is too mild everybody disregards him but if he is too fierce then his subjects will be troubled. Common people have the right to remove oppressive kings from power. So the king should observe both kinds of behaviour. This has always been the *rastradharm* in India and modern democracy in India should be no exception.

Bhisma's advice is even more relevant because he says that he is not instructing Yudhistir from Vedas alone. Instead what he is teaching is the knowledge gathered from hard-won experience. He has learned that a king cannot function based on one-sided morality only. Compassion, nonviolence, renunciation are not always the dharmic course to take. In course of the world, what is dharma in the situation can appear to be *adharma*, while *adharma* might appear to be dharma. People become confounded when confronted by an actual instance of this kind – just as Yudhistira and ordinary people in modern age feel about violence sanctioned by the State against saboteurs. Therefore a king should learn the circumstances when such confusion occurs. Then when the occasion arises he should act according to his judgement. His actions at such times are misunderstood by ordinary people. Here Bhisma puts Yudhistir in the category of ordinary people who lack such knowledge and therefore feel such actions are against dharma. But the point is dharma is not rigid. The sin one incurs by killing someone who is not to be killed is same as the sin one takes on by not killing someone who deserves to be killed. As is obvious, indiscriminate killing by the State is not sanctioned. But State must kill when necessary and have weapons ready. This ground-level reality should be conveyed to ordinary people and intellectuals in clear terms. That this is not a hopeless task is exemplified by the late George Fernandes. He was a socialist, trade union leader, and a self-declared pacifist -- a hero of the Left. But through practical experience he realized China is a military threat and so oversaw Pokhran II nuclear tests.

Just like today, there were educated people who protested against *dandaniti*. Bhisma says that words are their weapons and they speak as if they were masters of learning. But they are like *Rakshasas* and are only traders of learning

rather than being genuinely knowledgeable. If the king accepts their advice then his own dharma will be destroyed. Dharma cannot be properly practised only by speech or intellectual arguments alone. It can only be practised by those who exert themselves. This advice echoes academic discourses today regarding human rights. Researchers produce reports on how Indian Government is coercing 'good' people like Mohommad Zubair and Teesta Setalvad. (<https://www.hrw.org/news/2022/07/05/india-punishes-internationally-recognized-activists>). But as in the age of Mahabharata, the State's judicious application of *danda* is more vital than getting the approbation of a particular group of intellectuals who value their opinions over national security. Repeatedly therefore Bhisma stresses that though *samanya dharma* is binding on all, *rastradharm* is different.

Of course, Bhisma has a particular kind of dharma in mind here, which stands in distinction from the dharma he teaches Yudhistir the dharma of kings, the fruits of which are Yudhistir's to enjoy. If Yudhistir 'lays down his rod' he will have no place in the world in which he was born, for he will have denied the role which forms his identity, his place within the social system, within the internally differentiated schema of dharma. By 'laying aside his rod' to pursue dharma he will break the proper order of dharma; and, of course, it is Yudhistir himself asking who is meant to maintain that order, making his self-emasculation an even greater violation. (Bowles 151)

In *Shantiparva* we see Yudhistir asking a series of questions which are answered through IKS traditions. It is clear that in IKS the state is not a means by itself but is meant to realize the material and spiritual nature of man. Though the ruler is expected to wield *danda* there is absence of political despotism since his function is to preserve the stability and traditions of the people and the populace can overthrow an oppressive king without sin. Thus even when kings are considered to be godlike, it is as Philips says, 'qualified divinity', different from Western conception of Divine Right which is an excuse for despotism. While Western political thought sees the State and people in terms of antagonism and dichotomy, in Bharat they are complimentary, or to borrow a phrase 'integral humanism'. State is a refuge for all beings for their good as Yudhistir says. But for the administrators of a State, achieving perfect morality in actions is a complex endeavour, particularly in the face of danger. Yudhistir's choice to abdicate his throne, driven by moral disillusionment, can be seen as an evasion of duty, reminiscent of Arjuna's initial reluctance to engage in battle, for which he was admonished by Krishna. Conversely, acting without ethical guidelines is also not advisable. The epitome of an ideal ruler is one who, faced with challenging circumstances,

adopts the most appropriate course of action for the welfare of his people. This course involves dandaniti --- that is a fundamental truth that all people must be taught.

### WORKS CITED:

- Altekar, A. S. State and Government in Ancient India: From earliest times to C. 1200 AD. ( Motilal Banarsidass Delhi) 1949.
- Bowles Adam. Dharma, Disorder and the Political in Ancient India: The apaddharmaparvan of the Mahabharata( Brill Leiden) 2007
- Mahabharatam, ed. Bhattacharya Haridas Shiddantabagish ( VisvabaniPrakashan Kolkata)
- MukherjiGangeya, “Complexities in the Agency for Violence: A Lookat the Mahabharata” 109 – 128 in Bhattacharya Sibesh Chandra, DalmiyaVrinda andMukherji Gangeya ed.
- Exploring Agency In The Mahabharata: Ethical and Political Dimensions of Dharma. (Routledge ) 2018.
- PhilipC. I “State and Individual in Ancient Indian Political Thought” Source: The Indian Journal of Political Science, July—September—1950, Vol. 11, No. 3 (July—September—1950), pp. 19-27  
Published by: Indian Political Science Association  
Stable URL: <https://www.jstor.org/stable/42743291>
- Sahu, Bhairabi PrasadSectional President's Address: “LEGITIMATION, IDEOLOGY AND STATE IN EARLY INDIA” Source: Proceedings of the Indian History Congress , 2003, Vol. 64 (2003), pp. 44-76Published by: Indian History Congress  
Stable URL: <https://www.jstor.org/stable/44145446>
- Saletore, Bhasker Anand. Ancient Indian Political Thought And Institutions. Asia Publishing House. (Bombay Calcutta New Delhi MadrasLondon New York) 1963  
<https://www.hrw.org/news/2022/07/05/india-punishes-internationally-recognized-activists>accessed on 15/01/2024

### Bibliography:

- Altekar, A. S. (1949). State and Government in Ancient India: From earliest times to C. 1200 AD. Motilal Banarsidass.
- Bhagdikar, P. S. (2019). Relevance of Ancient Indian Political Thought with Special Reference to Mahabharata. Sanshodhan, 8, 141–146.
- Bhattacharya, S. C., Dalmiya, V., & Mukherji, G. (2018). Exploring Agency in the Mahabharata: Ethical and Political Dimensions of Dharma. Taylor & Francis.
- Bowles Adam. ( 2007) . Dharma, Disorder and the Political in Ancient India: The apaddharmaparvan of the Mahabharata. Brill Leiden.
- Budkuley, K. (2010). Mahabharata myths in

- contemporary writing: Challenging ideology. Sahitya Academy, Delhi.
- Chakrabarty, Bidyut. ( 1994). “Foundations of Indian Political Thought: An Interpretation (from Manu to the Present Day). By VR Mehta. Manohar: New Delhi, 1992. Pp. 303.” Modern Asian Studies 28(2):431–38.
- Goldie, M. (2019). The ancient constitution and the languages of political thought. The Historical Journal, 62(1), 3–34.
- Mukherjee, J. (2010). Revisiting Good Governance in Ancient Indian Political Thought. The Indian Journal of Political Science, 53–58.
- MukherjiGangeya, ( 2018) “Complexities in the Agency for Violence: A Lookat the Mahabharata” 109 – 128 in Bhattacharya Sibesh Chandra, DalmiyaVrinda andMukherji Gangeya ed. Exploring Agency In The Mahabharata: Ethical and Political Dimensions of Dharma. Routledge
- Nehru, Jawaharlal. ( 2008). Discovery of India. Penguin UK.
- Pandey, P. (2019). Rajadharma in Mahabharata: With Special Reference to Shanti-Parva. DK Printworld (P) Ltd. Parekh, B. (1992). The poverty of Indian political theory. History of Political Thought, 13(3), 535–560.
- PhilipC. I “State and Individual in Ancient Indian Political Thought” ( 1950) The Indian Journal of Political Science, July—September—1950, Vol. 11, No. 3 19-27
- Rajagopalan, S. (2014). ‘Grand Strategic Thought’ in the Ramayana and Mahabharata. In India’s Grand Strategy (pp. 45–76). Routledge India.
- Sahu, Bhairabi Prasad( 2003) Sectional President's Address: “LEGITIMATION, IDEOLOGY AND STATE IN EARLY INDIA” Proceedings of the Indian History Congress , Vol. 64 (2003), 44-76
- Saletore, Bhasker Anand. ( 1963) Ancient Indian Political Thought And Institutions. Asia Publishing House.
- Sharan, P. (1983). Ancient Indian Political Thought and Institutions.
- Meenakshi Prakashan
- Singh, S. P. (2015). Concept of Rajdharma in Adi-Kavya: Ramayana and Mahabharata. Indian Journal of Public Administration, 61(1), 132–138.
- Singh, Mahendra Prasad, and Himanshu Roy. ( 2011). Indian Political Thought: Themes and Thinkers. Pearson Education India.
- Varma, V. P. (1986). Ancient and Medieval Indian Political Thought.
- Agra: Lakshmi Narain Agarwal Publishers.

*Associate Professor, English,  
Surendranath College for Women*

# Unleashing the Rich Tapestry of the Indian Knowledge System

□ Jasvant Mandloi<sup>1\*</sup> (Corresponding Author) Prof. (Dr.) Pratosh Bansal<sup>2</sup> · Dr Jayshri Bansal<sup>3</sup>

## Abstract :

*The Vedic knowledge system in India has influenced in the field of mathematics, astrology and medicine. It has affected education and different such things as arts, enterprise, law, justice, fitness, production and alternate. Despite its enormous importance the Indian knowledge system is struggling for accepted to be integrated into modern education and research system of the country. The primary cause is to combine Indian Knowledge System (IKS) into clinical topics like astronomy, philosophy, yoga, shape, remedy, agriculture, era, languages. Based on heritage era answers from IKS will interest on Indian tradition and its contribution to the sector Brahmagupta, Sushruta and Bhaskar appear within the main content of the paper on ancient Indian technological knowledge. It indicates India's deep knowledge philosophy via paintings, structure and aesthetic traditions system. The Vedas are infused with cultural and revolutionary information and are stimulated through using many traditions and incorporates the Indian Knowledge System. The IKS shapes modern-day concept and offers with the problems of the cutting-edge global, making it applicable in recent times. In that Yoga, Ayurveda, Vedanta, Indian Mathematics, Ayurveda's Holistic approach to Healthcare, Transcendental Meditation, Mindfulness, Bhakti Movement, and Global Ideas and Cross Cultural technology.*

**Keywords :** Vedic, Vaisheshika, Manusmriti, Literary, Vedantic

## 1. Introduction :

The Indian subcontinent has been the birthplace of various civilizations, each making considerable contributions to the wealthy tapestry of knowledge in India. Throughout the records intellectuals and philosophers have taken together a complicated net of expertise this is going past geographical limitations. In this paper we can unleash into the ancient, philosophical, and cultural factors to discover the intricacies of this notable know-how gadget.

The Indian Knowledge system is a severa and intricate collection of traditions that have evolved over several decades.

It draws from Vedic literature and encompasses several medical and various cultural fields. It begins from mathematics to astronomy to remedy it has made large enhancements. But its effect goes past academic disciplines it has original schooling, arts, administration, regulation, justice, yoga, manufacturing, and commerce and unique related components of it also.

Despite its profound impact on other civilizations and its endured relevance today. The Indian expertise device faces challenges in gaining popular recognition and integration into modern-day training and studies. This take a look at objectives to explore the complete nature of this system and spotlight its importance in latest worldwide. We may examine how it is able to be blanketed into contemporary society [1].

The ancient knowledge system is a giant repository of records that has developed over millennia. It covers various regions like Jnan (expertise), Vignan (science), and Jeevan Darshan (philosophy). These areas have evolved through experience, announcement, experimentation, and rigorous look at.

The tradition of validation with implementation has had a considerable affect on various elements of society along side education, fitness care, environment conservation among others. The purpose is to combine Indian Knowledge Systems (IKS) into scientific curricula in any respect stages of training taken into consideration from faculties to higher education institutions. This integration may want to span all through topics like astronomy philosophy yoga shape remedy agriculture engineering linguistics and so forth. The basis for this machine lies in Vedic literature in particular the Vedas and Upanishads with the goal being to offer guidance for addressing modern-day societal traumatic conditions through in addition exploration [2].

The tradition in which validation with implementation has had a significant impact on various aspects of society such as education, health care, environment conservation among others. Through Jan Bhagidari programs, people can actively take part in severa Indian Knowledge Systems (IKS)

responsibilities, and talent-primarily based programs can generate employment possibilities for more youthful and skilled humans. The IKS Indian Knowledge system also objectives to leverage generation to exhibit its global contributions and keep its legacy. In quit the Indian knowledge system is a treasure trove that encompasses India’s cultural history and has the potential to foster modern solutions and create process possibilities. With the developing interest in India’s knowledge systems we anticipate similarly improvement and contributions to the worldwide understanding of technological knowledge and generation [3].

## 2. Historical Roots :

The main objective of our research work is to discover

the historical origins of the Indian knowledge system. We will start via exploring the superior civilizations of the Indus Valley and then glide directly to the highbrow ferment sooner or later of the time of Vedic duration. By analyzing the rich historic context of these periods our purpose is to gain a deeper information approximately how the Indian system has advanced and developed over the time. The intellectual panorama of India has been substantially common via using influential persons like Chanakya and Aryabhata, whose contributions have had a long lasting impact. These incredible individuals executed a critical role in organising the foundations for the philosophical and clinical traditions that emerged in our country sooner or later of that point [4,5,6,7].

Period	Civilization/Epoch	Key Contributions and Facts
Prehistoric Era[4]	Indus Valley Civilization (c. 3300–1300 BCE)	Advanced urban planning, sophisticated drainage systems, trade networks.
Vedic Period[4]	Vedic Civilization (c. 1500–500 BCE)	Vedas as foundational texts, emphasis on ‘Vidya’ (knowledge).
Mauryan Empire[5]	Chanakya and Chandragupta Maurya (c. 322–185 BCE)	Chanakya’s “Arthashastra” on governance, diplomacy, and statecraft.
Gupta Period[6]	Aryabhata (c. 240–550 CE)	Aryabhata’s “Aryabhatiya” - contributions to mathematics and astronomy.
Medieval Era[4]	Bhaskara II (12th century)	Contributions to algebra and mathematical concepts.
Mughal Period[5]	Akbar’s Library and Scholarly Traditions (16th century)	Establishment of a rich intellectual environment.
Colonial Period[7]	British Influence and Educational Changes (18th–19th century)	Introduction of Western education and institutions.
Post-Independence Era[5]	Scientific and Technological Advancements (20th century)	Space exploration, nuclear advancements, technological growth.
Contemporary Period[6]	Preservation of Traditional Knowledge and Global Impact (Present)	Efforts to preserve traditional knowledge, global recognition.

## 3. Philosophical Foundations:

The essential intention of this take a look at is to undergo the historic roots of the Ancient Knowledge. We begin with the aid of exploring the advanced civilizations in the Indus Valley and afterwards on to the intellectual ferment at the time of Vedic duration. Through this exploration we intention to benefit a deeper perception into how this knowledge system advanced and advanced through the years. Remarkable figures along with Chanakya and Aryabhata have greatly impacted India’s highbrow panorama leaving a long-lasting legacy. Their contributions played a critical position in laying down the basis for the philosophical and scientific traditions that emerged inside the Indian vicinity.

### 3.1 Vedanta: Unveiling the Ultimate Reality

The exploration of the character of ultimate fact additionally referred to as Brahman and the

interconnectedness of all existence holds a valuable position in Indian philosophy. Particularly inside the faculty of idea referred to as Vedanta. Vedanta, derived from the Sanskrit words “Veda” meaning understanding and “anta” which means cease or culmination delves deep into profound philosophical inquiries that are searching for to apprehend the fundamental nature of fact and the difficult courting among unique components of lifestyles. This investigation is guided with the aid of the Upanishads which function foundational texts for the Vedanta philosophical tradition. These texts vicinity vast emphasis on the concept of harmony among the person soul called Atman and the cosmic soul [6].

### 3.2 Nyaya and Vaisheshika The Science of Logic and Atomism

The Nyaya and Vaisheshika philosophies play a essential position in the use of logical reasoning and understanding the

materialistic world. In this look at we intention to explore the Nyaya Sutras and Vaisheshika Sutras two giant historical Indian philosophical texts to shed mild on their systematic technique to comprehending the arena. These texts emerged during the classical period of Indian philosophy and present complete frameworks that highlight the importance of logic and also atomistic standards inside their respective philosophical systems. The Nyaya Sutras, credited to the sage Gautama gift a methodical exploration of the Nyaya college of idea. This philosophical lifestyle places significance role on logical reasoning and inference as key avenues for obtaining expertise. The Nyaya Sutras provide a structured framework for investigating truth through a rigorous methodology for logical analysis [8].

### **3.3 Three Samkhya: The Enumeration of Reality**

The Samkhya philosophy is a fascinating bunch of Concept that offers a detailed breakdown of the various elements that make up our fact. It divides these elements into two crucial principles known as Purusha and Prakriti. In this take a look at we can explore the great paintings referred to as “Samkhya Karika” written by using Ishvara Krishna which offers a deep analysis of the elaborate connection among attention and cloth nature. This foundational text serves as an invaluable resource for gaining insights into the interaction and dynamics among these fundamental components of lifestyles. By delving into the philosophical knowledge observed inside the “Samkhya Karika,” this research goals to illuminate the profound implications of this interconnectedness [9].

### **3.4 Yoga: The Path to Self-Realization**

The essence of Yoga philosophy can be placed in Patanjali’s “Yoga Sutras” a complete guide to the transformative adventure of self-consciousness. In this work we will investigate the profound idea of the eight limbs of Yoga, which offer a framework for moral and intellectual practices. These practices when pursued with determination enable us to achieve self-recognition and cultivate a deep reference to the conventional cognizance. Through an exploration of the intricate factors of this historic subject this research work goals to illuminate the inherent transformative energy within the Eight limbs of Yoga. [10].

### **3.5 Dharma: Ethical Order and Duty**

The perception of Dharma holds great importance in defining the moral and ethical structure that governs both person and societal behavior. In this phase, we aim to discover the profound insights offered by using the “Manusmriti” (Laws of Manu) on the subject of the concept of Dharma. This ancient Hindu scripture places great emphasis on the principles of righteous living and the

fulfillment of one’s obligations. By exploring into the teachings of Manusmriti, we will accumulate a deeper comprehension of its philosophical and moral framework, illuminating the crucial role performed by using Dharma in guiding individuals in the direction of a virtuous and harmonious life [11].

This work explores the complex and rich tapestry of the Indian knowledge system, in which philosophical ideas serve as deep pools of wisdom. To absolutely understand this highbrow history we need to actively take part in a philosophical subculture that extends beyond the restrictions of time. This compels us to contemplate the maximum profound questions about our very life and the interconnectedness of all things.

## **4. Scientific Advancements:**

Exploring the knowledge system of India uncovers a enthralling tapestry that surpasses traditional philosophical constraints and indicates the realm of scientific exploration. In contrast to commonplace misbeliefs it is vital to apprehend India’s profound and expansive legacy of scientific development. This legacy is marked by using a myriad of inventive contributions spanning severa fields. As such the subsequent section of this paper delves into incredible scientific achievements which have left a long lasting imprint on India’s intellectual terrain.

### **4.1 Aryabhata’s Astronomical Insights**

During the 5th century CE Aryabhataa outstanding mathematician and astronomer hailing from India, made huge contributions that revolutionized the comprehension of celestial bodies. The seminal work of Aryabhata, referred to as the “Aryabhatiya,” represents a massive contribution to the sector of astronomy. This magnum opus now not best added the modern idea of a heliocentric solar system however additionally offered meticulous strategies for figuring out the positions of celestial our bodies and predicting eclipses [12].

### **4.2 Susruta’s Pioneering Work in Medicine**

Susruta, a outstanding figure in the field of surgical procedure is widely diagnosed because the progenitor of this scientific area. His seminal paintings, the “Susruta Samhita,” became composed about within the year 600 BCE. This seminal piece of literature substantially explores numerous surgical techniques at the same time as also encompassing comprehensive sections on anatomy, medicinal plants, and the class of diseases. The contributions of Susruta have established a solid foundation in the field of medicine. [13].

### **4.3 Kanada’s Atomic Theory**

In the world of historical Indian philosophy, it changed into Kanada who put forth a huge proposition in the shape of the Vaisheshika atomic principle believed to have emerged around six hundred BCE. The seminal contribution of the

esteemed pupil can be determined in his outstanding opus entitled “Vaisheshika Sutra.”. With this ground breaking work in this field, he puts forth a profound postulation that encompasses the whole thing of the physical realm. Specifically, he posits that each detail within this domain is intricately composed of indivisible entities called atoms, or paraman. Kanada’s atomic principle, proposed through Kanada, exhibited an exceptional stage of development for the duration of its time and maintains to resonate with modern concepts in the field of particle physics [14].

#### **4.4 Bhaskara II’s Mathematical Genius**

Bhaskara II, a renowned mathematician of the twelfth century is extensively recounted for his noteworthy contributions to the fields of algebra and calculus. In his seminal treatise titled “Lilavati,” the esteemed scholar shows a complete array of mathematical topics, encompassing the solution of quadratic and cubic equations, along with elucidating strategies for the computation of interest charges. During the medieval length the mathematical prowess of India was prominently validated through the exquisite contributions of Bhaskara II. This esteemed mathematician’s paintings no longer only exemplified the intellectual talents of India however additionally left a long-lasting effect on the sphere of arithmetic [15].

#### **4.5 Jagadish Chandra Bose’s Botanical Research**

In the transition to the modern-day era, the esteemed pupil Jagadish Chandra Bose emerged as a prominent figure in the fields of physics, biology, and botany, leaving an indelible mark on the area of plant science. During the initial decades of the 20<sup>th</sup> century in that Bose embarked on a chain of pioneering investigations which correctly showcased the ability of flora to manifest reactions in reaction to outside stimuli. This ground breaking research effectively challenged the prevailing orthodoxy which posited that only animals possessed the ability to respond to such stimuli. Consequently, Bose’s seminal contributions served because the bedrock upon which the sector of plant electrophysiology became established [16].

The aforementioned clinical accomplishments serve to underscore the elaborate and numerous traits of the Indian know-how machine as it efficiently combines meticulous medical investigation with profound philosophical discernment. The exploration of India’s highbrow historical past necessitates the recognition and admiration of the various contributions that have prompted its wealthy tapestry for the duration of countless centuries.

### **5. Linguistic Diversity and Literary Traditions:**

The Indian expertise machine is characterized by using a splendid tapestry intricately woven with an exceptional array

of languages and a profound literary legacy that has persisted for hundreds of years. The following section gives an in-depth evaluation of the linguistic range in India and examines the wealthy literary traditions which have thrived within these multifaceted cultural surroundings.

#### **5.1 Sanskrit : The Language of Ancient Wisdom**

Sanskrit, a language frequently revered because the divine medium of conversation holds the distinction of being the maximum ancient classical language in the Indian subcontinent. The medium in question has functioned as a repository for an in depth series of historical texts encompassing brilliant works which includes the Vedas, Upanishads, and epic narratives like the Mahabharata and Ramayana. The profound grammatical gadget devised by Panini, expounded in his seminal paintings “Ashtadhyayi,” served because the bedrock for the exam of language and the status quo of a grammatical framework. [17].

#### **5.2 Tamil Sangam Literature : A Cultural Treasure Trove**

The Tamil Sangam literature which may be traced returned to historical instances is broadly regarded as one of the oldest and most comprehensive collections of secular poetry inside the world. The present examine ambitions to take a look at the literary and moral importance of three prominent works in the Tamil classical culture. The “Tirukkural,” attributed to Thiruvalluvar, and the epics “Silappatikaram” and “Manimekalai.” These texts have lengthy been celebrated for their profound insights into ethics and morality in addition to their exquisite literary features. By reading those works, we are hoping to benefit a deeper information of the cultural and intellectual contributions of the Tamil classical subculture. [18].

#### **5.3 Classical Literature in Prakrits and Pali**

In addition to Sanskrit and Tamil classical Indian literature encompassed a broader variety of linguistic expressions, along with Prakrit languages and Pali. The preservation of the Jataka memories a compilation of narratives recounting the past incarnations of the Buddha completed and written in the Pali language. In the world of historic Indian literature the classical Prakrit works which include the famed “Gatha Saptasati,” serve as valuable resources for know-how the literary panorama and the well-known variety throughout various regions. These works provide profound insights into the wealthy tapestry of literary expressions that flourished throughout that generation. [19].

#### **5.4 Bhakti Poetry : Expressing Devotion in Vernaculars**

Devotional poetry in numerous nearby languages became an indicator of the medieval Indian Bhakti motion.

It begins from the sixth to the 18th centuries, literary works expressing fantastic devotion and adoration for a non-public deity extended dramatically. Bhakti poetry formed the way of life and faith of the time. This look at examines the writings of respected non secular luminaries like Kabir, Mirabai, and Tulsidas, who're regarded for their profound lyrics that emphasize a close dating with the divine. These writers have left an unmistakable affect on religious literature, and their writings reverberate beyond time and nations. This studies analyzes those saints' poetry to reveal their wonderful viewpoints and reviews and emphasize the importance of a non-public and direct connection with the holy. The gift study examines Tulsidas' Awadhi-language "Ramcharitmanas" literary paintings. This take a look at examines how this e book combines devotional issues and vernacular expression. By studying the "Ramcharitmanas," seeks to illuminate how Tulsidas effectively blends devotion with not unusual language in his writing [20].

### **5.5 Modern Indian Literature: Synthesis of Tradition and Innovation**

The nineteenth and twenty centuries witnessed a good sized development within the realm of Indian literature, characterized by way of the emergence of current literary works in each English and numerous nearby languages. Rabindranath Tagore, R. K. Narayan, and Mulk Raj Anand are only a few of the literary giants who've contributed to the worldwide literary discourse. These esteemed authors have made sizable contributions to the sphere of literature, leaving an indelible mark at the literary landscape. Their works have garnered essential acclaim and have been broadly identified for their creative benefit and cultural significance. By examining the literary achievements of these individuals, it is easy to advantage a deeper understanding of the profound effect they have had on the global literary community. The literary masterpiece "Gitanjali" by means of Rabindranath Tagore garnered full-size popularity inside the shape of the Nobel Prize in Literature, bestowed upon him in year 1913. This prestigious accolade served as a first-rate milestone, signifying the zenith of Indian literary accomplishment [21].

The present discourse ambitions to clarify the profound significance of linguistic variety and literary traditions in India. Which serve as a testament to the multifaceted and pluralistic nature of its wealthy cultural historical past. The exploration and usage of the significant reservoir of information in the Indian knowledge system necessitates a comprehensive expertise and acknowledgement of the profound insights that are intricately woven into the numerous languages and literary expressions which have developed and flourished over the course of centuries.

## **6. Artistic Expressions and Aesthetics:**

The manifestation of the India based knowledge system extends beyond the realms of philosophy and technology encompassing a massive array of artistic expressions that serve as a conduit for profound non secular cultural, and aesthetic dimensions. The next phase of this paper suggests the multifaceted artistic traditions which have thrived in India, exemplifying a harmonious amalgamation of creativity, symbolism, and philosophical profundity.

### **6.1 Classical Indian Dance: Bharatanatyam, Kathak, and Odissi**

Classical Indian dance forms, particularly Bharatanatyam, Kathak, and Odissi, epitomize the amalgamation of beauty and narrative expression. Bharatanatyam, a classical dance shape originating within the southern Indian state of Tamil Nadu, is renowned for its intricate footwork and expressive hand gestures. The artwork form of Kathak, originating from the northern regions of India, is a charming amalgamation of rhythmic footwork and expressive storytelling. The dance form referred to as Odissi, originating from the Indian state of Odisha, is characterized with the aid of its emphasis on fluid moves and sculpturesque poses. The dance forms under discussion often serve as a way of storytelling, specially when it comes to mythological narratives. In doing so, they efficiently include both religious and aesthetic components, thereby improving their overall artistic price [22].

### **6.2 Indian Classical Music: Raga and Tala**

Indian classical track, a venerable way of life with its origins traced returned to the Vedas, is a rich and complex art shape that facilities around the fundamental ideas of Raga, the melodic mode, and Tala, the rhythmic cycle. The gift take a look at aims to explore the intricate improvisations determined in Hindustani and Carnatic music with a selected awareness on their capacity to carry profound feelings and non secular studies. Hindustani and Carnatic track, distinct classical music traditions originating from the Indian subcontinent have long been respected for his or her wealthy melodic and rhythmic systems, as well as their potential to rouse deep emotional responses in listeners. The improvisational nature of both Hindustani and Carnatic music performs a essential role of their ability to bring profound emotions. Improvisation, defined as the spontaneous advent of musical ideas within a given framework, lets in musicians to explicit their emotions in actual-time, ensuing in a completely unique and personal musical. The literary work titled "Raga Darpana" authored by Damodara Pandita offers precious insights into the elaborate structure and aesthetic aspects of ragas[23].



### **6.3 Indian Visual Arts: Temples, Sculptures, and Miniature Paintings**

The visual arts of India which can be prominently displayed in temple architecture, sculptures, and miniature artwork, function a testament to the seamless integration of spirituality and aesthetics within the Indian culture. The present discourse objectives to clarify the profound importance of intricately carved temples, specially exemplified by way of the architectural marvels discovered at Khajuraho and Ellora. These sacred systems function a testimony to the remarkable craftsmanship and unwavering devotion of the artisans who dedicated their abilities to their creation. The sculptural masterpieces, which includes the long-lasting dancing Nataraja and the serene Buddha statues, are renowned for their capacity to deliver profound philosophical meanings. Moreover, the inventive subculture of miniature art work originating from the regions of Rajasthan and the Mughal courts has garnered big approval for its meticulous portrayal of mythological narratives and scenes of courtly life. [24].

### **6.4 Mughal and Rajput Art: Fusion of Cultures**

The Mughal and Rajput courts of historic India were sizable centers in which a great convergence of inventive expressions happened. This cultural amalgamation changed into characterised by way of the harmonious mixing of Persian and Indian affects, resulting in a vibrant and diverse artistic landscape. The Mughal miniature art work, exemplified by way of the inventive creations of wonderful painters consisting of Abul Hasan and Mansoor, provide a visual illustration of various aspects of courtly life and the natural world. The present look at specializes in the inventive subculture of Rajput paintings, with a specific emphasis on the Kangra and Bundi faculties. These schools are renowned for their colourful color palettes and their potential to effectively narrate memories of affection and devotion. Through an analysis of these art work, this studies aims to shed light on the particular characteristics and creative techniques employed via the Rajput painters in depicting those issues. By inspecting the visible factors and narrative structures of these artistic endeavors, this observe seeks to deepen our know-how of the cultural and historical importance of Rajput paintings within the broader context of Indian artwork history [24].

### **6.5 Contemporary Indian Art: Fusion and Innovation**

Contemporary Indian art blends background with modernity, Raja Ravi Varma, Amrita Sher-Gil, and F. N. Souza have fashioned Indian artwork. These painters have permanently fashioned Indian art. The sensible photographs of Varma, the introspective canvases of Sher-Gil, and the formidable emotions of Souza display the range and dynamic components of modern-day Indian artwork. Three excellent

Indian artists have contributed to the art scene with their specific styles and perspectives. Varma's sensible depictions of subjects seize Indian lifestyles and tradition with exceptional precision. However, Sher-Gil explores her customers' underlying emotions and intricacies by her expressive paintings. Finally, Souza's ambitious and audacious artwork demanding situations social norms and customs. These three artists reveal the range of current Indian artwork [24].

The creative expressions and aesthetics of India are an essential element of its expertise machine, providing an exceptional attitude thru which to recognise the cultural and philosophical profundity inherent in its innovative interests. The appreciation of India's creative background necessitates an expertise of the complicated interaction among art, spirituality, and intellectual inquiry. This complex tapestry, whilst unraveled, famous the profound symbiotic dating that has formed and defined the creative landscape of India.

## **7. Educational Traditions :**

The India based knowledge system with its profound historic roots has cultivated a rich way of life in the field of schooling. This tradition surpasses the conventional transmission of facts and alternatively emphasizes a complete approach to improvement and the quest for information. The subsequent section shows the multifarious educational traditions that have exerted a pivotal impact in shaping the intellectual terrain of India.

### **7.1 Gurukula System: Learning in the Lap of Nature**

The ancient Gurukula management system which become regular in historic India served as a prime instance of a comprehensive and immersive approach to education. In the context of conventional educational practices it became commonplace for college kids, known as shishyas, to live alongside their esteemed guru in a secluded setting. This specific arrangement facilitated the purchase of now not most effective scholastic expertise but also essential life abilities, moral values, and a profound affinity for the natural international. The transmission of Upanishadic and Vedic teachings became predominantly facilitated thru the medium of oral traditions, thereby setting up a jointly beneficial and interdependent connection between the teacher and the learner [25].

### **7.2 Nalanda and Takshashila: Centers of Excellence**

Nalanda and Takshashila, two distinguished establishments of erudition in historic instances served as exemplary bastions of intellectual prowess. Nalanda, located within the region of Bihar, India, and Takshashila, positioned in what's now referred to as Pakistan, garnered substantial interest and admiration from erudite people hailing from

numerous corners of the globe. The aforementioned establishments provided a complete and multifaceted curriculum, encompassing a big range of disciplines inclusive of philosophy, technological know-how, remedy, and the arts. The instructional facilities below attention have implemented a systematic approach that serves because the bedrock for obtaining a complete comprehension of diverse educational fields [26].

### **7.3 Jyotisha and Vedic Mathematics: Ancient Mathematical Sciences**

The Vedic academic way of life encompassed a complete curriculum that incorporated the observe of Jyotisha, which pertained to the fields of astronomy and astrology as well as Vedic mathematics. The subject of Jyotisha, which reveals its origins inside the ancient texts called the Vedas, is involved with the meticulous quantification of temporal durations and celestial occurrences. The subject of Vedic arithmetic, as expounded in fantastic works including “Vedic Mathematics,” authored with the aid of Swami Bharati Krishna Tirtha, has introduced a collection of highly green and inherently intuitive mathematical methodologies. The above cited disciplines exemplify the early proclivity closer to scientific and mathematical education in historic India [27].

### **7.4 Madrasas and Maktab: Islamic Centers of Learning**

The rise of Islamic governance in India triggered the emergence of madrasas and maktabas as distinguished bastions of expertise acquisition and dissemination. The aforementioned institutions located widespread emphasis at the provision of religious practise, specially in the domain names of Quranic studies, Hadith analysis, and Islamic legal principles. The scholarly endeavors of individuals inclusive of Al-Beruni, who embarked upon a voyage to India all through the eleventh century, performed a pivotal position in fostering a profound move-cultural trade of information between the Islamic and Indian traditions. [28].

### **7.5 Colonial and Modern Education: A Synthesis of Traditions**

During the colonial technology a sizable improvement opened up in India with the advent of Western-fashion schooling. Which finally commenced the manner for the status quo of universities and present day instructional establishments. Luminaries like Rabindranath Tagore have emphasized the necessity of combining conventional know-how with cutting-edge knowledge. The established order of Santiniketan by using Rabindranath Tagore and the following instructional reforms spearheaded via influential figures which include Mahatma Gandhi exemplify a concerted endeavour to amalgamate the maximum commendable aspects of

conventional and contemporary educational methodologies [29].

The comprehension of India’s educational traditions necessitates a profound appreciation for a comprehensive continuum that traverses the nation-states of ancient Gurukula systems to modern-day academic establishments. The exploration and dissemination of the huge reservoir of expertise in the Indian context calls for a comprehensive knowledge and acknowledgement of the multifaceted methodologies hired in the realm of schooling. These procedures have played a pivotal role in shaping the intellectual, cultural and spiritual cloth of the subcontinent.

## **8. Contemporary Relevance :**

The enduring and intricate type of the Indiabased knowledge system meticulously crafted over countless centuries persists in its resonance with current significance, proffering deep-seated expertise able to tackling the intricacies inherent inside the modern global landscape. The gift phase endeavors to shows the iconic relevance and applicability of the historical information and various know-how traditions of India within the contemporary worldwide surroundings.

### **8.1 Mind-Body Harmony from Yoga and Ayurveda**

Yoga’s big adoption round the world is evidence of its enduring relevance as a comprehensive exercise for selling bodily, mental, and spiritual well-being. Patanjali’s seminal work “Yoga Sutras,” which carefully explains ancient yogic standards offers us a complete framework for effectively managing strain, improving intellectual awareness, and fostering deep peace within ourselves. Along the equal strains it’s far essential to word that Ayurveda has had a long-lasting effect on current processes to health due to the fact it is based totally on herbal treatments and the stability of frame energies, that are known as doshas. [10].

### **8.2 Sustainable Living from Vedic Ecological Wisdom**

The Vedic perception of “VasudhaivaKutumbakam,” which interprets to “the sector is one circle of relatives,” and the profound veneration for nature this is deeply ingrained within historic texts serve to foster a heightened ecological focus. In mild of the worldwide dilemma surrounding environmental problems, the aforementioned principles function a source of thought for the merchandising of sustainable existence and the conscientious control of Earth’s resources. The Indian moral traditions embody profound principles, significantly “Ahimsa” denoting non-violence and “Satyam” representing reality. These standards endure hanging resemblance to the beliefs upheld by means of contemporary moves that ardently suggest for social and environmental justice [30].

### 8.3 Mindfulness and Meditation for Mental Health

The incorporation of mindfulness practices within the Vipassana meditation and various different contemplative traditions has garnered sizable acknowledgment for its efficacy in fostering mental health and usual nicely-being. Drawing upon the wealthy tapestry of Buddhist and Hindu meditation traditions the aforementioned practices proffer a plethora of efficacious equipment that facilitate the adept control of strain and anxiety even as concurrently augmenting one's intellectual fortitude and resilience in a holistic way. The tremendous use of mindfulness primarily based interventions inside the area of psychology on a global scale demonstrates the iconic relevance of ancient contemplative practices. [31].

### 8.4 Ethical Leadership from Arthashastra

The "Arthashastra," authored by way of the esteemed Chanakya stands as an historic treatise of paramount importance discover the geographical regions of statecraft and political financial system. This seminal paintings imparts enduring standards that transcend the boundaries of time, imparting priceless insights into the area of moral governance and leadership. In mild of the multifaceted demanding situations confronted by way of modern-day societies within the nation-states of governance, corruption, and ethical quandaries it is imperative to keep in mind the invaluable know-how derived from the "Arthashastra." This historical treatise gives a ethical compass which could successfully guide leaders throughout numerous domain names [32].

### 8.5 Interconnected Worldview from Vedanta

The Vedantic philosophy places splendid emphasis on the profound interconnectedness that exists amongst all aspects of existence surpassing the confines of cultural and non secular barriers. Moreover, it is dedicated to the relentless pursuit of self-realization. In the present day epoch characterized with the aid of the phenomenon of globalization, the triumphing perspective engenders a profound sense of concord and interconnectedness, thereby promoting the exchange of ideas and cooperative endeavors amongst heterogeneous societies. The inherent universality of Vedanta is congruent with ongoing modern endeavors geared toward fostering interconnectivity and cultivating mutual comprehension in a globalized society [6].

The exploration and dissemination of the tremendous and complicated Indian knowledge system necessitates a profound acknowledgment of its enduring historical past as well as its ability to provide useful perspectives in tackling present-day complexities. Furthermore, it's far vital to cultivate a comprehensive framework that encompasses all elements of human improvement, thereby promoting a harmonious and all-encompassing direction toward person and collective

prosperity. In the midst of grappling with the intricacies of modern society, it's miles imperative to well known the profound importance of India's multifaceted knowledge traditions, which consistently shed mild on a trajectory leading to enhanced concordance and enlightenment inside our international network.

## 9. Global Impact and Cross-Cultural Exchanges:

The rich tapestry of the Indian knowledge system that extends far beyond its geographical obstacles influencing worldwide notion and engaging in profound pass cultural exchanges. In this phase weexplore the historic and modern impact of Indian expertise on the international scale, demonstrating how its highbrow spiritual and scientific contributions have transcended borders.

### 9.1 Numerical System and Mathematical Legacy

The Indian numeral machine, famend for its inclusion of the modern concept of zero employment of decimal notation, and utilization of Arabic numerals, has undeniably exerted a profound and transformative influence on the field of world mathematics. The advent of Indian mathematical improvements to the Islamic world by means of Al-Khwarizmi, a famend Persian mathematician, eventually exerted a profound have an impact on on European mathematicians for the duration of the Renaissance period. The adoption of the numeral gadget has had a profound and transformative impact on the sphere of mathematics on a global scale [33].

### 9.2 Ayurveda and Traditional Medicine Practices

The historical Indian gadget of ayurveda renowned for its comprehensive and all-encompassing methodology towards healthcare has garnered great worldwide popularity and exerted a profound impact on the realm of alternative medication. The ideas of Ayurveda, which prioritize individualized nicely-being and the usage of herbal restoration techniques, have served as a profound source of inspiration for well-being developments on a worldwide scale. The integration of Ayurvedic practices, encompassing yoga and herbal medicine, within healthcare structures international has appreciably contributed to the improvement of a extra complete angle on health and the manner of recuperation [10].

### 9.3 Transcendental Meditation and Mindfulness Practices

The surge in popularity of meditation practices together with however not limited to transcendental meditation (TM) and mindfulness may be attributed to their deep-rooted origins in historical Indian contemplative traditions. The famend Maharishi Mahesh Yogi changed into the first to introduce Transcendental Meditation (TM), an age-antique Eastern exercise, to the Western international. Its inception inside the

1960s marked the start of its considerable reputation and next global include. The modern-day adoption of mindfulness as a distinguished technique for enhancing mental nicely-being and mitigating strain may be traced lower back to its origins in Buddhist and Hindu meditation traditions [31].

#### **9.4 Bhakti Movement and Interfaith Dialogues**

The Bhakti motion renowned for its profound emphasis on unwavering devotion and the all-encompassing essence of divine love has undeniably nurtured interfaith dialogues and exerted a profound have an impact on on spiritual thought on a worldwide scale. The poetic compositions of revered non secular figures together with Kabir and Mirabai showcase a profound resonance with the overarching motifs of harmony and transcendence, surpassing the confines of religious demarcations. The Bhakti movement famend for its all-encompassing and humanitarian ideology stays a source of concept for ongoing discussions pertaining to the realms of collective spirituality and harmonious communal coexistence [20].

#### **9.5 Indian Diaspora and Cultural Exchange**

The dispersion of the Indian diaspora across the globe has served as a enormous conduit for the trade of culture facilitating the dissemination of various components of Indian philosophy artwork, and delicacies to a large number of numerous regions global. The inclusion of yoga studios, Indian classical dance performances and festivities consisting of Diwali within the cultural landscapes of numerous countries has end up an integral phenomenon. The diaspora's full-size contribution to the global fusion of ideas is an illustration of Indian tradition's profound have an effect on on a transnational scale [34].

#### **9.6 Indo-Greek Intellectual Exchange**

The Hellenistic period witnessed a amazing proliferation of interactions among the cultures of India and Greece, thereby fostering a tremendous exchange of intellectual thoughts and know-how. The meticulously inscribed Edicts of Ashoka in both Greek and Aramaic languages function an incredible example of move-cultural engagement. The blending of Buddhist and Hellenistic thoughts indicates how open both societies are to accepting exceptional highbrow traditions [35].

The cutting-edge examine aims to clarify the good sized international influence that the Indian expertise machine has exercised and the following pass-cultural interactions it has sparked. By exploring the universality of its principles and the long-lasting allure of its wisdom this studies endeavors to shed light at the far-achieving implications of this historic expertise machine. The ongoing worldwide interaction with and utilization of India's intellectual background serves to focus on the enduring significance and profound effect of

this tremendous material on a international scale.

#### **Conclusion :**

In end this studies synthesizes vital information to emphasise the Indian expertise device's sturdiness and usefulness. To uncover capability and make a contribution to the way of life-current debate, it requires chronic research. The scholars can investigate India's highbrow background's complex tapestry of wisdom. In the conclusion of our exploration of the wealthy tapestry of the Indian understanding gadget it becomes clear that India's intellectual, non secular, and cultural legacy is alive and nicely and has a profound impact on the existing and destiny. The historic expertise of philosophy maintains to illuminate the essential questions of life, focus, and interdependence. These foundations invite scholars from in the course of the sector to ponder crucial subjects that transcend culture and time.

From historic arithmetic to pioneering medicinal drug and astronomy, India's medical development indicates its empirical method. They continue to influence and enrich international scientific pursuits and show that information knows no limitations. India's Sanskrit, Tamil, and many local languages create a global literary records. The ageless understanding in these books resonates across civilizations.

Indian conventional dance complex sculptures, and colourful paintings encourage artists and followers international. The mix of way of life and innovation in modern-day Indian art suggests creativity's resilience. Indian instructional systems, from Gurukula to modern colleges, emphasize holistic studying and intellectual improvement. Bringing antique knowledge and modern-day know-how together is a ahead-questioning approach that pursuits to mix the exceptional.

The Indian expertise device has a worldwide impact these days. Wellness procedures globally include yoga and ayurveda. Mindfulness, rooted in historical contemplative traditions, has emerge as a popular mental health trend, promoting self-attention international. Devotion and harmony inside the Bhakti movement have spurred interfaith talks, organising a shared spirituality throughout many societies. Indian philosophy, art, and history beautify the sector through the Indian diaspora. After our voyage thru the complicated tapestry of the Indian expertise gadget, we see that its legacy is woven into our related international. We are invited to discover, take a look at, and embrace its profound truths, a timeless present that transcends time, place, and tradition.

Indian know-how is a critical and necessary a part of human intellectual history, allowing individuals who searching for knowledge to participate in its ever-unfolding narrative, which has formed, stimulated, and related human beings at some point of records.

## References :

1. Thematic Session | Government of India, Ministry of Education. (n.d.). Retrieved December 18, 2023, from <https://www.education.gov.in/nep/indian-knowledge-systems>
2. Indian Knowledge System Final. | PDF | Meditation | Spirituality. (n.d.). Retrieved December 2, 2021, from <https://www.scribd.com/document/683711636/INDIAN-KNOWLEDGE-SYSTEM-FINAL>
3. Hoppers, C. A. O. (n.d.). Indigenous Knowledge , and the Integration of Knowledge Systems Towards a Philosophy of Articulation Edited by.
4. The Idea of India. (n.d.). Retrieved December 19, 2022, from <https://www.penguin.co.uk/books/54705/the-idea-of-india-by-sunil-khilnani/9780718197254>
5. Possehl, G. L., (2002). The Indus civilization A contemporary perspective. Walnut Creek, CA Altamira Press. - References - Scientific Research Publishing. (n.d.). Retrieved December 19, 2023, from <https://www.scirp.org/reference/referencespapers?referenceid=624404>
6. Radhakrishnan, S. (2009). Indian philosophy, Volume 2. 768. <https://global.oup.com/academic/product/indian-philosophy-volume-ii-9780195698428>
7. ANCIENT INDIAN BIOLOGICAL THOUGHT: NEED OF A SCIENTIFIC AND PRUDENT APPROACH on JSTOR. (n.d.). Retrieved December 21, 2023, from <https://www.jstor.org/stable/43941277>
8. Hirano, K. (2012). Nyaya-Vaisesika Philosophy and Text Science. <https://www.mlbd.in/products/nyaya-vaivesika-philosophy-and-text-science-katsunori-hirano-9788120835580-8120835581>
9. Larson, G. J. ,& B. R. S. (1987). The Encyclopedia-of-Indian-philosophies-vol.-4\_-samkhya-a-dualist-tradition-in-indian-philosophy-. Motilal Banarsidas.
10. B • K .S . IYENGAR. (1966). Light on Yoga. Schocken Books New York.
11. Olivelle, P. (2005). MANU'S CODE OF LAW. Oxford University Press.
12. Shukla, K. S., Sarma, K. v, Shah, B., Marg, Z., Delhi, N., & Shukla, K. S. (n.d.). ARYABHATIYA OF ARYABHATA Critically edited Notes, Comments and Indexes NEW DELHI Published for THE NATIONAL COMMISSION FOR THE COMPILATION OF HISTORY OF SCIENCES IN INDIA (Vol. 21).
13. Susruta Samhita: Ancient Indian Surgery (Set of 3 Volumes) | Exotic India Art. (n.d.). Retrieved December 22, 2023, from <https://www.exoticindiaart.com/book/details/susruta-samhita-ancient-indian-surgery-set-of-3-volumes-nav583/>
14. Rev, T., & NL, B. T. (n.d.). Encyclopedia of India-China Cultural Contacts, vol II. Retrieved December 20, 2023, from [https://www.academia.edu/22670613/Encyclopedia\\_of\\_India\\_China\\_Cultural\\_Contacts\\_vol\\_II](https://www.academia.edu/22670613/Encyclopedia_of_India_China_Cultural_Contacts_vol_II)
15. Bhaskaracharya - Ancient India History Notes. (n.d.). Retrieved December 22, 2023, from <https://prepp.in/news/e-492-bhaskaracharya-ancient-india-history-notes>
16. Kothare, A. N., Palsule, S. S., Parekh, S. M., & Navalkar, M. P. (1994.). An Anthology of Anecdotes.
17. Gr. (N.D.). Ancient Indian Flora In The Ashtadhyayi Of Pa~Ini.
18. Gems From The Treasure House Of, Tamil Literature. (N.D.). The Asian Writers Conference The Tamil Writers Association, New Delhi-5.
19. South Asian arts - Pali, Prakrit, Literature | Britannica. (n.d.). Retrieved November 22, 2023, from <https://www.britannica.com/art/South-Asian-arts/Pali-and-Prakrit-literature-c-200-bc-ad-200>
20. McDaniel, J., & Pechilis, K. (2023). Revisiting the Experiential World of Women's Bhakti Poetry. Religions 2023, Vol. 14, Page 788, 14(6), 788. <https://doi.org/10.3390/REL14060788>
21. Rabindranath\_Tagore. (n.d.). Gitanjali-Rabindranath\_Tagore: Vol. Alice&Books.
22. The Oxford Illustrated Companion To South Indian Classical Music. (n.d.). Retrieved December 22, 2023, from <https://india.oup.com/product/the-oxford-illustrated-companion-to-south-indian-classical-music-9780195699982>
23. Joep Bor. (1999). The\_Raga\_Guide.pp1-26: Vol. Nimbus Records.
24. Harle, J. C. (James C. ). (1994). The art and architecture of the Indian subcontinent. 601. <https://archive.org/details/artarchitectureo0000harl>
25. Mookerji, R. (1989). Ancient Indian education/ : Brahmanical and Buddhist. 585-586. <https://www.motilalbanarsidass.com/products/ancient-indian-education-brahmanical-and-buddhist>
26. Kumar, P., & Kumar, &#32;Pintu. (2011). The Ancient NâlandâMahâvihâra: The Beginning of Institutional Education. Journal of the World Universities Forum, 4(1), 65-79. <https://doi.org/10.18848/1835-2030/CGP/v04i01/56731>
27. Bharati, S. K., & Mahbrsjtja, T. (1884). Sixteen Simple Mathematical Formulae From The Vedas Jagadguru Swami Sri Bharati Krsna Tirthaji Maharaja, ~ A N K A R ~ C A R Y A Of OovardhanaMatha, Puri.
28. Dr. EDWARD C. SACHAU. (1910). Alberuni's India, An Account Of The Religion, Philosophy, Literature, Geography, Chronology, Astronomy, Customs, Laws

- And Astrology Of India About A.D. 1030. LONDON  
KEGAN PAUL, TRENCH, TRUBNER & CO.  
LTM DRYDEN HOUSE, GERRARD STREET, W.
29. Panhwar, S. H. (2019). Nationalism By Sir Rabindranath Tagore 1918 Reproduced by. www.sanipanhwar.com
30. Shiva, V. (2019.). Earth Democracy: Sustainability, Justice and Peace. Buffalo Environmental Law Journal, 26, 8–9. Retrieved December 22, 2023, from <https://digitalcommons.law.buffalo.edu/belj/vol26/iss1/1>
31. Kabat-Zinn, J. (1994). Wherever you go ,There you are: Mindfulness meditation in Every-day Life. Hyperion, 278.
32. Mitra, S. K., Michael, |, & Nomos, L. (n.d.). Kautilya's Arthashastra: An Intellectual Portrait The Classical Roots of Modern Politics in India. <https://doi.org/10.5771/9783845272344-1>
33. Harle, J. C. (James C. ). (1994). The art and architecture of the Indian subcontinent. Yale University Press. <https://archive.org/details/artarchitectureo0000harl>
34. Bhatt, Dr. U. A. (2022). Indian Diaspora: Cultural Ambassadors versus Ethnic Conflicts. Journal of Positive School Psychology , 2022(4), 5719–5727. <https://journalppw.com/index.php/jpsp/article/view/4345>
35. Mcevilley, T. (2002). The Shape of Ancient Thought: Comparative Studies in Greek and Indian Philosophies.

*<sup>1</sup>Research scholar, Institute of Engineering & Technology, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Khandwa Road, Indore, MP, INDIA 452017*

*<sup>1</sup>Training & Placement Officer Government Polytechnic Daman UT of DNH & DD  
Jasvant28284@gmail.com*

*<sup>2</sup>Professor IT, Institute of Engineering & Technology, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Khandwa Road, Indore, MP, INDIA 452017  
pratosh@hotmail.com*

*<sup>3</sup>Associate Professor Malaviya Mission Teacher Training Center Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore MP, INDIA 452017*

# Agricultural Science in Sanskrit Literature under Indian Knowledge System

□ Dr. Sankar Chatterjee

## Abstract

*Rigveda has several verses describing the profession of farming operations and farmers' happy and enjoyable life. Improvement of agriculture is the basic duty of Rajadharma which is stated in Mahabharata. Parashara says in 'Krisi-Parashara' that learned man become poor except agricultural work. Kashyapa suggested that agriculture is the highest wealth than gold etc.*

*The source of ancient Indian agricultural Science is obviously Vedic literature. It is true that Arthasastra and Brihatsamhita are two strong pillars of ancient agriculture. In Classical Sanskrit literature several books e.g. Meghaduta, Mrichchakatika are found where agriculture is discussed. A few traditional agricultural books are found in Sanskrit literature, i.e. Krisiparashara, Kashyapiyakrishisukti. Many Manuscripts, i.e. Vrksa-dohada, Kautuka-cintamani, Krisi Paddati, Krisi-samaya Nirnayah, Sarangadhar-Paddhati are available.*

*Botany is the essential part of Agriculture. We get many botanical evidence in Sanskrit literature. Basically, we find plant morphology as earliest record in Atharvaveda. It gives eight types of growth habits of a tree. Udayana says that plants have life, sleep, waking, disease and death. Parashara Vrksayurveda and Mahabharata explained the food preparation in the leaf. In Vedic literature many references to plant diseases and their treatment are also available.*

*Agriculture is completely dependent on rainfall. Parashara has mentioned several methods for predicting rainfall in the entire year. Regarding this subject Parashara indicates the four types of clouds. Soil also is the very important element in agriculture for good production of crops. On the other hand supervision of agriculture, water management, Seed theory, Irrigation, cultivated crop, ploughing, agricultural implements, plant protection are well discussed in Sanskrit Literature. Animal husbandry has been also discussed for good cultivation.*

*Horticulture is another part of agriculture which is used to ornament the garden with the flowers and fruits. In Vanaspati and Upavana Vinoda. We find considerable information's about ancient horticulture.*

*It is fact that Agricultural Science in Sanskrit Literature*

*is a great part of Indian Knowledge System. Indian culture and Heritage have formed depends on Agricultural knowledge. Agriculture is described by the four Pramanas, i.e., Prataksya, Anumana, Upamana and Shabda. So, Agriculture becomes a philosophy in Indian context. On the other hand, Agriculture is a valuable and essential knowledge of Indian culture and society.*

**Key Word :** Parashara, Agriculture, Krisiparashara, Vrksayurveda, Kashyapiyakrishisukti

The oldest composition Rigveda has several verses describing the profession of farming operations and farmer's happy and enjoyable life- 'Krisimit Krisaswa'. Improvement of agriculture is the basic duty of Rajadharma which is stated in Santiparva of Mahabharata. Indian Sages often advised the kings about the importance of 'Varta'. Noble Rama advised his brother Bharata at Chitrakuta regarding agricultural truth. Parashara says that learned man become poor except agricultural work. Kashyapa suggested that agriculture is the highest wealth than gold etc.

The source of ancient Indian Agricultural Science is obviously Vedic literature. All theories of agricultural science almost are found in four Vedas, Upanisads and others Vedic books, e.g. Paraskara Grihya Sutra, Apastamba Dharma sutra, Baudhayana Dharma sutra, Siddantasiromani etc. Later on, Ramayana and Mahabharata suggests that agriculture is the prime duty of an agriculturist. Pauranic literature shows various subjects regarding agriculture, i.e. the nature of medicinal plants, preservation of tree, sowing the paddy, prediction of rainfall etc. In Dharma Shastra, agriculture was healthily discussed. In Buddhist age Jatakakatha bears the highly advanced agricultural approach. On the other hand, Agriculture is also discussed in Vyakarana and Philosophy. Several Lexicography e.g., Amarakosa, shows many words which are directly related with agriculture. Philosophical literature of Sanskrit denotes the various agricultural matters also. It is true that Arthasastra and Brihatsamhita are two strong pillars of ancient agriculture. All agricultural theories are perfectly discussed in these books. In Classical Sanskrit literature several books e.g. Meghaduta,

Mrichakatika are found where agriculture is discussed. A few traditional agricultural books are found in Sanskrit literature, i.e. Krisiparashara of Parashara, Kashyapiyakrishisukti of Kashyapa, Vrikshayurveda of Surapala, Vishvavallabha of Sri Misra Chakrapani. In spite of these printed books, a lot of Manuscripts i. e. Vrksa-dohada, Kautuka-cintamani, Krisi Paddati, Krisi-samaya Nirayah, Sarangadhar-Paddhati, Barso-Prabadha are available.

Botany is the essential part of Agriculture. In Vedic literature we find easily the Botany and Taxonomy. Many Plants, e.g. Soma, Asvattha (Ficus religiosa), Peepal were well cultured. Beside, flower-bearing and fruit bearing plants like Palasa, white and blue lotus, urvaruka, udumbara, kharjura, bilva etc. have used in Vedic Literature. Classical Sanskrit Literature bears many botanical evidence as well as Vedic literature. But it is true that there are a number of exclusive works under the title of Vrksayurveda.

Atharvaveda is the earliest recorded authority on plant morphology. It presents an account of eight types of growth habits of trees. These are, Visakha, Manjari, Sthambini, Prastnavati, Ekasrnga, Prastnavati, Amsumati and Kandini. Taittiriya Samhita and Vajasenayi Samhita explains that plants comprise mula, tula, kanda, valsa, puspa and phala. While trees have in addition skandha sakha and parna. On the other hand, The Vrksayurveda of Parashara deals extensively with the morphology of plants. According to Parashara parts of plant are: patra, puspa, phala, mula, tvak, kanda sara, svarasa, nirayasa, kantaka, bija and praroha. Some Ancient Sanskrit works also reveal the texture, colour, taste, surface etc.

Plant Physiology is available in Sanskrit literature. Udayana says in his work that plants have life, sleep, waking, disease, and death. The Buddhist logician Dharmakirti in his Nyayavindutika records the phenomenon of sleep in certain plants, Sankara Misra in his Upaskara mentions that after a wound, there is natural healing due to growth of organs. The Santiparva in Mahabharata reveals different physiological principles like, sense of touch, hearing, vision, smell, irritability etc, in respect of plants.

Parashara's Vrksayurveda explained the food preparation in the leaf. Parashara says: the parthivarasa is transported from root to the leaf through syandana (xylem). There it gets digested with the help of chlorophyll (ranjakena pacyamana—Krisi parashara) into nutritive substance and a byproduct. Santiparva of Mahabharata explains the water is spread in every point of tree with the air and force. Plant Pathology is found in Vedic literature. Many references to plant diseases and their treatment are also available. Atharvaveda explains the destruction of corn due to insect pests. The famous Buddhist text, Vinaya, describes the blight and mildew diseases. Sukraniti gives the idea of preservation of grains from various agents like, fire, snow etc. Saddarsansamuccaya of Gunaratna reveals the various diseases, displacement of flowers, fruits etc. Besides, we get many information's about

germination, Classification of Plants, Plant Anatomy in Sanskrit literature.

Agriculture is completely dependent on rainfall. In fact, Weather forecasting is important for sustainable agricultural growth and development. In ancient time the method of weather forecast was classified into two categories, i.e. Analytical method and observational method. Parashara has mentioned several methods for predicting rainfall in the entire year. He has given methods for annual rainfall prediction based on many points, these are (a) The ruling planet of the year (b) Types of cloud (c) Other climatic conditions such as the direction of wind or fog in certain months (d) the change in the level of local river water on a specific day etc. Varahamihira in his Brihatsamhita explain the forecasting theory of rainfall based on position of Nakshatra. In this Subject kautilya also express his idea in his Arthasastra. Various methods of rainfall, e.g., Sudden rainfall, folklores regarding weather forecasting are well discussed in ancient Sanskrit texts. On the other hand, method of measurement of rainfall is discussed in several Sanskrit text. Cloud is another factor of rainfall. It is also described in several ancient Sanskrit texts e.g. Ramayana, Arthasastra, Brihatsamhita, Krisiparashara, Meghadutam etc.

Soil is the very important element in agriculture. Soil is a concept as the upper layer of the earth. Soil has been described in Atharvaveda as the mother and human beings as her sons 'Mata bhumi putra aham prthvya'. In ancient time, soil was classified based on its colour and crop-yielding ability. Soil fertility was vital to the concept of soil classification. Accordingly, soils were categorized as urvara (fertile) and unurvara (non-fertile) which are further subdivided into usara (salty) and maru (desert). In Atharvaveda soil is categorized depending upon qualities and color as bhabhru, krisna and rohini. Other classifications are found in several text properly. Soil is discussed in many ancient Sanskrit texts such as, Kashyapiyakrishisukti for good production of crops.

Superintendent of agriculture is the most important part of agriculture. Parashara has highlighted the importance of good supervision in farming, using examples relevant to his time. This subject is discussed in several ancient Sanskrit texts. Besides, Water is the essential prerequisite of agriculture. In ancient India the source of water was mainly rainfall. Vedic literature discussed about the rainfall and utilization of water for cultivation. This subject is properly analyzed in several Sanskrit texts, such as Arthasastra, Brihatsamhita, Krisi parashara etc. Water reservoirs are described in Kashyapiyakrishisukti and Vishvavallabha. Beside, Ground water for cultivation is discussed in Vrikshayurveda. Water preservation is placed in Krisiparashara.

Plowing is the important subject in agriculture. The meaning of word 'Krisi' is the act of plowing. Hence the



selection of suitable soil and preparing the soil by plowing before sowing are very essential. Parashara mentioned the rules for plowing in the field in his book. Plough known by different names such as hala, sira, langala and sita. In ancient time, we get various types of plows, e.g. the plow of king Prithu, the plow of king Atri etc. The plow is described by Parashara into eight parts, these are isa, yuga, niryola, niryolapasika, halasthanu, addacalla, saula and paccani. In Ancient Sanskrit texts we get various agricultural implements. These are madi, kedarika, datram, khurpa, parsu, kudhal, pratoda etc.

In Krisiparashara Parashara emphasizes the collection of seeds for future. According to Muni, the time of collection of all seeds is either in the month of Magha or Phalguna. Collected seeds would be preserved in small packets. Seeds are also well discussed in Kashyapiyakrishisukti and Vrikshayurveda of Surapala.

Plant protection is also recognized as an important activity. Trees and plants are finely acceptable in all respect when the plants become free from all diseases. Surapala discussed this theory in his Vrikshayurveda. Plant protection has also spoken in Vishvavallabha.

In Sanskrit literature many cultivated crops are found properly. Kautilya pointed out in his Arthashastra many crops, e.g. Sali, vrihi, tila mudga, masha, kusumba etc. Rice is the main crop according to Sage Parashara. In Kashyapiyakrishisukti, we get many vegetables also. Parashara discussed about paddy and rice.

Irrigation is the most important subject of agriculture. It is artificial application of water to soil for the purpose of supplying moisture for plant growth. In fact, irrigation has played a significant role in the process of agricultural development. Irrigation is discussed in Vedic literature. Afterward irrigation is completely mentioned in Krisi Parashara, Kashyapiyakrishisukti, Abhidhanarathnamala of Medhatithi and several ancient Sanskrit texts.

Vedic literature has mentioned ancient animal husbandry properly. Ancient agriculture depends upon the animal for good cultivation. In vedic age, cow and horse were the symbols of wealth and prosperity. In fact cattle was an important resource for food and farm power. In Krisiparashara, more than twenty five verses emphasize that management of cattle must be done with great care. Cattle sanitation, health and nutrition are stressed strongly. We find a strong discussion regarding this matter in Arthashastra.

Horticulture is another part of agriculture. In a word, Horticulture is used to ornament the garden with the flowers and fruits. In Vanaspati and Upavana Vinoda we find considerable information on Botany and horticulture, as available in early Sanskrit literature, e.g. Brihatsamhita, Krisitantra, Gulma-Vrikshayurveda etc. In those books good information was available on germination of seeds, plant propagation, nutrition and maturing of plants, growth,

reproduction, heredity etc which are of interest to horticulture.

The construction of a garden and its dedication to public use is mentioned as early as in the Vedic age (Rigveda 3, 8: 11) in Sankhyayana Grhyasutra. On the other hand, Agnipurana and Brihatsamhita gives many ideas about horticulture.

It is true that the process of plantation received scientific attention probably for the first time in the Arthashastra of Kautilya. Vatsyayana also comments about horticulture. The Charaka and Susruta have mentioned a number of fruits and flowers. Sarngadhara has given an excellent treatise on arboriculture. The horticulture is well discussed in Ramayana, Mrichakatika also.

Ancient Indian Agriculture deals with many other agricultural subjects apart from the above mentioned subject matters. These are Cow dung, Seed health, Weeding, Yield of rice, Processing rice for food, Treatment of pulse seeds. Sowing the seeds, transplantation etc. All subjects have well discussed in several Sanskrit texts.

## References

1. Lallanji, G. 1980. Aspects of History of Agriculture in Ancient India, Bharati Prakashan, Varanasi, India
2. Ram, N. 1988. A Textbook on Indian Agriculture. Vol. 1. Government of Bombay, Bombay, India. Pp. 9-105
3. Randhawa, M.S. 1980. A History of Agriculture in India. Volume I. Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, India
4. Randhawa, M.S. 1982. A History of Agriculture in India. Volume II. Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, India
5. Bhat, M.R. 1981. Barahamihira's Brihatsamhita. Part I, Motilal Banarsidass, Delhi, India
6. Sadhale Nalini. (Tr.) 1999, Krishni Parashara, Agri-History Bulletin No. 2. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 500009, India
7. Sadhale Nalini. (Tr.) 1996, Surapal's Vrikshayurveda, Agri-History Bulletin No. 1. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 500009, India
8. Ayachit S.M. (Tr.) 2002, Kashyapiyakrishisukti, Agri-History Bulletin No. 4. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 500009, India
9. Sadhale Nalini. (Tr.) 2004, Vishvavallabha, Agri-History Bulletin No. 5. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 500009, India
10. Shamasastri, R. 1961. Kautilya's Arthashastra. Seventh Edition. Mysore Printing and Publishing House, Mysore, India

- Associate Professor and Head of the PG Department, Department of Sanskrit, ABN Seal College under Govt of West Bengal, Cooch Behar, W.B.

# Bathukamma : The Festival of Flowers

□ Dr. G.V. Snigdha Raj

## Abstract

*Bharat is a country with vibrant traditions, rituals, festivals, etc. All these aspects that are being followed carry a specific procedure and a purpose. A layman might not be able to remember the purpose of it being introduced but, everything happens for the betterment of the society. Some aspects might still be able to fulfill the needs of present generations and some things might not be but are still followed in respect of the forefathers who introduced them and also the motivation behind the celebrations may have evolved. For example, the Ganesh Chaturthi celebrations were introduced by the great freedom fighter Bala Gangadhar Tilak to unite the people towards the freedom struggle but, even after 75 years of independence it is still being celebrated. The motivation then and now is different. Learning about these activities will enhance the knowledge about the reasons behind introducing them and also the so-called practical and logical minds of human beings will be able to connect the dots and understand the importance of the Indian culture.*

*Bathukamma, a state festival of Telangana is a unique festival of flowers. It has been celebrated for hundreds of years. The sole objective of this paper is to explain the history and uniqueness behind the festival. Its evolution from time to time. The data was collected ethnographically from the cities of Warangal and Hyderabad in the state of Telangana where this festival is celebrated on a huge scale. The qualitative research method is adopted in which data is collected through Focus Group Discussions (FGD) and interviews.*

## Introduction

The life of Indians is filled with many festivals. Even though there are many sects within Sanatana Dharma almost all the festivals are celebrated by all of them. Local festivals have just evolved based on their interests, sentiments, and ideas (Satprakashananda, 1956). Festivals are a way to relax the restrained minds. In these post-modern times, festivals are also the means of societal and family gatherings.

Every state has its local festivals some are recognized by the state and happen on a large scale. The majority of the

people belonging to that state participate in those festivals irrespective of their caste, creed, and race. One such festival is Bathukamma.

## The History of Bathukamma

The history of Bathukamma was shared by two historians from Hyderabad during an interview. According to them, in 973 A.D., Rashtrakutas were ruling the land of southern India which includes Telangana, Andhra Pradesh, and Karnataka. Kalyana Chalukyas were the feudatories of Rashtrakutas. They ruled the region of Vemulavada present in Telangana. During their period, Sri Raja Rajeshwara temple present in Vemulavada was a popular pilgrimage centre. Lord Shiva was present in the form of Linga and was worshipped along with his wife Parvathy.

In later times, Cholas of the Tamil region defeated Rashtrakutas, and Rajendra Chola destroyed the temple of Vemulavada. Knowing the importance of the Linga present inside the temple Rajendra Chola takes away the Linga along with him to Kanchi (a place present in Tamil Nadu). He gifts the Linga to his father Raja Chola. In 1006 A.D., a temple starts to be built in Tanjore (another place in Tamil Nadu). In 1010 A.D, the construction of the temple was finished and the Linga which was brought from Vemulavada was placed in the sanctum sanctorum of the temple. The Linga is worshipped as Raja Rajeshwara or Brihatheshwara. It was mentioned in the rock edicts that Raja Chola gifted golden lotus flowers to Lord Brihatheshwara. The lotus was made from the looted gold of Vemulavada Chalukyas. In later times a new Linga was placed in the sanctum sanctorum of Vemulavada temple. One can now find that the Linga present inside the temple of Vemulavada is similar to that of the Linga inside the Brihatheshwaralayam.

At present, Brihatheshwaralayam in Tanjore is a UNESCO world heritage site. For the Chola dynasty, it was a proud moment but for the people of Telangana, it was not. Cholas took away their god from them. To convey their sadness the people of Telangana started worshipping the Shakti goddess whom they called 'Brihath' in the hope of seeing their god again. As time passed, the term Brihath was called Brihathamma and later Bathukamma (Education, 2023).

## Brihathamma/Bathukamma

The word Brihath was used as Brihathamma which means great goddess. Brihathkatha was written by Gunadhya who belongs to the Medak district of Telangana state. One of the historians who belongs to the region of Telangana said that “the people of Telangana have a different way of expressing their emotions for example during the invasion of Kakatiyas Sammakka and Saralamma who belonged to the Koya tribe fought against Kakatiyas and were killed in the battle. The people of Telangana conveyed their protest against Kakatiyas and support for Samakka and Saralamma by worshipping them.”

### The Folklore behind the Nine-Day Festival

An old lady from Warangal who is been participating

in this festival since her childhood said, “After fighting with the demon Mahishasura goddess Durga gets tired that is when the women start serving her with the help of songs and flowers. They take care of her for nine days after which the goddess regains her energy and defeats the demon. The flowers used in Bathukamma all have medicinal values which soothe the goddess. This was the story told to me by my grandmother”

Whatever might be the reason the festival of Bathukamma kept on evolving for a long time (Haindavi, 2021). Now the festival is performed for nine days. It starts at the beginning of Sarath Ruthu (Sathavahana Calander) on the day of the ‘Amavasya’ (no moon day). Each day the women of Telangana worship Bathukamma with various names (Askari Jaffer, 2023).

S.no	Days	Name of the Bathukamma	Offering
1	First day	Engili pula Bathukamma	Nuvvula saddi (Sesame rice)
2	Second day	Attukula Bathukamma	Mixer of Bellam & Atukulu (Jaggery and Rice flakes)
3	Third day	Muddappappu Bathukamma	Mudda pappu (Lentil dish)
4	Fourth day	Nanabiyyam Bathukamma	Nanabettina Biyam (Soaked Rice)
5	Fifth day	Atla Bathukamma	Atlu (Dosas)
6	Sixth day	Aligina Bathukamma (alaka Bathukamma)	No offering
7	Seventh day	Vepakayala Bathukamma	Sakinalu (Snack food)
8	Eighth day	Vennae muddala Bathukamma	Venna Mudda (Butter)
9	Ninth day	Sadhula Bathukamma	Malidha Muddhalu (Laddu made with rice atta and jaggery)

## Decorating Process

Bathukamma is a beautiful festival in which flowers are arranged in the form of a temple ‘Gopuram’ (pyramid shape), on the top of which goddess Gouri (Incarnation of goddess Durga) is placed. She is made using turmeric and vermilion. The flowers used have medicinal properties and are all seasonal flowers. The festival is performed after the end of the monsoon season hence the plants and trees are filled with flowers which are used in making the Bathukamma (Desk, 2023).

A female youngster from Hyderabad said “Every day we collect flowers from our locality and all the women in our colony sit together and decorate their own Bathukammas later in the evenings we all wear traditional attire and come together to place the Bathukamma in the centre and circumambulate around it by clapping together. In the night we say goodbye to the Bathukamma by leaving it in the nearby water body and also anticipate its arrival in the next year.”

## Medicinal Values of the flowers used in Bathukamma

- The following flowers are generally used in making a

- Bathukamma (Unknown, 2021)
- Thangedu (Senna auriculata): The tea made out of these flowers regularises the menstrual cycle, controls sugar levels as well as reduces joint pains
  - Rakhi Puvvu (Passiflora incarnata): Used in the preparation of medicinal drugs and is known to reduce stress levels.
  - Mandharam (Hibiscus rosa sinensis): Used for hair growth
  - Rudraksha Puvvulu (Elaeocarpus ganitrus): Used to reduce skin infections
  - Sita Jada Puvvulu (Celosia cristata): Used in the preparation of dyes
  - Gunugu Puvvulu (Celosia argentea): The curry made of its leaves helps in normal delivery. Flowers are used to reduce cough, urinary tract infections, and TB.
  - Banthi Puvvulu (Tagetes erecta): Reduces body temperature and enhances blood circulation
  - Gummadi Puvvu (Cucurbita maxima): Helps with prostate problems.

Bathukamma is immersed in the nearby pond since it is believed to reinforce the ponds and also help to retain more

water. The flowers that are used in making Bathukamma were believed to purify water once immersed in a pond. When the entire world is fighting to preserve water bodies the women folk of Telangana are playing their part in doing so through their celebration of Bathukamma (Centre, 2024)

### Conclusion

Bathukamma festival is recognized as the state festival in Telangana. It is a celebration of womanhood and is performed to respect nature for its nourishment to humankind. It also reflects the relation of women with that of the flowers. The goddess Durga is worshipped in these nine days since she is believed to be the source of energy in this universe. Through traditional music, dances, and customs, this event develops social relationships, promotes unity, and protects Telangana's cultural legacy as well as nature.

### References

1. Askari Jaffer. (2023, October 13). Retrieved from Hans India: <https://www.thehansindia.com/life-style/bathukamma-2023-known-date-names-of-9-days-of-bathukamma-time-puja-rituals-and-significance-of-flower-festival-829606?infinite-scroll=1>
2. Centre, N. I. (2024, January 11). *Ministry of Electronics and Information Technology*. Retrieved from Government of Telangana: <https://hyderabad.telangana.gov.in/festival/bathukamma/#:~:text=Batukamma%20celebrates%20the%20inherent%20relationship,helps%20it%20retain%20more%20water>.
3. Desk, E. B. (2023, October 14). *Nine-day Bathukamma festival begins today, CM KCR, the Governor extends greetings to women*. Retrieved from etvbharat.com: <https://www.etvbharat.com/english/state/telangana/nine-day-bathukamma-festival-begins-today-cm-kcr-governor-extend-greetings-to-women/na20231014155531893893049>
4. Education, S. (2023, October 17). *Bathukamma Festival History*. Retrieved from Sakshi Education: <https://education.sakshi.com/general-knowledge/regional/bathukamma-festival-history-telugu-141863>
5. Haindavi. (2021, October 7). Bathukunichina Amma. Warangal, Telangana, India.
6. Satprakashananda, S. (1956). Folk Festivals in India. *Midwest Folklore*, 221-227.
7. Unknown. (2021, October 6). *Bathukamma flowers and their Medicinal Values*. Retrieved from Prabhata Velugu: <https://www.v6velugu.com/bathukamma-flowers-are-their-medicinal-value>  
- Assistant Professor, Centre for Comparative Religion and Civilizations, Central University of Jammu, Jammu (J&K) [gurram.crc@cuammu.ac.in](mailto:gurram.crc@cuammu.ac.in)

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : समग्र अवलोकन

□ डॉ. दीपक कुमार अवस्थी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरे 34 वर्षों के उपरान्त राष्ट्र की प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के अनुरूप बहुआयामी शैक्षिक मॉडल के रूप में प्रतिपदित किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21 वीं शताब्दी की ऐसी प्रथम नीति है जिसका लक्ष्य देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को पुनः श्रेष्ठ बनाना है। भारत के प्राचीन मूल्यों के आधार को बनाये रखते हुए शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों, संधारणीय विकास के साथ शिक्षा की नवीन विधाओं को स्थापित करना है। 2017 में शिक्षा नीति का आलेख के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा अथक प्रयासों के उपरान्त तैयार किया गया। 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री द्वारा इस आलेख को राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसमें भारतीय सनातन ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा के आलोक में सांसारिक जीवन, ज्ञानार्जन तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति के साथ-साथ कला, विज्ञान तथा पाठ्यक्रम और अवधारणात्मक रचनात्मक एवं तार्किक सोच की व्यवस्था को उन्नत करने का लक्ष्य, बहुभाषा अध्ययन, नैतिकता, मानवीय, सामाजिक संबद्धता संवैधानिक मूल्यों की समृद्धता, सीखने के सतत मूल्यांकन, सुशासन, नवाचार के साथ आउट ऑफ द बॉक्स विचारों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है।<sup>1</sup>

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में शिक्षा व्यवस्था की उन्नति के लिए 1964-66 दौलत सिंह कोठारी आयोग, 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति को निर्मित किया गया जिसमें मुख्य रूप से शिक्षा तक प्रभावी पहुँच कैसे स्थापित हो सके पर बल दिया गया। शिक्षा में भारतीय मूल्यों का अभाव था जिसका दुष्परिणाम ये रहा कि भारत में बेरोजगारी, सामाजिक आर्थिक विषमता, क्षेत्रीय असंतुलन तथा विकास की कमी से हम निरन्तर जूझते रहे।<sup>2</sup> गुणवत्तापूर्ण शिक्षा राष्ट्रीय उत्थान की प्रथम शर्त है। भारत सरकार द्वारा शिक्षा नीति को वर्तमान सदी की आकांक्षात्मक लक्ष्यों, संधारणीय विकास को पुनर्गणित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पुरातन एवं नूतन मूल्यों को समन्वित कर विकास की विद्या को प्राप्त करने का खाका खींचा गया है। भारतीय प्राचीन समृद्ध ज्ञान परम्परा के आलोक में नवीन विकास की

अवधारणाओं के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति को चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया जाना अभी प्रस्तावित है।

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञानार्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म-ज्ञान और मुक्ति की प्राप्ति पर बल दिया गया है। इस मूल्याधारित शिक्षा व्यवस्था ने भारत में चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्ता, माधव, पाणिनि, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगल, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और थिरुवल्लुवर जैसे अनेकों महान् विद्वानों को जन्म दिया।<sup>3</sup> आज ज्ञान एवं संस्कृति के सम्बर्धन से युक्त भारत की इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी को संरक्षित रखते हुए इसमें निरन्तर शोध के आधार पर समृद्ध किया जाना अति आवश्यक है। शिक्षा ही भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर एक जीवन्त और न्यायसंगत समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान कर सकती है।

शिक्षा व्यवस्था को संवैधानिक मूल्यों पर आधारित करते हुए सामाजिक न्याय की अवधारणा की प्राप्ति के साथ-साथ भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति के प्रति सम्मान रखते हुए और साथ ही देश की स्थानीय और वैश्विक सन्दर्भ में आवश्यकताओं का ध्यान रखते शिक्षा नीति को निर्मित किया गया है।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख सिद्धान्त

प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास को प्रोत्साहन देते हुए बुनियादी शिक्षा एवं संख्या ज्ञान को बढ़ाना बहुभाषा शिक्षा के साथ-साथ शैक्षिक प्रक्रिया में लचीलापन स्थापित करते हुए रचनात्मक एवं तार्किक सोच को उन्नत करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक प्रत्येक बच्चे को स्थापित करना।

कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं, के मध्य अलगाव की समाप्ति जिससे ज्ञान के क्षेत्रों के बीच हानिकारक ऊँच-नीच और परस्पर दूरी एवं असंबद्धता को दूर किया जा सके।

संवैधानिक मूल्यों को समृद्ध करते हुए नवाचार, पारदर्शिता तथा संसाधनों का कुशलता पूर्वक इस्तेमाल को बढ़ावा देना तथा सतत् मूल्यांकन की अवधारणा पर बल देना।

स्कूली शिक्षा से उच्चतर शिक्षा तक सभी स्तरों के शिक्षा पाठ्यक्रम में समन्वय करते हुए व्यावसायिक शिक्षा तथा स्तरीय शोध को स्थानीय परिवेश को अनुकूल बनाना।

अतीत की भारतीय समृद्धता के गौरव को बढ़ावा देते हुए उत्कृष्ट शोध में वृद्धि करना।

एक मजबूत, जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त निवेश को बनाये रखने पर सक्रिय बल देना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को दो भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग स्कूली शिक्षा के लिए तथा दूसरा भाग उच्च शिक्षा से जुड़ा हुआ है।

प्रथम भाग - स्कूली शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के मानक स्तर 10+2 वाली स्कूली शिक्षा व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करना सुनिश्चित किया जाना प्रस्तावित है। 8 वर्ष से 11 वर्ष तक स्कूली पाठ्यक्रम को रुचियों एवं विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप रिडिजाइन किया जाना है शिक्षा व्यवस्था का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है -

आंगनबाडी अर्थात् प्री-स्कूल के 3 साल

कक्षा 1-2 प्राथमिक स्कूल में 2 साल (3 से 8 वर्ष के बच्चों सहित)। कक्षा 3-5 (8 से 11 वर्ष के बच्चों सहित) कक्षा 6-8 मिडिल स्कूल स्टेज (11 से 14 वर्ष के बच्चों सहित)।

कक्षा 9 से 12 सैकण्डरी स्टेज दो फेज निर्धारित किये हैं। प्रथम 9वीं एवं 10वीं तथा द्वितीय 11वीं तथा 12वीं जिसमें 14-18 वर्ष तक के बच्चों को रखा गया है।<sup>4</sup>

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रथम भाग के समग्र अवलोकन के अन्तर्गत बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जीवन का शुरूआती चरण जो सीखने का सबसे सुनहरा समय होता है अर्थात् बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा सम्भवतया समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों का शारीरिक, भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारम्भिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है।

शिक्षा व्यवस्था में प्रारम्भिक अवस्था में 0 से 3 वर्ष तथा 3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए एक फ्रेमवर्क तैयार किया जा रहा है जिससे लगभग 5 करोड़ से अधिक बच्चों बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान तक अपनी पहुँच चरणबद्ध तरीके से स्थापित कर सकेंगे। इस संबंध में द डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा) पर बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर उच्चतर गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध करवाते हुए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान पर नये सिरे से पाठ्यक्रमों को डिजाइन करना सुनिश्चित किया जा रहा है। भारत में स्कूली शिक्षा को बीच में छोड़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है।

एनईपी के अन्तर्गत ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या को कम करना तथा स्कूल में उनका शत-प्रतिशत नामांकन में वृद्धि करते हुए उन्हें नियमित विद्यालय के साथ जोड़ना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। इसे दूर करने के लिए एक डेटाबेस तैयार किया जा रहा है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत संज्ञात्मक कौशल के साथ-साथ पाठ्यचर्या, शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया के मध्य समन्वय स्थापित करते हुए आलोचनात्मक चिंतन और विश्लेषण आधारित अधिगम को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। शिक्षा का ये अवधारणात्मक पक्ष हमारी राष्ट्रीय परम्परा का अभिन्न अंग रहा है।

एनईपी के अन्तर्गत प्रत्येक विषय में स्वयं करके सीखने, खेल और कहानी आधारित शिक्षण के साथ-साथ कला समन्वय, क्रॉस करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण को सांस्कृतिक समृद्धता के आधार पर प्रभावी बनाने पर बल दिया गया है। भारत में बहुभाषावाद भारत की एकता अखण्डता के समन्वय का परिचायक है। इस संबंध में द लैंग्वेज ऑफ इण्डिया को एक प्रभावी प्रोजेक्ट के तौर पर स्थापित करते हुए संविधान की 8वीं अनुसूची के अनुरूप त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया है ताकि उत्तर और दक्षिण में भाषा के आधार पर कोई विवाद ना रहे। स्थानीय भाषा में चरणबद्ध तरीके से समसामयिक विषयों, कोडिंग तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी आदि जैसे समसामयिक विषयों की शुरूआत सहित सभी स्तरों पर छात्रों में इन विभिन्न महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने हेतु समुचित शिक्षण शास्त्र के अनुसार प्रभावी कदम उठाना तय किया है। शिक्षा मे नवाचार के लिए सीखने हेतु सतत अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षकों को स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यशालाओं के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षक विकास का मॉड्यूल तैयार किया जा रहा है। एनसीईआरटी जैसे संस्थानों की इसकी जिम्मेदारी सौंपी गयी है।<sup>5</sup>

उच्च शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-वर्तमान समय में उच्चतर शिक्षा के अन्तर्गत संज्ञानात्मक कौशल, विषयों का कठोर विभाजन के

कारण वंचित वर्ग तक इसकी पहुँच पूरी तरह प्रभावी नहीं है। सामाजिक न्याय की अवधारणा को प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत आमूलचूल बदलाव को इंगित किया गया है। शिक्षा विषय को बहुविषयक बनाने, पूरे भारत में अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना करने तथा भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम के निर्धारण पर बल दिया गया है।

भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों को अनुसंधान एवं योग्यता आधारित प्रभावी रूप से नियामक बनाने के लिए को बहुविषयक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, एचईआई कलस्टर्स अथवा नॉलेज हब में परिवर्तित किया जायेगा। भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी और विक्रमशिला जिनमें भारत और अन्य देशों के हजारों छात्र जीवंत एवं बहुविषयक परिवेश में शिक्षा ग्रहण करते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्राचीन व्यवस्था को आधार बनाते हुए नियमों का निर्माण किया जायेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत विश्व स्तरीय शिक्षा संस्थानों की स्थापना पर बल दिया गया है।<sup>6</sup>

शिक्षा नीति में अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए भारत में उच्च शिक्षा संस्थाओं में ग्रेडेड स्वायत्ता को चरणबद्ध तरीके से स्थापित किया जायेगा जिसमें वर्ष 2035 तक छात्रों के सकल नामांकन में 50 प्रतिशत वृद्धि करते हुए उच्च शिक्षा के बुनियादी ढाँचे को बदलाव के आधार पर प्रभावी बनाया जायेगा तथा इन संस्थानों को मुक्त दूरस्थ शिक्षा और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से जोड़ते हुए नवाचार आधारित रोजगारपरक व्यवस्था की ओर अगले 15 वर्षों में अग्रसर किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।<sup>7</sup>

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राचीन भारतीय साहित्य की समृद्धता को ध्यान में रखते हुए वाणभट्ट की कादंबरी में शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया। इनमें मुख्यतः गायन, चित्रकला, वैज्ञानिक अध्ययन, रसायनशास्त्र और गणित, व्यवसायिक क्षेत्र में वृद्धि औषधि और अभियांत्रिकी के साथ सम्प्रेषण, वाद-संवाद के व्यवहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स), मानवता का कल्याण, विज्ञान, गणित आदि को कलाओं के रूप में वर्णित किया गया है।<sup>8</sup> इन सभी कलाओं के ज्ञान और विचार को आधुनिक रूप में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत लिबरल आर्ट्स के नाम से समाहित किया गया है। इस तरह कि समग्र और बहुविषयक शिक्षा को 21वीं शताब्दी की चौथी औद्योगिक क्रांति कहा जा सकता है।

शिक्षा नीति के अन्तर्गत स्नातक उपाधि के लिए डिग्री एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन से चार वर्ष निर्धारित कि गयी है जिसमें विद्यार्थी को दूसरे पाठ्यक्रम में जाने की स्वतंत्रता के विकल्प स्थापित किये गये हैं। जैसे किसी भी कोर्स में एकसाल पूरा करने पर सर्टिफिकेट,

दो साल पूरा करने पर डिप्लोमा या तीन साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री तथा चार वर्षीय स्नातक प्रोग्राम के अंतर्गत बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जायेगा। इस संदर्भ में एक अकादमिक क्रेडिट बैंक की स्थापना की जायेगी। उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा डिग्री के साथ-साथ चार वर्षीय कार्यक्रम में शोध सहित डिग्री दी जा सकती है। उच्चतर शिक्षण संस्थान स्टार्ट-अप, इन्क्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों के केंद्र, अधिकतम उद्योग-अकादमिक जुड़ाव और मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतर-विषय अनुसंधान की स्थापना करके अनुसंधान और नवाचार पर फोकस किया जायेगा। संक्रामक रोगों और वैश्विक महामारियों के परिदृश्य को देखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि उच्चतर शैक्षणिक संस्थान, संक्रामक रोगों, महामारी विज्ञान, वायरोलॉजी, डायग्नोस्टिक्स, इंस्ट्रुमेंटेशन, वैक्सीनोलॉजी और अन्य प्रासांगिक क्षेत्रों में अनुसंधान करने की अगुवाई करने के साथ-साथ छात्र समुदाय के बीच नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उच्चतर शिक्षण संस्थान विशिष्ट हैंडहोल्डिंग तंत्र विकसित किया जायेगा।

जीवन में खेल का अत्यधिक महत्व है, खेल, मनोरंजन, फिटनेस, अच्छा स्वास्थ्य, मनो-सामाजिक विकास, नैतिक मूल्यों की गुणवत्ता तथा भोजन के लिए नियमों को नई शिक्षा नीति में स्थान दिया गया है।

मेक इन इंडिया कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु भारत के शिक्षा एवं शोध संस्थानों को विश्वस्तरीय बनाया जाना सुनिश्चित किया गया है। योग, संगीत, ऐतिहासिक संस्कृति, आयुष चिकित्सा पद्धति की ओर अन्तरराष्ट्रीय छात्रों को अधिक से अधिक आकर्षित किया जा सके। भारत के चुनिंदा विश्वविद्यालयों को विश्व के सौ विश्वविद्यालयों में शामिल करने की चुनौती को प्राप्त करने पर बल दिया गया है। अंतरराष्ट्रीयकरण के अंतर्गत लाभप्रद एमओयू को स्थापित किया जाना सुनिश्चित किया गया है। विश्वविद्यालयों में इस तरीके की सुविधा और फ्रेम वर्क विकसित किया जायेगा जो अंतरराष्ट्रीय मापदण्डों को पूरा कर सके। ग्रामीण और शहरी परिवेश के मध्य समन्वय स्थापित करते हुए एक मजबूत तारतम्यता को स्थापित किया जा सकेगा।<sup>9</sup>

शिक्षण व्यवस्था की उत्कृष्टता के लिए शिक्षा नीति में शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया, पदोन्नति, वेतन वृद्धि, शिक्षक छात्र समीपता को बढ़ावा देने के लिए नवीन राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन के माध्यम से व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क के अनुरूप बनाया जा रहा है। ताकि 2025 तक उच्च शिक्षा प्रणाली में 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जा सके। उच्च शिक्षा की नियामक प्रणाली के अन्तर्गत सम्पूर्ण मूल्यांकन को सक्रिय रूप से जवाबदेही बनाने के लिए राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद,

राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद, संस्थान कलस्टर प्रणाली, सामान्य शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा योग्यता फ्रेम वर्क, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, वेटरनरी काउंसिल ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, आर्किटेक्चर काउंसिल, फार्मा काउंसिल ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद आदि का पुनर्गठन कर व्यावसायिक मानक सेटिंग निकायों को बनाया जा रहा है। इसके पीछे मुख्य मंतव्य विभिन्न संस्थागत संरचनाओं की भूमिका के मध्य टकराव को रोकना है।<sup>10</sup>

### निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा नीति का आलेख तैयार किया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसमें नौकरी प्राप्ति पर बल दिया जा रहा है। अनियोजित प्रतिस्पर्धा, मनोवैज्ञानिक दबाव, समाज की गतिविधियों से दूरी, सामुदायिकता की भावना में कमी, सामाजिक विकास के बजाय स्वउन्नति का भाव अधिक दिखाई देता है। आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा समाज और राष्ट्र की प्रगति का माध्यम बने। ये तभी संभव है जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समुन्नत प्रयास किये जायें। जनसाधारण के साथ-साथ सरकारी प्रयासों का उचित समन्वय हो। शिक्षक, समाजसेवी, अभिभावक, निजी एवं सरकारी शिक्षा के संगठन अपना दायित्व उचित तरह निर्वहन करें तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को चरणबद्ध तरीके से प्राप्त किया जा सकता है। यदि स्थानीयता के साथ-साथ राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय समन्वय को उचित तरह से निरूपित किया जा सके तो 2047 तक भारत को विकसित, श्रेष्ठ, अतुल्य, आत्मनिर्भर गौरवशाली और पुनः विश्व गुरु बनाया जा सकेगा।

### संदर्भ सूची -

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली : भारत सरकार द्वारा जारी एजुकेशन डॉक्यूमेंट, 19
- कमल, के.एल. (2012), भारतीय राजनीतिक चिन्तन, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 104
- गुप्ता, एस.पी. (2004), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास की समस्यायें, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 73
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली : भारत सरकार द्वारा जारी एजुकेशन डॉक्यूमेंट, 66-72
- वही, 11
- दृष्टि द विजन (2020), (चर्चित मुद्दे) नई शिक्षा नीति- 4
- [www.education.govt.in/site/upload-file/mhrd/files/NEP-final-hindi-.pdf](http://www.education.govt.in/site/upload-file/mhrd/files/NEP-final-hindi-.pdf) नई दिल्ली : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 12
- शर्मा, मंजू (2010), भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, कामसिफल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 106
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), विद्यालय शिक्षा एवं शिक्षक : एक समग्र दृष्टि, जयपुर : राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय, 127
- शैक्षिक मंथन (द्विभाषी मासिक) (वर्ष 16, अंक 4, नवम्बर 2023), राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विशेष योग्यजन शिक्षा, शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका, शैक्षिक महासंघ सदन, नई दिल्ली।

- पी.डी.एफ. रिसर्च स्कॉलर, आई.सी.एस.एस.आर.  
राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर



# उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बहुआयाम एवं नवाचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में

□ प्रोफेसर अमरसिंह मूनपरिया

## सारसंक्षेप

प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर ऐसी उच्च शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना जिसमें विशाल बहु विषयक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय हों तथा इसमें मुख्य आकर्षण बहु विषयक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय हैं जिसमें प्रत्येक जिले में अथवा उसके आसपास कम से कम एक विद्यार्थी पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, बेहतर छात्र अनुभव के लिए मूल्यांकन और समर्थन, एक महत्वपूर्ण भाग है। उच्च शिक्षा के विखण्डन को समाप्त करना, छात्रों के सीखने के लिए विद्वानों तथा साथियों के समुदाय का निर्माण, विषयों के बीच की खाइयों को पाटना, छात्रों में मानसिक, कलात्मक, रचनात्मक, विश्लेषणात्मक और खेल जैसे चहुँमुखी विकास करना साथ ही बहुविषयक शिक्षा व्यवस्था मनुष्य की सभी क्षमताओं जैसे बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक तथा नैतिक को एकीकृत तरीके से विकसित करना, नई शिक्षा नीति-2020 का प्रमुख लक्ष्य है।

नई शिक्षा नीति-2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है। हमारे देश में ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परम्परा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता रहा है। इतिहास बताता है कि तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्वस्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षण एवं शोध के ऊँचे प्रतिमान स्थापित किए थे तथा न केवल भारत बल्कि अन्य देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। यह नीति उच्च शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करने तथा नवाचार के लिए उपयुक्त चुनौतियों को दूर करने के लिए कहती है।

**मुख्य शब्द** - रचनात्मक, सर्वोच्च, चुनौतियाँ, बहु विषयक, चहुँमुखी

## परिचय :

स्वामी विवेकानन्द जी का कहना है कि “जिस अभ्यास से

मनुष्य की इच्छा शक्ति और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बने उसी का नाम है शिक्षा। विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन होना चाहिए। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक विकास हो, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।’

नई शिक्षा नीति-2020 (एनईपी 2020), 29 जुलाई 2020 को भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया है। भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ-साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक विस्तृत रूपरेखा तैयार करती है। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को बहुआयामी बनाना तथा नवाचार करना है तथा धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके वर्तमान संप्राण ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखरेख करना है। यह शिक्षा नीति भारतवर्ष को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है।

नई नीति में यह विचार किया गया है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का नजरिया शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, निरन्तर विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और विश्व कल्याण के लिए एक उत्तरदायी प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है।

उच्च शिक्षा मनुष्य तथा समाज के विकास में अतिआवश्यक भूमिका निभाती है। हमारे संविधान में भारत देश को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है जहाँ सभी के लिए न्याय, स्वतन्त्रता, समानता एवं भाई-चारे का भाव हो। एक राष्ट्र के

आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति 2020 में किए गए मुख्य नवाचारों पर प्रकाश डालना है। यह नीति स्कूल व उच्च शिक्षा दोनों में महत्वपूर्ण सुधारों की मांग करती है जो नई पीढ़ियों को आगे बढ़ने तथा नए युग की प्रतिस्पर्धा का डटकर सामना कर सकने के लिए तैयार करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है कि ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व में तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बिग डाटा, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते एक और विश्वभर में एक कुशल कामगारों की जगह मशीनें काम करने लगेंगी और दूसरी और डाटा साइंस कंप्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और मांग बढ़ेगी जो विज्ञान समाज विज्ञान और मानविकी के विविध विश्व में योग्यता रखते हो। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों की वजह से हमें ऊर्जा, भोजन, पानी, स्वच्छता आदि की आवश्यकता को पूरा करने के नए रास्ते खोजने होंगे और इस कारण भी जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कृषि, जलवायु विज्ञान और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में नए कुशल कामगारों की जरूरत होगी। महामारी और महामारी के बढ़ते उद्भव संक्रामक रोग प्रबंधन और टिकों के विकास में सहयोगी अनुसंधान और प्रणामी सामाजिक मुद्दे बहू विषय का अधिगम की आवश्यकता को बढ़ाते हैं।

नई शिक्षा नीति- 2020 (एनईपी 2020) में भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र को बहुआयामी बनाने के लिए सुझाए गए नवाचार इस प्रकार हैं -

- **श्रेष्ठता के भाव से विश्व स्तरीय शिक्षा** : इसमें पूरी दृढ़ता से विश्व स्तरीय उच्च शिक्षा प्रणाली के निर्माण की अभिलाषा की गई है और माना गया है कि यह भारत के भविष्य के लिए और ज्ञान परक समाज के निर्माण के लिए बेमिसाल है।
- **बहु-विषयक और सर्वांगीण शिक्षा** : नई शिक्षा नीति में विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और चिकित्सा में अध्ययन के साथ-साथ कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर जोर देने के साथ एक सर्वांगीण विकास, बहु-विषयक तथा अंतर-अनुशासनात्मक शिक्षा के सिस्टम के निर्माण की परिकल्पना की गई है।
- **नियामक प्रणाली में नवाचार** : भारतीय उच्चतर शिक्षा आयोग (HECI) का गठन किया जाना जिसे चार स्वतन्त्र व्यवस्थाओं के रूप में स्थापित किया गया है।

1. **पहला अंग** : राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद् (NHERC)

2. दूसरा अंग: राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद् (NAC)

3. तीसरा अंग: उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद् (HEGC)

4. चौथा अंग: सामान्य शिक्षा परिषद् (GEC)

इन सभी संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य स्वतन्त्र रूप से अपना काम करने के साथ साथ साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तारतम्यता स्थापित करना है।

- **अनुसंधान में सम्भावनाओं पर जोर** : इसमें अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति पर जोर दिया गया है, जो भविष्य में उच्च शिक्षा की कल्पना के लिए केंद्र बिंदु है तथा राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना के माध्यम से अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण धन प्रोत्साहन और अनुदान बनाने का प्रयास किया गया है।

- **श्रेष्ठ संकाय का चयन** : संकाय सदस्य उच्च शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। इसमें मेंटरिंग, रिटेंशन, प्रोत्साहन, उपलब्धियों और संकाय विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान के साथ श्रेष्ठ संकाय की भर्ती के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया है।

- **शैक्षणिक स्वतंत्रता तथा लचीला पाठ्यक्रम** : इसमें आज की कठोर अनुशासनात्मक सीमाओं को हटाकर तथा आजीवन सीखने की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए पर्याप्त शैक्षणिक स्वतन्त्रता प्रदान करना तथा पाठ्यक्रम को लचीला बनाया गया है।

- **समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा** : इस नीति में समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा के लिए आई.आई.टी., आई. आई. एम. आदि की तर्ज पर बहुविषयक शिक्षा और शोध विश्वविद्यालय नामक मॉडल सार्वजनिक विश्वविद्यालय की स्थापना की परिकल्पना की गई है। जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उच्चतम वैश्विक मानकों को स्थापित करना है।

- **मूल्य आधारित शिक्षा** : इस नीति में बहुविषयक शिक्षा के विचार को धरातल पर लाने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में लचीले और नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम, सामुदायिक जुड़ाव और सेवा, पर्यावरण शिक्षा जैसी मूल्य आधारित शिक्षा की परिकल्पना की गई है, जिसमें जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबन्धन, स्वच्छता, जैविक विविधता का संरक्षण एवं प्रबन्धन, वन्य जीव संरक्षण आदि इसके अभिन्न अंग होंगे।

- **राजकीय अनुदान और निजी सहयोग का समन्वय** : इसने उच्च शिक्षा में जीडीपी निवेश में वृद्धि के साथ वित्त पोषण की रूपरेखा को मजबूत किया है और निजी सहयोग पर जोर देते

हुए राजकीय और निजी दोनों क्षेत्रों की भूमिका को नीति में प्रमुख स्थान दिया गया है।

- **अंतरराष्ट्रीयकरण और डिजिटलीकरण** : इसमें दुनिया भर के प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ वैश्विक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीयकरण को प्रमुखता से रखा है। इसमें विश्वविद्यालयों की मान्यता और विश्व स्तर पर रैंकिंग भी शामिल है। इसमें उच्च शिक्षा के डिजिटलीकरण के लिए महत्वपूर्ण समर्थन और ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने और मौजूदा डिजिटल बुनियादी ढाँचे के उन्नयन की आवश्यकता की परिकल्पना की गई है। कोरोना काल के समय आनलाईन शिक्षा के महत्व को न केवल उच्च शिक्षा बल्कि स्कूली शिक्षा में भी समझा तथा इसी माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्ण करवाया व परिक्षाओं का संचालन किया गया।
- **सार्वजनिक शिक्षा के अधिक अवसर** : वंचित और निर्धन छात्रों के लिए निजी/परोपकारी विश्वविद्यालयों द्वारा छात्रवृत्ति में पर्याप्त वृद्धि, ऑपन स्कूल, ऑनलाईन शिक्षा और मुक्त दूरस्त शिक्षा के पर्याप्त अवसर देना साथ ही द्विव्यांग छात्रों के लिए बुनियादी ढाँचों में बदलाव व शिक्षण सामग्री की उपलब्धता तथा उन तक पहुँच को प्राथमिकता देना।
- **व्यावसायिक कौशल का विकास** : स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत कर यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशल को सीखे तथा श्रम की महता और भारतीय कलाओं और कारीगरी सहित अन्य व्यवसायों के महत्व से परिचित हो।
- **शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोकना** : सभी सार्वजनिक व निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानों को नियामक व्यवस्था में बराबर मानना तथा एक पारदर्शी तन्त्र विकसित करना इस नई शिक्षा नीति के मुख्य उद्देश्यों में से एक है।
- **उत्कृष्ट नेतृत्व** : बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (BOG) द्वारा एक कठोर, निष्पक्ष, योग्यता आधारित, क्षमता आधारित प्रक्रिया के माध्यम से संस्थानों के सभी नेतृत्वपदों और संस्थान प्रमुखों का चयन करना तथा बदलाव व नवाचार की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहे ऐसा नई नीति का मुख्य ध्येय है।
- **भारतीय कला और संस्कृति का संवर्धन** : संस्कृति का प्रसार करने का प्रमुख माध्यम कला है। भारतीय कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए स्थानीय संगीत, कला, हस्त शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय कलाकारों एवं हस्तशिल्प के

कुशल व्यक्तियों को अतिथि शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाएगा और लुप्तप्राय हो रही हमारे देश की लोक कला व संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाएगा।

- **देश की समृद्ध विविधता का ज्ञान** : यह नीति भारत की समृद्ध विविधता का प्रत्यक्ष ज्ञान शिक्षार्थियों को प्राप्त करने का अवसर देती है। इसके लिए “एक भारत श्रेष्ठ भारत” के तहत विभिन्न पर्यटन स्थलों को पहचान कर इन क्षेत्रों के बारे में ज्ञानवर्धन करने के लिए और उनका इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परम्पराओं को जानने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों का भ्रमण करवाने का नवाचार किया गया है।
- **भारतीय भाषाओं का प्रचार और प्रसार** : उच्चतर शिक्षा व्यवस्था में भारतीय भाषाओं के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के लिए विषय विशेषज्ञ तथा अनुवाद एवं व्याख्या के विशेषज्ञों को नियुक्त किया जाएगा। इस नीति में मातृभाषा/स्थानीय भाषा के महत्व पर ध्यान दिया गया है तथा उनके प्रचार और प्रसार के लिए शिक्षा व्यवस्थाओं में भाषाओं से जुड़े कार्यक्रमों का संचालन किया जाएगा तथा भाषाओं के ज्ञानवर्धन के लिए सॉफ्टवेयर तथा ई-कंटेंट उपलब्ध करवाए जाएंगे।

नई शिक्षा नीति-2020 प्राचीन भारत की शैक्षणिक व्यवस्था पर प्रकाश डालती है कि भारत में समग्र एवं बहू विषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों से लेकर ऐसे कई व्यापक साहित्य हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे बाणभट्ट की कादंबरी शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में परिभाषित या वर्णित करती है और इन 64 कलाओं में न केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय शामिल हैं बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायन शास्त्र और गणित व्यवसाय क्षेत्र जैसे बर्दई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी और साथ ही साथ संप्रेषण चर्चा और वाद संवाद करने के व्यावहारिक कौशल भी शामिल हैं।

21वीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का जरूरी उद्देश्य अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है। यह नीति एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है और साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक, जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा की भावना और विज्ञान, सामाजिक, विज्ञान, कला, मानवीय की भाषा साथ ही व्यावसायिक तकनीकी और व्यावसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में 21वीं सदी की क्षमताओं को विकसित करती है।

## निष्कर्ष -

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह समाज के विकास हेतु भावी नागरिकों का निर्माण करती है तथा मनुष्य की अभिक्रमताओं को विकसित करके उसके कौशल को बाहर निकालने का कार्य करती है। यह मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है क्योंकि मनुष्य अपनी किसी भी उम्र में कुछ न कुछ सीखता रहता है। नई शिक्षा नीति-2020 में मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं को विकसित करने, चाहे वह स्कूली शिक्षा हो अथवा उच्च शिक्षा पर प्रमुखता से विचार किया गया है और उच्च शिक्षा प्रणाली को बहुआयामी बनाने व आमूलचूल बदलाव लाने के लिए नवाचार किए गए हैं।

## सन्दर्भ सूची -

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
2. [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)
3. [https://en.wikipedia.org/wiki/National\\_Education\\_Policy\\_2020](https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy_2020)
4. [https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP-Indias-New-Education-Policy\\_w@w@-final.pdf](https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP-Indias-New-Education-Policy_w@w@-final.pdf)
5. [http://sx-ap-southeast-v.amazonaws.com/ijmer/pdf/volumev10/volumev10/issuew\(z\)/xx.pdf](http://sx-ap-southeast-v.amazonaws.com/ijmer/pdf/volumev10/volumev10/issuew(z)/xx.pdf)
6. Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019,
7. <https://innovate.mygov.in/wpcontent/uploads/2019/06/mygov15596510vww.pdf> National Education Policy 2020.
8. [https://www.mhrd.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/nep/NEP\\_Final\\_English.pdf](https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/NEP_Final_English.pdf) referred on 10/08/2020

- प्राचार्य, श्री गौरीशंकर बिहानी

राजकीय कन्या महाविद्यालय, नोहर (हनुमानगढ़)

Email ID : [asmunparia@gmail.com](mailto:asmunparia@gmail.com)

# National Education Policy (2020) in Higher Education Level : Problems and Prospects

□ Dr Anil Kumar Biswas

## Introduction

Education is a dynamic process that starts from birth. Education is the mirror of society and base of the socio-economic development. It transforms human beings from ignorance to enlightenment, from underdevelopment to faster economic and social development. Education is a process of character building, strengthening the mind, and expansion of intellect (Biswas, 2017). According to Swami Vivekananda, education is the manifestation of perfection already in man. According to Tagore, Knowledge is liberation. The spiritually liberated man is the aim of Indian education. Education alone can create a climate and establish a state “where the mind is free, and the head is held high, where knowledge is free, where the world has not been broken up into fragments of narrow domestic walls, where words came from the depths of truth.” According to these ‘Mahatmas’, education is a process that enlightens the human being. But in the era of liberalization education has been defined as per its market value. Now education has become more degree-based than knowledge-based. After the implementation of liberalization, privatization, and globalization education is now like a commodity like others. India as a welfare state has taken various initiatives for the quality education of its people. In that context, India has taken initiatives for universalization of quality education and making competent as per the demand of the market.

The history of Indian education stretches back to the ancient urban centers of learning at Taxila and Nalanda. The Nalanda University of ancient India was a celebrated center of Buddhist learning. As a seat of highest intellectual activity, Nalanda had a rich and diverse curriculum in ancient times. Along with Astronomy, Metaphysics, and Grammar, there was an emphasis on Yoga shastra, Brahmanical Vedic texts, and Mahayana and Hinayana teachings. At the time of the ancient period, the University of Nalanda attracted scholars and students from outside India. Buddhist monks from China came to Nalanda in search of the original teachings of Buddhism. It was perhaps around 629 AD that Xuan Zang, the Chinese monk, scholar, and preacher visited Nalanda for searching

knowledge of Buddhism. There are several references of scholars from Nalanda who visited China, Tibet, and other neighboring countries to assist in the translation of Sanskrit scriptures into Chinese. At that time many works had been translated into Chinese and Tibetan to help spread the philosophy and doctrines of Buddhism and yoga along with Tantra. The Nalanda University has linked India and East Asia culturally and spiritually since the 12th century (Palit, 2009).

During the Medieval period, education was elitist favoring for rich. In that period scope of education was very limited. Traditional education in India served a very limited purpose for a particular section of a society belonging to a certain cast. So before the British came to India there was a big gap in the education sector. Western education became ingrained into Indian society with the establishment of the British Raj. But primarily such pre-existing elitist tendencies were reinforced by the British government in the education sector in India. The British government first introduced the modern education system developed by the three Presidencies (Bombay, Calcutta, and Madras). In the early 1900s, the Indian National Congress called for national education, emphasizing technical and vocational training. In 1937 Gandhiji first raised his voice in favor of universal education. After independence, curricula were thus imbued with the twin themes of inclusiveness and national pride, emphasizing the fact that India’s different communities could be peacefully sided by side as one nation.

## Research Objectives

- i. To analyse the key prospects of the New Education Policy (2020) in higher education level,
- ii. Find out the challenges in implementing the New Education Policy in Higher education level,
- iii. To map the way forward for New Education Policy (2020) in higher education level,

## Methodology

This research work is purely qualitative in nature based on both primary and secondary data. The researcher has collected data related to the New Education Policy (2020) from various published articles of government as well as non-

governmental institutions. Primary data for the research collected from the government website. After collection of data from various sources the researchers has prepared findings based on content analysis method.

### **Education Policies in India: A Historical Overview**

India has a long history in its education system. From the ancient period to till date education system of India has maintained continuity in its style. Till we are proud of the past glory of our education system. But in the medieval period education system was not too good. In that period education was an elitist fashion. Modern education started in India in the British period. Policy-based education was started in India in the early British era. Policies taken for education in India are discussed and divided into a) pre-independence policies and b) Post-independence policies.

#### **Pre-Independence Polices**

The Britishers first came to India with the sole aim of ensuring flourishing trade. The only thing, the British company owners were interested in was earning good profits and they knew very well that to cater to their administrative work they had to create a new educated class of Indians. They could help them with the administrative work and also accustom them to the diverse Indian values and laws which in turn would help them to rule over the Indians easily. In that context, they prepared some policies for education in India. Such major policies are Macaulay's Minute (1835), Wood's Despatch (1854), Education Commission (1882), Indian Universities Act (1904), Hartog Committee (1929) and Sergeant Plan of Education (1944).

#### **Post-Independence Period**

India's leaders after independence, already had their hands full trying frantically to conceive and develop a national system amidst severe economic crises and rehabilitation of the displaced due to partition. Reeling under such uncertainties, it was obvious that sectors like education and health did not get the deserved attention. Till 1976 education was a state subject; it was transferred state list to concurrent list in 1976 under 42<sup>nd</sup> Constitutional Amendment Act. So till 1976 there was no national level of educational policies except few commissions and committees.

#### **Kothari Commission (1964-1966)**

The Kothari commission headed by Daulat Singh Kothari was appointed by the government of India to overhaul the Indian education sector. The commission tried to link education with productivity and urged the government to increase the GDP percentage allotted for education. It recommended free and compulsory education, for all and the adoption of moral and spiritual values in a regular curriculum. The Commission had set up 12 Task Forces and seven Working Groups to undertake a comprehensive and

holistic study of the issues and problems of the Indian education system. The commission gave utmost importance to technological and scientific education, vocational education, learning about indigenous cultures, religions and traditions, modern languages, and also SUPW (Socially useful productive work). Kothari Commission also advocated the three language formulae and recommended the inclusion of adult education (Education Commission, 1964-66).

#### **National Policy on Education (1986)**

During the year (1986-87), the National Policy on Education was finalized after an intensive national debate. The Policy adopted by Parliament in May 1986 was followed up by an elaboration through the programme of action which was placed before Parliament and adopted in August 1986. The policy and the programme of action give shape to the address of the Prime Minister in 1985 when he declared that our educational system needed to be reconstructed as a dynamic force for national growth and integration and a national consensus of reform had to be built (Ministry of Human Resource Development, Government of India, 1986). The policy covers elementary education to higher education in rural and urban India. The National Policy on Education 1986 recommended a child-centered approach to elementary education. It is necessary for this connection that the academic programme and school activities should be built around the child and the school environment and condition of school facilities should be such to encourage the retention of children in school (Ministry of Human Resource Development, Government of India, 1988). The policy expanded the Open University system for more inclusion. The policy also emphasise on the established of the rural universities for expansion of the scope of higher education towards rural population.

#### **Kasturirangan Committee (2019)**

The Krishnaswamy Kasturirangan Committee was constituted by the Ministry of Human Resource Development, Government of India in June 2017. The Draft Policy provides several reforms at different stages of education in India. The draft National Education Policy, 2019 was built on the foundational pillars of access, equity, quality, affordability, and accountability. The committee has proposed to rename MHRD as Ministry of Education (MoE). In school education, a major revamping of curricular structure with Early Childhood Care and Education (ECCE) as an integral part of school education is proposed. The committee recommends the extension of the Right to Education Act, 2009 to cover children of ages 3 to 18. A 5+3+3+4 curricular and pedagogical structure based on cognitive and socio-emotional developmental stages of children: foundational stage (age 3-8 years): 3 years of pre-primary plus grades 12; preparatory

stage (8-11 years): grades 3-5; middle stage (11-14 years): grades 6-8; and secondary stage (14-18 years): grades 9-12. Schools will be re-organized into school complexes. It also seeks to reduce the content load in the school education curriculum. There will be no hard separation of learning areas in terms of curricular, co-curricular, or extracurricular activities and all subjects, including arts, music, crafts, sports, yoga, community service, etc. will be curricular. It promotes active pedagogy that will focus on the development of core capacities: and life skills, including 21st-century skills. The Committee proposed for massive transformation in teacher education by shutting down sub-standard teacher education institutions and moving all teacher preparation/education programmes into large multidisciplinary universities/colleges. The committee stated that a 4-year integrated stage-specific B.Ed. programme will eventually be the minimum degree qualification for teachers. A new apex body 'Rashtriya Shiksha Ayog' was proposed to enable a holistic and integrated implementation of all educational initiatives and programmatic interventions and to coordinate efforts between the Centre and states (The Ministry of Education, 2019)

### **National Education Policy (2020)**

After a long period of 34 years, the government approved a new National Education Policy on July 29<sup>th</sup>, 2020 in line with the recommendation of the Kasturirangan Committee. The National Education Policy, 2020 is the first education policy of the 21<sup>st</sup> century that aims to address the many growing developmental imperatives of the country. In particular, 2030, the agenda for sustainable development, was adopted by India along with the United Nations Members States in 2015. The policy includes the Sustainable Development Goal 4 to "ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all" by 2030. This policy proposes the revision and revamping of all aspects of the education structure, including the regulations and governance, to create a new system that is aligned with the aspirational goals of 21<sup>st</sup>-century education along with India's traditions and values (Ministry of Human Resource Development, 2020). The policy emphasizes the creativity of the individual. The policy is based on the principles that education develops the cognitive capacities of the learners in every stage along with social, ethical, emotional capacities including cultural awareness and empathy, teamwork, and leadership, service and sacrifice, courtesy and sensitivity, oral and written communication, integrity and work ethic. For the fulfillment of the vision government framed some major principles of the policy are as follows:

- The policy has given importance on the holistic development of the learners for building unique capabilities in overall sphere of development;

- The policy gives choice of freedom to the learners for choosing their learning trajectories and programme;
- There is no hard separations between arts, sciences, between curricular and extra-curricular activities, between vocational and academic streams;
- The policy given stresses on multidisciplinary nature of education;
- Emphasis given on conceptual understanding rather than rote learning;
- Emphasis given on critical thinking to encourage logical decision making and innovation;
- The policy has given emphasis on ethics, human values and constitutional values;
- There is scope to promote multilingualism in teaching and learning process;
- Life skill education is one of the principles of the NEP;
- The policy focus on formative assessment rather than summative assessment;
- The policy has scope to extensive use of technology in education. The policy also say about the use of artificial intelligence in education;
- The policy focus on the local context to respect the spirit of federalism;
- The nature of the policy is inclusive and equitable;
- Due respect to the teachers and faculty is one of the principles of the policy;
- There is 'light but tight' regulatory mechanism in education system for integrity and transparency;
- The policy given emphasis on outstanding research;
- The policy is a path of rootedness;
- The policy focus that education is a public service;
- Philanthropic and community participation in education is one of the another principles of the NEP.

### **What is 'new' in New Education Policy (2020)**

The New Education Policy is different from its predecessors. The new essence of this policy is that it aims to disseminate and popularize the rich culture, ethos, and traditions of India, revamp it, and bring back the glory of Indian knowledge and know-how. It intends to once again imbibe and prioritize the ancient Indian values and enrich the education system by assimilating them into the Indian education system. In other words, it wants the young generation to go back to its roots but at the same time not let go of the technological advancements and know-how of the Western world. India boasts of being home to numerous indigenous tribes. According to the Census of 2011, 8.6% of the population is tribal. The policy aims to tap the tribal values, creative endeavors, customs, and culture into the curriculum. It plans to refocus on traditional knowledge.

India for decades has been following the Western trajectory of education and the inception of this has been since 1835. In 1835 the famous Macaulay Minute had advocated that English was the supreme of all languages and Indian learning was inferior. The New Education Policy targets to abolish this trajectory and revive back the lost Indian cultural glory, by inculcating in young Indian minds the true essence of Indian culture, customs, and traditions as well as amalgamating them with modern scientific technology even as artificial intelligence and knowhow.

### **Prospects of New Education Policy (2020) in Higher Education Level:**

- \* **Structural modification at under graduate level:**
- \* 3-4 years duration of under graduation with multiple exits with appropriate certificate;
  - 1 year exit certificate
  - 2 years exit diploma
  - 3 years exit Bachelor degree
  - 4 years exit degree with research
- \* **Structural Modification at Graduate Level:**
  - 2 years master degree for those who completed 3 years under-graduation without research
  - 1 year master degree for those who completed 4 years graduation with research
  - Integrated 5 years Bachelor/Master program
- \* **Structural Modification at Ph.D. Level**
  - Require master degree or 4 years bachelor degree with research for entry in Ph.D programme
- \* Integration of humanities, arts, science, technology, engineering and mathematics in undergraduate level shall be increased creativity and innovation, critical thinking and higher order thinking capabilities, problem solving abilities, team work, communication skills, increase social and morale awareness.
- \* Introduction of credit based courses and projects in the areas of community engagement and service, environmental education, value based education shall be improve the practical knowledge of learners and open the choices.
- \* Provision for internship with local industry, businesses, artists, craftsperson as well as research internships with faculty and researchers at their own or other institutions; students may actively engaged with practical guide of their learning and will improve their employability.
- \* Flexible curricular structure would often multiple entry and exit points removing the previous rigid boundaries and providing rigorous research based specialization side by side opportunities for multi-disciplinary work; which making a bridge between academia, government and industry.

- \* Pedagogy for courses will strive for significantly less rote learning and an increased emphasis on communication, discussion, debate, research and opportunities for cross disciplinary and interdisciplinary thinking.
- \* Stress and pressures of student life can form a serious threat to their wellness. Inclusion of teaching fitness, good health, psycho-social wellbeing and ethical teaching in curriculum Under NEP would relieve students of higher education from stress and pressure.
- \* Holistic and multidisciplinary education aims to develop the capacities of human beings in general.
- \* Curriculum, pedagogy, continuous assessment and student support are the cornerstone for quality education. NEP (2020) would provide such opportunities for complete learning.
- \* There is a provision to encouragement of inclusion of the students from socio-economically disadvantaged backgrounds in higher education and continuous support to them.
- \* There is a provision of research/ teaching collaborations and faculty/ student exchange with high quality foreign institutions and mutually beneficial MOUs with foreign countries; setup campuses of Indian Universities in abroad and top universities in India promote India's education system locally and globally.

### **Problems of NEP (2020) Implementation in Higher Education level:**

- \* **Infrastructural Issue:-**Presently 1072 universities and 43796 colleges are functionalize across country. Out of the 1072 universities 56 are central universities, 459 are state universities, 127 are deemed to be universities and 430 are private universities. Out of the total number of universities 43 percent universities are rural university and 61.4 percent are rural colleges. These institutes are able to enrolled 27.3 percent young minds in higher education; it is comparatively lower from many develop and first growing countries. For the fulfillment of SDG 4 there is needed to increase the numbers of the institutions. Not only infrastructure of the institutions (public institutions) are too pathetic; institutions in urban areas also running with minimum infrastructural facilities.
- \* **Insufficient Financial investment:-** The implementation of the ambitious policy both in letter and spirit demands a huge financial investment. Public spending on education in India has been low since times immemorial. According to Economic Survey presented by Union Finance Minister Nirmala Sitharaman in



January 2022, the percentage allocated for investment in education was 3.1% of GDP in the year 2021-2022, which was 2.8% in year 2019-2020. But it is too small for the betterment of education. Investment in higher education is too small compare to elementary level. The policy mandated for investment of 6% GDP in education sector; although it shall not be sufficient for achieving the goals of NEP. So, low amount of investment in education sector is one of the serious challenges to the education in general and higher education in particular.

- \* **Invitation of Private Corporate:-** Invitation of multiple private players in education sectors mainly in higher education sector can create an unequal educated society; which increased the new stratification and that strata increased the gap in society by making new class.
- \* **Participation of Private Actors in Research Sector:-** NEP (2020) inviting more and more private investment in the research sector. It is a character of new liberal economy to open the scope of the private actors in public life. But for the goodness of the public life it is good to minimization of the private participation in private life. India is a country where 14.9 percent people are poor; so it is the duty of the state to cope up the large number of people providing all facilities like education and health.
- \* **Lack of Cooperation between different Ministry:-** Lack of cooperation between different ministry is one of the serious challenge to the success of the public policy in India. The policy demands cooperation between several ministry, like the Ministry of Education, Ministry of Social Justice and Empowerment the Ministry of Labour and Employment, Ministry of Women and Child Development, Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Ministry of Tribal Affairs.
- \* **Issue of Gender:-** *"Can you better the condition of your women? Then there will be hope for your well-being. Otherwise you will remain as backward as you are now."*—Swami Vivekananda. The issue of gender has always remained a challenge in the Indian society which needs undivided attention. NEP has provision to set up a 'Gender-Inclusion Fund' with the aim to achieve equitable quality education for all girls as well as transgender students. But there is no clear clarification of funding in the policy.

### Mapping the way forward for New Education Policy (2020)

Public policy has three important stages a) policy formulation; b) policy implementation; and c) policy evaluation. All three stages are the same important for the success of a public policy. National Education Policy (2020)

is already over the first stage of its process and now it is in its implementation stage. Although all phases are the same important whether the implementation phase of the policy is more important for its success. Policy implementation is the task of the executive branch of the government, which means there are one or more relevant ministers for a particular policy. The federal structure is also a key aspect. The policy is implemented through the combined agency of the relevant state ministry and the district and block level bureaucracies (Chakraborty & Sanyal, 2017). It also depends upon the nature of the policy, it may involve a network of government employees at the grassroots level and also individuals. The implementation phase as an important part of the policy is needed for the proper mapping of the way forwards. The following ways are very important:

As a federation, there is a need for friendly cooperation between the center and state governments for easier implementation of the policy. In reality, there is a conflict of interest between state and center in the implementation of the policy; where the same political party is not in power in both the power center. There is a need to continue the discussion between state and center for minimizing misunderstanding on the issue, where the state government has yet not implemented the policy. Proper respect for the federal structure shall be able to minimize conflict of interest between both. The policy is always needed out of narrow party politics for the greatest interest of the nation.

Need appropriate finance for the smooth implementation and continuation of the policy. Present allocation of finance; which is 3.1 % GDP for the year 2022 is not only poor but also implies our economic weakness. Allocation for the education sector is very poor since a very early. After independence, various committees and commissions recommended 6% GDP for the education sector; but it is a daydream. Till expenditure on education sector is not crossed 4% GDP; expenditure on education was 3.94% GDP was in 2000-01, it was 3.39% in 2008-09 and it dropped 1.8% in 2011. From 2013-to 14 total central government allocation for education was 0.70% of the GDP (Biswas, 2017). The budget 2017-18 emphasizes education, skill development, and job creation for youths earmarking Rs. 6200 crores (Biswas, 2019). In that context, there is a need to increase budget allocation for strengthening the education sector. Need to appropriate and scientific budget for the implementation of the new education policy by really calling it is 'new' from the previous.

The easy and friendly cooperation between various ministries related to education shall be able to implement the policy easily. As per the rule of the National Education Policy (2020), there is a need for cooperation and collaboration

between several ministries, like the Ministry of Education, Ministry of Social Justice and Empowerment the Ministry of Labour and Employment, Ministry of Women and Child Development, Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Ministry of Tribal Affairs.

Community participation in the phase of implementation shall be able to easy implementation of the policy. In India, common people have a scope of participation in only the process of policymaking and policy evaluation. There is no scope for people's participation in the implementation process. Only government personnel is the main actor in the policy implementation process. So, they are facing serious challenges during the time of the implementation process. So, there is a need to widen the scope of people's participation in the implementation process for smooth implementation of the public policy.

The present infrastructure of elementary and higher education is insufficient for the implementation of the new education policy. There is a need for rapid improvement of the present infrastructure of the education sector. In that context, there is a need to strengthen the scheme as 'Sarva Shiksha Abhiyan', 'Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan' and 'Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan' for the expansion and improvement of the physical infrastructure of education, which is a precondition of the early and proper implementation of new education policy.

Every educational institution across the country suffers from huge shortages of teachers, technical staff, and non-teaching personnel. So, there is a need to the recruitment of sufficient numbers of teachers, technical staff, and non-teaching personnel for the implementation of the policy. Common recruitment policy under appropriate agencies or institutions across the country shall be able to recruit quality teachers and other education personnel bypassing corruption and nepotism.

The use of ICT in all levels of education is one of the important elements of the National Education Policy (2020). But the digital divide is one of the serious challenges in the education sector in India. In a pandemic situation, a large number of learners were not able to access digital facilities due to their vulnerable position. Low voltage electricity, lack of internet connectivity, weak internet connectivity, the high price of internet charges, and lack of devices make the digital divide among learners across India. So, there is a need to appropriate policy planning to improve the infrastructure of ICT use. I Hope, under the 'Digital India' initiative such problems will be disappeared by improving and expanding the digital infrastructure of the country.

There is need to appropriate funding in research. In India funding in research is very much low mainly in the field of social sciences research. Funding in research may have

to encourage the researchers in their respective research field. In India only few public funding agencies funding in research mainly in social sciences research. There is needed to be increase the scope of social sciences research by expanding the scope of funding.

Unscientific selection procedure of research project funding by various public agencies is also one of the serious challenges to the academic research in India. Since pandemic most of the funding agencies in research started online selection. Scholars are deprived due to miss-communication, short time notice, poor connectivity and others digital hazards. There is need to re-introduction of face to face presentation and viva voce or improve the communication mechanism with researchers on time for transparency in the selection process.

### Bibliography

- Biswas, A. (2011). Universalization of Education. *Kurukshetra*, 59 (7), pp. 8-11.
- Biswas, A. (2012). Decentralization of Elementary Education in India. *Kurukshetra*, 60(11), pp. 3-7.
- Biswas, A. K. (2017). 'India's Education Policies: An Evaluative Study, in Paul, S. K. (ed.) *Development of Education*. Delhi: Arpan Publications, pp.1-22.
- Biswas, A. K. (2019). Post Demonetization Union Budget 2017-2018: A Critical Analysis. *The Indian Journal of Political Science*, LXXX (1), p.133.
- Chakraborty, R. & Sanyal, K. (2017). Public Policy in India. Delhi: Oxford University Press, pp. 74-75.
- Ministry of Education, Government of India. (1966). *Education Commission, 1964-66*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- Ministry of Human Resource Development, Government of India. (1986). *National Policy on Education*. New Delhi.
- Ministry of Human Resource Development, Government of India. (1988). *National Policy on Education- 1986 Implementation Report*. New Delhi.
- Ministry of Human Resource Development, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi.
- [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)
- Palit, P. S. (2009). India's Cultural Diplomacy and Nalanda. *Yojana*, 53, pp.37-39
- Press Information Bureau, Ministry of Education, Government of Education, (2019, May 31). *Press Information Bureau*. Retrieved April 29, 2021, from <https://pib.gov.in>.

- Associate Professor, Department of Political Science, The University of Burdwan, West Bengal, Pin- 713104, India  
Associate, UGC Inter University Center Indian Institute of Advanced Study Rastrapati Nivas, Shimla Himachal Pradesh

# Fostering Reflective Minds: The Intersection of Metacognition and Holistic Education in NEP 2020

□ Dr. Amit Ahuja<sup>1</sup> Ms. Rajani Upadhyay<sup>2</sup>

## Abstract

*The National Education Policy 2020 (NEP 2020) in India heralds a major reform in the educational sector, shifting from the traditional 10+2 system to a more holistic 5+3+3+4 structure. This policy integrates holistic education and metacognitive strategies, focusing on comprehensive student development across physical, emotional, social, and intellectual domains. It emphasizes the importance of early childhood care, multidisciplinary learning, and continuous comprehensive evaluation, aiming to enhance overall learning experiences. NEP 2020 also promotes self-awareness and reflective thinking in learners through metacognitive practices, encouraging critical thinking and problem-solving skills. The article explores the implementation of these strategies within NEP 2020, discusses practical classroom applications, and addresses potential challenges and solutions, including professional development for educators and technology integration. NEP 2020's innovative approach aims to prepare students for academic and personal success globally, fostering critical thinking, emotional intelligence, and a reflective mindset.*

**Keywords:** NEP 2020, holistic education, metacognition, reflective learning, educational reform.

## Introduction

The National Education Policy 2020 (NEP 2020) marks a significant overhaul in India's education system since the last policy update in 1986. This comprehensive framework aims to transform India's educational landscape, catering to the evolving needs of the 21st century. NEP 2020 proposes a radical restructuring of the current educational model, shifting from the traditional 10+2 system to a more flexible 5+3+3+4 structure. This new framework is designed to enhance the overall learning experience by focusing on the developmental stages of students: Foundational (ages 3-8), Preparatory (ages 8-11), Middle (ages 11-14), and Secondary (ages 14-18). The policy emphasizes early childhood care and education (ECCE), recognizing the critical importance of the foundational years

in shaping a child's future. The core vision of NEP 2020 is to foster an education system deeply rooted in Indian ethos and simultaneously equipped to access the best global knowledge and learning practices. Key objectives include:

**Universal access to education:** NEP 2020 aims to ensure a 100% gross enrolment ratio in school education by 2030.

**Holistic and multidisciplinary education:** The policy advocates for a holistic, student-centric approach, encouraging critical thinking and creativity.

**Skill development:** A strong emphasis on vocational education from a young age is envisioned to enhance employability and practical skills.

**Technology integration:** Integrating technology into education to improve teaching, learning, and assessment methodologies.

**Multilingualism:** Promoting multilingualism and the power of language in teaching and learning.

**Teacher training:** Enhancing the quality of teacher training to improve education quality across levels.

This article critically analyses and highlights the integration of holistic education and metacognitive strategies in NEP 2020. It explores how this policy revolutionizes learning by fostering comprehensive student development, reflective thinking, and self-awareness while addressing practical implementation, challenges, and global success stories in education reform.

**Holistic Education and its Implementation in NEP 2020**

Holistic education, central to NEP 2020, emphasizes the all-round development of students—physical, emotional, social, and intellectual—transcending traditional academic learning to nurture well-rounded individuals. The key principles of holistic education include:

**Integrated development:** It emphasizes the interconnected development of the physical, emotional, social, and intellectual dimensions of a student.

**Learning beyond academics:** Holistic education looks beyond standardized testing and focuses on life skills, ethics, emotional maturity, and social responsibility.

Student-centred learning: This approach prioritizes the needs, experiences, and learning styles of individual students.

Connection to the world: Holistic education encourages students to see the connection between their learning and the world around them, fostering global and environmental awareness.

### **Importance of Holistic Education in Contemporary Education**

In contemporary education, holistic education's importance is paramount, focusing on students' all-around development beyond traditional academics. It integrates intellectual, emotional, social, physical, and spiritual growth. Holistic education enhances critical thinking and problem-solving by interlinking various subjects. It prioritizes emotional intelligence (self-awareness, empathy, social skills), which is crucial for success (Goleman, 1995). It incorporates physical well-being practices like yoga and meditation, benefiting cognitive functions and mental health (Kabat-Zinn, 2023). Creativity, essential in today's innovative world, is fostered through expressive and creative thinking (Robinson, 2011). Spiritual development, guiding personal values exploration and purpose, contributes to overall well-being (Palmer, 2017). Holistic education equips students for a balanced, meaningful life, preparing them for the diverse challenges of the modern era.

#### **Implementing Holistic Education in NEP 2020**

India's NEP 2020 introduces holistic education strategies to meet contemporary educational demands. It advocates a multidisciplinary approach, blending arts, sciences, humanities, and sports for comprehensive student development (Ministry of Education, 2020). The policy also allows flexibility in choosing subjects, moving away from rigid streams in secondary education, and enabling students to pursue learning paths aligned with their interests. Emphasizing foundational literacy and numeracy, it aims for primary students to achieve proficiency in reading, writing, and arithmetic (Ministry of Education, 2020). Moreover, NEP 2020 shifts from rote learning to a continuous and comprehensive evaluation system, focusing on understanding, application of knowledge, and enhancing critical thinking and problem-solving skills. These steps represent a significant move towards a more dynamic and inclusive educational framework.

### **Curriculum Design and Pedagogical Approaches**

Under NEP 2020, curriculum design and pedagogical approaches are tailored for holistic development. The policy recommends an integrated curriculum that blends academics with physical education, arts, and vocational skills, fostering creativity, ethics, and social responsibility (Ministry of

Education, 2020). It places a strong emphasis on experiential learning through activities, projects, and problem-solving to enhance practical knowledge and critical thinking. Teacher training is focused on equipping educators with skills to facilitate student-centred and inquiry-based learning (Ministry of Education, 2020). Additionally, NEP 2020 advocates for the integration of technology in education to advance digital literacy and nurture a scientific mindset among students.

### **Metacognition and its Implementation in NEP 2020**

Metacognition, crucial in psychology and education, involves awareness and control over one's cognitive processes. Termed "thinking about thinking" (Flavell, 1979), it includes metacognitive knowledge—awareness of one's learning strategies and cognitive limits (Schraw & Moshman, 1995)—and metacognitive regulation, which involves planning, monitoring, and evaluating learning (Brown, 1987). This concept is integral to various areas like problem-solving, memory, emotional regulation, and self-reflection, significantly influencing effective learning and decision-making.

#### **Role in Learning and Self-Awareness**

Metacognition plays a crucial role in enhancing learning and self-awareness. It helps learners understand their learning styles and strategies, boosting information absorption and processing. This understanding fosters critical thinking and problem-solving skills, allowing systematic approach and strategy adaptation. Metacognition also encourages self-regulated learning, enabling students to set goals, assess progress, and develop independence and confidence. Additionally, it aids in emotional regulation, promoting better emotional well-being and resilience by understanding and managing thought processes and reactions.

#### **Metacognition in NEP 2020's Framework**

NEP 2020 incorporates metacognitive strategies by emphasizing critical thinking and creativity, which are pivotal in enhancing metacognitive abilities (Ministry of Education, 2020). The policy endorses a curriculum that goes beyond content, promoting self-reflection and fostering metacognitive skills. It also recognizes the importance of training teachers in metacognitive instructional methods, equipping students to become self-regulated learners and better understand their cognitive processes (Ministry of Education, 2020). Additionally, NEP 2020 introduces assessment reforms focused on evaluating not just rote learning but also knowledge application, analysis, and synthesis, all integral to metacognitive skill development. These integrations aim to enrich the educational process significantly.

### **Enhancing Learning Outcomes through Metacognition**

NEP 2020 integrates metacognition to boost learning

outcomes by fostering improved understanding and retention as students reflect on their thinking processes. This approach enhances adaptability and problem-solving abilities as learners modify strategies to fit different contexts. Emphasizing self-directed learning it encourages students to take charge of their educational journey. Moreover, metacognitive practices have been linked to enhanced academic performance, with students becoming more proficient in monitoring and adjusting their learning strategies (Schraw & Moshman, 1995), thereby leading to more effective and meaningful educational experiences.

### **The synergy between Holistic Education and Metacognition**

Integrating metacognition into holistic education creates a synergy that significantly enhances the educational experience, fostering comprehensive development in learners.

### **How Holistic Education complements Metacognitive Development**

Holistic education, with its focus on nurturing the entire person—intellectually, emotionally, socially, and physically—complements metacognitive development. This approach encourages students to reflect on their learning in various domains, not just academics, enhancing their metacognitive skills. Both holistic education and metacognition emphasize self-reflection and awareness, enabling learners to introspect their thoughts, feelings, and actions, thus fostering a deeper understanding of themselves and their learning processes.

### **Theoretical Framework Connecting the Two**

The theoretical connection between holistic education and metacognition lies in their shared emphasis on learner-centred approaches:

**Constructivist learning theory:** It posits that learners construct knowledge through their experiences. Holistic education, combined with metacognition, aligns with this theory, as it encourages students to reflect on their experiences and understanding, thereby constructing knowledge more effectively (Piaget, 1954).

**Multiple intelligences theory:** Howard Gardner's theory of multiple intelligences aligns well with holistic education, suggesting that people have different intelligences. Metacognitive skills help students understand and develop these intelligences more fully (Gardner, 1983).

### **Benefits of this Synergy for Learner Development**

The combination of metacognition and holistic education significantly benefits learner development. This synergy enhances learning and retention, as students employing metacognitive strategies in a holistic environment are more likely to grasp and remember information. It strengthens critical thinking and problem-solving abilities by encouraging

students to introspect and view problems from diverse angles. Additionally, the focus on emotional growth in holistic education, paired with metacognitive techniques, bolsters emotional intelligence, aiding students in managing their emotions and empathizing with others. This approach also promotes increased self-efficacy and independence, with students gaining deeper insights into their learning processes and becoming more self-directed in their educational journey.

### **Benefits of a Reflective Mindset in Education**

A reflective mindset in education is pivotal in enhancing academic and personal growth. This approach involves nurturing self-awareness and reflection in students, leading to several key benefits:

### **Advantages of Nurturing Self-Awareness and Reflection**

Nurturing self-awareness and reflection offers significant benefits. It enhances critical thinking, as students critically analyze their learning experiences, improving understanding and problem-solving skills (Dewey, 1933). Reflection also promotes personal growth by helping students recognize their strengths, weaknesses, and emotions, contributing to mental and emotional well-being (Schön, 1983). Additionally, by reflecting on their learning processes, students can discover and adopt more effective study strategies, leading to better academic performance and enhanced learning skills.

### **Impact on Academic and Personal Growth**

A reflective mindset in education profoundly impacts both academic and personal growth. It enhances academic performance by deepening understanding and retention of material, leading to better outcomes. This practice also develops emotional intelligence as students learn to understand and manage their emotions, a vital skill for social interactions and personal relationships (Goleman, 1995). Furthermore, fostering a reflective mindset prepares students for lifelong learning, promoting adaptability in an ever-changing world (Mezirow, 1997). Overall, reflection in education enriches the learning experience, significantly benefiting students' academic achievements and personal development.

### **Practical Implementation in Classrooms**

Implementing metacognitive strategies and holistic teaching approaches in classrooms is crucial for aligning with the ideals of NEP 2020 and fostering comprehensive learner development.

### **Strategies for Educators to Foster Metacognitive Skills**

Educators can enhance metacognitive skills in students through various techniques. Demonstrating their thought processes aloud, teachers can model metacognitive strategies

(Artzt & Armour-Thomas, 1998). Think-aloud sessions enable students to articulate their thoughts during problem-solving or reading, aiding in self-regulation and critical thinking development. Socratic questioning deepens their understanding of learning processes, enhancing critical and reflective thinking. Constructive feedback and reflective exercises help students recognize their strengths and improvement areas (Hattie & Timperley, 2007). Additionally, peer teaching and collaborative learning encourage the exchange of metacognitive strategies, fostering collective learning and development.

### **Holistic Teaching Approaches in Line with NEP 2020**

Aligned with NEP 2020's holistic teaching ethos, educators can adopt interdisciplinary learning, merging various subjects with real-world scenarios to demonstrate knowledge interconnectedness (Jacobs, 1989). Emphasizing emotional and social learning, such as empathy and teamwork, fosters holistic growth (Goleman, 1995). Activity-based and experiential learning methods make education more engaging and relevant (Kolb, 1984). NEP 2020's flexible curriculum approach is reflected in offering students choices in learning activities (Ministry of Education, 2020). Additionally, integrating technology in collaborative and interactive learning supports NEP 2020's focus on modern educational techniques, enhancing the overall learning experience.

### **Case Studies**

There are numerous examples worldwide where metacognitive strategies and holistic education approaches have been successfully implemented, leading to remarkable improvements in student learning and overall development.

**Finland's education system:** Finland is often cited as a success story in education, renowned for its holistic approach. The Finnish education system emphasizes student well-being, creativity, and critical thinking over standardized testing. This approach has led to Finland consistently ranking among the top in international education assessments.

**Rishi valley education centre:** This school in India, inspired by the philosopher Jiddu Krishnamurti, is an example of holistic education in practice. It focuses on the all-round development of students, encouraging inquiry, creativity, and a connection with nature (Kumar, 2005).

**Delhi government school reforms:** The Delhi government's education reforms, including introducing the Happiness and Entrepreneurship Mindset Curriculum, focus on holistic education. These initiatives aim to develop critical thinking, mindfulness, and entrepreneurial skills in students, showing promising results in improving student engagement and well-being (Government of Delhi, 2019).

## **Challenges and Solutions**

### **Potential Obstacles**

Potential obstacles in implementing holistic and metacognitive education include resistance to change, as traditional systems often favor test-focused methods over innovative approaches. A significant challenge is the lack of teacher training in these new teaching methods, hindering effective implementation. Schools, particularly in disadvantaged areas, may struggle with limited resources, such as materials, technology, and funding, essential for holistic education. The rigidity of standardized curricula poses another hurdle in integrating flexible holistic and metacognitive elements. Additionally, conventional assessment methods may fall short of effectively measuring the outcomes of holistic learning and metacognitive skills development.

### **Innovative Solutions**

Innovative approaches include professional development for teachers in holistic education and metacognitive strategies, enhancing classroom integration. Engaging the community and parents enriches the education process with added support and resources. A flexible curriculum that weaves in holistic and metacognitive elements addresses traditional rigidity. Alternative assessments like portfolios, peer reviews, and reflective journals more effectively gauge these learning outcomes. Additionally, integrating technology supports personalized learning experiences, which is crucial for holistic and metacognitive development and is particularly beneficial in environments with limited resources. These strategies collectively foster a more dynamic and effective educational landscape.

### **Conclusion**

NEP 2020 in India marks a significant shift towards holistic and metacognitive learning, aiming to revamp education to meet modern demands. It combines holistic education, focusing on overall student development, with metacognitive strategies, enhancing self-awareness and reflective thinking. This approach is set to improve critical thinking and emotional intelligence, equipping students for both academic and personal success. Implementing this progressive vision involves challenges like adapting to change, teacher training, and resource constraints. Addressing these through professional development, community involvement, flexible curricula, innovative assessments, and technology can realize NEP 2020's goal of developing well-rounded, adaptable learners.

### **References**

- Artzt, A. F., & Armour-Thomas, E. (1998). Mathematics teaching as problem solving: A framework for studying teacher metacognition underlying instructional practice

- in mathematics. *Instructional Science*, 26, 5-25.
- Brown, A. L. (1987). Metacognition, executive control, self-regulation, and other more mysterious mechanisms. *Metacognition, motivation, and understanding*, 65-116.
  - Dewey, J. (1933). *How We Think*. Boston, MA: D.C. Heath and Company.
  - Flavell, J. H. (1979). Metacognition and cognitive monitoring: A new area of cognitive–developmental inquiry. *American psychologist*, 34(10), 906.
  - Gardner, H. (1983). *Frames of Mind: A Theory of Multiple Intelligences*. New York: Basic Books
  - Goleman, D. (1995). Emotional Intelligence Bantam Books. *New York*.
  - Government of Delhi. (2019). *Happiness Curriculum*. Retrieved from [https://www.edudel.nic.in/welcome\\_folder/happiness/HappinessCurriculumFramework\\_2019.pdf](https://www.edudel.nic.in/welcome_folder/happiness/HappinessCurriculumFramework_2019.pdf)
  - Hattie, J., & Timperley, H. (2007). The power of feedback. *Review of educational research*, 77(1), 81-112.
  - Jacobs, H. H. (1989). *Interdisciplinary curriculum: Design and implementation*. Association for Supervision and Curriculum Development, 1250 N. Pitt Street, Alexandria, VA 22314.
  - Kabat-Zinn, J. (2023). *Wherever you go, there you are: Mindfulness meditation in everyday life*. Hachette UK.
  - Kolb, D. A. (1984). *Experiential Learning: Experience as the Source of Learning and Development*. Prentice-Hall.
  - Kumar, K. (2005). *Political agenda of education: A study of colonialist and nationalist ideas*. Sage.
  - Mezirow, J. (1997). Transformative learning: Theory to practice. *New directions for adult and continuing education*, 1997(74), 5-12.
  - Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Retrieved from [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)
  - Palmer, P. J. (2017). *The courage to teach: Exploring the inner landscape of a teacher's life*. John Wiley & Sons.
  - Piaget, J. (1954). *The Construction of Reality in the Child*. New York: Basic Books.
  - Robinson, K. (2011). *Out of our minds: Learning to be creative*. Capstone, Oxford.
  - Schraw, G., & Moshman, D. (1995). Metacognitive theories. *Educational psychology review*, 7, 351-371.
  - Schon, D. A. (1983). *The reflective practitioner: How professionals think in action* (p. 1983). New York: Basic Books.

1. Associate Professor, University School of Education  
Guru Gobind Singh Indraprastha University Dwarka Delhi  
Email: dr.amitahuja1975@gmail.com  
Mobile: 9990493442

2. Research Scholar, University School of Education  
Guru Gobind Singh Indraprastha University Dwarka Delhi  
Email: rju.2285@gmail.com  
Mobile: 8447038044

Corresponding Author, Dr. Amit Ahuja, Associate Professor  
University School of Education  
Guru Gobind Singh Indraprastha University Dwarka Delhi  
Email: dr.amitahuja1975@gmail.com  
Mobile: 9990493442

# Implementing NEP 2020 Through Governance and Technology

□ Anupam Bera<sup>1</sup>, Dr. Mallinath Mukhopadhyay<sup>2</sup>

## Abstract

*Endogenous economic growth theories conceptualise the role of education in accelerating the rate of growth through higher labour productivity. National Education Policy (NEP) 2020 has been designed to inculcate the spirit of nationalism by promoting respect for the time-tested Bharatiyo culture and civilisation which encompass the art of all arts as well as the science of all sciences. Rat race for western education initiated at the dawn of our independence was a calculated move to relegate the sanatanBharatiyo system of education to the background. Destruction of national culture causes a fatal blow to growth and development. NEP 2020 has been a timely intervention to remove the ills of the system of education that had been in vogue since independence and pave the way forward to achieve nation-building as the spontaneous outcome of education by producing responsible men and women for others. This paper makes a dissection of NEP 2020 in the light of endogenous economic growth theories to identify the roles of governance and technology in developing Bharat as a nation of excellence capable of stopping brain drain out of our nation. Successful implementation of NEP has been transforming our motherland from a borrower of western education to a lender of the sanatan knowledge-induced framework of man-making, research and development. The paper postulates that NEP2020 is a planned paradigm to achieve Swami Vivekananda's perception of education that goes to the students if the students cannot afford to come to the academic institutions; education is man-making for sustainable society. Modern information technology-enabled services are capable of reaching out to all the learners - irrespective of caste, class and creed - given right pro-active governance. Our education sector has been gradually evolving as a global leader exporting knowledge in arts, science and technology. NEP has been removing all artificial and injurious compartmentalisations of knowledge into pointless classifications of arts, science, commerce etc. The paper concludes with clear policy prescriptions on specific*

*requirements of governance and the precise mechanics of using modern technology in transforming Bharat into a global knowledge hub that unfurls Truth, Beauty and God.*

---

## Introduction

The word 'Education' has a domain that is too vast to be sandwiched into a single comprehensive definition. Swami Vivekananda conceptualised education as the manifestation of perfection already in man. Since Truth-Beauty-and -God symbolise perfection, education is the way forward to the three pillars of life, namely, unending search for truth, uncompromising dedication to beauty and total union with God. Sanatan Hindu Dharma and its paradigm of education are, by definition, at one with Swamiji's vision of education. NEP is the timely manifestation of this perception. This paper attempts to relate NEP to achievement of perfection through appropriate governance and technology through the lense of economic growth and social development for nation-building.

Section 1 posits the role of education in accelerating growth and development through skill and capacity building as well as character formation. Section 2 discusses NEP and its relevance in nation building. Section 3 identifies focused governance and the use of appropriate technology as the two driving forces. Section 4 is a road map for policy changes to achieve the kind of governance and technology required to make NEP the prime mover in developing India as a global knowledge hub that exports the Sanatan Hindu philosophy of peace and brotherhood for growth and development. Section 5 concludes.

## Section 1

Marx used the concepts of mode of production and class relations to analyse the evolution of modern capitalism. The Marxian perception emphatically visualised the inevitable collapse of capitalism due to falling rate of profit and class conflict, paving the way for the emergence of a socialistic mode of production and finally, state-less socialism. But, the capitalistic mode of production managed to overcome



cyclical business downswings with creditable resilience defying the Marxian prediction on collapse of capitalism.

Later Rostow, in his documentation of the stages of growth as an anti-communist manifesto, pointed out the roles of a high saving-income ratio and one or a few leading sector(s) in the successful evolution from a pre-capitalistic to a capitalistic economy moving forward to maturity and the age of high mass consumption. However, many economies, including Bharat, could manage to raise the saving-income ratio significantly without any appreciable success in industrial capitalism.

The analysis of the way forward to successful capitalism by Simon Kuznets emphasized changes in occupational distribution of the labour force in favour of industries, planned urbanisation etc, but these were subsequently found to be not necessarily valid.

The Harrod-Domar model of economic growth dwelt, at length, on the saving-income ratio and the way a higher saving-income ratio leads to faster economic growth. The model had path-breaking contribution and influence on the relatively less developed economies, freed from the shackles of colonial rules in the previous century, trying to accelerate their growth rates to catch up with the West. Bharat too was no exception. Blind copying of Western ideas, education system, technological know-how etc made deep inroads into our national culture. We started enjoying the flooding in of foreign culture and did not even bother to remember how rich our own culture had always been. Through the planned westernisation of education and the perverse character-building as well as production and consumption, colonial exploitation continued unabated, even after independence. We refused to understand that it was the same old wine in a new bottle. This is why the Harrod-Domar model is a powerful point of reference since it successfully rationalised our thoughtless surrender to western culture. In the name of modern education, the education sector became the sanctuary of selfish giants destroying the backbone of the youth right from the stage of school education.

The Solow model of economic growth extended the domain of search for accelerated growth and identified the primary growth-inducing factors as capital accumulation, labour or population growth and technology driven productivity growth. However, growth in Solow continued to depend on exogenous factors. The post-Solow research successfully posited education as an endogenous process that can raise labour productivity endlessly promoting growth and development. This is the point of departure for NEP 2020. Western education followed in Bharat since independence had been singularly inappropriate to transform Bharat into a powerful nation. It has been like a poor man struggling

throughout the day to earn some money for his food and then blowing it all on alcohol. Despite our vast potential, Bharat remained a dependent periphery and the West continued to grow as the advanced centre. We made ourselves psychologically dependent right from the school, sacrificing our time-tested richness of man-making through our indigenous education system – a system that taught to live life to the full with the mind without fear and the head held high.

It is pertinent at this juncture to briefly outline the role that appropriate education can play in growth and nation-building. We cannot avoid some mathematics to present the case. Let  $Y = A(E)L^eK^{(1-e)}$  be the production function, where  $Y = \text{GDP}$ ,  $E = \text{level of education}$ ,  $L = \text{available labour force}$ ,  $K = \text{stock of capital}$ , parameter 'e' lies between zero and one, and  $dA/dE$  is positive such that the more the spread of appropriate education, the higher the value of 'A'. Taking log and differentiating, the rate of growth of GDP results from the rate of labour growth, the rate of capital accumulation and the rate of spread of productivity enhancing appropriate education.

This, the role of appropriate education policy consistent with the tradition of the motherland in growth, nation building and global recognition cannot be over-emphasized. Lord Keynes warned that if the culture and the currency of a nation could be destroyed, the nation would be destroyed. Since independence the policy makers introduced blind imitation of the Western culture and values without realising that we were sacrificing our own culture and, through that, we were destroying our own motherland. The NEP 2020 is, therefore, an appropriate policy change urgently needed in Bharat today. Mahatma Gandhi commented, "I do not want my house to be rounded by walls and my windows to be closed to other cultures. .... but I will not permit them to affect me or shake me from my own status." The previous governments talked a lot about Gandhiji, but never bothered to follow his advice. The present Government of India has done what Swamiji, Tagore and Gandhiji would have wanted us to do decades earlier.

## Section 2

The distinguishing features of NEP2020 in the context of producing young global ambassadors of our rich Bharatiya culture, values, knowledge and wisdom are unshackling of all barriers to teaching, learning and evaluation through compassion, flexibility and application of ITES. The domain of NEP is vast; we shall limit ourselves to only a few features of the NEP to highlight its significance in accelerating growth and development.

NEP has been designed following Tagore's philosophy of 'Jatrabiswambhabatyekaniram', i.e., education in an

unbounded environment where the entire world may find its one single nest. Creativity is best nourished when unnecessary stratifications of science, arts, commerce etc are removed. If creativity has to grow up and branch out, bookish education must be complemented by equal emphasis on games and sports, dance and music, drawing to ignite imagination, understanding Nature and its significance etc. NEP has successfully brought together the multi-dimensional components of education and character building within its domain. It is open to just any form of creativity. Even passionate bird-watching may generate rich dividends and must be respected as education. To borrow from the very recent earthquake in Japan, it was found that well before the earthquake the birds stopped singing and minutes before it started swimming and all started flying in the sky. This is in tandem with our Gurukul culture and hence, very relevant and useful. If education is manifestation of perfection, it must not have any shackles. Since Truth, Beauty and God are infinite, the system of education must have infinite avenues and opportunities. None knows who would excel, when and in what part of education.

NEP is intrinsically compassionate and structurally flexible. Its student-centric (rather than teacher-centric) approach passionately addresses the uncertainties of life and the temporal ups and downs life goes through as well as the socio-economic conditions of our people. In the previous paradigm, if a student discontinued education for some time due to some compelling reasons, the student could not return to the institution to start from where he had discontinued. This had been a deterrent to get the drop outs back to education. NEP has compassionately removed this rigidity by making entry and exit flexible. It is, after all, feasible that due to a sickness lasting for several months or some family problems, a student studying, say, in class IX leaves the school after 5 months in class IX. After one year he wants to return. The new policy permits him to begin from where he left. This option may go a long way in reducing school and college drop out rate, child marriage, education of the girls etc. Wastage of productive labour gets pared to the bare minimum. Freedom of entry and exit make NEP more pragmatic and compassionate.

Modern information technology is a vast reservoir of opportunities. It permits the use of the distance mode of learning through centrally operated programmes on environment awareness, scientific experiments, dance and drama training, drawing classes and even formal classes by teachers from any institution to be telecast live to any remote corner of the country making such knowledge available to students to whom these would have been otherwise unavailable. Training in information technology itself has huge

job and income earning opportunities. Mobile vans with teachers and laboratory equipment may move from institution to institution for practicals where good laboratories are not available. Similarly mobile vans with trainers or demonstrators with computers, projectors and CDs may go anywhere to familiarise the students with any aspect of education. Swamiji said if a student cannot come to an institution, education must reach out to him.

NEP 2020 has endless opportunities for education and skill formation which, through higher productivity, can raise the rate of economic growth to posit Bharat as a global hub of knowledge, research and development.

### Section 3

Insightful governance is critically important in achieving the rich dividends NEP can generate. Bureaucratic red-tapism and excessive governance are contradictory to the basic principles of the new education policy. Freedom is necessary if creativity has to bloom with full potentials. These academic institutions must have the freedom to adapt to the local conditions. The Government needs to get the curriculum prepared by the educationists and set the basic rules. Given the curriculum and the basic rules, the academic institutions need to evolve their own strategies to excel. Inter-institutional competition must be encouraged for excellence, efficiency gain and dynamism. The basic rules of the game prepared by the Government must also include the mechanism of strict transparency and accountability of the academic institutions. If a medical college admits students for post graduate training in ophthalmology and then, for money making, start using the post graduate illegally in the treatment of patients of nephrology, the patients suffer today and the post graduate students pass out tomorrow to render services tomorrow injurious to the future patients of ophthalmology. The regulatory authority cannot plead ignorance. This is where governance becomes critically important. NEP propagates large institutions offering all courses, rather than stand-alone institutions. This would require several institutions to tie up so as to offer a viable choice set to the students. Such tying up, i.e. 'Clusters' need to be systematically formed with meticulous professionalism. Freedom must not be interpreted as the right to do anything; it must be complemented by a powerful system of checks and balances regularly monitored by the appropriate regulatory authority of educationists. Thus freedom, competition, transparency and accountability are the four pillars of governance for successful implementation of NEP 2020. Leadership by the regulatory authorities is singularly important and such leadership must have undefeatable transparency and accountability.

Just as appropriate governance is a necessary precondition for the success of NEP, importance of modern

information technology cannot be over-emphasized. Each institution should ideally have a good computer laboratory with internet facility right from the school level. Even the little boys and girls at the primary level may be productively exposed to computers through learning-oriented games, e.g., the LOGO software. If it is not feasible to have a computer laboratory in each institution, one laboratory for one cluster may be explored. However, we need to be careful about the length of time the students use the computers in a day so that they develop neither addiction nor injury to health. Mobile vans fitted with ITES may be handy for secondary and even college level students to have access to expert lectures, educational movies, laboratory experiments etc. At higher levels, net searching for online learning may ignite talent and creativity for advanced students

#### Section 4

NEP 2020 is a Himalayan policy framework with monumental dimensions prepared by expert professionals after having taken suggestions and feedback from lakhs of stakeholders and persons interested in education. It has been our humble endeavour to relate only a few issues of NEP to their feasible contribution to growth and development. Insightful governance is a precondition. It is desirable that the government

- (1) gets the curriculum ready by well-known educationists and helps in its updation from time to time;
- (2) sets the guidelines and rules for disciplined performance;
- (3) takes the initiative to form the appropriate regulatory bodies for different levels of education;
- (4) carefully remains vigilant to ensure that the regulatory authorities and academic institutions function with transparency and accountability;

- (5) enforces dedicated websites for regular collection of information and feedback from all concerned and all institutions to collate the information and to present it regularly in the public domain;
- (6) makes provisions for adequate public funding and opens up space for private investment as well as public-private partnership.

Modern ITES should be used to its full potential by making each IIT, NIIT etc leaders in the fields of developing and sharing the learning materials and in making available the skilled manpower in the dissemination of knowledge, research and development of specific states, areas, institutional clusters etc. There is also the need to tag each medical college to specific clusters of academic institutions for health awareness, health monitoring and, if interested students are there, extend medical education even to non-medical students, particularly the young girls and ladies.

#### Section 5

NEP 2020 is a timely intervention to undo the un-Bharatiyo education policy practised in our country since the age of colonial rule and crudely pursued and extended after independence. Crores look forward to its successful implementation, vested interest driven criticisms and hostility notwithstanding. Wisdom must remain careful and vigilant. Transparency, accountability, regular review and sharing of information in the public domain can and shall transform Bharat into the global leader in knowledge and character building as well as in research and development.

*1. Anupam Bera, Assistant Professor, Department of Information Technology, Netaji Subhash Engineering College, Kolkata, email: drive.abela@gmail.com*

*2. Dr. Mallinath Mukhopadhyay, Associate Professor (retired), Department of Economics, St. Xavier's College (Autonomous), Kolkata, email: mukherjeemallinath@rediffmail.com*

## Part-3/ भाग-3

‘Vasudhaiv Kutumbkam - Inclusivity as  
Instrument of Global Leadership’



‘वसुधैव कुटुम्बकम् -  
समावेशिता के साथ वैश्विक नेतृत्व’

आलेख : 49 से 57 तक

# Sri Aurobindo's Integral Education : Navigating Humanity's Evolutionary Crisis Through National Education Policy 2020

□ Dr Richa Tiwari

## Abstract

*Crisis, an inherent facet of the human experience, prompts periodic reflections on societal structures and the trajectory of human development. Sri Aurobindo posits that humanity is amidst an evolutionary crisis, providing an opportunity for growth and conscious destiny shaping. This paper explores the transformative potential of Integral Education as a tool to address the challenges posed by the current evolutionary crisis. Focusing on India's National Education Policy 2020, the paper delves into the alignment of educational paradigms with Integral Education principles, advocating for a holistic approach that fosters inclusivity, mutual understanding, and global collaboration. Education plays a pivotal role in shaping individual and collective consciousness. This paper explores the potential of Integral Education as a transformative tool in navigating the complexities of the ongoing evolutionary crisis. The focus is on India's National Education Policy 2020, which outlines a vision aligned with the principles of Integral Education.*

**Key Words-** Integral Education, National Education Policy, Sri Aurobindo, Evolutionary Crisis.

## Introduction

Throughout history, humanity has faced various crisis, each serving as a catalyst for societal introspection and evolution. In the contemporary era, amidst global challenges like epidemics, terrorism, war and economic recessions, the concept of an evolutionary crisis takes centre stage. Sri Aurobindo's talks about the concept of evolutionary crisis which is deeply rooted in his spiritual and philosophical perspectives. He believed that humanity is undergoing a profound transformation in its evolutionary journey, and this transformation is marked by various challenges and crisis. He said "At present mankind is undergoing an evolutionary crisis in which is concealed a choice of its destiny; for a stage has been reached in which the human mind has achieved in certain directions an enormous development while in others it stands arrested and bewildered and can no longer find its way."<sup>1</sup>

The term "evolutionary crisis" refers to a critical phase in the evolution of human consciousness, where individuals and societies face significant challenges that demand a shift in their understanding, values, and way of life. For Sri Aurobindo, the evolutionary crisis is an opportunity for growth and conscious evolution. It involves a collective awakening and a movement towards a higher, more harmonious state of being. This crisis prompts individuals to seek a deeper understanding of their purpose and connection to a larger reality. In the context of education the evolutionary crisis implies a need for a transformative approach to education that goes beyond traditional models. Sri Aurobindo's Integral Education, as mentioned in the text, is proposed as a tool to address the challenges posed by this crisis by fostering holistic development, inclusivity, and a deeper understanding of one's self and the world. The National Education Policy 2020 is seen as a step in this direction, aligning with the principles of Integral Education to navigate the complexities of the ongoing evolutionary crisis.

Sri Aurobindo's perspective on this crisis presents an opportunity for humanity's growth and a conscious choice of destiny. Without undermining the significance of ancient wisdom across all cultures, the need perhaps is to build an understanding and philosophy of education that is entirely new and not just an edited version or sterile resuscitation of a past system. Like Sri Aurobindo said, what we need is, "An education proper to the Indian soul and need and temperament and culture that we are in quest of, not something faithful merely to the past, but to the developing soul of India, to her future need, to the greatness of her coming self-creation, to her eternal spirit."<sup>2</sup> The primary objective of education, as outlined in the NEP 2020 is to make individuals conscious of their nation's identity while facilitating an understanding of other nations. The paper advocates for the importance of transformative education that nurtures mutual respect and understanding between nations and individuals, asserting that true global collaboration is essential for humanity's upliftment from its current chaotic state. In light of Sri Aurobindo's views it also challenges the notion that uniformity is a simpler,

uncertain and short lived path to unification and emphasises the importance of embracing the richness and diversity of all nations.

In the present stage of humanity we can say that education stands as the unequivocal key to transforming the minds of the youth, wielding the power to foster mutual respect and understanding among nations and individuals. From this perspective this work tries to assess how the National Education Policy, 2020 can be a potent instrument for shaping the minds of the youth, providing a roadmap for educational transformation, and aligning with the belief in the transformative power of education. It is evident that true global collaboration is essential for humanity's upliftment from its current chaotic state and that thrives on educational foundations.

John Dewey, a prominent figure in educational philosophy, emphasised the importance of fostering individuality in education. In his words, "Education is not preparation for life; education is life itself."<sup>3</sup> This echoes the idea that a child's education should be a dynamic, individualised journey.

Paulo Freire, a leading advocate for critical pedagogy, argued for an education that empowers individuals to think critically and participate actively in society. He believed- "Education either functions as an instrument that is used to facilitate the integration of the younger generation into the logic of the present system and bring about conformity or it becomes the practice of freedom, the means by which men and women deal critically and creatively with reality and discover how to participate in the transformation of their world."<sup>4</sup> In alignment with these perspectives, Sri Aurobindo's Integral Education, supports the idea of providing children the freedom to shape their educational journey in consonance with their abilities.

The integration of these thoughts finds resonance in the National Education Policy 2020, which emphasises flexibility, multi disciplinary, and a holistic approach. The synthesis of ideas from Sri Aurobindo, Dewey, Freire resonates in the vision outlined by the National Education Policy 2020. It reflects a collective aspiration to guide humanity through its evolutionary crisis by recognising and nurturing the unique potential within each child.

### **The Problem in the Old System of Education**

Sri Aurobindo said, "We now come to the intellectual part of education, which is certainly larger and more difficult, although not more important than physical training and edification of character. The Indian University system has confined itself entirely to this branch and it might have been thought that this limitation & concentration of energy ought to have been attended by special efficiency & thoroughness in the single branch it had chosen. But unfortunately this is not the case. If the physical training it provides is contemptible

and the moral training nil, the mental training is also quantity and worthless in quality."<sup>5</sup> One of the key issues highlighted by Sri Aurobindo is the myopic focus on intellectual training at the expense of physical and moral development. He contends that the Indian University system has confined itself solely to the intellectual domain, neglecting the holistic growth of individuals. This imbalance results in contemptible physical training, nil moral training, and a mental training that is both quantitative and of poor quality. The consequence is a workforce that lacks the necessary foundations in physical fitness and ethical values.

"People commonly say that it is because the services & professions are made the object of that this state of things exists. This I believe to be a great mistake. A degree is necessary for service and therefore people try to get a degree. Good! let it remain so. But in order for a student to get a degree let us make it absolutely necessary that he shall have a good education."<sup>6</sup> Sri Aurobindo further points towards the utilitarian motives that drive education in India. He argues that the prevalent belief in education as a means to secure lucrative professions has led to a devaluation of the educational process. The pursuit of a degree becomes an end in itself, disconnected from the intrinsic value of a good education. The education system, according to him, fails to instil a genuine love for knowledge due to its inadequacies, perpetuating a cycle of utilitarianism rather than a pursuit of culture and true science.

Moreover, he accentuates a fundamental error in the conflation of education with the mere acquisition of knowledge. The emphasis on rote memorisation and the accumulation of facts, without cultivating the faculties of reasoning, comparison, and expression, results in a superficial understanding. This shortcoming hinders the development of well-rounded individuals capable of critical thinking and creative expression.

The National Education Policy 2020 responds to the issues highlighted by Sri Aurobindo, in his views on education by introducing a comprehensive set of reforms. The NEP aims to transform the Indian education system into one that is holistic, flexible, multidisciplinary, and focused on nurturing each student's unique capabilities.

### **Integral Education : A Holistic Approach**

The Conceptual Framework of Integral Education seeks to harmoniously align the various facets of human existence – the head, heart, senses, and body. The current educational paradigms often suffer from fragmentation and incoherence, necessitating a paradigm shift towards a holistic understanding of the individual. The child, as the central unit of education, undergoes a continuous learning process from pre-birth, demanding a comprehensive educational approach. NEP 2020 highlights the aim of developing "the capacities of the human mind and spirit" through education, emphasising not just

cognitive skills but also socio-emotional and ethical development. The policy underscores the importance of foundational literacy and numeracy, ensuring that students acquire not only academic knowledge but also essential life skills. NEP 2020 recognises the interconnectedness of cognitive and social development, promoting a holistic perspective on education. It also emphasises the need to integrate curricular and extracurricular activities to enhance both academic and social skills.

### **Shaping Thought Processes**

Integral Education aims to shape human thought processes, fostering inclusivity and mitigating exclusive thought patterns. By integrating intellectual, emotional, sensory, and physical aspects, this approach cultivates the true individuality of a child. The paper explores the psychological and cognitive impacts of Integral Education, emphasising its potential to transform the way individuals perceive themselves and the world. The policy underscores the importance of creativity and critical thinking in the learning process. It aims to foster innovation, logical decision-making, and problem-solving skills among students. Sri Aurobindo said—*“The true basis of education is the study of the human mind, infant, adolescent and adult. Any system of education founded on theories of academical perfection, which ignores the instrument of study, is more likely to hamper and impair intellectual growth than to produce a perfect and perfectly equipped mind. For the educationist has to do, not with dead material like the artist or sculptor, but with an infinitely subtle and sensitive organism. He cannot shape an educational masterpiece out of human wood or stone; he has to work in the elusive substance of mind and respect the limits imposed by the fragile human body.”*<sup>7</sup> Sri Aurobindo believes in the development of the higher mental faculties, including the power of reasoning and critical thinking. He emphasises that education should encourage the innate creativity of individuals and inspire logical decision-making. Both NEP 2020 and Sri Aurobindo’s integral education align in recognising the significance of cultivating creativity and critical thinking. They acknowledge that these skills are essential for students to navigate complex challenges, make informed decisions, and contribute to innovation in various fields.

### **National Education Policy 2020- A Framework for Transformation**

#### **Global Collaboration and Mutual Understanding**

The National Education Policy 2020 envisions an education system that promotes holistic development, critical thinking, and creativity. The policy also aligns with Integral Education principles, emphasising its commitment to fostering a deep understanding of the nation’s fundamental genius while encouraging global perspectives. The policy advocates—*“respect for diversity and respect for the local context in all curriculum, pedagogy, and policy, always keeping in mind*

*that education is a concurrent subject; full equity and inclusion as the cornerstone of all educational decisions to ensure that all students are able to thrive in the education system.”*<sup>8</sup>

The primary objective of education, as outlined in the policy, is to make individuals conscious of their nation’s identity while facilitating an understanding of other nations. It advocates for mutual respect and understanding between nations and individuals, asserting that true global collaboration is essential for humanity’s upliftment from its current chaotic state. It challenges the notion that uniformity is a simpler path to unification and emphasises the importance of embracing the richness and diversity of all nations.

#### **Transformative Potential- Bridging the Gap**

The inherent philosophy of Integral Education when integrated into the National Education Policy 2020, has the potential to bridge the gap between traditional educational paradigms and the evolving needs of humanity. Certain specific initiatives within the policy align with the principles of Integral Education, illustrating how these initiatives contribute to the transformative potential of the educational system.

#### **Cultivating Conscious Individuals**

Integral Education, as part of the national curriculum, can contribute to the cultivation of conscious individuals capable of navigating the complexities of the evolving global landscape. By fostering a sense of global citizenship and emphasising the interconnectedness of all nations, this approach equips individuals with the tools needed to address the ongoing evolutionary crisis.

Sri Aurobindo criticises the prevalent educational system for its overemphasis on memory and the accumulation of facts. He advocates for a system that not only imparts knowledge but also focuses on the development of the powers of reasoning, comparison, and expression. Conceptual understanding, according to Sri Aurobindo, is crucial for the comprehensive growth of an individual. The National Education Policy emphasises a shift from rote learning to a focus on conceptual understanding. It recognises the importance of nurturing critical thinking skills, problem-solving abilities, and a deep understanding of subjects rather than memorisation.

*“There are three things which are of the utmost importance in dealing with a man’s moral nature, the emotions, the saAskras or formed habits and associations, and the svabhva or nature. The only way for him to train himself morally is to habituate himself to the right emotions, the noblest associations, the best mental, emotional and physical habits and the following out in right action of the fundamental impulses of his essential nature. You can impose a certain discipline on children, dress them into a certain mould, lash them into a desired path, but unless you can get*

*their hearts and natures on your side, the conformity to this imposed rule becomes a hypocritical and heartless, a conventional, often a cowardly compliance.”<sup>9</sup>*

Aligning with this vision NEP says - *“Students will be taught at a young age the importance of “doing what’s right”, and will be given a logical framework for making ethical decisions. In later years, this would then be expanded along themes of cheating, violence, plagiarism, littering, tolerance, equality, empathy, etc., with a view to enabling children to embrace moral/ethical values in conducting one’s life, formulate a position/argument about an ethical issue from multiple perspectives, and use ethical practices in all work. As consequences of such basic ethical reasoning, traditional Indian values and all basic human and Constitutional values - such as Seva, Ahimsa, Swachchhata, Satya, Nishkam Karma, Shanti, Sacrifice, Tolerance, Diversity, Pluralism, Righteous Conduct, gender sensitivity, respect for elders, respect for all people and their inherent capabilities regardless of background, respect for environment, helpfulness, courtesy, patience, forgiveness, empathy, compassion, patriotism, democratic outlook, integrity, responsibility, justice, liberty, equality, and fraternity, will be developed in all students.”<sup>10</sup>* Both NEP and Sri Aurobindo’s integral education align in recognising that the primary objective of education is to cultivate conscious individuals rather than moulding them into machine-like entities. They highlight the importance of students grasping concepts and developing a profound understanding of subjects, marking a departure from conventional methods that prioritise memorisation solely for exams.

### **Contemporary Global Challenges**

The current global situation is marked by unprecedented challenges, ranging from the ongoing COVID-19 pandemic to economic uncertainties, environmental crises, and geopolitical tensions. In the face of these challenges, the needs and demands of human evolution have become more pronounced. Integral Education of Sri Aurobindo can emerge as a strategic response to address these contemporary issues.

### **Global Interconnectedness**

The interconnectedness of the world is more apparent than ever, and the need for individuals who can operate within this global framework is critical. The National Education Policy 2020 recognises this by emphasising the importance of understanding one’s own nation while fostering global perspectives. It says - *“The vision of the Policy is to instil among the learners a deep-rooted pride in being Indian, not only in thought, but also in spirit, intellect, and deeds, as well as to develop knowledge, skills, values, and dispositions that support responsible commitment to human rights, sustainable development and living, and global well-being, thereby reflecting a truly global citizen.”<sup>11</sup>* Integral Education complements this by nurturing a sense of global citizenship,

encouraging individuals to appreciate and collaborate with the richness and diversity of all nations. In the absence of an education system that instills love for one’s country and heritage, individuals may lack a strong connection to their cultural roots, leading to a potential loss of identity and purpose. On the other hand, without an emphasis on respect for other nations and cultures, there is a risk of fostering narrow-mindedness, prejudice, and conflicts.

The National Education Policy 2020, aligns with this vision by aiming to instill a deep-rooted pride in being Indian. This does not imply isolation or exclusion but rather a celebration of one’s cultural identity. Simultaneously, the policy recognises the importance of developing knowledge, skills, values, and dispositions that support responsible commitment to human rights, sustainable development, and global well-being. This dual focus reflects a commitment to both individual identity and global citizenship.

Sri Aurobindo said - *“Unity we must create, but not necessarily uniformity. If man could realise a perfect spiritual unity, no sort of uniformity would be necessary; for the utmost play of diversity would be securely possible on that foundation. If again he could realise a secure, clear, firmly-held unity in the principle, a rich, even an unlimited diversity in its application might be possible without any fear of disorder, confusion or strife. Because he cannot do either of these things he is tempted always to substitute uniformity for real unity.”<sup>12</sup>* In the contemporary global landscape, nations are deeply interconnected economically, socially, and culturally. Developments in one part of the world can have ripple effects globally. Teaching global harmony and respect in education helps individuals understand the interconnected nature of the world and fosters a sense of shared responsibility for the well-being of the entire global community. The vision of Education that NEP seeks to foster promotes global harmony and encourages students to appreciate and understand different cultures, traditions, and perspectives. This cultural literacy is essential in a world where diversity is a reality. NEP 2020’s emphasis on a holistic approach and Sri Aurobindo’s vision of unity acknowledge the importance of appreciating and respecting diverse cultures as a foundation for global harmony.

Sri Aurobindo further opines that *“Therefore we see that in this harmony between our unity and our diversity lies the secret of life; Nature insists equally in all her works upon unity and upon variation. We shall find that a real spiritual and psychological unity can allow a free diversity and dispense with all but the minimum of uniformity which is sufficient to embody the community of nature and of essential principle.”<sup>13</sup>* Today’s world faces complex global challenges such as climate change, pandemics, and economic disparities. Education that inculcates ideals of global harmony equips individuals with the knowledge and skills needed to address



these challenges collectively. Sri Aurobindo's statement on creating unity without uniformity reflects the idea that diversity is not only acceptable but essential for a vibrant and thriving global community. NEP 2020, by showing its commitment to human rights, sustainable development, and global well-being, aligns with this philosophy.

### **Mitigating Fragmentation and Division by Moral education**

Current global challenges often exacerbate fragmentation and division among individuals and nations. Integral Education, by fostering inclusivity and mitigating exclusive thought patterns, offers a means to address these divisive tendencies. The policy's commitment to mutual respect and understanding aligns with the broader human evolutionary demand for unity in diversity, emphasising that collaboration is essential for humanity's collective well-being. Sri Aurobindo emphasises the pivotal role of emotions, formed habits, and one's essential nature in shaping moral character. He contends that moral training involves cultivating the right emotions, noble associations, and positive habits aligned with an individual's fundamental impulses. Sri Aurobindo said "*In the economy of man the mental nature rests upon the moral, and the education of the intellect divorced from the perfection of the moral and emotional nature is injurious to human progress. Yet, while it is easy to arrange some kind of curriculum or syllabus which will do well enough for the training of the mind, it has not yet been found possible to provide under modern conditions a suitable moral training for the school and college.*"<sup>14</sup> Mere imposition of discipline without winning the hearts and natures of individuals leads to superficial compliance, fostering hypocrisy and conventional adherence. Sri Aurobindo critiques the European model where external discipline often results in rebellion once removed. He warns against neglecting moral and religious education, highlighting its importance in preventing societal corruption. In today's world, the relevance of Sri Aurobindo's insights is evident in the ongoing need for a holistic approach to moral education. To consciously implement these principles, educational systems should focus not only on external discipline but also on fostering genuine understanding, positive emotions, and ethical habits. By aligning moral education with an individual's essential nature and cultivating a sense of inner commitment, we can contribute to a society built on sincere values and integrity.

#### **Conscious Choice in Times of Crisis-**

The ongoing evolutionary crisis, as highlighted by Sri Aurobindo, prompts a conscious choice of destiny. In the midst of global challenges, the transformative potential of India's National Education Policy 2020 becomes evident. By advocating for a holistic approach grounded in Integral Education principles, the policy equips individuals to make conscious choices, contributing to their personal development

and, consequently, the collective evolution of humanity. Sri Aurobindo said - "*We may have our own educational theories; but we advocate national education not as an educational experiment or to subserve any theory, but as the only way to secure truly national and patriotic control and discipline for the mind of the country in its malleable youth.*"<sup>15</sup> The NEP aligns with the broader vision and the concept of making conscious choices in times of crisis. Sri Aurobindo's statement emphasises the importance of national education as a means to achieve genuine national and patriotic control and discipline over the minds of the youth. By focusing on "*life skills such as communication, cooperation, teamwork, and resilience*"<sup>16</sup> and "*creativity and critical thinking to encourage logical decision-making and innovation.*"<sup>17</sup> By introducing a comprehensive set of reforms NEP responds to the crisis in the education system highlighted by Sri Aurobindo. The crisis is not just an external challenge but an evolutionary one, demanding a shift in the way education is perceived and imparted. The policy's transformative potential lies in its ability to address the crisis by promoting a conscious, holistic, and integrated approach to education.

### **Conclusion**

While the NEP 2020 may not explicitly use the terminology associated with integral education, the principles embedded in the policy reflect a commitment to a more holistic, integrated, and inclusive educational paradigm. In conclusion, this paper highlights the transformative potential of India's National Education Policy 2020 through the lens of Integral Education. By advocating for a holistic approach that aligns educational paradigms with the principles of Integral Education, the policy has the capacity to shape conscious individuals capable of navigating the complexities of the evolving global landscape. Embracing the richness and diversity of all nations while fostering mutual respect and understanding, the integration of Integral Education into the national curriculum offers a promising pathway to address humanity's ongoing evolutionary crisis.

The fundamental idea that follows is how imperative it is that every child should have the opportunity to learn and evolve in accordance with their unique '*Swadharma*.' It emphasises how each child must have the necessary means to the essential freedom to shape their own path and system, aligning with their individual abilities and strengths. Once this comprehensive foundation of integral education is established, the child should enjoy the liberty to apply it to the fullest extent and to the best of their capabilities. This approach aligns with the essence of Sri Aurobindo's Integral Education, offering a pathway for navigating humanity's evolutionary crisis through the lens of the National Education Policy 2020.

Education has the potential to break the cycle of poverty, empower marginalised communities, and contribute

to the overall well-being and progress of humanity. It also represents a much-needed paradigm shift for the Indian youth and children, liberating them from the remnants of a colonial education system. On the other hand NEP is a progressive blueprint tailored to meet the mental, moral, and vital education needs of modern India.

NEP harnesses the transformative potential of education by addressing socio-economic disparities, promoting inclusivity and preparing individuals to contribute meaningfully to the progress and well-being of society. By focusing on these aspects, the NEP aims to make education a powerful tool for positive change and societal advancement.

The transformative potential of India's National Education Policy 2020, viewed through the lens of Integral Education of Sri Aurobindo, holds particular relevance to the current global situation and the evolving demands of human evolution. The policy's alignment with integral principles addresses contemporary challenges by promoting holistic-sustainable development, fostering global perspectives, mitigating division, and encouraging conscious choices in times of crisis. By striking a balance between pride in one's roots and respect for global diversity, the education system contributes to creating individuals who are not only deeply connected to their own culture but are also open-minded, tolerant, and respectful of the rich diversity of human civilisations. This, according to Sri Aurobindo's vision, is the foundation for maintaining unity amidst diversity, ensuring that life remains vibrant, varied, and harmonious.

By embracing the richness and diversity of all nations and the idea of unity without uniformity, the integration of Integral Education into the national curriculum can be a promising pathway to navigate the complexities of the evolving global landscape and address humanity's ongoing evolutionary crisis. It can signify a crucial step towards nurturing individuals capable of meeting the demands of the present while actively contributing to the positive evolution of the collective human experience.

#### (Footnotes)

1. Collected works of Sri Aurobindo. The life Divine- II. The Knowledge and the Spiritual Evolution. Sri Aurobindo Ashram Press. Pondicherry. Pg- 1090.

2. Sri Aurobindo and The Mother (1956): On Education, A Preface on National Education. Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry. pp. 5.
3. John Dewey. 'Experience and Education.' Simon and Schuster. 1938
4. Paulo Freire. 'Pedagogy of the Oppressed.' Sea Bury Press. New York. 1970.
5. Collective Works of Sri Aurobindo, Early Cultural Writings . 'On Education- Intellectual' Vol. 1. Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry pg 358.
6. Collective Works of Sri Aurobindo, Early Cultural Writings . 'On Education.' Vol. 1. Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry. pg 357.
7. Collective Works of Sri Aurobindo, Early Cultural Writings . 'A system of National Education.' Vol. 1. Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry. Pg 383.
8. NEP, 2020. Pg- 5.
9. Collective Works of Sri Aurobindo, Early Cultural Writings . 'The Moral Nature' A system of national education. Sri Aurobindo Ashram Press. Pondicherry. Vol. 1. Pg. 389.
10. NEP 2020— Pg- 16
11. National Education Policy- 2020. Pg 6.
12. Sri Aurobindo. (1962).The Ideal of Human Unity. Nature's Law in Our Progress. Sri Aurobindo Ashram Press. Pondicherry. pp. 423
13. Sri Aurobindo. (1962).The Ideal of Human Unity. Nature's Law in Our Progress. Sri Aurobindo Ashram Press. Pondicherry. Pg 425
14. Collective Works of Sri Aurobindo, Early Cultural Writings . 'The Moral Nature' A system of national education. Sri Aurobindo Ashram Press. Pondicherry. Vol. 1. pg 389.
15. Collected Works of Sri Aurobindo. Vol- 6. Bande Mataram- 1. 'The Doctrine of Passive Resistance- It's Necessity.' Sri Aurobindo Ashram Press. Puducherry. Pg- 276.
16. NEP 2020- Pg- 5.
17. NEP 2020- Pg- 5.

- Assistant Professor, Sri Aurobindo Chair,  
Pondicherry University, Puducherry  
Mobile- 8003753043  
Email- richatiwari38@gmail.com

# उदार-सौम्य राजनय और वैश्विक नेतृत्व

□ प्रो. डॉ. मनोज कुमार बहरवाल

‘अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम।

उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्’ ॥

उपरोक्त श्लोक का अभिप्राय है कि “यह मेरा अपना है और यह नहीं है, इस तरह की गणना चित्त ( संकुचित मन ) वाले लोग करते हैं । उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो ( सम्पूर्ण ) धरती ही परिवार है।”

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अति प्राचीन काल से ही प्रासंगिक रहे हैं और सदैव अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और सम्बन्धों की चर्चा रही है। भारतीय महा उपनिषद् का एक संस्कृत वाक्य ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ जिसका अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। इसी के साथ एक और ध्येय वाक्य ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ जिसका अभिप्राय सभी सुखी हों। भारतीय ज्ञान परम्परा के ये दो श्लोक ही वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और राजनीति की प्रेरणा और संचालन का स्रोत रहे हैं। भारतीय राजनीतिक चिन्तन में मनु, कौटिल्य, शुक्र, बृहस्पति, विदुर नीति, महाभारत के शान्ति पर्व और रामायण में विदेश नीति के प्राचीन और मूल तत्वों का व्यापक स्वरूप में वर्णन मिलता है। मनुस्मृति के। वे अध्याय में राजधर्म और परराष्ट्र सिद्धान्त, मण्डल सिद्धान्त, षाडगुण्य नीति, गुप्तचर व्यवस्था और युद्ध नीति का वर्णन किया है।<sup>1</sup>

ठीक इसी प्रकार कौटिल्य ने अपनी रचना ‘अर्थशास्त्र’ के अधिकरण ‘मंडलयोजि’ और ‘षाडगुण्य’ में शत्रु राज्य को वश में करना और शत्रुओं के प्रतिकार के उपाय करना आदि तत्वों का वर्णन किया गया है।<sup>2</sup> कौटिल्य ने अपने राजा को दिन की अष्टम घड़ी/भाग (सायंकाल 4:30 से 6:00 बजे तक) में सेनापति के साथ युद्ध की तकनीकों पर विचार विमर्श करने की सलाह दी है।<sup>3</sup> कौटिल्य ने इसके अतिरिक्त परराष्ट्र सिद्धान्त, मण्डल सिद्धान्त, षाडगुण्य नीति, गुप्तचर व्यवस्था और युद्ध नीति का वर्णन किया है। शुक्र ने अपनी रचना ‘शुक्रनीति सार’ के ‘अहरोज’ (राजा के 24 घंटों के समस्त कार्य) को 30 मुहूर्तों में विभाजित किया गया है। 11 वें 14 वें और 15 वें मुहूर्त में क्रमशः राजा को सैन्य अभ्यास का गहन निरीक्षण, गुप्तचरों से सम्पूर्ण सूचना और प्रतिवेदन की व्याख्या की गई है। शुक्रनीति सार में

भी परराष्ट्र सिद्धान्त, मण्डल सिद्धान्त, षाडगुण्य नीति, गुप्तचर व्यवस्था और युद्ध नीति का वर्णन किया है।<sup>4</sup>

विश्व सभ्यताओं के विकास के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विकसित और स्थापित हुए। उस समय इन्हें क्षेत्रीय सम्बन्ध कहा गया। प्राचीन भारत की सभ्यता में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संचालन के अनेक नियम और आचार संहिताओं का निर्माण किया गया। ये सभी नियम नैतिकता व कोरे सिद्धान्त पर आधारित थे। तत्कालीन राष्ट्र इनका व्यावहारिक प्रयोग नहीं करते थे।

पश्चिमी चिन्तन के अनुसार 1648 की ‘वेस्ट फेलिया’ सन्धि के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रारम्भ माना जाता है। 17 वीं सदी से ही स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अपने-अपने भौगोलिक सीमा क्षेत्र के बाहर के देशों से अपना सम्बन्ध बनाना प्रारम्भ किया। इसी तथ्य और तर्क के आधार पर माना गया कि 17 वीं सदी से ही यथार्थ रूप में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का चलन प्रारम्भ हुआ। इस समय के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का मूल क्षेत्र कूटनीति, इतिहास, कानून और दर्शन था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध शब्द का सबसे पहले प्रयोग 18 वीं सदी में सबसे पहले प्रयोग जर्मी बेन्थम (Jeremy Bentham) ने किया था।

लेकिन यह बात सत्य तो है लेकिन पूर्ण सत्य नहीं है। 17 वीं शताब्दी से और जर्मी बेन्थम से हजारों वर्ष पूर्व लगभग 150 ई. पूर्व भारतीय राजनीतिक चिन्तक और दार्शनिक मनु ने अपनी रचना मनुस्मृति में परराष्ट्र नीति का वर्णन किया है। इसी तरह लगभग 300 ई. पूर्व कौटिल्य ने अपनी रचना अर्थशास्त्र में भी परराष्ट्र नीति का वर्णन किया है। और आगे चलें तो ज्ञात होता है कि 12 और 13 वीं शताब्दी में शुक्र ने अपनी रचना शुक्रनीति सार में विदेश नीति का वर्णन किया गया है। ठीक इसी प्रकार रामायण और महाभारत में भी विदेश नीति की व्यापक व्याख्या है। अब आप वर्षों की गणना करके जान सकते हैं और अन्य को भी बता सकते हैं कि भारतीय राजनीतिक चिन्तन में पहले वर्णन है या जर्मी बेन्थम और फिलाडेल्फिया सन्धि। जब हम भारतीय ज्ञान तथा भारतीय शास्त्रों का अध्ययन करेंगे तो हमें सत्यता का आभास होगा ?

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत् ॥

सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

यही भारतीय ज्ञान परम्परा का श्लोक वर्तमान विश्व की राजनीति में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की प्रेरणा का स्रोत भी है। वर्तमान वैश्विक राजनीति का संचालन वैश्विक शान्ति, सद्व्यवहार, भाईचारा, आंतकवाद की समाप्ति और सभी के समग्र विकास के लक्ष्य को लेकर किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का संचालन व्यापक और संकुचित अर्थों में किया जाता है।

भारतीय विदेश नीति के सफल संचालन के लिए एक विदेश मन्त्रालय और उसके अधीन एक राजनय विभाग होता है। इस राजनय विभाग के अधीन अनेक राज दूतावास और अनेक राजदूत कार्यरत हैं। इनके तीक्ष्ण सर्वेक्षण और राजनय के कुशल कार्य के कारण ही विदेशों में हमारे राजदूत भारतीय लोगों के (सांस्कृतिक, व्यक्तिगत, आर्थिक और अन्य सभी जो भी जीवन जीने के अति आवश्यक तत्व हैं) उन सभी के हित साधक के रूप में कार्य करते हैं।

**मनु और परराष्ट्र नीति तथा दूत व्यवस्था :-** मनु ने अपनी रचना मनुस्मृति में पर राष्ट्र नीति तथा राजनय के व्यावहारिक पक्षों की व्याख्या करते हुए कहा है कि “पर राष्ट्र सम्बन्धों का संचालन दूतों की भूमिका पर निर्भर करता है। एक राज्य की किस राज्य के साथ मित्रता है और किसके साथ शत्रुता यह दूतों की भूमिका पर निर्भर है। मनु ने कहा है कि “दूत ही शत्रु से मित्रता करवा देता है, मिले हुए दूत शत्रु से विग्रह करवा देते हैं, दूत वह कार्य कर सकते हैं जिससे दो मित्रों में परस्पर फूट भी पड़ सकती है।”<sup>15</sup>

मनु ने दूतों की योग्यताओं का दूतों की गुप्तचर व्यवस्था का और दूतों के (कापटिक, उदास्थित गृहपति, व्यापारी, तापस) आदि का वर्णन किया है।

मनु ने दूतों की योग्यताओं का वर्णन करते हुए कहा है कि “दूत को शास्त्रों का विशिष्ट ज्ञान होना चाहिए। उसमें इतनी क्षमता हो कि वह वचन और स्वर का भाव समझ सके। वह मनुष्य के चेहरे के आकार व चेष्टा को जान सके। उसे लोगों के क्रोध के भावों (जैसे कि नेत्रों का लाल होना, भोंह टेड़ी करना) को समझ सके। दूत को सरल हृदय होना चाहिए, उसे कुलीन और चतुर भी होना चाहिए। उसे स्त्री आसक्ति एवम् मध्यपान से रहित होना चाहिए।”<sup>16</sup>

मनु ने यह भी कहा कि “दूत शुद्ध, अनुरक्त, चतुर, तीव्र स्मरण शक्तियुक्त देश व काल के अनुरूप निर्भयी एवम् वाक्पटु होना चाहिए।”<sup>17</sup>

मनु ने कहा कि “दूत षड्गुण नीति में दक्ष एवं समर्थ होना चाहिए। वह ईमानदार और राज्य के प्रति दृढ़ भक्त होना चाहिए। वह शत्रु द्वारा दिए गए धर्म, अर्थ, काम के लालच में नहीं आए। एक दूत को गणितज्ञ, निर्लोभी और निर्मोही तथा धर्म से परिपूर्ण होना चाहिए।”<sup>18</sup>

मनु ने दूत की योग्यताओं का अन्य वर्णन करते हुए लिखा है कि “दूत को विभिन्न लिपियों का ज्ञान, प्रसंगानुसार कार्य करने की क्षमता तथा राजा का विश्वास पात्र होना चाहिए।”<sup>19</sup>

कौटिल्य ने अपनी रचना ‘अर्थशास्त्र’ में दूतों को केन्द्र बिन्दु बनाकर परराष्ट्र नीति के प्रक्रियात्मक पक्ष का विश्लेषण किया है। दूत व्यवस्था का वर्णन करते हुए कौटिल्य ने कहा है कि दूत राजा का मुख है। आगे कहा है कि “दूत की नियुक्ति करते समय उसके आचरण, प्रस्थान की नीतियों एवम् उसके दूत सम्बन्धी कार्यों से सबद्ध सम्पूर्ण पक्षों का सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिए।”

**कौटिल्य और परराष्ट्र नीति तथा दूत व्यवस्था -** दूत के दायित्वों पर कौटिल्य ने लिखा है कि “यदि राजा को यथार्थ सन्देश देने में दूत के प्राणों को संकट उत्पन्न हो जाए तो भी उस दूत को यथार्थ सन्देश को दूसरे राजा के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए। कौटिल्य ने राजा को चेतावनी देते हुए कहा है कि दूत की नियुक्ति अत्यन्त गम्भीर और सूक्ष्म तरीके से करनी चाहिए। दूत की नियुक्ति करते समय उसके आचरण, उसकी योग्यता, निष्ठा आदि की गहन जाँच करते हुए मंत्रियों से गहन विचार-विमर्श करके उनकी सहमति के आधार पर ही नियुक्ति करनी चाहिए।

कौटिल्य ने दूतों की (निसृष्टार्थ, परिमितार्थ, शासनहर) श्रेणियों का वर्णन किया है।<sup>10</sup>

कौटिल्य ने कहा है कि “दूत साहसी, निडर, अहंकार रहित होना चाहिए। उसे राज्य / राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत होना चाहिए। वह ऐसा व्यक्ति हो जो कि राज्य हित में अपने प्राणों का बलिदान कर सके। उसमें त्यागी और तपस्वी भी होना चाहिए। दूत को स्त्री प्रसंग तथा मध्यपान जैसी बुराइयों से दूर रहना चाहिए। दूत इतना गुणवान हो कि वह परिस्थितियों और क्षमता को पहचान कर उचित निर्णय ले सके। दूत को जितेन्द्रिय, आत्मसंयमी और दृढ़ निश्चयी होना चाहिए।”<sup>11</sup>

कौटिल्य ने यह भी कहा है कि “निसृष्टार्थ दूत के लिए वही गुण आवश्यक है जो अमात्य से अपेक्षित है।”-

**कौटिल्य ने स्थिर गुप्तचर ( कापटिक , उदास्थित , गृहपतिक,वैदेहक , तापस ) और घुम्मकड़ गुप्तचर ( सत्री , तीक्ष्ण , रसद , ( परिवाजिका , मुंडित/मुन्डा , वृषली ये तीनों महिला गुप्तचर हैं ) आदि गुप्तचरों का वर्णन किया है।<sup>12</sup>**

**शुक्र और परराष्ट्र नीति और दूत व्यवस्था** - शुक्र ने अपनी रचना 'शुक्रनीति सार' में गुप्तचर व्यवस्था और परराष्ट्र नीति की वृहत् व्याख्या की है। शुक्र ने परराष्ट्र नीति के सिद्धान्तों (उपाय, षड्गुणनीति) की व्याख्या की है। शुक्र ने साम, दाम/दान, भेद, दण्ड की नीति की भी व्याख्या की है। सन्धि, विग्रह, यान, आसन, आश्रय, द्वैधीभाव जैसे महत्त्वपूर्ण तत्वों की व्याख्या की है जिसका मूल केन्द्र गुप्तचर और उनकी व्यवस्था है।<sup>13</sup>

शुक्र ने गुप्तचर व्यवस्था एवं दूतों की आवश्यक क्षमता और योग्यताओं का वर्णन किया है। शुक्र की मान्यता है कि "दूत की स्मरण शक्ति तीव्र और स्थायी होनी चाहिए। वह इतनी बौद्धिक क्षमता हो कि वह सामने वाले व्यक्ति के मनोभावों व उसकी इच्छा को समझ सके। उसे देशकाल और परिस्थितियों के अनुरूप ही अपने कर्तव्यों को भली-भाँति समझकर उसका पालन करने की क्षमता से परिपूर्ण होना चाहिए। वह अपने वाक चातुर्य से परिपूर्ण हो तथा निर्भीकता जैसे गुणों का उसमें समावेश हो। शुक्र की मान्यता है कि यदि किसी भी व्यक्ति में ये सारे गुण हों तो ऐसे व्यक्ति को दूत बना दिया जाना चाहिए।"<sup>14</sup>

शुक्र ने अपनी गुप्तचर व्यवस्था पर दूतों की दक्षता पर कहा है कि "गुप्तचर को शत्रु तथा प्रजा के व्यवहार को भली-भाँति जानने और समझने की क्षमता और कौशल होना चाहिए। यथार्थ-सत्य बातों को भली-भाँति सुनकर उनकी यथा स्वरूप व्याख्या करने की उसमें क्षमता होनी चाहिए। एक गुप्तचर को सदैव सत्य वचन का ही वाचन करना चाहिए।"<sup>15</sup>

शुक्र ने राजा को चेतावनी देते हुए कहा है कि "गुप्तचर द्वारा कही गई बात को अन्तिम सत्य नहीं मानना चाहिए। राजा को चाहिए कि वह गुप्तचरों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से निगरानी रखे, उनके कार्यों की जाँच करे। गुप्तचर जो प्रतिवेदन देता है उसकी सत्यता-यथार्थता की जाँच करे। शुक्र राजा को आदेश देते हुए कहते हैं कि "राज्य में गुप्तचरों हेतु ऐसी व्यवस्था उत्पन्न करनी चाहिए जिसके आधार पर गुप्तचर स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सके तथा उन्हें अपने कार्य में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं हो। राजा को चाहिए कि मन्त्री और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से गुप्तचरों को सुरक्षा प्रदान करें।"<sup>16</sup>

शुक्र ने लिखा है कि "यदि कोई गुप्तचर असत्य बातें कहता है अथवा अपने दायित्वों का निर्वहन भली-भाँति नहीं करता है, उसे अनिवार्य रूप से दण्ड दिया जाना चाहिए।"<sup>17</sup>

'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध/राजनीति स्वार्थों के लिए संघर्ष है।' वर्तमान के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध परस्पर निर्भरता के सिद्धान्त पर संचालित होते

हैं। वर्तमान वैश्विक सम्बन्धों का मुख्य आधार व्यापार और आर्थिक तन्त्र है। इसका मुख्य आधार सौम्य राजनय भी है। अब युद्ध अथवा आतंकवाद को सभी देश टालना चाहते हैं और शान्ति तथा विकास के मार्ग पर चलते हुए विश्व का समग्र विकास करना चाहते हैं। लेकिन यह बात अभी भी रूस और अन्य देशों को समझाना कठिन लग रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जिसका अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जिसका अभिप्राय सभी सुखी हों। भारतीय राजनय की व्यापक सौम्यता का एक बड़ा और प्रभावी उदाहरण है। भारतीय ज्ञान परम्परा के ये दो श्लोक ही वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और राजनीति की प्रेरणा और संचालन का स्रोत रहे थे, और रहे हैं तथा भविष्य में भी निश्चित रूप से रहेंगे। इन्हीं सब ध्येयों को प्राप्त करने के लक्ष्य से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के संचालन की माँग है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संचालन का मुख्य साधन कूटनीति है और उसका संचालन राजनय के अभाव में सम्भव नहीं है।

**वैश्विक नेतृत्व** - 2014 के बाद भारतीय कूटनीति में और राजनय की परिभाषा में यथार्थवादी परिवर्तन हुआ है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पुनर्स्थापना में एक महत्त्वपूर्ण जागरण का कार्य किया है। 2014 के बाद एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तत्व पंथनिरपेक्षता का जन समावेशी और संतुलनकारी पक्ष परिलक्षित हुआ है। **धर्मनिरपेक्षता और पन्थनिरपेक्षता के संघर्ष में धर्मनिरपेक्षता के षड्यंत्रों का भंडाफोड़ हुआ है और पंथनिरपेक्षता को जन समर्थन प्राप्त हुआ है।** वर्तमान में भारत और भारत के तत्व को जो कि सबसे प्रथम है और सबसे अग्रणीय है की सार्थक और लोकसमर्थक पहल हुई है, जिसने बहुत सारे तर्कों से मिथ्या प्रपंच और झूठ को करारा जबाव दिया है।

अतः इस बात का प्रचार-प्रसार बड़े ही जोर-शोर से करना चाहिए कि भारत का ज्ञान दर्शन ही प्राचीन है और विश्व का मार्गदर्शक रहा है। हमें इस बात का मिथक भी तोड़ना चाहिए कि विदेश का ज्ञान चिन्तन पहले का नहीं है पहले का ज्ञान भारत का ही है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का मूल केन्द्र किसी भी विदेश नीति का अभिन्न अंग है। लोकतान्त्रिक युग में किसी भी देश का (प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति और वहाँ की विधायिका) विदेश नीति को निर्धारित करती है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के दो पक्ष (आदर्शवादी और यथार्थवादी) हैं। 1947 से वर्तमान तक भारतीय राजनीति ने 15 प्रधानमंत्रियों का नेतृत्व देखा है और उनकी विदेश नीति के संचालन को भी देखा है। कभी घोर आदर्शवाद का प्रभाव तो कभी यथार्थवादिता का प्रभाव। आदर्शवाद के कारण भारतीय विदेश नीति के संचालन से भारत को बहुत नुकसान हुआ है। 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति के यथार्थवादी पक्ष का संचालन हो रहा है। विगत 9 वर्षों में विदेश नीति के माध्यम से भारत ने बहुत

कुछ पाया है। भारत ने अपने सौम्य राजनय से विदेशों में अपनी राजनय की शक्ति का लोहा मनवाया है। सर्जिकल स्ट्राइक हो अथवा एयर स्ट्राइक क्या आप ऐसी कल्पना कर सकते थे ? चिन्तन-मनन की आवश्यकता है। आन्तरिक और बाह्य सम्प्रभुता की खोई हुई शक्ति और सम्मान को पुनः प्राप्त किया है। यथा राजा तथा प्रजा। गाँधी जी के दो ही गाल हैं। तीसरा तो होता ही नहीं है। यह गाँधीजी की अहिंसा का यथार्थवादी पक्ष है। अब घोर आदर्शवादिता का युग बीत गया है। अब भारत के बारे में पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान, अमेरिका अन्य सभी देश अलग तरह से सोचते हैं। अब कोई आँख उठाने की हिम्मत नहीं करता है।

सौम्य राजनय अथवा यथार्थवादी कूटनीति का प्रबल तर्क यह है कि मनु, कौटिल्य, शुक्र, बृहस्पति, रामायण तथा महाभारत और गीता आदि पवित्र और पूजनीय ग्रंथों से पहले विदेश में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के ज्ञान का बहस का और तर्क-वितर्क का कोई अंश मात्र भी नहीं मिलता है। अतः भारत तो हिन्दुस्तान है और हिन्दुस्तान ही भारत है। ज्ञान की परम्परा का पवित्र स्थान है। अतः भारत विश्व गुरु था, है और भविष्य में भी रहेगा और ज्ञान की परम्परा में विश्व को पाथेय प्रदान करेगा। अतः अब भारतीय विदेश नीति पहले की तरह एक शक्तिहीन चिड़ियाँ नहीं है, वह एक बाज बन गई है वह झपट्टा मारता है। अब वह अपने विरोधियों का बड़े ही साहस से अचूक शिकार करता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि वर्तमान में भारतीय सौम्य राजनय का जिस प्रकार से प्रभावी संचालन किया जा रहा है, उसकी प्रेरणा और ऊर्जा हमारे राजनीतिक नेतृत्व को मनु, कौटिल्य, शुक्र, बृहस्पति, रामायण तथा महाभारत और गीता जैसे पवित्र और पूजनीय ग्रंथों से ही मिल रही है। इन ज्ञान के कोश से भारत अपने सौम्य राजनय द्वारा वैश्विक स्तर पर अपना राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैश्विक मानवता, वैश्विक बंधुत्व का और वैश्विक शान्ति का परचम फैला रहे हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' हमारी सौम्यता और उदारता का एक अभिन्न अंग है जिसके माध्यम से हम भारतीय विदेश नीति का और हमारे राजनय का संचालन कर रहे हैं और 2014 के बाद वैश्विक नेतृत्व के चरम को छू रहे हैं। 2014 से पूर्व जो हमारी विदेश नीति और राजनय जो मौन था तथा (De Facto Leadership) पर्दे के पीछे की राजनीति से जकड़ा हुआ था वह अब वैसा दिखाई नहीं देता है। वर्तमान में भारत की भारतीयों के लिए भारतीयों

द्वारा राजनीति का संचालन किया जा रहा है। यही लोकमत, लोक समर्थन, सांस्कृतिक जागरण, स्वदेशी जागरण और राष्ट्र भक्ति के लिए भावनात्मक जागरण और सक्रिय संचालन का पक्का प्रमाण है। अब भारत जाग्रत हो गया है। अब उसकी जनता को स्व और स्वत्व का सही आशय समझा दिया गया है और प्रजा को सही से षड्यंत्रों की समझ आ गई है। अतः भारतीय सौम्य-उदार राजनय के मध्यम से हम वैश्विक नेतृत्व के वैश्विक लक्ष्यों को बड़े ही प्रभावी तरीके से प्राप्त कर रहे हैं।

### संदर्भ सूची

1. बहरवाल - भारतीय राजनीतिक चिन्तक - पृष्ठ -22.
2. बहरवाल - भारतीय राजनीतिक चिन्तक - पृष्ठ - 98
3. वही - पृष्ठ - 99
4. वही - पृष्ठ -144
5. मनुस्मृति -सप्तम् अध्याय-श्लोक-66
6. वही-63
7. वही-64
8. वही
9. वही
10. अर्थशास्त्र -15 अधिकरण
11. वही
12. वही
13. बहरवाल-भारतीय राजनीतिक चिन्तक-पृष्ठ - 102, 103
14. वही-पृष्ठ-171
15. वही
16. बहरवाल-भारतीय राजनीतिक चिन्तक - पृष्ठ - 171
17. वही
18. वही
19. वही-पृष्ठ - 144

- प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, आमेट (राज.)

# वैश्विक कल्याण का पाथेयदाता भारत

□ डॉ. ओम प्रकाश पारीक

भारत अपने सनातन ज्ञान द्वारा वैश्विक चिन्तन को दिशा प्रदान करता रहा है। उत्कृष्ट चिन्तन ही वैश्विक कल्याणकारी होता है और वैश्विक कल्याण विश्व की उन्नति और शांति में निहित है। शताब्दियों पूर्व का हमारा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान और क्रान्तद्रष्टा ऋषियों के द्वारा अनुभूत वैदिक ज्ञान संपूर्ण सृष्टि के कल्याण के लिए है उसमें कहीं सीमाएँ नहीं हैं तदनुसार आचरण भी हमारी यहाँ की संस्कृति में व्यक्त होता है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जी-20 के समापन में एक संस्कृत वाक्य उद्धृत किया “स्वस्ति अस्तु विश्वस्य” अर्थात् विश्व का कल्याण हो। इसी प्रकार माननीय प्रधानमंत्री जी ने अमेरिकी सीनेट के अपने उद्बोधन में वैश्विक आत्मीयता और एक सत्य को प्रकट करते हुए कहा - “एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति” सत्य एक है लेकिन बुद्धिमान् जन उसे अलग-अलग प्रकार से व्यक्त करते हैं। प्रधानमंत्री जी का इस प्रकार का वक्तव्य भारतीय प्राचीन विश्वगुरु की भूमिका से ओत-प्रोत है। वास्तव में चाहे मानवीय मनोविज्ञान हो, स्वास्थ्य हो, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्थाएँ हों भारत आज भी उन सभी व्यवस्थाओं में श्रेयमार्ग का दिग्दर्शक भी बनता है और उस पथ के पथिकों की अपनी भूमिका और सामर्थ्य की अमृतभरी अञ्जलि से प्यास बुझाने में भी सक्षम है।

इस सृष्टि में जरायुज, उद्भिज, अण्डज और स्वेदज का जीवन माना जाता है। जरायुज अर्थात् माता के गर्भ में जेर से जो निकलते हैं मानव, पशु आदि। उद्भिज अर्थात् बीज को फोड़कर जो निकलते हैं जैसे वृक्षादि, अण्डज अर्थात् जो अण्डे से निकलते हैं पक्षि आदि। स्वेदज पसीने आदि अपशिष्ट से जिनका निर्माण होता है ऐसे मच्छर आदि। इन सभी में मानव ही भावना और बुद्धि के सामर्थ्य से विभूषित हैं अन्य नहीं। अतः यदि मानवीय चिन्तन उन्नत और कल्याणकारी होगा तो संपूर्ण सृष्टि का कल्याण उसमें निहित रहता है।

“तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु” अर्थात् मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो। वेद का यह महान वाक्य हमारे मन के कल्याणकारी हो जाने की प्रार्थना करता है जैसा संकल्प होता है वैसा ही कार्य और तदनन्तर वैसा ही फल भी प्राप्त होता है। मन में बहुत सारे विकल्प होते हैं उन सभी विकल्पों में से बुद्धि जिस विकल्प को निश्चित करती है वह संकल्प हो जाता है। अतः संकल्प का बहुत महत्त्व है। भारत का सनातन धर्म संपूर्ण विश्व के कल्याण करने हेतु उसमें एक प्रेरणादायक और नेतृत्व का कार्य करता है तो वह वैश्विक कल्याणकारी

संकल्प बनता है तदनुसार उसके परिणाम भी प्राप्त होते हैं।

वैश्विक कल्याण का जो पथ है उस पर विश्व को अग्रसर होना चाहिए। सीमाओं से परे जाकर विश्व को एक परिवार समझ उसका मंगल-विधान किया जा सकता है। ऐसे कल्याणकारी पथ पर चलने हेतु हमें बहुत सी बातों की प्रेरण बहुत से उत्साहवर्धक कार्यों का सहारा और बहुत सी सम्मतियों की आवश्यकता होती है जिसमें बिना थके, बिना आलस्य के हम हमारे मंगल कल्याणकारी गन्तव्य को प्राप्त कर सकें। वही इस मार्ग का पाथेय है जिससे वैश्विक कल्याण सुगमता और संपूर्णता से प्राप्त किया जा सकता है। इस वैश्विक कल्याणकारी मार्ग के पाथेयदाता की भूमिका भारत निभाता रहा है और निभाता रहेगा। इसलिए मनुस्मृति में लिखा है -

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः**

**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥**

(मनु 2/2/20)

अर्थात् इस देश के लोगों से पृथ्वी पर सभी मानवों ने अपने चरित्र की शिक्षा ली है। उसमें कारण है भारतीय ज्ञान के शाश्वत सनातन, सार्वभौमिक और कल्याणकारी होना और उन विचारों से ओत-प्रोत भारतीय संस्कृति की धारा का अजस्र प्रवाहित रहना। इसलिए भारतीय संस्कृति वैश्विक कल्याण का शक्तिकेन्द्र भी कही जा सकती है। इसलिये संस्कृति के विषय में कहा है -

**सत्याहिंसगुणैः श्रेष्ठा**

**विश्वबन्धुत्व शिक्षिका**

**विश्वशान्ति सुखदात्री**

**भारतीया हि संस्कृतिः**

अर्थात् सत्य अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, अक्रोध आदि बहुत से गुणों से जो श्रेष्ठ है और विश्व में भाईचारे की शिक्षिका है विश्व में शान्ति और सुख का विधान करने वाली है ऐसी भारतीय संस्कृति है।

मानव जीवन का और संपूर्ण पर्यावरण जीव जगत् का एक दर्शन है उस स्थिति में उनके लिए सर्वाधिक कल्याणकारक क्या है उसकी पालना होनी चाहिए। इसलिए हमारे ऋषिप्रदत्त ज्ञानपरम्परा में पुरुषार्थों की सिद्धि मानव जीवन के लिए आवश्यक बतलाया है। पुरुषार्थ चतुष्टय में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सम्मिलित होते हैं इसमें धर्म का प्रामुख्य है धर्म और मोक्ष के बीच अर्थ और काम है ये दोनों धर्म और मोक्ष से संतुलित किये जाते हैं धर्म का लक्षण ग्रन्थों में लिखा है -

**“यतोऽभ्युदयनिश्रेयससिद्धिः स धर्मः”**

अर्थात् जिससे सभी प्रकार की उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति हो वह धर्म कहलाता है। धर्म ही ऐसा है जो कि सभी प्रकार से धारण किया जाता हुआ फिर धारण करने वाले की स्वयं धारण कर उसकी रक्षा करता है।

**धारणाद्धर्म इत्याहुः**

**धर्मो धारयते प्रजाः**

(महाभारत/कर्णपर्व/69/59)

सामान्यतः मानवीय धर्म के दश लक्षण बतलाए गए हैं। धैर्य रखना, सहनशील होना, दयाभाव होना, आन्तरिक और बाह्य स्वच्छता, अपनी इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि से काम लेना, विद्या की समझ होना, सत्य बोलना, क्रोध नहीं करना ये धर्म के दश लक्षण हैं। अर्थ और काम दोनों ही जीवन के लिए आवश्यक है पर इन्हें संतुलित होना चाहिए। यदि ये संतुलित नहीं होंगे तो सभी और अर्थ और काम के प्रयत्न और फल दोनों ही बढ़ेंगे जिससे समाज का पतन होगा इसलिए भगवान् कृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है -

**“धर्माऽविरुद्धो कामोऽस्मि भरतवर्षभः”** हे अर्जुन मैं धर्म से अविरुद्ध अर्थात् अनुकूल काम हूँ। वेद में कहा है जो अकेला खाता है वह पाप को खाता है “केवलाघो भवति केवला दी” इस प्रकार धर्म के द्वारा ही प्रजायें एक दूसरे की रक्षा करती हैं इसके विरुद्ध स्वार्थ का अतिरेक होने पर एक दूसरे से संघर्ष करती रहती है इसलिए शासक के विषय में हमारे यहाँ स्पष्टता है। प्रजाओं का स्वामी भी धर्मविद् और धर्मात्मा होना चाहिए। राजा राम के विषय में कहते हैं **“रामो साक्षाद्विग्रहवान् धर्मः”** अर्थात् राम साक्षात् धर्म की मूर्ति है इसीलिए कहते हैं -

**न हि तद् भविता राष्ट्रं यत्र रामो न भूपतिः।**

**तद् वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यति।।**

(अयो.का/37/29)

अर्थात् राम जहाँ राज्य नहीं करेंगे वह राष्ट्र नहीं होगा और राम यदि वन में भी रहेंगे तो वह भी राष्ट्र हो जायेगा। इसीलिए धर्म मनुष्य समाज में अपना आधारभूत महत्त्व रखता है। वास्तव में मनुष्य के आयु के इस भाग में उसके प्रत्येक कार्य धर्म से अनुप्राणित होने चाहिए इसीलिए मनु ने कहा है -

**ग्रहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्**

अर्थात् कभी भी मृत्यु आ सकती है इस प्रकार के चिन्तन करते हुए मानव को धर्म का आचरण करना चाहिए। ये सब बातें जो सार्वभौमिक व सार्वकालिक है ये सब विश्व के लिए पाथेय हैं।

भारत राष्ट्र विश्व को यह सीख देता है कि जितने भी प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि ईश्वर प्रदत्त है अतः उनके नाश करने का, उनको प्रदूषित करने का और उनके प्रति अनुत्तरदायित्वपूर्ण भावना रखने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है इसलिए वेद में कहा भी है -

**“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः”** भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। यह भावना प्रकृति के प्रति प्रेम और विश्वास की

भावना है जो कि संपूर्ण विश्व के लिए हितकारी है। आज बहुत से कारणों से वैश्विक अशांति देखी जा रही है विभिन्न धर्मावलंबियों, नस्लों एवं क्षेत्रीय बंधनों में बंधे लोग परस्पर घृणा और वैमनस्य रखते हैं। भारतवर्ष का सनातन ज्ञान संपूर्ण प्रकार की घृणाओं के बीच एक सकारात्मक प्रकाश की किरण की भांति है जो कि **“एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति”** अर्थात् एक ही सत्य को विद्वान् अनेक प्रकार से कहते हैं। ऐसे वैदिक ज्ञान के द्वारा सभी को अपने अपने श्रद्धा और विश्वास के अनुसार आस्था रखते और उपासना करते हुए सत्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है। यही नहीं भारतीय ज्ञान जो कि मानव जीवन दर्शन के शाश्वत अनुभव के आधार पर हमारे क्रान्त द्रष्टा ऋषियों ने प्रकट किया है उसके अनुसार यह मेरा है, यह पराया है, यह सब छोटे हृदय वाले लोगों के लिए कहा गया है वास्तव में बड़े हृदय की बात तो यह है कि पूरी पृथ्वी ही उनका परिवार है।

**अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।**

**उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।**

वैश्विक मानव शान्ति और सद्भाव में रहे इसके लिए उनमें आत्मीयता की परं आवश्यकता है हमारे यहाँ के शास्त्रों में श्रेष्ठ ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता, चाण्डाल सभी में जो समदर्शी होता है उसे पण्डित कहा गया है -

**विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गविहस्तिनी।**

**शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।। (गीता)**

वास्तव में तो एक आत्मीयता ही ऐसा गुण है जिससे संपूर्ण समस्याओं का हल हो सकता है। यदि मनुष्य में मनुष्यता भरी रहे तो वही उत्तम श्रेष्ठता है इसलिए कहा है **“नहि मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चिद्”** अर्थात् मनुष्यता से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।

आज प्रतिस्पर्धा का युग है विश्व में कन्धे से कन्धा मिलाकर महिला और पुरुष वैश्विक निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। इस बीच महिला सशक्तिकरण का नारा भी दिखाई देता है। महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हों, शारिरिक रूप से स्वस्थ हों, और मनोवैज्ञानिक रूप से उच्चतम लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील होनी चाहिए यह बात अत्यन्त उचित है किन्तु विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियों के वशीभूत होकर केवल सशक्त के रूप में अपना अतिरेक दिखाना ही जब लक्ष्य बन जाये तो यह परिवार समाज के हित में नहीं है। इस प्रकार के सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकृतियाँ पैदा हो सकती हैं जो कि दीर्घकालीन नैराश्य को जन्म देने वाली होती है। महिलाओं के सशक्तिकरण को व्यक्त करने वाले वैदिक उद्धरण प्रचुर मिलते हैं। बहुत सी ऋषिकाओं ने वैदिक सूक्त लिखे हैं। उस समय की महिलाएँ घोड़ों पर सवार होकर युद्ध भी लड़ती थी। लघु उद्योगों में कार्य करती थी। सिलाई, कढ़ाई, बुनाई करती थी इसके साथ ही परिवार में उन्हें साम्राज्ञी का दर्जा प्राप्त था। हमारे यहाँ की महिला सशक्त रही हैं। महिलाओं को सम्मान देने की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं।



**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:** वास्तव में महिला और पुरुष के प्रत्येक क्षेत्र में बराबरी का हम चिन्तन करते हैं तो हमारे पारिवारिक संस्था प्रश्न चिह्न बनकर खड़ी हो जाती है जिसमें महिला ही मुख्य धुरी होती है। अतः आज के इस बदलते युग में महिलाओं को परिवार में रहते हुए अपनी प्रतिभा प्रगटीकरण के पूर्ण अवसर मिलने चाहिए। पारिवारिक कोमल भावनाओं में सहज संतुलन स्थापित करना और महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की अग्रिम पंक्ति तक पहुँचाना परिवार के सभी सदस्यों का दायित्व है।

आज पर्यावरण की दृष्टि से प्रदूषण न केवल बढ़ ही रहा है अपितु हमारी जैव विविधता भी समाप्त होती जा रही है जिससे बहुत सारे रोग पनप रहे हैं। और कृषि उत्पाद पर भी खतरा मंडराने लगा है प्रत्येक जीव में आत्मत्व और परमात्मतत्व अनुभव करने का हमारा विचार इसका समाधान करता है।

आज पूरा विश्व विकास की संकुचित परिभाषा के कारण अन्धाधुंध विकास से उत्पन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं जैसे तापमान में बढ़ोतरी, भूकंप, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि त्रासदियों को झेल रहा है वास्तव में हमें हमारी पुरानी विकास की अवधारणा पर चिन्तन करना पड़ेगा जिसमें कहा गया है -

**साईं इतना दीजिये जामे कुटुंब समाय।**

**मैं भी भूखा न रहूँ साधू न भूख जाय।।**

या फिर “सन्तोषः परं सुखम्” सन्तोष ही परं या उत्कृष्ट सुख है। जिन भोगों को भोगने के लिए हम लालायित रह रहे हैं वास्तव में वे भोग ही हमें भोग रहे हैं -

“भोगाः न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः” अर्थात् जो हम भोग रहे हैं वेही हमें पीड़ित कर रहे हैं। इसीलिए विकास की अवधारणा उतनी ही सही है जो कि प्रकृति के द्वारा धारण की जा सके। यह बात हम हमारे सनातन ज्ञान के द्वारा विश्व को समझाते आ रहे हैं।

इसी प्रकार जब हम शिक्षा की व्यवस्था की बात करते हैं तो उसमें भी वैश्विक कल्याणकारी भारतीय ज्ञान का समावेश विश्व के लिए उपादेय होगा। समार्वतन संस्कार के समय शिक्षार्थी को जो उपदेश दिया जाता है वह उसमें संपूर्ण जीवन के लिये दिशा निर्देश बनता है। **मातृ देवो भवः, माता देवता है पितृ देवो भवः, पिता देवता है। आचार्यो देवो भवः, गुरु देवता है सत्यं वद सत्य बोलो, धर्म चर धर्म का आचरण करो** और ऐसे कर्मों का आचरण करो जो कि निष्कलंक हों -

**यान्यवद्यानि कर्माणि**

**तानि सेवितव्यानि**

**नो इतराणि** (तैत्तरीयोपनिषद् 1/11/2)

भारत “**वसुधैव कुटुम्बकम्**” की अपनी संकल्पशक्ति से तो विश्व को आत्मीयता में भरता ही है अपितु आज एकाकीपन से व्यथित

हो रहे वैश्विक मानव को भारतीय परिवार की अमृतमयी किरणों की ओर आकर्षित कर उन्हें विश्रान्त और आनन्दित करने का सुख भी प्राप्त करने का मार्ग दिखाता है -

**संगच्छवं सवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्**

हम साथ-साथ चलें साथ-साथ संवाद करें एक दूसरे को समझे, हमारे संकल्प समान हो, हमारा हृदय समान हो, हमारे मन और चित्त समान हो। इस प्रकार के सनातन अमर वाक्यों का अर्थ केवल भारतीय सीमाओं से आबद्ध नहीं है अपितु यह सार्वजनीन और वैश्विक है।

इस संसार को समझना या उसमें मोह करना अविद्या है और उस परमात्मा को समझना विद्या है। पर संसार को समझे बिना व्यक्ति मृत्यु तक का सफर कैसे तय करेगा और परमात्मा या आत्मा को समझे बिना संसार में अपनी आसक्ति दृढ़ कर लेगा जो कि अत्यन्त खतरनाक है। अतः दोनों में संतुलन आवश्यक है यही अर्थ और काम का धर्म से नियंत्रित होना भी हैं। जो कि हम भली प्रकार से विश्व को समझा सकते हैं।

**विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।**

**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।** (ईशोपनिषद्)

जीवनदर्शन के अपने ऋषि प्रदत्त विशेष ज्ञान के कारण आज भारत ने संपूर्ण विश्व को योग का मार्ग दिखाया है जो कि शारिरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, भौतिक सभी आयामों की आनन्ददायक स्थिति हैं। यह सामान्य शारीरिक अंगों के सञ्चालन से कुण्डलिनी जागरण और समाधी भाव तक जाता है। यही योग जब हमारे नित्यप्रति के कार्यों में झलकता है तो हमारे कर्मों की कुशलता बन जाता है।

**“योगः कर्मसु कौशलम्”**

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है हे धनञ्जय। योगस्थ होकर कर्मों को करो और फल की आशा को त्याग दो चाहे सफलता मिले चाहे असफलता दोनों में समान रहना ही समत्व योग है।

**योगस्थ कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय।**

**सिद्धयसिद्धयोः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते।।** गीता2/48

वास्तव में विश्व जिस खुशी को भौतिक उत्पादों से प्राप्त करना चाहता है और उनसे खुशी के स्थान पर अन्ततः दुःख ही प्राप्त करता है। समत्व योग सर्वदा प्रत्येक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में आनन्ददायक स्थिति का निर्देश करता है।

विश्व को इस प्रकार का पाथेय प्रदान करता हुआ भारत गौरवान्वित तो है ही अपितु ऋषिप्रदत्त उत्तरदायित्व “हम मित्र की दृष्टि से सभी को देखें” “**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे**” आदि कल्याणकारी प्रेरणाओं और कर्तव्यों को पूर्ण करता हुआ हार्दिक आह्लाद का भी अनुभव करता है।

- *आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, एस.आर.के. पाटनी राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़, अजमेर (राज.)*

# मूल संविधान में प्रदर्शित भारतीय संस्कृति के तत्त्व : संवैधानिक व्याख्या में महत्त्व

□ अमृता वर्मा

संविधान देश की राजनीतिक व्यवस्था के आधारभूत ढाँचे का निर्माण करता है। इस रूप में हमारा संविधान हमारी राजनीतिक प्रतिबद्धता और उसके अनुकूल अपनाई जाने वाली शासन व्यवस्था के आधारभूत स्वरूप का लिखित प्रलेख है। किन्तु हमारा संविधान केवल एक राजनीतिक प्रलेख मात्र नहीं है, अपितु इससे कहीं अधिक है।

भारत का संविधान भारत के संस्कृति-स्वरूप को अपने अंदर समेटे हुए है। संविधान की मूल हस्तलिखित प्रति में भारत की पाँच हजार वर्षों से अधिक की सुदीर्घ और अनवरत् रूप से प्रवाहित संस्कृतिक और राष्ट्रीय विरासत को 28 निर्देश चित्रों द्वारा चित्रित किया गया है। वस्तुतः संविधान निर्माता इस बात को जानते थे कि देश के निवासियों का जीवन देश की सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय गौरव के साथ जुड़ा है तथा देश की पहचान उसकी संस्कृति, परम्परा, मूल्य और राष्ट्रीय भावना से होता है जिन सांस्कृतिक और राष्ट्रीय घटनाओं, महापुरुषों तथा भारत के भौगोलिक रूप को संविधान में चित्रांकित किया गया है, उसका सन्देश हमें गहराई तक भारतीय संविधान की व्याख्या के लिए समझना चाहिए।

## भाग - 1

मोहन जोदड़ो की मोहर जेबू बैल उन नेतृत्व गुणों का प्रतीक है जो उनके समूहों को नियंत्रित करते हैं और उन्हें संरक्षित रखते हैं।



## भाग - 2

वैदिक गुरुकुल से नागरिकों के निर्माण का संदेश दिया गया है। गुरुकुल संपूर्ण जीवन पद्धति है जो धर्म के अनुसार अर्थ और काम का उपयोग मोक्ष प्राप्ति के करने के लिए संदेश देती है जो जीवन में आश्रम प्रणाली अपनाकर पीढ़ियों के संघर्ष को दूर करने का उपाय दर्शाता है।



## भाग - 3

पुष्पक विमान पर श्रीराम, माता सीता व लक्ष्मण जी को दर्शाया गया है जो अधिकारों को मर्यादा के साथ उपयोग करने का संदेश देता है।



## भाग - 4

कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्ध भूमि में उपदेश का दृश्य है। यह संदेश है निराशा के वातावरण में कर्तव्य को प्राथमिकता देने का, स्वतंत्र हुए भारत और सांप्रदायिक संघर्ष से जूझ रहे राज्य के द्वारा कौन से कर्तव्य किए जाने हैं।



## भाग-5

महात्मा बुद्ध का उपदेश देते हुए चित्र, सम्यक जीवन के लक्ष्य को शुद्धता और शांत मन से करने का संदेश है।



## भाग-6

भगवान महावीर का चित्र राज्य को पंचशील का मार्ग अपनाकर अपने कर्तव्यों का पालन करने का संदेश देता है।



## भाग-7

मौर्य कालीन चित्र महिला और पुरुष का चित्र है जो विचरण कर रहे हैं एवं भय और विकारों से मुक्त समाज के निर्माण का संदेश देता है।



## भाग - 8

कुबेर के महल से छलांग लगाते हुए चित्र बिना जोखिम के आर्थिक विकास नहीं हो सकता है, ऐसे साहस की प्रेरणा देता है।



## भाग - 9

महाराजा विक्रमादित्य का सिंहासन न्याय के मापदंड को दर्शाता है।



## भाग - 10

श्री नालन्दा मण्डलाश्रम या अधिक संघमा नालन्दा विश्वविद्यालय का चित्र और मोहर सभी के लिए उत्तम शैक्षिक वातावरण निर्माण का आदर्श व्यक्त करता है।



## भाग - 11

अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के साथ दो पुरुषों को दर्शाया गया है जो केन्द्र और राज्य के प्रतीक हैं तथा दोनों अपनी स्थिति से संप्रभुता और स्वायत्तता को दर्शाते हैं।



## भाग - 12

राज्य और स्वास्तिक का प्रतीक है। जहाँ नटराज राज्य के सभी अंगों के लय में होने पर समृद्धि का प्रतीक है वही स्वास्तिक का गलत चिन्ह लय में न होने के कारण अमंगल को दर्शाता है।



## भाग-13

धरती पर गंगा के चित्र को दर्शाया गया है जो कि राज्य को भगीरथ प्रयास अर्थात् अथक प्रयास करने का प्रेरणा देता है।



## भाग - 14

अकबर के दरबार का चित्र राजस्व प्राप्ति एवं सुप्रशासन के लक्ष्य को दर्शाता है।



## भाग - 15

शिवाजी और गुरुगोविन्द सिंह का चित्र है जो नागरिकों को अपने प्रतिनिधि किस प्रकार से चयनित किया जाए उसका संदेश देता है।



## भाग - 16

झांसी की रानी और टीपू सुल्तान का चित्र है जो उपनिवेशवाद के विरुद्ध स्व के जागृति का प्रतीक है।



## भाग - 17

महात्मा गांधी की दांडी यात्रा को दर्शाया गया है जो सविनय अवज्ञा के महत्त्व को दर्शाता है।



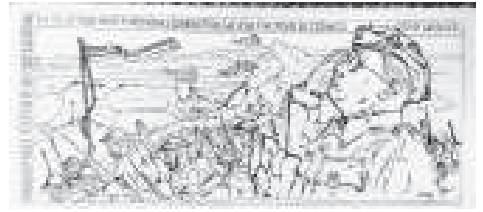
## भाग - 18

नोवा खली सांप्रदायिक संघर्ष के समय गांधी जी के सत्याग्रह का चित्र है जो संघर्ष के समय सत्याग्रह के महत्त्व को बताते हुए यह बताता है किस प्रकार हृदय परिवर्तन करके संघर्ष को रोका जा सकता है।



## भाग- 19

आजाद हिंद फौज और सुभाष चंद्र बोस जी के चित्र को दर्शाया



गया है जो कि क्रमशः स्वतंत्रता आंदोलन में क्रान्तिकारी विचारधारा व स्वतंत्रता में बोस जी की विचारधारा के महत्त्व को दर्शाता है।

## भाग - 20

हिमालय और आकाश का दृश्य संविधान की दृढ़ता और परिवर्तनशीलता को दर्शाता है।



## भाग - 21

दुर्गम क्षेत्र में ऊँट और लोगों को दर्शाया गया है जो भारत की प्राकृतिक विविधता को संरक्षित करने का संदेश देता है।



## भाग - 22

लहरों के बीच नाव का दृश्य शासकों की कड़ी चुनौतियों को पार करने के साहस को दर्शाता है।



आश्चर्यजनक रूप से भारतीय संविधान की व्याख्या करते हुये इन चित्रों का सन्दर्भ नहीं लिए जाता जबकि संविधान निर्माताओं ने इन चित्रों को संविधान में सम्मिलित करके अपना आशय इंगित कर दिया था इसलिए चित्रों का उसी प्रकार संविधान की व्याख्या में उपयोग किया जाना चाहिए जिस प्रकार संविधान के प्रस्तावना का किया जाता है। जिससे संविधान निर्माताओं की आकाँक्षा को और लोकचेतना को संवैधानिक व्याख्या में मान्यता प्राप्त हो।

- असि. प्रोफेसर, विधि विभाग,  
वी.एस.एस.डी. कालेज, कानपुर

# India's Soft Power and Leader as a Global

□ Milan

## Abstract

*This Research paper is about what soft diplomacy is and how; it's work. This research paper will describe how India is growing and making her status in front of super powers. India has used its cultural diplomacy wealth, including the diasporas, yoga, Buddhism, and economic support, to achieve diplomatic victories and advance national objectives. This study illustrates India's soft diplomacy working according to its national interests and making her status as global leader. How sports, yoga, culture, rituals and globalization playing important role in India's soft diplomacy will be studied in this research paper. The Ministry of External Affairs of India will support a soft power matrix to evaluate soft power outreach success. How India's soft diplomacy working in past, present and future would be studied in this study. Soft Power cannot be disregarded due to its significance and influence. Using 'soft power' has the benefit of being cost-free. Through the application of 'soft power', a nation achieves its objectives without the need for concessions, employing a gentle approach. The theme of the 21<sup>st</sup> century is the development of technology that allows people to access the Internet without sitting in front of a computer. Social networking sites such as Facebook, Instagram, Twitter linked in and Instagram have helped shape the digital age. Diplomatic strategies are different in the digital age. Diplomacy has evolved into network diplomacy, also known as digital diplomacy and electronic diplomacy. This study shows the relationship between the Internet and diplomacy. Historical, Descriptive and Analytical method will be used in this research paper.*

**Key Words :** Globalization, Culture, Education, Diplomacy, Soft Power, Digitalization, Rituals, Human Environment, etc.

## Introduction:

Definition of Diplomacy is defined as the art and practice of discussion and negotiation between countries, groups or people through different measures to influence decisions, events and actions in the world. Its purpose is to promote peace among nations and avoid war or state

violence. In ancient times, diplomacy was the act of establishing (usually bilateral) relations between governments. By the 20<sup>th</sup> century, the European diplomatic tradition had spread all over the world and the meaning of the work had expanded to include conferences, international meetings, sharing together, international efforts of supranational and sub-national organizations, illegal activities of non-governmental organizations and international activities. Workers. Diplomatic Function Diplomacy is done by diplomats. All diplomatic work is done by them.

Today, soft power is considered an important part of the growth and overall development of the country. India has achieved diplomatic victories and lofty goals in the country by using India's unique culture such as diasporas, yoga, Buddhism and financial support. India needs to understand the importance of leadership and cooperation. More effort study let culture influence the rest of the world India thinks of freedom, non-violence, and freedom with universal leadership that is mostly non-threatening. Indians are known for their values of respect, and harmony, of which Ashoka, Buddha and Gandhi are important leaders.

75 years have passed since independence. Few Indians alive today know how uncertain our future was in 1948. India has made significant progress since 1948. Now, seventy five years later, that question from has been replaced by a more hopeful one: "Is India becoming a world leader?" The best thing about using "soft power" is that it "doesn't cost anything." The countries using "soft power" do not need to give up: they are just doing what they want, little by little. We thank the administrators of Article and the authors of the constitution. Article does not leave any gaps in the Constitution. International politics is a big game that requires bold thinking and courage from all countries. Diplomacy is the means by which countries around the world carry out their peacekeeping duties. The main duty of a customs agent is to protect the external interests of their country by blocking. This includes both promoting politics, business, culture or science, but also participating in international agreements aimed at protecting human rights or resolving conflicts. The father of diplomacy is generally considered to

be Kautilya, also known as Chanakya; is an ancient Indian philosopher, economist and political scientist, and is believed to have written the ancient text Arthashastra, which responds to India's state, economic policy and military doctrine.

Diplomacy occurs on both sides and in many contexts. Bilateral diplomacy refers to exchanges between two countries. Multilateral diplomacy involves contact between more than one country. In general, diplomacy involves representatives of various groups discussing issues such as conflict, economy, environment, technology or security. The procedure for resolving disputes between two or more countries with peace and discussions or cooperation can be mean soft diplomacy.

**The functions of diplomacy** is to manage international relations through dialogue and negotiation and to promote good relations between countries. It provides a cooperation agreement in which the best interests of all parties are considered. It evolved from a system of secret negotiations and intrigues in absolute monarchy to a transparent democracy and a dizzying order of domestic and foreign politics. In today's diplomacy, international organizations and non-governmental organizations are also included in the scope of the government. Today, successful international development and cross-border integration are the most important elements for optimal work. The functions of diplomacy include representing and negotiating between states, gathering information, and improving relations between states. The roles of diplomacy and how to do it are as follows;

**1) Negotiation and State Representation:** The most important role of diplomacy is negotiation and representation in the state. Represent the interests of the country and its leadership to achieve the goal and prevent conflicts, or negotiate to highlight areas of agreement and disagreement between the two parties. Peace is the main goal of politics. Finding countries' interests is also an important part of diplomacy to achieve successful negotiations.

**2) Data collection and evaluation:** Collecting data through all legal means to determine and understand the purpose of adopting the country's foreign policy is an important role of diplomacy. When the document is sent back to the country, the Ministry of Foreign Affairs examines the document and decides what should be done in foreign policy. Diplomatic forces are anxious to obtain information. Political leaders will then decide what is the best course of action for their country.

**3) Economic:** Political and cultural relations another important aspect of diplomacy is to establish economic, political and cultural relations between two countries and to promote good relations between countries. For example, after

World War II, the United States and Great Britain focused their foreign policies on religion.

**4) Promoting compliance with international law:** Diplomacy plays an important role in maintaining or promoting compliance with international law. The ambassador's mission is to promote national interests and maintain good relations with foreign countries.

Modern soft diplomacy is open and transparent diplomacy compared to traditional diplomacy which is secretive and secretive. With the change of time, diplomacy has transformed into different shapes and types. There are many types of achievements, some of them are: Power Diplomacy Military Power District Education District School District Education District Education Diplomacy.

**1) People to People diplomacy.** It is a type of diplomacy that refers to relations with foreign countries. Citizens build relationships and influence public opinion. It is a form of soft power that promotes connection and understanding between countries through cultural, economic and educational exchanges. Public diplomacy may also include reaching out to immigrants through social media and other forms of communication.

**2) Economic diplomacy** Economic diplomacy is the use of all economic resources of a country to support its national interests. It should encourage the country's interest in foreign countries through the use of financial instruments such as trade, investment, finance and development assistance. Economic diplomacy is used to promote international cooperation, job creation and economic prosperity. It can also be used to resolve conflicts and improve relations between countries. Also read: Importance of Diplomacy in Business in 2023.

**3) Cultural Diplomacy** Cultural diplomacy is the sharing of ideas, art, knowledge and information and other cultural aspects of the country and its inhabitants to improve relations. The purpose of the customs administration is to support the political and economic goals of the public by helping foreign citizens understand their principles and institutions. The purpose of cultural diplomacy is to reveal the character of the country and thus use power. Although often overlooked, cultural leadership can be very useful in achieving national security goals.

**4) Science Diplomacy** Science diplomacy is the use of science and technology to promote international cooperation and build bridges between countries. It involves applying scientific research, technology and expertise to solve global problems such as food security, climate change and epidemics. Additionally, science diplomacy promotes international scientific cooperation and exchange of information and resources.

**5) Internet Diplomacy** Internet diplomacy refers to the use of electronic communications and technology to promote diplomacy and foreign relations. It involves the use of technological tools such as social media, websites, and other online platforms to conduct discussions, build connections, and enable international collaboration. Global issues such as data privacy, cyber security and digital infrastructure can be addressed through cyber diplomacy. Please read about the importance of cyber diplomacy in the 21<sup>st</sup> century.

**6) Energy Diplomacy** Energy diplomacy is the use of diplomatic relations to promote and protect national interests in the electronics sector. He participated both in the discussion of international agreements on energy-related issues and in the administration of national laws. Promoting energy security, reducing energy poverty and promoting sustainable energy development are all part of energy diplomacy.

**7) Regional Diplomacy:** is the practice of relations between countries in a particular region. Regional diplomacy now plays an important role in world affairs. Due to freedom and change in the world, all countries have understood the importance and value of the relationship between the environment.

**8) Educational diplomacy** Educational diplomacy is the use of education to improve international relations and enhance cultural understanding. It involves the international exchange of teachers, students and ideas, as well as the creation of courses that promote cooperation and understanding between countries. Using educational tools to help achieve international development goals is an important part of political action.

**9) Health Diplomacy** Health diplomacy uses methods to solve global health problems such as epidemics, access to health care and healthy balance. International collaboration to improve global health outcomes is also an important part of health diplomacy. For example, during the Covid-19 period, countries worked together to develop vaccines to treat Covid, and countries sent vaccines to each other to combat the global epidemic.

**10) Sports Diplomacy** Sports diplomacy is to promote foreign relations, peace and understanding through sports. It involves the use of sport to promote communication and cooperation while transcending differences between countries, cultures and people. Sports diplomacy can promote environmental protection, gender equality, human rights and social and economic development. It can also be used to improve relations between countries and provide a forum to discuss international issues.

**Soft Diplomacy is important** for maintain peace and cooperation in international relations - States use soft

diplomacy to improve their position in international relations. The country aims to determine interests and points of contention through discussion and negotiation. In international relations, in most cases, countries agree on behaviour and principles that are deemed “appropriate” and beneficial to both parties after discussion and articulation. This works by selling power because these ideas are not controlled. Wisdom can be gained through political activity. Diplomacy can be used to improve political, economic and cultural relations. This cooperation provides important points in terms of knowing the national interests of each country.

Finally, soft diplomacy seeks to promote international law that affects state behaviour and international cooperation. The law provides guidelines for maintaining control of public relations, contract negotiations, and government communications. In summary, diplomacy can be seen as a means of solving problems in international relations and can provide central cooperation for members participating in discussions. Purpose of India’s foreign policy is to maintenance of international peace and security, justice and relations between nations. Promoting respect for international law and treaty obligations within the unity of humanity. advocates a peaceful, political solution to international problems. The defence and security of India is not compromised. Protection of the unity and integrity of the homeland. Protects the interests of Indian citizens in other countries. This task is carried out by the Indian Embassy there. To establish trade and business relations with other countries for the economic development of India.

### **India, as Global Leader:**

The end of the 19<sup>th</sup> century texts such as the Bhagavad Gita were increasingly recognized as important spiritual sources by European and American scholars around the world. While the term “soft power” is new, the concept itself is not. This is the bread and butter of the Daily Constitution. Kurantsk defines soft diplomacy as “everything other than security and military, not human culture and public test diplomacy”; but there are also many coercive economic and political tools. Cooperation in various activities such as aid and investment”. Kautilya discusses the four Upayas or musical instruments in his Arthashastra. These are Saam (related to friendship), Daan (giving gifts), Bhed (dividing groups) and Dand (using the power of ). Among these, the first two choices are peace and motivation India earned the name “Golden Bird” 100 years ago due to its unlimited wealth and risk in trade and commerce.

The two largest economies in the world are India and China, at that time more than 50% of world trade came from these two countries. In fact, India was the richest country in the world in the 17<sup>th</sup> century. About 27% of global gross

domestic product comes from India, and India alone produces about a third of global GDP. Then the British came and we had over 100 years We were under British rule for 200 years. However, when India gained independence in 1947, although it was not the largest democracy in the world, it was the first democracy built on the foundations of independence. In fact, in many respects, present-day India, the leader in world history, has the greatest influence on international politics with its relentless struggle for freedom.

In the 20<sup>th</sup> century, the whole world believed that the USA, Russia, Japan and some European countries were the leaders of the world. There is a saying that time changes everything. It may be a cliché, but it's an apt description of what's been happening on the world's front lines over the last few years. **First** of all, we are embarking on a new era. The period when Western man dominated world history ends after years. **Secondly**, we always see China and India returning as the largest economies in the world. This is because, according to Maddison from January to 1820, China and India were the largest economies in the world. **Third**, the world is getting smaller. Globalization, as recognized by Kofi Annan, has made our world a village. The great advances in science and technology and in business and social life in many societies of the world, especially in Asia. The twentieth century will be very different from the ninth and twentieth century's. It seems life and time have come full circle. India is places behind America, China, Japan and Germany. India was the 11<sup>th</sup> largest economy and the UK was the 5<sup>th</sup> largest economy just ten years ago. However, for the purpose of this study, the focus is on various laws enacted by the government of India under the authority to sell Section.

India has announced different policies such as "Look East Policy", "Move East Policy", "Western Linkage Policy", "Connecting Central Asia Policy" and strengthening relations with Africa. This shows that India has launched a concerted effort to get resources (including Indians abroad) to create a strong Soft Chapter that can be useful in this new world. Consequences of foreign policy Pravasi Celebrate Mahatma Gandhi's return to India from South Africa, every January 9 from 2003 to , PravasiBharatiya Divas were celebrated to celebrate the contribution of the Indian diaspora to development. Of India. PravasiBharatiya Divas Conference aims to bring together powerful members of diasporas to celebrate India's growth and the role of Indians abroad in this growth.

Demonstration of foreign policy influence applies particularly to India. India is fortunate to have all the major religions in the world. Four are indigenous religions: Hinduism, Buddhism, Jainism and Sikhism. Apart from Kumbh, Varanasi, Badrinath, Puri, Kedarnath, Vaishnavi,

Amarnath, Tirupati, Sabarimala, Thanjavur, Madurai etc. Other religious places such as attract a large number of tourists. India is also a popular destination for tourists. Throughout the year, tourists from ASEAN countries, Japan, Sri Lanka and Myanmar go to Bodh Gaya and Nalanda in the latest flow. We also have historical churches and mosques dating back to AD. Some dargs of Sufi saints like Moinuddin Chishti and Nizamuddin Aulia attract million's devotees. Power is not only "the ability or authority to control people or anything", but more importantly, to have influence over others and "the ability to exert or create an effect".

Soft power is not the ability to coerce countries, but to change or simply "get others what you want" by showing the values and standards you demonstrate. Article It can be said that the superiority of one country over another largely depends on its culture, economy, politics, foreign policy, lifestyle, strong schools and law. In the first decade of the twentieth century there was great clamour for the rise of India as a superpower. These demands of the twenty-first century, like the Indian Century, are not based on the economic growth and military growth that the country has seen after the 1991 liberalization.

The different products of India's sales force are numerous, such as cinema and Bollywood, Yoga, Ayurveda, Political Diversity, Religious Diversity and openness to world influence. Section The successful export of cultural products such as Bollywood around the world has helped raise awareness of Indian culture and change existing perceptions. Other selling points, such as long-lived governing institutions and many political structures, also drive interest in the growth of economic and military power has increased India's confidence in using its soft power. The rapid development of digital geopolitics will change the world. With the modern revolution, modern conflicts such as disinformation, cyber conflict, cyber war and war have also developed. Protection of satellites and undersea cables, semiconductor production and unlimited data will be the main topics of digital geopolitics. Therefore, digital diplomacy will be used to create and maintain peace between countries and the world. Thus, based on the above discussion, it can be proven that India has become a global leader in the 21<sup>st</sup> century due to its overall development.

**The Purpose of soft diplomacy** is to make the country better without using force or leading to war. Countries utilize diplomacy to establish global positions. Through diplomacy, states protect their freedom, justice, security, and freedom of movement around the world. Through discussion and negotiation, countries aim to identify common interests and points of contention. In international relations, in most cases, countries agree on behaviour and



principles that are deemed “appropriate” and beneficial to both parties after discussion and articulation. Political activity promotes international law, which affects state behaviour and cooperation in international law. The law provides guidelines for the management of public relations, contract negotiations, and government communications. In summary, diplomacy can be seen as a means of solving problems in international relations and can provide central cooperation for members participating in discussions. The Future of Diplomacy The world has changed significantly due to the digital revolution. The Internet and computer technology make it possible to send text messages and quickly access new information in seconds.

### **The Future of Soft Diplomacy**

The world has changed significantly due to the digital revolution. The Internet and computer technology make it possible to send text messages and quickly access new information in seconds. The theme of the 21st century is the development of technology that allows people to access the Internet without sitting in front of a computer. Social networking sites such as Facebook, Instagram, Twitter, linked in have helped shape the digital age. Diplomatic strategies are different in the digital age. Diplomacy has evolved into network diplomacy, also known as digital diplomacy and electronic diplomacy. This study shows the relationship between the Internet and diplomacy. The rapid development of digital geopolitics will change the world. With the modern revolution, modern conflicts such as disinformation, cyber conflict, cyber war and war have also developed. Protection of satellites and undersea cables, semiconductor production and unlimited data will be the main topics of digital geopolitics. Therefore, digital diplomacy will be used to create and maintain peace between countries and the world. Diplomacy has evolved into network diplomacy, also known as digital diplomacy and electronic diplomacy.

The rapid development of digital geopolitics will change the world. With the modern revolution, modern conflicts such as disinformation, cyber conflict, cyber warfare and war have also developed. Protection of satellites and undersea cables, production of semiconductors and unlimited information will be the main topics of digital geopolitics. Therefore, digital diplomacy will be used to create and maintain peace between

the country and the world. The purpose of diplomacy is to manage international relations through dialogue and negotiation and to promote good relations between countries. It provides a cooperation agreement in which the best interests of all parties are considered.

### **Conclusion**

Traditionally, negotiating to end a dispute or bringing two adversaries into a meeting to resolve a dispute has been seen as the essence of diplomacy. He said it was the alternative to war, which was the failure of diplomacy. There are many forms of politics and leadership that can prevent war and violence and create peace. The purpose of diplomacy is to make the country better without using force or leading to war. Through diplomacy, states protect their freedom, justice, security, and freedom of movement around the world.

### **References**

- Dutta, P. K. (2020), India’s NASA: Why privatisation of ISRO is the right call, <https://www.indiatoday.in/news-analysis/story/india-s-nasa-why-privatisation-of-isro-is-the-right-call-1692576-2020-06-25>.
- Dubey, Ajay (ed). (2003) Indian Diaspora: Global Identity. Delhi: Kalinga Publications.
- Francis, A. (2022), India: Flowing Soft Power while Remaining Neutral, <https://brandfinance.com/insight/2022-gsps-india>.
- Zubair, A. (2012), ‘Bollywood’s Expanding Reach’, BBC, 2012.
- Jaishankar, S, (2020), The India Way, Strategies for an uncertain world, Harper Collins India.
- Maddison, A. (2001), The World Economy: A Millennium Perspective, Development Centre Of The Organisation For Economic Co- Operation And Development.
- MEA (2021- 2022), Annual Report.
- Nye. J.S. (1990). Bound to Lead: Changing Nature of American Power. New York: Basic Book.
- PIB (2021), <https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1823347>.
- The Hindu (2022), (<https://www.thehindu.com/news/national/cowin-platform-know-how-now-available-free-of-cost-to-any-country/article65674020>).

- Political Science, Baba Mastnath University,  
Haryana  
Email ID: millu6226@gmail.com

# Resurgent Bharat as a Cultural Powerhouse on the Global Canvas

□ Dr. Smita Deshmukh

## ABSTRACT

*Resurgent Bharat is the reflection of Nation's history, ethos and deep-rooted identity. Within the diverse fabric of languages and cultures of the globe, Bharat holds a significant place. Bharat is not just a word but the total spirit of country. No other culture with an inclusive philosophy continues to exist despite many challenges and continues to believe in Sarve Bhavantu Sukhina (May all be happy) & Vasudaiva Kutumbakam (The whole world as a family). Bhartiyyata is the essence of Bharat. Bharatiyyata every Hindu, Muslim, Christian, Jew and Parsi is Bhartiya first and Hindu, Muslim, Christian, Jew or Parsi second. He may practice difference philosophies, worship Gods with different names but accepts all religion as True and leading to the One Supreme Goal. That is the essence of the Bharatiyyata. These patterns of thought and behaviour of people includes values, beliefs, rules of conduct, and patterns of social, political and economic structures are passed on from one generation to the next by formal as well as informal processes. It is the only philosophy which encapsulates and assimilates all thoughts, ideas into one and only this philosophy can make the world rid of extremism & internal conflicts. Resurgent Bharat will lead the world in this philosophy as it has always done and ensure a strong, powerful united nation as a cultural powerhouse. Multidimensional culture of Bharat is the oldest of all the cultures of the world. In spite of facing many ups and downs multi-coloured, multi lingual culture is shining with all it's glory and splendour. On the basis of the culture, we can experience the prosperity of its past and present. This paper will focus on power of the Indian culture which is the soul of Bharat on global canvas.*

**Keywords:** Bharat, cultural powerhouse, global canvas Bhartiyyata, Bhartiyyatwa.

## Introduction

India that is Bharat has always been a country of attraction. A multi-cultural, multi-faith, pluralistic Bharat is the essence of our existence. Since millennia it has attracted the countries of both East and West towards it. The attraction of India originates from its spiritual, artistic, learning centres,

religious ideas and culture. It is imperative to look into the past to understand the influence of India on to the world towards the journey of Global Leadership. The most important element is India's long history, culture, and civilisation. These have attracted both intellectuals and common folk from across the globe to India.

Indian philosophy and culture try to achieve an innate harmony and order and this is extended to the entire cosmos. Indian culture assumes that natural cosmic order inherent in nature is the foundation of moral and social order. Inner harmony is supposed to be the foundation of outer harmony. External order and beauty will naturally follow from inner harmony. Indian culture balances and seeks to synthesize the material and the spiritual, as aptly illustrated by the concept of *purushartha*.

The framework of Indian culture places human beings within a conception of the universe as a divine creation. It is not anthropo-centric (human-centric) only and considers all elements of creation, both living and non-living, as manifestations of the divine. Therefore, it respects God's design and promotes the ideal of co-existence. This vision thus, synthesizes human beings, nature and God into one integral whole. This is reflected in the idea of *satyam-shivam-sundaram*.

Culture consists of the ways in which we think and act as members of a society. Thus, all the achievements of group life are collectively called culture. Culture is the product of such an organization and expresses itself through language and art, philosophy and religion. It also expresses itself through social habits, customs, economic organisations and political institutions. Indian culture is an invaluable possession of our society.

Bharatiya culture is the oldest of all the cultures of the world. In spite of facing many ups and downs Indian culture is shining with all its glory and splendour. Culture is the soul of nation. On the basis of culture, we can experience the prosperity of its past and present. Culture is collection of values of human life, which establishes it specifically and ideally separate from other groups. This heritage exists at various levels. Humanity as a whole has inherited a culture

which may be called human heritage. A nation also inherits a culture which may be termed as national cultural heritage. Cultural heritage includes all those aspects or values of culture transmitted to human beings by their ancestors from generation to generation.

### **Origins Of 'Bharat'**

**Ancient origins:** The name 'Bharat' holds an ancient legacy, prevalent in Indian scriptures and texts. In the Vishnu Purana, it is described as the region north of the ocean and south of the snowy mountains, inhabited by the descendants of Bharat. This geographic entity is part of the larger entity known as Jambudweepa.

**The legendary Bharata:** Often associated with King Bharata, a legendary emperor and the son of Dushyant and Shakuntala, this name is intricately woven into the fabric of the 'Mahabharata,' chronicling the epic war involving his descendants.

In the Vedas, 'Bharata' represents a tribe that engaged in a fierce conflict with the Puru tribe, from which the Bharata tribe emerged, giving birth to the Kuru dynasty. King Bharata, a legendary emperor and the son of Dushyant and Shakuntala.

**Etymological interpretations:** The term 'Bharat' can be dissected etymologically in multiple ways. It may stem from 'Bhr,' denoting 'to maintain or bear,' or 'Bha,' signifying 'light.' The popular interpretation associates 'Bharata' with the pursuit of light, defining it as 'the one indulging in light' or 'the shining one.' A cultural and linguistic emblem: While India, or specific regions of the subcontinent, have been known by various names like 'Aryavrata' and ancient 'Meluha', 'Bharat' has emerged as the most widely recognised name for the Indian subcontinent.

It holds a profound place in India's cultural and linguistic identity and permeates literature, poetry, and various cultural expressions, invoking a deep sense of heritage and tradition.

### **Influential foundation of ancient cultural heritage to the transformation of resurgent Bharat on global canvas**

This country has been built on such foundation of ancient cultural heritage, where we were told of only one mantra during Vedic period...which we have learnt, we have memorized – "sanghachchhdhvam samvadadhvam sam wo manansi jaanataam"

-(संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम इ न संस्कृत) we walk together, we move together, we think together, we resolve together and together we take this country forward.

'Make in India' and 'Vocal for local' revived our Bhartiya, sparking a nationwide popular participation-oriented movement. We championed our MSMEs, inspiring youth entrepreneurship, and leveraging India's unique skills and abundant resources. This philosophy reshaped India as the world's third-largest startup ecosystem.

The digital revolution, represented by 'Digital India' and the drive towards a 'cashless' economy, underscores the government's collaborative partnership with the common citizen, promoting widespread acceptance of digital payments. India stands today as one of the world's largest digital markets.

Since 2014, the anti-corruption crusade has surged as a nationwide movement, recouping over Rs 2.73 lakh crore from 2015 to 2022 through JAM (Jan Dhan, Aadhaar, and mobile phones), exposing counterfeit beneficiaries and sealing delivery system leakages that were rampant before 2014.

Amidst the COVID-19 pandemic, India's solidarity and Jan Bhagidaari shone once again. Government foresight led the nation to swiftly implement preventive measures. COVID warriors emerged, hand in hand with the Government, stabilizing the ship. Subsequently, rapid vaccine production showcased an empowered India, capable of self-defence and simultaneously offering global support.

### **India's global stature and "Vasudhaiv Kutumbakam"**

India's G20 Presidency, supported by over a crore of its citizens, showcased "Rashtriya Ekta" in action. The summit affirmed India's global stature and "Vasudhaiv Kutumbakam" as the compass for reshaping global governance, ensuring inclusivity and people-centric leadership in the "People's G20." "Rashtriya Ekta Diwas" is not just a commemoration; it's a profound philosophy empowering people, and breaking free from outdated practices. It's democracy in action, akin to Bhartiya vision of grand unification of Maa Bharti's vast geo-cultural-political landscape. Responsible citizen of India should call to integrate every voice into governance mirrors this spirit. It's about national pride, uniting a diverse nation, echoing dream of a united resurgent Bharat as a cultural powerhouse. Each citizen's participation shapes our destiny, nurturing inclusivity, diversity, and collective strength.

### **The cultural power dynamics of nation-states around the world**

The cultural power dynamics of nation-states around the world have undergone a sea change in the twenty-first century with regard to foreign policy and other governance aspects. Today the world is interconnected and interdependent on each other for their growth and development. Hence, the society have no choice but to spend heavily in their soft power matrices as well as tradition and culture. Within this shifting global landscape, Bharat has the opportunity to put in place a new framework for its own and that of developing countries around the world. As a rising cultural power, this must our endeavour in the coming decades.

The basic principles of Bhartiya are Self-actualization, understanding multi-cultural aspect, strong idea of divinity, unity in diversity, mutual respect, sense of being together, to be a yogi and develop a deep vision of expanded broadness of consciousness. The Mind's capacity needs to be

realized which will lead to exploration of highest potential in humans, Savidyaya Vimulataye. One has to have intense self-introspection at all levels. The Education should also aim at developing idea of national education and to develop deeper cultural values. The role of nature was beautifully suggested as to how staying close to nature adds to develop the cognitive abilities of mind towards the path of liberating the self from endless limitations. To enhance the Aatman Vridhi, inner power of the mind silence was identified as a tool as every sound emerges from silence. The disciple should constantly aim to achieve highest gain which is acquiring Knowledge and openness to achieve the state of brahman should be the aim of humankind.

### **Colonialism, Independence, and Identity**

Colonial conundrum: During British colonial rule, from approximately 1757 to 1947, 'India' became the official name for the Indian subcontinent. This nomenclature was linked to the Indus River, marking the western boundary of British India.

Independence and identity: With India's independence in 1947 came the question of its official name. The Constitution's drafting committee debated between 'Bharat,' 'India,' and 'Hindustan.' While some preferred the historical name 'Bharat,' others leaned towards 'India.'

The Constitutional compromise: Recognising India's linguistic and cultural diversity, the Constitution resolved the dilemma. Article 1 of the Indian Constitution declared, "India, that is Bharat, shall be a Union of States." This compromise acknowledged the historical and cultural significance of both names. Jawaharlal Nehru signed the Indian Constitution in 1950.

Language dynamics: Designating Hindi and English as the official languages cemented the coexistence of 'Bharat' and 'India.' The choice between these names depends on the context and language of communication.

In essence, the journey from 'Bharat' to 'India' unravels a fascinating tale interwoven with history, culture, and the quest for a national identity.

### **Bhartiya culture on Global canvas**

The Republic of India is now considered as one of the emerging with Bhartiya culture on Global canvas. We have advantages in the field of agriculture, ground breaking technology in space, a relatively young and dynamic population, good foreign relations, robust democracy and competent armed forces. We have a long way to go, despite all that we have achieved since Independence. However, we as citizens of India, are positive and confident that India has all required resources— natural, human, technological and intellectual to become *vishwaguru*.

Today, soft power is seen as the key component of a country's overall growth and development. It has the power to strengthen a community's commitment, and resolve and

provide a country more control over its international affairs.

In this 2024 year Bharat has achieved diplomatic victories and advanced the country's national objectives by leveraging India's unique cultural diplomacy wealth, such as the diaspora, yoga, Chandrayan, and economic support. India's Ministry of External Affairs (MEA) has decided to support a "soft power matrix" to assess the success of the country's soft power outreach.

### **Global Leadership of Bharatiya**

India is well aware of the significance of cultural engagement and needs to make a few more efforts to make its culture appealing to the rest of the world. India envisions a liberal, nonviolent, relatively pluralistic democracy with non-threatening global leadership. Soft power assets generated by luminaries in the arts, literature, music, dance, the software industry, Ayurveda, and so on, highlight India's appeal to the world's population. Indians are known for their core values of respect, harmony, and fraternity, with Ashoka, Buddha, and Gandhi serving as primary leaders.

India celebrates 75 years of independence. It has been a phenomenal 75 years since Independence. Few Indians now alive know how uncertain our future looked in 1948. question then being asked everywhere was 'Will India Survive?' India seems to have travelled a long way since 1948. Now, seventy-five years down the road, that fearful query has been replaced by a far more hopeful one, namely, 'what will be status of Bharat on Global level?' 'Will India Become a Global Leader?'

The relevance, importance, and impact of Bharatiya culture is impossible to ignore. The great advantage of using 'power of Bharatiya culture' is that it 'does not cost anything'.

Global power politics is a serious game requiring countries which think and act big. Given its many attributes, India belongs to this group which has been trying to increase its ability to get things done. One can experience various policies of Government of India to strengthen its global position, mainly using the soft power.

The oxford dictionary meaning of a Leader (*noun*) is a person who leads a group of people, especially the head of a country, an organization, etc. The definition of a global leader is a person in control of a group, country, etc. who is recognized as being important in all parts of the world.

Needless to say, that a global leader possesses certain characteristics, which can make their nation a super power. Similarly, the world's most powerful countries also are the ones that consistently dominate the policymakers and shape global economic patterns. 'Influential powers' are important to the well-being and security of other countries, which means countries have a stake in their welfare

### **Vasudaiva Kutumbakam is the soul of Indian culture**

Adaptability has a great contribution in making Indian culture immortal. Adaptability is the process of changing

according to time, place and period. It's an essential element of longevity of any culture. Indian culture has a unique property of adjustment, as a result of which, it is maintained till today. Indian family, caste, religion and institutions have changed themselves with time. Due to adaptability and co-ordination of Indian culture, it's continuity, utility and activity is still present. Dr. Radha Krishnan, in his book, 'Indian culture: Some Thoughts', while describing the adaptability of Indian culture has said all people whether black or white, Hindus or Muslims, Christians or Jews are brothers and our country is the entire universe. We should have devotion for those things, which are beyond the limits of knowledge and regarding which, it's difficult to say anything. Our hope towards mankind was based on that respect and devotion, which people had towards other's views. There should be no efforts on imposing our thoughts on others.

Receptivity is an important characteristic of Indian culture. Indian culture has always accepted the good of the invading cultures. Indian culture is like an ocean, in which many rivers come and meet. In the same way all castes succumbed to the Indian culture and very rapidly they dissolved in the *Hindutva*. Indian culture has always adjusted with other cultures it's ability to maintain unity amongst the diversities of all is the best. The reliability, which developed in this culture due to this receptivity, is a boon for this world and is appreciated by all. We have always adopted the properties of various cultures. *Vasudaiva Kutumbakam* is the soul of Indian culture. Indian culture has always answered and activated itself by receiving and adjusting with the elements of foreign cultures. Indian culture has received the elements of Muslim cultures and has never hesitated in accepting the useful things of foreign culture. Therefore, it's continuity, utility and activity are still there today.

### **Importance of Culture in Human life**

Culture is closely linked with life. It is not an add-on, an ornament that we as human beings can use. It is not merely a touch of colour. It is what makes us human. Without culture, there would be no humans. Culture is made up of traditions, beliefs, way of life, from the most spiritual to the most material. It gives us meaning, a way of leading our lives. Human beings are creators of culture and, at the same time, culture is what makes us human. A fundamental element of culture is the issue of religious belief and its symbolic expression. We must value religious identity and be aware of current efforts to make progress in terms of interfaith dialogue, which is actually an intercultural dialogue. As the world is becoming more and more global and we coexist on a more global level we can't just think there's only one right way of living or that any one is valid. The need for coexistence makes the coexistence of cultures and beliefs necessary. In order to not make such mistakes, the best thing we can do is get to know other cultures, while also getting to know our

own. How can we dialogue with other cultures, if we don't really know what our own culture is? The three eternal and universal values of Truth, Beauty and Goodness are closely linked with culture. It is culture that brings us closer to truth through philosophy and religion; it brings beauty in our lives through the Arts and makes us aesthetic beings; and it is culture that makes us ethical beings by bringing us closer to other human beings and teaching us the values of love, tolerance and peace.

### **Bharatiya culture is both unity in diversity as well as diversity in unity**

Indian culture is one of the most ancient cultures of the world. The ancient cultures of Egypt, Greece, Rome, etc. were destroyed with time and only their remnants are left. But Indian culture is alive till today. Its fundamental principles are the same, as were in the ancient time. One can see village panchayats, caste systems and joint family system. The teachings of Buddha, Mahavira, and Lord Krishna are alive till today also and are source of inspiration. The values of spirituality, praying nature, faith in karma and reincarnation, non-violence, truth, non-stealing, Chastity, Non-Acquisitiveness, etc. inspire people of this nation, today also. Material development and materials come under civilization while Art of Living, customs, traditions come under culture. Material development is possible to a limit. This is the reason, that the civilizations got destroyed while Indian culture is present till today because the basis of development was spirituality and not materialism. Thus, Indian culture can be called an ancient culture, whose past is alive even in the present. The reminiscent of the stone-age found in Pallavaram, Chingalpet, Vellore, Tinnivalli near Madras, in the valley of river Sohan, in Pindhighev area in West Punjab, in Rehand area of Mirzapur in Uttar Pradesh, in Narmada Valley in Madhya Pradesh, in Hoshangabad and Maheshwar, make it clear that India has been the land of development and developed civilization and culture of the pre-historical era, which was flourished around 3000 B.C. Thus, Indian culture is about 5000 years old.

Traditional Indian culture, in its overall thrust towards the spiritual, promotes moral values and the attitudes of generosity, simplicity and frugality. Some of the striking features of Indian culture that pervade its numerous castes, tribes, ethnic groups and religious groups and sects.

#### **Aspects of Indian culture**

Culture has been derived from Latin term 'Cult' or 'Cultus' meaning tilling or refining. Sanskriti' is derived from Sanskrit root 'Kri' meaning to do. Culture may be defined as the way an individual and especially a group live, think, feel and organize themselves, celebrate and share life. Culture has different characteristics. It can be acquired, lost or shared. It is cumulative. It is dynamic, diverse and gives us a range of permissible behaviour-pattern. It can change. Culture

includes both material and non-material components. In deeper sense it is culture that produces the kind of literature, music, dance, sculpture, architecture and various other art forms as well as the many organizations and structures that make the functioning of the society smooth and well-ordered. Culture provides us with ideas, ideals and values to lead a decent life. Self restraints in conduct, consideration for the feelings of others and for the rights of others, are the highest marks of culture. A cultural heritage means all the aspects or values of culture transmitted to human beings by their ancestors to the next generation. Architectural creations, monuments, material artifacts, the intellectual achievements, philosophy, pleasure of knowledge, scientific inventions and discoveries are parts of heritage.

**Art and Architecture:** Indian art is inspired by religion and centre around sacred themes. However, there is nothing ascetic or self-denying about it. The eternal diversity of life and nature and the human element are all reflected in Indian art forms. The art of architecture and sculpture was well developed during the Indus valley period. India has the largest collections of folk and tribal artifacts.

**Music:** The popular term for music throughout India is *Sangit*, which included dance as well as vocal instrumental music. The rhymes of the *Rigveda* and the *Samveda* are the earliest examples of words set to music. The oldest detailed exposition of Indian musical theory is found in *Natyashastra*, attributed to the sage Bharata who lived at the beginning of the Christian era. North Indian Hindustani classical music and South Indian Karnataka music are the two major forms of classical music in India.. Song and dance has always been a part of social gatherings and get-togethers in India. Fairs, marriages, festivals and other celebrations are not complete without them. Films, film songs and music have had an important role to play in the further popularisation of music among the masses in modern times

**Dance:** Classical Indian dance is a beautiful and significant symbol of the spiritual and artistic approach of the Indian mind. Traditional Indian scriptures contain many references to *nritya* (music) and *nata* (drama). Dance and music are present at every stage of domestic life in India. One classification divides Indian dancing into three aspects- *Natya*, *Nritya* and *Nritya*. *Natya* corresponds to drama. *Nritya* is interpretative dance performed to the words sung in a musical melody. On the other hand, *nritya* signifies pure dance, where the body movements do not express any mood (*bhava*) nor convey any meaning. There is a rich variety of classical and folk dances in India. *Kuchipudi* (Andhra Pradesh), *Odissi* (Odisha), *Kathakali* (Kerala), *Mohiniattam* (Kerala), *Bharatnatyam* (Tamil Nadu), *Manipuri* (Manipur), *Kathak* (Uttar Pradesh) and *Chhau* (Orissa, West Bengal and Jharkhand) are some of the most notable dance forms in India. Besides, India has a rich tradition of folklores, legends

and myths, which combine with songs and dances into composite art forms.

**Theatre:** While classical dance in India is linked to its 'divine origins', the origin of Indian theatre lies with the people. Bharat's *Natyashastra* is still the most complete guide to traditional Indian theatre. 'Modern Indian theatre' of recent times originated in three colonial cities— Kolkata, Mumbai and Chennai. It is strongly influenced by conventions and trends of European theatre. 'Traditional Indian theatre' includes distinct streams. This theatre remained confined to courts and temples and displayed a refined, carefully trained sensibility.

## Resurgent Bharat as a Cultural Powerhouse on the Global Canvas

An important characteristic of Bhartiya culture is tolerance differentiate from other nation across the globe. In Bharata, tolerance and liberalism is found for all religions, castes, communities, etc. Many foreign cultures invaded India and Indian society gave every culture the opportunity of prospering. Indian society accepted and respected Shaka, Huna, Muslim, Christian, Sikh, Jain, Buddhist cultures. The feeling of tolerance towards all religions is a wonderful characteristic of Indian society.

Rigveda says- "Truth is one, even then the Scholars describe it in various forms. In Gita, Lord Krishna says, "Those praying others are actually praying me." This thought is the extreme of tolerance. There is a peaceful coexistence of various religions in India and all have been touching each other – although this tradition has been badly affected by activities of converting religion by some religious organisations. All the religions existing in India are respected equally. Indian culture accepts the manifoldness of reality and assimilates plurality of viewpoints, behaviours, customs and institutions. It does not try to suppress diversity in favour of uniformity. The motto of Indian culture is both unity in diversity as well as diversity in unity.

It is believed that the nation, which has forgotten its culture, is not an alive nation. He used to tell the importance of Bhartiya cultural values. People who believe in material development can be intolerant. Those who believe in development of weapons can be unrelative. Those who consider harm done to others for their own welfare as forgivable can be liberal but the exceptional of Indian culture is that though it considers material as an essential thing but has not made it the centre of faith. Though it has used the power of weapons but has considered its welfare in it. It has considered harm done to others for its own welfare as unforgivable. The ultimate goal of life here is not luxury and desires but is sacrifice-penance and self-realisation.

- Principal, Shri Shivaji Education Society's  
Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya,  
Amravati, Maharashtra. 444603  
principalsmitadeshmukh@gmail.com

# Bharatiya, Soft Diplomacy and Power Building : Resurgent Bharat as a Global Icon

□ Dr. Gopal Chandra Pal

## ABSTRACT

*'Vasudhaiva Kutumbakam'* –this is the core message of Bharat; so, diplomacy of Bharat always Soft and Cultural diplomacy. The term 'DIPLOMACY' has long been a most important tool of international relations and leadership in the modern world-administration. Diplomacy is a part of culture; and Culture is flow of living, i.e. individual and/or community. Modern diplomacy is of two kinds–Soft and Hard. Soft and smart diplomacy assumes a special role in building state and international power. Although, all diplomacy is cultural oriented, soft diplomacy is often referred to as cultural or smart diplomacy. Soft Diplomacy can be course of action, based on the exchange of ideas, traditional values, humanity and other aspects of culture or identity, to international relationships, enhance socio-economical co-operation, promote national interests and beyond. In present times, it is extensively used within the international dynamics to facilitate economic and political relations between nation to nation. Bhartiya soft-power diplomacy can be traced back to the time when instead of war king Ashoka had sent his son Mahendra and daughter Sanghamitra to Singhal (Sri Lanka) to Spread Buddhism. Then (1893) Swami Vivekananda visited Chicago Parliament of Religion and spoke about Hinduism and Bharat, which attracted many foreigners who visited Bharat and learnt about the Bhartiya Culture and especially Sanskrit language and literature, his book on Raja Yoga influenced western countries to practice of YOGA, who come to Bharat and visited ashrams. India's main soft powers include Spiritualism, Yoga, Ayurveda, the world is shifting towards organic method of treatment which has its trace in Bharat. India's current success in soft diplomacy despite its limitations is the hosting of G-20 summit by Bharat in 2023. Bharat dose not fight by military, but helps the world to stop war. So, by soft diplomacy Bharat is fast moving towards becoming Vishwaguru (Global-Leader) today.

**Key-Words :** *Vasudhaiva-Kutumbakam, Cultural & Soft-Diplomacy, Spiritualism, Yoga, Meditation, Vishwa-guru.*

## 1. Introduction

Bharat is not only the name of a country; Bharat is the

name of a civilization and Bharatiya civilization is one of the oldest civilizations in the world. '*Vasudhaiva Kutumbakam*'<sup>1</sup> (The World is one Family) –this is the core message of Bharat; so, diplomacy of Bharat always Soft and Cultural diplomacy. The term 'DIPLOMACY' has long been a most important tool of international relations and leadership in the modern world-administration. Diplomacy is a part of culture; and Culture is flow of living, i.e. individual and/or community. Modern diplomacy is of two kinds–Soft and Hard. Soft and smart diplomacy assumes a special role in building state and international power. Although, all diplomacy is cultural oriented, soft diplomacy is often referred to as cultural or smart diplomacy. Soft Diplomacy can be course of action, based on the exchange of ideas, traditional values, humanity and other aspects of culture or identity, to international relationships, enhance socio-economic co-operation, promote national interests and beyond.

## 2. Bharatiya Culture and Diplomacy

Culture is the prevailing way of life of a nation. All the inventions of man are his culture. Cultural Diplomacy can be described as a course of action, based on the exchange of ideas, values, traditions, and other aspects of culture or identity, to strengthen relationships, enhance socio-cultural cooperation, promote national interests, and beyond. In present times, it is extensively used within the international dynamics to facilitate economic and political relations between nations. Cultural diplomacy is frequently regarded as a gentler form of diplomacy compared to conventional diplomatic approaches like economic sanctions, military alliances, or political negotiations. This is because cultural diplomacy emphasizes the promotion of mutual comprehension, which is perceived as a means to nurture enduring relationships and establish trust among nations.

## 3. Mythological Period

Soft diplomacy is also hinted at in mythological period of Bharat. Hanumaji's role in Ramayana is an example of soft diplomacy; but it failed. War become inevitable, due to rescue of Seeta. Sriram Chandra won, still did not occupy Sri Lanka; rather, he established peace in Lanka and returned with the

power of governance in the hands of the Lankans.

#### 4. Historical Period

Bharatiya soft-power diplomacy can be traced back to the time when instead of war king Ashoka, the last great Mauryan emperor, is one of the most iconic figures in Bharatiya history. Under his rule (268-232 BC) the Mauryan empire extended across almost the entirety of the Bharatiya subcontinent. Apart from his effective reign over his vast kingdom, Ashoka is well known for his renunciation of war, his development of the concept of dhamma/dharma, his patronage of Buddhism and his promotion of religious harmony. Ashoka was fully aware that there were countries and rulers bordering his own empire. According to the general principles of ancient Bharatiya political theory, these countries were considered enemy territories. Given the opportunity, they would have been prime targets for conquest either through diplomatic strategy or by military conquest, as seen in his Kalinga war. The post-Kalinga Ashoka, however, plots a different course. Ashoka had sent his son Mahendra and daughter Sanghamitra to Singhal (Sri Lanka) to spread Buddhism.

#### 5. Pre-Independent Period

11th Day of September, 1893 a young Hindu monk Swami Vivekananda from Bharat opened Parliament of the World's Religions, Chicago with an electrifying speech that brought the assembled representatives of the World's major faiths to their feet.

"Sisters and Brothers of America, It fills my heart with joy unspeakable to rise in response to the warm and cordial welcome which you have given us. I thank you in the name of the most ancient order of monks in the world; I thank you in the name of the mother of religions; and I thank you in the name of millions and millions of Hindu people of all classes and sects.

My thanks, also, to some of the speakers on this platform who, referring to the delegates from the orient, ... I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations of the earth. I am proud to tell you that we have gathered in our bosom the purest remnant of the Israelites, who came to Southern India and took refuge with us in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. I am proud to belong to the religion which has sheltered and is still fostering the remnant of the grand Zoroastrian nation. ..."<sup>2</sup>

This was the most successful diplomacy in pre-independence Bharat.

#### 6. Major Aspects of Cultural and Soft Diplomacy of Post-Independent Bharat:

**i) Yoga and Meditation Practice** – The global popularity of Yoga and recognized its effectiveness as a soft power tool. It recommended collaboration between the Ministry of AYUSH and the MEA to constitute a Yoga Certification Board (YCB). The Board would certify Bharatiya yogic practices and therapies. Yoga has become one of the most prominent Bharatiya cultural export and is being practiced widely all over the world. In 2014, the United Nations adopted the resolution proclaiming 21st Day of June as *International Yoga Day*, a few months after Prime Minister mooted the proposal in his UNGA address. Yoga Day has now become a global event and is being hailed as a major diplomatic and cultural success for Bharat.

**ii) Literature and Art** – Bharat has a long literary tradition, our ancient great epic poets Valmiki, Vedavyas, Kalidasa are World known and famous personalities, with works by renowned modern authors like R. N. Tagore and R. K. Narayan gaining international recognition. Bharatiya art forms, such as classical dances like as Bharatnatyam, Odissi, Kathakali, Kathak, Kuchipudi etc. and folkdance Chhau and folksong Baul (West Bengal) have also captivated global audiences.

**iii) Education and Language** – The popularity of Bharatiya institutions like the *Visva-Bharati*, *Indian Institutes of Technology* (IITs) and *Indian Institutes of Management* (IIMs) has led to an increase in foreign students seeking education in Bharat. Additionally, the widespread use of English as a global language has further enhanced Bharatiya soft power. Classical Sanskrit Language and Literature like as Ramayana, Mahabharata and Indian Philosophy is very interesting educational component to the modern world.

**iv) Tourism Promotion** – Tourism as a key indicator of a country's soft power capital. It observed the need to increase tourism offices abroad and the adoption of a country-specific approach for tourism promotion. Very recently the Hon'ble Prime Minister Narendra Modi promoted Lakshadweep as a World-class tourist destination. Ayodhya will soon become an International tourist spot centered on the Shree Ram Temple; also, we have the famous religious pilgrimage site of Buddha-Gaya at Bihar.

**v) Cuisine** – Bharatiya cuisine, known for its rich flavors and diverse regional dishes, has become increasingly popular Worldwide, with Bharatiya restaurants present in many countries of the modern world.

**vi) Bharatiya Cinema** – Bharatiya Cinema, particularly Bollywood, has a massive international following. Hindi films of Bollywood have been successful in reaching audiences in various countries, contributing to cross-cultural exchanges



and increasing Bharatiya soft power reach.

**vii) Digital Media** – Bharat’s growing influence in the digital media space, including social media and entertainment platforms, has enabled the dissemination of our culture and ideas on a global level. recently Bharat achieved success in Chandrayaan-II mission at low cost. Many countries around the World are cooperating with satellites sent by Bharat’s ISRO.

**viii) Bharatiya Diaspora Influence** – Bharat has a large diaspora with more than 31 million people, including over 13 million Non-Resident Bharatiya’s (NRBs) and 18 million People of Bharatiya Origin (PBO). The committee observed the role of the Bharatiya diaspora as a soft power tool in building and strengthening relations between their home and host countries. Diasporic Bharatiya communities have successfully integrated into the host countries. They hold eminent positions and have significantly promoting Bharatiya cultural & values, economic and intellectual capabilities in their adopted countries.

## 7. Success of Bharatiya Soft Diplomacy

Bharat is on track to become the fourth largest economy in the world. So, Bharat’s relations with the world’s two superpowers, America and Russia are currently good. The world expects Bharat’s mediation to stop the war between Russia vs Ukraine and/or Israel vs Palestine. Very recently the death sentence of eight Bharatiya ex-navy-officer in Qatar was averted, which can be seen as a success of Bharatiya soft diplomacy.

## 8. Challenge of Bharatiya Soft Diplomacy

Cultural and Soft diplomacy of Bharat has not been an absolute success even today. Neighbouring countries like China<sup>3</sup> and Pakistan are continuously hostile towards our country. Bharat must achieve permanent membership of Security Council of the United Nations through international understanding by maintaining good relations with its neighbours. Bharat’s biggest challenge is to establish itself as a Vishwa-Guru (global leader) by soft diplomacy and power.

## 9. Limitation

The Ministry of External Affairs (MEA) defines soft power as the ability to influence others through appeal and attraction, using non-coercive means. The MEA has noted four limitations that inhibit India’s soft power and cultural diplomacy. These are: (i) inadequate financing, (ii) lack of

coordination among various institutions, (iii) shortage of skilled manpower, and (iv) lack of clarity on the mandate of Indian Council for Cultural Relations (ICCR).

## 10. Conclusion

Cultural diplomacy is therefore an important dimension of a country’s soft power. Bharat actively employs cultural diplomacy to strengthen diplomatic relations with other nations. Bharat’s soft power and cultural diplomacy have contributed to enhancing its global image and attracting international cooperation, investment, and partnerships. Indian Council for Cultural Relations (ICCR), under the Ministry of External Affairs (MEA), plays a significant role in promoting Bharatiya Soft Power and Cultural Diplomacy.<sup>4</sup> It organizes Cultural Exchanges, Scholarships, and Performances by Bharatiya artists abroad. It hosts various Cultural Festivals, International Film Festivals, International Book Fair and Art Exhibitions to showcase its cultural diversity and foster people-to-people connections.

## Reference -

1. The original Verse appears in Chapter 6th of *Maha Upanishad* (VI.71-73) ; Hon’ble Prime Minister of Bharat Narendra Modi used this phrase in a speech at World Culture Festival, organized by Art of Living, adding that “Indian culture is very rich and has inculcated in each one of us with great values, we are the people who have come from Aham Brahmasmi to Vasudhaiva Kutumbakam, we are the people who have come from Upanishads to Upagraha.(Satellite)
2. *The Complete Works of Swami Vivekananda* (2019) – Advaita Ashrama, Kolkata–14; P-1
3. *The Indian Journal of Political Science*–Volume LXXXII, No. 3 July – September, 2021, P-319
4. *The Indian Journal of Political Science*–Volume LXXXII, No. 2 April – June, 2021, P-256
5. <https://www.culturaldiplomacy.org>
6. <https://academic.oup.com>
7. WIKIPEDIA : Cultural diplomacy

*Associate Professor in Bengali, Union Christian Training College, PO- Berhampore, Dist.- Murshidabad, State- West Bengal, India, PIN- 742101*  
*gchpal1971@gmail.com*

# Relevance of Kautilya's idea of diplomacy in Contemporary World Politics

□ Dr. Subhash Singh

## Abstract

*Bharat has historically been a centre of knowledge in the world, and credit goes to all scholars like Kautilya, who made significant contributions across various fields. Kautilya's versatility and profound insights made him renowned worldwide, particularly in the domains of Political Science and International Relations. He was a unique Bharatiya political philosopher who served as both a thinker and a statesman. His influence extended to the social and political revolutions of his era, from which he derived universal principles applicable across periods. His seminal work, 'Arthashastra', stands out as one of ancient Bharat's earliest volumes, presenting a pragmatic perspective on Power Politics. Kautilya's work primarily delves into political realism, emphasising the paramount role of the state, with the king following his guidance to safeguard the realm. His realism is evident in his descriptions of the ruthless methods a ruler might employ to maintain power. Additionally, Kautilya's noteworthy contribution to foreign policy lies in his renowned 'Mandala theory,' which posits that neighbour states are most likely to be enemies, while states on the other side of one's neighbours will be friends or, the enemy of my enemy is my friend. Therefore, we can see the reflection of Kautilya's Idea of Diplomacy in contemporary world politics, as realists describe international politics is the struggle for power. Due to the lack of trust and the absence of global governance, the world system is based on anarchy, where every state constantly looks for enemies. Diplomacy plays a vital role in international relations, allowing states to pursue their national interests without engaging in military conflict. Consequently, this research paper will be focuses on Kautilya's contributions in the domains of Diplomacy, specifically focusing on his Mandala Theory.*

**Keywords:** *Bharat, Kautilya, Arthashastra, Mandala Theory, Realism, Diplomacy, Foreign Policy, International Relations, Contemporary, World Politics, War, Peace and Power etc.*

## Introduction

The National Education Policy 2020 (NEP 2020) is an innovative initiative in Bharatiya education, which has to address the evolving developmental needs of our nation comprehensively. NEP 2020 called for a complete transformation of Bharat's education system with the ultimate goal of providing equitable access to high-quality education for all students. It aimed to align the education system with the current and future needs and aspirations of the nation and its people.<sup>1</sup> This policy places significant emphasis on nurturing the creative potential inherent in each individual. It is founded on the principle that education should cultivate cognitive abilities, including foundational skills like literacy and numeracy, and higher-level cognitive skills such as critical thinking and problem-solving. Furthermore, it acknowledges the importance of fostering social, ethical, and emotional capacities and attitudes. While pursuing these goals, the policy also draws inspiration from Bharat's rich traditions and core values.

The NEP-2020 and National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE-2023) emphasize the integration of Bharatiya knowledge systems, including Political Science, into the mainstream curriculum. The objective is to offer a comprehensive understanding of Bharat's contributions across various fields of knowledge. Given that the central focus of NEP 2020 and NCF-SE 2023 is on fostering rootedness in Bharat and Bharatiya knowledge systems, it becomes imperative for all of us to familiarize ourselves with our rich heritage. Bharat boasts a diverse cultural and ancient civilizational heritage with a multitude of traditions spanning local communities. In the contemporary context, Bharat is a vibrant nation, actively participating in the modern world. Therefore, it is crucial that the curriculum and pedagogy, starting from the Foundational Stage, are intricately connected to the Bharatiya and local context. This alignment ensures that education is highly relatable, pertinent, engaging, and effective for our students.<sup>2</sup>

The profound and enduring wealth of ancient Bharatiya knowledge and philosophy has served as a guiding beacon for this policy. In Bharatiya thought and philosophy, the pursuit of knowledge (*Jnan*), wisdom (*Pragyaa*), and truth (*Satya*) has always been regarded as the highest human aspiration. Education in ancient Bharat was not merely about acquiring knowledge for the practicalities of life in this world or beyond schooling; it was about attaining complete self-realisation and liberation. World-class institutions from ancient Bharat, such as *Takshashila*, *Nalanda*, *Vikramshila*, and *Vallabhi*, set unparalleled benchmarks for multidisciplinary teaching and research. They attracted scholars and students from diverse backgrounds of many countries. The Bharatiya education system produced illustrious scholars like *Charaka*, *Susruta*, *Aryabhata*, *Varahamihira*, *Bhaskaracharya*, *Brahmagupta*, **Chanakya**, *Patanjali*, *Nagarjuna*, *Sankardev*, *Maitreyi*, *Gargi*, and numerous others who made pioneering contributions to global knowledge across various fields.<sup>3</sup> Bharatiya culture and philosophy wielded a significant influence on the world. These invaluable contributions to the global heritage should be conserved for future generations and explored, enhanced, and applied innovatively through our education system. The primary objective of NEP 2020 is to facilitate these changes by bringing about positive transformations in Bharat's education system.

Chanakya (350-275 BC), also known as Kautilya and Vishnugupta, was a multitalented figure encompassing roles as a teacher, philosopher, economist, and statesman, who wrote the most renowned book of ancient Bharat, the '*Arthashastra*' (Science of Politics and Economics). He was a realistic thinker of political science as well as a mastermind of ancient Bharat. Before the emergence of the Maurya Empire, Northern Bharat was governed by the Nanda dynasty. Unfortunately, due to the absence of effective governance, the Nanda kings were exploiting their citizens. Chanakya played a pivotal role in eradicating oppressive rulers like Dhanananda and establishing the Mauryan Empire.<sup>4</sup> He served as the prime minister during the rule of Chandragupta Maurya.

Chanakya stands as the most recognized embodiment of ancient Bharatiya wisdom, a man of remarkable versatility and adaptability. Born into an era marked by chaos, arrogance, and tyranny, the land was fragmented into countless quarrelling kingdoms, and the political landscape appeared irrational. Society was directionless, and individuals felt helpless in the face of these challenges. This situation changed with the arrival of Chanakya. His creative brilliance breathed life into the field of politics through his important work, the '*Arthashastra*', which ultimately served as the blueprint for the governance of the Maurya empire.<sup>5</sup>

Simultaneously, he provided much-needed guidance to society, outlining comprehensive economic and social systems to make it more meaningful.

Chanakya was born in a poor Brahmin family in approximately 350 BC in *Takshashila*. His father was named *Chanak*, and his mother's name was *Chaneshvari*. During his childhood days, Chanakya dedicated himself to a comprehensive study of the whole Vedas and learned about politics. Kautilya was an Bharatiya teacher, philosopher, and royal adviser. After completing his education, he started his career as a professor of economics and political science at the ancient *Takshashila* University in *Takshashila*. Chanakya held a steadfast conviction that a woman whose beauty solely stems from her physical appearance can bring happiness for just a single night, whereas a woman whose beauty emanates from her soul has the capacity to bring enduring happiness throughout a lifetime.

As a result, he chose to wed a woman named Yashodhara from his Brahmin background. While she did not possess the same level of physical beauty as Chanakya, her dark complexion became the subject of mockery for certain people. On one occasion, when Yashodhara accompanied Chanakya to a gathering at her brother's residence, they were ridiculed due to Chanakya's poverty. This situation left Yashodhara feeling unhappy, prompting her to suggest that Chanakya approach King Dhanananda to request financial assistance as a gift.

At the time, Dhanananda, the emperor of Magadha, organised a grand feast for Brahmins in Pushpapuri. Faced with financial constraints and influenced by his wife, Chanakya decided to attend the banquet to receive gifts from King Dhanananda in exchange for his insights on uniting Bharat. But Dhanananda, displaying extreme arrogance as the king, insulted Chanakya upon seeing his ugly appearance and outrightly rejected his suggestions.

Subsequently, Chanakya became incensed and solemnly vowed to destroy the Nanda Empire. In response, Dhanananda issued orders to have him arrested. However, Chanakya managed to elude capture by disguising himself. After he escaped from Dhanananda's court, Chanakya skilfully concealed his identity and settled in the vicinity of Magadh. In this period, Chanakya formed a bond with Pabbata, the son of his adversary Dhanananda. Through his intelligent persuasion, Chanakya gained control over Pabbata's thoughts, successfully acquired a royal ring and went to the forest.

Chanakya was searching for an individual who could uproot the Nanda dynasty, led by Dhanananda, and his gaze fell upon Chandragupta. At that time, Chanakya had readied two potential instruments to bring about Dhanananda's downfall: Chandragupta and Pabbata. He contemplated training

one of these two to ascend to the throne as emperor and decided to put them to the test. In this trial, Chandragupta successfully overcame Pabbata, securing victory. Impressed by Chandragupta's triumph, Chanakya took on the task of providing him with rigorous military training over a period of seven years. Under Chanakya's mentorship, Chandragupta evolved into a proficient warrior. Chanakya had long harbored the aspiration of overthrowing the Nanda dynasty replacing it with the Maurya Empire. Chandragupta, however, hastily assembled a small army and launched an attack on Magadha, the capital of the Nandas. Unfortunately, his small forces were swiftly defeated by the formidable Nanda army. Chanakya deeply regretted this ill-advised decision, and both he and Chandragupta wandered in frustration after their initial defeat.

Chanakya adopted a more thoughtful approach and devised a new strategy to overcome their adversaries. Recognising the opportune moment, Chandragupta launched a successful assault on Pataliputra, the capital of Magadha, ultimately defeating and killing Dhanananda. With the demise of Dhanananda, Chandragupta realised Chanakya's vision by establishing the Mauryan Empire by overthrowing the Nanda dynasty. This accomplishment not only fulfilled Chanakya's dream of a united Bharatiya empire (Akhand Bharat) but also marked the completion of his revenge against Dhanananda. At the same time, With the proper guidance of Chanakya, Chandragupta was succeeded in defeating Alexander's general Seleucus I Nicator and helped him turn the Mauryan empire into one of the most powerful empires.

When Chandragupta ascended to the throne as the Maurya Empire's emperor, Chanakya assumed his prime minister's role. Under Chanakya's guidance, a capable cabinet was formed to ensure effective governance in the empire. Each minister was assigned a distinct portfolios, and comprehensive provisions were made to enhance the welfare of the citizens. However, it's worth noting that from Chandragupta's childhood, Chanakya had been discreetly administering a small amount of poison in his food. This practice continued, with poison being regularly added to Chandragupta's meals. Unfortunately, one day, Chandragupta's wife, Durdhara, inadvertently consumed the poisoned food, and her life hung in the balance. She was pregnant at the time. Witnessing Chandragupta's anguish over the potential loss of his wife and child, Chanakya took drastic measures. In a desperate attempt to save the child, Chanakya performed a surgical procedure to remove the baby from Durdhara's womb. The baby was born with numerous bloodstains on his body, which led to the name Bindusara.

Shortly after Chandragupta, Bindusara assumed the throne as the new ruler of the Mauryan Empire, with Chanakya retaining his position as prime minister. However,

a minister named Subandhu in Bindusara's court was jealous of Chanakya. Subandhu, a common minister, aspired to ascend to the role of prime minister and consistently plotted against Chanakya. On one occasion, Subandhu told the wrong story to Bindusara of his birth. He became incensed when Bindusara learned that Chanakya was responsible for his mother's demise. Faced with the king's anger, Chanakya decided to renounce everything and retreated to the forest near Pataliputra (modern-day Patna). The precise circumstances of Chanakya's death in 275 BC remain mysterious. One political analyst argued that he passed away due to self-imposed starvation, while another pointed out a political conspiracy during Bindusara's rule as the cause of his demise.

### **Kautilya's 'Arthashastra'**

The 'Arthashastra', an ancient Sanskrit treatise from Bharat, covers topics of statecraft, political science, economic policies, and military strategies. Kautilya wrote it. The 'Arthashastra's influence persisted until the 12th century, after which it disappeared from public awareness. In 1905, R. Shamasastri rediscovered the 'Arthashastra', publishing it in 1909. The first English translation, also by Shamasastri, was made available in 1915.<sup>6</sup> Although it initially received limited attention, mostly within academic circles, the 21st century has witnessed a renewed global interest in the 'Arthashastra'. This interest is particularly notable among global analysts who seek to understand the implications of a rising Bharat for the world. They look to the 'Arthashastra' as it provides insights into Bharat's indigenous concept of power, referred to as "Shakti," as articulated by Kautilya in the 'Arthashastra'. This ancient text offers a distinctive perspective on defining the power of nation-states, making it relevant in contemporary discussions about the global landscape.

The central theme of Chanakya's 'Arthashastra' is the art and science of statecraft and governance. This ancient Bharatiya treatise, attributed to the scholar Kautilya, delves into various aspects of political science, economics, military strategy, and administration. The primary focus of the 'Arthashastra' is to provide guidance on how a ruler can effectively govern and maintain stability and prosperity within their kingdom. Key themes and topics covered in the 'Arthashastra' include:

- ✳ **Statecraft and Governance** : The treatise offers comprehensive advice on how to establish and maintain a successful state. It discusses the role of the king, the administration of justice, taxation, and the importance of law and order.
- ✳ **Economics and Wealth** : It discusses economic policies, taxation, trade, agriculture, and strategies to

increase the wealth and resources of the state.

- \* **Military Strategy** : Military matters, such as troop formations, warfare tactics, and fortifications, are extensively covered. The treatise emphasises the importance of a strong military for the security of the state.
- \* **Diplomacy and Foreign Policy** : The 'Arthashastra' discusses the use of spies, espionage, and diplomacy as tools of statecraft. It underscores the significance of intelligence gathering and maintaining foreign relations.
- \* **Justice and Legal Systems** : The treatise offers insights into the administration of justice, legal systems, and the role of law in maintaining order.
- \* **Ethics and Morality** : Chanakya explores the ethical dilemmas faced by rulers and advisors. He offers guidance on how to make morally sound decisions in the interest of the state.
- \* **Social Welfare** : While pragmatic in its approach, the 'Arthashastra' also touches upon the welfare of the people, advocating for the well-being of the citizens as a key factor in the stability of the state.
- \* **Conquest and Expansion** : Conquest and Expansion: The 'Arthashastra' addresses strategies for conquest and the annexation of other territories, highlighting the importance of expanding the kingdom.
- \* **Espionage and Intelligence** : It discusses using spies and intelligence gathering as essential tools for state security.
- \* **Administration and Bureaucracy** : The treatise outlines the government structure, including the roles and responsibilities of ministers and officials.
- \* **Legacy** : Kautilya's contributions to political science have had a lasting impact on Bharatiya political thought and continue to be studied and referenced in contemporary discussions on governance and statecraft.

Chanakya's 'Arthashastra' is a comprehensive manual for rulers and administrators, offering practical guidance on how to govern effectively and maintain a prosperous state.<sup>7</sup> It combines elements of political science, economics, military strategy, ethics, and diplomacy, making it a valuable resource for those interested in the complexities of governance and statecraft in ancient Bharat.

### **Mandala theory in Kautilya's 'Arthashastra'**

Kautilya's 'Arthashastra' provides valuable insights into foreign policy and international relations, offering a pragmatic and comprehensive approach to dealing with neighbouring states and external affairs. Kautilya's *Mandala* system, as outlined in his 'Arthashastra', was a theoretical framework for organising states. The term "*Mandala*," derived from Sanskrit, means a circle. It represented a geographical

concept for dividing the territories of the ruling monarch (the *Vijigishu*) and neighbouring kingdoms. This work is arguably one of the earliest instances of a theoretical approach to understanding the relationships between kings, kingdoms, and empires in the history of intellectual thought, similar to a model for international relations.

Kautilya's primary objective was to enhance the state or empire's security, strength, and expansion. His ideas reflected a prevailing theme in ancient Bharatiya political thought, wherein territorial conquest was considered an essential function of any monarch. Kautilya envisioned that a potential conquering king (the *Vijigishu*) could become the leader of an international political system by adhering to the principles of the *Mandala* theory. He presented numerous strategies and methods to achieve this ultimate goal. For Kautilya, the *Vijigishu*'s ultimate aim was to ensure the happiness and welfare of the kingdom.<sup>8</sup>

Modelski, George, "Kautilya: Foreign Policy and International System in the Ancient Hindu World", *The American Political Science Review*, Sep. 1964, Vol. 58, No. 3 (Sep. 1964), p.555

Kautilya asserts that achieving supremacy can only be realized through conquest. To achieve this objective, the *Vijigishu* must be willing to employ any means necessary, as nothing took precedence over the state's welfare. In Kautilya's view, war was an essential component, and diplomacy served as a preparation for war.<sup>9</sup> Kautilya said that "*A King who understands the true implication of diplomacy conquers the whole world.*"<sup>10</sup>

The *Mandala* theory lies at the heart of Kautilya's understanding of statecraft, embodying the notion of supremacy. Engaging discussions on *RajMandala*, the 'circle of kingdoms,' *Shadguna* theory, representing sixfold policy or measures, and diplomacy, comprehensively address various aspects of foreign policy, retaining relevance in contemporary times. Kautilya situates the state within a geographically interconnected circle of neighboring states, termed as *Mandalas*. Kautilya emphasises the importance of maintaining friendly relations with neighbouring states. He suggests that a ruler should work to secure the goodwill and support of neighbouring kingdoms to ensure the security and stability of his own state. Within the *Mandala* theory's chessboard, the key players are as follows:

1. **The *Vijigishu*** : Kautilya designates a king as a "*Vijigishu*" only if that king possesses both the ambition and the capability to embark on conquest. It's essential to clarify that when referring to the central king as the *Vijigishu*, he is not the sole individual with this designation. Any other king within the *Mandalas* who shares similar ambitions and possesses the necessary

strength can also be termed a *Vijigishu*. Within this framework, the *Vijigishu*'s kingdom border is divided into two distinct parts: the front and the rear.<sup>11</sup>

2. **Ari** : The immediate neighbouring state in the front is called the Ari, which signifies the enemy. As stated earlier, all neighbouring states are considered adversaries, and the Ari represents the enemy that lies in front.
3. **Mitra** : The neighbouring state adjacent to the Ari, which is essentially the enemy of the enemy, is a pivotal aspect of Kautilya's foreign policy. This policy is rooted in the principle that "the enemy of my enemy is my friend."<sup>12</sup> In Sanskrit, "Mitra" translates to friend or ally, and Mitra is inherently considered the *Vijigishu*'s natural ally.
4. **Ari Mitra** : The state that lies next to Mitra's border, or in other words, the arch-enemy of Mitra, is known as the Ari Mitra. Naturally, Ari Mitra aligns as an ally with the ally of Ari (the enemy) and becomes an adversary to the *Vijigishu*.
5. **Mitra Mitra** : The state neighbouring Ari Mitra, who is his arch-enemy, naturally becomes a friend of Mitra and an ally of the *Vijigishu* as well!
6. **Ari Mitra Mitra** : Ari Mitra Mitra is a friend of Ari Mitra, which naturally aligns him with Ari while making him an enemy of the *Vijigishu*.<sup>13</sup>  
Besides this, the same pattern of *Mandalas* apply to the *Vijigishu*'s rear borders,
7. **Parashanigraha** :The immediate neighbour (enemy) is the Parashanigraha.
8. **Akranda** : The next kingdom, the ally in the rear, is called the Akranda.
9. **Parashanigrahasara** :The friend of the enemy or the next kingdom in the rear is the Parashanigrahasara.
10. The friend's friend in the rear is the **Akrandasara**.
11. **The Madhyama or the intermediary** : The *Madhyama* king, according to the definition, is a ruler who controls a region situated in proximity to both the conqueror and their immediate adversary in the front. This *Madhyama* king can assist either of these two kings, whether they are united or in conflict, or resist either of them individually. Consequently, the *madhyama* king is strategically important in Kautilya's *Mandala*.
12. **The Udasina or the neutral**. As mentioned earlier, the *udasina* king is characterised as a ruler positioned outside the territory of any of the kings. This *udasina* king possesses considerable strength and has the capacity to aid or support the enemy, the conqueror, or the *madhyama* king, whether collectively or separately, or to oppose any of them individually.<sup>14</sup>

In this model, opposing alliances must remain in a constant state of readiness for war and strive to eliminate their adversaries. As previously mentioned, Kautilya views diplomacy as a form of preparation for warfare. He also acknowledges that diplomatic positions can shift in response to changing conditions brought about by evolving political circumstances. Additionally, he acknowledges the presence of middle kingdoms or states that do not belong to either of the alliances. With these considerations in mind, it becomes evident that two more kingdoms are within the Kautilyan *Mandala*.

### **Kautilya's idea of diplomacy**

Diplomacy is considered a key instrument of statecraft in the '*Arthashastra*'." Kautilya discusses the role of diplomats and envoys in representing the state's interests abroad and engaging in negotiations with other powers. Happiness is the ultimate objective, with power serving as the means to achieve it. Chanakya's '*Arthashastra*' has underscored this point clearly. Kautilya outlines six distinct policy approaches to be pursued by the *Vijigishu* to optimise happiness through strategically utilising and manipulating greater power. The core of this discourse revolves around the concept of *sadhgunya*, also known as the "six-fold policy." It encompasses six distinct types of foreign policy: Accord (*sandhi*); Conflict (*vigraha*); Neutrality (*asana*); Attack (*yana*); Protection (*samsraya*); and Dual Policy (*dvaidhibhava*). Having to choose between them, an inferior king pursues Accommodation, seeks Protection or resorts to Double Policy; the superior king can afford Hostility or Attack, while one facing an equal maintains Indifference.<sup>15</sup>

Kautilya's *Arthashastra* Translated into English by R. Shamasastri, p. 370, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf)

#### **These six policies include:**

- ◆ **Sandhi (Accord)** : The pursuit of peace, characterised by "agreement with pledges."
- ◆ **Vigraha (Conflict)** : Engaging in offensive operations or warfare.
- ◆ **Yana (Attack)** : Mobilising and marching the army against the enemy or along the borders.
- ◆ **Asana (Neutrality)** : Demonstrating indifference or neutrality.
- ◆ **Samsraya (Protection)** : Forming alliances or cultivating friendships.
- ◆ **Dvaidibhava (Dual Policy)** : Engaging in double-dealing, such as making peace with one party while waging war against another.

Utilizing these six diplomatic strategies, the *Vijigishu* must consistently endeavour to expand its influence over the *Mandalas*, persevering until global conquest is achieved.

These six diplomatic approaches should be employed in diverse combinations and adaptations, tailored to the prevailing circumstances, to attain optimal advantages.

### **The Tools of Diplomacy (Chatur Upayas)**

Kautilya advocates four strategies, known as *Chatur upayas*, to establish the king's authority within the *Mandala*. These strategies involve persuasive tactics and subtle maneuvers to ensure the king's influence spreads effectively within the *Mandala*, thereby consolidating his rule. Kautilya acknowledges these strategies as recognized expedients, as he, being a realist thinker, understands that while deceit and cunning are significant in politics, relying solely on diplomatic trickery rarely leads a country to attain its objectives. The four *upayas* are:

#### **1- Sama (conciliation)**

This entails adopting a general demeanor of amiability and persuasive reasoning, employing polite arguments and a rationale based on mutual interest. Kautilya advises the *Vijigishu* to employ this approach with the conquered ruler to ensure unwavering loyalty. The *Vijigishu* should refrain from plundering and instead demonstrate respect towards the conquered populace. It involves protecting their villages, showing regard for women, and taking care of their farms, forests, animals, and overall livelihood. Through this policy, a weaker king can be effectively brought under control.<sup>16</sup>

#### **2- Dana (gifts)**

Dana, translated as concession, denotes a strategy advocated by Kautilya. Stronger rulers are advised to offer concessions to weaker rulers within an unequal alliance. Through this approach, weaker kings can be induced into a form of obligation and loyalty. In cases where the policy of *Sama* in diplomacy proves partially successful, Kautilya recommends resorting to the policy of *Dana*. This principle underscores the essence of reciprocity in diplomacy, where one must be willing to give something to gain something of importance. It involves making agreements that may involve loss, the limitation of interests, withdrawal, or offering something advantageous to the other party in exchange for achieving one's own objectives.<sup>17</sup>

#### **3- Bheda ( Division)**

If persuasion or compromise proves ineffective, Kautilya advises employing *Bheda*, which represents the strategy of divide and rule. Kautilya regards *Bheda* as a crucial tool in diplomacy, capable of subduing even formidable kings and great powers. According to him, there are several methods for sowing seeds of discord, such as instigating neighboring kings, wild chiefs, members of the enemy's family, or imprisoned princes. *Bheda* was a significant tactic for ancient conquerors, and it remains relevant today, with

many countries using it to advance their national interests. The British rulers, for instance, governed Bharat for over two centuries by employing the divide and rule policy among various communities.<sup>18</sup>

#### **4-Danda ( Use of Force)**

Lastly, there's *Danda*, which entails the use of force. Typically, diplomacy involves a balanced application of the first three methods mentioned. However, if they prove ineffective, resorting to *Danda* becomes necessary. *Danda* implies punitive actions, utilizing force or economic measures to coerce another state into compliance with the *Vijigishu*'s demands. Kautilya asserts that human nature dictates obedience often requires the imposition of *Danda*. Throughout history, physical force has been deemed the most effective means to achieve desired outcomes in interstate relations.<sup>19</sup> Therefore, *Danda* shouldn't be conflated with outright warfare; rather, it represents a form of diplomatic warfare, a final recourse before resorting to armed conflict. Kautilya delineates three types of *Danda*:

- ◆ *Sanctions*: Such as those imposed on Libya and South Africa in recent history.
- ◆ *Blockades*: As exemplified by the Cuban Missile Crisis.
- ◆ Rejection of passage rights, blockades, boycotts, etc.

Additionally, Kautilya advises the *Vijigishu* to exploit various clandestine methods to safeguard foreign interests, including the use of spies, saboteurs, and the allure of women to sow discord and defection among enemy ranks. While the four *upayas* serve as recognized strategies for implementing the six forms of foreign policy, Kautilya introduces three additional diplomatic methods: *Upeksha*, *Maya*, and *Indrajala*. *Upeksha*, according to Kautilya, is not an independent policy but rather a facet of *Udasina*. In ancient Bharat's international law, neutrality was esteemed, and belligerent powers respected neutral entities. Thus, weaker powers could leverage *Upeksha* to conceal their vulnerabilities. Kautilya advises that even if provoked, a weaker power should endure and adopt the stance of *Upeksha*. *Maya*, as described by Kautilya, represents a more deceitful form of diplomacy, employing cunning and intrigue as its tools. *Maya* falls under the category of *Danda*. Lastly, *Indrajala* involves employing trickery to achieve victory over the enemy.

#### **The Role of Diplomats**

In the Kautilyan model, diplomats or ambassadors play a crucial role as emissaries representing the king or ruler in dealings with foreign powers. In Arthashastra, Kautilya uses the word *duta* for the diplomats or ambassadors.<sup>20</sup> They serve as diplomatic agents tasked with fostering alliances, negotiating treaties, gathering intelligence, and advancing the state's interests abroad. Ambassadors act as intermediaries,

conveying the ruler's policies, intentions, and grievances to foreign governments while also providing insights into the affairs of other states.

Kautilya emphasizes the importance of selecting capable and trustworthy individuals as diplomats, as they serve as the face of the kingdom in foreign lands. Diplomats must possess astute diplomatic skills, linguistic proficiency, cultural awareness, and discretion to navigate complex international relations effectively. Furthermore, ambassadors in the Kautilyan model are expected to maintain confidentiality, exercise tact and diplomacy in negotiations, and uphold the dignity and prestige of the ruler they represent. They must be adept at building rapport and forging alliances while also safeguarding the kingdom's interests against potential threats and adversaries.

According to Kautilya, The tasks of an envoy include conveying messages, upholding treaties, issuing ultimatums (*pratāpa*), fostering alliances, engaging in intrigue, sowing discord among allies, acquiring clandestine support, discreetly removing relatives and valuable assets, monitoring spy activities, demonstrating courage, violating peace treaties, and winning the trust of enemy envoys and government officials. These responsibilities fall under the purview of an envoy (*dūta*). The king should deploy his own envoys to carry out such tasks while safeguarding against the potential harm posed by foreign envoys by employing counter envoys, spies, and both overt and covert surveillance measures.<sup>21</sup> Overall, diplomats play a vital role in implementing Kautilya's principles of statecraft and diplomacy, serving as key instruments in promoting the ruler's objectives, maintaining stability, and safeguarding the realm's sovereignty in the complex arena of international relations.

### Relevance in Contemporary World Politics

Overall, Kautilya's 'Arthashastra' offers a multifaceted approach to foreign policy and international relations, emphasizing the importance of diplomacy, intelligence, alliances, and a realistic understanding of the complexities of dealing with other states. His insights continue to be studied and referenced in the field of international relations and statecraft. Kautilya's *Mandala* theory, as outlined in the Arthashastra, remains relevant in contemporary discussions in world politics. While it's important to recognize that the political landscape has evolved over centuries, and modern international relations involve complex factors, there are still aspects of Kautilya's *Mandala* theory that hold relevance for the students and scholars in contemporary era.

Kautilya's *Mandala* theory is often associated with a realist perspective of international relations. It acknowledges the anarchic nature of the international system and the pursuit of self-interest by states. As Realistic thinker Morgenthau

describes, international politics is the struggle for power and moral principles cannot apply in international politics.<sup>22</sup> Due to the lack of trust and the absence of global governance, the world system is based on anarchy, where every state constantly looks for enemies.<sup>23</sup> This realism remains relevant in understanding the motivations and behaviors of states in the global arena.

The *Mandala* theory emphasizes the importance of maintaining a balance of power in the geopolitical context. Kautilya advocates for a balance of power in inter-state relations. He suggests that a ruler should align with other states to counter a more powerful neighbour, preventing anyone state from becoming too dominant. Kautilya advocated for the balancing of power through alliances and strategic maneuvers to prevent the dominance of any single state.<sup>24</sup> In today's multipolar world, the concept of balancing power is still relevant as states seek to counterbalance emerging powers and maintain stability. This idea is still applicable today, where nations seek to form alliances and partnerships to counter-balance the influence of other states and maintain stability in the international system.<sup>25</sup>

Boesche, Roger, "Kautilya's "Arthashastra" on War and Diplomacy in Ancient Bharat", *The Journal of Military History*, Vol. 67, No. 1 (Jan., 2003), , p. 18.

Kautilya emphasized the pragmatic use of alliances to advance a state's interests. In modern international politics, strategic alliances and partnerships continue to play a crucial role in addressing common challenges, promoting economic cooperation, and enhancing security.<sup>26</sup> The *Mandala* theory acknowledges the dynamic and often unpredictable nature of international relations. States are encouraged to be vigilant about their security and recognize potential threats. This can be considered as an action taken by a state for its safety with contemporary discussions on safety dilemmas.

Kautilya recognizes that conflicts are inherent in international relations. He outlines strategies for waging war when necessary, including troop formations, intelligence gathering, and diplomacy to avoid conflicts when possible. He also discusses the importance of peace treaties and negotiations to end hostilities.<sup>27</sup> Diplomacy is considered a key instrument of statecraft in the Arthashastra. Kautilya examines the function of diplomats and envoys in advocating for the state's interests overseas and participating in negotiations with foreign powers.<sup>28</sup>

### Conclusion

Chanakya was not only a pragmatic political thinker but also a brilliant strategist of ancient Bharat. His contributions to the field of political science and governance were rooted in a deep understanding of the realities of his time. As a mastermind, he possessed the foresight and intelligence to



navigate ancient Bharat's complex and often turbulent political landscape. His practical approach to statecraft and his ability to effectively implement his ideas played a pivotal role in the success of the Maurya dynasty. Chanakya's legacy as a realistic thinker and mastermind inspires scholars and leaders in the study of politics and governance. Kautilya's most notable contribution to the field of foreign policy and International Relations is his renowned 'Mandala theory,' which posits that neighboring states are more likely to be seen as potential adversaries, whereas states located beyond one's immediate neighbours are more likely to be perceived as potential allies and friends.

Kautilya's ideas of diplomacy, as articulated in the Arthashastra, continue to hold relevance in contemporary world politics due to several reasons. Kautilya's emphasis on pragmatism, power dynamics, and the pursuit of national interest reflects the principles of real politics, which remain central to modern international relations. Kautilya advocated for the balancing of power through alliances and strategic maneuvers to prevent the dominance of any single state. In today's multipolar world, the concept of balancing power is still relevant as states seek to counterbalance emerging powers and maintain stability. Kautilya outlined various diplomatic strategies, including persuasion, alliances, espionage, and the use of force. These strategies continue to inform the diplomatic practices of states, albeit in modern contexts and with technological advancements.

Moreover, Kautilya emphasized the importance of national security and the use of diplomatic, economic, and military means to safeguard it. In today's world, states face diverse security challenges, ranging from traditional threats to non-traditional ones like cybersecurity and terrorism, requiring a multifaceted approach to security. The dynamics of interstate relations, including competition, cooperation, and conflict resolution, are consistent themes in Kautilya's work and remain pertinent in contemporary global politics. Kautilya recognized the significance of geography and geopolitics in shaping international relations. In the modern era, states continue to factor in geographical considerations when formulating foreign policies and strategic alliances. Kautilya's writings also raise ethical dilemmas regarding the use of deception, espionage, and coercion in diplomacy. These ethical considerations remain relevant today as states grapple with questions of moral conduct in pursuit of national interests.

## Endnotes

<sup>1</sup> National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of Bharat, p. 3-4, [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf); National Curriculum

Framework for School Education , 2023, NCERT, Ministry of Education, Government of Bharat, p.5, [https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August\\_2023.pdf](https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf)

<sup>2</sup> National Curriculum Framework for School Education, 2023, NCERT, Ministry of Education, Government of Bharat, p.143, [https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August\\_2023.pdf](https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf)

<sup>3</sup> National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of Bharat, p.5, [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)

<sup>4</sup> Chakraborti, Tridib, " Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.3

<sup>5</sup> Prasoon, Prof. Shrikant, Chanakya - The Master of Administration, V&S Publishers, 2017, p. 16

<sup>6</sup> Banerjee, Prathama, "Chanakya/Kautilya: History, Philosophy, Theater and the Twentieth-century Political", History of the Present, Vol. 2, No. 1 (Spring 2012), p.6

<sup>7</sup> Kaur, Kiranjit, "Kautilya: Saptanga Theory Of State", The Bhartiya Journal of Political Science, JAN. - MAR., 2010, Vol. 71, No. 1 (JAN.- MAR., 2010), p.3

<sup>8</sup> Kautilya's Arthashastra Translated into English by R. Shamasastri, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf), p.537

<sup>9</sup> Chakraborti, Tridib, " Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.6

<sup>10</sup> Ibid,p.7

<sup>11</sup> Boesche, Roger, "Kautilya's "Artha [stra]" on War and Diplomacy in Ancient Bharat", Hardcover – 30 September 2003, p. 18

<sup>12</sup> Chakraborti, Tridib, " Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.7

<sup>13</sup> Modelski, George, "Kautilya: Foreign Policy and International System in the Ancient Hindu World", The American Political Science Review, Sep. 1964, Vol. 58, No. 3 (Sep. 1964), p.554

<sup>14</sup> Chakraborti, Tridib, " Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.16; Modelski, George, "Kautilya: Foreign Policy and International System in the Ancient Hindu World", The American Political Science Review, Sep. 1964, Vol. 58, No. 3 (Sep. 1964), pp.554

<sup>15</sup> Kautilya's Arthashastra Translated into English by R. Shamasastri, p. 507, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf)

<sup>16</sup> Chakraborti, Tridib, " Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.17

- <sup>19</sup> Ibid, pp.17-18
- <sup>20</sup> Ibid, p.18
- <sup>21</sup> Kautilya's Arthashastra Translated into English by R. Shamasastri, pp. 44-45, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf)
- <sup>22</sup> Algosaiibi, Ghazi A. R. , "The Theory of International Relations: Hans J. Morgenthau and His Critics", Background, Vol. 8, No. 4 (Feb., 1965), pp. 221-256
- <sup>23</sup> Bloor, Kevin, "Theories of Global Politics, May, 15 2022, Accessed, 5 January 2024, <https://www.e-ir.info/2022/05/15/theories-of-global-politics/>
- <sup>24</sup> Modelski, George, "Kautilya: Foreign Policy and International System in the Ancient Hindu World", The American Political Science Review, Sep. 1964, Vol. 58, No. 3 (Sep. 1964), p.554
- <sup>26</sup> Kautilya's Arthashastra Translated into English by R. Shamasastri, p. 448, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf)
- <sup>27</sup> Ibid, p. 442
- Varma, Vishwanath Prasad, Studies in Hindu political thought and its metaphysical foundations, Motilal Banarsidass Publications, 1974.

## Bibliography

- ◆ Algosaiibi, Ghazi A. R. , "The Theory of International Relations: Hans J. Morgenthau and His Critics", Background, Vol. 8, No. 4 (Feb., 1965), pp. 221-256
- ◆ Altekar, Anant Sadashiv, State and Government in Ancient Bharat, Delhi: Motilal Banarsidass Publications, 2002
- ◆ Banerjee, Prathama, "Chanakya/Kautilya: History, Philosophy, Theater and the Twentieth-century Political", History of the Present, Vol. 2, No. 1 (Spring 2012), pp. 24-51.
- ◆ Bloor, Kevin, "Theories of Global Politics, May, 15 2022, Accessed, 5 January 2024, <https://www.e-ir.info/2022/05/15/theories-of-global-politics/>
- ◆ Boesche, Roger, "Kautilya's "Artha[stra]" on War and Diplomacy in Ancient Bharat", Hardcover – 30 September 2003
- ◆ Chakraborti, Tridib, "Contemporary Relevance of Kautilya's Mandala Theory And Diplomacy", Politico, Vol.5, No.2, 2016, p.3
- ◆ Kane, P. V., "The Artha [stra of Kaumilya]", Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, 1926, Vol. 7, No. ½ (1926), pp. 85-100.
- ◆ Kaur, Kiranjit, "Kautilya: Saptanga Theory Of State", The Bhartiya Journal of Political Science, JAN. - MAR., 2010, Vol. 71, No. 1 (JAN.- MAR., 2010), pp. 59-68
- ◆ Kautilya's Arthashastra Translated into English by R.

- Shamasastri, [https://csboa.in/eBooks/Arthashastra\\_of\\_Chanakya\\_-\\_English.pdf](https://csboa.in/eBooks/Arthashastra_of_Chanakya_-_English.pdf)
- ◆ Modelski, George, "Kautilya: Foreign Policy and International System in the Ancient Hindu World", The American Political Science Review, Sep. 1964, Vol. 58, No. 3 (Sep. 1964), pp.549-560
  - ◆ National Curriculum Framework for School Education, 2023, NCERT, Ministry of Education, Government of Bharat, [https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August\\_2023.pdf](https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf)
  - ◆ National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of Bharat, [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)
  - ◆ Prasad, D. M., "Politics And Ethics In Kautilya's Arthashastra", The Bhartiya Journal of Political Science, April-June 1978, Vol. 39, No. 2 (April-June 1978), pp. 240-249.
  - ◆ Prasoona, Prof. Shrikant, Chanakya - The Master of Administration, V&S Publishers, 2017, p. 16
  - ◆ Ranjan, Ravi, Ancient Bhartiya Political Thought and Institution, Delhi: Centrum Press, 2013.
  - ◆ Saxena, A K, Ancient Bhartiya Political Thought And Institution, Delhi : Abd Publishers, 2018
  - ◆ Sharma, Ram Sharan, Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient Bharat, Motilal Banarsidass Publications, 1991
  - ◆ Singh, G.P., Political Thought in Ancient Bharat: Emergence of the State, Evolution of Kingship Based on the Saptanga Theory: No. 2 (Reconstructing Bhartiya History and Culture), D.K. Print World Ltd, 2003.
  - ◆ Singh, G.P., Political Thought in Ancient Bharat: Emergence of the State, Evolution of Kingship Based on the Saptanga Theory: No. 2 (Reconstructing Bhartiya History and Culture), D.K. Print World Ltd, 2003.
  - ◆ Singh, Ram Ranbir, "Kautilya's Conception Of State", The Bhartiya Journal of Political Science, Jan.-March, 2004, Vol. 65, No. 1 (Jan.-March, 2004), pp. 41-54.
  - ◆ Singh, Ram Ranbir, "Kautilya's Conception Of State", The Bhartiya Journal of Political Science, Jan.-March, 2004, Vol. 65, No. 1 (Jan.-March, 2004), pp. 41-54.
- This aspect remains pertinent in today's global politics, as states recognize the crucial role of their diplomats in advancing national interests.

*Assistant Professor (Political Science)*  
*Department of Education in Social Sciences (DESS),*  
*National Institute of Education (NIE), New Delhi*

# Sports and Health Science: Catapulting to the Global Arena

□ Prof(Dr.) Mukesh Patel<sup>1</sup>, Dr.Kajal Trivedi<sup>2</sup>

## Abstract

*This Research Paper Explores The Intersection Of Sports And Health Science In The Contemporary Global Landscape. With A Focus On How Advancements In Sports Science Contribute To The Enhancement Of Athlete Performance And Overall Well-Being, This Paper Discusses The Evolving Role Of Technology, Nutrition, Psychology, And Biomechanics In Optimizing Athletic Potential. Additionally, It Examines The Impact Of Sports On Public Health Initiatives, Highlighting The Importance Of Physical Activity In Combating Sedentary Lifestyles And Non-Communicable Diseases. Through An Analysis Of Scientific Literature And Case Studies, This Paper Aims To Elucidate The Significance Of Integrating Sports And Health Science For Promoting Human Health And Athletic Excellence On A Global Scale.*

**Keywords:** Sports Science, Health Science, Athlete Performance, Technology, Nutrition, Psychology, Biomechanics, Public Health, Physical Activity

## 1. Introduction

The Fusion Of Sports And Health Science Has Emerged As A Pivotal Domain In Contemporary Discourse, With Profound Implications For Athlete Performance, Public Health, And Societal Well-Being. This Paper Aims To Explore The Multifaceted Relationship Between Sports And Health Science, Highlighting The Role Of Various Disciplines In Advancing Human Performance And Well-Being, Elucidating Its Transformative Potential On A Global Scale

## 2. Advancements In Sports Science

**2.1 Technology :** The Integration Of Cutting-Edge Technologies Such As Wearable Sensors, Biomechanical Analysis Systems, And Virtual Reality Training Platforms Has Revolutionized Athlete Monitoring, Performance Analysis, And Injury Prevention Strategies.

**2.2 Nutrition :** Optimal Nutrition Plays A Paramount Role In Fueling Athletic Performance And Facilitating Recovery. Scientific Advancements In Sports Nutrition Have Led To Personalized Dietary Approaches Tailored To

Individual Athlete Needs, Optimizing Nutrient Intake And Enhancing Performance Outcomes.

**2.3 Psychology :** Mental Resilience And Psychological Well-Being Are Integral Components Of Athletic Success. Sports Psychology Interventions Encompassing Cognitive-Behavioral Techniques, Mindfulness Practices, And Performance Visualization Have Been Instrumental In Enhancing Athlete Motivation, Focus, And Emotional Regulation.

**2.4 Biomechanics :** Understanding The Biomechanical Principles Governing Human Movement Is Essential For Refining Athletic Technique And Minimizing Injury Risk. Biomechanical Analysis Techniques Such As Motion Capture Systems And Force Plate Technology Enable Precise Kinematic And Kinetic Assessment, Facilitating Biomechanical Optimization In Sports Performance.

## 3. Impact On Athlete Performance And Well-Being

The Synergistic Application Of Advancements In Sports Science Domains Has Yielded Significant Enhancements In Athlete Performance, Injury Prevention, And Overall Well-Being. Athletes Benefit From Personalized Training Programs, Injury Rehabilitation Protocols, And Psychological Support Systems, Thereby Maximizing Their Athletic Potential While Minimizing The Risk Of Overuse Injuries And Burnout.

## 4. Sports And Public Health Initiatives

**4.1 Physical Activity Promotion :** Sports Serve As A Powerful Vehicle For Promoting Physical Activity And Combating Sedentary Lifestyles, Thereby Mitigating The Global Burden Of Non-Communicable Diseases Such As Obesity, Diabetes, And Cardiovascular Disorders.

**4.2 Community Engagement :** Sporting Events And Initiatives Foster Community Engagement And Social Cohesion, Transcending Cultural And Geographical Boundaries To Promote Inclusivity And Health Equity On A Global Scale.

**4.3 Role In Public Health Campaigns :** Collaborative Efforts Between Sports Organizations, Health Agencies, And Policymakers Are Instrumental In Leveraging The Influence

Of Sports Icons And Sporting Events To Advocate For Public Health Campaigns, Ranging From Anti-Smoking Initiatives To Mental Health Awareness Campaigns.

## 5. Integrating Sports And Health Science: A Global Imperative

The Convergence Of Sports And Health Science Represents A Paradigm Shift In The Approach To Human Performance Optimization And Public Health Promotion. By Embracing Interdisciplinary Collaborations, Leveraging Technological Innovations, And Advocating For Evidence-Based Practices, Stakeholders Across Sectors Can Harness The Transformative Potential Of Sports And Health Science To Catapult Human Health And Athletic Excellence To The Global Arena.

## 6. Case Studies And Practical Applications

This Section Presents Case Studies And Practical Applications That Demonstrate The Real-World Impact Of Integrating Sports And Health Science. From Elite Athlete Performance Programs To Community-Based Health Initiatives, These Examples Illustrate The Potential Of Sports Science In Improving Human Health And Well-Being Across Diverse Populations.

## 7. Conclusion

In Conclusion, The Synthesis Of Sports And Health Science Heralds A New Era Of Possibilities For Athlete Performance Enhancement, Public Health Promotion, And Societal Well-Being On A Global Scale. Through Continued Research, Innovation, And Collaborative Action, The Integration Of Sports And Health Science Holds Immense Promise For Shaping A Healthier, More Resilient, And Inclusive Future For Individuals And Communities Worldwide.

## References

1. Adams, G., & Cottrell, D. (2019). The Role Of Nutrition In Athletic Performance. *Journal Of Sports Science*, 37(6), 789-802. <https://doi.org/10.1080/02640414.2018.1533232>
2. Gonzalez, A. M., & Hoffman, J. R. (2018). Nutritional Strategies To Optimize Performance And Enhance Recovery In Team Sports. *Journal Of Strength And Conditioning Research*, 32(2), 1479-1495. <https://doi.org/10.1519/Jsc.0000000000002026>
3. Jones, M. V., & Hardy, L. (2018). Stress And Performance In Sport. *Journal Of Sports Sciences*, 36(15), 1769-1778. <https://doi.org/10.1080/02640414.2017.1408041>
4. Smith, J. A., & King, R. (2020). The Biomechanics Of Athletic Performance. *Sports Medicine*, 50(6), 963-987. <https://doi.org/10.1007/S40279-020-01307-3>
5. Taylor, L., & Watkins, S. L. (2019). *Understanding The Psychology Of Sport: Key Concepts In Sport Psychology*. Routledge.
6. United Nations. (2020). *Sports For Global Health*. Retrieved From <https://www.un.org/en/sections/issues-depth/sports/>
7. World Health Organization. (2020). *Global Action Plan On Physical Activity 2018–2030: More Active People For A Healthier World*. Geneva: World Health Organization. Retrieved From <https://www.who.int/ncds/prevention/physical-activity/global-action-plan-2018-2030/en/>
8. Xu, S., & Roberts, K. (2017). Technological Advancements In Sports Science: A Comprehensive Review. *Journal Of Sports Technology*, 45(3), 211-225. <https://doi.org/10.1080/00031305.2017.1385679>
9. Yamamoto, T., & Takeda, T. (2018). The Impact Of Sports On Public Health: A Global Perspective. *Health Promotion International*, 35(4), 789-802. <https://doi.org/10.1093/heapro/day025>
10. Zhang, Y., & Wang, G. (2019). Advances In Sports Science And Technology. *Sports Engineering*, 48(2), 167-178. <https://doi.org/10.1007/S12283-019-00284-3>

1 Director(PE and Sports), Indian Institute of  
Teacher Education, Gandhinagar,Gujarat  
2 Teacher (PE and Sports), Adarsh  
NivasiSchool,Gandhinagar

# Emerging Significant Dimensions of India's Soft Power Diplomacy in the Contemporary Global Politics: An Analysis

□ Dr.L. Thirupathi<sup>1</sup>, Dr.E. Yadaiah<sup>2</sup>

## Abstract

Soft power diplomacy refers to a nation's capacity to accomplish foreign policy goals without resorting to force, compulsion, or even substantial financial outlays by using cultural leverage. Political values, culture, and foreign policy are its three pillars of operation. Drawing on its long history of culture and civilization, India has been widely acknowledged for having made a substantial contribution to the world through the exercise of soft power. The notion of "VasudhaivaKutumbakam," which holds that all people have a communal responsibility to one another and their shared future, was one of the earliest examples of global citizenship as it is known today. The constant conversation between civilizations, faiths, and cultures at UNESCO is built around it. The values of India's secularism, tolerance, inclusivity, and cross-cultural fertilization which are fundamental to our civilization are more relevant than ever in the current uncertain international environment. India's soft power is reflected in her rich cultural and civilizational heritage as well as in the diaspora that she has spread throughout the world. Though the term didn't become widely used until the 21st century, India's soft power was already having an impact on other countries. For millennia, people from all over the world have been drawn to Indian arts, culture, and spiritualism. With the Modi 1.0 initiative, our Prime Minister combined fresh aspects of soft power to realign Indian diplomacy. My research will examine the relationship between yoga and meditation, two practices that are widely used in most nations, and the religious components of India. Renowned medical professionals are investigating and promoting the health benefits of these. A few years ago, the Indian government succeeded in getting the United Nations to proclaim June 21 as Global Yoga Day. Additionally, it will examine the important role that the Ministry of External Affairs (MEA) Indian Council for Cultural Relations (ICCR) plays in pioneering work that not only promotes our culture overseas but also encourages exposure to various cultures within India to foster cross-cultural discourse. Bollywood has been portrayed as an excellent instrument of India's Soft

Power. This element is occasionally exaggerated. It is true that, many people around the world like watching Bollywood films. Similarly Indian diaspora, particularly PIOs and NRIs, is essential to preserving its soft power. The total of both is 32.1 million. They are dispersed throughout every continent and, in the past 20 years, have grown to be wealthy, well-known, and powerful. They have occasionally assisted in furthering our foreign policy objectives in addition to aiding in the dissemination of our culture. The best instance of this occurred during the early years of this century, during the discussions for the Indo-US Nuclear Deal. Several powerful Indian Americans accomplished amazing work in influencing Congressmen and Senators to support our position. Furthermore, my research work will explore how the growing number of successful Indians living abroad is making the Indian diaspora a true asset in various industries. Therefore, not only was this reorientation of our foreign policy essential to a successful foreign policy endeavour within our neighbourhood, but it was also relevant and essential for our strategic partners and new dialogue partners in Africa and Latin America.

**Keywords:** India, soft power, political values, ICCR, cultural dialogue, dialogue partners, Indian-Diaspora, foreign policy, diplomacy, Vasudhaiva Kutumbakam, Global Politics.

## Introduction

Joseph Nye, a renowned expert on international relations, coined the term "soft power" in his book "Bound to Lead: The Changing Shape of American Power." In the book, He distinguished three dimensions of power: the ability to coerce other nations through the use of military force, influence through the provision of financial incentives, and, lastly, the capacity to co-opt other states through the nation's attraction based on its culture, ideals and values. It is argued that other states change their choices as a result of their positive opinion of you. They enjoy your tale and your story. In the framework of soft power, military might is typically viewed as harsh and demeaning. Nonetheless, it is a good and humane deed when it is employed for disaster relief or peacekeeping. Similar to this, projecting one's culture is seen

as positive; but, aggressively projecting the culture of a large, historically significant nation into smaller nations, especially those in the vicinity, may be seen as cultural imperialism. Therefore, the way that one employs the instruments is what matters. In the end, soft power turns into a process rather than a finished product. Soft Power diplomacy is basically about winning people over with their hearts and minds. Therefore, a people-centric strategy is required. The only thing that governments can do is help the process. We will see two instances. There have only been two examples in the past century where a sizable portion of the world's population found great popularity in India. The first was when we were fighting for our liberation and used Mahatma Gandhi's nonviolent non-cooperation theory. The second occurred during the Hippie movement of the 1960s, when yoga, meditation, Indian classical music, and Indian spirituality became popular in the West. The government had virtually little involvement in the spread of these two cases. The British government at the time tried its hardest to discredit the idea in the first instance. The Indian government was not very supportive, even in the second instance. It is clear that while Soft Power may be required, it is not a sufficient prerequisite for reaching objectives. This is so because decisions made on foreign policy are not made unilaterally. Other countries are essential to their success. Their pursuits are vital to our success. Even if they value our civilization and culture, they will not follow us if our objectives conflict with their national interests. Here is when applying some "hard power" techniques would be useful. That does not necessarily mean using force. There exist alternative means of persuasion. However, it is an undeniable fact that soft power "lubricates" other diplomatic instruments. A nation that respects our culture and values could be inclined to side with us rather than take an antagonistic stance. Therefore, when making decisions, it may lean toward a good outcome as long as it does not conflict with its national interests. In this direction, the Indian Council for Cultural Relations (ICCR) is an independent agency of the Indian government that works to enhance and deepen understanding and cultural ties between India and other nations. For actively taking part in the creation and execution of policies and initiatives relevant to mutual understanding, India's external cultural relations, and the promotion of cultural interactions with different countries and people. Soft power diplomacy not only advances foreign policy objectives and interests but also can support the advancement of multilateral collaboration, trade and investment expansion, counterterrorism, and regional stability. India can gain the trust and goodwill of other nations and win their support for its policies and initiatives by employing its soft power tools, such as diplomacy and cultural exchanges. This can also assist India in counteracting the hard power of other nations that could threaten or challenge its

security and sovereignty.

India's soft power diplomacy not only comes from its ancient philosophical and wisdom traditions, which have impacted people all over the world for centuries, helping them find transformation, healing, and peaceful coexistence. These traditions also come from its strong economic base and rich cultural legacy, which includes music, dance, and the arts. In the areas of development, human rights, democracy, peace, and climate change, for example, influence the global agenda and norms. With the support of soft power, India can further establish itself as a responsible and positive player in the world community that supports tolerance, pluralism, and collaboration. The Khumbmela has received widespread international media coverage, which is evidence of other nations' respect for India and its ability to preserve its customs and beliefs throughout millennia. India's religious tourism industry plays a significant role in our foreign policy. Many people travel to locations of interest to various religions in addition to Hindu sacred sites like Varanasi, Badrinath, Kedarnath, Vaishno Devi, Amarnath, Tirupathy, Sabarimala, Tanjavoor, Madurai, etc. The most popular travel destination for Buddhist pilgrims is India. Considering that the majority of the locations connected to Lord Buddha's life are in India, this is not shocking. Bodh Gaya and Nalanda receive a constant stream of visitors from the ASEAN region, Japan, Sri Lanka, and Myanmar throughout the year. In India, Christianity and Judaism have a long history, and South India is home to ancient churches and synagogues. Regarding Islam, hundreds of followers flock to the Dargas of Sufi saints like Moinuddin Chishti and Nizamuddin Aulia.

Equally important are the music, dance, art and architecture of India. Even though the Taj Mahal is the most famous monument in India, foreign tourists are discovering thousands of other historical and archaeological sites all over India. These visits will certainly have a positive effect on their attitude towards our country. Propagation of our culture is nothing new. In earlier times, we called it "cultural diplomacy". Similarly, Yoga and meditation are associated with Indian religion and are common concepts in most nations. Renowned medical professionals are investigating and promoting the health benefits of these. A few years ago, the Indian government succeeded in getting the United Nations to proclaim June 21 as Global Yoga Day. One of its important manifestations in today's world is the large number of Yoga centres spread across the world. At the personal initiative of PM Modi soon after his election in 2014, the UN General Assembly recognised 21st June as the International Day of Yoga.

In the same way, Bollywood has been portrayed as an excellent instrument of India's Soft Power diplomacy. This element is occasionally exaggerated. Many people around the world indeed like watching Bollywood films. It is also true,

though, that Bollywood does not rank highly among its rivals. Indian film has not been a major feature of any of the major film festivals, such as Cannes, Berlin, Venice, or Karlovy Vary, for decades. Another important contributor is that the Indian Diaspora, particularly PIOs and NRIs, is essential to the country's Soft Power expansion. The total for both is 32.1 million. They are dispersed throughout every continent and, in the past 20 years, have grown to be wealthy, well-known, and powerful. They have occasionally assisted in furthering our foreign policy objectives in addition to aiding in the dissemination of our culture. The Indo-US Nuclear Deal negotiations in the early years of this century provide the best illustration of this.

Furthermore, India is a strong nation with a deep cultural history and heritage. Understanding India's place in the modern world is crucial, especially in light of its expanding impact across continents. India is home to more than 1.2 billion people, making it the largest democracy in the world. Over the past ten years, the nation's economy has grown in tandem with its integration into the global economy. India is become a major player on the world stage. Prospects for commercial: Attracting international investments, visitors, and commercial partnerships can be achieved by a robust soft power influence. In this way to supplement its conventional diplomatic endeavours, the Indian government frequently uses soft power diplomacy. For instance, the Ministry of External Affairs' cultural outreach programs and the Indian Council for Cultural Relations (ICCR) are two examples of initiatives aimed at helping advance India's soft power internationally.

**Significant dimensions of India's soft power diplomacy in the global politics: can be studied under the following heads:**

- **Increasing India's Global influence:** this soft power can help India to enhance its image and reputation in the world, especially among its neighbours and strategic partners. This can help India to counter the negative perceptions and stereotypes that may exist about it in some parts of the world. According to Pew Research Centre study on India's global influence, a foreign policy issue that has found its way into Indian domestic politics where a key campaign plank of the Bharatiya Janata Party (BJP) is the rise in India's prestige globally under Modi. At the same time, most countries lean positively towards India, with a median of 46% of adults in 23 countries expressing favourable views of India in general. Sixty-eight per cent of Indian adults believe that India's influence has risen in the world, but only a median of 28% of adults across 19 other countries in the world think so. Seventy-nine per cent of Indian adults have faith in Narendra Modi to do the right thing, much higher than a median of only 37% of adults in 12 other countries who have the same confidence in the Indian Prime Minister.

**Expanding and Strengthening Diaspora ties:** India's soft power diplomacy fosters a sense of pride and kinship among its large diaspora community, strengthening ties to its home country. 31 million individuals spread throughout 200 nations. They serve as a link between other nations and India. The Ministry of External Affairs reports that 3,21,00,340, or 32.1 million, of its citizens are currently residing abroad. Of this amount, 1, 86,83,645 (18.684 ml) are People of Indian Origin (PIO) and 1,34,59,195 (13.46 ml) are Non-Resident Indians (NRI). The largest overseas diaspora in the world is made up of overseas Indians, with 32.1 million NRIs and PIOs (including OCIs) living outside of India, according to a Ministry of External Affairs report. With 2.5 million (25 lakh) Indians migrating abroad annually, this is the world's largest yearly migration rate. According to the data, the United Arab Emirates (UAE), with over 34 lakh inhabitants, has the largest concentration of non-resident Indians (NRIs), followed by Saudi Arabia (26 lakh) and the United States (12.8 lakh). Surprisingly, the US tops the list of countries with PIOs (31.8 lakh), followed by Malaysia and Myanmar, which host 27.60 lakh and 20 lakh PIOs, respectively. It is also important to note that PIO concentrations are high in South Africa, Fiji, Singapore, Guyana, Suriname, and Indonesia. This is the outcome of slavery or forced labour during the British Raj. They were brought to these locations mostly to labour on plantations. These are those people who never came back, having gone there in search of a brighter future.

**Creation of Indian Community Welfare Fund (ICWF):** The Indian Community Welfare Fund (ICWF), established in 2009, aims to provide emergency aid and support to Overseas Indian people in need in "the most deserving cases" based on a "means-tested basis." ICWF has also been a vital source of assistance for the urgent evacuation of Indian citizens from dangerous areas, nations hit by natural catastrophes, and other difficult circumstances. ICWF is extended to all Indian Missions & Posts overseas due to its great usefulness. More revisions have been made to the ICWF standards to broaden their reach and increase the welfare measures that can be extended through the Fund. With the Union Cabinet's approval, the updated ICWF guidelines went into effect on September 1st, 2017. It is anticipated that they will grant Indian Missions and Posts overseas more latitude in promptly responding to aid requests from Indian nationals living abroad.

**Helping Indian citizens living abroad who are distressed:** providing affordable housing and boarding for deserving Indian people in distress overseas, either through Mission/Post-transport to India for trapped Indian people living abroad. Legal assistance on a means-tested basis to deserving Indian nationals living abroad who have committed infractions, minor crimes, or who have been wrongly accused by their employer and imprisoned; legal and financial support

to Indian women who have been abandoned, deceived, or abused by their NRI, PIO, or foreign spouses (for a maximum of seven years after marriage). Payment of petty fines and penalties for minor offences committed by Indian nationals, for their unauthorized entry into the host nation when there is no evidence of their wrongdoing, and to facilitate their release from jail or custody places

**Initiatives for promoting Indian culture:** in order to promote Indian culture, important Indian festivals and National Days of India are graced with cultural events hosted by reputable Indian Diaspora groups; other events feature Indian culture programs with renowned local artists or Indian artists residing in India, etc. An honorarium is paid to faculty members and instructors of Indian languages and arts. To organize an annual day for Indian students at universities and other educational institutions to discuss difficulties and challenges they experience, such as their visa, residency status, work permit, and finances, welfare activities for Indian students.

**Enhancement of Diplomatic Services Abroad:** Indian Missions and Posts overseas may have to pay administrative costs related to programs, welfare measures, etc. for the following reasons, contingent on funding availability. A modest number of additional professionals to perform a range of consular services; the rental of cars on a need-basis for the deportation or return of troublesome Indian residents to police stations, jails, detention centres, labour camps, welfare camps, hospitals, morgues, and airports.

**The Impact of Indian Influence on Western Civilization:** In contrast to the significant influence of Indian religious beliefs on Central Asia, Southeast Asia, China, and through China to Japan and Korea, particularly in the shape of Buddhism, India's impact on Western civilization has been sporadic and difficult to quantify. From the ancient Mediterranean world of Greece and Rome, through the European Middle Ages, the Renaissance, the age of European imperial growth and fall, to the post-colonial world of the Indian diaspora of current times, Indian influence in the West may be reasonably traced. Compared to most other countries in the entire world, India has a higher favourability rating. India is seen favourably by 51% of Americans, 55% of Japanese, and 52% of Australians among the Quad partners. 64% of Kenyans and 60% of Nigerians think favourably of India. South Africa, a nation with whom India has long had close ties, is an anomaly on the continent, with 51% of its citizens having negative opinions of New Delhi, compared to only 28% who hold positive opinions. Only Mexico has a better favourability rating for India than unaffordability in Latin America; more adults in Brazil and Argentina have negative opinions of India than positive ones. 52% of Italians and 66% of adults in the UK have a positive opinion of India. According to 68% of Indians, India's influence is expanding

worldwide. Gender-wise, 71% of men and 65% of women believe that India's influence has increased.

**Indian tradition and culture in Southeast Asia:** Around the first millennium CE, the Indian subcontinent brought the second major tradition to diverse regions of the region. Except for the remote and forested interior of the peninsula, much of Borneo and Celebes, the eastern Indonesian islands, and the Philippines, Indian Hindu-Buddhist civilization spread almost throughout. Even with all the evidence of Indian culture, it is still unclear exactly how Indian civilization got to Southeast Asia. Trade is the main factor, according to the archaeological record. Demand in the West around the first century CE, especially from the Roman world, encouraged an increase in Indian trade with Southeast Asia. The earlier layers of ancient religion and creative consciousness survived even in those areas, particularly Cambodia, Burma, and Thailand, where Indian influence became deeply ingrained. Local spirits were easily recognized as Indian deities.

**Southeast Asia adopts Indian artistic styles:** The architectural and ornamental aspects of the region's historic monuments are derived from Hindu royal temples built in Indian styles. However, early on, when builders associated architectural form with cosmologies, a distinctive local aesthetic developed. Every Hindu temple has a shrine in its heart, which represents heaven on earth. The roof tower atop the temple symbolizes Meru, the cosmic Indian mountain thought to be the centre of creation. The Indian style was easily accepted because Southeast Asian people already thought that a mountainside was the natural home of spirits and gods. Usually built on a lofty terraced plinth (a stone acting as a base), the temple represents a mountain. One towered shrine still serves as the main focal point, although more might be placed on the terraces. A sacred image made in bronze or carved in stone is housed within the cell of this primary shrine. The transcendent patron, or celestial alter ego, of the local Hindu ruler, was recognized as the subject of this artwork. This was typically one of the high gods of India, either Vishnu or Shiva.

**Develop the global agenda and become a responsible, positive global actor:** on matters that are important to it, such as development, human rights, democracy, and climate change. India as well can emphasize its position as a responsible and productive global actor that promotes tolerance, cooperation, and pluralism with the use of soft power diplomacy.

**Expansion of India's cultural exports:** India's exports of culture, including Bollywood movies, traditional arts, and handicrafts, boost the country's economy by creating jobs and income. For example, employment opportunities and income that support the country's economic expansion.



**Developing Strategic Alliances:** India may collaborate with other nations to develop alliances based on common interests and values by using its soft power. These alliances may result in joint ventures across a range of industries, including defence, healthcare, technology, and education. An example would be India's outreach to the Pacific Island nations, where there is a sizable Indian diaspora. This link frequently results in their enthusiastic backing of India's objectives in the nations they have adopted.

**Yoga and meditation have a worldwide reach:** Deeply ingrained in Indian culture, yoga and meditation are becoming more and more popular worldwide and are helping people find inner peace. Two age-old techniques that come from India's rich cultural heritage are yoga and meditation. People all around the world are interested in it. Its popularity has increased recently as more people become aware of its substantial advantages for their whole health-physical, mental, and spiritual. The fact that yoga and meditation are so widely practised around the world is evidence of their enduring appeal and significant social impact. Ancient Indian cultural traditions gave rise to two disciplines that are still in use today: yoga and meditation. It has drawn interest from individuals all around the world. As more individuals become aware of its substantial advantages for their physical, mental, and spiritual well-being, its popularity has increased recently. The widespread acceptance of yoga and meditation is evidence of their enduring appeal and significant impact on individuals and communities. The importance of holistic activities like yoga and meditation cannot be overstated in today's fast-paced world, which is characterized by incessant stress and technological breakthroughs. These customs, which bridge the gap between conventional sports and physical education, have transcended their historical foundations to become essential elements of worldwide wellness. We examine the significant effects of yoga and meditation on a worldwide level in this article, as well as how they improve physical health and promote a harmonic balance between the mind, body, and spirit.

**Yoga and Meditation Emerged as an International Phenomenon:** The age-old Indian disciplines of yoga and meditation have become well-known throughout the world despite their cultural and geographic origins. The global demand for holistic approaches to well-being has led to a sharp increase in the popularity of yoga and meditation. These activities provide a special fusion of mental decompression, physical exercise, and spiritual connection that appeals to people of many backgrounds. Additionally, there has been a notable surge in international travel as the desire for yoga and meditation experiences rises. The number of foreign visitors has significantly increased

**The emergence of the worldwide market for yoga:** The International Day of Yoga was declared an annual event

by the UN General Assembly in 2014, with 177 votes cast in favour of it. More recently, yoga was included in the physical agenda of WHO Governing Body meetings both locally and internationally, including the World Health Assembly. Based on enrolment in both online and offline yoga courses and yoga accreditation training programs, industry estimates place the size of the global yoga market at USD 38 billion in 2019 and predict it will grow to USD 66 billion by 2027, with a compound annual growth rate of 9.6% from 2021 to 2027. Similarly, the Indo-Pacific area is predicted to expand at the highest compound annual growth rate at least until 2027, but North America still has the largest yoga market. Yoga has become a significant sector of the economy, creating jobs and fostering entrepreneurship and cross-cultural exchange while providing real, immersive wellness experiences are what attract tourists.

**Global Center for Traditional Medicine (GCTM) in India:** In Jamnagar, India, the WHO Global Centre for Traditional Medicine (GCTM) was established. Traditional medicine (TMM) is experiencing exciting times right now. An agreement to create the WHO Global Centre for Traditional Medicine (GCTM) in Jamnagar, India was reached in March by the Indian government and WHO. With the overall goal of optimizing TRM's contribution to global health and sustainable development, the GCTM which is funded in part by a \$250 million investment from the Government of India has a strategic focus on evidence and learning, data and analytics, sustainability and equity, and innovation and technology. The Region's long-standing goals of bolstering TRM system performance monitoring, raising TRM product safety monitoring, improving TRM research capacity, and incorporating safe and efficient TRM into health service delivery, particularly at the PHC level are all in line with the goals of the GCTM.

### Conclusion

It is important to understand that how India projecting an image of its behaviour in line with its rhetorical support for democracy and human rights, as well as generally upholding good public opinion and credibility abroad, are all means of cultivating soft power and the capacity to achieve goals through attraction rather than coercion. It is important to note that how India's role is being increased in collaboration on regional concerns, enhancing connectivity among member states, and broadening the scope of the SAARC are some of these measures. Additionally, India participates in several regional and international organizations, including the SCO, BRICS, and G20, which give it the chance to interact with other powerful nations and influence international agendas. A productive participant in numerous international peacekeeping operations, India is a force for peace. It has been instrumental in resolving disputes inside its region and is the biggest donor to UN peacekeeping

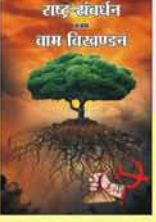
missions. There is no denying yoga and meditation's worldwide influence. Since their inception, these customs have developed into global agents of positive change. These practices are promoting a feeling of world peace, bridging cultural divides, and improving lives in ways that go well beyond the mat and cushion as their popularity grows. The World Health Organization has rightly included yoga as a way to promote health in their "Global Action Plan on Physical Activity 2018–2030: More Active People for a Healthier World" because of its benefits as an easy way to harmonize with the world. In light of India's 75th anniversary of independence, the 8th International Yoga Day celebration is a significant achievement for the country's soft power strategy. For more effective use of India's soft power diplomacy as a means to protect our national interest and foreign policy goals there is a need for the creation of a central body, composed of representatives from the Ministry of Culture, the ICCR, MEA, and other relevant ministries and agencies, to oversee and coordinate the soft power initiatives in the areas of science and technology, education, sports, tourism, and education.

## References

1. Joseph Nye (2022): *Soft Power: The means to Success in World Politics*. KW Publishers Pvt Ltd Publications
2. Basham (1963). A. L. *The Wonder That Was India*. London: Sidgwick and Jackson, Standard scholarly work, with many references to India and the West.
3. <https://www.thetalentedindian.com/the-worldwide-reach-of-yoga-and-meditation/>
4. <https://www.mea.gov.in/icwf.htm>
5. Joseph Nye (1990): *Bound to Lead; The changing Nature of American Power*. Basic Books, New York, Publication.
6. Blarel Nicolas: *India: the next Super Power? India's Soft Power: from potential to reality?* Derived from <https://www.lse.ac.uk/ideas/Assets/Documents/reports/LSE-IDEAS-India-hSuperpower.pdf>
7. <https://www.drishtiiias.com/loksabha-rajyasabha-discussions/perspective-india-s-soft-power>.
8. Dhruva Jaishankar: *India Rising: Soft Power and the World's largest democracy*
9. <https://www.encyclopedia.com/international/encyclopedias-almanacs-transcripts-and-maps/indias-impact-western-civilization>
10. [https://www.huffpost.com/entry/yoga-health-the-global\\_b\\_528595](https://www.huffpost.com/entry/yoga-health-the-global_b_528595)
11. Bayly, C. A. *Indian Society and the Making of the British Empire*, vol. 2:1 of *The Cambridge History of India*. Cambridge, U.K.: Cambridge University Press, 1988.
12. <https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices/yoga-one-of-the-many-ways-india-contributes-to-making-the-world-a-better-place/>
13. Embree, Ainslie T., and Carol Gluck, eds. *Asia in Western and World History*. Armonk, N.Y.: M. E. Sharpe, 1995. Essays on many aspects of interaction.
14. <https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail.htm>
15. Mitter, Partha(1977). *Much Maligned Monster: History of European Reactions to Indian Art*. Oxford: Clarendon Press.
16. <https://www.who.int/southeastasia/news/detail/21-06-2022-international-day-of-yoga—yoga-for-humanity>
17. Halbfass, Wilhelm(1988). *India and Europe*. Albany: State University of New York Press,. How Indians and Europeans understood each other.
18. Lach, Donald F. *Asia in the Making of Europe*, vol. 1, bk. 1. Chicago: University of Chicago Press, 1965. Very detailed scholarly work.
19. <https://www.ndtv.com/india-news/record-surge-in-illegal-us-entries-nearly-97-000-indians-apprehended-in-2022-23-as-overseas-indian-population-tops-3-crore-unpacking-nri-and-pio-globa-4553099>
20. <https://prsindia.org/policy/report-summaries/india-s-soft-power-and-cultural-diplomacy>
21. Pearson, M. N. *The Portuguese in India (1987)*, vol. 1:1 of *the Cambridge History of India*. Cambridge, U.K.: Cambridge University Press.
22. Rohan Mukherjee: *The false promise of India's Soft Power: Popescu Ljungholm, Doina (2014), "Decision Making in Public Sector Organizations," Geopolitics, History, and International Relations 6(1): 40–45.*
23. <https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail.htm?850>
24. Singhal, D. P. *India and World Civilization*. 2 vols. East Lansing: Michigan State University Press, 1969. Encyclopaedic survey of references.
25. **Dr .Vijoy Kant Das (2022). Time of India, Yoga, one of the many ways India contributes to making the world a better place.June 20, 2022.**

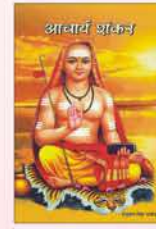
*1 Assistant Professor, Department of Political Science, Government City College (A), Hyderabad, Telangana State.*  
*2 Associate Professor, Department of Chemistry, Government City College (A), Hyderabad, Telangana State.*

## शैक्षिक फाउण्डेशन के प्रकाशन



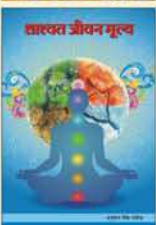
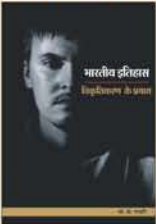
1. जय हिन्द
2. राष्ट्र संवर्द्धन बनाम वाम विखण्डन
3. आचार्य शंकर
4. नमन - भारतीय शिक्षक परम्परा
5. पर्यावरण संकट, जीव सृष्टि और जनजीवन
6. वसुधैव कुटुम्बकम्

- हनुमान सिंह राठौड़  
संकलन  
हनुमान सिंह राठौड़  
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी  
प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा  
संकलन



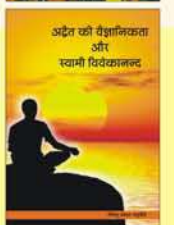
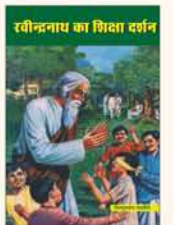
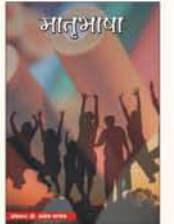
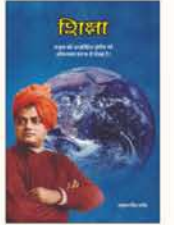
606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053 मो. 9414040403  
shaikshikfoundation@gmail.com, www.shaikshikfoundation.org

## हमारे प्रकाशन



1. शिक्षा : दृष्टिकोण और दिशा
2. A Vision & Direction to Education
3. अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ : परिचय, कार्य और व्यवहार
4. ABRSM : An Introduction
5. भारतीय इतिहास : विकृतिकरण के प्रयास
6. 1857 का स्वातंत्र्य समर (प्रश्नोत्तर रूप में)
7. शिक्षक वैज्ञानिक : प्रफुल्ल चन्द राय
8. A Saint Scientist : Acharya Prafull Chand Ray
9. सांस्कृतिक भारत
10. सच्चर का सच
11. Towards Further Balknization of India
12. मातृभाषा
13. रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन
14. शिक्षा (स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में)
15. जयतु भारत (चार प्रमुख उद्बोधन)
16. विवेक यात्रा (स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर प्रश्नोत्तरी)
17. जम्मू-कश्मीर : तथ्य और सत्य
18. अद्वैत की वैज्ञानिकता और स्वामी विवेकानन्द
19. शाश्वत जीवन मूल्य
20. बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक अवदान
21. सवा लाख से एक लड़ाऊँ
22. कुटुम्ब प्रबोधन

- के. नरहरि  
K. Narhari  
संकलन  
संकलन  
के. नरहरि  
हनुमान सिंह राठौड़  
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी  
Ajit Kumar Biswas  
जे.एस. राजपूत  
संकलन  
Swapan K.S. Choudhary  
संकलन  
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी  
संकलन  
हनुमान सिंह राठौड़  
आशुतोष भटनागर  
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी  
हनुमान सिंह राठौड़  
हनुमान सिंह राठौड़  
हनुमान सिंह राठौड़  
हनुमान सिंह राठौड़



प्रकाशक

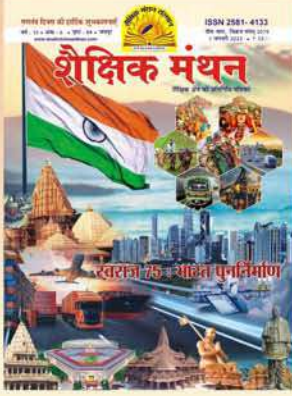
## अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन 606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053 मो. 9414040403  
abrsmdelhi@gmail.com, abrsmbharat@gmail.com, www.abrsm.in

ISSN 2581 - 4133

# शैक्षिक मंथन

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

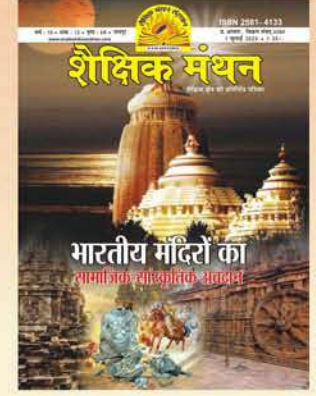


(द्विभाषी मासिक)

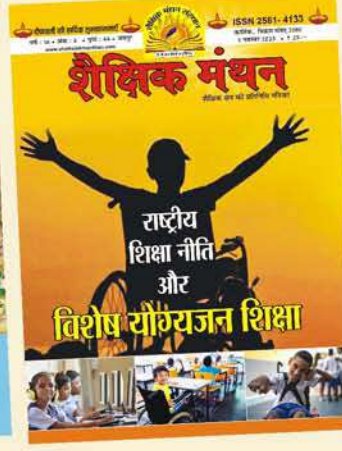
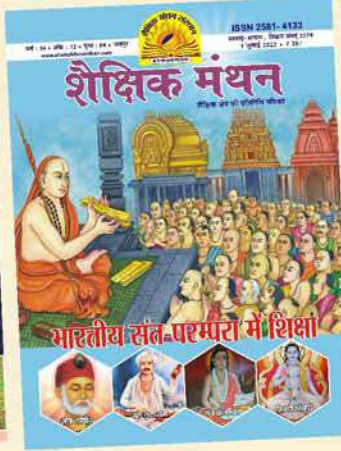
सदस्यता शुल्क

वार्षिक ₹250/-

दस वर्षीय ₹ 2000/-



शैक्षिक विचारों की सजग मासिक पत्रिका के सदस्य बनें।



प्रकाशकीय कार्यालय

82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर (राज.) 302001

दूरभाष : 8619935766, 9414040403

shaikshikmanthan@gmail.com, www.shaikshikmanthan.com

Registration No. : 1240 in Book No. 4, Vol. No. 10855



शैक्षिक फाउण्डेशन

606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053 मो. 9868711893, 9414040403  
shaikshikfoundation@gmail.com, contact@shaikshikfoundation.org, www.shaikshikfoundation.org

ISBN : 978-81-953575-5-00

